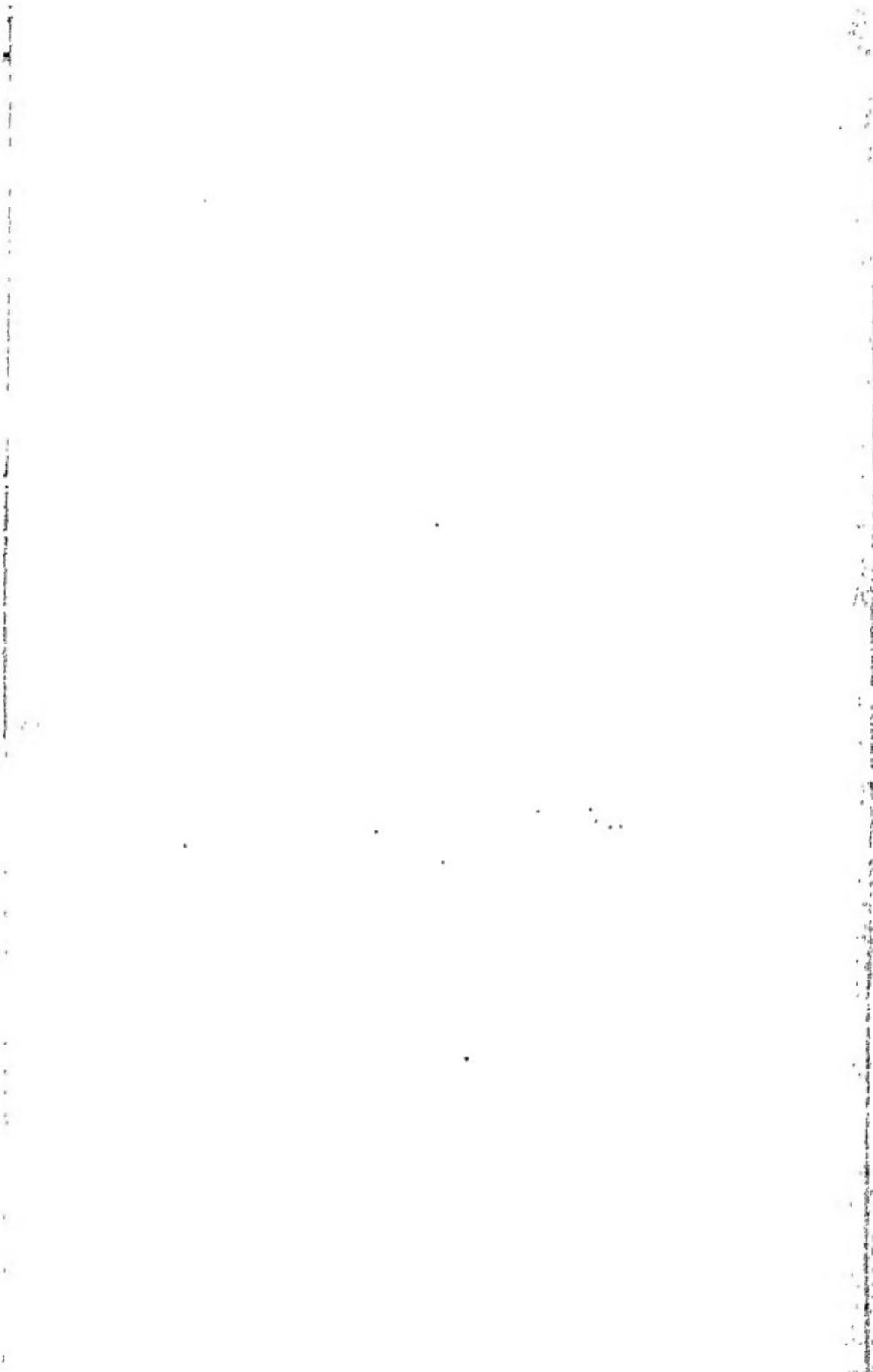


GOVERNMENT OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL
LIBRARY

SECTION NO. 13471

No. 910/st&





NOT TO BE ISSUED

STRABONIS

GEOGRAPHICA ^{V. 2}

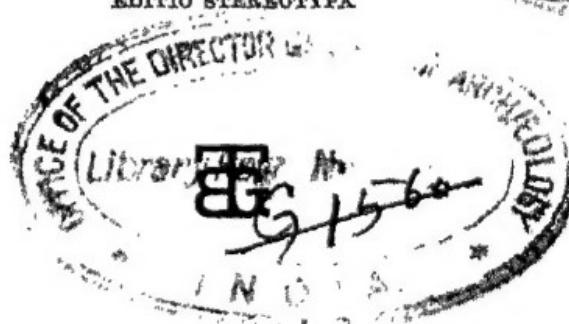
RECOGNOVIT

AUGUSTUS MEINEKE

1847.

VOLUMEN SECUNDUM

EDITIO STEREOPTYPEA



LIPSIAE

IN AEDIBUS B. G. TEUBNERI

MDCCLXXXIX

1899

910
SLR

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No.....13471.....

Date.....14.7.1960.....

Call No.....910.....[REDACTED] Vol (2)
Str.



PRAEFATIO

Nostrae lectionis a Krameriana in iis, quos secundum volumen
Strabonis complectitur, libris haec est discrepantia:

- | | | | |
|---|--|-------------------------------------|-----------------------|
| 397, 28. λέγομεν | 398, 8. 9. διὸ δίκαιά μοι | 31. μέρη | |
| 399, 8. Λουτόνς | 9. Σιβινούς | 26. Γαμαρβόλονοι | 400, 17. |
| διεῖχον | 29. Οὐάρον | Ούνχρομέρον | Καθύλκων καὶ |
| Αμφάνων | 22. † τριακοσίων | 402, 2. Ούνινδολικοὶ † καὶ ἡ Βούτων | |
| 5. Ἀλπίων | 8. ἐπὶ τάδε] Rectius ἐπίταδε | 15. ἔξελασθεῖν | 31. 32. |
| τοσαύτας | 403, 13. Ταῦτα δὲ δικαίως | 16. καὶ ἡ 19. Βούτων] | Ita ubiq- |
| scripsi vel scribere volui pro Βούτων | 404, 7. ἀναβᾶσα ὑπεροπτής | | ue que |
| 16. παρήκουσι | 16. οὐδένα | 21. 22. πεποιημένον | 405, 28. Φοίβον |
| τε παλαιόν | 30. Σωκράτης] | τε | τε παλαιόν |
| Fort. add. ἐά | 406, 11. [δὲ] ὁρθῶς | | |
| 10. Τρεώδι | 25. τοὺς † μὴ ὅπισθεν | 407, 25. 26. χρημάτων † | |
| ἐκτίμησιν | 410, 10. ἀποθεν | 411, 10. Παγγαίαν | 11. ἄμμου, |
| ἐκ | 15. εἰ γάρ, αὐτὸν | 412, 7. τὰ ὑπὸ] τὰ delet Spengeli- | |
| πρότερον | 23. πρότερον | 28. πλὴν ἡ φόρτον | lius 23. πρότερον |
| μυριάδας | 414, 9. ἐς | 413, 15. 16. πανο- | |
| ἐκπέμπειν † στρατείας | 20. οὐδένα | τεχνίας εἰς πλεονεξίας | 415, 28. γνεψ |
| 19. [δὲ] ἐν 27. ἦν ἐγενέσε Δαρεῖος] | Haec suspectat Kramerus, fort. | | |
| reote | 416, 3. καὶ ἐπτὰ σοφῶν ἦνα τελεία | 4. εὐδέματα | 7. οὗτε |
| ἀληθεστάτα | 8. εὐρεμα | 17. πλάσματα | 27. τέσσαρας |
| τέσσαρας | 11. ὑστερον | 417, 27. | 418, 4. Δάσοι |
| μυριάδας | 15. Παρισάδον, et sic etiā in sqq. | τεσσαράκοντα | 24. Μυσοῖς |
| ἐκπέμπειν | 17. στάδιοι περὶ πεντακόσιοι | 422, 3. Φαναργούλαν | 27. ἐς 419, 2. εἴκοσι |
| τεσσαράκοντα | 18. καὶ ἄλλος | 4. καὶ † πηλὸν εἶναι | μυριάδας |
| 4. Νεοπτόλεμον | 18. στάδιοι τεσσαρά- | τὸ μέγεθος | 7. οὐτε |
| σάρων | 20. τοῦ | 4. 5. σταδίων τεσσαρά- | ἀληθεστάτα |
| κοντα | 22. Διοφάντου, Μιθριδάτον στρατηγούντα | κοντα | 8. εὐρεμα |
| 15. Παρισάδον, | 22. Διοφάντου, Μιθριδάτον στρατηγούντα | 424, 2. αὐτῷ | 11. ὑγαιον |
| γαϊος | 24. Μυσοῖς | 19. Νυμφαῖν | 14. εὐ- |
| 17. στάδιοι περὶ πεντακόσιοι | 27. ἐς | 31. ὅς om. | γαιος |
| 426, 9. Φαναργούλαν | 29. ἐννακισχύλων | 427, 15. 16. † τριά- | 426, 9. Φαναργούλαν |
| κοντα γοῦν ἀποδίδωσι | 428, 11. καθίσταντο Spengelius | κοντα | 20. Επικαρπία |
| 428, 11. καθίσταντο Spengelius | 12. στάδιον δέκα | 22. Διοφάντου | 21. Καρπάσια |
| στάδιον δέκα | 22. Διοφάντου, Μιθριδάτον στρατηγούντα | 23. Λιοφάντου | 22. Καρπάσια |
| 14. 15. ἐφ' ἐκάτερα δ' | 430, 14. 15. 16. † τριά- | 24. Λιοφάντου | 23. Καρπάσια |
| αὐτῆς, ἐπὶ μὲν τὰ Θράκια ἡ Ροδόπη, ὅμο- | κοντα | 25. Λιοφάντου | 24. Λιοφάντου |
| ρονον ὑψηλὸν ὅρος | 25. Λιοφάντου | 26. Λιοφάντου | 25. Λιοφάντου |
| 21. Ραιτούς καὶ Τοινίους | 26. Λιοφάντου | 27. Λιοφάντου | 26. Λιοφάντου |
| Recte Coraes πολλοὶ | 28. οὐπερθεῖσι | 28. Πριάμωνας | 27. Λιοφάντου |
| 8. ὑπερθεῖσι | 18. Σανόν | 10. Δαλμιον | 28. Λιοφάντου |
| Σανόν | 20. Νόαρος πλή- | 11. Λιοφάντου | 29. Λιοφάντου |
| 20. Νόαρος πλή- | θει | 12. Λιοφάντου | 30. Λιοφάντου |
| Λιοφάντου | 13. 14. Θουνάται | 13. Λιοφάντου | 31. Λιοφάντου |
| 17. μέσον | 14. Θουνάται | 14. Λιοφάντου | 32. Λιοφάντου |
| 29. τὸ ἔθνος om. | 15. Λιοφάντου | 15. Λιοφάντου | 33. Λιοφάντου |
| 433, 4. Φάριος. καὶ ἡ τῶν | 16. Λιοφάντου | 16. Λιοφάντου | 34. Λιοφάντου |
| 17. μέσον | 17. Λιοφάντου | 17. Λιοφάντου | 35. Λιοφάντου |
| 29. τὸ ἔθνος om. | 18. Λιοφάντου | 18. Λιοφάντου | 36. Λιοφάντου |
| 434, 1. Ανταριάται et hic et | 19. Λιοφάντου | 19. Λιοφάντου | 37. Λιοφάντου |
| in sqq. | 20. Λιοφάντου | 20. Λιοφάντου | 38. Λιοφάντου |
| 6. δ † Ριζαίων κόλπος | 21. Λιοφάντου | 21. Λιοφάντου | 39. Λιοφάντου |
| 13. 14. Θουνάται | 22. Λιοφάντου | 22. Λιοφάντου | 40. Λιοφάντου |
| 14. Θουνάται | 23. Λιοφάντου | 23. Λιοφάντου | 41. Λιοφάντου |
| Rectius | 24. Λιοφάντου | 24. Λιοφάντου | 42. Λιοφάντου |

a*

fort. Θοννᾶται 435, 20. τὰ πελάγη ἀπὸ] Indicavi lacunam ante ἀπό. excidisse videtur τεκμαιρόμενος vel simile verbum 436, 11. εἰ πού τι 437, 23. 24. περὶ τὸν Αἴγανον καὶ οἱ ὑπὸ αὐτοῦ 26. δὲ ὑπὲρ 438, 2. Τριῶντες 26. ὅπον om. 439, 5. 6. Σηλυβρία 6. Πολτυοθρόα 8. ἡ add. post αὐτὴν ib. ἔστι καὶ ἡ 30. προσεχὲς 440, 10. Φαρνακίας ib. πρότερον 29. πρότερον πλευσαντες [εἰς] τὸν 441, 10. ὅρεσι Ἰλλυρικῆς 12. ἀρχαιμένων 442, 2. Αἴγανος 15. Λελέγα 443, 4. γαῖης † ἀλέοντος 21. δ' οὐν 444, 16. Ἔόδων 449, 9. 10. Δαρμαστίφ, Περισάδνεις τε συνεστήσαντο 10. καὶ † Ἐγχελέους καὶ 11. Λυγκησταὶ 12. τριπολῖτες Πελαγονίας καὶ Εορδοὶ 14. Ἐγχελέοις 17. Λυγκησταὶ 19. Ἰορα 21. Νεοπτολέμῳ] De Pyrrho Neoptolemi filio v. Vindic. p. 89. ubi adde schol. ad Euripidis Androm. 24. 26. Λυγκηστὸν 28. Κερκύρας 450, 1. Ρωμαῖοις 10. τριπολῖτες 13. Στύμβαρα· Κύδοιαι 451, 22. 23. Σελλήνετος ἐν δὲ Θεοπωτοῖς 452, 1. τε 15. ἐπιτετμημένως † τυρέοντος οἷον 17. καταχρηστικῶς [ῶς] καὶ 25. μὲν τοῖς 28. Πελασγίας] Malim Θετταλίας fort. del. ib. δὲ 453, 8. Σκότουσσαν 28. κροτοῦντα. recte κρατοῦντα i. e. manu tenentem 20. 21. 31. χαλκεῖον 454, 6. ὑπέρεκειται] Reclius esset κεῖται 7. ἐπὶ τὰ πρόσθ] Quae sequitur decem literarum lacuna, in ea στενὰ scriptum fuisse, nescio a quo notatum memini 27. γελάται] λέγεται? 30. 31. τινῶν] Spengelius δαιγῶν 455, 24. τούσῃ 26. παραληλογράμμουν 456, 7. Ήδωνες] Θεονες? 9. δὲ] Spengelius γὰρ 457, 16. ἐν δὲ δεξιῆς τὴν "Οσσαν, ἔγγυς om. 22. Θράκης 458, 12. 13. om. 20. φασι 28. μείζονα 459, 1. τῆς † Πελλαίας 8. ὄνομαζοντι 460, 2. Αἰνέα 461, 5. κάλλιστον † τῆς γῆς τῇ δψει καίναται ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιῷ] Spengelius κάλλιστον τῇ δψει ἐπικαίναται, ἀλλὰ τὸ τῆς Αἴγανος τῷ Ἀξιῷ 24. Αἰνέαν 462, 27. Μηκύνειρνα 31. πέριξ τῆς 464, 11. ἀγαθίδες 14. χονσεια 15. ἀργυρεια 465, 25. ἀγαθίδες 466, 25. καὶ [γὰρ] αὐτοὺς Spengelius 466, 32. Πελαγόνες 467, 28. Ισμαΐα] Imo Ισμαΐα 468, 11. εἶκοσι 15. Ορθαγορία 17. χαράκωμα 18. ἀποθεν 19. χαρακώματος 469, 25. εὑρόντον] λιβόντον? 470, 9. Ελεοῦς 19. βάλλει] Corrigere operarum errorem δὲ βάλλει pro ἐκβάλλει 22. 23. Ανσιμαχία 24. Ελεοῦς 26. Ελεοῦντα 472, 17. μέμηλε 26—32 om. 473, 5. πάντα] πάντα τὰ Spengelius 6. μέρος † τῆς Μακεδονίας ἀποδώσομεν 474, 3. [Τῆς] Ἐλλάδος μὲν οὖν 5. τεσσάρων 7. Ιωνες] Corr. Ιωνες 17. μὲν εἶναι] μεῖναι? 18. φησιν ὁ Θονκυδίδης] Haec fort. delenda 21. ἐπεροθνοῦς 29. Αἰολικοῦ έθνους] V. Heyne Op. Ac. 2 p. 7. 475, 9. δ' ἔτι 11. τοιαῦτα 12. 13. δὴ λιθανθόντες 18. γῆν ἀρχὴν ib. θάλασσαν 26. δὲ ταῦτα δύο 28. ἔκτος † Πυλῶν μεχρὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηγειοῦ καὶ τοῦτο δ' ἔστι τὸ Θετταλικόν. ἔστι δὲ 476, 14. δ' om. 16. τὴν μὲν Βοιωτίαν] τὴν μὲν [Αττικὴν καὶ] Βοιωτίαν? Vidit etiam Spengelius. cf. Vindic. p. XII.

477, 16. αἱ om. 30. ἡ om. 478, 12. καὶ om. 16. τέρμοσιν
 479, 7. † πόλιν ib. * τὴν δὲ παρό^ν 20. σχεδὸν δὲ] Add. videtur
 τι 23. ὄνομάξει ib. δεῖ om. 31. προσπτισ[θεισῶν] 481, 14.
 τῇ † ἐπιθαλασσίωνα 15. Βοιωνώα 19. 20. ἔκει — στρατεῖαι ante
 τὴν ἄγετ^ν ἔξ 21. δὲ 24. ἡ Ἀθηνᾶ om. 31. ἀνδρα, φῆσας,
 * ἀνδρα Μούλιον 482, 4. καὶ add. ante Κραυνώνιοι 20. καὶ
 περὸ] καὶ τὸ περὸ? 21. οὐν] Fort. delendum 25. ἀοιδῆς φησὶ γὰρ
 Οἰχαλίηθεν λόντα παρ^ν Εὐρύτον Οἰχαλίησ. εἰ μὲν γὰρ ἦν Θετα-
 λική 483, 1. δὲ τῆς τοῦ Πηγειοῦ καὶ τοῦ Σελλήνετος] Correxit
 Ernestus Curtius, nisi quod καὶ τῆς τοῦ Σ. scripsit. quod sequitur ἐκ-
 βολῆς, idem recte scripsit ἐμβολῆς 32. corr. ἡφ^ν 484, 6. 13. τέσ-
 σαρα et τέσσαρας 485, 2. Αἰσχύλος] Αρχιλοχος? 17. ἐνέμοντο
 πολιτείαν 486, 4. ἔχόμενον — Δαμακελας] Haec recte delere videtur
 Curtius 487, 4. Πάροιο] Scribendum videtur Πλέροιο 10. Λέπρεον
 ut in sqq. 21. τῷ ἐγγυτάτῳ 22. ἐστὶ 488, 12. Γυθίον 13.
 τόν τε Κελάδοντα 18 et 26. Αλφειονίας] Scripsi Αλφειωνίας.
 praestat fortasse Αλφειφάς 24. ἀνθεών ὡς τὸ 489, 7. Φέλλων
 10. δ om. 12. ἐκ τῶν ἐπῶν τῶν Ὄμήρου τεκμαίροιτο 14. καὶ
 Αρηαδικός] Haec fort. transponenda 10. post Λεπρεατικός 21. ἀπα-
 τηθεῖσαν 490, 1. πολεῖδια] Quod revocandum 24. * δ^ν * et hypo-
 stigma post διήγησιν. delenda potius verba τὸ δ^ν ἀπέχεσθαι προσῆκε
 μᾶλλον 491, 30. μὲν Delendum videtur ib. Σωτάδη 492, 2.
 πορεύεσθαι 29. lacunam om. 493, 22. Μινυήιον] Ἐλινήιον?
 30. Τπαισίᾳ 494, 4. ἐπέδειξαν 7. καὶ τάρος καὶ Ἀχαιαὶ εἰσὶ^ν
 δὲ] καὶ τάρος καὶ αἱ Χασαὶ εἰσὶ δέ? 17. Ραδινή 19. λιγεῖ^ν ib.
 ἀοιδᾶς, ἐρατῶν υμνους 21. Ραδινήν 495, 11. Κελάδοντι 23.
 Κυπαριστεύοι 496, 1. Ἐρανα] Recius videtur Ἐραννα 2. καὶ ἡ
 ἄκρα om. 30. μὲν Delendum videtur 497, 3. φυσικῶς] Hoc
 abesse malim 17. 18. ὁμωνύμως μὲν οὖν 24. 25. Πτελεασιμον
 28. Ἡλεᾶς 30. οἱ δὲ πολέδιον (sive potius πολεῖδιον) om.
 498, 22. δύστερό 501, 17. ὑπῆρχε 504, 9. εῦρεμα] Quod for-
 tasse revocandum 22. οὐτε 505, 16. Λέπρεον 19. δσας δ^ν 27.
 διὰ om. 30. πολλὰ † καὶ νομίζοντιν 506, 7. Πίσαν et sic in sqq.
 9. δρῶν 25. post φησὶ verba in margine posita 26. τεσσαρά-
 κοντα 31. Ἐνισέα] Scripsi Ἐνισέα, at debebam Ἐλιπέα. Hesychius
 Ἐλιπεύς· ὁ Ἐνιπεύς ποταμός. Quod confirmat titulus Thessalicus edi-
 tus ab Ussingo Inscr. gr. 2, 7. ἐκ τοῦ Εὐρωποῦ ἐν τὸν Ἐλιπῆ, ἀπὸ
 τοῦ Ἐλιπέος ἐν τὸ νερος. Itaque Ἐλιπέος pro Ἐνιπεύς dicebatur, ut
 λέτον pro νίτον, et alia. Hinc corrigenda quae dixi in Vind. Strab.
 p. 111 sq. 507, 3. Φηραλαν ib. post λόντων verba in margine
 posita, quorum partem (inde ab ὑπέρχειται) suspectavit Kramerus in
 actis 5. ἐξηλείφθη 508, 10. † Ἀχαιοί 510, 8. καὶ ἡ Κυπα-
 ρισίσια add. post Κορυφάσιον 14. καὶ pro ἐπὶ 16. προσπειμένη
 511, 8. Κιναλδιον 10. Βαίτυλος 18. Θαλάμους 20. ἀγόμε-
 νος 22. τῆς add. ante Ἀθηνᾶς 23. καὶ et 25. Τράγιον sine aste-
 riscis; non videntur haec Strabonis esse 512, 19. Ἐρανα] Malim.

*Εραννα 513, 17. ἀμφοῖν pro κρατῶν 514, 11. 12. ἐλθὼν ἐξ
Ἐρινεοῦ om. 515, 31. κατὰ τούτου] Volebam καὶ τούτου cum
Corae 516, 8. Ἀμαθοῦς 9. Γύθιον ut in seqq. 26. τὸν [Θόρα]κα,
Scribendum videtur κατὰ τὸν [Θόρα]κα 28 — 517, 7. non vi-
dentur Strabonis esse 517, 13. post προσηγορεύθησαν sequuntur ea
quae ego in margine posui 24. 25. πολέ. . . . γὰρ 25. Φεραίᾳ
δ. . . . ἀπὸ ἑντός] Volebam ἑντός. V. Vind. Strab. p. 115. ubi
recte probavi Φεραίᾳ, pro quo per errorem Φάριδι editum est. ibidem
πολεμίους conieci, non πολέμους 520, 3. ἀποδίδοται 6. ἐκβα-
λλούσης 19. γαῖης 29. πρόσω sine aster. 29. 30. κάθηται
521, 4. τῶν [Λεπτεα]ῶν? ib. Μεσσαίων] Μακιστίων? 8. τῶν
τε 522, 12. δοκεῖ. . . . πίπτειν 523, 9. τεσσαράκοντα 27.
Αστινῆς sine ast. 524, 2. Σαρωνικόν. καλεῖται δὲ πᾶς 11. ἄλλα
νῦν τὰ μὲν 15. Ἀχαϊκὸν 25. Ἀχαικὸν om. 525, 25. 26.
*Ἄργος ἄνυδρον θεοὶ δ' αὐτὸς οὐδεῖς] Pro θεοῖ δ' αὐτὸς
scripsi ut par erat ἐκ των Δαναοῖς. at Strabo nonnisi priora "Ἄργος ἄνυ-
δρον apposuisse videtur. Δαναοὶ error est typographicus 29. δὴ
526, 8. δέχονται κατὰ τὴν συναλοιφὴν 9. ἐλέγχιστον] Fort. errore
operarum, quamquam fuerunt qui ita scriberent 16. ὅρνις 28. χω-
ρίῳ μὲν κείσθαι 20. om. parentheseos signa, quibus quae inclusi
verba fortasse ne sunt quidem Strabonis 527, 1. εἰπεῖν] Fort. ἐκπε-
σεῖν 4. † ἐν εὐπορίᾳ 11. Πάλινθος 29. ἡγεμονίδας οὔσας
528, 9. Λακωνικὴν 15. συνέβη om. 529, 4. τῆς Ναυπίλιας 7.
Μίδεα pro Μίδεια 8. Πρόσωμνα [καὶ] αὐτῇ 11. οἱ δὲ ἐξ Ἐγ-
μίονης εἰς 12. ἔστιν αὐτῇ 14. ὅπου om. 23. αὐδ? 25. καὶ sine ast.
32. Νικαίαν 530, 6. αὐτῇ 531, 2. . . . ον] Fort. [πλατύτερο]ον
3. ἡ ante Ἐπιδανος abesse malim ib. φησὶ γὰρ 23. Τροιζῆνι
25. τοῦ om. 532, 4. ὑπ' αὐτὸν 534, 5. γραῦδον 26. Τρικο-
ρύθρῳ 535, 18. ὥν om. 20. lacunae signa om. 27. τὸν ἐπὶ
27. εἰς Κόρινθον add. post πλοῦν 28. τὸν φόρτον. αὐτόθι καὶ
πεζῇ † τε τῶν ἐκκομιζομένων 536, 11. Διός om. 537,
23. 24. φρέστα sine ast. Αν φλεβία? 31. ὑποκεσοῦσαν] Scripsi
ὑποῦσαν cum Plethon, nisi praestat υποκεπτώσαν 82. λευ-
κῷ λίθῳ] Fort. λευκῷ λίθον 538, 5. Βοιωτίδος 17. τῆς περὶ
τὸ 539, 15. λώιον 30. ἐγένοντο ib. ἐν ἄλλοις] Fort. εἰς ἄλ-
λοις 540, 14. ἀφίκται Spengelius 541, 3. 4. κατορθονμένων
11. πάντες] Αν πα[λίο]ντες? 15. Εὐφρόνιος 24. Σικυωνίαν
26. Τανάγραν 542, 2. Αλγιαλούς ib. ἀνφικλίσθαι 3. σταδίους
4. Δήμητρος 27. Τοικορυθον 543, 1. φυλάξ] Fort. βίους
2. βίους] Fort. φυλάξ 544, 4. συνοῦσαι 6. οὐ συνελθούσης] Cur-
tius Pelop. I p. 451. οὐ συνεστάσης, quo sensu οὐκ ἔτι συνεστάσης
requirerem. nil mutandum videtur 9. δὲ 30. ἐστήκει] Fort.
ἔστηκεν vel ἐστήκοι 545, 1. θαλάσσης 12. 13. Ἡσίοδος —
Θετταλικῆς in marginem reicienda videntur 546, 2. post βουλο-
μένων add. quae in margine posui 10. παρ' δὲ [Πειρος] ποταμὸς
ib. μέγας * Μέλας] Μέλας Curtius Pelop. I p. 450. 547, 22.

πόλιν pro χώραν 548, 7. post Φαριεῖς quae in marginem reieci, in
quibus Βούρην [κα]θ' scribendum videtur 549, 3. Φαράται 7. τριά-
κοντα om. 30. αὐτή 550, 17. πεντήκοντα] πέντε Müllerus Dor.
II p. 439. 32. περὶ Στύμφαλον 551, 13. εἰς Θαυμακὸν om.
14. καὶ τὸν Πηγείδην om. 552, 7. 8. ὥστε — Κορωνίδην post Αο-
νοῦν 10. 11. λεπτέον om. 13. ἐπὶ] Fort. καὶ 18. σφόδρα pro
οὐτως 21. ποιουντα τὸν κόλπον τὸν om. 22. οὐδ' ἀν om. 25.
ὅπου τὸ pro εἰ μὴ τὸ 26. ἐποιει om. 27. τὰ περὶ . . . τὸν
μυχὸν 553, 9. δὲ om. 11. ἡ Ἀττικὴ om. 28. lacuna pro πά-
λιν ἀπὸ τῆς 30. Ἀττικῆς] Fort. ἀπτῆς 554, 4. ὅν recte post
ὑψηλὸν add. Coraes 5. Ιηζουμένων 9. Μινῶα et sic constanter
10. Νισαλα 555, 3. τεσάρων 3. Νίσος 12. νείμας . . . α 13.
νέμων 26. παροξυνάντων 32. ante ἐποιησαν fort. excidit καλε-
σθαι, quod in similibus locis addere solet Strabo 556, 15. Νισαλα
21. 22. καθάπερ — πνοάς non videntur Strabonis esse 25. 26.
Κυρρεία 31. Δήμητραν 557, 8. 9. Βάιαρος — καλούμενος non
videtur Strabonis esse. postrema ὁ νῦν — καλούμενος suspectavit etiam
Kramerus in addendis 558, 15. Ἐλευσιν 30. Ψυτταλία 559,
1. Ψυτταλίᾳ 6. στομῷ] ἰσθμῷ? 16. τὸ τε? 560, 1. 2.
περὶ τῆς 2. ἐκεῖ τι 5. αὐτοῖς [ἔργοισιν] καταλαβόντων? 6.
ἡρώων [ἴστοιν λεόντον]? 26. καὶ εἰς τὸ 27. Θησείδην . . . υς ἔχει
27. 28. καὶ τὸ Διονυσιακόν, [καὶ δὴ καὶ τὸ] Ολύμπιον? 31.
πλεῖστα om. 561, 4. Ἀττικὴν 12. φιλότιμον] Libri φιλόδημον.
αν φιλεῖδημον? 18. [ἄλλ.] εἰσὶ? 28. προσθήσειν, στὶ 562, 5.
οἱ om. 563, 8. Θορεῖς 12. Θορέας 13. Φάρα] αν Φάρα?
ib. Ἐλεονόσσα 19. φελέοντοι 24. 25. Πρασία 564, 5. τετραορ-
στω 565, 6. Κηφισσός] Debeharn Κηφισός 22. [κείμενα . . .] η
πρὸς 24. ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ om. 27. 28. Πηγάς 28. δρῶν pro
τόπων 29. ἀπὸ τοῦ pro τῇ ἀπὸ 566, 20. χερσαρμένους ἐπὶ [με-
λεῖ] μηδὲ? 21. τῇ om. 569, 14. αἱ om. ib. ἀνάλογον] Hoc re-
vocandum 570, 9. σύριγξ 20. θαλάσσης 25. Σιγηλοῦ] Imo Σι-
γήλου 30. Αμφιάρειον 571, 1. τῇ ἐν om. ib. post Χαλιδα
add. καλοῦσι δὲ Βοιωτιακᾶς Μυκαληττόν, quod Μουκαληττόν scri-
bendum 3. Μυκαληττόν 23. ἀπίοντι 24. Τάναγρα κ[ώμη] · ἡ δὲ
Φαραὶ κώμη] ἐν δεξιᾷ? 572, 14—17. δίαρμα — πολὺ ἐλαττον] Haec fortasse post Ορόβιαι
— Ορόβιαι delenda 32. . . . πόλις τῇ] Μεγαρικῆ?
573, 1. πρόσχωρος το . . . 574 . . . ὑπῆρξε 576, 10. οὗτο
24. 25. τόπων[ν σημήναιντ αν ωστε τῷ] λόγῳ 27. ἀξίων
μηνήμης καὶ τῶν μῆ] χαλεπὸν [δ'] ἐν 577, 2. πειρώμα[θεια τὰς
ἀρχὰς λαβεῖν] ἐνταῦθα 4. 5. χρήσιμον ἢ [ληφθὲν ἐξ ἄλλων]
ημῖν 20. post δεῖ add. εἰσὶ [δὲ] καὶ — τούτῳ, quae in margine po-
sui 578, 19. αὐτὸς ἐ. . . . τοῦ πατέρος 20. μ. . . . τερον
579, 1. εἶνοι 21. θέαν 580, 5. [ὑφ' ἐτέρων] 6 et 10.
Ωκαλαι 581, 10. Κορωνειας] Libri Κορωνίας. Fort. Κορωνής
ib. ἐπικατέω] Operarum error pro ἐπι λαΐον loci nomen fuisse

videtur prope Coroneam. Cf. Hippocrates Epid. III p. 134 et 142 ed. Littr. ἐπὶ τοῦ Αγῆτον, de quo dixi nuper in Commentatione de Hippocratis Epidemiis in Relatt. menstr. Acad. Berol. 1852. 25. Βοιωτίας pro Μεγαρόδος ib. pro αῖ lacuna 582, 8. πολειδίου] Hoc revo-
candum 23. [κι]νηθεὶς 583, 2. 6. Πτῶον 4. Πτώον 17. οὕτε
21. τέκτονος 585, 12. 13. πολυχρηματίσαντας 27. οὕτε μὴ
ομ. 586, 3. ὡν pro ὅν 26. καὶ διαγώσιν 29. πλείστην ομ.
587, 12. παθήσειν 15. Ἀντίνυρα 588, 5. πᾶσα ομ. 589, 12.
Πηληιαδέω ἄνακτος 590, 7. ὁ per errorem irrepit ib. Κίρφι
591, 1. ἐπιμήθη ομ. 592, 31. λεόν· χρημάτων δὲ χάριν τῶν ἀνα-
θημάτων 593, 22. πατωρύχθαι 594, 16. ἀνάκρουσιν 19. ἐπι-
παιωνισμὸν 21. ὡς καὶ τὸ λαμβάξειν add. post πακισμοῖς 23. εἰς
add. ante ἐσχάτους 595, 27. παιωνισμὸν 596, 11. Ἀλκμαίωνος
13. Ἐξ ἀρχῆς γὰρ 14. ὅπισθεν ὁ Μάραθος 23. Θουκυδίδης
δ' ἐν Μεγάροις φησι add. post μυθεύοντι 597, 7. οἱ δ' ἔνοι-
κοῦντες Τραχίνιοι λέγονται] Haec fort. delenda 21. ἐκτίνης 598
11. Πανόπειν Γλήγωνα 18. post Σκύρῳ add. quae nos in margine
posuimus 599, 13. πατέληξεν 18. τούσδε ποτὲ φθ. 19. 20.
Δοκῶν κεύθει ὁμῶς Ὄποις 600, 16. εἴκοσι 601, 7. οἰκεῖται,
[ἄλλα νῦν εὐήροτόν] τι πεδίον 8. καλοῦσιν οὕτως 9. 10. [αἱ
Ἄνγεια, ὡν τὴν χώραν] 11. 16. σύγμα 14. ἀγνοῶν . . . Λάπην]
Excidisso videtur ὥν εν. Ceterum vide ne iniuria erroris accuset Strabo
(si tamen haec Strabonis sunt) Hellanicum; Λάπη enim dici potuit quae
aliis Νάπη, ut Ἐλικενὸς dicebatur Thessalis, qui aliis Ἐνιπανός. vide
supra p. V. 27. ἄλλ' οὐποτε ἄλλων 604, 10. Ἀντίνυραν 29. ἀπαντα
τελευτῇ πᾶσι 605, 32. ἔφα 607, 5. καὶ οἱ [Θετταλιῶται] ἔφε-
ῆς Bultmannus Mythol. vol. 2 p. 277. 608, 4. post στρατείας add.
καὶ οἱ δ' ἐσχατιὴν Δολόπεσσιν ἀνάσσων 5. αὐτῷ ομ. 6. post μό-
νον add. ὀλύγων ἔστιν 12. γὰρ ομ. οἱ μὲν ομ. nec necessaria
sunt 22. δταν οὕτως ομ. 20. Θετίδιον 30. Θετίδιον 610,
17. ἐντεῦθεν δὲ 21. συνφίσαν Φαρσάλιοι] Ita haec suppleverunt
critici; non minus recte possis συνώμισεν Φλικπός 611, 2. Τρα-
χίνα] Τραχίνια? 13. Δαμίαν 613, 3. πρὸς ἔω δὲ ομ. 18. τὴν
Ολταίαν ομ. 22. θαλάσσης 25. μεσογείῳ 614, 25. Φυλλαῖον
615, 8. ἐννενήοντα 9. εἴκοσι 18. Νηλίας et 20. Νηλίαν 616,
10. Μεθώνη 617, 2. καὶ τῆς Δευκαλίας] Haec delenda videntur
3. Ιεραπολιτικῆς] Hoc delendum videtur 5. λιθίας, ὑψ' ἡς
618, 6. μυθεύσθαι sine ast. 10. 11. ὄνούριον 21. ἄλλοι ομ.
619, 4. εἴκοσιν 10. Κερκάφον 620, 5. λευκόγαιον 14. post
ἐκτίνους add. εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν 621, 13. πεδίον
νῦν] Cod. A πεδίον ἔστιν ὁ νῦν. Fort. igitur πεδίον ἔτι νῦν 18.
19. καὶ [ἡ] ἐν Σνερά 21. καὶ — Λάρισα] Haec fort. delenda 29.
καὶ Ὁδησσοῦ ομ. 30. Ολοοσῶν 622, 10. ἐπιτηφότας] Fort.
ἐπειληχότας 11. ὑπό] Fort. [οἱ] ὑπὸ 11. 12. Περραιβικαῖ] Fort.
Περραιβικοὶ 623, 11. τοιοῦτον 624, 5. δὲ ἰδοὺς] Fort. Διδύ-
μοις 7. πολωνοὺς] Fort. Κόρωνις 29. καὶ ομ. 626, 13. Ἐπειδὴ

ἡ Εὐβοια 627, 15. τὸν om. 20. Αἴγιλον 24. Περιάδα 25. ἐν
 ὦ] Fort. ἔνθα 26. καὶ add. ante τοῦ 628, 24. πλησίον om.
 28. πολεῖδιον] Quod revocandum 629, 6. τὸν πίνον 8. Μα-
 λιανῷ 24. Αἰγαλός 630, 16. 17. ὥσπερ — τάργυρεῖα om. 23.
 Εὐβοϊδα] Imo Εὐβοϊδα ib. καμπῆν] Fort. καμπτων 631, 1.
 post Ἐρέτρια add. ἐν δὲ τῇ Ἐρέτριᾳ πόλει ἦν Ταμύναι, quae cum
 πλησίον τοῦ πορθμοῦ coniuncta (in libris haec leguntur post αὐτὸν 3.)
 post κεκομῳδηνται 19. transponenda esse vidit Kr. in notis 3. αὐ-
 τὸν] Fort. ἐνιαυτὸν 19—21. ἐν δὲ — πορθμοῦ] De his vide ad 1.
 632, 1. ὁ γε καὶ 4 et 5. lacunas om. 5. ὥστε τῷ 6. δρᾶν]
 Corrigere δρᾶν 27. οὐδὲν 32. lacuna om. 633, 10. Ἀβαντες pro
 ἀποβανοντες 634, 10. Λαμίαν 21. Παλαιός 636, 31. Γαρ-
 γάσον 637, 13. τηλεφανοῦς· ἀλλὰ κατ' 24. Ἀλκμαιωνίδα
 638, 26. ποιεῖσθαι 642, 1. Ταφιοῦς 10. Κεφαλλήνες, καὶ [οἱ
 μὲν] ὧν' Ὁδυσσεῖ 26. Αἶνος add. post αὐτῇ 644, 5—7. μέμνη-
 ται — ἐθέλων] Haec fort. ex lib. 12 p. 549 addita sunt 11. ἐστιν
 ὁ κύκλος 15. τριακόσιοι 22. πλείους εἰσὶ 23. καὶ add. ante
 πρὸ 645, 9. βούπρωρος 30. Ταφιοῦς 646, 14. 15. Κοιθωτὴ
 15. αἱ om. 16. ἐνικῶς λεγομένη add. post κόλπον 647, 4. οὐχ
 ante οὔτω om. 21. Λυσιμαχία, ut in sqq. 649, 15. ἐπιμεῖναι
 25. Ἀλκμαιωνα hic et in sqq. 653, 16. + λέγων post Ἐπισῶν 19.
 πιστὸν om. 24. ἀπελθόντος 654, 12. lac. signa om. Excidit
 fort. νέμειν 656, 25. καὶ — ἐμπλένεσθαι om. 658, 3. γένηται
 659, 22. "Αγδιστιν]" Αγγδιστιν C. Keilius 24. Σικυλήνην 24.
 "5. καὶ Κυβῆβην om. 660, 10. διά τε "Ομηρού" 11—13 ἀς ἐπ
 — μητρὸς om. 13. pro μητρὸς pone μητρός] 14. post εὐρήματα
 dele parentheses notam 29. Παλημήδῃ 30. οὐ σὺν] Fort. θύσων
 ib. ιωμᾶν, ὅς] Fort. ιωιάν ὅς 661, 24. 25. Κοτύτια 28
 σεμνὰ Κότυν] V. Hermannum Aeschyl. 31. δακτυλόδεικτον 662,
 22. φάσσων] Fort. ἀράσσων, ut sit paroemiacus 663, 4. εὗροι om.
 9. ὄρειαι ib. ἐγένοντο 665, 4. Κορυβάντιον 10. ἥθεοι
 667, 4. αὐτῇ 25. ὑπὸ τῷ μέρεσθος] Fort. ὑπὸ ποντὶ μέγιστον
 668, 5. Λυκτίων 669, 9. Βοῖον 23. 27. 30. Λύκτον 670, 5.
 ὄμωνυμος] Malim ὄμωνύμως 671, 2. Ζεὺς om. 673, 14. λόγῳ·
 + ἄθιτων 15. φησὶν 674, 21. 22. καὶ Οἰλισσην 675, 14. ποιη-
 τῆς] Fort. Νέστωρ 21. [οὔτε] κατὰ τὴν στρατείαν — ἐκεῖθεν add.
 post αὐτῷ 676, 7. + ἐν 8. ἀνδρεῖα συσσίτια, ὅπως 677, 8.
 Κηῆς 19. malim Κισσοῦ 680, 11. lac. signa om. 26. αἰσχρόν
 post τυχεῖν 681, 18. Θήρα 682, 18. ἐπιβαίνειν 27. δ' οὐν
 πεντεκαΐδεκα om. 683, 6. καύμιον] Quod revocandum 14. ἦ
 με] Fort. οὐ με 15. δειλὴ ἦ] Fort. Ἠ δειλῆ 30. 31. Ρήνεια] Imo
 Ρήνεια, ut monuit Lobeckius ib. τέτρασι] Quod fortasse cupidius
 reieci quam debebam 684, 6. 7. Κορησσα hic et in sqq. 685, 3.
 μηκύνυνονται — συλλαβῆν in parenth. 686, 2. Δερλα 12. post Λέρος
 add. quae nos in margine posuimus 689, 12. πλησιάζονται] Fort.
 ἐπιπολάζονται 690, 16. ἐς 691, 2. καὶ om. 25. ὑπέρκεινται

693, 12. ἐλάσσων 694, 20. ὅ ante ὅνομα add. ib. Ἀκρα
 695, 2. Φαναγορία et sic constanter 24. Τορεάται 696, 17.
 Ῥέναις 697, 13. Ζυγίων 24. τοῦ] Malim τῷ, vel τῷ τοῦ 29
 μέγαν] λιμένα? 699, 6. οὗτα δεῖ δέξασθαι post δρόμος 7. 700,
 3. πολλήν τε 6. 7. ἐπεκόμιζον 14. 15. πανωθείσης — Εὐριπί-
 δης] Haec fort. delenda 701, 4. περὶ δὲ τὴν Διοσκουριάδα φεὶ δὲ
 Χαρῆς ποταμὸς add. post Κολχίδος 14. δὲ om. 21. 22. θαυμα-
 στοῖς, [δὲ] καὶ τοὺς φαρμάκους τετρωμένους 26. μὲν om. nec neces-
 sarium est 29. καὶ δὴ καὶ ἡ γε] Corrige operarum errorem δὴ καὶ
 ib. δὴ καὶ ἡ γε operarum error pro δὴ ἡ γε ib. Ἰβηρία * καὶ * οἰκε-
 ται 702, 10. Ἀράγωνα 14. ἄλλους om. 29. γενόμενος 703,
 4. ἐπ' αὐτῷ 24. ἀγχιστεῖαν] Fort. add. ἀεὶ 704, 16. προπ-
 πτουσα? 22. ἐπιγελῶντα] Fort. ἐπέκεδα ὄντα 705, 2. ἄλλὰ τά-
 γαδὰ δσπαρτα 3. ἀπαντα 5. γοῦν 11. ἐκείνῳ 12. δὲ pro δ'
 αἱ 13. δὲ om. 27. στρατιᾶς 28. δισμυρόντος 706, 13. εἴκοσι
 707, 4. καὶ add. ante τὸ 708, 28. τῷ om. 710, 1. 2. θρυ-
 ληθέντα + καν ἀμολόγηται 5. ἔῶν 7. καὶ ast. incl. 711, 12.
 Χαιμοῦται 18. lac. om. 21. ἔστειλε 712, 24. προσβόρους
 26. πρότερον] πορρωτέρῳ Hermannus ad Aeschylum vol. II p. 163.
 30. ἀκριβῶς 713, 8. μῆτα om. 8. 9. παρά γε εἰδότων, + σκο-
 ποῦντες δ' αὐτὸ δὲ μόνον τοῦτο, ὅτι 714, 22. τετρακοσίους. καὶ
 + διὰ τὸ μὲν εἶδος τῆς εὐδαιμονίας σημεῖα ἡγοῦνται ἡ μὲν γὰρ
 115, 5. καὶ pro ἀλλ', quod nunc revocaverim, deleta cum Corae par-
 ticula μὲν 716, 1. οὖν add. ante συνῆγον 6. προσφέρεται 14.
 προσέθεσαν * καὶ * τούτῳ 717, 6. 7. ἡλιαζόμενοι. ἄλλως δ' ἄλλοι
 13. ἀρξάμενον 718, 2. Δάαι 720, 2. ἄμα τε] Malim aut
 ἄμα sine τε aut τε ἄμα 4. ὃν 721, 8. ἡ add. ante δίαιτα 10.
 11. σκαῖός δὲ 722, 8. 9. δισχίλιοι δισμύροι] Transposuit etiam
 Spengelius 723, 14. + ἄλλήλους 724, 20. διαρρέεται ποτίζονται
 δ' αὐτὰ] Scribendum διαρρέεται ποτίζονται αὐτὰ 725, 1. Ἀχαΐα] Corruptum videtur 19. Ἰσάμον 21. Πατταληνὴν 28. 29. ἐνβάλ-
 λων] Corrigunt ἐμβάλλων. malim εἰσβάλλων 20. Δάραψα 30. Εὐ-
 κρατιδία 726, 2. 3. Τορούαν 10. ἥθεσι 26. ποιεῖν] Thyr-
 whittus νοεῖν. malim ὑπονοεῖν, quamquam etiam alia hic miserrime
 corrupta sunt 727, 8. Ὁξον 22. om. lacunae signa 23. τοῦνομο
 om. 728, 20. ἔξω 729, 1. 9. Ἰμάνον 5. μείονδον et hic et in
 sqq. 730, 26. δύνανται 31. Τακνούαν] Hoc fortasse ex Τακνόφων
 δ' ἵδιον corruptum est 731, 11. οὖν om. 27. ἐκτεινόμενος
 732, 14. 15. προσβόρῳ 733, 13. πρόσβορα 21. αἱ add. ante
 τοῦ 734, 21. Τύρι 735, 19. χειμερινὸν δὲ om. ib. Οὔερα
 736, 8. εἰκός 22. χειμάδιον] Fort. χειματιστήριον 737, 15.
 Ῥάγαις] An Ῥάγα? 16. Ἡράκλεια om. 738, 8. Μηδικήν 17.
 πλάτος 740, 3. νέμειν] Fort. νέμονται ἔχειν, viam monstrante
 Kramero qui coni. ἔχονταις νέμειν 742, 3. θάλασσαν 10. προ-
 βορώτατοι 15. ἀς om. 19. περιεχούσας] De his v. Vindic. p. 190

743, 15. ἔχουσα om. 20. Ἀρτάγης 21. Ἄδων 744, 19.
 Τσπιράτιδι 21. ἀπήκθη 749, 10. lacunae signa om. ib. δ' om.
 752, 9. δ' pro ἦν 753, 2. + ἀπλάτῳ 16. ὄχτετον πλάτει] 24. εὐρυοδί-
 νης 30. post Ἀγύπτῳ add. τρέτη — φανεράν, quae 754, 24. post
 ἐκεῖνον transponenda esse Kr. vidit in notis 754, 17. δ' om. 22.
 δ' om. 24. 25. Διὸς Δακή οὐ λειπομένη 31. Δύο δὲ ἔχουσι
 μόνον στρατηγίαι πόλεις 755, 31. καὶ ἐμβελεῖς] Fort. κάνει μετε-
 λεῖς vel καὶ ἐκβελεῖς 756, 25. λιθίαν 757, 18. αὐτῶν 19. ἐκ
 pro καὶ ib. τῶν add. ante ἐν 24. Κυρίου 758, 7. καὶ add.
 ante καρποῖς 9. Βογαδκούνα 24. ἄλλος δ' [εἰς] τὰς διόπτρας
 759, 30. μὲν] Fort. μέντοι, vel μὲν δὴ 760, 2. τε 761, 9.
 οὐδὲν 764, 4. μεσημβρίας 5. ἔξησι ib. εἰς 13. διεπον
 765, 16. ἐκατὸν] Hoc corruptum 767, 27. ἡ om. 32. Γαδιλω-
 νῆται 768, 13. Γαδιλῶνα 14. ἐννοοσίους 27. 28. Σιδηρῆν
 ut in sqq. 769, 29. εὐφορίαν 770, 4. 5. τῷ + Ἰκενι γεωμέτρῃ
 15. εἶτα + Χυτωρος 28. Ἀππαίται 771, 28. προαλέστερον·
 δελεᾶξομένους μόνοι οὐτοι] V. Vindic. p. 193. 772, 14. Βρύγοι
 22. οὐν om. 773, 2. ἀν om. 17. καὶ πᾶς] Delendum videtur καὶ
 22. Ἀλαζία] Malim Ἀλαζήν 23 et 26. Ὁδρύσσης 774, 1. 2.
 Ἀμαξόνων 2. δ' ἐν pro δὲ 775, 4. οὐθ' 7. Ἐνέαν 27. πο-
 λεμῆσαντας 30. συμμαχήσαντας 32 et sqq. Φρεγίν. οὖ δα τότ'
 ἥλθον Ἀμαξόνες 776, 3. οὐδ' 5. οὐδ' 20. Βαμωνίτιδι
 21. Πιμολίτιδι καὶ τῇ Γαζαλούνίτιδι 31. κατέρο 777, 12. ἀν
 add. ante διὰ 15. ἀν om. 778, 2. τοῦτων καὶ om. 18. καὶ
 Σάμον add. post λέγων 779, 9. δεικνύηται 780, 16. Φαρνα-
 κίας] Rectius fuerit Φαρνακείας 781, 24. περὶ τε 786, 6. καὶ
 ἡ τοῦ 28. πόλεις om. 787, 1. Γαζηλωτὸς 30. 31. πόλεως ἄμα
 τε καὶ 788, 24. Εἱμηνῆς 27. Τρόκων 28. Εἱμηνῆ 789,
 11. οὐδ' 16. et 20. Σανδαρακούργιον 792, 19. τὸ add. ante
 φύλον 20. τε 31. τι om. 794, 10. οἰσται pro οἵτι εστι 19
 Αντιγονίαν 795, 14 — 16. Κλεοφάνης τε ὅγτῳ, δ' Μυρλεανός,
 Ασκληπιάδης τε ἱατρός, δ' Προυσιεὺς] Correxit et supplevit Lehrius
 796, 19. Τρόκμοι, quod ubique correxi 24. * Βογοδιατάρῳ] Βρογι-
 τάρῳ C. 797, 7. τνισὸν
 Fort. τὰ Ἰσαύρα numero duali 29. [τὴν δὲ] Εὐερμῆ 799, 10.
 Ἰσαύριαν] Praestat fort. Ἰσαύραν pro eo quod posui Ἰσανραν 19.
 καὶ + Κιλκίων add. post οὐσαν 800, 29. προσβόροις 801, 20.
 ὁρθηλὸν] Ex ὁρθόναντον corruptum ex e suspicatur Lobeckius 803,
 14. post ἄλλήλους add. πρὸς μὲν ἄλλήλους 805, 26. al ante Κιμ-
 μερίων fort. delendum 27. τε om. 809, 24. Δορυλάτον 810,
 29. μικρὰς 811, 10. καταφερεῖ 13. γενόμενος [μέγας] Μαλαν-
 δρος 24. ἀπέδειξεν? 30. ὑπολειβεσθαι 812, 22. + συνέπεσεν

813, 12. μεσόγαιαν 18. ὁμάνυμον 29. διὰ τὸν λίθον καὶ
τὴν ἀπό 814, 13. ὑπόνομον 20. συνέστηκε 24. τι συμβαίνει
38. βρυχήμασιν ἔργονσι πᾶν δ' ἐρεχθεῖ] πᾶν τ' Ἐρέχθειον
πέδον? an πᾶν δ' ἐρέχθεται πέδον?

Berolini d. XXVI. m. Ianuarii a. MDCCCLIII.

Augustus Meineke.

— Z —

Εἰρηκόσι δ' ἡμῖν περὶ τῆς Ἰβηρίας καὶ τῶν Κελτικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν Ἰταλικῶν σὺν ταῖς πλησίον νήσοις ἐφεξῆς ἀν εἰη λέγειν τὰ λειπόμενα τῆς Εὐρώπης μέρη, διελοῦσι τὸν ἐνδεχόμενον τρόπον. λείπεται δὲ τὰ πρὸς ἔω *μὲν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μέχρι τοῦ Τανάϊδος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος λίμνης, καὶ ὅσα μεταξὺ τοῦ Ἀδρίανου καὶ τῶν ἀφιστερῶν τῆς Ποντικῆς θαλάττης μερῶν ἀπολαμβάνει πρὸς νότον μέχρι τῆς Ἐλλάδος καὶ τῆς Προκοπτίδος ὁ Ἰστρός· διαιρεῖ γὰρ οὗτος ἄπασαν ὡς ἐγγυτάτῳ δίκαια τὴν λεχθεῖσαν γῆν, μέγιστος τῶν κατὰ τὴν Εὐρώπην ποταμῶν, δέων πρὸς νότον κατ' ἀρχάς, εἰτ' ἐπιστρέψων εὐθὺς ἀπὸ τῆς δύσεως ἐπὶ τὴν ἀνατολὴν καὶ τὸν Πόντον. ἀρχεται μὲν 10 οὖν ἀπὸ τῶν Γερμανικῶν ἀκρων τῶν ἐσπερίων, πλησίον δὲ καὶ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ, διέχων αὐτοῦ περὶ χιλίους σταδίους· τελευτῇ δ' εἰς τὸν Πόντον οὐ πολὺ ἀπωθεν τῶν τοῦ Τύρα καὶ τοῦ Βορυθνέους ἐκβολῶν, ἐκκλίνων πας πρὸς ἀρκτούς. προσάρντια 20 μὲν οὖν ἔστι τῷ Ἰστρῷ τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου καὶ τῆς Κελτικῆς· ταῦτα δ' ἔστι τά τε Γαλατικὰ ἐθνη καὶ τὰ Γερμανικὰ μέχρι Βασταρνῶν καὶ Τυρεγετῶν καὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Βορυθνέους, καὶ ὅσα μεταξὺ τούτου καὶ Τανάϊδος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος εἰς τε τὴν 25 μεσόγαιαν ἀνατείνει μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ καὶ τῇ Ποντικῇ κλίνεται θαλάττῃ· μεσημβρινὰ δὲ τά τε Ἰλλυρικὰ καὶ τὰ Θράκια καὶ ὅσα τούτοις ἀναμέμικται τῶν Κελτικῶν ἥτινων ἄλλων, μέχρι τῆς Ἐλλάδος. λέγωμεν

STRABO II.

1

C.289
1

δὲ πρῶτον περὶ τῶν ἐκτὸς τοῦ Ἰστρου· πολὺ γὰρ
ἀπλούστερα τῶν ἐπὶ θάτερα μερῶν ἔστιν.

C.290 ² Εὐθὺς τοίνυν τὰ πέραν τοῦ Ρήνου μετὰ τοὺς
Κελτοὺς πρὸς τὴν ἔω κεκλιμένα Γερμανοὶ νέμονται,
μικρὸν ἐξαλλάττοντες τοῦ Κελτικοῦ φύλου τῷ τε πλε- 5
ονασμῷ τῆς ἀγριότητος καὶ τοῦ μεγέθους καὶ τῆς ἔκαν-
θότητος, τάλλα δὲ παραπλήσιοι καὶ μορφαῖς καὶ ἥθεσι
καὶ βίοις ὅντες, οἵους εἰρήναμεν τοὺς Κελτούς. διὸ δὴ
καὶ μοι δοκοῦσι Ρωμαῖοι τοῦτο αὐτοῖς θέσθαι τοῦ- 10
νομα ὡς ἂν γνησίους Γαλάτας φράξειν βουλόμε-
νοι· γνήσιοι γὰρ οἱ Γερμανοὶ κατὰ τὴν Ρωμαίων διά-
λεκτον.

³ "Εστι δὲ τὰ μὲν πρῶτα μέρη τῆς χώρας ταύτης τὰ
πρὸς τῷ Ρήνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν ἀπὸ τῆς πηγῆς ἀρ-
χαμένοις· σχεδὸν δέ τι καὶ τοῦτ' ἔστι τὸ ἐσπέριον τῆς 15
χώρας πλάτος, ἡ ποταμία πᾶσα. ταύτης δὲ τὰ μὲν εἰς
τὴν Κελτικὴν μετήγαγον Ρωμαῖοι, τὰ δὲ ἔφθη μετα-
στάγτα εἰς τὴν ἐν βάθει χώραν, καθάπερ Μαρσο-
λοιποὶ δὲ εἰδὸν ὀλίγοι καὶ τῶν Σουγάμιβρων μέρος.
μετὰ δὲ τοὺς παραποταμίους τάλλα ἔστιν ἔθνη τὰ με- 20
ταξὲν τοῦ Ρήνου καὶ τοῦ Ἀλβιος ποταμοῦ, ὃς παράλ-
ληλός πως ἐκείνῳ φειτὸς πρὸς τὸν ὠκεανόν, οὐκ ἐλάττω
χώραν διεξιὼν ἥπερ ἐκεῖνος. εἰσὶ δὲ μεταξὲν καὶ ἄλλοι
ποταμοὶ πλωτοὶ (ῶν ἐν τῷ Ἀμασίᾳ Δροῦσος Βρουκτέ-
ρους κατεναυμάχησε), φέοντες ὠσαύτως ἀπὸ νότου 25
πρὸς βορρᾶν καὶ τὸν ὠκεανόν. ἐξηρται γὰρ ἡ χώρα
πρὸς νότον καὶ συνεχῆ ταῖς Ἀλπεσὶ ποιεῖ δάχνους τινὰ
πρὸς ἔω τεταμένην, ὡς ἂν μέρος οὖσαν τῶν Ἀλπεων·
καὶ δὴ καὶ ἀπεφήναντό τινες οὔτες διὰ τε τὴν λεχθεῖ-
σαν θέσιν καὶ διὰ τὸ τὴν αὐτὴν ὑλὴν ἐκφέρειν· οὐ μὴν 30
ἐπὶ τοσοῦτό γε ὑψος ἀνίσχει τὰ ταύτη ὅρη. ἐνταῦθα
δὲ ἔστιν ὁ Ἐρκύνιος δρυμὸς καὶ τὰ τῶν Σοήβων ἔθνη,

τὰ μὲν οἰκοῦντα ἐντὸς τοῦ δρυμοῦ, ἐν οἷς ἔστι καὶ τὸ Βουλαιμὸν τὸ τοῦ Μαροβόδου βασίλειον, εἰς ὃν ἐκεῖνος τόπον ἄλλους τε μετανέστησε πλείους καὶ δὴ καὶ τοὺς ὁμοεθνεῖς ἔαυτῷ Μαρκομανούς. ἐπέστη γὰρ
 5 τοῖς πράγμασιν οὗτος ἐξ ἴδιωτον μετὰ τὴν ἐκ Ρώμης ἐπάνοδον· νέος γὰρ ἦν ἐνθάδε καὶ εὐεργετεῖτο ὑπὸ τοῦ Σεβαστοῦ, ἐπανελθὼν δὲ ἐδυνάστευσε καὶ κατεκήσατο πρὸς οὓς εἶπον Λουγίους τε, μέγα ἔθνος, καὶ Ζούμους καὶ Γούτωνας καὶ Μουγίλωνας καὶ Σιβίνους
 10 καὶ τῶν Σοήβων αὐτῶν μέγα ἔθνος, Σέμινωνας. πλὴν τά γε τῶν Σοήβων, ὡς ἔφην, ἔθνη τὰ μὲν ἐντὸς οἰκεῖ,
 τὰ δὲ ἐκτὸς τοῦ δρυμοῦ, ὅμορα τοῖς Γέταις. μέγιστον
 μὲν οὖν τὸ τῶν Σοήβων ἔθνος· διῆκει γὰρ ἀπὸ τοῦ
 'Ρήνου μέχρι τοῦ¹ Αλβιος· μέρος δέ τι αὐτῶν καὶ πέραν
 15 τοῦ¹ Αλβιος νέμεται, καθάπερ Ερμόνυδοροι καὶ Λαγκό-
 βαρδοί· νυνὶ δὲ καὶ τελέως εἰς τὴν περαιάν οὗτοί γε C.291
 ἐκπεπτώκασι φεύγοντες. κοινὸν δ' ἔστιν ἄπασι τοῖς
 ταύτῃ τὸ περὶ τὰς μεταναστάσεις εὐμαρεῖς διὰ τὴν λι-
 τότητα τοῦ βίου καὶ διὰ τὸ μὴ γεωργεῖν μηδὲ θησαυ-
 20 ρίζειν, ἀλλ' ἐν καλυβίοις οἰκεῖν ἐφήμερον ἔχουσι πα-
 ρασκευὴν· τροφὴ δ' ἀπὸ τῶν θρεμμάτων ἡ πλείστη
 καθάπερ τοῖς νομάσιν, ὥστ' ἐκείνους μιμούμενοι τὰ
 οἰκεῖα ταῖς ἀρμαμάξαις ἐπάραντες διη ἀν δόξῃ τρέ-
 πονται μετὰ τῶν βοσκημάτων. ἄλλα δ' ἐνδεέστερα
 25 ἔστιν ἔθνη Γερμανικὰ Χηροῦσκοί τε καὶ Χάττοι καὶ
 Γαμαβούσιοι καὶ Χαττουάριοι· πρὸς δὲ τῷ ὀκεανῷ
 Σούγαμβοι τε καὶ Χαῦθοι καὶ Βρούκτεροι καὶ Κίμ-
 βροι Καῦκοι τε καὶ Καοῦλκοι καὶ Καμψιανοί καὶ ἄλ-
 λοι πλείους. ἐπὶ ταύτᾳ δὲ τῷ¹ Αμασίᾳ φέρονται Βί-
 30 σουργίς τε καὶ Λουπίας ποταμός, διέχων 'Ρήνου περὶ

1. post δρυμοῦ: καθάπερ τὰ τῶν κολδούων (Κοαδούων)

έξακοσίους σταδίους, δέων διὰ Βρουκτέρων τῶν ἐλαττόνων. ἔστι δὲ καὶ Σάλας ποταμός, οὗ μεταξὺ καὶ τοῦ Ρήνου πολεμῶν καὶ κατορθῶν Δροῦσος ἐτελεύτησεν ὁ Γερμανικός. ἔχειρώσατο δ' οὐ μόνον τῶν ἐθνῶν τὰ πλεῖστα, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ παράπλεῳ νήσους, ὥν ἔστι ὅ καὶ ἡ Βυργανίς, ἣν ἐκ πολιορκίας εἶλε.

- 4 Γυνώριμα δὲ ταῦτα κατέστη τὰ ἐθνη πολεμοῦντα πρὸς Ρωμαίους, εἰτ' ἐνδιδόντα καὶ πάλιν ἀφιστάμενα ἢ καὶ καταλείποντα τὰς κατοικίας· κανὸν πλείω δὲ γυνώριμα ὑπῆρξεν, εἰ ἐπέτρεπε τοῖς στρατηγοῖς ὁ Σεβαστὸς 10 διαβαίνειν τὸν "Αλβιν μετιοῦσι τοὺς ἔκεισε ἀπανισταμένους. υἱοῦ δ' εὐπορώτερον ὑπέλαβε στρατηγεῖν τὸν ἐν χερσὶ πόλεμον, εἰ τῶν ἔξι τοῦ "Αλβιος καθ' ἡσυχίαν δύτων ἀπέχοιτο καὶ μὴ παροξύνοι πρὸς τὴν κοινωνίαν τῆς ἔχθρας. ἥρξαντο δὲ τοῦ πολέμου Σούγαμβοι πλη- 15 σίον οἰκοῦντες τοῦ Ρήνου, Μέλωνα ἔχοντες ἡγεμόνα· κακεῖθεν ἥδη διεδέχοντο ἄλλοτ' ἄλλοι δυναστεύοντες καὶ καταλυόμενοι, πάλιν δ' ἀφιστάμενοι, προδιδόντες καὶ τὰ ὄμηρα καὶ τὰς πίστεις. πρὸς οὓς ἡ μὲν ἀπιστία μέγα ὄφελος, οἱ δὲ πιστευθέντες τὰ μέριστα κατέβλα- 20 φαν, καθάπερ οἱ Χηρούσκοι καὶ οἱ τούτοις ὑπήκοοι, παρ' οὓς τρία τάγματα Ρωμαίων μετὰ τοῦ στρατηγοῦ 'Βάρου Κουντιλλίου παρασπονδήθεντα ἀπώλετο ἐξ ἐνέδρας. ἔτισαν δὲ δίκαιοις ἀπαντεῖς καὶ παρέσχον τῷ νεωτέρῳ Γερμανικῷ λαμπρότατον θρίαμβον, ἐν ᾧ 25 ἐθριαμβεύθη τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν σώματα καὶ γυναικῶν, Σεγιμοῦντός τε Σεγέστου υἱός, Χηρούσκων ἡγεμών, καὶ ἀδελφὴ αὐτοῦ, γυνὴ δ' Ἀρμενίου τοῦ πολεμαρχήσαντος ἐν τοῖς Χηρούσκοις ἐν τῇ πρὸς 'Βάρου C.292 Κουντιλλίου παρασπονδήσει καὶ υῦν ἔτι συνέχοντος 30 τὸν πόλεμον, διομα Θουσνέλδα, καὶ υἱὸς τριετῆς Θουμέλικος· ἔτι δὲ Σεσίθακος, Σεγιμήρου υἱὸς τῶν Χη-

ρούσκων ἡγεμόνος, καὶ γυνὴ τούτου Ραμίς, Οὐκρομή-
ρου θυγάτηρος ἡγεμόνος Χάττων, καὶ Λευδόριξ, Βαιτό-
ριγος τοῦ Μέλωνος ἀδελφοῦ υἱός, Σούγαμβρος. Σε-
γέστης δὲ ὁ πενθερὸς τοῦ Ἀρμενίου καὶ ἔξ ἀρχῆς διέστη
5 πρὸς τὴν γυνώμην αὐτοῦ καὶ λαβὼν καιρὸν ηὔτομόλησε
καὶ τῷ θριάμβῳ παρῆν τῶν φιλάττων, ἐν τιμῇ ἀγό-
μενος. ἐπόμπευσε δὲ καὶ Λίβης τῶν Χάττων Ιερεύς,
καὶ ἄλλα δὲ σώματα ἐπομπεύθη ἐκ τῶν πεπορθμένων
ἔθνων, Καούλκων Καμψανῶν Βρουκτέρων Ούσίπων
10 Χηρούσκων Χάττων Χαττοναρίων Λαυδῶν Τουβατ-
τίων. διέχει δὲ τοῦ Ἀλβιος ὁ Ρήνος περὶ τρισχιλίους
σταδίους, εἰ τις εὐθυπορούσας ἔχοι τὰς ὁδούς· νυνὶ
δὲ διὰ σκολιᾶς καὶ ἐλώδους καὶ δρυμῶν κυκλοπορεῖν
ἀνάγκη.

15 'Ο δὲ Ἐρκύνιος δρυμὸς πυκνότερος τέ ἐστι καὶ με- 5
γαλόδενδρος ἐν χωρίοις ἐρυμνοῖς κύκλου περιλαμβά-
νων μέγαν, ἐν μέσῳ δὲ ἴδρυται χώρα παλῶς οἰκεῖσθαι
δυναμένη, περὶ ἣς εἰρήκαμεν. ἐστι δὲ πλησίου αὐτῆς
ἡ τε τοῦ Ἰστρου πηγὴ καὶ ἡ τοῦ Ρήνου καὶ ἡ μεταξὺ
20 ἀμφοῖν λίμνη καὶ τὰ ἐλη τὰ ἐκ τοῦ Ρήνου διαχεόμενα.
ἐστι δ' ἡ λίμνη τὴν μὲν περίμετρον σταδίων πλειόνων
ἢ πεντακοσίων, δίαρμα δὲ ἐγγὺς διακοσίων. ἔχει δὲ
καὶ νῆσον, ἥ ἔχρηστο δρυμητηρίῳ Τιβέριος ναυμαχῶν
πρὸς Θινδολικούς. νοτιωτέρα δ' ἐστὶ τῶν τοῦ Ἰστρου
25 πηγῶν καὶ αὕτη, ὡστ' ἀνάγκη τῷ ἐκ τῆς Κελτικῆς ἐπὶ¹
τὸν Ἐρκύνιον δρυμὸν ιόντι πρῶτον μὲν διαπερᾶσαι
τὴν λίμνην, ἐπειτα τὸν Ἰστρον, εἰτ' ἦδη δι' εὐπετεστέ-
ρων χωρίων ἐπὶ τὸν δρυμὸν τὰς προβάσεις ποιεῖσθαι
δι' ὀροπεδίων. ἡμερήσιον δ' ἀπὸ τῆς λίμνης προελθὼν
30 ὃδὸν Τιβέριος εἶδε τὰς τοῦ Ἰστρου πηγάς. προσάπτον-

25. post αὕτη: καὶ δ' Ἐρκύνιος δρυμός

ταὶ δὲ τῆς λίμνης ἐπ' ὀλίγον μὲν οἱ Ραιτοί, τὸ δὲ πλέον
 Ἐλεήττιοι καὶ Ὀινδολικοί . . . καὶ ἡ Βοΐων ἐφημία.
 μέχρι Παννονίων πάντες, τὸ πλέον δὲ Ἐλεήττιοι καὶ
 Ὀινδολικοί, οἰκοῦσιν ὁροπέδια. Ραιτοί δὲ καὶ Ναωρι-
 κοὶ μέχρι τῶν Ἀλπείων ὑπερβολῶν ἀνίσχουσι καὶ πρὸς 5
 τὴν Ἰταλίαν περινεύουσιν, οἱ μὲν Ἰνδούρδοις συνά-
 πτοντες οἱ δὲ Κάρνοις καὶ τοῖς περὶ τὴν Ἀκυληίαν χω-
 ρίοις. ἔστι δὲ καὶ ἄλλη ὑλη μεγάλη Γαβρῆτα ἐπὶ τάδε
 τῶν Σοήβων, ἐπέκεινα δὲ ὁ Ἔρκυνιος δρυμός· ἔχεται
 δὲ κάκελνος ὑπὲρ αὐτῶν.

10

2 Περὶ δὲ Κίμβρων τὰ μὲν οὐκ εὖ λέγεται, τὰ δὲ
 ἔχει πιθανότητας οὐ μετρίας. οὔτε γὰρ τὴν τοιαύτην
 αἰτίαν τοῦ πλάνητας γενέσθαι καὶ ληστρικοὺς ἀποδέ-
 ἔξαιτ' ἄν τις, ὅτι χερρόνησον οἰκοῦντες μεγάλη πλημ-
 μυρίδι ἔξελαθεῖσιν ἐκ τῶν τόπων· καὶ γὰρ νῦν ἔχουσι 15
 C.293 τὴν χώραν ἥν εἶχον πρότερον, καὶ ἔπειμψαν τῷ Σε-
 βαστῷ δῶρον τὸν Ιερώτατον παρ' αὐτοῖς λέβητα, αἰ-
 τούμενοι φιλίαν καὶ ἀμνηστίαν τῶν ὑπηργμένων, τυ-
 χόντες δὲ ὡς ἡξίουν ἀπῆραν· γελοῖον δὲ τῷ φυσικῷ
 καὶ αἰσθίῳ πάθει διს ἐκάστης ἡμέρας συμβαίνοντι 20
 προσοργισθέντας ἀπελθεῖν ἐκ τοῦ τόπου. ἔοικε δὲ
 πλάσματι τὸ συμβῆναι ποτε ὑπερβάλλονταν πλημμυ-
 ρίδα· ἐπιτάσεις μὲν γὰρ καὶ ἀνέσεις δέχεται, τεταγμέ-
 νας δὲ καὶ περιοδιζούσας, ὁ ἀκεανὸς ἐν τοῖς τοιούτοις
 πάθεσιν. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ ὁ φῆσας ὅπλα αἰρεσθαι πρὸς 25
 τὰς πλημμυρίδας τοὺς Κίμβρους, οὐδὲ ὅτι ἀφοβίαν οἱ
 Κελτοί ἀσκοῦντες κατακλύζεσθαι τὰς οἰκίας ὑπομέ-
 νουσιν, εἰτ' ἀνοικοδομοῦσι, καὶ ὅτι πλείων αὐτοῖς
 συμβαίνει φθόρος ἐξ ὕδατος ἢ πολέμου, ὅπερ Ἔφορός
 φησιν. ἡ γὰρ τάξις ἡ τῶν πλημμυρίδων καὶ τὸ τὴν 30
 ἐπικλυζομένην χώραν εἶναι γυνώριμον οὐκ ἔμελλε τοι-
 αύτας τὰς ἀτοπίας παρέξειν. διს γὰρ ἐκάστης ἡμέρας

τούτου συμβαίνοντος τὸ μηδ' ἄπαξ αἰσθάνεσθαι φυ-
σικὴν οὖσαν τὴν παλίρροιαν καὶ ἀβλαβῆ, καὶ οὐ μό-
νοις τούτοις συμβαίνονταν ἀλλὰ τοῖς παρωκεανίταις
πᾶσι, πῶς οὐκ ἀπίθανον; οὐδὲ Κλείταρχος εὗ· φησὶ
5 γὰρ τοὺς ἵππεας ἰδόντας τὴν ἔφοδον τοῦ πελάγους
ἀφιππάσασθαι καὶ φεύγοντας ἐγγὺς γενέσθαι τοῦ πε-
ρικαταληφθῆναι. οὕτε δὲ τοσούτῳ τάχει τὴν ἐπίβασιν
ὅρμωμένην ἴστοροῦμεν, ἀλλὰ λεληθότως προσιοῦσαν
τὴν θάλατταν· οὕτε τὸ καθ' ὑμέραν γινόμενον καὶ
10 πᾶσιν ἔναυλον ἥδη ὃν τοῖς πλησιάζειν μέλλουσι πρὸν ἦ-
θεάσασθαι, τοσοῦτον ἔμελλε παρέξεσθαι φόβον ὥστε
φεύγειν, ὡς ἂν εἰ ἕξ ἀδοκήτου προσέπεσε.

Ταῦτά τε δὴ δικαίως ἐπιτιμᾷ τοῖς συγγραφεῦσι 2
Ποσειδώνιος καὶ οὐ κακῶς εἰκάζει, διότι ληστρικοὶ ὅν-
15 τες καὶ πλάνητες οἱ Κίμβροι καὶ μέχρι τῶν περὶ τὴν
Μαιῶτιν ποιήσαιντο στρατείαν, ἀπ' ἐκείνων δὲ καὶ ὁ
Κιμμέριος κληθείη Βόσπορος, οἶνον Κιμβρικός, Κιμμε-
ρίους τοὺς Κίμβρους ὀνομασάντων τῶν Ἑλλήνων.
Φησὶ δὲ καὶ Βοίους τὸν Ἐρκύνιον δρυμὸν οἰκεῖν πρό-
20 τερον, τοὺς δὲ Κίμβρους ὄρμήσαντας ἐπὶ τὸν τό-
πον τοῦτον, ἀποκρουσθέντας ὑπὸ τῶν Βοίων ἐπὶ τὸν
"Ιστρὸν καὶ τοὺς Σκορδίσκους Γαλάτας καταβῆναι, εἰτ'
ἐπὶ Τευρίστας καὶ Ταυρίσκους, καὶ τούτους Γαλάτας,
εἰτ' ἐπὶ Ἐλεητίους, πολυχρόνους μὲν ἄνδρας εἰρη-
25 ναίους δέ· ὄρῶντας δὲ τὸν ἐκ τῶν ληστηρίων πλοῦτον
ὑπερβάλλοντα τοῦ παρ' ἔαντος τοὺς Ἐλεητίους
ἐπαρθῆναι, μάλιστα δ' αὐτῷ Τυγχρίνους τε καὶ Των-
γένους, ὥστε καὶ συνεξορμῆσαι. πάντες μέντοι κατε-C.294
λύθησαν ὑπὸ τῶν Ρωμαίων αὐτοί τε οἱ Κίμβροι καὶ
30 οἱ συναρμένοι τούτοις, οἱ μὲν ὑπερβαλόντες τὰς Ἀλ-
πεις εἰς τὴν Ιταλίαν οἱ δ' ἔξω τῶν Ἀλπεων.

"Ἐδος δέ τι τῶν Κίμβρων διηγοῦνται τοιοῦτον, 3

ὅτι ταῖς γυναιξὶν αὐτῶν συστρατευούσαις παρηκολούθουν προμάντεις λέρειαι πολιότριχες, λευχείμονες, καρπασίνας ἐφαπτίδας ἐπιπεκορπημέναι, ξῶσμα χαλκοῦν ἔχουσαι, γυμνόποδες· τοῖς οὖν αἰγμαλώτοις διὰ τοῦ στρατοπέδου συνήντων ξιφήρεις, καταστέψασαι δ' 5 αὐτοὺς ἥγον ἐπὶ κρατῆρα χαλκοῦν ὅσον ἀμφορέων εἰκοσιν· εἰχον δὲ ἀναβάθμον, ἥν ἀναβᾶσα ὑπεροπετῆς τοῦ λέβητος ἐλαιμοτόμει ἔκαστον μετεωρισθέντα· ἐκ δὲ τοῦ προχεομένου αἵματος εἰς τὸν κρατῆρα μαντείαν τινὰ ἐποιοῦντο, ἄλλαι δὲ διασχίσασαι ἐσπλάγ- 10 χνευσον ἀναφθεγγόμεναι νίκην τοῖς οἰκείοις. ἐν δὲ τοῖς ἀγῶσιν ἔτυπτον τὰς βύρσας τὰς περιτεταμένας τοῖς γέροις τῶν ἀρμαμαξῶν, ὥστ' ἀποτελεῖσθαι ψόφουν ἔξαισιον.

4 Τῶν δὲ Γερμανῶν, ὡς εἶπον, οἱ μὲν προσάρχοι 15 παροικοῦσι τῷ ὀνειρῷ, γυναικίζονται δ' ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ρήγου λαβόντες τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ Ἀλβιος. τούτων δ' εἰσὶ γυναικιώτατοι Σούγαμβροί τε καὶ Κίμβροι. τὰ δὲ πέραν τοῦ Ἀλβιος τὰ πρὸς τῷ ὀνειρῷ παντάπασιν ἄγνωστα ἡμῖν ἔστιν. οὕτε γὰρ τῶν προ- 20 τέρων οὐδένας ἴσμεν τὸν παράπλον τοῦτον πεποιημένους πρὸς τὰ ἑωθινὰ μέρη τὰ μέχρι τοῦ στόματος τῆς Κασπίας θαλάττης, οῦδ' οἱ Ρωμαῖοί πω προηλθον εἰς τὰ περαιτέρω τοῦ Ἀλβιος· ὡς δ' αὐτῶς οὐδὲ πεζῇ παραδεύκασιν οὐδένες. ἀλλ' ὅτι μὲν κατὰ μῆκος 25 ιοῦ- σιν ἐπὶ τὴν ἕω τὰ κατὰ τὸν Βορυσθένη καὶ τὰ πρὸς βορρᾶν τοῦ Πόντου χωρία ἀπαντά, δῆλον ἐκ τῶν κλιμάτων καὶ τῶν παραλλήλων διαστημάτων. τί δ' ἔστι πέραν τῆς Γερμανίας καὶ τί τῶν ἄλλων τῶν ἔξης, εἰκείαστάρνας κρὶ λέγειν, ὡς οἱ πλείους ὑπονοοῦσιν, εἰτ' 30

ἄλλους μεταξὺ ή Ἰάξυγας ή Ρωξολανούς η τινας ἄλλους τῶν ἀμαξοίκων οὐ δάδιον εἰπεῖν, οὐδ' εἰ μέχρι τοῦ ὥκεανοῦ παρήκουσι παρὰ πᾶν τὸ μῆκος, η ἔστι τι ἀοίκητον ὑπὸ ψύχους η ἄλλης αἰτίας, η εἰ καὶ γένος δ ἀνθρώπων ἄλλο διαδέχεται μεταξὺ τῆς Θαλάττης καὶ τῶν ἐφάντων Γερμανῶν ἰδόμενον. τοῦτο δὲ τὸ αὐτὸ ἀγνόημα καὶ περὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐφεξῆς προσαρτιών ἐπέχει. οὕτε γὰρ τοὺς Βαστάρωνας οὕτε τοὺς Σαυρομάτας καὶ ἀπλῶς τοὺς ὑπὲρ τοῦ Πόντου οἰκοῦντας ἴσμεν, 10 οὕτ' ὁπόσον ἀπέχουσι τῆς Ἀτλαντικῆς θαλάττης, οὕτ' εἰ συνάπτουσιν αὐτῇ.

Τὸ δὲ νότιον μέρος τῆς Γερμανίας τὸ πέραν τοῦ **3**
"Αλβιος τὸ μὲν συνεχὲς ἀκμὴν ὑπὸ τῶν Σοήβων κατέχεται· εἴτ' εὐθὺς η τῶν Γετῶν συνάπτει γῆ, κατ' ἀρ-0.295
15 χάς μὲν στενή, παρατεταμένη τῷ Ἰστρῷ κατὰ τὸ νότιον μέρος, κατὰ δὲ τούναντίον τῇ παρωρείᾳ τοῦ Ἔρηννοντού δρυμοῦ, μέρος τι τῶν δρῶν καὶ αὐτὴ κατέχουσα, εἴτα πλατύνεται πρὸς τὰς ἄρκτους μέχρι Τυραγετῶν· τοὺς δὲ ἀκριβεῖς δόρους οὐκ ἔχομεν φράξειν.
20 διὰ δὲ τὴν ἄγνοιαν τῶν τόπων τούτων οἱ τὰ Ριπαῖα ὅρη καὶ τοὺς Ἄπειροδείους μυθοποιοῦντες λόγου ηξεῖνται, καὶ ἡ Πυθέας ὁ Μασσαλιώτης κατεψεύσατο * ταῦτα τῆς παρωκεανήτιδος, προσχήματι χρώμενος τῇ περὶ τὰ οὐράνια καὶ τὰ μαθηματικὰ ἴστοριά. ἐκεῖνοι μὲν οὖν
25 ἐάσθωσαν· οὐδὲ γὰρ εἴ τινα Σοφοκλῆς τραγῳδεῖ περὶ τῆς Ὁρειθυίας λέγων ὡς ἀναρπαγεῖσα ὑπὸ Βορέου κομισθείη,, ὑπέρ τε πόντου πάντ' ἐπ' ἔσχατα κρονὸς,, νυκτός τε πηγὰς οὐρανοῦ τ' ἀναπτυχάσ, Φοίβου πα-,, λαιὸν αῆπον,, οὐδὲν ἀν εἰη πρὸς τὰ νῦν, ἀλλ' ἐα-
30 τέον, ὥσπερ καὶ ἐν τῷ Φαιδρῷ ὁ Σωκράτης. ἡ δὲ ἐκ τε τῆς παλαιᾶς ἴστορίας καὶ τῆς νῦν παρειλήφαμεν, ταῦτα λέγωμεν.

2 Οἱ τοίνυν Ἑλληνες τοὺς Γέτας Θρᾷκας ὑπελάμβανον· ὅκουν δ' ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἰστρου καὶ οὗτοι καὶ οἱ Μυσοὶ Θρᾷκες ὅντες καὶ αὐτὸι καὶ οὓς νῦν Μυσοὺς καλοῦσιν, ἀφ' ᾧ ὁρμήθησαν καὶ οἱ νῦν μεταξὺ Λυδῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Τρώων οἰκοῦντες Μυσοὶ. 5 καὶ αὐτοὶ δ' οἱ Φρύγες Βρόγες εἰσὶ, Θρᾷκιόν τι ἔθνος, καθάπερ καὶ Μυγδόνες καὶ Βέρουκες καὶ Μαιδοβιθυνοὶ καὶ Βιθυνοὶ καὶ Θυνοὶ, δοκῶ δὲ καὶ τοὺς Μαριανδυνούς. οὗτοι μὲν οὖν τελέως ἐκλελοίπασι πάντες τὴν Εὐρώπην, οἱ δὲ Μυσοὶ συνέμειναν. καὶ Ὁμηρον 10 δ' ὁρθῶς εἰκάζειν μοι δοκεῖ Ποσειδώνιος τοὺς ἐν τῇ Εὐρώπῃ Μυσοὺς κατονομάζειν (λέγω δὲ τοὺς ἐν τῇ Θρᾳκῇ) ὅταν φῇ „αὐτὸς δὲ πάλιν τρέπεν ὅσσε φαεινώ, „νόσφιν ἐφ' ἵπποπόλων Θρηκῶν καθορώμενος αἴσιν „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων.“ ἐπεὶ εἰ γε τοὺς κατὰ τὴν 15 Ἀσίαν Μυσοὺς δέχοιτο τις, ἀπηρτημένος ἄν εἴη ὁ λόγος. τὸ γὰρ ἀπὸ τῶν Τρώων τρέψαντα τὴν ὄρασιν ἐπὶ τὴν Θρηκῶν γῆν συγκαταλέγειν ταῦτη τὴν τῶν Μυσῶν, τῶν οὐ νόσφιν ὅντων ἀλλ' ὁμόρων τῇ Τρωάδι καὶ ὅπισθεν αὐτῆς ἰδρυμένων καὶ ἐκατέρωθεν, διειρρ- 20 γομένων δ' ἀπὸ τῆς Θρᾳκῆς πλατεῖς Ἑλλησπόντῳ, συγχέοντος ἄν εἴη τὰς ἡπείρους καὶ ἄμα τῆς φράσεως οὐκ ἀκούοντος. τὸ γὰρ „πάλιν τρέπεν“ μάλιστα μέν ἔστιν εἰς τούπισω· ὁ δὲ ἀπὸ τῶν Τρώων μεταφέρων τὴν ὄψιν ἐπὶ τοὺς μὴ ὅπισθεν αὐτῶν ἥ ἐκ πλαγίων ὅντας 25 προσωτέρω μὲν μεταφέρει, εἰς τούπισω δὲ οὐ πάνυ.

296 καὶ τὸ ἐπιφερόμενον δ' αὐτοῦ τούτου μαρτύριον, ὅτι τοὺς ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους καὶ ἀβίους συνηψεν αὐτοῖς, οἵτεροι εἰσὶν οἱ ἀμάξιοι Σκύθαι καὶ Σαρμάται. καὶ γὰρ νῦν ἀναμέμικται ταῦτα τὰ ἔθνη 30 τοῖς Θρᾳξὶ καὶ τὰ Βασταρνικά, μᾶλλον μὲν τοῖς ἐκτὸς Ἰστρου, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐντός. τούτοις δὲ καὶ τὰ Κελ-

τικά, οἵ τε Βόιοι καὶ Σκορδίσκοι καὶ Ταυρίσκοι. τοὺς δὲ Σκορδίσκους ἔνιοι Σκορδίστας καλοῦσι· καὶ τοὺς Ταυρίσκους δὲ Τευρίσκους καὶ Ταυρίστας φασί.

Δέγει δὲ τοὺς Μυσοὺς ὁ Ποσειδώνιος καὶ ἐμψύ-
5 χων ἀπέχεσθαι κατ' εὐσέβειαν, διὰ δὲ τοῦτο καὶ θρεμ-
μάτων· μέλιτι δὲ χρῆσθαι καὶ γάλακτι καὶ τυρῷ ξῶν-
τας καθ' ἡσυχίαν, διὰ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι θεοερεβεῖς τε
καὶ παπυνοβάτας· εἶναι δέ τινας τῶν Θρακῶν οἱ χωρὶς
γυναικὸς ξῶσιν, οὓς πτίστας καλεῖσθαι, ἀνιερῶσθαι
10 τε διὰ τιμὴν καὶ μετὰ ἀδείας ξῆν· τούτους δὴ συλλή-
βδην ἀπαντας τὸν ποιητὴν εἰπεῖν ἀγανούς ἵππημολ-
γοὺς γλαυκοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώ-
πους. ἀβίους δὲ προσαγορεύειν μάλιστα ὅτι χωρὶς γυ-
ναικῶν, ἥγουμενον ἡμιτελῆ τινα βίου τὸν χῆρον, κα-
15 θάπερ καὶ τὸν οἶκον ἡμιτελῆ τὸν Πρωτεσιλάου διότι
χῆρος· ἀγχεμάχους δὲ τοὺς Μυσούς, ὅτι ἀπόρθητοι,
καθὰ οἱ ἀγαθοὶ πολεμισταί· δεῖν δὲ ἐν τῷ τρισκαιδεκά-
τῳ γράφειν ἀντὶ τοῦ „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων“, „Μοι-
σῶν τ' ἀγχεμάχων.“⁴

20 Τὸ μὲν οὖν τὴν γραφὴν κινεῖν ἐκ τοσούτων ἑτῶν 4
εὐδοκιμήσασαν περιττὸν ἴσως· πολὺ γὰρ πιθανώτε-
ρον ὀνομάσθαι μὲν ἐξ ἀρχῆς Μυσούς, μετωνομάσθαι
δὲ ὡς νῦν. τοὺς ἀβίους δὲ τοὺς χήρους οὐ μᾶλλον ἢ
τοὺς ἀνεστίους καὶ τοὺς ἀμαξοίκους δεξαῖτ' ἄν τις· μά-
25 λιστα γὰρ περὶ τὰ συμβόλαια καὶ τὴν τῶν χρημάτων
κτῆσιν συνισταμένων τῶν ἀδικημάτων, τοὺς οὔτεως ἀπ'
όλιγων εὐτελῶς ξῶντας δικαιοτάτους εὔλογον κληθῆ-
ναι· ἐπειὶ καὶ οἱ φιλόσοφοι τῇ σωφροσύνῃ τὴν δικαιο-
σύνην ἐγγυτάτῳ τιθέντες τὸ αὐταρκεῖς καὶ τὸ λιτὸν ἐν
30 τοῖς πρώτοις ἐξήλωσαν· ἀφ' οὗ καὶ προεκπτώσεις τι-
ναὶς αὐτῶν παρέωσαν ἐπὶ τὸν κυνισμόν. τὸ δὲ χήρους
γυναικῶν οἰκεῖν οὐδεμίαν τοιαύτην ἐμφασιν ὑπογρά-

φει, καὶ μάλιστα παρὰ τοῖς Θρᾷξιν καὶ τούτων τοῖς
 Γέταις. ὅρα δὲ ἂλλοι λέγει Μένανδρος περὶ αὐτῶν οὐ
 C.297 πλάσας, ως εἰκός, ἀλλ' ἐξ ιστορίας λαβών „πάντες
 „μὲν οἱ Θρᾷκες, μάλιστα δὲ οἱ Γέται ήμενις ἀπάντων (καὶ
 „γὰρ αὐτὸς εὔχομαι ἐκεῖθεν εἶναι τὸ γένος) οὐ σφόδρος⁵
 „ἐγκρατεῖς ἐσμέν.“ καὶ ὑποβάς μικρὸν τῆς περὶ τὰς
 γυναικας ἀκρασίας τίθησι τὰ παραδείγματα „γαμεῖ
 „γὰρ ήμῶν οὐδὲ εἰς, εἰ μὴ δέκ' ή ἔνδεικα γυναικας δώ-
 „δεκά τ' ή πλείους τινάς. ἀν τέτταρας δὲ ή πέντε γε-
 „γαμηκὼς τύχῃ καταστροφῆς τις, ἀνυμέναιος ἄθλιος¹⁰
 „ἄνυμφος οὗτος ἐπικαλεῖται ἐν τοῖς ἐκεῖ.“ ταῦτα γὰρ
 διμολογεῖται μὲν καὶ παρὰ τῶν ἄλλων, οὐκ εἰκός δὲ
 τοὺς αὐτοὺς ἄμα μὲν ἄθλιον νομίζειν βίον τὸν μὴ
 μετὰ πολλῶν γυναικῶν, ἄμα δὲ σπουδαῖον καὶ δίκαιον
 τὸν τῶν γυναικῶν χῆρον. τὸ δὲ δὴ καὶ θεοσεβεῖς νο- 15
 μένειν καὶ καπνοβάτας τοὺς ἐρήμους γυναικῶν σφό-
 δρα ἐναντιοῦται ταῖς κοινaiς ὑπολήψεσιν. ἀπαντες
 γὰρ τῆς δεισιδαιμονίας ἀρχηγοὺς οἰονται τὰς γυναι-
 κας· αὗται δὲ καὶ τοὺς ἄνδρας προκαλοῦνται πρὸς τὰς
 ἐπὶ πλέον θεραπείας τῶν θεῶν καὶ ἕορτὰς καὶ ποτνι- 20
 ασμούς· σπάνιον δὲ εἴ τις ἀνὴρ καθ' αὐτὸν ξῶν εὑρί-
 σκεται τοιοῦτος. ὅρα δὲ πάλιν τὸν αὐτὸν ποιητὴν ἀλέ-
 γει εἰσάγων τὸν ἀχθόμενον ταῖς περὶ τὰς θυσίας τῶν
 γυναικῶν δαπάναις καὶ λέγοντα „ἐπιτρίβουσι δὲ ήμᾶς
 „οἱ θεοὶ μάλιστα τοὺς γήμαντας· ἀλλ' γάρ τινα ἄγειν²⁵
 „εορτήν ἐστ' ἀνάγκη.“ τὸν δὲ μισογύνην αὐτὰ ταῦ-
 τα αἰτιώμενον „ἐθύμομεν δὲ πεντάκις τῆς ήμέρας, ἐκυμ-
 „βάλιξον δὲ ἐπτὰ θεραπαίναι κύκλῳ, αἱ δὲ ὠλόλυ-
 „ξον·“ τὸ μὲν οὖν ἰδίως τοὺς ἀγύνους τῶν Γετῶν
 εὔσεβεῖς νομίζεσθαι παράλογόν τι ἐμφαίνει· τὸ δὲ³⁰
 ἵσχύειν ἐν τῷ ἔθνει τούτῳ τὴν περὶ τὸ θεῖον σπουδὴν

ἐκ τε ὧν εἰπε Ποσειδώνιος οὐκ ἀπιστητέον καὶ ἐκ τῆς
ἄλλης ἴστορίας.

Λέγεται γάρ τινα τῶν Γετῶν ὄνομα Ζάμολξιν δου-
λεῦσαι Πυθαγόρα καὶ τινα τῶν οὐρανίων παρ' ἑκεί-
νου μαθεῖν, τὰ δὲ καὶ παρ' Αἴγυπτίων πλανηθέντα
καὶ μέχρι δεῦρο ἐπανελθόντα δ' εἰς τὴν οἰκείαν σπου-
δασθῆναι παρὰ τοῖς ἡγεμόσι καὶ τῷ ἔθνει προλέγοντα
τὰς ἐπισημασίας, τελευτῶντα δὲ πεῖσαι τὸν βασιλέα
κοινωνὸν τῆς ἀρχῆς αὐτὸν λαβεῖν ὡς τὰ παρὰ τῶν
10 θεῶν ἔξαγγέλλειν ἴκανόν· καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἵερέα
κατασταθῆναι τοῦ μάλιστα τιμωμένου παρ' αὐτοῖς
θεοῦ, μετὰ ταῦτα δὲ καὶ θεὸν προσαγορευθῆναι, καὶ 29
καταλαβόντα ἀντρῷσθες τι χωρίον ἄβατον τοῖς ἄλ-
λοις ἐνταῦθα διαιτᾶσθαι, σπάνιον ἐντυγχάνοντα τοῖς
15 ἑκτὸς πλὴν τοῦ βασιλέως καὶ τῶν θεοφανόντων· συμ-
πράττειν δὲ τὸν βασιλέα δρῶντα τοὺς ἀνθρώπους
προσέχοντας ἐαυτῷ πολὺ πλέον ἢ πρότερον, ὡς ἐκφέ-
ροντι τὰ προστάγματα κατὰ συμβουλὴν θεῶν. τουτὶ
δὲ τὸ ἔθος διέτεινεν ἄχρι καὶ εἰς ἡμᾶς, ἀεὶ τινος εὐρι-
20 σκομένου τοιούτου τὸ ἥθος, ὃς τῷ μὲν βασιλεῖ σύμ-
βουλος ὑπῆρχε, παρὰ δὲ τοῖς Γέταις ὄνομα ἀζετο θεός·
καὶ τὸ ὄρος ὑπελήφθη Ἱερόν, καὶ προσαγορεύουσιν
οὕτως ὄνομα δ' αὐτῷ Κωγαίονον ὅμωνυμον τῷ πα-
ραρρέοντι ποταμῷ. καὶ δὴ ὅτε Βυρεβίστας ἥρχε τῶν
25 Γετῶν, ἐφ' ὃν ἥδη παρεσκευάσατο Καΐσαρ ὁ θεὸς στρα-
τεύειν, Δεκαίνεος εἶχε ταύτην τὴν τιμὴν, καί πως τὸ
τῶν ἐμψύχων ἀπέχεσθαι Πυθαγόρειον τοῦ Ζαμόλξιος
ἔμεινε παραδοθέν.

Τοιαῦτα μὲν οὖν [οὐ] κακῶς ἂν τις διαποροίη περὶ 6
30 τῶν κειμένων παρὰ τῷ ποιητῇ περί τε Μυσῶν καὶ

1. posὶ ἀπιστητέον: καὶ ἐμψύχων ἀπέχεσθαι δι' εὐσέβειαν

ἀγανῶν ἐπημολγῶν· ἀ δ' Ἀπολλόδωρος ἐν τῷ δευτέρῳ περὶ νεῶν προσιμιαζόμενος εἰρηκεν ἡκιστα λέγοιτε ἄν. ἐπαινεῖ γὰρ Ἐρατοσθένους ἀπόφασιν, ὅτι φησὶν ἔκεινος καὶ Ὁμηρον καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παλαιοὺς τὰ μὲν Ἑλληνικὰ εἰδέναι τῶν δὲ πόρων πολλὴν ἔχειν 5 ἀπειρίαν, ἀπείρους μὲν μακρῶν ὁδῶν ὅντας ἀπείρους δὲ τοῦ ναυτικῆλεσθαι. συνηγορῶν δὲ τούτοις Ὁμηρόν φησι τὴν μὲν Αὐλίδα καλεῖν πετρήσσαν, ὥσπερ καὶ ἔστι, πολύνυνημον δὲ τὸν Ἐτεώνον, πολυτρήγρωνα δὲ τὴν Θίσβην, ποιήεντα δὲ τὸν Ἀλάρτον· τὰ δ' ἄπωθεν 10 οὗτ' αὐτὸν εἰδέναι οὔτε τοὺς ἄλλους. ποταμῶν γοῦν περὶ τετταράκοντα φεόντων εἰς τὸν Πόντον μηδὲ τῶν ἐνδοξοτάτων μηδενὸς μεμνῆσθαι, οἷον Ἰστρου Τανάϊδος Βορυσθένους Ὄπανιος Φάσιδος Θερμώδοντος Ἀλυο-
ος· ἔτι δὲ Σκυθῶν μὲν μὴ μεμνῆσθαι, πλάττειν δὲ 15 ἀγανούς τινας ἐπημολγούς καὶ γαλακτοφάγους ἀβί-
ους τε, Παφλαγόνας τε τοὺς ἐν τῇ μεσογαλαῖ ιστορηκέ-
ναι παρὰ τῶν πεζῆς τοῖς τόποις πλησιασάντων, τὴν πα-
ραλίαν δὲ ἀγνοεῖν· καὶ εἰκότερος γε. ἄπλουν γὰρ εἶναι τότε τὴν θάλατταν ταύτην καὶ καλεῖσθαι Ἀξενον διὰ 20 τὸ δυσχέμερον καὶ τὴν ἀγριότητα τῶν περιοικούντων ἔθνῶν καὶ μάλιστα τῶν Σκυθικῶν, ἔνεοθυτούντων καὶ σαρκοφαγούντων καὶ τοῖς ιρανίοις ἐκπόμασι χρω-
C.299μένων· ὑστερον δ' Ἔүξεινον κεκλησθαι τῶν Ἰώνων
ἐν τῇ παραλίᾳ πόλεις κτισάντων· ὅμοιῶς δ' ἀγνοεῖν 25 καὶ τὰ περὶ Ἀλγυπτον καὶ Λιβύην, οἷον τὰς ἀναβάσεις τοῦ Νείλου καὶ προσχώσεις τοῦ πελάγους, ὥν οὐδα-
μοῦ μεμνῆσθαι, οὐδὲ τοῦ ισθμοῦ τοῦ μεταξὺ τῆς Ἐρυ-
θρᾶς καὶ τῆς Ἀλγυπτίας θαλάττης, οὐδὲ τῶν κατὰ τὴν
Ἀραβίαν καὶ Αἰθιοπίαν καὶ τὸν ὥκεανόν, εἰ μὴ Ζή- 30
νων τῷ φιλοσόφῳ προσεκτέον γράφοντι „Αἰθίοπάς
, θ' ἵκομην καὶ Σιδονίους Ἀραβάς τε.“ οὐ μαυμαστὸν

δ' εἶναι περὶ Ὁμήρου· καὶ γὰρ τοὺς ἔτι νεωτέρους ἐκείνουν πολλὰ ἀγνοεῖν καὶ τερατολογεῖν, Ἡσίοδον μὲν Ἡμίκυννας λέγοντα καὶ Μεγαλοκεφάλους καὶ Πυγμαίους, Ἀλκμᾶνα δὲ Στεγανόποδας, Αἰσχύλον δὲ κυνο-
 5 κεφάλους καὶ στερνοφθάλμους καὶ μονομμάτους καὶ ἄλλα μυρία. ἀπὸ δὲ τούτων ἐπὶ τοὺς συγγραφέας βα-
 δίζει Ριπαῖα ὅρη λέγοντας καὶ τὸ Ὑγύιον ὅρος καὶ τὴν τῶν Γοργόνων καὶ Ἐσπερίδων κατοικίαν, καὶ τὴν παρὰ
 Θεοπόμπῳ Μεροπίδα γῆν, παρ' Ἐκαταίῳ δὲ Κιμμε-
 10 ρίδα πόλιν, παρ' Ἐνήμερῷ δὲ τὴν Παγχαῖαν γῆν, παρ'
 Ἀριστοτέλει δὲ ποταμίους λίθους ἔξ αἱμου... ἐκ δὲ τῶν
 ὄμβρων τήκεσθαι, ἐν δὲ τῇ Διβύῃ Διονύσου πόλιν εἰ-
 ναι, ταύτην δ' οὐκ ἐνδέχεσθαι διს τὸν αὐτὸν ἔξενοςεῖν.
 ἐπιτιμᾶ δὲ καὶ τοῖς περὶ Σικελίαν τὴν πλάνην λέγοντι
 15 καθ' Ὁμηρον τὴν Ὀδυσσέως· εἰ γὰρ * αὖ χρῆναι τὴν
 μὲν πλάνην ἐκεῖ γεγονέναι φάσκειν, τὸν δὲ ποιητὴν
 ἔξωκενικέναι μυθολογίας χάριν. καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις
 συγγνώμην εἶναι, Καλλιμάχῳ δὲ μὴ πάνυ μεταποιου-
 μένῳ γε γραμματικῆς, δις τὴν μὲν Γαῦδον Καλυψοῦς
 20 υῆσόν φησι, τὴν δὲ Κόρκυραν Σχερίαν. ἄλλους δ' αλ-
 τιάται ψεύσασθαι περὶ Γερήνων καὶ τοῦ Ἀκακησίου
 καὶ Δήμου ἐν Ἰθάκῃ, Πελεθρονίου δ' ἐν Πηλίῳ, Γλαυ-
 κωπίου δ' ἐν Ἀθήναις. τούτοις δὲ μικρά τινα προσθεῖς
 τοιαῦτα παύεται, τὰ πλεῖστα μετενέγκας παρὰ τοῦ
 25 Ἐρατοσθένους, ὃς καὶ πρότερον ἐμνήσθημεν, οὐκ εὐ-
 είρημένα. τὸ μὲν γὰρ τοὺς ὕστερον ἐμπειροτέρους γε-
 γονέναι τῶν πάλαι περὶ τὰ τοιαῦτα καὶ Ἐρατοσθένει
 καὶ τούτῳ δοτέον· τὸ δ' οὕτω πέρα τοῦ μετρίου προά-
 γειν καὶ μάλιστα ἐφ' Ὁμήρου, δοκεῖ μοι καὶ ἐπιπλῆ-
 30 ξαί τις δικαίως καὶ τούναντίον εἴπεῖν, ὃς περὶ ὃν

5. post μονομμάτους: ἐν τῷ Προμηθεῖ φασι,

Ο.300άγνοοῦσιν αὐτοί, περὶ τούτων τῷ ποιητῇ προφέρουσι. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα οἰκείας μνήμης τυγχάνει, τὰ δ' ἐν τοῖς καθόλου.

7 *Nun δὲ περὶ Θρᾳκῶν ἐλέγομεν „Μυσῶν τ' ἀγχε-
,,μάχων καὶ ἀγανῶν ἐπιημολγῶν, γλακτοφάγων ἀβί- 5
,,ων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων,“ βουλόμενοι συγκρί-
ναι τά τε ὑφ' ἡμῶν καὶ τὰ ὑπὸ Ποσειδῶνίου λεχθέντα
καὶ τὰ ὑπὸ τούτων πρότερον δ' ὅτι τὴν ἐπιχείρησιν
ὑπεναντίαν τοῖς προτεθεῖσι πεποίηνται. προῦθεντο
μὲν γὰρ διδάξαι διότι τῶν πόρρω τῆς Ἑλλάδος πλείων 10
ἥν ἄγνοια τοῖς πρεσβυτέροις ἢ τοῖς νεωτέροις, ἔδειξαν
δὲ τάναντία, καὶ οὐ [κατὰ] τὰ πόρρω μόνον ἀλλὰ καὶ
τὰ ἐν αὐτῇ τῇ Ἑλλάδι. ἀλλ', ὡς ἔφην, τὰ ἄλλα μὲν
ὑπεροκείσθω, τὰ δὲ υῦν σκοπῶμεν. Σκυθῶν μὲν γὰρ
[μὴ] μεμνῆσθαι κατ' ἄγνοιάν φασι, μηδὲ τῆς περὶ τοὺς 15
ξένους ὀμότητος αὐτῶν, καταθυδντῶν καὶ σαρκοφα-
γούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρωμένων, δι'
οὓς "Ἄξενος ὀνομάζετο ὁ πόντος, πλάττειν δ' ἀγανούς
τινας ἐπιημολγούς γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δι-
καιοτάτους ἀνθρώπους, τοὺς οὐδαμοῦ γῆς ὄντας. πᾶς 20
οὖν "Ἄξενον ὀνόμαξον, εἰ μὴ ἥδεισαν τὴν ἀγριότητα,
μηδ' αὐτοὺς τοὺς μάλιστα τοιούτους; οὗτοι δ' εἰσὶ δῆ-
πον οἱ Σκύθαι. πότερον δ' οὐδὲ ἐπιημολγοὶ ήσαν οἱ
ἐπέκεινα τῶν Μυσῶν καὶ Θρᾳκῶν καὶ Γετῶν, οὐδὲ
γαλακτοφάγοι καὶ ἄβιοι; ἀλλὰ καὶ υῦν εἰσιν ἀμάξοι- 25
κοι καὶ ιομάδες καλούμενοι, ξῶντες ἀπὸ θρεμμάτων
καὶ γάλακτος καὶ τυροῦ καὶ μάλιστα ἐππείου, θηραυ-
ρισμὸν δ' οὐκ εἰδότες οὐδὲ καπηλείαν πλὴν εἰ φόρ-
τον ἀντὶ φόρτου. πᾶς οὖν ἡγυόει τοὺς Σκύθας ὁ ποι-
ητής, ἐπιημολγούς καὶ γαλακτοφάγους τινὰς προσα- 30
γορεύων; ὅτι γὰρ οἱ τότε τούτους ἐπιημολγούς ἐκά-
λονν, καὶ Ἡσίοδος μάρτυς ἐν τοῖς ὑπὸ Ἐρατοσθένους*

παρατεθεῖσιν ἔπεσιν „Αἰθίοπας τε Λίγυς τε ἵδε Σκύ-
„δας ἵππημολγούς.“ τί δὲ θαυμαστόν, εἰ διὰ τὸ πλεο-
νάζειν παρ’ ἡμῖν τὴν περὶ τὰ συμβόλαια ἀδικίαν δι-
καιοτάτους εἴπεν ἀνθρώπους τοὺς ἥκιστα ἐν τοῖς συμ-
βολαίοις καὶ τῷ ἀργυροισμῷ ἔσθντας, ἀλλὰ καὶ οινὰ κε-
κτημένους πάντα πλὴν ἔφους καὶ ποτηρίου, ἐν δὲ τοῖς
πρῶτον τὰς γυναικας πλατωνικῶς ἔχοντας οινὰς καὶ
τέκνα; καὶ Αἰσχύλος δ’ ἐμφαίνει συνηγορῶν τῷ ποι-
ητῇ φῆσας περὶ τῶν Σκυθῶν „ἀλλ’ ἵππάκης βρωτῆρες C.301
10, εὖνομοι Σκύθαι.“ αὕτη δ’ ἡ ὑπόληψις καὶ νῦν ἔτι συμ-
μένει παρὰ τοῖς Ἑλλησιν· ἀπλουστάτους τε γὰρ αὐτοὺς
νομίζομεν καὶ ἥκιστα κακεντρεχεῖς εὐτελεστέρους τε
πολὺ ἡμῶν καὶ αὐταρκεστέρους· καίτοι δὲ γε καθ’ ἡμᾶς
βίος εἰς πάντας σχεδόν τι διατέτακε τὴν πρὸς τὸ χεῖρον
τὸ μεταβολήν, τρυφὴν καὶ ἡδονὰς καὶ κακοτεχνίας καὶ
πλειονεξίας μυρίας πρὸς ταῦτ’ εἰσάγων. πολὺ οὖν τῆς
τοιαύτης κακίας καὶ εἰς τοὺς βαρβάρους ἐμπέπτωνε τούς
τε ἄλλους καὶ τοὺς νομάδας· καὶ γὰρ θαλάττης ἀψάμε-
νοι χείρους γεγόνασι ληστεύοντες καὶ ἔσυοκτονοῦντες,
20 καὶ ἐπιπλεκόμενοι πολλοῖς μεταλαμβάνοντι τῆς ἐκεί-
νων πολυτελείας καὶ καπηλείας· ἂ δοκεῖ μὲν εἰς ἡμε-
ρότητα συντείνειν, διαφθείρει δὲ τὰ ἥθη καὶ ποικι-
λίαν ἀντὶ τῆς ἀπλότητος τῆς ἄρτι λεχθείσης εἰσάγει.

Οἱ μέντοι πρὸς ἡμῶν καὶ μάλιστα οἱ ἐγγὺς τοῖς 8
25 Ὁμήρου χρόνοις τοιοῦτοι τινες ἥσαν καὶ ὑπελαμβά-
νοντο παρὰ τοῖς Ἑλλησιν ὅποιος Ὅμηρός φησιν. ὅρα
δὲ ἂ λέγει Ἡρόδοτος περὶ τοῦ τῶν Σκυθῶν βασιλέως,
ἔφ’ ὃν ἐστράτευσε Δαρεῖος, καὶ τὰ ἐπεσταλμένα παρ’
αὐτοῦ. ὅρα δὲ καὶ ἂ λέγει Χρύσιππος περὶ τῶν τοῦ Βο-
30 σπόρου βασιλέων τῶν περὶ Λεύκωνα. πλήρεις δὲ καὶ
αἱ Περσικαὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἀπλότητος ἦσαν λέγω, καὶ τὰ
ὑπὸ τῶν Αἴγυπτίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ Ἰνδῶν ἀπο-

μνημονευόμενα. διὰ τοῦτο δὲ καὶ ὁ Ἀνάχαρσις καὶ
 Ἀβαρις καὶ τινες ἄλλοι τοιοῦτοι παρὸ τοῖς Ἑλλησιν
 εὐδοκίμουν, ὅτι ἐθνικόν τινα χαρακτῆρα ἐπέφαμιν
 εὐκολίας καὶ λιτότητος καὶ δικαιοσύνης. καὶ τί δεῖ τοὺς
 πάλαι λέγειν; Ἀλέξανδρος γὰρ ὁ Φιλίππου κατὰ τὴν 5
 ἐπὶ Θρᾷκας τοὺς ὑπὲρ τοῦ Αἴμου στρατείαν ἐμβαλὼν εἰς
 Τριβαλλούς, ὃρῶν μέχρι τοῦ Ἰστρου παθήκοντας καὶ
 τῆς ἐν αὐτῷ νῆσου Πεύκης, τὰ πέραν δὲ Γέτας ἔχοντας,
 ἀφίχθαι λέγεται μέχρι δεῦρο, καὶ εἰς μὲν τὴν νῆσον
 ἀποβῆναι μὴ δύνασθαι σπάντι πλοῖον (ἐκεῖσε γὰρ κα- 10
 ταφυγόντα τὸν τῶν Τριβαλλῶν βασιλέα Σύρμον ἀν-
 τισκεῖν πρὸς τὴν ἐπιχείρησιν), εἰς δὲ τὸν Γέτας δια-
 βάντα ἐλεῖν αὐτῶν πύλιν καὶ ἀναστρέψας διὰ ταχέων
 εἰς τὴν οἰκείαν, λαβόντα δῶρα [παρὰ] τῶν ἐθνῶν καὶ
 παρὰ τοῦ Σύρμου. φησὶ δὲ Πτολεμαῖος ὁ Λάγου κατὰ 15
 ταύτην τὴν στρατείαν συμμίξαι τῷ Ἀλεξάνδρῳ Κελτούς
 τοὺς περὶ τὸν Ἀδρίαν φιλίας καὶ ἔνιας χάριν, δεξάμε-
 νον δὲ αὐτοὺς φιλοφρόνως τὸν βασιλέα ἐρέσθαι παρὰ
 πότον, τί μάλιστα εἶη ὁ φοβοῦντο, νομίζοντα αὐτὸν
 ἔρειν· αὐτοὺς δ' ἀποκρίνασθαι ὅτι οὐδὲν πλὴν εἰ ἄρα 20
 μὴ ὁ οὐρανὸς αὐτοὺς ἐπιπέσοι, φιλίαν γε μὴν ἀνδρὸς
 τοιούτου περὶ παντὸς τίθεσθαι. ταῦτα δὲ ἀπόλοτητος
 τῆς τῶν βαρβάρων ἐστὶ σημεῖα, τοῦ τε μὴ συγχωρή-
 σαντος μὲν τὴν ἀπόβασιν τὴν εἰς τὴν νῆσον, δῶρα δὲ
 πέμψαντος καὶ συνθεμένου φιλίαν, καὶ τῶν φοβεῖσθαι 25
 μὲν οὐδένα φαμένων, φιλίαν δὲ περὶ παντὸς τίθεσθαι
 μεγάλων ἀνδρῶν. ὃ τε Δρομιχαΐης κατὰ τοὺς διαδό-
 χους ἦν Γεταῖν βασιλεύς· ἐκεῖνος τοίνυν λαβὼν ἔω-
 γοίας Λυσίμαχον ἐπιστρατεύσαντα αὐτῷ, δεῖξας τὴν
 πενίαν τὴν τε ἑαυτοῦ καὶ τοῦ ἐθνους, δύοις δὲ καὶ 30

την αὐτάρκειαν, ἐκέλευσε τοῖς τοιούτοις μὴ πολεμεῖν,
ἀλλὰ φίλοις χρῆσθαι· ταῦτα δ' εἰπών, ξενίσας καὶ
συνθέμενος φιλίαν ἀπέλυσεν αὐτόν.

"Ἐφορος δ' ἐν τῇ τετάρτῃ μὲν τῆς ἴστορίας Εὐ- 9
5 ορώπη δ' ἐπιγραφομένη βίβλῳ, περιοδεύσας τὴν Εὐ-
ρώπην μέχρι Σκυθῶν ἐπὶ τέλει φησὶν εἶναι τῶν τε ἄλ-
λων Σκυθῶν καὶ τῶν Σαυροματῶν τοὺς βίους ἀνομο-
ούς· τοὺς μὲν γὰρ εἶναι χαλεποὺς ὥστε καὶ ἀνθρωπο-
φαγεῖν, τοὺς δὲ καὶ τῶν ἄλλων ξφῶν ἀπέχεσθαι. οἱ μὲν
10 οὖν ἄλλοι, φησί, τὰ περὶ τῆς ὡμότητος αὐτῶν λέγουσιν,
εἰδότες τὸ δεινόν τε καὶ τὸ θαυμαστὸν ἐκπληκτικὸν ὃν·
δεῖν δὲ τάνατοι καὶ λέγειν καὶ παραδείγματα ποιε-
σθαι· καὶ αὐτὸς οὖν περὶ τῶν δικαιοτάτοις ἥθεσι χρω-
μένων ποιήσεσθαι τοὺς λόγους· εἶναι γάρ τινας τῶν
15 νομάδων Σκυθῶν γάλακτι τρεφομένους ἅππων τῇ τε
δικαιοσύνῃ πάντων διαφέρειν· μεμνῆσθαι δ' αὐτῶν
τοὺς ποιητάς, "Ομηρον μὲν „γλαυκοφάγων ἀβίων τε,
„δικαιοτάτων ἀνθρώπων“ φήσαντα τὴν γῆν καθορᾶν
τὸν Δια, Ἡσίοδον δ' ἐν τῇ καλονυμένῃ γῆς περιόδῳ
20 τὸν Φινέα ὑπὸ τῶν Ἀρκυιῶν ἄγεσθαι „γλαυκοφάγων
„εἰς γαῖαν ἀπήναις οἴκοι“ ἔχόντων.“ εἰτ' αἰτιολογεῖ
διότι ταῖς διαιταῖς εὐτελεῖς ὅντες καὶ οὐ χρηματισταὶ
πρός τε ἄλλήλους εὐνομοῦνται, κοινὰ πάντα ἔχοντες
τά τε ἄλλα καὶ τὰς γυναικας καὶ τέκνα καὶ τὴν ὄλην
25 συγγένειαν, πρός τε τοὺς ἀκτὸς ἄμαχοι εἰσι καὶ ἀνίκη-
τοι, οὐδὲν ἔχοντες ὑπὲρ οὐδὲν δουλεύσουσι. καλεῖ δὲ καὶ
Χοιρίλον εἰπόντα ἐν τῇ διαβάσει τῆς σχεδίας ἣν ἔξενε
Δαρεῖος „μηλονόμοι τε Σάκαι, γενεῖ Σκύθαι· αὐτὰρ
„ἔναιοιν Ἀσίδα πυροφόρον· νομάδων γε μὲν ἥσαν ἀπο-

3. post αὐτόν: καὶ Πλάτων δὲ ἐν τῇ πολιτείᾳ τὴν θάλατταν
ῶς πονηροδιδάσκαλον φεύγειν οἴεται δεῖν ὅτι πορρωτάτω τοὺς
εὐ πολιτευσομένους καὶ μὴ οἰκεῖν ἐπ' αὐτῇ.

„κοι, ἀνθρώπων νομίμων.“ καὶ τὸν Ἀνάχαρσιν δὲ σοφὸν καλῶν δῆ Ἐφορος τούτου τοῦ γένους φησὶν εἶναι· νομισθῆναι δὲ καὶ τῶν ἐπτὰ σοφῶν ἐκ' εὐτελεῖας σωφροσύνη καὶ συνέσει· εὐδόγματά τε αὐτοῦ λέγει τά τε ξώπυρα καὶ τὴν ἀμφίβολον ἄγκυραν καὶ τὸν κεραμικὸν τροχόν. ταῦτα δὲ λέγω σαφῶς μὲν εἰδὼς δῆτι καὶ οὗτος αὐτὸς οὐ τάληθέστατα λέγει περὶ πάντων, καὶ δὴ καὶ τὸ τοῦ Ἀναχάρσιδος· πᾶς γὰρ δὲ τροχὸς εὖδομα αὐτοῦ, δῆτι οἰδενὸς πρεσβύτερος τὸν; ἀλλ' ἐκεῖνα διασημῆναι βουλόμενος δῆτι κοινῆ τινι φήμη καὶ ὑπὸ τῶν 10 παλαιῶν καὶ ὑπὸ τῶν ὑστέρων πεπιστεῦσθαι συνέβαινε τὸ τῶν νομάδων, τοὺς μάλιστα ἀπφυισμένους ἀπὸ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων γαλακτοφάγους τε εἶναι καὶ ἀβίοντας καὶ δικαιοτάτους, ἀλλ' οὐχ ὑπὸ Ὁμηρου πεπλάσθαι.

10 Περὶ τε τῶν Μυσῶν δίκαιιος ἔστιν ὑποσχεῖν λόγον 15 τῶν ἐν τοῖς ἔπεσι λεγομένων Ἀπολλόδωρος, πότερον ἡγεῖται καὶ τούτους εἶναι πλάσμα, δῆταν φῆ δὲ ποιητῆς „Μυσῶν τὸν ἀγχεμάχων καὶ ἀγαυῶν ἐπιημολγῶν,“ 20 ἢ τοὺς ἐν τῇ Ἀσίᾳ δέχεται. τοὺς μὲν οὖν ἐν τῇ Ἀσίᾳ δεχόμενος παρερμηνεύσει τὸν ποιητήν, ὡς προείρηται, πλάσμα [δὲ] λέγων, ὡς μὴ δῆταν ἐν τῇ Θράκῃ Μυσῶν, παρὰ τὰ δύντα [ἔρετα]. ἕτι γὰρ ἐφ' ἡμῶν Αἴλιος Κάτος μετρήκισεν ἐκ τῆς περαίας τοῦ Ἰστρου πέντε μυριάδας σωμάτων παρὰ τῶν Γετῶν, ὁμογλώττου τοῖς Θραξὶν ἔθνους, εἰς τὴν Θράκην· καὶ νῦν οἰκοῦσιν αὐτόθι 25 Μοισοὶ καλούμενοι, ἥτοι καὶ τῶν πρότερον οὔτω καλούμενων, ἐν δὲ τῇ Ἀσίᾳ Μυσῶν μετονομασθέντων, ἢ διπερ οἰκειότερον ἔστι τῇ Ιστορίᾳ καὶ τῇ ἀποφάσει τοῦ ποιητοῦ, τῶν ἐν τῇ Θράκῃ Μυσῶν καλουμένων

9. post ἄν: „ὦς δ' ὅτε τις κεραμεὺς τροχὸν ἀρμενον ἐν παλάμησι“ καὶ τὰ ἔξῆς.

πρότερον. περὶ μὲν δὴ τούτων ἄλις· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἔξῆς περιήγησιν.

Τῶν δὴ Γετῶν τὰ μὲν παλαιὰ ἀφείσθω, τὰ δὲ εἰς 11
ἡμᾶς ἥδη τοιαῦτα ὑπῆρχε. Βοιρεβίστας ἀνὴρ Γέτης, ἐπι-
5 στὰς ἐπὶ τὴν τοῦ ἔθνους ἐπιστασίαν, ἀνέλαβε κεκλι-
μένους τοὺς ἀνθρώπους ὑπὸ συχνῶν πολέμων καὶ το-
σοῦτον ἐπῆρεν ἀσκήσει καὶ νήψει καὶ τῷ προσέχειν τοῖς
προστάγμασιν, ὃστ' ὀλίγων ἐτῶν μεγάλην ἀρχὴν καὶ-
10 Γέτας· ἥδη δὲ καὶ Ρωμαίοις φοβερὸς ἦν, διαβαίνων
ἀδεῶς τὸν Ἰστρὸν καὶ τὴν Θράκην λεηλατῶν μέχρι Μα-
κεδονίας καὶ τῆς Ἰλλυρίδος, τοὺς τε Κελτοὺς τοὺς ἀνα-
μεμιγμένους τοῖς τε Θρακέσι καὶ τοῖς Ἰλλυριοῖς ἔξεπόρθη-
σε, Βούοις δὲ καὶ ἄρδην ἡφάνισε τοὺς ὑπὸ Κριτασίρῳ
15 καὶ Ταυρούσκους. πρὸς δὲ τὴν εὐπειθείαν τοῦ ἔθνους
συναγωνιστὴν ἔσχε Δεκαίνεον ἄνδρα γόντα, πεπλανη-
μένον κατὰ τὴν Αἰγαίον ταῦτα· προσημασίας ἐμμεμα-
θηύτα τινάς, δι' ᾧ ὑπεκρίνετο τὰ θεῖα· καὶ δι' ὅλ-
γου καθίστατο θεός, καθάπερ ἔφαμεν περὶ τοῦ Ζα-
20 μόδικεως διηγουμένοι. τῆς δὲ εὐπειθείας σημεῖον· ἐπεί-
σθησαν γὰρ ἐκκόψαι τὴν ἀμπελὸν καὶ ἔην οἶνον χωρίς.
ὁ μὲν οὖν Βοιρεβίστας ἔφθη καταλυθεὶς ἐπαναστάν-
των αὐτῷ τινῶν πρὸν ἡ Ρωμαίοις στεῖλαι στρατείαν
ἐπ' αὐτόν· οἱ δὲ διαδεξάμενοι τὴν ἀρχὴν εἰς πλείω μέρη
25 διεστησαν. καὶ δὴ καὶ νῦν, ἡνίκα ἐπεμψεν ἐπ' αὐτοὺς
στρατείαν ὁ Σεβαστὸς Καΐσαρ, εἰς πέντε μερίδας, τότε
δὲ εἰς τέτταρας διεστῶτες ἐτύγχανον· οἱ μὲν οὖν τοι-
οῦτοι μερισμοὶ πρόσκαιροι καὶ ἄλλοι· ἄλλοι.

Γέγονε δὲ καὶ ἄλλος τῆς χώρας μερισμὸς συμμέ- 12
30 ων ἐκ παλαιοῦ· τοὺς μὲν γὰρ Δακοὺς προσαγορεύ-
οντι τοὺς δὲ Γέτας, Γέτας μὲν τοὺς πρὸς τὸν Πόντον
κεκλιμένους καὶ πρὸς τὴν ἕω, Δακοὺς δὲ τοὺς εἰς τὰ-

ναυτία πρὸς τὴν Γερμανίαν καὶ τὰς τοῦ Ἰστρου πηγάς, οὓς οἶμαι Δάους καλεῖσθαι τὸ παλαιόν· ἀφ' οὗ καὶ παρὰ τοῖς Ἀττικοῖς ἐπεπόλασε τὰ τῶν οἰκετῶν ὄνόματα Γέται καὶ Δᾶοι. τοῦτο γὰρ πιθανώτερον ἡ ἀπὸ τῶν Σκυθῶν οὓς καλοῦσι Δᾶας· πόρρω γὰρ ἐκεῖνοι 5 περὶ τὴν Τρκανίαν, καὶ οὐκ εἰκὸς ἐκεῖθεν ομήλεοσθαι ἀνδράποδα εἰς τὴν Ἀττικήν. ἐξ ὧν γὰρ ἐκομίζετο, ἡ τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις ὅμωνύμους ἐκάλουν τοὺς οἰκέτας, φῶς Λυδὸν καὶ Σύρου, ἡ τοῖς ἐπικολάζουσιν ἐκεῖ ὄνόμασι προσηγόρευον, ὡς Μάνην ἡ Μίδαν τὸν Φρύ- 10 γα, Τίβιον δὲ τὸν Παφλαγόνα. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ὑπὸ τοῦ Βοιωτείστα τὸ ἔθνος ἔξαρθτὸν ἐταπεινώθη τελέως ὑπό τε τῶν στάσεων καὶ τῶν Ρωμαίων· ἵκανοι δ' ὅμως εἰσὶν ἔτι καὶ νῦν στέλλειν τέτταρας μυριάδας.

- 13 'Ρεῖ δὲ δι' αὐτῶν Μάρισος ποταμὸς εἰς τὸν Δα- 15 νούιον, φῶ τὰς παρασκευὰς ἀνεκόμιξον οἱ Ρωμαῖοι τὰς πρὸς τὸν πόλεμον· καὶ γὰρ τοῦ ποταμοῦ τὰ μὲν ἄνω καὶ πρὸς τὰς πηγὰς μέρη μέχρι τῶν καταρακτῶν Δα- 20 νούιον προσηγόρευον, ἀλλά μάλιστα διὰ τῶν Δακῶν φέ- C.305φεται, τὰ δὲ κάτω μέχρι τοῦ Πόντου τὰ παρὰ τοὺς Γέ- 25 τας καλοῦσιν Ἰστρον· ὅμογλωττοι δ' εἰσὶν οἱ Δακοὶ τοῖς Γέταις. παρὰ μὲν οὖν τοῖς Ἐλλησιν οἱ Γέται γνω- φίζονται μᾶλλον διὰ τὸ συνεχεῖς τὰς μεταναστάσεις ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἰστρου ποιεῖσθαι καὶ τοῖς Μοισοῖς ἀναμεμῆθαι· καὶ τὸ τῶν Τριβαλλῶν δ' ἔθνος, Θράκη- 30 κὸν ὅν, τὸ αὐτὸ πέπονθε τοῦτο. μεταναστάσεις γὰρ δέδεκται, τῶν πλησιοχώρων εἰς τοὺς ἀσθενεστέρους ἔξαναστάντων, τῶν μὲν ἐκ τῆς περαίας Σκυθῶν καὶ Βασταρνῶν καὶ Σαυροματῶν ἐπικρατούντων πολλά- 35 ης, ὥστε καὶ ἐπιδιαβαίνειν τοῖς ἔξελαθεῖσι καὶ κατα- μένειν τινὰς αὐτῶν ἡ ἐν ταῖς νήσοις ἡ ἐν τῇ Θράκῃ· τῶν δ' ἐκ θατέρου μέρους ὑπ' Ἰλλυριῶν μάλιστα κα-

τισχυομένων. αὐξηθέντες δ' οὖν ἐπὶ πλεῖστον οἵ τε Γέται οἵ τε Δακοί, ὡστε καὶ εἰκοσιμυριάδας ἐκπέμπειν στρατείας, νῦν ὅσον εἰς τέτταρας μυριάδας συνεσταλμένοι τυγχάνουσι, καὶ ἔγγυς μὲν ἥκουσι τοῦ ὑπακούειν· Ρωμαίων, οὕπω δ' εἰσὶν ὑποχειρίοι τελέως διὰ τὰς ἐκ τῶν Γερμανῶν ἐλπίδας πολεμίων ὅντων τοῖς Ρωμαίοις.

Μεταξὺ δὲ τῆς Ποντικῆς θαλάττης τῆς ἀπὸ^τ Ιστρού 14 ἐπὶ Τύραν καὶ ἡ τῶν Γετῶν ἐρημία πρόκειται πεδιὰς 10 πᾶσα καὶ ἄνυνδος, ἐν ᾧ Δαρεῖος ἀποληφθεὶς ὁ Τστάσπεω, καθ' ὃν καιρὸν διέβη τὸν^τ Ιστρον ἐπὶ τὸν Σκύθας, ἐκινδύνευσε πανστρατιᾶ διψή διαλυθῆναι· συνηῆς δ' ὄψε καὶ ἀνέστρεψε. Λυσίμαχος δ' ὕστερον στρατεύσας ἐπὶ Γέτας καὶ τὸν βασιλέα Δρομιχαίτην 15 οὐκ ἐκινδύνευσε μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐάλω ζωγρίᾳ· πάλιν δ' ἐσώθη τυχὼν εὐγνώμονος τοῦ βαρβάρου, καθάπερ εἶπον πρότερον.

Πρὸς δὲ ταῖς ἐκβολαῖς μεγάλη υῆσος ἔστιν ἡ Πεύ- 15 οη· κατασχόντες δ' αὐτὴν Βαστάρναι Πευκῖνοι προσηγορεύθησαν· εἰσὶ δὲ καὶ ἄλλαι υῆσοι πολὺ ἐλάττονες, αἱ μὲν ἀνωτέρω ταύτης αἱ δὲ πρὸς τῇ θαλάττῃ. ἐπτάστομος γάρ ἔστι· μέγιστον δὲ τὸ ιερὸν στόμα καλούμενον, δι' οὗ σταδίων ἀνάπλους ἐπὶ τὴν Πεύκην ἐκάτον εἰκοσιν, ἡς κατὰ τὸ κάτω μέρος ἐποίησε τὸ ζεῦγμα 25 Δαρεῖος· δύνατο δ' ἄν ζευχθῆναι καὶ κατὰ τὸ ἄνω. τοῦτο δὲ καὶ πρῶτόν ἔστι στόμα ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι εἰς τὸν Πόντον· τὰ δ' ἔξης ἐν παράπλεῳ τῷ ἐπὶ τὸν Τύραν· διέχει δ' ἀπ' αὐτοῦ τὸ ἔβδομον στόμα περὶ τριακοσίους σταδίους. γίνονται οὖν μεταξὺ τῶν στο- 30 μάτων υῆσιδες. τὰ μὲν δὴ τρία στόματα τὰ ἐφεξῆς τῷ ιερῷ στόματι ἔστι μικρά, τὰ δὲ λοιπὰ τοῦ μὲν πολὺ ἐλάττονα τῶν δὲ μείζονα. Ἐφορος δὲ πεντάστομον

είρηκε τὸν "Ιστρον. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ Τύραν ποταμὸν
ο.306 πλωτὸν ἐνακόσιοι στάδιοι· ἐν δὲ τῷ μεταξὺ δύο λίμναι
μεγάλαι, ἡ μὲν ἀνεψιγμένη πρὸς τὴν θάλατταν ὥστε
καὶ λιμένι χοησθαι, ἡ δ' ἀστομος.

16 Ἐπὶ δὲ τῷ στόματι τοῦ Τύρα πύργος ἔστι Νεοπτο- 5
λέμουν καλούμενος καὶ πώμη Ἐρυθράκτος λεγομένη.
ἀναπλεύσαντι δὲ ἐνατὸν τετταράκοντα σταδίους ἐφ'
ἐκάτερα πόλεις, ἡ μὲν Νικανία ἡ δ' ἐν ἀριστερᾷ Ὁφι-
οῦσσα· οἱ δὲ προσοικοῦντες τῷ ποταμῷ * πόλιν φασὶν
ἀνιόντι ἐνατὸν καὶ εἴκοσι σταδίους. διέχει δὲ τοῦ στό- 10
ματος ἡ νῆσος ἡ Λευκὴ διαρμα πεντακοσίου σταδίων,
λερὰ τοῦ Ἀχιλλέως, πελαγία.

17 Εἶτα Βορυσθένης ποταμὸς πλωτὸς ἐφ' ἐξακοσίους
σταδίους καὶ πλησίου ἄλλος ποταμὸς Ἄρανις καὶ νῆ-
σος πρὸ τοῦ στόματος τοῦ Βορυσθένους ἔχουσα λι- 15
μένην. πλεύσαντι δὲ τὸν Βορυσθένη σταδίους διακο-
σίους ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ πόλις· ἡ δ' αὐτὴ καὶ Ολ-
βία καλεῖται, μέγα ἐμπόριον, κτίσμα Μιλησίων. ἡ δὲ
ὑπερκειμένη πᾶσα χώρα τοῦ λεχθέντος μεταξὺ Βορυ-
σθένους καὶ "Ιστρον πρώτη μέν ἐστιν ἡ τῶν Γετῶν ἐρη- 20
μία, ἐπειτα οἱ Τυρεγέται, μεδ' οὖς οἱ Ἰάξυγες Σαρμάται
καὶ οἱ Βασίλειοι λεγόμενοι καὶ * Οὐργοί, τὸ μὲν πλέον
νομάδες, ὄλιγοι δὲ καὶ γεωργίας ἐπιμελούμενοι· τού-
τους φασὶ καὶ παρὰ τὸν "Ιστρον οἰκεῖν, ἐφ' ἐκάτερα
πολλάκις. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Βαστάρναι μὲν τοῖς Τυ- 25
ρεγέταις ὅμοροι καὶ Γερμανοῖς, σχεδόν τι καὶ αὐτοὺς
τοῦ Γερμανικοῦ γένους ὄντες, εἰς πλείω φῦλα διηρη-
μένοι. καὶ γὰρ Ἀτμονοι λέγονται τινες καὶ Σιδόνες, οἱ
δὲ τὴν Πεύκην κατασχόντες τὴν ἐν τῷ "Ιστρῷ νῆσον
Πεύκην, Ρωξολανοὶ δ' ἀρκτικώτατοι τὰ μεταξὺ τοῦ 30
Τανάϊδος καὶ Βορυσθένους νεμόμενοι πεδία. ἡ γὰρ
προσάρκτιος πᾶσα ἀπὸ Γερμανίας μέχρι τῆς Κασπίας

πεδιάς ἔστιν, ἢν ἵσμεν· ὑπὲρ δὲ τῶν Ρωξολανῶν εἰς τινες οἰκουσίν οὐκ ἴσμεν. οἱ δὲ Ρωξολανοὶ καὶ πρὸς τοὺς Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος στρατηγοὺς ἐπολέμουν ἔχοντες ἡγεμόνα Τάσιον· ἦκον δὲ Παλάκω συμμαχήσοντες τῷ Σκιλούρῳ, καὶ ἐδόκουν μὲν εἶναι μάχιμοι, πρὸς μέντοι συντεταγμένην φάλαγγα καὶ ὥπλισμένην καλῶς τὸ βάροβαρον φῦλον ἀσθενὲς πᾶν ἔστι καὶ τὸ γυμνητικόν. ἐνεῖνοι γοῦν περὶ πέντε μυριάδας πρὸς ἕξακισχυλίους τοὺς Διοφάντῳ, τῷ τοῦ Μιθριδάτου στρατηγῷ, συμπαραταξαμένους οὐκ ἀντέσχον, ἀλλ' οἱ πλεῖστοι διεφθάρησαν. χρῶνται δὲ ἀμορβοῖνοις κράνεσι καὶ θώραξι, γερροφόροι, ἀμυντήρια δ' ἔχοντες καὶ λόγχας καὶ τόξον καὶ ἔιφος· τοιοῦτοι δὲ καὶ τῶν ἄλλων οἱ πλείους. τῶν δὲ νομάδων αἱ σκηναὶ πιλωταὶ.^{30'}

15 πεπήγασιν ἐπὶ τὰς ἀμάξαις, ἐν αἷς διαιτῶνται· περὶ δὲ τὰς σκηνὰς τὰ βοσκήματα, ἀφ' ᾧν τρέφονται καὶ γάλακτι καὶ τυρῷ καὶ ιρέασιν· ἀκολουθοῦσι δὲ τὰς νομαῖς μεταλαμβάνοντες τόπους ἀεὶ τοὺς ἔχοντας πόσαν, χειμῶνος μὲν ἐν τοῖς ἔλεσι τοῖς περὶ τὴν Μαιῶτιν, θέρους δὲ καὶ ἐν τοῖς πεδίοις.

"Απασα δ' ἡ χώρα δυσχείμερός ἔστι μέχρι τῶν ἐπὶ 18 θαλάττη τόπων τῶν μεταξὺ Βορυσθένους καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος· αὐτῶν δὲ τῶν ἐπὶ θαλάττη τὰ ἀρκτικάτα τό τε στόμα τῆς Μαιώτιδος καὶ ἔτι μᾶλλον τὸ τοῦ Βορυσθένους [καὶ] ὁ μυχὸς τοῦ Ταμυράκου κόλπου, [τοῦ] καὶ Καρκινίτου, καθ' ὃν δὲ ίσθμος τῆς μεγάλης χερσού ήσουν. δηλοῖ δὲ τὰ ψύχη, καίπερ ἐν πεδίοις οἰκούντων· ὅνοις τε γὰρ οὐ τρέφουσι (δύσριγον γὰρ τὸ ξῆφον), οἵ τε βόες οἱ μὲν ἄκεφφοι γεννιῶνται, τῶν 30 δὲ ἀπορρινῶσι τὰ κέρατα (καὶ γὰρ τοῦτο δύσριγον τὸ μέρος), οἵ τε ἵπποι μικροί, τὰ δὲ πρόβατα μεγάλα· δῆτονται δὲ χαλκαῖ ὑδρίαι, τὰ δὲ ἐνόντα συμπήττεται.

τῶν δὲ πάγων ἡ σφοδρότης μάλιστα ἐκ τῶν συμβαινόντων περὶ τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος δῆλος ἐστιν. ἀμαξεύεται γὰρ ὁ διάπλους ὁ εἰς Φαναγόρειαν ἐκ τοῦ Παντικαπαίου, ὥστε καὶ πλοῦν εἶναι καὶ ὁδόν· Νεοπτόλεμον δέ φασι τὸν τοῦ Μιθριδάτου στρατηγὸν ἐν τῷ αὐτῷ πόρῳ θέροις μὲν ναυμαχίᾳ περιγενέσθαι τῶν βαρβάρων, χειμῶνος δ' ἵππομαχίᾳ. ὁρυκτοὶ τέ εἰσιν ἰχθύες οἱ ἀποληφθέντες ἐν τῷ κρυστάλλῳ τῇ προσαγορευομένῃ γαγγάμῃ, καὶ μάλιστα οἱ ἀντακαῖοι, δελφῖσι πάρισοι τὸ μέγεθος. φασὶ δὲ καὶ τὴν ἄμπελον 10 ἐν τῷ Βοσπόρῳ κατορύττεσθαι χειμῶνος, ἐπαμώντων πολὺ τῆς γῆς. λέγεται δὲ καὶ τὰ καύματα σφοδρὰ γίνεσθαι, τάχα μὲν τῶν σωμάτων ἀγθικομένων, τάχα δὲ τῶν πεδίων ἀνηνεμούντων τότε, ἢ καὶ τοῦ πάχους τοῦ ἀέρος ἐκθερμανομένου πλέον, καθάπερ ἐν τοῖς νέφε- 15 σιν οἱ παρήλιοι ποιοῦσιν. Ἀτέας δὲ δοκεῖ τῶν πλείστων ἄρξαι τῶν ταύτη βαρβάρων ὁ πρὸς Φίλιππον πολεμήσας τὸν Ἀμύντου.

19 Μετὰ δὲ τὴν πρὸ τοῦ Βορυσθένους ηῆσον ἔξῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ὁ πλοῦς ἐπὶ ἄκραν τὴν τοῦ Ἀχιλλείου δρόμουν, ψιλὸν μὲν χωρίον καλούμενον δ' ἄλλος, ἵερον Ἀχιλλέως· εἰδὲ ὁ Ἀχιλλείος δρόμος, ἀλιτευῆς χερρούνησος· ἔστι γὰρ ταινία τις ὅσον χιλίων σταδίων μῆκος ἐπὶ τὴν ἕω, πλάτος δὲ τὸ μέγιστον δυεῖν σταδίων, ἐλάχιστον τεττάρων πλέθρων, διέχουσα τῆς 25 ἑκατέρωθεν τοῦ αὐχένος ἡπείρου σταδίους ἔξηκοντα, C.308 ἀμμώδης, ὕδωρ ἔχουσα δρυκτόν· κατὰ μέσην δ' ὁ τοῦ ἴσθμου αὐχὴν ὅσον τετταράκοντα σταδίων· τελευτᾶ δὲ πρὸς ἄκραν ἦν Ταμυράκην καλούσιν, ἔχουσαν ὑφορμον βλέποντα πρὸς τὴν ἥπειρον· μεθ' ἦν ὁ Καρ- 30 κινίτης κόλπος εὐμεγέθης, ἀνέχων πρὸς τὰς ἄρκτους ὅσον ἐπὶ σταδίους χιλίους, οἱ δὲ καὶ τριπλασίους φασὶ

μέχοι τοῦ μυχοῦ καλοῦνται δὲ Τάφριοι. τὸν δὲ
κόλπον καὶ Ταμυράκην καλοῦσιν ὄμωνύμως τῇ ἄκρᾳ.

Ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ ἴσθμος ὁ διείργων τὴν σα-
πρὰν λεγομένην λίμνην ἀπὸ τῆς θαλάττης σταδίων
5 [ῶν] τετταράκοντα καὶ ποιῶν τὴν Ταυρικὴν καὶ Σκυ-
θικὴν λεγομένην χερρόνησον· οἱ δὲ τριακοσίων ἑξή-
κοντα τὸ πλάτος τοῦ ἴσθμου φασιν. ἡ δὲ σαπρὰ λίμνη
σταδίων μὲν καὶ τετρακισχιλίων λέγεται, μέρος δ' ἐστὶ^π
τῆς Μαιώτιδος τὸ πρὸς δύσιν· συνεστόμωται γὰρ αὐτῇ
10 στόματι μεγάλῳ. ἐλώδης δ' ἐστὶ σφόδρα καὶ φαπτοῖς
πλοίοις μόγις πλόιμος· οἱ γὰρ ἄνεμοι τὰ τενάγη φά-
δίως ἀνακαλύπτουσιν, εἴτα πάλιν πληροῦσιν, ὥστε τὰ
ἔλη τοῖς μεῖζοσι σκάφεσιν οὐ περάσιμά ἐστιν. ἔχει δ' ὁ
κόλπος νησίδια τρία καὶ προσβραχῆ τινα καὶ χοιρα-
15 δώδη ὀλίγα κατὰ τὸν παράπλουν.

Ἐκπλέοντι δ' ἐν ἀριστερῷ πολίχνῃ καὶ *ἄλλος λι-
μὴν Χερρονησιῶν. ἔκκειται γὰρ ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν
ἀκρα μεγάλη κατὰ τὸν παράπλουν ἐφεξῆς, μέρος οὖσα
τῆς ὅλης χερρονήσου, ἐφ' ἣ ἰδούται πόλις Ἡρακλεω-
20 τῶν ἄποικος τῶν ἐν τῷ Πόντῳ, αὐτὸ τοῦτο καλοῦμένη
Χερρόνησος, διέχουσα τοῦ Τύρα παράπλουν σταδίων
τετρακισχιλίων τετρακοσίων· ἐν ἣ τὸ τῆς Παρθένου
Ιερόν, δαιμονός τινος, ἦς ἐπώνυμος καὶ ἡ ἀκρα ἡ πρὸ^π
τῆς πόλεως ἐστιν ἐν σταδίοις ἑκατόν, καλοῦμένη Παρ-
25 θένιον, ἔχον νεάνι τῆς δαιμονος καὶ ξόανον. μεταξὺ δὲ
τῆς πόλεως καὶ τῆς ἀκρας λιμένες τρεῖς· εἰδέ· ἡ παλαιὰ
Χερρόνησος κατεσκαμμένη καὶ μετ' αὐτὴν λιμὴν στε-
νόστόμος, καθ' ὃν μάλιστα οἱ Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος,
τὰ ληστήρια συνισταντο τοῖς καταφεύγουσιν ἐπ' αὐτὸν
30 ἐπιχειροῦντες· καλεῖται δὲ συμβόλων λιμήν. οὗτος δὲ
ποιεῖ πρὸς ἄλλου λιμένα Κτενοῦντα καλούμενον τετ-
ταράκοντα σταδίων ἴσθμόν· οὗτος δ' ἐστὶν ὁ ἴσθμος ὁ

αλείων τὴν μικρὰν χερρόνησον, ἣν ἔφαμεν τῆς μεγάλης χερρονήσου μέδοις, ἔχουσαν ἐν αὐτῇ τὴν ὁμωνύμιας λεγομένην πόλιν Χερρόνησον.

3 Αὕτη δ' ἦν πρότερον αὐτόνομος, πορθουμένη δὲ ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἡμαγκάσθη προστάτην ἐλέσθαι

C.309 Μιθριδάτην τὸν Εὐπάτορα, στρατηγιῶντα ἐπὶ τοὺς ὑπὲρ τοῦ Ισθμοῦ μέχρι Βορυσθένους βαρβάρους· ταῦτα δ' ἦν ἐπὶ Ρωμαίους παρασκευή. ἐκεῖνος μὲν οὖν κατὰ ταύτας τὰς ἐλπίδας ἀσμενος πέμψας εἰς τὴν Χερρόνησον στρατιὰν ἄμα πρός τε τοὺς Σκύθας ἐπολέμει Σκύ-
λουρόν τε καὶ τοὺς Σκιλούρους παῖδας τοὺς περὶ Πάλακον, οὓς Ποσειδώνιος μὲν πεντήκοντά φησιν Ἀπολλωνίδης δὲ ὅγδοηκοντα· ἄμα δὲ τούτους τις ἐχειρόωσατο βίᾳ καὶ Βοσπόρου κατέστη κύριος παρ' ἐκόντος λαβὼν Παιρισάδου τοῦ κατέχοντος. ἔξι ἐκείνου δὴ τοῦ χρόνου τοῖς τοῦ Βοσπόρου δυνάσταις ἡ τῶν Χερρονησιτῶν πόλις ὑπήκοος μέχρι νῦν ἔστι. τὸ δ' ἵσον ὁ Κτενιοῦς διέχει τῆς τε τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως καὶ τοῦ συμβόλων λιμένος. μετὰ δὲ τὸν συμβόλων λιμένα μέχρι Θεοδοσίας πόλεως ἡ Ταντικὴ παραλία, χιλίων πον στα-
δίων τὸ μῆκος, τραχεῖα καὶ ὀρεινὴ καὶ καταιγίζουσα τοῖς βορέαις ἰδρυται. πρόκειται δ' αὐτῆς ἀκρα πολὺ πρὸς τὸ πέλαγος καὶ τὴν μεσημβρίαν ἐκκειμένη κατὰ Παφλαγονίαν καὶ Ἀμαστρον πόλιν, καλεῖται δὲ Κριοῦ μετώπου. ἀντίκειται δ' αὐτῇ τὸ τῶν Παφλαγόνων 2- ἀκρωτήριον ἡ Κάραμβις τὸ διαιροῦν εἰς πελάγη δύο τὸν Εὔξεινον πόντον τῷ ἐκατέρῳθεν σφιγγομένῳ πορθμῷ. διέστηκε δ' ἡ Κάραμβις τῆς μὲν τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως σταδίους δισχιλίους καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Κριοῦ μετώπου πολὺ ἐλάττους τὸν ἀριθμόν· 30

7. post βαρβάρους: καὶ τοῦ Ἀδρίου.

συχνοὶ γοῦν τῶν διαπλευσάντων τὸν πορθμὸν ἅμα φασὶν ἵδειν ἀμφοτέρας ἐκατέρωθεν τὰς ἄκρας. ἐν δὲ τῇ ὁρεινῇ τῶν Ταύρων καὶ τὸ ὄρος ἐστὶν ὁ Τραπεζοῦς, ὁμώνυμον τῇ πόλει τῇ περὶ τὴν Τιβαρανίαν καὶ τὴν Κολχίδα· καὶ ἄλλο δ' ἐστὶν ὄρος Κιμμερίου κατὰ τὴν αὐτὴν ὁρεινήν, δυναστευσάντων ποτὲ τῶν Κιμμερίων ἐν τῷ Βόσπορῷ· καθ' ὃ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος καλεῖται τοῦ πορθμοῦ πᾶν δὲ ἐπέχει τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος.

- 10 *Μετὰ δὲ τὴν ὁρεινὴν τὴν λεγθεῖσαν ἡ Θεοδοσία 4 κεῖται πόλις, πεδίον εὗγεσιν ἔχουσα καὶ λιμένα ναυσὶ καὶ ἐκατὸν ἑπτηδειον· οὗτος δὲ ὄρος ἦν πρότερον τῆς τῶν Βοσποριανῶν καὶ Ταύρων γῆς· καὶ ἡ ἐξῆς δ' ἐστὶν εὕγεως χώρα μέχρι Παντικαπαίου, τῆς μητροπόλεως 15 τῶν Βοσποριανῶν ἰδρυμένης ἐπὶ τῷ στόματι τῆς Μαιώτιδος. ἐστι δὲ τὸ μεταξὺ τῆς Θεοδοσίας καὶ τοῦ Παντικαπαίου σταδίων περὶ πεντακοσίων καὶ τριάκοντα, χώρα πᾶσα σιτοφόρος, κάμας ἔχουσα καὶ πόλιν εὐλίμενον τὸ Νύμφαιον καλούμενον. τὸ δὲ Παντικαπαίου 20 λόφος ἐστὶν πάντῃ περιοικούμενος ἐν κύκλῳ σταδίων εἴκοσι· πρὸς ἔω δὲ ἔχει λιμένα καὶ νεάρια ὅσον τριάκοντα νεῶν, ἔχει δὲ καὶ ἀκρόπολιν· κτίσμα δὲ ἐστὶν C.310 Μιλησίων. ἐμοναρχεῖτο δὲ πολὺν χρόνον ὑπὸ δυναστῶν τῶν περὶ Λεύκωνα καὶ Σάτυρον καὶ Παιρισάδην 25 αὗτη τε καὶ αἱ πλησιόχωροι κατοικαὶ πᾶσαι αἱ περὶ τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος ἐκατέρωθεν μέχρι Παιρισάδου τοῦ Μιθριδάτη παραδόντος τὴν ἀρχήν. ἐκαλοῦντο δὲ τύραννοι, καίπερ οἱ πλείους ἐπιεικεῖς γεγονότες, ἀρξάμενοι ἀπὸ Παιρισάδου καὶ Λεύκωνος. Παιρισάδης δὲ 30 καὶ θεὸς νενόμισται· τούτῳ δὲ ὁμώνυμος καὶ δὲ ὕστατος, ὃς οὐχ οἶός τε ἀντέχειν πρὸς τοὺς βαρβάρους φόρον πραττομένους μείζω τοῦ πρότερον Μιθριδάτη*

τῷ Εὐπάτορι παρέδωκε τὴν ἀρχήν· ἐξ ἑκείνου δ' ἡ βασιλεια γεγενηται Ρωμαῖοις ὑπῆκοος. τὸ μὲν οὖν πλέον αυτῆς μέρος ἐστὶν ἐπὶ τῆς Εὐρώπης, μέρος δέ τι καὶ ἐπὶ τῆς Ασίας.

5 Τὸ δὲ στόμα τῆς Μαιεύτιδος καλεῖται μὲν Κιμμε- 5 φικὸς Βόσπορος, ἅρχεται δὲ ἀπὸ μεζονος πλάτους ἑβδομήκοντά πον σταδίων· καθ' ὃ διαιρουσιν ἐκ τῶν περὶ Παντικάπαιον τόπων εἰς τὴν ἐγγυτάτῳ πόλιν τῆς Ἀσίας τὴν Φαναγόρειαν· τελευτῇ δ' εἰς πολὺ στενάτερον πορθμόν. διαιρεῖ δ' ὃ στενωπὸς οὗτος τὴν Ασίαν 10 ἀπὸ τῆς Εὐρώπης καὶ ὁ Τάναϊς ποταμός, καταντικὸν φέων ἀπὸ τῶν ἄρχων εἰς τε τὴν λίμνην καὶ τὸ στόμα αὐτῆς· δύο δ' ἔχει τὰς εἰς τὴν λίμνην ἐκβολὰς διεχουσας ἀλλήλων ὅσον σταδίους ἔξηκοντα. ἔστι δὲ καὶ πόλις ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ, μέγιστον τῶν βαρβάρων 15 ἐμπόριον μετὰ τὸ Παντικάπαιον. ἐν ἀριστερᾷ δ' εἰσπλέοντι τὸν Κιμμερικὸν Βόσπορον πολίχνιον ἔστι Μυρμήκιον ἐν εἶκοσι σταδίοις ἀπὸ τοῦ Παντικαπαίου. τοῦ δὲ Μυρμήκιου διπλάσιον διέχει κάμη Παρθένιον, 20 καθ' ᾧ στενώτατος ὃ εἰσπλους ἔστιν ὅσον εἶκοσι σταδίων, ἔχων ἀντικειμένην ἐν τῇ Ἀσίᾳ καάμην Ἀχίλλειον καλούμενην. ἐντεῦθεν δ' εὐθυπλοίᾳ μὲν ἐπὶ τὸν Τάναϊν καὶ τὴν κατὰ τὰς ἐκβολὰς νῆσον στάδιοι δισχίλιοι διακόσιοι, μικρὸν δ' ὑπερβάλλει τοῦ ἀριθμοῦ τούτου πλέοντι παρὰ τὴν Ασίαν· πλέον δ' ἡ τριπλάσιον 25 ἀριστερᾷ πλέοντι μέχρι τοῦ Τανάϊδος, ἐν ὧ παράπλω καὶ ὁ ἴσθμος ἴδρυται. οὗτος μὲν οὖν ὁ παράπλους ἔρημος πᾶς ὁ παρὰ τὴν Εὐρώπην, ὁ δ' ἐν δεξιᾷ οὐκ ἔρημος· ὁ δὲ σύμπας τῆς λίμνης κύκλος ἐνακισχιλίων ἵστορεται σταδίων. ἡ δὲ μεγάλη χερρόνησος τῇ Πελοπον- 30 νῆσφ προσέστηκε καὶ τὸ σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος. ἔχονδι δ' αὐτὴν οἱ τοῦ Βοσπόρου δυνάσται κεκακωμένην πᾶ-

σαν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων. πρότερον δ' εἶχον
δλίγην μὲν τὴν πρὸς τῷ στόματι τῆς Μαιώτιδος καὶ
τῷ Παντικαπαίῳ μέχρι Θεοδοσίας τῶν Βοσπορίων τύ-^{C.311}
ραννοι, τὴν δὲ πλείστην μέχρι τοῦ ισθμοῦ καὶ τοῦ κόλ-
5 που τοῦ Καρκινίτου Ταῦροι, Σκυθιὸν ἔθνος· καὶ
ἐκαλεῖτο ἡ χώρα πᾶσα αὕτη, σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ ἔξω τοῦ
ισθμοῦ μέχρι Βορυσθένους, μικρὰ Σκυθία· διὰ δὲ τὸ
πλήθος τῶν ἐνθένδε περαιωμάτων τόν τε Τύραν καὶ
τὸν "Ιστρον καὶ ἐποικούντων τὴν γῆν καὶ ταύτης οὐκ
10 ὀλέγη μικρὰ προσηγορεύθη Σκυθία, τῶν Θρακῶν τὰ
μὲν τῇ βίᾳ συγχωρούντων τὰ δὲ τῇ κακίᾳ τῆς χώρας·
ἔλωδης γάρ εστιν ἡ πολλὴ αὐτῆς.

Τῆς δὲ χερούνήσουν, πλὴν τῆς ὁρεινῆς τῆς ἐπὶ τῇ 6
Θαλάττῃ μέχρι Θεοδοσίας, ἥ γε ἄλλη πεδιὰς καὶ εὔγεώς
15 ἐστι πᾶσα, σίτῳ δὲ καὶ σφόδρᾳ εὐτυχής, τριακοντά-
χονν ἀποδιδοῦσα διὰ τοῦ τυχόντος ὁρυκτοῦ σχιζομένη.
φόρον τε ἐτέλουν ὀκτωκαίδεκα μυριάδας μεδίμνων
Μιθριδάτη, τάλαντα δ' ἀργυρίου διακόσια σὺν τοῖς
'Ασιανοῖς χωρίοις τοῖς περὶ τὴν Σινδικήν. κάν τοῖς
20 πρόσθεν χρόνοις ἐντεῦθεν ἦν τὰ σιτοκομπεῖα τοῖς "Ἐλ-
λησι, καθάπερ ἐκ τῆς λίμνης αἱ ταριχεῖαι. Λεύκωνα
δέ φασιν ἐκ τῆς Θεοδοσίας Ἀθηναίοις πέμψαι μυριάδας
μεδίμνων διακοσίας καὶ δέκα. οἱ δ' αὐτοὶ οὗτοι καὶ
γεωργοὶ ἐκαλοῦντο ίδίως διὰ τὸ τοὺς ὑπερκειμένους
25 νομάδας είναι, τρεφομένους κρέασιν ἄλλοις τε καὶ ἐπ-
πείοις, ἐπειώ δὲ καὶ τυρῷ καὶ γάλακτι καὶ ὀξυγάλακτι
(τοῦτο δὲ καὶ ὅψημά ἐστιν αὐτοῖς κατασκευασθέν
πως). διόπερ ὁ ποιητὴς ἀπανταῖς εἰρηνε τοὺς ταύτη-
γαλακτοφάγους. οἱ μὲν οὖν νομάδες πολεμισταὶ μᾶλ-
30 λόν εἰσιν ἡ ληστρικοί, πολεμοῦσι δὲ ὑπὲρ τῶν φόρων.
ἐπιτρέψαντες γάρ ἔχειν τὴν γῆν τοῖς ἐθέλουσι γεωρ-
γεῖν ἀντὶ ταύτης ἀγαπῶσι φόρους λαμβάνοντες τοὺς

ενυπεταγμένους μετρίους τινάς, οὐκ εἰς περιουσίαν
ἀλλ' εἰς τὰ ἐφήμερα καὶ τὰ ἀναγκαῖα τοῦ βίου· μὴ δι-
δόντων δὲ αὐτοῖς πολεμοῦσιν. οὕτω δὲ καὶ δικαιόντων
ἄμα καὶ ἀβίους ὁ ποιητὴς εἴρηκε τοὺς αὐτοὺς τούτους
ἄνδρας, ἐπεὶ τῶν γε φόρων ἀπεντακτούμενων οὐδέ⁵
ἄν καθίσταντο εἰς πόλεμον. οὐκ ἀπεντακτοῦσι δ' οἱ
δυνάμει πεποιθότες, ὥστε ἡ ἀμύνασθαι φάδιως ἐπιόν-
τας ἢ καλῦψαι τὴν ἔφοδον· καθάπερ "Ἄσανδρον ποιῆ-
σαι φῆσιν Τψικράτης, ἀποτειχίσαντα τὸν ἴσθμον τῆς
χεροφονήσου τὸν πρὸς τὴν Μαιάντιδι τριακοσίων ὅντα¹⁰
καὶ ἔξικοντα σταδίων, ἐπιστήσαντα πύργους, καθ' ἔκα-
στον στάδιον ἔνα. οἱ δὲ γεωργοὶ ταύτη μὲν ἡμερώτε-
ροι τε ἄμα καὶ πολιτικώτεροι νομίζονται εἶναι, χρημα-
τισταὶ δ' ὅντες καὶ θαλάττης ἀπτόμενοι ληστηρίων
C.312 οὐκ ἀπέχονται, οὐδὲ τῶν τοιούτων ἀδικιῶν καὶ πλεο-¹⁵
νεξίων.

7 Πρὸς δὲ τοῖς καταριθμηθεῖσι τόποις ἐν τῇ χερ-
φονήσῳ καὶ τὰ φρούρια ὑπῆρξεν, ἢ κατεσκεύασε Σκύ-
λουρος καὶ οἱ παῖδες, οἰσπερ καὶ δρμητηρίους ἔχοντο
πρὸς τοὺς Μιθριδάτους στρατηγούς, Παλάκιόν τε καὶ²⁰
Χάβον καὶ Νεάπολις· ἦν δὲ καὶ Εὐπατόριόν τι, πτε-
σαντος Διοφάντου, [τοῦ] Μιθριδάτου στρατηγοῦ.
ἔστι δ' ἄκρα διέχοντα τοῦ τῶν Χεροφονησιτῶν τείχους
ὅσου πεντεκαίδεκα σταδίους, κόλπου ποιοῦσα εὐμε-
γέθη οὐεύοντα πρὸς τὴν πόλιν· τούτου δ' ὑπέροχειται²⁵
λιμνοθάλαττα ἀλοπήγιον ἔχουσα· ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ
Κτενοῦς ἥν. ἵν' οὖν ἀντέχοιεν, οἱ βασιλικοὶ πολιορ-
κούμενοι τῇ τε ἄκρᾳ τῇ λεχθείσῃ φρουρὰν ἐγκατέστη-
σαν τειχίσαντες τὸν τόπον, καὶ τὸ στόμα τοῦ κόλπου
τὸ μέχρι τῆς πόλεως διέχωσαν, ὥστε πεζεύεσθαι φα-³⁰
δίως καὶ τρόπον τινὰ μίαν εἶναι πόλιν ἐξ ἀμφοῖν· ἐκ
δὲ τούτου φᾶσιν ἀπεκρούόντο τοὺς Σκύθας. ἐπεὶ δὲ καὶ

τῷ διατειχίσματι τοῦ ισθμοῦ τοῦ πρὸς τῷ Κτενοῦντι προσέβαλον καὶ τὴν τάφρον ἐνέχουν καλάμῳ, τὸ μεδ' ἡμέραν γεφυρωθὲν μέρος νύκτωρ ἐνεπίμπρασαν οἱ βασιλικοὶ καὶ ἀντεῖχον τέως ἔως ἐπειράτησαν. καὶ νῦν 5 ὑπὸ τοῖς τῶν Βοσπορανῶν βασιλεὺσιν, οὓς ἢν Ρωμαῖοι καταστήσωσιν, ἅπαντά ἔστιν.

"Ιδιον δὲ τοῦ Σκυθικοῦ καὶ τοῦ Σαρματικοῦ παν- 8 τὸς ἔθνους τὸ τοὺς ὄπους ἐκτέμνειν εὐπειθείας χάριν· μικροὶ μὲν γάρ εἰσιν, ὁξεῖς δὲ σφόδρα καὶ δυσπειθεῖς. 10 θῆραι δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς ἔλεσιν ἐλάφων καὶ συάργων, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις δυάργων καὶ δορκάδων. Ιδιον δέ τι καὶ τὸ ἀετὸν μὴ γίνεσθαι ἐν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δὲ τῶν τετραπόδων ὁ καλούμενος κόλος, μεταξὺ ἐλάφου καὶ κριοῦ τὸ μέγεθος, λευκός, ὁξύτερος τούτων 15 τῷ δρόμῳ, πίνων τοῖς δώδισιν εἰς τὴν κεφαλήν, εἰτ' ἐντεῦθεν εἰς ἡμέρας ταμιεύων πλείους ὥστ' ἐν τῇ ἀνύδρῳ νέμεσθαι δαμίως. τοιαύτη μὲν ἡ ἐκτὸς "Ιστρον πᾶσα ἡ μεταξὺ τοῦ Ρήνου καὶ τοῦ Τανάϊδος ποταμοῦ μέχρι τῆς Ποντικῆς θαλάττης καὶ τῆς Μαιώτιδος.

20 *Λοιπὴ δ' ἔστι τῆς Εὐρώπης ἡ ἐντὸς "Ιστρον καὶ 5 τῆς αὔκλῳ θαλάττης, ἀρξαμένη ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ μέχρι τοῦ ιεροῦ στόματος τοῦ "Ιστρον, ἐν ᾧ ἔστιν ἡ τε Ἑλλὰς καὶ τὰ τῶν Μακεδόνων καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν ἔθνη καὶ τὰ ὑπὲρ τούτων πρὸς τὸν "Ιστρον 25 καθήκοντα καὶ πρὸς τὴν ἐφ' ἑκάτερα θάλατταν τὴν τε C.313 Ἀδριατικὴν καὶ τὴν Ποντικήν, πρὸς μὲν τὴν Ἀδριατικὴν τὰ Ἰλλυρικά, πρὸς δὲ τὴν ἐτέραν μέχρι Προποντίδος καὶ Ἑλλησπόντου τὰ Θράκια καὶ εἴτινα τούτοις ἀναμέμικται Σκυθικὰ ἡ Κελτικά. δεῖ δ' ἀπὸ τοῦ "Ιστρον 30 τὴν ἀρχὴν ποιήσασθαι τὰ ἐφεξῆς λέγοντας τοῖς περιόδευσθεῖσι τόποις· ταῦτα δ' ἔστι τὰ συνεχῆ τῇ Ἰταλίᾳ τε καὶ ταῖς Ἀλπεσι καὶ Γερμανοῖς καὶ Δακοῖς καὶ Γέταις.*

δίχα δ' ἂν τις καὶ ταῦτα διέλοι· τρόπον γάρ τινα τῷ "Ιστρῷ παράλληλά ἔστι τά τε Ἰλλυρικὰ καὶ τὰ Παιονικὰ καὶ τὰ Θράκια ὅρη, μίαν πως γραμμὴν ἀποτελουῖντα διήκουσαν ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου μέχρι πρὸς τὸν Πόντον· ἡς προσάρκτια μὲν ἔστι μέρη τὰ μεταξὺ τοῦ δ "Ιστρού καὶ τῶν ὁρῶν, πρὸς νότον δ' ἡ τε Ἑλλὰς καὶ ἡ συνεχὴς βάρβαρος μέχρι τῆς ὁρεινῆς. πρὸς μὲν οὖν τῷ Πόντῳ τὸ Αἴμον ἔστιν ὅρος, μέγιστον τῶν ταύτῃ καὶ ὑψηλότατον, μέσην πως διαιροῦν τὴν Θράκην· ἀφ' οὗ φησι Πολύβιος ἀμφοτέρας καθορᾶσθαι τὰς θαλάττας, οὐκ ἀλλοθῆ λέγων· καὶ γὰρ τὸ διάστημα μέγα τὸ πρὸς τὸν Ἀδρίαν καὶ τὰ ἐπισκοποῦντα πολλά. πρὸς δὲ τῷ Ἀδρίᾳ πᾶσα ἡ Ἀρδία σχεδόν τι, μέση δ' ἡ Παιονία καὶ αὐτῇ πᾶσα ὑψηλή. ἐφ' ἐκάτερα δ' αὐτῆς ἐπὶ μὲν τὰ Θράκια ἡ Ῥοδόπη ὄμορετ, ὑψηλότατον ὅρος μετὰ τὸν Αἴμον, ἐπὶ δὲ θάτερα πρὸς ἄρκτον τὰ Ἰλλυρικὰ ἡ τε τῶν Αὐταριατῶν χώρα καὶ ἡ Δαρδανική. λέγωμεν δὴ τὰ Ἰλλυρικὰ πρῶτα συνάπτουστα τῷ τε "Ιστρῷ καὶ ταῖς "Αλπεσιν, αἱ νεῖνται μεταξὺ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Γερμανίας, ἀρξάμεναι ἀπὸ τῆς λίμνης τῆς κατὰ τοὺς Ὀινδο- 20 λικοὺς καὶ Ραιτοὺς καὶ Ἐλεηττίους.

- 2 Μέρος μὲν δή τι τῆς χώρας ταύτης ἡρήμωσαν οἱ Δακοὶ καταπολεμήσαντες Βοίους καὶ Ταυρίσκους, ἔθνη Κελτικὰ τὰ ὑπὸ Κριτασίωφ, φάσκουστες εἰναι τὴν χώραν σφετέραν, καίπερ ποταμοῦ διείργοντος τοῦ Πα- 25 ρίσου, φέοντος ἀπὸ τῶν ὁρῶν ἐπὶ τὸν "Ιστρὸν κατὰ τοὺς Σκιορδίσκους καλούμενους Γαλάτας· καὶ γὰρ οὖτοι τοῖς Ἰλλυριοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Θρακίοις ἀναμίξις φέκησαν· ἀλλ' ἐκείνους μὲν οἱ Δακοὶ κατέλυσαν, τούτοις δὲ καὶ συμμάχους ἔχοντας αποπλάνησαν τὸ δὲ λοι- 30 πὸν ἔχουσι Παννόνιοι μέχρι Σεγεστικῆς καὶ "Ιστρὸν πρὸς ἄρκτον καὶ ἔω· πρὸς δὲ τὰλλα μέρη ἐπὶ πλέον

διατείνουσιν. ἡ δὲ Σεγεστικὴ πόλις ἐστὶ Παννονίων ἐν συμβολῇ ποταμῶν πλειόνων, ἀπάντων πλωτῶν, εὐφυὲς δόμητήριον τῷ πρὸς Δακοὺς πολέμῳ· ὑποπέπτωκε γὰρ ταῖς "Αλπεσιν, αἱ διατείνουσι μέχρι τῶν Ιαπόδων, Κελτικοῦ τε ἄμα καὶ Ἰλλυρικοῦ ἔθνους· ἐντεῦ-^{C.314}

θεν δὲ καὶ ποταμοὶ φέουσι πολὺν καταφέροντες εἰς αὐτὴν τὸν τε ἄλλον καὶ τὸν ἐκ τῆς Ἰταλίας φόρτον. εἰς γὰρ Ναύπορτον ἔξι Ἀκυληίας ὑπεριθεῖσι τὴν "Οκραν εἰσὶ στάδιοι τριακόσιοι πεντήκοντα, εἰς ἥν αἱ ἀριάμα-
10 ἔξι κατάγονται, τῶν Ταυρίσκων οὖσαν κατοικίαν· ἔνιοι δὲ πεντακοσίους φασίν. ἡ δ' "Οκρα ταπεινότατον μέρος τῶν "Αλπεών ἐστι τῶν διατείνουσῶν ἀπὸ τῆς Ραιτικῆς μέχρι Ιαπόδων· ἐντεῦθεν δ' ἔξαρσται τὰ δρη πάλιν ἐν τοῖς Ιάποσι καὶ καλεῖται "Αλβια. ὅμοιως δὲ
15 καὶ ἐκ Τεργέστες κώμης Καρυκῆς ὑπέρθεσίς ἐστι διὰ τῆς "Οκρας εἰς ἔλος Δούγεον καλούμενον. πλησίον δὲ τοῦ Ναυπόρτου ποταμός ἐστι Κορκόρας ὁ δεχόμενος τὰ φορτία· οὗτος μὲν οὖν εἰς τὸν Σάβον ἐμβάλλει, ἐκεῖνος δ' εἰς τὸν Δράβον, ὁ δὲ εἰς τὸν Νόαρον κατὰ
20 τὴν Σεγεστικήν. ἐντεῦθεν δ' ἦδη ὁ Νόαρος * πλήθει προσλαβὼν τὸν διὰ τῶν Ιαπόδων φέοντα ἐκ τοῦ Αλβίου δρούς Κόλαπιν συμβάλλει τῷ Δανονιώ κατὰ τοὺς Σκορδίσκους. ὁ δὲ πλοῦς τὰ πολλὰ τοῖς ποταμοῖς ἐπὶ τὰς ἀριτούς ἐστίν· ὅδὸς δ' ἀπὸ Τεργέστες ἐπὶ τὸν Δανονιών σταδίων ὅσον χιλίων καὶ διακοσίων. ἐγγὺς δὲ τῆς Σεγεστικῆς ἐστι καὶ ἡ Σισκία φρούριον καὶ Σίρμιον ἐν ὅδῳ κείμεναι τῇ εἰς Ἰταλίαν.

"Ἐθνη δ' ἐστὶ τῶν Παννονίων Βρεῦκοι καὶ Ανδι-
3
ξήτιοι καὶ Διτίωνες καὶ Πειρούσται καὶ Μαξαῖοι καὶ
30 Δαισιτιάται, ὧν Βάτων ἥγεμών, καὶ ἄλλα ἀσημότερα μικρά, ἂ διατείνει μέχρι Δαλματίας σχεδὸν δέ τι καὶ Αρδιαίων ιόντι πρὸς νότον· ἀπασα δ' ἡ ἀπὸ τοῦ μν-
3*

χοῦ τοῦ Ἀδρίου παρήκουσα ὁρεινὴ μέχρι τοῦ Ριζονικοῦ κόλπου καὶ τῆς Ἀρδιαίων γῆς μεταξὺ πίπτουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τῶν Παννονίων ἐθνῶν. σχεδὸν δέ τι καὶ ἐντεῦθεν τὴν ἀρχὴν ποιητέον τῆς συνεχοῦς περιοδείας ἀναλαβούσηι μικρὰ τῶν λεχθέντων 5 πρότερον. ἔφαμεν δ' ἐν τῇ περιοδείᾳ τῆς Ἰταλίας Ἰστρους εἶναι πρώτους τῆς Ἰλλυρικῆς παραλίας συνεχεῖς τῇ Ἰταλίᾳ καὶ τοῖς Κάρονοις, καὶ διότι μέχρι Πόλας, Ἰστρικῆς πόλεως, προήγαγον οἱ νῦν ἡγεμόνες τοὺς τῆς Ἰταλίας ὄρους. οὗτοι μὲν οὖν περὶ ὀκτακοσίους 10 σταδίους εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ. τοσοῦτοι δ' εἰσὶ καὶ ἀπὸ τῆς ἄκρας τῆς πρὸ τῶν Πολῶν ἐπὶ Ἀγκῶνα ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὴν Ἐνετικήν. δὲ πᾶς Ἰστρικὸς παράπλους χίλια τριακόσια.

4. Ἐξῆς δ' ἐστὶν ὁ Ἰαποδικὸς παράπλους χιλίων στα- 15 δίων· ἵδρυνται γὰρ οἱ Ἰάποδες ἐπὶ τῷ Ἀλβίῳ ὅρει τελευταῖφε τῶν Ἀλπεων ὅντι ύψηλῷ σφόδρᾳ, τῇ μὲν ἐπὶ τοὺς Παννονίους καὶ τὸν Ἰστρον καθήκοντες τῇ δ' ἐπὶ τὸν Ἀδρίαν, ἀρειμάντοι μὲν ἐκπεπονημένοι δὲ ὑπὸ τοῦ Σεβαστοῦ τελέως· πόλεις δ' αὐτῶν Μέτουλον 20 0.315 Ἀρουπίνοι Μονήτιον ὅρενδων· λυκρὰ δὲ τὰ χωρία, καὶ ζειᾶ καὶ κέγχω τὰ πολλὰ τρεφομένων· ὁ δ' ὀπλισμὸς Κελτικός· κατάστικτοι δ' ὅμοιως τοῖς ἄλλοις Ἰλλυριοῖς καὶ Θραξί. μετὰ δὲ τὸν τῶν Ἰαπόδων ὁ Λιβυρνικὸς παράπλους ἐστί, μείζων τοῦ προτέρου σταδίους [πεν- 25 τακοσίους], ἐν δὲ τῷ παράπλῳ ποταμὸς φορτίοις ἀνάπλουν ἔχων μέχρι Αλματέων, καὶ Σκάρδων Λιβυρνή πόλις.

5. Παρ' ὅλην δ' ἦν εἶπον παραλίαν υῆσοι μὲν αἱ Ἀψυρτίδες, περὶ ἃς ἡ Μήδεια λέγεται διαφθεῖραι τὸν 30 ἀδελφὸν Ἀψυρτον διώκοντα αὐτήν. ἐπειτα ἡ Κυρικτικὴ κατὰ τοὺς Ἰάποδας· εἰδ' αἱ Λιβυρνίδες περὶ τετ-

ταράκοντα τὸν ἀριθμόν· εἶτ' ἄλλαι υῆσοι, γυναικιμώ-
ταται δ' Ἰσσα, Τραγούριον, Ἰσσέων κτίσμα, Φάρος ἡ
πρότερον Πάρος, Παρίων κτίσμα, ἐξ ἣς Δημήτριος ὁ
Φάριος. εἶτα ἡ τῶν Δαλματέων παραλία καὶ τὸ ἐπί-
5 νειον αὐτῶν Σάλων. ἔστι δὲ τῶν πολὺν χρόνον πολε-
μησάντων πρὸς Ρωμαίους τὸ ἔθνος τοῦτο· κατοικίας
δ' ἐσχεν ἀξιολόγους εἰς πεντήκοντα, ὥν τινὰς καὶ πό-
λεις, Σάλωνά τε καὶ Πρώμωνα καὶ Νινίαν καὶ Σινώ-
τιον τό τε νέον καὶ τὸ παλαιόν, ἃς ἐνέπορησεν ὁ Σεβα-
10 στός. ἔστι δὲ καὶ Ἀνδήτριον ἐρυμνὸν χωρίον, Δέλμιον
δὲ μεγάλη πόλις, ἡς ἐπώνυμον τὸ ἔθνος· μικρὰν δ'
ἐποίησε Νασικᾶς καὶ τὸ πεδίον μηλόβοτον διὰ τὴν πλε-
ονεξίαν τῶν ἀνθρώπων. ἶδιον δὲ τῶν Δαλματέων τὸ
διὰ ὄκτατηρίδος χώρας ἀναδασμὸν ποιεῖσθαι· τὸ δὲ
15 μὴ χρησθαι νομίσμασι πρὸς μὲν τοὺς ἐν τῇ παραλίᾳ
ταύτῃ ἶδιον, πρὸς ἄλλους δὲ τῶν βαρβάρων πολλοὺς
νοινόν. Ἀδριον δὲ ὅρος ἐστὶ μέσην τέμνον τὴν Δαλμα-
τικήν, τὴν μὲν ἐπιθαλάττιον τὴν δ' ἐπὶ θάτερα. εἰδὸν
20 δὲ Νάρων ποταμὸς καὶ οἱ περὶ αὐτὸν Δαόφιξοι καὶ Ἀρ-
διαῖοι καὶ Πληραῖοι, ὥν τοῖς μὲν πλησιάζει υῆσος ἡ
μέλαινα Κόρωνα καλούμενη καὶ πόλις, Κυιδῶν κτί-
σμα, τοῖς δὲ Ἀρδιαῖοις ἡ Φάρος, Πάρος λεγομένη πρό-
τερον· Παρίων γάρ ἔστι κτίσμα.

‘Βαρδαῖον δ’ οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν τοὺς Ἀρδιαί- 6
25 οὺς· ἀπέωσαν δ’ αὐτοὺς εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς
θαλάττης Ρωμαῖοι, λυμαινομένους αὐτὴν διὰ τῶν λη-
στηρίων, καὶ ἡνάγκασαν γεωργεῖν. τραχεῖα δὲ χώρα
καὶ λυπρὰ καὶ οὐ γεωργῶν ἀνθρώπων, ὥστ’ ἐξέφθαρ-
ται τελέως [τὸ ἔθνος], μικροῦ δὲ καὶ ἐκλέκοιπε. τοῦτο
30 δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἔθνεσι τοῖς ταύτῃ συνέβη· οἱ γὰρ
πλεῖστον δυνάμενοι πρότερον τελέως ἐταπεινώθησαν
καὶ ἐξέλιπον, Γαλατῶν μὲν Βοῖοι καὶ Σκορδίσται, Ἡ-

λυριῶν δὲ Αὐταριάται καὶ Ἀρδιαῖοι καὶ Δαρδάνιοι,
Θρακῶν δὲ Τριβαλλοί, ὑπὸ ἀλλήλων μὲν εἴς ἀρχῆς,
Ο.316 ὑστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων καὶ Ρωμαίων ἐκπολεμού-
μενοι.

7 Μετὰ δ' οὗ τὴν τῶν Ἀρδιαίων καὶ Πληραίων 5
παραλίαν ὁ Ρίζουνικὸς κόλπος ἐστὶ καὶ Ρίζων πόλις
καὶ ἄλλα πολίχνια, καὶ Δρίλων ποταμὸς ἀνάπλουν
ἔχων πρὸς ἔω μέχρι τῆς Δαρδανικῆς, ἣ συνάπτει
τοῖς Μακεδονικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Παιονικοῖς πρὸς
μεσημβρίαν, καθάπερ καὶ οἱ Αὐταριάται καὶ Δασα- 10
ρήτιοι, ἄλλοι κατ' ἄλλα μέρη συνεχεῖς ἀλλήλοις ὅν-
τες καὶ τοῖς Αὐταριάταις. τῶν δὲ Δαρδανιατῶν εἰσι
καὶ οἱ Γαλάβριοι, παρ' οὓς ... πόλις ἀρχαία, καὶ οἱ Θου-
νάται, [οἵ] Μαΐδοις ἔθνει Θρακίῳ πρὸς ἔω συνάπτου-
σιν. ἄγροι δ' ὅντες οἱ Δαρδάνιοι τελέως, ὥσθ' ὑπὸ 15
ταῖς κοπορίαις ὀρύξαντες σπήλαια ἐνταῦθα διαίτας ποι-
εῖσθαι, μουσικῆς δ' ὅμως ἐπεμελήθησαν ἀεὶ χρώμε-
νοι καὶ αὐλοῖς καὶ τοῖς ἐντατοῖς ὀργάνοις. οὗτοι μὲν
οὖν ἐν τῇ μεσογαίᾳ· μηνησθησόμεθα δ' αὐτῶν καὶ
ὑστερον.

20

8 Μετὰ δὲ τὸν Ρίζουνικὸν κόλπον Λίσσος ἐστὶ πόλις
καὶ Ακρόλισσος καὶ Ἐπίδαμνος Κεφυνραίων κτίσμα, ἡ
νῦν Δυρράχιον ὁμοιώμως τῇ χερρονήσῳ λεγομένῃ
ἐφ' ἣς ἴδρυνται. εἰδὸς δὲ Ἀφος ποταμὸς καὶ ὁ Ἀωος, ἐφ'
φ' Ἀπολλωνία πόλις εὔνομωτάτη, κτίσμα Κορινθίων 25
καὶ Κεφυνραίων, τοῦ ποταμοῦ μὲν ἀπέχουσα σταδίους
δέκα τῆς θαλάττης δὲ ἐξήκοντα. τὸν δὲ Ἀωον Αἴαντα
καλεῖ Ἐκαταῖος καὶ φησιν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ τόπου τοῦ
περὶ Λάκμου, μᾶλλον δὲ τοῦ αὐτοῦ μυχοῦ, τόν τε Ἰνα-
χον φεῦν εἰς Ἀργος πρὸς νότον καὶ τὸν Αἴαντα πρὸς 30

έσπεραν καὶ πρὸς τὸν Ἀδρίαν. ἐν δὲ τῇ χώρᾳ τῶν Ἀπολλωνιατῶν καλεῖται τι νυμφαῖον· πέτρα δ' ἐστὶ πῦρ ἀναδιδοῦσα, ὑπ' αὐτῆς δὲ κρήναι φέουσι χλιαροῦ καὶ ἀσφαλτού, καιομένης, ὡς εἰκός, τῆς βώλου τῆς ἀσφαλτίτιδός· μέταλλον δ' αὐτῆς ἔστι πλησίον ἐπὶ λόφου· τὸ δὲ τμηθὲν ἐκπληροῦται πάλιν τῷ χρόνῳ, τῆς ἐγχωνού συμένης εἰς τὰ δρύγματα γῆς μεταβαλλούσης εἰς ἀσφαλτού, ὡς φησι Ποσειδώνιος. λέγει δ' ἐκεῖνος καὶ τὴν ἀμπελίτιν γῆν ἀσφαλτώδη τὴν ἐν Σελευκείᾳ τῇ Πιερίᾳ 10 μεταλλευμένην ἄκος τῆς φθειριώσης ἀμπέλου· χρισθεῖσαν γὰρ μετ' ἐλαίου φθείρειν τὸ θηρίον πρὸν ἐπὶ τοὺς βλαστοὺς τῆς φίξης ἀναβῆναι· τοιαύτην δ' εὑρεθῆναι καὶ ἐν Ρόδῳ πρυτανεύοντος αὐτοῦ, πλειονος δ' ἐλαίου δεῖσθαι. μετὰ δ' Ἀπολλωνίαν Βυλλιακὴν καὶ 15 Θραικὸν καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτοῦ διάπλουρος καὶ τὰ Κεραύνια ὅρη, ἡ ἀρχὴ τοῦ στόματος τοῦ Ιονίου κόλπου καὶ τοῦ Ἀδρίανου.

Τὸ μὲν οὖν στόμα κοινὸν ἀμφοῖν ἔστι, διαφέρει δὲ ὁ Ιόνιος διότι τοῦ πρώτου μέρους τῆς θαλάττης C.317 20 ταύτης ὄνομα τοῦτο ἔστιν, διὸ Ἀδρίας τῆς ἐντὸς μέχρι τοῦ μυχοῦ, νυνὶ δὲ καὶ τῆς συμπάσης. φησὶ δ' ὁ Θεόπομπος τῶν ὄνομάτων τὸ μὲν ἥκειν ἀπὸ ἀνδρὸς ἥγησαμένου τῶν τόπων ἐξ Ἰσηνοῦ τὸ γένος, τὸν Ἀδρίαν δὲ ποταμοῦ ἐπώνυμον γεγονέναι. στάδιοι δ' ἀπὸ τῶν 25 Λιβυρηνῶν ἐπὶ τὰ Κεραύνια μικρῷ πλείους η δισχίλιοι. Θεόπομπος δὲ τὸν πάντα ἀπὸ τοῦ μυχοῦ πλοῦν ἡμέραν ἐξ εἰρηνε, πεζῇ δὲ τὸ μῆκος τῆς Ἰλλυρίδος καὶ τοιάκοντα· πλεονάξειν δέ μοι δοκεῖ. καὶ ἄλλα δ' οὐ πιστὰ λέγει, τό τε συντετρῆσθαι τὰ πελάγη . . . ἀπὸ 30 τοῦ εὐρίσκεσθαι κέραμόν τε Χῖον καὶ Θάσιον ἐν τῷ Νάρωνι, καὶ τὸ ἄμφω κατοπτεύεσθαι τὰ πελάγη ἀπό τινος ὄρους, καὶ τῶν νήσων τῶν Λιβυρηνίδων * τιθεὶς,

ώστε κύκλου ἔχειν σταδίων καὶ πεντακοσίων, καὶ τὸ τὸν
Ἴστρον ἐν τῷ στομάτῳ εἰς τὸν Ἀδρίαν ἐμβάλλειν.
τοιαῦτα δὲ καὶ τοῦ Ἐρατοσθένους ἔντα παρακούσματά
ἔστι λαοδογματικά, καθάπερ Πολύβιός φησι καὶ περὶ
αὐτοῦ καὶ τῶν ἄλλων λέγων συγγραφέων. 5

10 Τὸν μὲν οὖν παράπλονν ἄπαντα τὸν Ἰλλυρικὸν
σφόδρα εὐλίμενον εἶναι συμβαίνει καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς
συνεχοῦς ἥρόνος καὶ ἐκ τῶν πλησίον ηήσων, ὑπεναν-
τίως τῷ Ἰταλικῷ τῷ ἀντικειμένῳ ἀλιμένῳ ὅντι· ἀλεει-
νοι δὲ καὶ χρηστόναρποι ὄμοιώς· ἐλαιόφυτοι γὰρ καὶ 10
εὐάμπελοι, πλὴν εἰ τί που σπάνιον ἐκτετράχυνται τε-
λέως. τοιαύτη δ' οὖσα ὡλιγωρεῖτο πρότερον ἡ Ἰλλυ-
ρικὴ παραλία, τάχα μὲν καὶ κατ' ἄγνοιαν τῆς ἀρετῆς,
τὸ μέντοι πλέον διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἀνθρώπων καὶ
τὸ ληστρικὸν ἔθος. ἡ δ' ὑπεροχειμένη ταύτης πᾶσα 15
ὅρεινη καὶ ψυχρὰ καὶ νιφόβολός ἐστιν, ἡ δὲ προσάρ-
κτιος καὶ μᾶλλον, ὡστε καὶ τῶν ἀμπέλων σπάνιν εἶναι
καὶ ἐν ταῖς ὑψώσεσι καὶ ἐν τοῖς ἐπικεδωτέροις. ὁροπέ-
δια δ' ἐστὶ ταῦτα ἡ κατέχουσιν οἱ Παννόνιοι, πρὸς
νότον μὲν μέχρι Δαλματέων καὶ Ἀρδιαίων διατείνοντα, 20
πρὸς ἄρκτον δὲ ἐπὶ τὸν Ἴστρον τελευτῶντα, πρὸς ἔω
δὲ Σκορδίσκοις συνάπτοντα τῇ δὲ παρὰ τὰ ὅρη
τῶν Μακεδόνων καὶ Θρακῶν.

11 Αὔταριάται μὲν οὖν τὸ μέγιστον καὶ ἄριστον τῶν
Ἰλλυριῶν ἔθνος ὑπῆρξεν, ὃ πρότερον μὲν πρὸς Ἀρδί- 25
αίους συνεχῶς ἐπολέμει περὶ ἀλῶν ἐν μεθορίοις πη-
γνυμένων ἐξ ὑδατος δέοντος ὑπὸ ἄγκει τινὶ τοῦ ἔαρος·
ἀρυσαμένοις γὰρ καὶ ἀποθεῖσιν ἡμέρας πέντε ἐξεπή-
γνυντο οἱ ἄλες. συνέκειτο δὲ παρὰ μέρος χρῆσθαι τῷ
ἀλοπηγίῳ, παραβαίνοντες δὲ τὰ συγκείμενα ἐπολέ- 30
C.318μονν· καταστρεψάμενοι δέ ποτε οἱ Αὔταριάται Τρι-
βαλλοὺς ἀπὸ Ἀγριάνων μέχρι τοῦ Ἴστρου καθήκοντας

ἥμερῶν πεντεκαίδεκα ὁδὸν ἐπῆρξαν καὶ τῶν ἄλλων Θρακῶν τε καὶ Ἰλλυριῶν· κατελύθησαν δ' ὑπὸ Σκορδίσκων πρότερον, ὕστερον δ' ὑπὸ Ρωμαίων, οἱ καὶ τοὺς Σκορδίσκους αὐτοὺς κατεπολέμησαν πολὺν χρό-

5 νον ἵσχύσαντας.

"Ωικησαν δὲ οὗτοι παρὰ τὸν "Ιστρον διηρημένοι 12 δίχα, οἱ μὲν μεγάλοι Σκορδίσκοι καλούμενοι οἱ δὲ μικροί· οἱ μὲν μεταξὺ δυεῖν ποταμῶν ἐμβαλλόντων εἰς τὸν "Ιστρον, τοῦ τε Νοάρου τοῦ παρὰ τὴν Σεγεστικὴν 10 φέοντος καὶ τοῦ Μάργου (τινὲς δὲ Βάργου φασίν), οἱ δὲ μικροὶ τούτου πέραν, συνάπτοντες Τριβαλλοῖς καὶ Μυσοῖς. εἶχον δὲ καὶ τῶν νήσων τινὰς οἱ Σκορδίσκοι· ἐπὶ τοσοῦτον δ' ηὔξηθησαν ὥστε καὶ μέχρι τῶν Ἰλλυριῶν καὶ τῶν Παιονικῶν καὶ Θρακίων προῆλθον 15 δρῶν· κατέσχον οὖν καὶ τὰς νήσους τὰς ἐν τῷ "Ιστρῳ τὰς πλείους, ἦσαν δὲ καὶ πόλεις αὐτοῖς Ἔόρτα καὶ Καπέδουνον. μετὰ δὲ τὴν τῶν Σκορδίσκων χώραν παρὰ μὲν τὸν "Ιστρον ἡ τῶν Τριβαλλῶν καὶ Μυσῶν ἔστιν, 20 ὡν ἐμνήσθημεν πρότερον, καὶ τὰ ἔλη τὰ τῆς μικρᾶς καλουμένης Σκυθίας τῆς ἐντὸς "Ιστρού· καὶ τούτων ἐμνήσθημεν. ὑπεροικοῦσι δὲ οὗτοί τε καὶ Κρόβυζοι καὶ οἱ Τρωγλοδύται λεγόμενοι τῶν περὶ Κάλλατιν καὶ Τομέα καὶ "Ιστρον τόπων. εἶθ' οἱ περὶ τὸ Άίμουν καὶ οἱ ὑπὲρ αὐτοῦ οίκοῦντες μέχρι τοῦ Πόντου Κόραλλοι 25 καὶ Βέσσοι καὶ Μαίδων τινὲς καὶ Δαυθηλητῶν. πάντα μὲν οὖν ταῦτα ληστρικάτατα ἔδυνη, Βέσσοι δέ, οἵπερ τὸ πλέον τοῦ ὄφους νέμονται τοῦ Άίμουν, καὶ ὑπὸ τῶν ληστῶν λησταὶ προσαγορεύονται, καλυβῖται τινες καὶ λυπρόβιοι, συνάπτοντες τῇ τε Ροδόπῃ καὶ τοῖς Παί- 30 οσι καὶ τῶν Ἰλλυριῶν τοῖς τε Αὐταριάταις καὶ τοῖς

8. post ποταμῶν: οἴκεῖν

Δαρδανίοις. μεταξὺ δὲ τούτων τε καὶ τῶν Ἀρδιαίων οἱ Δασαρήτιοι εἰσὶ καὶ Ἀγριαῖνες καὶ ἄλλα ἀσημα ἔθνη, ἡ ἐπόρθουν οἱ Σκορδίσκοι μέχρι ἡρήμωσαν τὴν χώραν καὶ δρυμῶν ἀβάτων ἐφ' ἡμέρας πλείους ἐποίησαν μεστῆν.

6 Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς μεταξὺ Ἰστρου καὶ τῶν ὁρῶν τῶν ἐφ' ἑκάτερα τῆς Παιονίας ἡ Ποντικὴ παραλία, ἡ ἀπὸ τοῦ λεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου μέχρι τῆς περὶ τὸν Άλμου ὁρεινῆς καὶ μέχρι τοῦ στόματος τοῦ κατὰ Βυζάντιον. καθάπερ [δὲ] τὴν Ἰλλυρικὴν παραλίαν ἐπιόν- 10 τες μέχρι τῶν Κεραυνίων ὁρῶν προύβημεν ἔξω τῆς Ἰλλυρικῆς πιπτόντων ὁρεινῆς, ἔχόντων δέ τι οἰκεῖον πέρας, τὰ μεσόγαια δ' ἔθνη τούτοις ἀφωρίσμενα, νομίζοντες σημειωδεστέρας ἕσεσθαι τὰς τοιαύτας περιγραφὰς καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ὕστερον, οὕτω κάν- 15 ταῦθα ἡ παραλία, κάνναν ὑπεροπίπητη τὴν ὁρεινὴν γραμμήν, δῆμος εἰς οἰκεῖον τι πέρας τελευτήσει τὸ τοῦ Πόν-
C.319του στόμα καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ἐφεξῆς. ἔστιν οὖν ἀπὸ τοῦ λεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὴν συνεχῆ παραλίαν Ἰστρος πολίχνιον ἐν πεντα- 20 κοσίοις σταδίοις, Μιλησίων αὐτίσμα· εἴτα Τόμις, ἔτερον πολίχνιον ἐν διακοσίοις πεντήκοντα σταδίοις· εἴτα πόλις Κάλλατις ἐν διακοσίοις ὅγδοηκοντα, Ἡρακλεωτῶν ἄποικος· εἴτ' Ἀπολλωνία ἐν χιλίοις τριακοσίοις σταδίοις, ἄποικος Μιλησίων, τὸ πλέον τοῦ αὐτίσματος 25 ἰδρυμένον ἔχοντα ἐν νησίῳ τινὶ, [ὅπου] λερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, ἐξ οὗ Μάρκος Λεύκολλος τὸν κολοσσὸν ἤρε καὶ ἀνέθηκεν ἐν τῷ Καπετωλίῳ τὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, Καλάμιδος ἔργον. ἐν τῷ μεταξὺ δὲ διαστήματι τῷ ἀπὸ Καλλάτιδος εἰς Ἀπολλωνίαν Βιζαίνη τέ ἔστιν, 30 ἡς κατεπόθη πολὺ μέρος ὑπὸ σεισμῶν, καὶ Κρουνοὶ καὶ Ὁδησσὸς Μιλησίων ἄποικος, καὶ Ναύλοχος Με-

σημβοιανῶν πολέμιον· εἶτα τὸ Αἴμου ὅρος μέχρι τῆς
 δεῦρο θαλάττης διῆκον· εἶτα Μεσημβρία Μεγαρέων
 ἄποικος, πρότερον δὲ *Μενεβρία, οἶον* Μένα πόλις,
 τοῦ κτίσαντος* Μένα καλουμένου, τῆς δὲ πόλεως βούλας
 5 καλουμένης θρακιστή· ὡς καὶ ἡ τοῦ Σήλινος πόλις Ση-
 λυμβρία προσηγόρευται, ἡ τε Αἶνος Πολτυμβρία ποτὲ
 ὠνομάζετο· εἰτ' Ἀγχιάλη πολέμιον Ἀπολλωνιατῶν καὶ
 αὐτὴ Ἀπολλωνία. ἐν δὲ ταύτῃ τῇ παραλίᾳ ἔστιν ἡ
 Τίριξις ἄκρα, χωρίον ἐρυμνόν, φῶτε καὶ Λυσίμαχος
 10 ἐχρήσατο γαζοφυλακίῳ. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς Ἀπολλωνίας
 ἐπὶ Κυανέας στάδιοι εἰσὶ περὶ χιλίους καὶ πεντακοσίους,
 ἐν δὲ τῷ μεταξὺ ἡ τε Θυνιὰς τῶν Ἀπολλωνιατῶν χώρα,
 καὶ Φινόπολις καὶ Ἀνδριακή, συνάπτουσαι τῷ Σαλμυ-
 δησσῷ. ἔστι δ' οὗτος ἔρημος αλγιαλὸς καὶ λιθώδης, ἀλ-
 15 μενος, ἀναπεπταμένος πολὺς πρὸς τοὺς βορέας, στα-
 δίων ὅσον ἐπτακοσίων μέχρι Κυανέων τὸ μῆκος, πρὸς
 δὲ οἱ ἐκπίπτοντες ὑπὸ τῶν Ἀστεῶν διαρραΐζονται τῶν
 ὑπερκειμένων, Θρακίουν ἔθνους. αἱ δὲ Κυάνεαι πρὸς
 τῷ στόματι τοῦ Πόντου εἰσὶ δύο νησίδια, τὸ μὲν τῇ
 20 Εὐρώπῃ προσεχές τὸ δὲ τῇ Ἀσίᾳ, πορθμῷ διειργόμενα
 ὅσον εἴκοσι σταδίων. τοσοῦτον δὲ διέχει καὶ τοῦ Ιεροῦ
 τοῦ Βυζαντίων καὶ τοῦ Ιεροῦ τοῦ Χαλκηδονίων, ὅπερ
 ἔστι τοῦ στόματος τοῦ Εὔξενου τὸ στενώτατον· προσ-
 ὄντι γὰρ δέκα σταδίους ἄκρα ἔστι πενταστάδιον ποι-
 25 ούσα τὸν πορθμόν, εἶτα διέσταται ἐπὶ πλέον καὶ ποιεῖν
 ἀρχεται τὴν Προποντίδα.

*Ἀπὸ μὲν οὖν τῆς ἄκρας τῆς τὸ πενταστάδιον ποι- 2
 ούσης ἐπὶ τὸν ὑπὸ τῇ Συκῆ καλούμενον λιμένα στά-
 διοι πέντε καὶ τριάκοντα, ἐντεῦθεν δὲ ἐπὶ τὸ Κέρας τὸ C.320
 30 Βυζαντίων πέντε. ἔστι δὲ τὸ Κέρας προσεχῆς τῷ Βυ-

12. post χώρα: Ἀγχιάλη καὶ αὐτὴ Ἀπολλωνιατῶν

ξαντίων τείχει κόλπος ἀνέχων ὡς πρὸς δύσιν ἐπὶ σταδίους ἔξηκοντα, ἐοικώς ἐλάφου κέρατι· εἰς γάρ πλείστους σχίζεται κόλπους ὡς ἄν οὐλάδους τινάς, εἰς οὓς ἐμπίπτουσα ἡ πηλαμὺς ἀλίσκεται φαδίως διὰ τε τὸ πλῆθος αὐτῆς καὶ τὴν βίᾳν τοῦ συνελαύνοντος φοῦ καὶ 5 τὴν στενότητα τῶν κόλπων, ὥστε καὶ χερσὶν ἀλίσκεσθαι. γεννᾶται μὲν οὖν τὸ ξῖφον ἐν τοῖς ἔλεσι τῆς Μαιώτιδος, ἵσχυσαν δὲ μικρὸν ἐκπίπτει διὰ τοῦ στόματος ἀγεληδὸν καὶ φέρεται παρὰ τὴν Ἀσιανὴν ἥρόνα μέχρι Τραπεζοῦντος καὶ Φαρνακείας· ἐνταῦθα δὲ πρῶτον 10 συνίστασθαι συμβαίνει τὴν θήραν, οὐ πολλὴ δ' ἐστίν· οὐ γάρ πω τὸ προσῆκον ἔχει μέγεθος· εἰς δὲ Σινώπην προΐοῦσα ὠραιοτέρα πρός τε τὴν θήραν καὶ τὴν ταριχείαν ἐστίν· ἐπειδαν δὲ ἥδη συνάψῃ ταῖς Κυανέαις καὶ παραλλάξῃ ταύτας, ἐκ τῆς Χαλκηδονιακῆς ἀκτῆς λευκῇ 15 τις πέτρα προπίπτουσα φοβεῖ τὸ ξῖφον ὥστ' εὐθὺς εἰς τὴν περαίαν τρέπεσθαι· παραλαβὼν δ' ὁ ἐνταῦθα φοῦς, ἅμα καὶ τῶν τόπων εὐφυῶν ὅντων πρὸς τὸ τὸν ἐκεῖ φοῦν τῆς θαλάττης ἐπὶ τὸ Βυζάντιον καὶ τὸ πρὸς αὐτῷ Κέρας τετράφθαι, φυσικῶς συνελαύνεται δεῦρο 20 καὶ παρέχει τοῖς Βυζαντίοις καὶ τῷ δῆμῳ τῶν Ρωμαίων πρόσοδον ἀξιόλογον. Χαλκηδόνιοι δ' ἐπὶ τῆς περαίας ἴδρυμένοι πλησίον οὐ μετέχουσι τῆς εὐπορίας ταύτης διὰ τὸ μὴ προσπελάξειν τοῖς λιμέσιν αὐτῶν τὴν πηλαμύδα· η̄ δὴ καὶ τὸν Ἀπόλλω φασὶ τοῖς κτίσασι τὸ Βυ- 25 ζάντιον ὕστερον μετὰ τὴν ὑπὸ Μεγαρέων Χαλκηδόνος κτίσιν χρηστηριαζομένοις προστάξαι ποιήσασθαι τὴν ἴδρυσιν ἀπεναντίον τῶν τυφλῶν, τυφλοὺς καλέσαντα τοὺς Χαλκηδονίους, ὅτι πρότεροι πλεύσαντες τοὺς τό-

7. post ἀλίσκεσθαι: διὰ τὴν στενοχωρίαν.

πους, ἀφέντες τὴν πέραν κατασχεῖν τοσοῦτον πλοῦτον ἔχουσαν, εἶλοντο τὴν λυπροτέραν.

Μέχρι μὲν δὴ Βυζαντίου προήλθομεν, ἐπειδὴ πόλις ἐπιφανῆς πλησιάζουσα μάλιστα τῷ στόματι εἰς γνω-
5 ριμάτερον πέρας ἀπὸ τοῦ "Ιστρου τὸν παράπλον τε-
λευτῶντα ἀπέφαινεν. ὑπέροκειται δὲ τοῦ Βυζαντίου τὸ
τῶν Ἀστῶν ἔθνος, ἐν φύλοις Καλύβη, Φιλίππου τοῦ
Ἀμύντου τοὺς πονηροτάτους ἐνταῦθα ἴδρυσαντος.

Τὰ μὲν οὖν ἀφοριζόμενα ἔθνη τῷ τε "Ιστρῳ καὶ 7
10 τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὅρεσι καὶ Θρακίοις ταῦτ' ἔστιν ὡν
ἄξιον μνησθῆναι, κατέχοντα τὴν Ἀδριατικὴν παρα-
λίαν πᾶσαν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ ἀρξάμενα, καὶ τὴν τὰ
ἀριστερὰ τοῦ Πόντου λεγομένην ἀπὸ "Ιστρου ποταμοῦ
μέχρι Βυζαντίου. λοιπὰ δέ ἔστι τὰ νότια μέρη τῆς λε-
15 χθείσης ὁρεινῆς καὶ ἔξης τὰ ὑποπίπτοντα χωρία, ἐν
οἷς ἔστιν ἡ τε Ἑλλὰς καὶ ἡ προσεκῆς βάρβαρος μέχρι^{C.321}
τῶν ὁρῶν.

'Εκαταῖος μὲν οὖν ὁ Μιλήσιος περὶ τῆς Πελοπον-
νήσου φησὶν διότι πρὸ τῶν Ἑλλήνων ὥκησαν αὐτὴν
20 βάρβαροι. σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ σύμπασα Ἑλλὰς κατοι-
κία βαρβάρων ὑπῆρξε τὸ παλαιόν, ἀπ' αὐτῶν λογιζό-
μένοις τῶν μημονευομένων, Πέλοπος μὲν ἐκ τῆς
Φρυγίας ἐπαγαγομένου λαὸν εἰς τὴν ἀπ' αὐτοῦ κλη-
θεῖσαν Πελοπόννησον, Δαναοῦ δὲ ἔξ Αἰγύπτου, Δρυό-
25 πων τε καὶ Κακώνων καὶ Πελασγῶν καὶ Δελέγων καὶ
ἄλλων τοιούτων κατανειμαμένων τὰ ἐντὸς Ἰσθμοῦ·
καὶ τὰ ἐκτὸς δέ τὴν μὲν γὰρ Ἀττικὴν οἱ μετὰ Εὐμόλ-
που Θρῆκες ἔσχον, τῆς δὲ Φωκίδος τὴν Δαυλίδα Τη-
ρεύς, τὴν δὲ Καδμείαν οἱ μετὰ Κάδμου Φοίνικες, αὐ-
30 τὴν δὲ τὴν Βοιωτίαν Ἀονες καὶ Τέμμικες καὶ Ἱαντες·

30. posὶ "Ταντες : ὡς δὲ Πληνδαρός φησιν „ἥν ὅτε σύας Βοι-
ώτιον ἔθνος ἔννεπον.“

καὶ ἀπὸ τῶν ὄνομάτων δὲ ἐνίσιν τὸ βάρβαρον ἐμφαίνεται, Κένδροψ καὶ Κόδρος καὶ Ἀικλος καὶ Κόθος καὶ Δρύμας καὶ Κρίνακος οἱ δὲ Θρᾷκες καὶ Ἰλλυριοὶ καὶ Ἡπειρῶται καὶ μέχρι νῦν ἐν πλευραῖς εἰσιν· ἔτι μέντοι μᾶλλον πρότερον ἦ νῦν, ὅπου γε καὶ τῆς ἐν τῷ παρόντι Ἑλλάδος ἀναντιλέκτως οὖσης τὴν πολλὴν οἱ βάρβαροι ἔχουσι, Μακεδονίαν μὲν Θρᾷκες καὶ τινα μέρη τῆς Θετταλίας, Ἀιαρινανίας δὲ καὶ Αἰτωλίας [τὰ] ἄνω Θεσπρωτοὺς καὶ Κασσωπαῖοι καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ Μολοττοὶ καὶ Ἀθαμᾶνες, Ἡπειρωτικὰ ἔθνη.

10

- 2 Περὶ μὲν οὖν Πελασγῶν εἰρηται, τοὺς δὲ Λέλεγας τινὲς μὲν τοὺς αὐτοὺς Καρσὸν εἰκάζουσιν, οἱ δὲ συνοίκους μόνον καὶ συστρατιώτας· διόπερ ἐν τῇ Μιλησίᾳ Λελέγων κατοικίας λέγεσθαι τινας, πολλαχοῦ δὲ τῆς Καρίας τάφους Λελέγων καὶ ἐρύματα ἔρημα Λελέγεια 15 καλούμενα. ἡ τε Ἰωνία νῦν λεγομένη πᾶσα ὑπὸ Καρῶν φένετο καὶ Λελέγων· ἐκβαλόντες δὲ τούτους οἱ Ἰωνεῖς αὐτοὺς τὴν χώραν κατέσχον, ἔτι δὲ πρότερον οἱ τὴν Τροίαν ἐλόντες ἔξηγλασαν τοὺς Λέλεγας ἐκ τῶν περὶ τὴν Ἱδην τόπων τῶν κατὰ Πήδασον καὶ τὸν Σατυρίοντα ποταμόν. ὅτι μὲν οὖν βάρβαροι ἥσαν οὗτοι, καὶ αὐτὸς τὸ κοινωνῆσαι τοῖς Καρσὸν νομίζοιτ' ἄν σημεῖον· ὅτι δὲ πλάνητες καὶ μετ' ἐκείνων καὶ χωρὶς καὶ ἐκ παλαιοῦ, καὶ αἱ Ἀριστοτέλους πολιτεῖαι δηλοῦσιν. ἐν μὲν γὰρ τῇ Ἀιαρινάνων φησὶ τὸ μὲν ἔχειν αὐτῆς Κουρῆτας, 25
C.322 τὸ δὲ προσεσπέριον Λέλεγας, εἰτα Τηλεβόας· ἐν δὲ τῇ Αἰτωλῶν τοὺς νῦν Λοκροὺς Λέλεγας καλεῖ, κατασχεῖν δὲ καὶ τὴν Βοιωτίαν αὐτούς φησιν· δμοίως δὲ καὶ ἐν τῇ Ὁπουντίων καὶ Μεγαρέων· ἐν δὲ τῇ Λευκαδίων καὶ αὐτόχθονά τινα Λέλεγα ὄνομάζει, τούτου δὲ θυ- 30 γατριδοῦν Τηλεβόαν, τοῦ δὲ παιδας δύο καὶ εἶκοσι Τηλεβόας, ὃν τινὰς οἰκῆσαι τὴν Λευκάδα. μάλιστα δ'

ἄν τις Ἡσιόδῳ πιστεύσειεν οὗτως περὶ αὐτῶν εἰπόντι
 „ἥτοι γὰρ Λοκός Λελέγων ἡγήσατο λαῶν, τοὺς δά
 „ποτε Κρουίδης, Ζεὺς ἄφθιτα μῆδεα εἰδώς, λεκτοὺς
 „ἐκ γαιῆς λάους πόρες Δευκαλίωνι.“ τῇ γὰρ ἐτυμολο-
 5 γίᾳ τὸ συλλέκτους γεγονέναι τινὰς ἐκ παλαιοῦ καὶ μι-
 γάδας αἰνίττεσθαι μοι δοκεῖ καὶ διὰ τοῦτο ἐκλελοιπέναι
 τὸ γένος· ἀπερὶ ἄν τις καὶ περὶ Καυκάσου λέγοι, νῦν
 οὐδαμοῦ ὅντων πρότερον δ' ἐν πλειστι τόποις κατω-
 κισμένων.

10 Πρότερον μὲν οὖν καίπερ μικρῶν καὶ πολλῶν καὶ 3
 ἀδόξων ὅντων τῶν ἔθνων, ὅμως διὰ τὴν εὐανδρίαν
 καὶ τὸ βασιλεύεσθαι κατὰ σφᾶς οὐ πάνυ ἦν χαλεπὸν
 διαλαβεῖν τοὺς δρους αὐτῶν, νῦν δ' ἐφήμους τῆς πλε-
 15 στης χώρας γεγενημένης καὶ τῶν κατοικιῶν καὶ μάλι-
 στα τῶν πόλεων ἥφαντισμένων, οὐδ' εἰ δύναιτο τις
 ἀκριβοῦν ταῦτα, οὐδὲν ἄν ποιοίη χρήσιμον διὰ τὴν
 ἀδοξίαν καὶ τὸν ἀφανισμὸν αὐτῶν, ὃς ἐκ πολλοῦ χρό-
 νου λαβὼν τὴν ἀρχὴν οὐδὲ νῦν πω πέπαυται κατὰ
 πολλὰ μέρη διὰ τὰς ἀποστάσεις, ἀλλ' ἐνστρατοπεδεύ-
 20 ουσιν αὐτοῖς Ρωμαῖοι τοῖς οἶκοις, κατασταθέντες ὑπ'
 αὐτῶν δυνάσται. τῶν γοῦν Ἡπειρωτῶν ἔβδομήκοντα
 πόλεις Πολύβιός φησιν ἀνατρέψαι Παῦλον μετὰ τὴν
 Μακεδόνων καὶ Περσέως κατάλυσιν (Μολοτῶν δ'
 ὑπάρξαι τὰς πλείστας), πέντε δὲ καὶ δέκα μυριάδας
 25 ἀνθρώπων ἕξανδραποδίσασθαι. ὅμως δ' οὖν ἐγχειρή-
 σομεν, ἐφ' ὃσον τῇ γραφῇ τε προσήκει καὶ ἡμῖν ἐφι-
 κτόν, ἐπελθεῖν τὰ καθ' ἔκαστα, ἀρξάμενοι ἀπὸ τῆς
 κατὰ τὸν Ἰόνιον κόλπον παραλίας· αὕτη δ' ἐστὶν εἰς
 ἦν ὁ ἔκπλους ὁ ἐκ τοῦ Ἀδρίου τελευτᾷ.

30 Ταύτης δὴ τὰ πρῶτα μέρη τὰ περὶ Ἐπίδαμνον καὶ 4
 Ἀπολλωνίαν ἐστίν. ἐκ δὲ τῆς Ἀπολλωνίας εἰς Μακε-
 δονίαν ἡ Ἐγνατία ἐστὶν ὁδὸς πρὸς ἔω, βεβηματισμένη

κατὰ μίλιον καὶ κατεστηλωμένη μέχρι Κυψέλων καὶ
 Ἐβρου ποταμοῦ· μιλίων δ' ἔστι πεντακοσίων τριά-
 κοντα πέντε· λογιξομένῳ δέ, ὡς μὲν οἱ πολλοί, τὸ με-
 λιον δικαστάδιον τετρακισχίλιοι ἀν εἰεν στάδιοι καὶ
 ἐπ' αὐτοῖς διαικόσιοι ὄγδοηκοντα· ὡς δὲ Πολύβιος⁵
 προστιθεὶς τῷ δικασταδίῳ δίπλεθρον, ὃ ἔστι τοίτον
 σταδίου, προσθετέον ἄλλους σταδίους ἑκατὸν ἑβδομή-
 C.323κοντα δικτώ, τὸ τοίτον τοῦ τῶν μιλίων ἀριθμοῦ. συμ-
 βαίνει δ' ἀπὸ ἶσου διαστήματος συμπίπτειν εἰς τὴν αὐ-
 τὴν ὁδὸν τούς τ' ἐκ τῆς Ἀπολλωνίας ὁρμηθέντας καὶ 10
 τοὺς ἐξ Ἐπιδάμνου. ή μὲν οὖν πᾶσα Ἔγνατία καλεῖται,
 ή δὲ πρώτη ἐπὶ Κανδασίας λέγεται ὁροντος Ἰλλυριοῦ,
 διὰ Λυχνιδοῦ πόλεως καὶ Πυλῶνος τόπου ὁρίζοντος ἐν
 τῇ ὅδῳ τὴν τε Ἰλλυρίδα καὶ τὴν Μακεδονίαν· ἐκεῖθεν
 δ' ἔστι παρὰ Βαρνοῦντα διὰ Ἡρακλείας καὶ Λυγκη- 15
 στῶν καὶ Ἔορδῶν εἰς "Ἐδεσσαν καὶ Πέλλαν μέχρι Θεσ-
 σαλονικείας· μίλια δ' ἔστι, φησὶ Πολύβιος, ταῦτα δια-
 κόσια ἑξήκοντα ἑπτά. ταύτην δὴ τὴν ὁδὸν ἐκ τῶν περὶ
 τὴν Ἐπιδάμνου καὶ τὴν Ἀπολλωνίαν τόπων ἰοῦσιν ἐν
 δεξιᾷ μὲν ἔστι τὰ Ἡπειρωτικὰ ἔθνη ολυξόμενα τῷ Σι- 20
 κελικῷ πελάγει μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου, ἐν ἀρι-
 στερῷ δὲ τὰ ὅρη τὰ τῶν Ἰλλυριῶν ἢ προδιήλθομεν, καὶ
 τὰ ἔθνη τὰ παροικοῦντα μέχρι Μακεδονίας καὶ Παιό-
 νων. εἰτ' ἀπὸ μὲν Ἀμβρακικοῦ κόλπου τὰ νεύοντα
 ἐφεξῆς πρὸς ἔω, τὰ ἀντιπαρήκοντα τῇ Πελοποννήσῳ, 25
 τῆς Ἑλλάδος ἔστιν· εἰτ' ἐκπίπτει [εἰς] τὸ Αίγαιον πέ-
 λαγος ἀπολιπόντα ἐν δεξιᾷ τὴν Πελοπόννησον ὅλην.
 ἀπὸ δὲ τῆς ἀρχῆς τῶν Μακεδονικῶν ὁρῶν καὶ τῶν
 Παιονικῶν μέχρι Στρυμόνος ποταμοῦ Μακεδόνες τε
 οἰκοῦσι καὶ Παιονες καὶ τινες τῶν ὁρεινῶν Θρακῶν· 30
 τὰ δὲ πέραν Στρυμόνος ἥδη μέχρι τοῦ Ποντικοῦ στό-
 ματος καὶ τοῦ Αἴμου πάντα Θρακῶν ἔστι πλὴν τῆς

παραλίας· αὗτη δ' ὑφ' Ἐλλήνων οἰκεῖται, τῶν μὲν ἐπὶ τῇ Προποντίδι ἰδρυμένων, τῶν δὲ ἐφ' Ἐλλησπόντῳ καὶ τῷ Μέλαινι πόλιῳ, τῶν δ' ἐπὶ τῷ Αἴγαιῳ. τὸ δ' Αἴγαιον πέλαγος δύο κλύζει πλευρὰς τῆς Ἐλλάδος, τὴν δὲ μὲν πρὸς ἔω βλέπουσαν, τείνουσαν δὲ ἀπὸ Σουνίου πρὸς τὴν ἄρκτον μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσσαλονικείας Μακεδονικῆς πόλεως, ἡ νῦν μάλιστα τῶν ἄλλων εὐανδρεῖ, τὴν δὲ πρὸς νότον τὴν Μακεδονικὴν ἀπὸ Θεσσαλονικείας μέχρι Στρυμόνος· τινὲς δὲ καὶ τὴν 10 ἀπὸ Στρυμόνος μέχρι Νέστου τῇ Μακεδονίᾳ προσνέμουσιν, ἐπειδὴ Φίλιππος ἐσπούδασε διαφερόντως περὶ ταῦτα τὰ χωρία ὥστ' ἐξιδιώσασθαι, καὶ συνεστήσατο προσόδους μεγίστας ἐκ τῶν μετάλλων καὶ τῆς ἄλλης εὐφυΐας τῶν τόπων. ἀπὸ δὲ Σουνίου μέχρι Πελοποννήσου τὸ Μυρτώον ἔστι καὶ Κρητικὸν πέλαγος καὶ Λιβυκὸν σὺν τοῖς κόλποις μέχρι τοῦ Σικελικοῦ· τοῦτο δὲ καὶ τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ Κορινθιακὸν καὶ Κρισαῖον ἐκπληροῖ κόλπουν.

Τῶν μὲν οὖν Ἡπειρωτῶν ἔθνη φησὶν εἶναι Θεό- 5
20 πομπος τετταρεσκαιδεκα, τούτων δ' ἐνδοξότατα Χάουες καὶ Μολοττοὶ διὰ τὸ ἄρξαι ποτὲ πάσης τῆς Ἡπειρωτιδος πρότερον μὲν Χάουας, ὕστερον δὲ Μολοττούς, οἱ C.324 καὶ διὰ τὴν συγγένειαν τῶν βασιλέων ἐπὶ πλέον ηὔξηθησαν (τῶν γὰρ Αἰακιδῶν ἥσαν), καὶ διὰ τὸ παρὰ τούτοις εἶναι τὸ ἐν Δωδώνῃ μαντεῖον, παλαιόν τε καὶ ὀνομαστὸν ὃν. Χάουες μὲν οὖν καὶ Θεσπρωτοὶ καὶ μετὰ τούτους ἐφεξῆς Κασσωπαῖοι (καὶ οὗτοι δ' εἰσὶ Θεσπρωτοὶ) τὴν ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ὁρῶν μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου παραλίαν νέμονται χώραν εὐδαιμονα 30 ἔχοντες· ὁ δὲ πλοῦς ἀπὸ τῶν Χαόνων ἀρξαμένῳ πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον καὶ πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ τὸν Κορινθιακόν, ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὸ Αὔσόνιον πέλα-

γος, ἐν ἀριστερῷ δὲ τὴν Ἡπειρον, εἰσὶ χίλιοι καὶ τριάκοσιοι στάδιοι ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου. ἐν τούτῳ δ' ἐστὶ τῷ διαστήματι Πάνορμός τε λιμὴν μέρας ἐν μέσοις τοῖς Κεραυνίοις ὅρεσι, καὶ μετὰ ταῦτα Ὁγχησμος λιμὴν ἄλλος, καθ' ὃν 5 τὰ δυσμικὰ ἄκρα τῆς Κορινθαίας ἀντίκειται, καὶ πάλιν ἄλλος Κασσιόπη, ἀφ' οὗ ἐπὶ Βρευτέσιον χίλιοι ἐπτακόσιοι στάδιοι· οἱ δὲ ίσοι καὶ ἐπὶ Τάραντα ἀπὸ ἄλλου ἀκρωτηρίου νοτιωτέρου τῆς Κασσιόπης δὲ παλιοῦσι Φαλακρόν. μετὰ δὲ Ὁγχησμον Ποσείδιον καὶ 10 Βουθρωτὸν ἐπὶ τῷ στόματι τοῦ Πηλώδους καλονυμένου λιμένος ίδρυμενόν ἐν τόπῳ χερρονησίζουντι, ἐποίκους ἔχον Ρωμαίους, καὶ τὰ Σύβοτα. εἰσὶ δὲ νησῖδες τὰ Σύβοτα τῆς μὲν Ἡπειρον μικρὸν ἀπέχουσαι, κατὰ δὲ τὸ ἑψον ἄκρον τῆς Κορινθαίας τὴν Λευκίμμαν κεί- 15 μεναι. καὶ ἄλλαι δὲ ἐν τῷ παράπλει νησῖδες εἰσὶν οὐκ ἄξιαι μυήμης. ἐπειτα ἄκρα Χειμέριον καὶ Γλυκὺς λιμήν, εἰς ὃν ἐμβάλλει ὁ Ἀχέρων ποταμός, φέων ἐκ τῆς Ἀχεροντίας λίμνης καὶ δεχόμενος πλείους ποταμοὺς ὥστε καὶ γλυκαίνειν τὸν κόλπον· φεῖ δὲ καὶ ὁ Θύαμις 20 πλησίον. ὑπέροχειται δὲ τούτου μὲν τοῦ κόλπου Κίχυρος, ἡ πρότερον Ἐφύρα, πόλις Θεσπρωτῶν· τοῦ δὲ κατὰ Βουθρωτὸν ἡ Φοινίκη. ἐγγὺς δὲ τῆς Κιχύρου πολύχνιον Βουχέτιον Κασσωπαίων μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὃν, καὶ Ἐλάτρια καὶ Πανδοσία καὶ Βατίαι ἐν 25 μεσογαίᾳ, καθήκει δ' αὐτῶν ἡ χώρα μέχρι τοῦ κόλπου. μετὰ δὲ Γλυκὺν λιμένα ἐφεξῆς εἰσὶ δύο ἄλλοι λιμένες, ὁ μὲν ἐγγυτέρω καὶ ἐλάττων Κόμαρος ἰσθμὸν ποιῶν ἔξηκοντα σταδίων πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ τὸ τοῦ Σεβαστοῦ Καίσαρος κτίσμα τὴν Νικόπολιν· δὲ 30 ἀπωτέρω καὶ μείζων καὶ ἀμείνων πλησίον τοῦ στό-

ματος τοῦ κόλπου, διέχων τῆς Νικοπόλεως ὅσον δάδεια σταδίους.

Ἐφεξῆς δὲ τὸ στόμα τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου· τού·⁶
τοῦ δὲ τοῦ κόλπου τὸ μὲν στόμα μικρῷ τοῦ τετραστα-
δίου μεῖζον, ὃ δὲ κύκλος καὶ τριακοσίων σταδίων, εὐ-
λίμενος δὲ πᾶς. οἰκοῦσι δὲ τὰ μὲν ἐν δεξιᾷ εἰσπλέοντι
τῶν Ἑλλήνων Ἀκαρνάνες· καὶ λερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλ-
λανος ἐνταῦθα ἔστι πλησίον τοῦ στόματος, λόφος
τις ἐφ' ᾧ ὁ νεώς, καὶ ὑπ' αὐτῷ πεδίον ἄλσος ἔχον καὶ
10 νεώρια, ἐν οἷς ἀνέθηκε Καῖσαρ τὴν δεκαναῖαν ἀκρο-
θίνιον, ἀπὸ μονοκόρτου μέχρι δεκήρους· ὑπὸ πυρὸς
δ' ἡφανίσθαι καὶ οἱ νεώσοικοι λέγονται καὶ τὰ πλοῖα·
ἐν ἀριστερᾷ δὲ ἡ Νικόπολις καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν οἱ
Κασσωπαῖοι μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ κατὰ Ἀμβρακίαν·
15 ὑπέροχειται δὲ αὗτη τοῦ μυχοῦ μικρόν, Γόργον τοῦ
Κυψέλου κτίσμα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ Ἀρατθος πο-
ταμὸς ἀνάπλουν ἔχων ἐκ θαλάττης εἰς αὐτὴν ὀλίγων
σταδίων, ἀρχόμενος ἐκ Τύμφης ὅρους καὶ τῆς Παρω-
φαλας. ηύτύχει μὲν οὖν καὶ πρότερον ἡ πόλις αὗτη δια-
20 φερόντως (τὴν γοῦν ἐπωνυμίαν ἐντεῦθεν ἔσχηκεν δ'
κόλπος), μάλιστα δ' ἐκόσμησεν αὐτὴν Πύρρος βασι-
λεὺς οἱρησάμενος τῷ τόπῳ· Μακεδόνες δ' ὕστερον καὶ
Ρωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ τὰς ἄλλας κατεπόνησαν τοῖς
συνεχέσι πολέμοις διὰ τὴν ἀπειθειαν, ὥστε τὸ τελευ-
25 ταῖον δὲ Σεβαστὸς ὁρῶν ἐκλειειμμένας τελέως τὰς πό-
λεις εἰς μίαν συνθήκει τὴν ὑπ' αὐτοῦ οἰληθεῖσαν Νι-
κόπολιν ἐν τῷ κόλπῳ τούτῳ, ἐκάλεσε δ' ἐπώνυμον τῆς
νίκης, ἐν ᾗ κατεναυμάχησεν Ἀντώνιον πρὸ τοῦ στό-
ματος τοῦ κόλπου καὶ τὴν Αἴγυπτων βασίλισσαν
30 Κλεοπάτραν παροῦσαν ἐν τῷ ἀγῶνι καὶ αὐτήν. ἡ μὲν
οὖν Νικόπολις εὐανδρεῖ καὶ λαμβάνει καθ' ἡμέραν
ἐπίδοσιν, χώραν τε ἔχουσα πολλὴν καὶ τὸν ἐκ τῶν λα-

φύρων πόσμον, τό τε κατασκευασθὲν τέμενος ἐν τῷ προαστείῳ τὸ μὲν εἰς τὸν ἀγῶνα τὸν πεντετηρικὸν ἐν ἄλσει ἔχοντι γυμνάσιον τε καὶ στάδιον, τὸ δ' ἐν τῷ ὑπερφειμένῳ τοῦ ἄλσους Ιερῷ λόφῳ τοῦ Ἀπόλλωνος. ἀποδέδεικται δ' ὁ ἀγὼν Ὁλύμπιος, τὰς Ἀκτια, Ιερὸς τοῦ 5 Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, τὴν δ' ἐπιμέλειαν ἔχουσιν αὐτοῦ Λακεδαιμόνιοι. αἱ δ' ἄλλαι κατοικαὶ περιπόλιοι τῆς Νικοπόλεως εἰσιν. ἥγετο δὲ καὶ πρότερον τὰς Ἀκτια τῷ θεῷ, στεφανίτης ἀγών, ὑπὸ τῶν περιοίκων· νυνὶ δ' ἐντιμότερον ἐποίησεν ὁ Καῖσαρ. 10

7 Μετὰ δὲ τὴν Ἀμβροσίαν τὸ Ἀργος ἐστὶ τὸ Ἀμφιλοχικόν, κτίσμα Ἀλκμαίωνος καὶ τῶν παιδῶν. Ἐφόρος μὲν οὖν φησὶ τὸν Ἀλκμαίωνα μετὰ τὴν Ἐπιγόνων ἐπὶ τὰς Θήβας στρατείαν παρακληθέντα ὑπὸ Διομήδους συνελθεῖν εἰς Αἴτωλίαν αὐτῷ καὶ συγκατατήνη- 15 σασθαι ταυτην τε καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν· καλοῦντος δ' αὐτοὺς ἐπὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον Ἀγαμέμνονος, τὸν 0.326μὲν Διομήδη πορευθῆναι, τὸν δὲ Ἀλκμαίωνα μείναντα ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τὸ Ἀργος κτίσαι, καλέσαι δὲ Ἀμφιλοχικὸν ἐπώνυμον τοῦ ἀδελφοῦ, Ἰναχον δὲ τὸν διὰ τῆς 20 χώρας φέοντα ποταμὸν εἰς τὸν κόλπον ἀπὸ τοῦ κατὰ τὴν Ἀργείαν προσαγορεῦσαι. Θονκυδίδης δέ φησιν αὐτὸν Ἀμφίλοχον μετὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον δυσαρεστοῦντα τοῖς ἐν Ἀργείῳ παρελθεῖν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν, διαδεξάμενον δὲ τὴν τάδελφοῦ δυναστείαν κτίσαι 25 τὴν πόλιν ἐπώνυμον ἔαντον.

‘Ηπειρῶται δ' εἰσὶ καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ οἱ ὑπεροικεῖμενοι καὶ συνάπτοντες τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὅρεσι, τραχεῖαν οἰκοῦντες χώραν, Μολοττοί τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἴθικες καὶ Τυμφαῖοι καὶ Ὁρέσται Παρωραῖοί τε καὶ 30 Ἀτιντᾶνες, οἱ μὲν πλησιάζοντες τοῖς Μακεδόσι μᾶλλον οἱ δὲ τῷ Ἰονίῳ κόλπῳ. λέγεται δὲ τὴν Ὁρεστιάδα

κατασχεῖν ποτε Ὁρέστης φεύγων τὸν τῆς μητρὸς φόνον καὶ καταλιπεῖν ἐπώνυμου ἑαυτοῦ τὴν χώραν, κτίσαι δὲ καὶ πόλιν, καλεῖσθαι δ' αὐτὴν Ἀργος Ὁρεστικόν. ἀναμέμικται δὲ τούτοις τὰ Ἰλλυριαὶ ἔδυνη τὰ πρὸς 5 τῷ νοτίῳ μέρει τῆς ὁρεινῆς καὶ τὰ ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου κόλπου· τῆς γὰρ Ἐπιδάμνου καὶ τῆς Ἀπολλωνίας μέχρι τῶν Κεραυνίων ὑπεροικοῦσι Βυλλίονές τε καὶ Ταυλάντιοι καὶ Παρθίνοι καὶ Βρύγοι· πλησίον δέ που καὶ τὰ ἀργυροῖς τὰ ἐν Δαμαστίῳ, περὶ ἣ Δινέσται συνεστή-
10 σαντο τὴν δυναστείαν καὶ Ἐγχέλειοι, οὓς καὶ Σεβαρηθίους καλοῦσι· πρὸς δὲ τούτοις Δινυκῆσται τε καὶ ἡ Δευρίοπος καὶ ἡ τρίπολις Πελαγονία καὶ Ἔορδον καὶ Ἐλίμεια καὶ Ἐράτυρα. ταῦτα δὲ πρότερον μὲν κατεδυναστεύετο ἐκαστα, ὃν ἐν τοῖς Ἐγχελείοις οἱ Κάδμοι
15 καὶ Ἀρμονίας ἀπόγονοι ἦρχον, καὶ τὰ μυθευόμενα περὶ αὐτῶν ἐκεῖ δείκνυνται. οὗτοι μὲν οὖν οὐχ ὑπὸ Ιδαγενῶν ἥρχοντο· οἱ δὲ Δινυκῆσται ὑπὸ Ἀρραβαίω ἐγένοντο τοῦ Βακχιαδῶν γένους ὅντε· τούτου δ' ἦν θυγατριδῆ ἡ Φιλίππου μήτηρ τοῦ Ἀμύντου Εὐρυδίκη, Σίρρα δὲ
20 θυγάτηρ· καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν δὲ Μολοττοὶ ὑπὸ Πύρροφ τῷ Νεοπτολέμου τοῦ Ἀχιλλέως καὶ τοῖς ἀπογόνοις αὐτοῦ Θετταλοῖς οὖσι γεγονότες· οἱ λοιποὶ δὲ ὑπὸ Ιδαγενῶν ἥρχοντο· εἰτ' ἐπικρατούντων ἀεὶ τινῶν κατέστρεψεν ἄπαντα εἰς τὴν Μακεδόνων ἀρχήν, πλὴν ὅλη-
25 γων τῶν ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου κόλπου. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ Λύγκον καὶ Πελαγονίαν καὶ Ὁρεστιάδα καὶ Ἐλίμειαν τὴν ἄνω Μακεδονίαν ἐκάλουν, οἱ δὲ ὕστερον καὶ ἐλευθέραν· ἔνιοι δὲ καὶ σύμπασαν τὴν μέχρι Κορκύρας Μακεδονίαν προσαγορεύουσιν, αἵτιοι ογοῦντες ἄμας.
30 ὅτι καὶ κονυρᾶς καὶ διαλέκτῳ καὶ χλαμύδι καὶ ἄλλοις τοιούτοις χρῶνται παραπλησίως· ἔνιοι δὲ καὶ δίγλωττοί εἰσι. καταλυθείσης δὲ τῆς Μακεδόνων ἀρχῆς ὑπὸ

Ρωμαιόντων ἔπεισε. διὰ δὲ τούτων ἐστὶ τῶν ἔθνων ἡ Ἐγνατία δδὸς ἐξ Ἐπιδάμνου καὶ Ἀπολλωνίας· περὶ δὲ τὴν ἐπὶ Κανδανίας ὁδὸν αἱ τε λίμναι εἰσὶν αἱ περὶ Λυχνιδὸν ταριχεῖας ἰχθύων αὐτάρκεις ἔχουσαι, καὶ ποταμοὶ οἵ τε εἰς τὸν Τόνιον κόλπον ἐκπίπτοντες καὶ οἱ ἐπὶ 5 τὰ νότια μέρη, ὅ τ' Ἰναχος καὶ ὁ Ἀρατθος καὶ ὁ Ἀχελῶος καὶ ὁ Εὔηνος ὁ Λυκόδημας πρότερον καλούμενος, ὃ μὲν εἰς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν ἐμβάλλων ὁ δὲ εἰς τὸν Ἀχελῶον, αὐτὸς δὲ ὁ Ἀχελῶος εἰς τὴν Φάλατταν καὶ ὁ Εῦηνος, ὃ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν διεξιών ὁ δὲ 10 τὴν Αἰτωλίαν· ὁ δὲ Ἐρύγων πολλὰ δεξάμενος φεύματα ἐκ τῶν Ἰλλυρικῶν ὁρῶν καὶ Λυγκηστᾶν καὶ Βούγων καὶ Δευφιόπων καὶ Πελαγόνων εἰς τὸν Ἀξιὸν ἐκδίδωσι.

9 Πρότερον μὲν οὖν καὶ πόλεις ἥσαν ἐν τοῖς ἔθνεσι τούτοις· τρίπολις γοῦν ἡ Πελαγονία ἐλέγετο, ἥς καὶ 15 Ἀξωρος ἥν, καὶ ἐπὶ τῷ Ἐρύγωνι πᾶσαι αἱ τῶν Δευφιόπων πόλεις φάγηντο, ὡν τὸ Βουάνιον καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Στύβαρα· Κύδραι δὲ Βρύγων, Αἴγινιον δὲ Τυμφαίων, ὅμορον Αἰθικίᾳ καὶ Τρίκη· πλησίον δ' ἥδη τῆς τε Μακεδονίας καὶ τῆς Θετταλίας περὶ τὸ Ποῖον 20 ὄρος καὶ τὴν Πίνδον Αἰθικές τε καὶ τοῦ Πηγειοῦ πηγαί, ὡν ἀμφισβήτοῦσι Τυμφαιοί τε καὶ [οἱ] ὑπὸ τῇ Πίνδῳ Θετταλοί· καὶ πόλις Ὁξύνεια παρὰ τὸν Ἰωνα ποταμὸν ἀπέχουσα Ἀξωρού τῆς τριπολίτιδος σταδίους ἑκατὸν εἶκοσι· πλησίον δὲ καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Αἴγι- 25 νιον καὶ Εὔρωπος καὶ αἱ τοῦ Ἰωνος εἰς τὸν Πηγειόν συμβολαί. τότε μὲν οὖν, ὡς εἶπον, καίπερ οὖσα τραχεῖα καὶ ὁρῶν πλήρης, Τομάρου καὶ Πολυάνου καὶ ἄλλων πλειόνων, ὅμως εὐάνδρει ἥ τε Ἡπειρος πᾶσα καὶ ἡ Ἰλλυρίς· νῦν δὲ τὰ πολλὰ μὲν ἐφημία κατέχει, τὰ 30 δ' οἰκούμενα καμηδὸν καὶ ἐν ἐρειπίοις λείπεται.

10 'Εκλέλουπε δέ πως καὶ τὸ μαντεῖον τὸ ἐν Δωδώνῃ,

καθάπερ τὰλλα. ἔστι δ', ὡς φησιν Ἐφορος, Πελασγῶν ἴδρυμα· οἱ δὲ Πελασγοὶ τῶν περὶ τὴν Ἑλλάδα δυναστευσάντων ἀρχαιότατοι λέγονται· καὶ ὁ ποιητής φησιν οὕτω „Ζεῦ ἄνα Δωδωναῖς, Πελασγικέ,“
 δὸς δ' Ἡσίοδος „Δωδώνην φηγόν τε, Πελασγῶν ἔδρα-
 „νον ἦεν.“ περὶ μὲν οὖν τῶν Πελασγῶν ἐν τοῖς C.328
 Τυρρηνικοῖς εἴρηται, περὶ δὲ Δωδώνης τοὺς μὲν πε-
 φιοικοῦντας τὸ ιερὸν διότι βάρβαροι διασαφεῖ καὶ ὁ
 Ὄμηρος ἐκ τῆς διαιτης, ἀνιπτόποδας χαμαίεύνας λέ-
 γων· πότερον δὲ χοὴ λέγειν Ἐλλούς, ὡς Πίνδαρος, ἡ
 Σελλούς, ὡς ὑπονοοῦσι παρ' Ὄμηροφ κεῖσθαι, ἡ γρα-
 φὴ ἀμφίβολος οὐσα οὐκ ἔῃ δισχυρότερον. Φιλόχορος
 δέ φησι καὶ τὸν περὶ Δωδώνην τόπουν, ὥσπερ τὴν Εὔ-
 βοιαν, Ἐλλοπίαν αἰληθῆναι· καὶ γὰρ Ἡσίοδον οὕτω
 λέγειν „ἔστι τις Ἐλλοπίη, πολυλήιος ἥδ' ἐν λείμων·
 „ἔνθα δὲ Δωδώνη τις ἐπ' ἔσχατην πεπόλισται.“ οἶνο-
 ται δέ, φησὶν δὲ Ἀπολλόδωρος, ἀπὸ τῶν ἐλῶν τῶν περὶ
 τὸ ιερὸν οὕτω καλεῖσθαι· τὸν μέντοι ποιητὴν [οὐχ]
 οὕτω λέγειν Ἐλλούς ἀλλὰ Σελλοὺς ὑπολαμβάνει τοὺς
 περὶ τὸ ιερόν, προσθεῖς ὅτι καὶ Σελλήεντα τινὰ
 ὄνομάξει ποταμόν. ὄνομάξει μὲν οὖν, ὅταν φῇ „τηλό-
 „, θεν ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος.“ [οὐ μέν-
 τοι, ὁ Σκήψιος φησι, τῆς] ἐν Θεσπρωτοῖς Ἐφύρας,
 ἀλλὰ τῆς ἐν τοῖς Ἡλείοις· ἐκεῖ γὰρ εἰναι τὸν Σελλήεντα,
 25 ἐν δὲ Θεσπρωτοῖς οὐδένα, οὐδὲ ἐν Μολοττοῖς. τὰ δὲ
 μυθευόμενα περὶ τῆς δρυὸς καὶ τῶν πελειῶν καὶ εἰ
 τινα ἄλλα τοιαῦτα, καθάπερ καὶ [τὰ] περὶ Δελφῶν, τὰ
 μὲν ποιητικωτέρας ἔστι διατριβῆς τὰ δὲ οἰκεῖα τῆς νῦν
 περιοδείας.

30 ‘Η Δωδώνη τοίνυν τὸ μὲν παλαιὸν ὑπὸ Θεσπρω- 11
 τοῖς ἦν καὶ τὸ ὄρος ὁ Τόμαρος ἢ Τμάρος (ἀμφοτέρως
 γὰρ λέγεται), ὑφ' ὃ κεῖται τὸ ιερόν· καὶ οἱ τραγικοὶ

δὲ καὶ Πίνδαρος Θεσπρωτίδα εἰρήκασι τὴν Δωδώνην·
ῦστερον δὲ ὑπὸ Μολοττοῖς ἐγένετο. ἀπὸ δὲ τοῦ Το-
μάρου τοὺς ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένους ὑποφήτας
τοῦ Διός, οὓς καὶ ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας καλεῖ, το-
μούρους φασὶ λεχθῆναι· καὶ ἐν μὲν τῇ Ὀδυσσείᾳ οὕτῳ 5
γράφουσί τινες ἣ φησιν Ἀμφίνομος, συμβουλεύων
τοῖς μνηστῆροις μὴ πρότερον ἐπιτίθεσθαι τῷ Τηλε-
μάχῳ ποὶν ἄν τὸν Δία ἔρωται,,εἰ μὲν κ' αἰνήσωσι
,,Διὸς μεγάλοιο τομούροι, αὐτός τε κτανέω, τούς τ'
,,ἄλλους πάντας ἀνώξω· εἰ δέ κ' ἀποτρεπέησι θεός, 10
,,παύεσθαι ἄνωγα.“ βέλτιον γὰρ εἶναι τομούρους ἡ
θέμιστας γράφειν· οὐδαμοῦ γοῦν τὰ μαντεῖα θέμιστας
λέγεσθαι παρὰ τῷ ποιητῇ, ἀλλὰ τὰς βουλὰς καὶ τὰ πο-
λιτεύματα καὶ νομοθετήματα· τομούρους δ' εἰρῆσθαι
C.329 ἐπιτετμημένως οἶνον τομαροφύλακας. οἱ μὲν οὖν νεώ- 15
τεροι λέγουσιν τομούρους· [παρ'] Ὁμήρῳ δ' ἀπλούστε-
ρον δεῖ δέχεσθαι θέμιστας καταχρηστικῶς καὶ βουλάς,
τὰ προστάγματα καὶ τὰ βουλήματα τὰ μαντικά, κα-
θάπτει καὶ τὰ νόμιμα· τοιοῦτον γὰρ καὶ τό „ἐκ δρυὸς
ὑψηλόμοιο Διὸς βουλὴν ἐπακοῦσαι.“ 20

12 Κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἄνδρες ἥσαν οἱ προφητεύον-
τες· καὶ τοῦτ' ἴσως καὶ ὁ ποιητὴς ἐμφαίνει· ὑποφήτας
γὰρ καλεῖ, ἐν οἷς τάττοιντο κανὸν οἱ προφῆται· ὕστερον
δ' ἀπεδείχθησαν τρεῖς γραῖαι, ἐκειδὴ καὶ σύνναος τῷ
Διὶ προσαπεδείχθη καὶ ἡ Διώνη. Συνίδαις μέντοι Θετ- 25
ταλοῖς μυθώδεις λόγους προσχαριζόμενος ἐκεῖθέν τέ
φησιν εἶναι τὸ ἱερὸν μετενηγεγμένον ἐκ τῆς περὶ Σκο-
τοῦσσαν Πελασγίας (ἔστι δ' ἡ Σκοτοῦσσα τῆς Πελασ-
γιώτιδος Θετταλίας), συνακολουθήσαι τε γυναικας
τὰς πλειότας, ὃν ἀπογόνους εἶναι τὰς νῦν προφήτες- 30

15. post ἐπιτετμημένως: τμάρους

δας· ἀπὸ δὲ τούτου καὶ Πελασγικὸν οὐκ εκλήσθαι·
Κινέας δ' ἔτι μυθωδέστερον.

— EK TOT Z —

5 Κινέας δέ φησι πόλιν ἐν Θεσσαλίᾳ εἶναι καὶ φη- 1
γὸν καὶ τὸ τοῦ Διὸς μαντεῖον εἰς Ἡπειρον μετενεχθῆ-
ναι. Stephanus in Δωδώνῃ.

‘*Ἡν δὲ πρότερον περὶ Σκοτοῦσσαν πόλιν τῆς Πε- 1**
λασγιάτιδος τὸ χρηστήριον· ἐμπρησθέντος δ' ὑπό τι- 10
νων τοῦ δένδρου μετηνέχθη κατὰ χρησμὸν τοῦ Ἀπόλ-
λωνος ἐν Δωδώνῃ. ἔχοντας δὲ διὰ λόγων, ἀλλὰ
διά τινων συμβόλων, ὥσπερ τὸ ἐν Λιβύῃ Ἀμμωνιακόν·
ἴσως δέ τινα πτῆσιν αἱ τρεῖς περιστεραὶ ἐπέτοντο ἔξα-
ρετον, ἔξ ὧν αἱ λέρειαι παρατηρούμεναι προεθέσπιξον.
15 *Φασὶ δὲ καὶ κατὰ τὴν τῶν Μολοττῶν καὶ Θεσπρωτῶν*
γλῶτταν τὰς γραιάς πελίας καλεῖσθαι καὶ τοὺς γέρον-
τας πελίους· καὶ ίσως οὐκ ὅρνεα ἡσαν αἱ θρυλούμεναι
πελειάδες, ἀλλὰ γυναικες γραιᾶι τρεῖς περὶ τὸ ιερὸν
σχολάζονται. Epit. (i. e. epitome edita).

20 ‘*Οτι κατὰ Θεσπρωτοὺς καὶ Μολοττοὺς τὰς γραιάς 2*
πελίας καὶ τοὺς γέροντας πελίους, καθάπερ καὶ παρὰ
Μακεδόνις· πελιγόνας γοῦν καλοῦσιν ἐκεῖνοι τοὺς ἐν
τιμαῖς, καθὰ παρὰ Λάκωνις καὶ Μασσαλιώταις τοὺς
γέροντας· ὅθεν καὶ τὰς ἐν τῇ Δωδωναίᾳ δρυὶ μεμυ- 25
25 *θεῦσθαι πελείας φασίν. E. (i. e. epitome Vaticana).*

‘*Οτι ἡ παροιμία „τὸ ἐν Δωδώνῃ χαλκίου“ ἐντεῦ- 3*
*θεν ὀνομάσθη· χαλκίου ἦν ἐν τῷ ιερῷ ἔχον ὑπεροκείμε-
νουν ἀνδριάντα κρατοῦντα μάστιγα χαλκῆν, ἀνάθημα*
Κορκυραίων· ἡ δὲ μάστιξ ἦν τριπλῆ ἀλυσιδωτὴ ἀπηρ- 30
τημένους ἔχουσα ἔξ αὐτῆς ἀστραγάλους, οἵ πλήττοντες
*τὸ χαλκίου συνεχῶς, ὅπότε αἰωροῖντο ὑπὸ τῶν ἀνέ-
μων, μακροὺς ἤχους ἀπειργάζοντο, ἕως ὁ μετρῶν τὸν*

χρόνον ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τοῦ ἥχου μέχρι τέλους καὶ ἐπὶ τετρακόσια προέλθοι· ὅθεν καὶ ἡ παροιμία ἐλέχθη „ἡ Κερκυραῖων μάστιξ.“ Ερι.

4 'Η δὲ Παιονία τούτοις μὲν ἔστι πρὸς ἦν τοῖς ἔθνεσι, πρὸς δύσιν δὲ τοῖς Θρακίοις ὄρεσι, πρὸς ἄρκτον⁵ δ' ὑπέρκειται τοῖς Μακεδόσις, διὰ Γορτυνίου πόλεως καὶ Στύβου ἔχουσα τὰς εἰσβολὰς ἐπὶ τὰ πρὸς δι' ᾧν ὁ Ἀξιὸς φέων δυσείσβολον ποιεῖ τὴν Μακεδονίαν ἐκ τῆς Παιονίας, ὡς ὁ Πηγεὺς διὰ τῶν Τεμπῶν φερόμενος ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος αὐτὴν ἐρυμνοῖ· πρὸς νότον δὲ τοῖς Αὐταριάταις καὶ Αρδανίοις καὶ Ἀρδιαίοις δύορει· ἐκτέταται δὲ καὶ μέχρι Στρυμόνος ἡ Παιονία. Ε.

5 'Οτι ὁ Ἀλιάκμων εἰς τὸν Θεομαῖον κόλπον φεί. Ε.

6 'Η δ' Ὁρεστὶς πολλὴ καὶ ὄρος ἔχει μέγα μέχρι τοῦ¹⁵ Κόρακος τῆς Αἰτωλίας καθῆκον καὶ τοῦ Παρνασσοῦ. περιοικοῦσι δ' αὐτοί τε Ὁρέσται καὶ Τυμφαῖοι καὶ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ Ἑλληνες οἱ περὶ Παρνασσὸν καὶ τὴν Οἰτην καὶ Πίνδον. ἐνὶ μὲν δὴ κοινῷ ὄνόματι καλεῖται Βούν τὸ ὄρος, κατὰ μέρη δὲ πολυώνυμόν ἔστιν. φασὶ²⁰ δ' ἀπὸ τῶν ὑψηλοτάτων σκοπιῶν ἀφορᾶσθαι τό τε Αἴγαιον πέλαγος καὶ τὸ Ἀμβρακικὸν καὶ τὸ Ἰόνιον, πρὸς ὑπερβολὴν οἷμαι λέγοντες. καὶ τὸ Πτελεὸν ίνανδε ἔστιν ἐν ὕψει τὸ περικείμενον τῷ Ἀμβρακικῷ κόλπῳ, τῇ μὲν ἐκτενόμενον μέχρι τῆς Κερκυραίας τῇ δ'²⁵ ἐπὶ τὴν κατὰ Δευκάδα θάλασσαν. Ε.

7 "Οτι ἐπὶ γέλωτι ἐν παροιμίας μέρει *γελᾶται Κέρκυρα ταπεινωθεῖσα τοῖς πολλοῖς πολέμοις. Ε.

8 "Οτι ἡ Κόρκυρα τὸ παλαιὸν εὐτυχῆς ἦν καὶ δύναμιν ναυτικὴν πλείστην εἶχεν, ἀλλ' ὑπὸ πολέμων τι-³⁰ νῶν καὶ τυφάνων ἐφθάρη· καὶ ὑστερον ὑπὸ Ρωμαίων ἐλευθερωθεῖσα οὐκ ἐπηγνέθη, ἀλλ' ἐπὶ λοιδορίᾳ παροι-

μίαν ἔλαβεν „έλευθέρα Κόρωνα, χέζ' ὅπου θέλεις.“
Epit.

Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἡ τε Μακεδονία καὶ 9
τῆς Θράκης τὰ συνεχῆ ταύτη μέχοι Βυζαντίου καὶ ἡ
Ἑλλὰς καὶ αἱ προσεχεῖς νῆσοι. ἐστὶ μὲν οὖν Ἑλλὰς καὶ
ἡ Μακεδονία· ωντὸν μέντοι τῇ φύσει τῶν τόπων ἀκο-
λονθοῦντες καὶ τῷ σχήματι χωρὶς ἔγνωμεν αὐτὴν ἀπὸ
τῆς ἄλλης Ἑλλάδος τάξαι καὶ συνάψαι πρὸς τὴν ὅμο-
ρον αὐτῇ Θράκην μέχοι τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου
10 καὶ τῆς Προποντίδος. εἰτα μετ' ὀλίγα μέμνηται Κυ-
ψέλων καὶ τοῦ Ἐρθρου ποταμοῦ. καταγράφει δὲ καὶ τι
σχῆμα παραλληλόγραμμον, ἐν ᾧ ἡ σύμπασα Μακεδο-
νία ἐστίν. E.

“Οτι ἡ Μακεδονία περιορίζεται ἐκ μὲν δυσμῶν τῇ 10
15 παραλίᾳ τοῦ Ἀδρίου, ἐξ ἀνατολῶν δὲ τῇ παραλήφῃ
ταύτης μεσημβρινῇ γραμμῇ τῇ διὰ τῶν ἐκβολῶν Ἐρθρου
ποταμοῦ καὶ Κυψέλων πόλεως, ἐκ βορρᾶ δὲ τῇ νοού-
μένῃ εὐθείᾳ γραμμῇ τῇ διὰ Βερτίσκου ὁρούς καὶ Σκάρ-
δου καὶ Ορβήλου καὶ Ροδόπης καὶ Αἴμου· τὰ γὰρ ὅρη
20 ταῦτα ἀρχόμενα ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου διίκει κατὰ εὐθείαν
νοραμμήν ἔως τοῦ Εὐξείνου, ποιοῦντα χερρόνησον με-
γάλην πρὸς νότον, τὴν τε Θράκην ὅμοιην καὶ Μακεδο-
νίαν καὶ Ἡπειρούν καὶ Ἀχαΐαν· ἐκ νότου δὲ τῇ Ἐγνατίᾳ
διδῷ ἀπὸ Δυρραχίου πόλεως πρὸς ἀνατολὰς ίούσιν
25 ἔως Θεσσαλονικείας· καὶ ἔστι τὸ σχῆμα τοῦτο τῆς Μα-
κεδονίας παραλληλογράμμον ἔγνωστα. Epit.

“Οτι Ἡμαθία ἐκαλεῖτο πρότερον ἡ νῦν Μακεδο- 11
νία. ἔλαβε δὲ τοῦνομα τοῦτο ἀπ' ἀρχαίου τινὸς τῶν
ἥγεμόνων Μακεδόνος. ἦν δὲ καὶ πόλις Ἡμαθία πρὸς
30 θαλάσσην. κατεῖχον δὲ τὴν χώραν ταύτην Ἡπειρωτῶν
τινες καὶ Ἰλλυριῶν, τὸ δὲ πλεῖστον Βοττιαιοὶ καὶ Θρά-
κες· οἱ μὲν ἐκ Κορήτης, ὡς φασι, τὸ γένος ὅντες, ἥγε-

μόνα ἔχοντες Βόττωνα, Θρακῶν δὲ Πίερες μὲν ἐνέ-
μοντο τὴν Πιερίαν καὶ τὰ περὶ τὸν Ὄλυμπον, Παίονες
δὲ [τὰ] περὶ τὸν Ἀξιὸν ποταμὸν καὶ τὴν καλουμένην διὰ
τοῦτο Ἀμφαξίτιν, Ἡδωνὸς δὲ καὶ Βισάλται τὴν λοιπὴν
μέχρι Στρυμόνος· ὃν οἱ μὲν αὐτὸ τοῦτο προσῆγο- 5
ρεύοντο Βισάλται, Ἡδωνῶν δ' οἱ μὲν Μυγδόνες οἱ δὲ
*Ἡδωνες οἱ δὲ Σιθωνες. τούτων δὲ πάντων οἱ Ἀργεά-
δαι καλούμενοι κατέστησαν κύριοι καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν
Εὐβοίᾳ. ἐπῆλθον δὲ καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν Εὐβοίᾳ ἐπὶ
τὴν τῶν Σιθώνων καὶ συνώνισαν πόλεις ἐν αὐτῇ περὶ 10
τριάκοντα, ἐξ ὧν ὑστερον ἐκβαλλόμενοι συνῆλθον εἰς
μίαν οἱ πλείους αὐτῶν, εἰς τὴν Ὄλυνθον· ὀνομάζοντο
δ' οἱ ἐπὶ Θράκης Χαλκιδεῖς. Ε.

- 11^a Τὸ δὲ ἔθνικὸν τοῦ Βόττεια διὰ τοῦ ι, ὡς Στρά-
βων ἐν ζ. καλεῖται δὲ ἀπὸ Βόττωνος τοῦ Κρητός. Ely- 15
mol. M. p. 206, 6.
- 12 "Οτι Πηνειὸς μὲν ὁρίζει τὴν κάτω καὶ πρὸς θα-
λάττη Μακεδονίαν ἀπὸ Θετταλίας καὶ Μαγνησίας,
Ἀλιάκμων δὲ τὴν ἄνω, καὶ ἔτι τοὺς Ἡπειρώτας καὶ
τοὺς Παίονας καὶ αὐτὸς καὶ ὁ Ἐργών καὶ ὁ Ἀξιὸς καὶ 20
ἔτεροι. Ε.
- 13 "Οτι ἔστι τῆς παραλίας τῆς Μακεδονικῆς ἀπὸ τοῦ
μυχοῦ τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσσαλονικεῖας ἡ μὲν
τεταμένη πρὸς νότον μέχρι Σουνίου, ἡ δὲ πρὸς ἔω μέχρι
τῆς Θρακίας χερρονήσου, γωνίαν τινὰ ποιοῦσα κατὰ 25
τὸν μυχόν. εἰς ἐκάτερον δὲ καθηκούσης τῆς Μακεδο-
νίας, ἀπὸ τῆς προτέρας λεχθείσης ἀριτέον. τὰ μὲν δὴ
πρῶτα μέρη τὰ περὶ Σουνίου ὑπερκειμένην ἔχει τὴν
Ἀττικὴν σὺν τῇ Μεγαρικῇ μέχρι τοῦ Κρισαίου κόλ-
που· μετὰ δὲ ταύτην ἡ Βοιωτική ἔστι παραλία ἡ πρὸς 30
Εὐβοιαν· ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ λοιπὴ Βοιωτία ἐπὶ
δύσιν παράλληλος τῇ Ἀττικῇ. λέγει δὲ καὶ τὴν Εγνα-

πίαν δόδον τελευτῶν εἰς Θεσσαλονίκειαν ἀπὸ τοῦ Ἰονίου κόλπου. Ε.

Τῶν ταινιῶν, φησίν, ἀφοριοῦμεν πρώτους τοὺς 14 περὶ Πηγειὸν οἰκοῦντας καὶ τὸν Ἀλιάκμονα πρὸς θαλάττην. φει δ' ὁ Πηγειὸς ἐκ τοῦ Πίνδου ὅρους διὰ μέσης τῆς Θετταλίας πρὸς ἔω. διελθὼν δὲ τὰς τῶν Λαπιθῶν πόλεις καὶ Περραιβῶν τινας συνάπτει τοῖς Τέμπεσι, παραλαβὼν πλείους ποταμούς, ἃν καὶ ὁ Εὔρωπος, ὃν Τιταρήσιον εἶπεν ὁ ποιητής, τὰς πηγὰς ἔχοντα 10 ἀπὸ τοῦ Τιταρίου ὅρους συμψυοῦς τῷ Ὁλύμπῳ, ὃ κάντεῦθεν ἄρχεται διορίζειν τὴν Μακεδονίαν ἀπὸ τῆς Θετταλίας. ἔστι γὰρ τὰ Τέμπη στενὸς αὐλῶν μεταξὺ Ὁλύμπου καὶ Ὁσσης. φέρεται δ' ὁ Πηγειὸς ἀπὸ τῶν στενῶν τούτων ἐπὶ σταδίους τετταράκοντα, ἐν ἀριστερᾷ μὲν ἔχων τὸν Ὁλυμπον, Μακεδονικὸν ὅρος μετεωρότατον, [ἐν δὲ δεξιᾷ τὴν Ὁσσαν, ἐγγὺς] τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ. ἐπὶ μὲν δὴ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Πηγειοῦ ἐν δεξιᾷ Γυρτῶν ἴδονται, Περραιβικὴ πόλις καὶ Μαγνῆτις, ἐν ἣ Πειρίθους τε καὶ Τέλεων ἐβασίλευσαν· ἀπέχει 20 δ' ὅσον σταδίους ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλις Κραννίου, καὶ φασιν, ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητής,, τῷ μὲν ἄρδεν „Θρήνης“ καὶ ἔξῆς, Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραννωνίους, Φλεγύνας δὲ τοὺς Γυρτωνίους· ἐπὶ δὲ θάτερα ἡ Πιερία. Ε.

25 "Οτι ὁ Πηγειὸς ποταμός, φέων διὰ τῶν Τεμπῶν, 15 καὶ ἀρχόμενος ἀπὸ τοῦ Πίνδου ὅρους, καὶ διὰ μέσης Θεσσαλίας καὶ τῶν Λαπιθῶν καὶ Περραιβῶν, δεκόμενός τε τὸν Εὔρωπον ποταμόν, ὃν Ὁμηρος Τιταρήσιον ὀνόμασε, διορίζει Μακεδονίαν μὲν πρὸς βορρᾶν, Θεσσαλίαν δὲ πρὸς νότον. αἱ δὲ τοῦ Εὔρωπου ποταμοῦ πηγαὶ ἐκ τοῦ Τιταρίου ὅρους ἄρχονται, ὃ ἔστι συνεχὲς τῷ Ὁλύμπῳ. καὶ ἔστιν ὁ μὲν Ὁλυμπος

τῆς Μακεδονίας, ἡ δὲ "Οσσα τῆς Θεσσαλίας καὶ τὸ Πηλιοὶ Ερίτ.

- 16 "Οτι ύπὸ ταῖς ὑπωρείαις τοῦ Ὀλύμπου παρὰ τὸν Πηνειὸν ποταμὸν Γυρτῶν ἔστι, πόλις Περραιβικὴ καὶ Μαγνητις, ἐν ᾧ Πειρίθους τε καὶ Ἱξεων ἥρξαν. ἀπέχει 5 C.330δ' ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλεως Κραννών, καὶ φασιν, ὅταν εἰπῃ ὁ ποιητής, τῷ μὲν ἄρδεν Θρήνης, "Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραννωνίους, Φλεγύνας δὲ τοὺς Γυρτωνίους. Ερίτ.
- 16^a Ἀπέχει δὲ σταδίους ἑκατὸν Γυρτῶνος ἡ Κραννὼν 10 πόλις, ὡς φησι Στράβων. Stephanus in Κραννών.
- 16^b Ὁμόλιον πόλις Μακεδονίας καὶ Μαγνησίας. Στράβων ἐβδόμη. Stephanus v. Ὁμόλιον. cf. Strabo 9 p. 443.
- 17 "Οτι τὸ Άιον ἡ πόλις οὐκ ἐν τῷ αἰγιαλῷ τοῦ Θερμαίου κόλπου ἔστιν ἐν ταῖς ὑπωρείαις τοῦ Ὀλύμπου, 15 ἀλλ' ὅσον ἐπτὰ ἀπέχει σταδίους· ἔχει δ' ἡ πόλις τὸ Άιον κώμην πλησίον Πίμπλειαν, ἐνθα Ὁρφεὺς διέτριβεν. Ερίτ.
- 18 "Οτι ύπὸ τῷ Ὀλύμπῳ πόλις Άιον. ἔχει δὲ κώμην πλησίον Πίμπλειαν· ἐνταῦθα τὸν Ὁρφεά διατριψαί 20 φησι τὸν Κίκονα, ἀνδρα γόητα, ἀπὸ μουσικῆς ἄμα καὶ μαντικῆς καὶ τῶν περὶ τὰς τελετὰς δρμιασμῶν ἀγυρτεύοντα τὸ πρῶτον, εἰτ' ἥδη καὶ μειζόνων ἀξιοῦντα ἐαυτὸν καὶ ὅχλον καὶ δύναμιν κατασκευαξόμενον· τοὺς μὲν οὖν ἐκουσίως ἀποδέχεσθαι, τινὰς δ' ὑπιδομένους 25 ἐπιβουλὴν καὶ βίᾳν ἐπισυστάντας διαφθείραι αὐτόν. ἐνταῦθα πλησίον καὶ τὰ Λείβηδρα. Ε.
- 19 "Οτι τὸ παλαιὸν οἱ μάντεις καὶ μουσικὴν εἰργάζοντο. Ερίτ.
- 20 Μετὰ δὲ τὸ Άιον αἱ τοῦ Ἀλιάκμονος ἐκβολαὶ· εἶτα 30 Πύδνα Μεθάνη Ἀλωρος καὶ ὁ Ἐρύγων ποταμὸς καὶ Λουδίας, δὲ μὲν ἐκ Τρικλάρων δέων δι' Ὁρεστῶν καὶ

τῆς Πελαγονίας ἐν ἀριστερῷ ἀφιεὶς τὴν πόλιν καὶ συμβάλλων τῷ Ἀξιῷ· ὁ δὲ Λουδίας εἰς Πέλλαν ἀνάπλουν ἔχων σταδίων ἑκατὸν καὶ εἴκοσι. μέση δ' οὖσα ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης ὅσον τετταράκοντα σταδίων 5 ἀπέχει, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα. ἔστι δ' ἡ Ἀλώρος τὸ μυχαίτατον τοῦ Θερμαίου κόλπου· *λέγεται δὲ Θεσσαλονίκεια διὰ τὴν ἐπιφάνειαν. τὴν μὲν οὖν Ἀλώρου Βοτταίκην νομίζουσι, τὴν δὲ Πύδναν Πιερικήν. Πέλλα ἔστι μὲν τῆς κάτω Μακεδονίας ἡνὶ Βοττιαῖοι 10 κατεῖχον· ἐνταῦθ' ἦν πάλαι τὸ τῆς Μακεδονίας χρηματιστήριον· ηὕξησε τὴν πόλιν ἐκ μικρᾶς Φίλιππος τραφεὶς ἐν αὐτῇ. ἔχει δ' ἄκραν ἐν λίμνῃ τῇ καλουμένῃ Λουδίᾳ· ἐκ ταύτης ὁ Λουδίας ἐκδίδωσι ποταμός, αὐτὴν δὲ πληροῦ τοῦ Ἀξιοῦ τι ἀπόσπασμα. ὁ δὲ Ἀξιὸς ἐκδίδωσι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπίκειται δὲ τῷ ποταμῷ τούτῳ χωρίον ἐρυμανόν, ὃ νῦν μὲν καλεῖται Ἀβυδάν, Ὁμηρος δ' Ἀμυδῶνα καλεῖ, καὶ φησι τοὺς Παιονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἐλθεῖν „τηλόθεν ἔξι Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὔρυνθοντος.“ κατεύθεν ἔξι Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὔρυνθοντος. 20 Σκάφη δ' ὑπὸ τῶν Αργεαδῶν. Ε.

“Οτι δέ Ἀξιὸς θολερὸς φεῖ· ὁ δέ Ὅμηρος Ἀξιοῦ κάλ- 21 λιστον ὑδωρ φησίν, ἵσως διὰ τὴν πηγὴν τὴν καλουμένην Άιαν, ἡ καθαρώτατον ἐκδιδοῦσα ὑδωρ εἰς τοῦτον ἔλέγχει φαύλην ὑπάρχουσαν τὴν νῦν φερομένην γρα- 25 φὴν παρὰ τῷ ποιητῇ. μετὰ δὲ Ἀξιὸν Ἐχέδωρος ἐν σταδίοις εἴκοσιν· εἴτα Θεσσαλονίκεια Κασάνδρου κτίσμα ἐν ἄλλοις τετταράκοντα καὶ ἡ Ἐγνατία ὀδός. ἐπινόμασε δὲ τὴν πόλιν ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γυναικὸς Θεσσαλονίκης, Φιλίππου δὲ τοῦ Ἀμύντου θυγατρός, καθελὼν 30 τὰ ἐν τῇ Κρουσσίδι πολίσματα καὶ τὰ ἐν τῷ Θερμαίῳ κόλπῳ περὶ ξένια καὶ εἴκοσι καὶ συνοικίσας εἰς ἓν· ἡ δὲ μητρόπολις τῆς νῦν Μακεδονίας ἔστι. τῶν δὲ συνοι-

κισθεισῶν ἦν Ἀπολλωνία καὶ Χαλάστρα καὶ Θέρμα καὶ Γαρησκὸς καὶ Αἴνεια καὶ Κισσός, ὃν τὴν Κισσὸν ὑπονοήσαιεν ἂν τις τῷ Κισσῇ προσήκειν, οὗ μέμνηται ὁ ποιητής „Κισσῆς τόν γ' ἔθρεψε,“ τὸν Ἰφιδάμαντα λέγων. Ε.

5

22 "Οτι μετὰ τὸ Λῖον πόλιν ὁ Ἀλιάκμων ποταμὸς ἐστιν, ἐκβάλλων εἰς τὸν Θερμαϊκὸν κόλπον· καὶ τὸ ἀπὸ τούτου ἡ πρὸς βορρᾶν τοῦ κόλπου παραλία Πιερία καλεῖται ἥτις τοῦ Ἀξιοῦ ποταμοῦ, ἐν ᾧ καὶ πόλις Πύδνα, ἣ νῦν Κίτρον καλεῖται· εἰτα Μεθώνη καὶ Ἀλωρος πό- 10 λεις· εἰτα Ἐρίγων καὶ Λουδίας ποταμοί· ἀπὸ δὲ Λουδίου εἰς Πέλλαν πόλιν ἀνάπλους στάδια ἐκατὸν εἴκοσιν. ἀπέχει δ' ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης στάδια τετταράκοντα, τῆς Ἀλωρού δὲ ἑβδομήκοντα στάδια. ἡ μὲν οὖν Πύδνα Πιερική ἐστι πόλις, ἡ δὲ Ἀλωρος Βοτταϊκή. 15 ἐν μὲν οὖν τῷ πρὸ τῆς Πύδνης πεδίῳ Ῥωμαῖοι Περσέα καταπολεμήσαντες καθεῖλον τὴν τῶν Μακεδόνων βασιλείαν, ἐν δὲ τῷ πρὸ τῆς Μεθώνης πεδίῳ γενέσθαι συνέβη Φιλίππῳ τῷ Ἀμύντου τὴν ἐκκοπὴν τοῦ δεξιοῦ ὀφθαλμοῦ καταπελτικῷ βέλει κατὰ τὴν πολιορκίαν 20 τῆς πόλεως. Ερι.

23 "Οτι τὴν Πέλλαν οὖσαν μικρὰν πρότερον Φίλιππος εἰς μῆκος ηὔξησε τραφεὶς ἐν αὐτῇ· ἔχει δὲ λίμνην πρὸ αὐτῆς, ἐξ ἣς ὁ Λουδίας ποταμὸς φει· τὴν δὲ λίμνην πληροῖ τοῦ Ἀξιοῦ τι ποταμοῦ ἀπόσπασμα. εἰτα ὁ Ἀξιὸς 25 διαιρῶν τὴν τε Βοτταϊαν καὶ τὴν Ἀμφαξίτιν γῆν, καὶ παραλαβὼν τὸν Ἐρίγωνα ποταμὸν ἐξέησι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπίκειται δὲ τῷ Ἀξιῷ ποταμῷ χωρίον, διπερ Ομηρος Ἀμυδῶνα καλεῖ, καὶ φησι τοὺς Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἀλθεῖν „τηλόθεν ἐξ 30 Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ ἀλλ' ἐπεὶ δὲ μὲν Ἀξιὸς θολερός ἐστι, κρήνη δέ τις ἐξ Ἀμυδῶνος ἀν-

σχουσα καὶ ἐπιμιγνυμένη αὐτῷ καλλίστου ὕδατος, διὰ τοῦτο τὸν ἔξης στύχον „Ἀξιοῦ, οὗ καλλίστου ὕδωρ „ἐπικίδναται Αἴαν“ μεταγράφουσιν οὕτως „Ἀξιοῦ, φῶς, καλλίστου ὕδωρ ἐπικίδναται Αἴης.“ οὐ γὰρ τὸ τοῦ 5 Ἀξιοῦ ὕδωρ καλλίστου τῇ πηγῇ ἐπικίδναται, ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιῷ. Epit.

Ἐν δὲ τῷ „ἐπικίδναται αἴῃ“ ἥ „αἴαν“ (διττῶς γὰρ 23 ἡ γραφή) αἴαν τινὲς οὐ τὴν γῆν ἐνόησαν, ἀλλά τινα πηγὴν, ὡς δῆλον ἔξων ὁ γεωγράφος φησί, λέγων δὲ τῇ ἡ 10 παρ’ Ὁμήρῳ Ἀμυδῶν Ἀβυδῶν ὕστερον ἐκλήθη, κατεσκάφη δέ. πηγὴ δὲ πλησίον Ἀμυδῶνος Αἴα καλούμενη καθαρώτατον ὕδωρ ἐκδιδοῦσα εἰς τὸν Ἀξιον, διὸ ἐν πολλῶν πληρούμενος ποταμῶν θολερὸς φέει. φαύλη οὖν, φησίν, ἡ φερομένη γραφή Ἀξιον καλλίστου ὕδωρ 15 ἐπικίδναται αἴῃ, ὡς δηλαδὴ οὐ τοῦ Ἀξιον ἐπικίδναντος τὸ ὕδωρ τῇ πηγῇ, ἀλλ’ ἀνάπαλιν· είτα ὑποδυσκόλως αἰτιώμενος ὁ γεωγράφος καὶ τὸ νοῆσαι τὴν αἴαν ἐπὶ τῆς γῆς ἔοικε παντελῶς ἐθέλειν ἐκβαλεῖν τοῦ Ὁμηριοῦ ἔπους τὴν τοιαύτην λέξιν. Eustathius ad Il. β 850.

20 Οτι μετὰ τὸν Ἀξιὸν ποταμὸν ἡ Θεσσαλονίκη ἐστὶ 24 πόλις, ἥ πρότερον Θέρμη ἐκαλεῖτο· κτίσμα δὲ ἐστὶ Κασσάνδρου, διὸ ἐπὶ τῷ ὄνόματι τῆς ἑαυτοῦ γυναικός, παύδος δὲ Φιλίππου τοῦ Ἀμύντου, ὄνόμασε· μετώνισε δὲ τὰ πέριξ πολίχνια εἰς αὐτήν, οἶον Χαλάστρων Αἰνειαν 25 Κισσὸν καὶ τινα καὶ ἄλλα. ἐκ δὲ τοῦ Κισσοῦ τούτου ὑπονοήσειεν ἄν τις γενέσθαι καὶ τὸν παρ’ Ὁμήρῳ Ἰφιδάμαντα, οὗ δὲ πάπκος Κισσεὺς ἐθρεψεν αὐτὸν (φησὶν) ἐν Θρήκῃ, ἥ νῦν Μακεδονία καλεῖται. Epit.

“Οτι αὐτοῦ που καὶ τὸ Βέρμιον ὅρος, ὃ πρότερον 25 30 κατείχον Βούργες Θρακῶν ἐθνος, ὃν τινες διαβάντες εἰς τὴν Ἀσίαν Φρύγες μετωνομάσθησαν· μετὰ δὲ Θεσσαλονίκειάν ἐστι τὰ λοιπὰ τοῦ Θερμαίου κόλπου μέχρι

τοῦ Καναστραίου. τοῦτο δ' ἐστὶν ἄκρα χερρονησίου-
σα, ἀνταίρουσα τῇ Μαγνήτιδι· ὅνομα δὲ τῇ χερρονήσῳ
Παλλήνη· πενταστάδιον δ' ἔχει τὸν ἴσθμον διορωρυγ-
μένον· κεῖται δ' ἐπ' αὐτῷ πόλις ἡ πρότερον μὲν Ποτί-
δαια, Κορινθίων κτίσμα, ὕστερον δὲ Κασάνδρεια ἀπὸ 5
τοῦ αὐτοῦ βασιλέως Κασάνδρου ἀναλαβόντος αὐτὴν
ἀνατετραμμένην· ὁ περίπλους ταύτης τῆς χερρονήσου
πεντακοσίων καὶ ἑβδομήκοντα. ἔτι δὲ πρότερον τοὺς
Γίγαντας ἐνταῦθα γενέσθαι φασὶ καὶ τὴν χώραν ὀνο-
μάζεσθαι Φλέγραν οἱ μὲν μυθολογοῦντες οἱ δὲ πιθα- 10
νώτεροι ἔθνος τι βάφθαρον καὶ ἀσεβὲς ἀποφαίνοντες
τὸ κατέχον τὸν τόπον, καταλυθὲν δ' ὑπὸ Ἡρακλέους,
ἥνικα τὴν Τροίαν ἐλὼν ἀνέπλει εἰς τὴν οἰκείαν. κάν-
ταῦθα δὲ τῆς λύμης αἱ Τρωάδες αἴτιαι λέγονται, ἐμ-
πρῆσασαι τὰς ναῦς, ἵνα μὴ ταῖς γυναιξὶ τῶν ἑλόντων 15
αὐτὰς δουλεύοιεν. E.

26 Οτι ἡ Βέροια πόλις ἐν ταῖς ὑπωρείαις κεῖται τοῦ
Βερμίου ὁρούς. Epit.

27 Οτι ἡ Παλλήνη χερρόνησος, ἡς ἐν τῷ ἴσθμῳ κεῖ-
ται ἡ πρὶν μὲν Ποτίδαια νῦν δὲ Κασσάνδρεια, Φλέγρα 20
τὸ πρὶν ἐκαλεῖτο· φύκουν δ' αὐτὴν οἱ μυθενόμενοι Γί-
γαντες, ἔθνος ἀσεβὲς καὶ ἄνομον, οὓς Ἡρακλῆς διέ-
φθειρεν· ἔχει δὲ πόλεις τέσσαρας, "Αφυτιν Μένδην
Σκιώνην Σάνην. Epit.

28 Οτι διεῖχε Ποτίδαιας Ὄλυνθος ἑβδομήκοντα στα- 25
δίους. E.

29 Οτι τῆς Ὄλυνθου ἐπίνειόν ἐστι Μηκύπερνα ἐν τῷ
Τορωναίῳ κόλπῳ. Epit.

30 Οτι πλησίν Ὄλυνθου χωρίουν ἐστὶ κοῖλον, καλού-
μενον Κανθαρώλεθρον ἐκ τοῦ συμβεβηκότος· τὸ γὰρ 30
ἔφον ὁ κάνθαρος τῆς περιξ χώρας γινόμενος, ἥνικα
ψεύσῃ τοῦ χωρίουν ἐκείνουν, διαφθείρεται. Epit.

Μετὰ δὲ Κασάνδρειαν ἐφεξῆς ἡ λοιπὴ τοῦ Τορω- 31
 νικοῦ κόλπου παραλία μέχρι Δέρρεως· ἄκρα δὲ εἰστὶν
 ἀνταίρουσα τῷ Καναστραῖῳ καὶ ποιοῦσα τὸν κόλπον.
 ἀπαντικρὺ δὲ τῆς Δέρρεως πρὸς ἔω τὰ ἄκρα τοῦ "Αθω,
 5 μεταξὺ δὲ ὁ Σιγγυιὸς κόλπος ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῷ πόλεως
 ἀρχαίας κατεσκαμμένης Σίγγου τοῦνομα. μεθ' ἦν
 "Αιανθός ἐπὶ τῷ ιερῷ τοῦ "Αθω κειμένη πόλις, Ἀν-
 δρίων κτίσμα, ἀφ' ἧς συχνοὶ καὶ τὸν κόλπον Ἀιανθίου
 καλοῦσι. E.

10 "Οτι ἀντικρὺ Καναστρου, ἄκρου τῆς Παλλήνης, 32
 ἡ Δέρρης ἐστὶν ἄκρα πλησίου Καφοῦ λιμένος, καὶ ὁ
 Τορωναῖος κόλπος ὑπὸ τούτων ἀφορίζεται. καὶ πρὸς
 ἀνατολὰς αὐθῆς κεῖται τὸ ἄκρον τοῦ "Αθωνος, ὃ ἀφορ-
 ξει τὸν Σιγγυικὸν κόλπον, ὃς εἶναι ἐφεξῆς κόλπους τοῦ
 15 Αλγαίου πελάγους πρὸς βορρᾶν, ἀλλήλων ἀπέχοντας
 οὔτες, Μαλιακὸν Παγασιτικὸν Θερμαῖον Τορωναῖον
 Σιγγυικὸν Στρυμονικόν. τὰ δὲ ἄκρα Ποσείδιον μὲν τὸ
 μεταξὺ Μαλιακοῦ καὶ Παγασιτικοῦ, τὸ δὲ ἐφεξῆς πρὸς
 βορρᾶν Σηπιάς, εἴτα τὸ ἐν Παλλήνῃ Κάναστρου, εἴτα
 20 Δέρρης, εἴτα Νυμφαῖον ἐν τῷ "Αθωνι πρὸς τῷ Σιγγυιτ-
 ιῷ, τὸ δὲ πρὸς τῷ Στρυμονικῷ Ἀκράθως ἄκρον, ὃν με-
 ταξὺ δὲ "Αθων, οὗ πρὸς ἀνατολὰς ἡ Λήμνος· πρὸς δὲ βορ-
 ρᾶν ἀφορίζει τὸν Στρυμονικὸν κόλπον ἡ Νεάπολις. Epit.

"Οτι" Αιανθός πόλις ἐν τῷ Σιγγυιτικῷ κόλπῳ ἐστὶ 0.331
 25 παράλιος πλησίον τῆς τοῦ Φέρεον διώρυχος· ἔχει δὲ 33
 δὲ "Αθων πέντε πόλεις, οἵτον Κλεωνὰς Θύσσον Ὄλόφυ-
 ξιν Ἀκροθώους· αὕτη δὲ πρὸς τῇ ιορυφῇ τοῦ "Αθω-
 νος κεῖται. ἔστι δὲ δὲ "Αθων ὅρος μαστοειδὲς δέκατον
 30 ὑψηλότατον· οὗ οἱ τὴν ιορυφὴν οἰκοῦντες ὁρῶσι τὸν
 ἥλιον ἀνατέλλοντα πρὸς ὄραν τοιων τῆς ἐν τῇ παραλίᾳ
 ἀνατολῆς. καὶ ἔστιν ἀπὸ πόλεως τῆς Ἀιανθίου δὲ περί-
 πλους τῆς χερσονήσου ἔως Σταγείρου, πόλεως τοῦ

Αριστοτέλους, στάδια τετρακόσια, ἐν ᾧ λιμὴν ὅνομα
Κάπρος καὶ νησίου ὄμώνυμου τῷ λιμένι· εἶτα αἱ τοῦ
Στρυμόνος ἔκβολαι· εἶτα Φάγρης Γαληψὸς Ἀπολλω-
νία, πᾶσαι πόλεις· εἶτα τὸ Νέστον στόμα τοῦ διορ-
χοτος Μακεδονίαν καὶ Θράκην, ὡς Φίλιππος καὶ Ἀλέ- 5
ξανδρος ὁ τούτου παῖς διώριξον ἐν τοῖς κατ' αὐτοὺς
χρόνοις. εἰσὶ δὲ περὶ τὸν Στρυμονικὸν κόλπον πόλεις
καὶ ἔπειραι, οἷον Μύρινος Ἀργιλος Λφαβῆσκος Λάτον,
ὅπερ καὶ ἀρίστην ἔχει χώραν καὶ εὔκαρπον καὶ ναυ-
πήγια καὶ χρυσοῦ μέταλλα· ἀφ' οὗ καὶ παροιμία „Ἄ- 10
τον ἀγαθῶν,“ ὡς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθῶντας.“ Ερι.

34 Ὄτι πλεῖστα μέταλλά ἔστι χρυσοῦ ἐν ταῖς Κρηνί-
σιν, ὅπου νῦν οἱ Φίλιπποι πόλις ἴδρυνται, πλησίον τοῦ
Παγγαίου ὄφους· καὶ αὐτὸ δὲ τὸ Παγγαῖον ὄφος χρυσεῖα
καὶ ἀργυρεῖα ἔχει μέταλλα καὶ ἡ πέραν καὶ ἡ ἐντὸς τοῦ 15
Στρυμόνος κοταμοῦ μέχρι Παιονίας· φασὶ δὲ καὶ τὸν
τὴν Παιονίαν γῆν ἀροῦντας εὐρεῖσκεν χρυσοῦ τεινα
μάρια. Ερι.

35 Ἐστι δὲ ὁ Ἀθως ὄφος ὑψηλὸν καὶ μαστοειδές, ὡστε
τοὺς ἐν ταῖς κορυφαῖς ἥδη ἀνίσχοντος ἥλιου κάμνειν 20
ἀροῦντας, ἥντικα ἀλεκτοροφωνίας ἀρχὴ παρὰ τοῖς τὴν
ἐκτὴν οἰκουσίν ἔστιν. ἐν δὲ τῇ ἀκτῇ ταύτῃ Θάμνοις ὁ
Θρᾷκε ἰβασίλευσε, τῶν αὐτῶν ἐπιτηδευμάτων γεγονὼς
ἄν καὶ Ὁρφεὺς. ἐνταῦθα δὲ καὶ διώρυξ δείκνυται ἡ
περὶ τὴν Ἀκανθον, καθ' ἣν Ξέρξης τὸν Ἀθω διορύξαι 25
λίγεται καὶ διαγαγεῖν ἐκ τοῦ Στρυμονικοῦ κόλπου διὰ
τοῦ ισθμοῦ, δεξάμενος τὴν θάλασσαν εἰς τὴν διώρυγα.
Ἀημήτριος δ' ὁ Σκήψιος οὐκ οἰεται πλευσθῆναι τὴν
διώρυγα ταύτην· μέχρι μὲν γὰρ δέκα σταδίων εὔγεων
καὶ ὄφυκτὴν εἶναι, διορωφύχθαι δ' ἐπὶ πλάτος πλεθροὶ- 30
αῖον, εἰδ' ὑψηλὸν εἶναι πλαταμῶνα σταδίασον σχεδόν
τι τὸ μῆκος, ὃσον οὐκ ἐνὸν ἐκλατομηθῆναι δι' ὅλου

μέχρι θαλάσσης· εἰ δὲ καὶ μέχρι δεῦρο, οὕτω γε καὶ κατὰ βυθοῦ ὥστε πόρου γενέσθαι πλωτόν· ὅπου Ἀλέξαρχον τὸν Ἀντιπάτρου πόλιν ὑποδείμασθαι τὴν Οὐρανόπολιν τριάκοντα σταδίων τὸν κύκλον ἔχουσαν. φῶησαν δὲ τὴν χερρόνησον ταύτην τῶν ἐκ Λήμνου Πελαγῶν τινες, εἰς πέντε διηρημένοι πολίσματα, Κλεωνᾶς Ὄλοφυξιν Ἀκροθώνος Λίον Θύσσου. μετὰ δὲ Ἀθω ὁ Στρυμονικὸς κόλπος μέχρι Νέστου τοῦ ποταμοῦ τοῦ ἀφορίζοντος τὴν κατὰ Φίλιππον καὶ Ἀλέξανδρον Μακεδονίαν· εἰς μέντοι τάκριβες ἄκρα τίς ἔστιν ἡ ποιοῦσα τὸν κόλπον πρὸς τὸν Ἀθω, πόλιν ἐσχηκυῖα τὴν Ἀπολλωνίαν. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ πρώτη μετὰ τὸν Ἀκανθίσιν λιμένα Στράγειρα, ἕρημος, καὶ αὐτὴ τῶν Χαλκιδικῶν, Ἀριστοτέλους πατρίς, καὶ λιμὴν αὐτῆς Κάπρος καὶ νησίον ὅμώνυμον τούτῳ· εἰδὲ δὲ Στρυμών καὶ ὁ ἀνάπλους εἰς Ἀμφίπολιν εἶκοσι σταδίων· ἔστι δὲ Ἀθηναίων πτίσμα ἐν τῷ τόπῳ ἰδρυμένον τούτῳ, δῆς καλεῖται Ἐννέα δόδοις· εἰτα Γαληψὸς καὶ Ἀπολλωνία, κατεσκαμμέναι ὑπὸ Φιλίππου. Ε.

20 Ἀπὸ Πηνειοῦ φῆσιν εἰς Πύδναν σταδίους * ἐκατὸν 36 εἶκοσι. παρὰ δὲ τὴν παραλίαν τοῦ Στρυμόνος καὶ Δατηνῶν πόλις Νεάπολις καὶ αὐτὸ τὸ Δάτον, εὔκαρπα πεδία καὶ λίμνην καὶ ποταμοὺς καὶ ναυπήγια καὶ χρυσεῖα λυσιτελῆ ἔχον, ἀφ' οὗ καὶ παροιμιάζονται,, Δάτον ἀγαθῶν“ ὡς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθῖδας.“ ἔστι δὲ ἡ κώρα ἡ πρὸς τὸ Στρυμόνος πέραν, ἡ μὲν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς περὶ Δάτον τόποις Ὁδόμαντες καὶ Ἡδωνοὶ καὶ Βισάλται, οὗ τε αὐτόχθονες καὶ οἱ ἐκ Μακεδονίας διαβάντες, ἐν οἷς Ρῆσος ἐβασίλευσεν. ὑπὲρ δὲ τῆς Ἀμφιπόλεως Βισάλται καὶ μέχρι πόλεως Ἡρακλείας, ἔχοντες αὐλῶνα εὔκαρπον, δὲν διαρρέεται δὲ Στρυμών ὠρμημένος ἐκ τῶν περὶ Ροδόπην Ἀγριάνων, οἵς παράκειται

τῆς Μακεδονίας ἡ Παρορβηλία, ἐν μεσογαίᾳ ἔχουσα κατὰ τὸν αὐλῶνα τὸν ἀπὸ Εἰδομένης Καλλίπολιν Ὁρθόπολιν Φιλιππούπολιν Γαρησκόν. ἐν δὲ τοῖς Βισάλταις ἀνὰ ποταμὸν ἴοντι τὸν Στρυμόνα καὶ ἡ Βέργη ἰδρυται, καμη ἀπέχουσα Ἀμφιπόλεως περὶ διακοσίους 5 σταδίους. ἐπὶ δὲ ἄρχιτους ἴοντι ἀπὸ Ἡρακλείας καὶ τὰ στενὰ δι' ᾧ ὁ Στρυμὼν φέρεται, δεξιὸν ἔχοντι τὸν ποταμὸν ἐκ μὲν τῶν εὐωνύμων ἐστὶν ἡ Παιονία καὶ τὰ περὶ τὸν Λόβηρον καὶ τὴν Ῥοδόπην καὶ τὸν Αἶμον ὄρος, ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ περὶ τὸν Αἶμον. ἐντὸς δὲ τοῦ 10 Στρυμόνος πρὸς αὐτῷ μὲν τῷ ποταμῷ ἡ Σκοτοῦσσα ἐστι, πρὸς δὲ τῇ λίμνῃ τῇ Βόλβῃ Ἀρέθουσα. καὶ δὴ καὶ μάλιστα λέγονται Μυγδόνες οἱ περὶ τὴν λίμνην. οὐ μόνον δ' ὁ Ἀξιὸς ἐκ Παιονῶν ἔχει τὴν δύσιν, ἀλλὰ καὶ ὁ Στρυμών· ἐξ Ἀγριάνων γὰρ διὰ Μαΐδων καὶ Σιντᾶν 15 εἰς τὰ μεταξὺ Βισαλτῶν καὶ Ὁδομάντων ἐκπίπτει. E.

37 "Οτι ὁ Στρυμὼν ποταμὸς ἀρχεται ἐν τῶν περὶ τὴν Ῥοδόπην Ἀγριάνων. Epit.

38 Τοὺς δὲ Παιονας οἱ μὲν ἀποίκους Φρυγῶν οἱ δ' ἀρχηγέταις ἀποφαίνουσι, καὶ τὴν Παιονίαν μέχρι 20 Πελαγονίας καὶ Πιερίας ἐκτετάσθαι φασί· καλεῖσθαι δὲ πρότερον Ὁρεστίαν τὴν Πελαγονίαν, τὸν δὲ Ἀστεροπαῖον, ἐνα τῶν ἐκ Παιονίας στρατευσάντων ἐπ' Ἰλιον ἥγεμόνων, οὐκ ἀπεικότως υἱὸν λέγεσθαι Πηλεγόνος, καὶ αὐτοὺς τοὺς Παιονας καλεῖσθαι Πελαγόνας. E. 25

39 "Οτι ὁ παρ' Ὁμήρῳ Ἀστεροπαῖος υἱὸς Πηλεγόνος ἐκ Παιονίας ὃν τῆς ἐν Μακεδονίᾳ ἴστορεῖται· διὸ καὶ Πηλεγόνος υἱός· οἱ γὰρ Παιόνες Πελαγόνες ἐκαλοῦντο. Epit.

40 "Ἐπει δὲ ὁ παιανισμὸς τῶν Θρακῶν τιτανισμὸς ὑπὸ 30 τῶν Ἑλλήνων λέγεται κατὰ μίμησιν τῆς ἐν παιᾶσι φωνῆς, καὶ οἱ Τιτᾶνες ἐκλήθησαν Πηλαγόνες. E.

"Οτι καὶ πάλαι καὶ νῦν οἱ Λαίονες φαίνονται πολ- 41
λὴν τῆς νῦν Μακεδονίας κατεσχημότες, ὡς καὶ Πέριν-
θον πολιορκῆσαι, καὶ Κρητωνίαν καὶ Μυγδονίδα πᾶ-
σαν καὶ τὴν Ἀγριάνων μέχρι Παγγαίου ὑπ' αὐτοῖς γε-
5 νέσθαι. τῆς δὲ ἐν τῷ Στρυμονικῷ κόλπῳ παραλίας τῆς
ἀπὸ Γαληψοῦ μέχρι Νέστου ὑπέροκεινται οἱ Φίλιπποι
καὶ τὰ περὶ Φιλίππους. οἱ δὲ Φίλιπποι Κρηνίδες ἔκα-
λοῦντο πρότερον, κατοικία μικρά· ηὗξήθη δὲ μετὰ τὴν
περὶ Βρούτου καὶ Κάσσιου ἥτταν. Ε.

10 "Οτι οἱ νῦν Φίλιπποι πόλις Κρηνίδες ἔκαλοῦντο 43
τὸ παλαιόν. Ερὶ.

Πρόκεινται δὲ τῆς παραλίας ταύτης δύο νῆσοι, 44
Αἶγινος καὶ Θάσος. μετὰ δὲ τὸν εἰς Θάσον πορθμὸν
"Αβδήρα καὶ τὰ περὶ Ἀβδήρου μυθευόμενα. φησαν δ'
15 αὐτὴν Βίστονες Θρᾷκες, ὡν Διομήδης ηρχεν· οὐ μέ-
νει δὲ ὁ Νέστος ἐπὶ ταύτου φείδρου διὰ παντός, ἀλλὰ
κατακλύζει τὴν χώραν πολλάκις. εἰτα Δίκαια πόλις ἐν
κόλπῳ κειμένη καὶ λιμήν· ὑπέροκειται δὲ τούτων ἡ Βι-
στονὶς λίμνη κύκλου ἔχουσα ὅσουν διακοσίων σταδίων.
20 φασὶ δὲ τοῦ πεδίου κοίλου παντάπασιν ὄντος καὶ τα-
πεινοτέρου τῆς θαλάττης ἵπποκρατούμενον τὸν Ἡρα-
κλέα, ἥνικα ἥλθεν ἐπὶ τὰς τοῦ Διομήδους ἵππους, διο-
ρύξαι τὴν ἥρωνα καὶ τὴν θάλατταν ἐπαφέντα τῷ πεδίῳ
κρατῆσαι τῶν ἐναντίων. δείκνυνται δὲ καὶ τὸ βασίλειον
25 Διομήδους ἀπὸ συμβεβηκότος καλούμενον Καρτερὰ
κάμη διὰ τὴν ἐρυμνότητα. μετὰ δὲ τὴν ἀνὰ μέσον λί-
μνην Ξάνθεια Μαρώνεια καὶ Ἰσμαρός, αἱ τῶν Κικό-
νων πόλεις· παλεῦται δὲ νῦν Ἰσμάρα πλησίον τῆς Μα-
ρωνείας· πλησίον δὲ καὶ ἡ Ἰσμαρὸς ἔξηγι λίμνη· κα-
30 λεῖται δὲ τὸ φείδρον ἥδυ γειον· αὐτοῦ δὲ καὶ αἱ
Θασίων λεγόμεναι κεφαλαί. Σαπαῖοι δὲ εἰσὶν οἱ ὑπερ-
κείμενοι. Ε.

- 45 “Οτι τὰ Τόπειρα ἔστι πρὸς Ἀβδήρους καὶ Μαρωνίας. Ε.
- 46 “Οτι Σιντοὶ ἐθνος Θρακικὸν κατέκει τὴν Δῆμυνον νῆσον· ὅθεν Ὁμηρος Σίντιας αὐτοὺς καλεῖ λέγων „ἐνθα με Σίντιες ἄνδρες.“ Epit. 5
- 47 “Οτι μετὰ τὸν Νέστον ποταμὸν πρὸς ἀνατολὰς Ἀβδηρα πόλις, ἐπώνυμος Ἀβδήρου, ὃν οἱ τοῦ Διομήδους ἵπποι ἔφαγον· εἶτα Δικαια πόλις πλησίου, ἡς ὑπέροχειται λίμνη μεγάλη ἡ Βιστονίς· εἶτα πόλις Μαρώνεια. Epit. 10
- 48 “Εστι δ' ἡ Θράκη σύμπασα ἐκ δυεῖν καὶ εἴκοσιν ἐθνῶν συνεστῶσα· δύναται δὲ στέλλειν καίπερ οὕτα περισσῶς ἐκπεπονημένη μυρίους καὶ πεντακισχιλίους ἵππεας, πεζῶν δὲ καὶ εἴκοσι μυριάδας. μετὰ δὲ τὴν Μαρώνειαν Ὁρθαγόρεια πόλις καὶ τὰ περὶ Σέρριον, 15 παράπλους τραχύς, καὶ τὸ τῶν Σαμοθράκων πολύχνιον Τέμπυρα καὶ ἄλλο Χαράκωμα, οὐ πρόκειται ἡ Σαμοθράκη νῆσος, καὶ Ἰμβρος οὐ πολὺ ἄπωθεν ταύτης· πλέον δ' ἡ διπλάσιον ἡ Θάσος. ἀπὸ δὲ Χαρακώματος Δορίσκος, ὃπου ἐμέτρησε Ξέρξης τῆς στρατιᾶς τὸ πλῆ- 20 θος. εἶδ' Ἐβρος ἀνάπλουν ἔχων εἰς Κύψελα ἑκατὸν εἴκοσι· τῆς Μακεδονίας φησὶ τοῦτο ὄριον, ἢν ἀφείλοντο Περσέα Ρωμαῖοι καὶ μετὰ ταῦτα τὸν Ψευδοφελιππον. Παῦλος μὲν οὖν ὁ τὸν Περσέα ἐλὼν συνάψας τῇ Μακεδονίᾳ καὶ τὰ Ἡπειρωτικὰ ἐθνη εἰς τέτταρα 25 μέρη διέταξε τὴν χώραν, καὶ τὸ μὲν προσένειμεν Ἀμφιπόλει, τὸ δὲ Θεσσαλονικέᾳ, τὸ δὲ Πέλλῃ, τὸ δὲ Πελαγόσι. παροικοῦσι δὲ τὸν Ἐβρον Κορπεῖοι καὶ Βοένται ἔτι ἀνωτέρῳ, εἰτ' ἐσχατοι Βέσσοι· μέχρι γὰρ δεῦρο ὁ ἀνάπλους. ἀπαντα δὲ τὰ ἐθνη ληστρικὰ ταῦτα, μά- 30 λιστα δ' οἱ Βέσσοι, οὓς λέγει γειτονεύειν Ὁδρύσαις καὶ Σαπαίοις. Ἀστῶν δὲ βασίλειον ἦν Βιξύη. Ὁδρύσας δὲ

καλοῦσιν ἔνιοι πάντας τοὺς ἀπὸ Ἔβρου καὶ Κυψέλων μέχρι Ὀδησσοῦ τῆς παραλίας ὑπεροικοῦντας, ὃν ἐβασίλευσεν Ἀμάδοκος καὶ Κερσοβλέπτης καὶ Βηρισάδης καὶ Σεύθης καὶ Κότυς. Ε.

5 “Οτι ὁ νῦν ποταμὸς Ριγινία ἐν Θράκῃ καλούμενος 49
Ἐργῶν ἦν καλούμενος. Epit.

“Οτι τὴν Σαμοθράκην Ἰασίων καὶ Δάρδανος ἀδελ- 50
φοι φέκουν· κεραυνωθέντος δὲ Ἰασίωνος διὰ τὴν εἰς
Δήμητρα ἀμαρτίαν, ὁ Δάρδανος ἀπάρας ἐκ Σαμοθρά-
10 κης, ἐλθὼν φέκησεν ἐν τῇ ὑπαρχείᾳ τῆς Ἰδης, τὴν πόλιν
Δαρδανίαν καλέσας, καὶ ἐδίδαξε τοὺς Τρῶας τὰ ἐν
Σαμοθράκῃ μυστήρια· ἐκαλεῖτο δὲ ἡ Σαμοθράκη Σά-
μος πρὸν. Epit.

“Οτι τοὺς ἐν τῇ Σαμοθράκῃ τιμωμένους θεοὺς εἰ- 51
15 ρήνασι πολλοὶ τοὺς αὐτοὺς τοὺς Καβείροις, οὐδ' αὐ-
τοὺς ἔχοντες λέγειν τοὺς Καβείρους οἵτινές εἰσι, κα-
θάπτῳ τοὺς Κύροβαντας καὶ Κορύβαντας, ὡς δ' αὗτως
Κουρῆτας καὶ Ἰδαίους Δακτύλους. Ε.

Πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τοῦ Ἔβρου διστόμου ὄντος πό- 52
20 λις Άινος ἐν τῷ Μέλαινι κόλπῳ κεῖται, κτίσμα Μιτυ-
ληνατῶν καὶ Κυμαίων, ἐτὶ δὲ πρότερον Ἀλισπειονη-
σίων· εἰτ' ἄκρα Σαρπηδών· εἰδ' ἡ Χερρόνησος ἡ Θρά-
κη καλούμενη, ποιοῦσα τὴν τε Προποντίδα καὶ τὸν
Μέλαινα κόλπον καὶ τὸν Ἐλλήσποντον· ἄκρα γὰρ ἐκ-
25 κεῖται πρὸς εὐρόνοτον, συνάπτουσα τὴν Εὐρώπην
πρὸς τὴν Ασίαν ἐπιτασταδίῳ πορθμῷ τῷ κατὰ Ἀβυδον
καὶ Σηστόν, ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὴν Προποντίδα ἔχουσα,
ἐν δεξιᾷ δὲ τὸν Μέλαινα κόλπον καλούμενον οὕτως ἀπὸ
τοῦ Μέλαινος ἐκδιδόντος εἰς αὐτόν, καθάπερ Ἡρόδο-
30 τος καὶ Εὔδοξος· εἰρηκε δέ, φησίν, ὁ Ἡρόδοτος μὴ ἀν-
ταρκέσαι τὸ δεῖθρον τῇ Σέρεξον στρατιᾷ τοῦτο· Ισθμῷ
δὲ οἰκεῖται τετταράκοντα σταδίων ἡ λεχθεῖσα ἄκρα.

ἐν μέσῳ μὲν οὖν τοῦ ἴσθμοῦ Λυσιμάχεια πόλις ἔδονται
ἐπώνυμος τοῦ κτίσαντος βασιλέως· ἐκατέρωθεν δ' ἐπὶ
μὲν τῷ Μέλανι κόλπῳ Καρδία κεῖται μεγίστη τῶν ἐν
τῇ Χερρονήσῳ πόλεων, Μιλησίων καὶ Κλαζομενίων
κτίσμα, ὑστερον δὲ καὶ Ἀθηναίων· ἐν δὲ τῇ Προπον- 5
τίδι Πακτύῃ. μετὰ δὲ Καρδίαν Δράβος καὶ Λίμναι.
εἰτ' Ἀλωπεκόνυμησος, εἰς ἣν τελευτὴ μάλιστα ὁ Μέλας
κόλπος· εἰτ' ἄκρα μεγάλη Μαζουσία· εἰτ' ἐν κόλπῳ
Ἐλαιοῦς, ὅπου τὸ Πρωτεσιλάειον, καθ' ὃ τὸ Σίγειον
ἀπὸ τετταράκοντα σταδίων ἔστιν, ἄκρα τῆς Τρφαδός· 10
καὶ σχεδὸν τοῦτ' ἔστι τὸ νοτιώτατον ἄκρον τῆς Χερ-
ρονήσου, σταδίους μικρῷ πλείους τῶν τετρακοσίων
ἀπὸ Καρδίας· καὶ οἱ λοιποὶ δ' ἐπὶ θάτερον μέρος τοῦ
ἴσθμου μικρῷ τοῦ διαστήματος τούτου πλείους περι-
πλέοντι. Ε.

15

53 "Οτι δὲ ἐν Θράκῃ Χερρονήσος τρεῖς ποιεῖ θαλάσσας·
Προποντίδα ἐκ βιορᾶ, Ἐλλήσποντον ἐξ ἀνατολῶν καὶ
τὸν Μέλανα κόλπον ἐκ νότου, ὅπου καὶ ὁ Μέλας πο-
ταμὸς ἐκ βάλλει, διώνυμος τῷ κόλπῳ. Ερι.

54 "Οτι δὲ ἐν τῷ ἴσθμῷ τῆς Χερρονήσου τρεῖς πόλεις 20
κείνται· πρὸς μὲν τῷ Μέλανι κόλπῳ Καρδία, πρὸς δὲ
τῇ Προποντίδι Πακτύῃ, πρὸς δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυσιμά-
χεια· μῆκος τοῦ ἴσθμου στάδια τετταράκοντα. Ερι.

55 "Οτι δὲ πόλις ὁ Ἐλαιοῦς ἀρσενικῶς λέγεται· τάχα
δὲ καὶ ὁ Τραπεζοῦς. Ερι.

25

56 "Εστι δὲ ἐν τῷ περίπλῳ τούτῳ τῷ μετὰ Ἐλαιοῦντα
ἡ εἰσβολὴ πρῶτον ἡ εἰς τὴν Προποντίδα διὰ τῶν στε-
νῶν, ἣν φασιν ἀρχὴν εἶναι τοῦ Ἐλλήσποντον· ἐνταῦ-
θα δ' ἔστι τὸ Κυνὸς σῆμα ἄκρα, οἱ δὲ Ἐκάβης φασί·
καὶ γὰρ δείκνυνται κάμψαντι τὴν ἄκραν τάφος αὐτῆς. 30
εἰτα Μάδυτος καὶ Σηστιάς ἄκρα, καθ' ἣν τὸ Φέρεον
ζεῦγμα, καὶ μετὰ ταῦτα Σηστός. ἀπὸ δὲ Ἐλαιοῦντος

ἐπὶ τὸ ξεῦγμα ἐκατὸν ἑβδομήκοντα· μετὰ δὲ Σηστὸν
ἐπὶ Αἰγάς ποταμοὺς διακόσιοι ὅγδοήκοντα, πολίχνην
κατεσκαμμένην, ὅπου φασὶ τὸν λίθον πεσεῖν κατὰ τὰ
Περσικά· εἶτα Καλλίπολις, ἀφ' ἧς εἰς Λάμψακον δί-
5 αρμα εἰς τὴν Ἀσίαν τετταφάκοντα· εἶτα πολίχνιον κα-
τεσκαμμένον Κριθωτή· εἶτα Παντύη· εἶτα τὸ Μαιρὸν
τεῖχος καὶ Λευκὴ ἀκτὴ καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος καὶ Πέρινθος,
Σαμίων κτίσμα· εἶτα Σηλυβρία. ὑπέροχειται δ' αὐτῶν
Σίλτα, καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος τιμᾶται ὑπὸ τῶν ἔγχωριων
10 καὶ ἔστιν οἷον ἀκρόπολις τῆς χώρας. ἄσφαλτον δ' ἔξη-
σιν εἰς τὴν θάλασσαν, καθ' ὃν τόπουν ἡ Προκόννησος
ἔγγυντάτω τῆς γῆς ἔστι ἀπὸ ἐκατὸν εἴκοσι σταδίων, τὸ
μέταλλον ἔχουσα τῆς λευκῆς μαρμάρου πολύ τε καὶ
σπουδαῖον. μετὰ δὲ Σηλυβρίαν Ἀδύρας ἔστι ποταμὸς
15 καὶ Βαθυνίας· εἶτα Βυζάντιον καὶ τὰ ἐφεξῆς μέχρι
Κυανέων πετρῶν. E.

"Οτι ἐκ Περίνθου σὶς Βυζάντιον εἰσιν ἔξακόσιοι 57
τριάκοντα· ἀπὸ δὲ Ἐβρου καὶ Κυψέλων εἰς Βυζάντιον
μέχρι Κυανέων τρισχίλιοι ἐκατόν, ὡς φησιν Ἀρτεμίδω-
20 ρος· τὸ δὲ σύμπαν μῆκος ἀπὸ Ἰονίου κόλπου τοῦ κατὰ
Ἀπολλωνίαν μέχρι Βυζαντίου ἐπτακισχίλιοι τριακόσιοι
εἴκοσι· προστίθησι δ' ὁ Πολύβιος καὶ ἄλλους ἐκατὸν
ὅγδοήκοντα, τὸ τρίτον τοῦ σταδίου προσλαμβάνων
ἐπὶ τοῖς ὄκτω τοῦ μιλίου σταδίοις. Δημήτριος δ' ὁ
25 Σκήψιος ἐν τοῖς περὶ τοῦ Τρωικοῦ διακόσμου τὸ μὲν
ἐκ Περίνθου μέχρι Βυζαντίου φησὶν ἔξακοσίους σταδί-
ους, τὸ δ' ἵσον μέχρι Παρίου. τὴν δὲ Προποντίδα μήκει
μὲν χιλίων καὶ τετρακοσίων ἀποφαίνει σταδίων, εἰς
εὗρος δὲ Ἐλλησπόντου τὸ στενά-
30 τατον ἐπταστάδιόν φησι, μῆκος δὲ τετρακοσίων. E.

"Οτι Ἐλλήσποντος οὐχ ὁμολογεῖται παρὰ πᾶσιν ὁ 58
αὐτός, ἀλλὰ δόξαι περὶ αὐτοῦ λέγονται πλείους. οἱ

μὲν γὰρ ὅλην τὴν Προποντίδα καλοῦσιν Ἑλλήσποντον,
οἱ δὲ μέρος τῆς Προποντίδος τὸ ἐντὸς Περίνθου· οἱ δὲ
προσλαμβάνουσι καὶ τῆς ἔξω θαλάσσης τῆς πρὸς τὸ Αἰ-
γαῖον πέλαγος καὶ τὸν Μέλανα κόλπον ἀνεῳγμένης, καὶ
οὗτοι ἄλλοι ἄλλα ἀποτεμνόμενοι· οἱ μὲν τὸ ἀπὸ Σιγετ- 5
ον ἐπὶ Λάμψακον καὶ Κύζικον ἡ Πάριον ἡ Πρίαπον, ὁ δὲ
προσλαμβάνων καὶ τὸ ἀπὸ Σιγφίου τῆς Λεσβίας. οὐκ
δύνοῦσι δέ τινες καὶ τὸ μέχρι τοῦ Μυρτώου πελάγους
ἄπαν καλεῖν Ἑλλήσποντον, εἴπερ, ὡς φησιν ἐν τοῖς
ὕμνοις Πίνδαρος, οἱ μεθ' Ἡρακλέους ἐκ Τροίας πλέον- 10
τες διὰ παρθένου Ἑλλας πορθμόν, ἐπεὶ τῷ Μυρτώῳ
συνῆψαν, εἰς Κῶν ἐπαλινδρόμησαν ζεφύρου ἀντιπνεύ-
σαντος. οὗτοι δὲ καὶ τὸ Αἰγαῖον πέλαγος μέχρι τοῦ Θερ-
μαίου κόλπου καὶ τῆς κατὰ Θετταλίαν καὶ Μακεδονίαν
θαλάσσης ἄπαν ἀξιοῦσιν Ἑλλήσποντον προσαγορεύειν 15
δεῖν, μάρτυρα καὶ Ὀμηρον καλοῦντες. φησὶ γάρ „ὅψεαι,
„ἢν ἐθέλῃσθα καὶ αἱ καὶ τοι τὰ μεμήλη, ἢρι μάλιστα
„σποντον ἐπ’ ἰχθυοέντα πλεούσας νῆας ἐμάς.“ ἐλέγχε-
ται δὲ τὸ τοιοῦτον ἐκ τῶν ἐπῶν ἔκείνων „ἥρως Ἰμβρα-
„σίδης, ὃς ἦρ Αἰνόθεν εἰληλούθει·“ οὗτος δὲ τῶν Θρα- 20
κῶν ἡγεῖτο „ὅσσους Ἑλλήσποντος ἀγάρροος ἐντὸς ἐέρ-
„γει·“ τοὺς γὰρ ἐφεξῆς τούτων ἐκτὸς ἄν καὶ τοῦ Ἑλλη-
σπόντου καθιδρυμένους ἀποφαίνοι. ή μὲν γὰρ Αἴνος
κεῖται κατὰ τὴν πρότερον Ἀψυνθίδα νῦν δὲ Κορπιλικὴν
λεγομένην, ή δὲ τῶν Κικόνων ἐφεξῆς πρὸς δύσιν. E. 25

58^a Τετραχωρῖται, οἱ Βεσσοί, ὡς Στράβων ἐβδόμη.
οὗτοι λέγονται καὶ Τετράκωμοι. Stephanus v. Τετρα-
χωρῖται.

58^b Λέγει γὰρ (Στράβων) αὐτὸν ἐν τῇ ἐβδόμῃ (τῶν
γεωγραφουμένων) ἐγνωκέναι Ποσειδώνιον τὸν ἀπὸ τῆς 30
στοᾶς φιλόσοφον . . . συγγενομένου Σκιτίωνι τῇ τὴν
Καρχηδόνα ἐλόντι. Athenaeus 14 p. 657 f.

— H —

Επεὶ δ' ἐπιόντες ἀπὸ τῶν ἑσπερίων τῆς Εὐρώπης^{C.332} **1**
μερῶν, ὅσα τῇ θαλάττῃ περιέχεται τῇ ἐντὸς καὶ τῇ ἔκτος,
5 τὰ τε βάρβαρα ἔθνη περιωδεύσαμεν πάντα ἐν αὐτῇ μέ-
χρι τοῦ Τανάϊδος καὶ τῆς Ἑλλάδος οὐ πολὺ μέρος, ἀπο-
δώσομεν νῦν τὰ λοιπὰ τῆς Ἑλλαδικῆς γεωγραφίας,
ἄπειρον μὲν πρῶτος, ἐπειτα καὶ ἄλλοι πλείους
ἐπραγματεύσαντο, οἱ μὲν ἴδια λιμένας ἢ περιπλους ἢ
10 περιόδους γῆς ἢ τι τοιοῦτον ἄλλο ἐπιγράψαντες, ἐν οἷς
καὶ τὰ Ἑλλαδικὰ περιέχεται, οἱ δὲ ἐν τῇ κοινῇ τῆς ἴστο-
ρίας γραφῇ χωρὶς ἀποδεῖξαντες τὴν τῶν ἡπείρων το-
πογραφίαν, καθάπερ Ἐφορός τε ἐποίησε καὶ Πολύβιος.
ἄλλοι δὲ εἰς τὸν φυσικὸν τόπον καὶ τὸν μαθηματικὸν
15 προσέλαβόν τινα καὶ τῶν τοιούτων, καθάπερ Ποσει-
δώνιός τε καὶ Ἰππαρχος. τὰ μὲν οὖν τῶν ἄλλων εὐδι-
αίτητά ἔστι, τὰ δὲ Ὁμήρου σκέψεως δεῖται κριτικῆς,
ποιητικῶς τε λέγοντος καὶ οὐ τὰ νῦν ἄλλὰ τὰ ἀρχαῖα,
ῶν δὲ χρόνος ἡμαύρων τὰ πολλά. ὡς δὲ οὖν δυνατὸν
20 ἐγχειρητέον ἀρξαμένοις ἀφ' ἀντεροῦ περιπλουμεν· ἐτε-
λεύτα δὲ ἡμῖν δὲ λόγος ἀπὸ μὲν τῆς ἑσπέρας καὶ τῶν
ἄρκτων εἰς τὰ Ἡπειρωτικὰ ἔθνη καὶ τὰ τῶν Ἰλλυριῶν,
ἀπὸ δὲ τῆς ἔω εἰς τὰ τῶν Μακεδόνων μέχρι Βυζαντίου.
μετὰ μὲν οὖν τοὺς Ἡπειρώτας καὶ τοὺς Ἰλλυριοὺς τῶν
25 Ἑλλήνων Ἀκαρνάνες εἰσὶ καὶ Αἰτωλοὶ καὶ Λοκροὶ οἱ
Ὀξόλαι· πρὸς δὲ τούτους Φωκεῖς τε καὶ Βοιωτοί· τού-
τοις δὲ ἀντίποροθμός ἔστιν ἡ Πελοπόννησος, ἀπολαμ-
βάνουσα μεταξὺ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον καὶ σχημα-
τίζουσά τε τοῦτον καὶ σχηματίζομένη ὑπὲρ αὐτοῦ· μετὰ^{C.333}

6. post μέρος: τῆς Μακεδονίας

δὲ Μακεδονίαν Θετταλοὶ μέχρι Μαλιέων καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐκτὸς Ἰσθμοῦ καὶ αὐτῶν τῶν ἐντός.

2 * ἐπιδουο μὲν οὖν πολλὰ ἔθνη γεγένηται, τὰ δὲ ἀνωτάτω τοσαῦτα ὅσας καὶ διαλέκτους παρειλήφαμεν τὰς Ἑλληνίδας· τούτων δὲ αὐτῶν τεττάρων οὐσῶν τὴν 5 μὲν Ἰάδα τῇ παλαιᾷ Ἀτθίδι τὴν αὐτὴν φαμέν (καὶ γὰρ Ιωνες ἐκαλοῦντο οἱ τότε Ἀττικοί, καὶ ἐκεῖθέν εἰσιν οἱ τὴν Ἀσίαν ἐποικήσαντες Ἰωνες καὶ χρησάμενοι τῇ νῦν λεγομένῃ γλώττῃ Ἰάδι), τὴν δὲ Δωρίδα τῇ Αἰολίδι· πάντες γὰρ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ πλὴν Ἀθηναίων καὶ Με- 10 γαρέων καὶ τῶν περὶ τὸν Παρνασσὸν Δωριέων καὶ νῦν ἔτι Αἰολεῖς καλοῦνται· καὶ τοὺς Δωριέας δὲ ὀλίγους ὄντας καὶ τραχυτάτην οἰκοῦντας χώραν εἰκός ἔστι τῷ ἀνεπιμίκτῳ παρατρέψαι τὴν γλῶτταν καὶ τὰ ἄλλα ἔθη πρὸς τὸ μὴ ὁμογενές, ὁμογενεῖς πρότερον ὄντας. τοῦτο 15 δὲ αὐτὸν καὶ τοῖς Ἀθηναίοις συνέβη, λεπτόγενον τε καὶ τραχεῖαν οἰκοῦντας χώραν ἀπορθήτους * μὲν εἰναι διὰ τοῦτο καὶ αὐτόχθονας νομισθῆναι φησὶν ὁ Θουκυδίδης, κατέχοντας τὴν αὐτὴν ἀεί, μηδενὸς ἔξελαύνοντος αὐτοὺς μηδὲ ἐπιθυμοῦντος ἔχειν τὴν ἐκείνων· τοῦτο 20 τοῖνυν αὐτὸν καὶ τοῦ ἐτερογλώττου καὶ τοῦ ἐτεροεθνοῦς αἴτιον, ὡς εἰκός, ὑπῆρξε καίπερ ὀλίγοις οὖσιν. οὗτοι δὲ τοῦ Αἰολικοῦ πλήθους ἐπικρατοῦντος ἐν τοῖς ἐκτὸς Ἰσθμοῦ, καὶ οἱ ἐντὸς Αἰολεῖς πρότερον ἥσαν, εἰτ' ἐμβρυθῆσαν, Ἰώνων μὲν ἐκ τῆς Ἀττικῆς τὸν Αἰγαίαλὸν κα- 25 τασχόντων, τῶν δὲ Ἡρακλειδῶν τοὺς Δωριέας καταγαγόντων, ὑφ' ᾧ τὰ τε Μέργαρα φύκισθη καὶ πολλαὶ τῶν ἐν τῇ Πελοποννήσῳ πόλεων. οἱ μὲν οὖν Ἰωνες ἔξεπεσον πάλιν ταχέως ὑπὸ Ἀχαιῶν, Αἰολικοῦ ἔθνους· ἐλείφθη δὲ ἐν τῇ Πελοποννήσῳ τὰ δύο ἔθνη, τό τε Αἰ- 30 οικὸν καὶ τὸ Δωρικόν. ὅσοι μὲν οὖν ἦττον τοῖς Δωριεῦσιν ἐπεκλέκοντο (καθάπερ συνέβη τοῖς τε Ἀρκάσι

καὶ τοῖς Ἡλείοις, τοῖς μὲν ὁρεινοῖς τελέως οὖσι καὶ οὐκ ἐμπεπτωκόσιν εἰς τὸν κλῆρον, τοῖς δὲ λεόντεσιν οὐμισθεῖσι τοῦ Ὀλυμπίου Αἰόλῳ καὶ καθ' αὐτοὺς εἰρήνην ἄγοντι πολὺν χρόνον, ἄλλως τε καὶ τοῦ Αἰολικοῦ γένους οὖσι 5 καὶ δεδεγμένοις τὴν Ὁξύλῳ συγκατελθοῦσαν στρατιὰν περὶ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον), οὗτοι αἰολιστὲς διελέχθησαν, οἱ δὲ ἄλλοι μικτῇ τινι ἔχοντες αἴτην ἀμφοῖν, οἱ μὲν μᾶλλον οἱ δὲ ἦτον αἰολίζοντες. σχεδὸν δέ τι καὶ νῦν κατὰ πόλεις ἄλλοι ἄλλως διαλέγονται, δο-
10 κοῦσι δὲ δωρίζειν ἅπαντες διὰ τὴν συμβᾶσαν ἐπικράτειαν. τοσαῦτα μὲν οὖν τὰ τῶν Ἑλλήνων ἔθνη καὶ οὐ—C.334 τως, ως τύπῳ εἰπεῖν, ἀφωρισμένα. λέγωμεν δὴ διαλαβόντες ὃν χρὴ τρόπον τῇ τάξει περὶ αὐτῶν.

“Ἐφορος μὲν οὖν ἀρχὴν εἶναι τῆς Ἑλλάδος τὴν 3
15 Ἀναρχανίαν φησὶν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων μερῶν· ταύτην γὰρ συνάπτειν πρώτην τοῖς Ἡπειρωτικοῖς ἔθνεσιν. ἀλλ’ ὡς περ οὗτος τῇ παραλίᾳ μέτρῳ χρώμενος ἐντεῦθεν ποιεῖται τὴν ἀρχὴν, ἥγεμονικόν τι τὴν θάλατταν ιοίνων πρὸς τὰς τοπογραφίας, ἐπεὶ ἄλλως γ’ ἐνεχώρει 20 κατὰ τὴν Μακεδόνων καὶ Θετταλῶν τὴν ἀρχὴν ἀποφαίνεσθαι τῆς Ἑλλάδος· οὕτω καὶ ἡμῖν προσήκει ἀκολουθοῦσι τῇ φύσει τῶν τόπων σύμβουλον ποιεῖσθαι τὴν θάλατταν. αὕτη δὲ ἐκ τοῦ Σικελικοῦ πελάγους προσπεσοῦσα τῇ μὲν ἀναχεῖται πρὸς τὸν Κορινθιακὸν 25 κόλπον, τῇ δὲ ἀποτελεῖ χερρόνησον μεγάλην τὴν Πελοπόννυνησον, ισθμῷ στενῷ κλειομένην. ἔστι δὲ τὰ δύο μέγιστα συστήματα τῆς Ἑλλάδος τό τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ καὶ τὸ ἐκτὸς μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ· ἔστι δὲ καὶ μεῖζον καὶ ἐπιφανέστερον τὸ ἐντὸς Ἰσθμοῦ· σχε-

28. post ἐκτὸς: πνλῶν post Πηνειοῦ: καὶ τοῦτο δὲ λεόντες θετταλικόν.

δὸν δέ τι καὶ ἀκρόπολίς ἔστιν ἡ Πελοπόννησος τῆς συμπάσης Ἑλλάδος χωρὶς γὰρ τῆς λαμπρότητος καὶ δυνάμεως τῶν ἐνοικησάντων ἐθνῶν αὐτὴ ἡ τῶν τόπων θέσις ὑπογράφει τὴν ἡγεμονίαν ταύτην, κόλποις τε καὶ ἄκραις πολλαῖς καὶ τοῖς σημειωδεστάτοις, χερούνήσοις μεγάλαις, διαπεποικιλμένη, ὡν ἐκ διαδοχῆς ἐτέρα τὴν ἐτέραν ἔχει. ἔστι δὲ πρώτη μὲν τῶν χερούνήσων ἡ Πελοπόννησος, ἵσθμῳ κλειομένῃ τετταράκοντα σταδίων. δευτέρα δὲ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα, ἡς ἵσθμός ἔστιν ὁ ἐκ Παγῶν τῶν Μεγαρικῶν εἰς Νίσαιαν, τὸ Μεγαρέων ἐπίνειον, ὑπερβολῇ σταδίων ἑκατὸν εἰκοσιν ἀπὸ Θαλάττης ἐπὶ Θάλατταν. τρίτη δ' ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα, ἡς ἵσθμὸς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Κρισαίου κόλπου μέχρι Θερμοπυλῶν· ἡ δ' ἐπινοούμενη εὐθεῖα γραμμὴ ὅσον πεντακοσίων ὅκτω σταδίων τὴν μὲν Βοιωτίαν ἀπασαν ἐντὸς ἀπολαμβάνουσα, τὴν δὲ Φωκίδα τέμνουσα λοξὴν καὶ τοὺς Ἐπικυνημιδίους. τετάρτη δὲ ἡ ἀπὸ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου διὰ τῆς Ολτῆς καὶ τῆς Τραχινίας εἰς τὸν Μαλιακὸν κόλπον καθήκοντα ἔχουσα τὸν ἵσθμὸν καὶ τὰς Θερμοπύλας, ὅσον ὅκτακοσίων ὅντα σταδίων· πλειόνων δ' ἡ χιλιών ἄλλος ἔστιν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ κόλπου τοῦ Ἀμβρακικοῦ διὰ Θετταλῶν καὶ Μακεδόνων εἰς τὸν Θερμαϊκὸν διήκον μυχόν. ὑπαγορεύει δή τινα τάξιν οὐ φαύλην ἡ τῶν χερούνήσων διαδοχή· δεῖ δ' ἀπὸ τῆς ἐλαχίστης ἄρξασθαι, 25 ἐπιφανεστάτης δέ.

C.335

2 "Ἔστι τοίνυν ἡ Πελοπόννησος ἐοικυῖα φύλλῳ πλατάνου τὸ σχῆμα, ἵση σχεδόν τι κατὰ μῆκος καὶ κατὰ πλάτος ὅσον χιλιών καὶ τετρακοσίων σταδίων, τὸ μὲν ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἔω, τοῦτο δ' ἔστι τὸ ἀπὸ τοῦ 30 Χελωνάτα δι' Ὁλυμπίας καὶ τῆς Μεγαλοπολίτιδος ἐπὶ Ισθμόν· τὸ δ' ἀπὸ τοῦ νότου πρὸς τὴν ἄφοτον, ὃ ἔστι

τὸ απὸ Μαλεῶν δι' Ἀρηαδίας εἰς Αἴγιον· ἡ δὲ περίμετρος μὴ κατακολπίζοντι τετρακισχιλίων σταδίων, ὡς Πολύβιος· Ἀρτεμίδωρος δὲ καὶ τετρακοσίους προστίθησι· κατακολπίζοντι δὲ πλείους τῶν ἔξακοσίων ἐπὶ 5 τοῖς πεντακισχιλίοις. ὁ δὲ Ἰσθμὸς κατὰ τὸν διολκόν,
δι' οὐ τὰ πορθμεῖα ὑπερνεωλκοῦσιν ἀπὸ τῆς ἑτέρας
εἰς τὴν ἑτέραν θάλατταν, εἰρηται ὅτι τετταράκοντα
σταδίων ἐστίν.

"Ἐχουσι δὲ τῆς χεορονήσου ταύτης τὸ μὲν ἐσπέριον 2
10 μέρος Ἡλεῖον καὶ Μεσσηνίοι, κλυζόμενοι τῷ Σικελικῷ
πελάγει· προσλαμβάνουσι δὲ καὶ τῆς ἑκατέρῳθεν πα-
ραλίας, ἡ μὲν Ἡλεία πρὸς ἄρκτον ἐπιστρέφουσα καὶ
τὴν ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου μέχρι ἄκρας Ἀρά-
ξου, καθ' ἥν ἀντίπορθμός ἐστιν ἡ τε Ἀκαρνανία καὶ
15 αἱ προκείμεναι νῆσοι, Ζάκυνθος καὶ Κεφαλληνία καὶ
Ἰθάκη καὶ [αἱ] Ἐχινάδες, ᾧν ἐστι καὶ τὸ Δουλίχιον· τῆς
δὲ Μεσσηνίας τὸ πλέον ἀνεῳγμένου πρὸς υότον καὶ τὸ
Λιβυκὸν πέλαγος μέχρι τῶν καλούμενων Θυρίδων
πλησίου Ταινάρου. ἐξῆς δὲ μετὰ μὲν τὴν Ἡλείαν ἐστὶν
20 τὸ τῶν Ἀχαιῶν ἔθνος πρὸς ἄρκτους βλέπον καὶ τῷ Κο-
ρινθιακῷ κόλπῳ παρατείνουν, τελευτὴ δὲ εἰς τὴν Σι-
κηνωνίαν· ἐντεῦθεν δὲ Σικυών καὶ Κόρινθος ἐνδέχε-
ται μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ· μετὰ δὲ τὴν Μεσσηνίαν ἡ Λα-
κωνικὴ καὶ ἡ Ἀργεία, μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ καὶ αὖτη. κόλ-
25 ποι δὲ εἰσὶν ἐνταῦθα ὅ τε Μεσσηνιακὸς καὶ ὁ Λακωνι-
κὸς καὶ τρίτος ὁ Ἀργολικός, τέταρτος δὲ ὁ Ἐρμιονικὸς
καὶ Σαρωνικός (οἱ δὲ Σαλαμινιακὸν καλοῦσιν), ᾧν τοὺς
μὲν ἡ Λιβυκὴ τοὺς δὲ ἡ Κορητικὴ θάλαττα πληροῖ καὶ
τὸ Μυρτώον πέλαγος· τινὲς δὲ καὶ τὸν Σαρωνικὸν πό-
30 ρον [ἥ] πέλαγος ὀνομάζουσι. μέση δὲ ἐστὶν ἡ Ἀρηαδία
πᾶσιν ἐπικειμένη καὶ γειτνιῶσα τοῖς ἄλλοις ἔθνεσιν..

'Ο δὲ Κορινθιακὸς κόλπος ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῶν 3
STRABO II.

ἐκβολῶν τοῦ Εὐήνου (τινὲς δέ φασιν τοῦ Ἀχελώου τοῦ δοξίου τος Ἀκαρνᾶνας καὶ τοὺς Αἰτωλοὺς) καὶ τοῦ Ἀράξου. ἐνταῦθα γὰρ πρῶτον ἀξιόλογον συναγωγὴν λαμβάνουσι πρὸς ἄλλήλας αἱ ἐκατέρωθεν ἀκταί· προῖονται δὲ πλέον τελέως συμπίπτουσι κατὰ τὸ Πίον καὶ τὸ Ἀντίρριον, ὅσου δὴ πέντε σταδίων ἀπολείπονται πορθμόν. ἔστι δὲ τὸ μὲν Πίον τῶν Ἀχαιῶν ἀλιτευῆς ἄκρα, δρεπανοειδῆ τινα ἐπιστροφὴν εἰς τὸ ἐντὸς ἔχον-

C.336σα· καὶ δὴ καὶ καλεῖται Δρέπανον· κεῖται δὲ μεταξὺ Πατρῶν καὶ Αλγίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχοντα· τὸ δὲ¹⁰ Ἀντίρριον ἐν μεθορίοις τῆς Αἰτωλίας καὶ τῆς Λοκρίδος ἐδρυταὶ, καλοῦσι δὲ [καὶ] Μολύκριον Πίον. εἰτὲ¹⁵ ἐντεῦθεν διέσταται πάλιν ἡ παραλία μετρίως ἐκατέρωθεν, προελθοῦσα δὲ εἰς τὸν Κρισαίον κόλπον ἐνταῦθα τελευτῇ, κλεισμένη τοῖς προσεσπερίοις τῆς Βοιωτίας καὶ τῆς Μεγαρικῆς τερμόσιν. ἔχει δὲ τὴν περίμετρον δὲ Κορινθιακὸς κόλπος ἀπὸ μὲν τοῦ Εὐήνου μέχρι Ἀράξου σταδίων δισχιλίων διακοσίων τριάκοντα· εἰ δὲ ἀπὸ τοῦ Ἀχελώου, πλεονάξοι ἄν ἐκατόν πον σταδίοις. ἀπὸ μέντοι Ἀχελώου ἐπὶ τὸν Εὔηνον Ἀκαρνᾶνές εἰσιν, εἰδὲ²⁰ ἔξῆς ἐπὶ τὸ Ἀντίρριον Αἴτωλοί, τὸ δὲ λοιπὸν μέχρι Ἰσθμοῦ Φωκέων ἐστὶ καὶ Βοιωτῶν καὶ τῆς Μεγαρίδος, στάδιοι χίλιοι ἐκατὸν εἴκοσι δυεῖν δέοντες· ἡ δὲ ἀπὸ τοῦ Ἀντίρριον μέχρι Ἰσθμοῦ θάλαττα . . . Ἀλκυονίς καλεῖται, μέρος οὖσα τοῦ Κρισαίου κόλπου· ἀյτὸ δὲ²⁵ τοῦ] Ἰσθμοῦ ἐπὶ τὸν Ἀραξὸν τριάκοντα ἐπὶ τοῖς [χιλίοις]. ὡς μὲν δὴ τύπῳ εἰπεῖν τοιαύτη τις καὶ τοσαύτη ἡ τῆς Πελοποννήσου θέσις καὶ τῆς ἀντιπόρθμου γῆς μέχρι τοῦ μυχοῦ, τοιοῦτος δὲ καὶ δὲ μεταξὺ ἀμφοῖν κόλπος. εἶτα καθ' ἐκαστα ἐροῦμεν, τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς³⁰ Ἡλείας ποιησάμενοι.

3 Νῦν μὲν δὴ πᾶσαν Ἡλείαν ὀνομάζουσι την μεταξὺ

Αχαιῶν τε καὶ Μεσσηνίων παραλίαν, ἀνέχουσαν εἰς τὴν μεσόγαιαν τὴν πρὸς Ἀρκαδίᾳ τῇ κατὰ Φολόην καὶ Ἀξάνας καὶ Παρρασίους. τοῦτο δὲ τὸ παλαιὸν εἰς πλείους δυνατεῖαις διήρητο, εἰτ' εἰς δύο, τὴν τε τῶν 5 Ἐπειῶν καὶ τὴν ὑπὸ Νέστορι τῷ Νηλέως· καθάπερ καὶ Ὁμηρος εἰρηκε, τὴν μὲν τῶν Ἐπειῶν ὄνομάξων Ἡλιν „ἡδὲ παρ' Ἡλίδα δῖαν, ὅθι κρατέουσιν Ἐπειοί,“ τὴν δ' ὑπὸ τῷ Νέστορι Πύλον, δι' ἃς τὸν Ἀλφειὸν φείν φησιν, „Ἀλφειοῦ, ὃς τ' εὐρὺν δέει Πυλίων διὰ γαλῆς.“ 10 Πύλον μὲν οὖν καὶ πόλιν οἰδεν δ ποιητής „οἱ δὲ Πύλον, Νηλῆος ἐνκτίμενον πτολεεθρον, ἔξον.“ οὐ διὰ τῆς πόλεως δὲ οὐδὲ παρ' αὐτὴν φεῖ δ Ἀλφειός, ἀλλὰ παρ' αὐτὴν μὲν ἐτερος, δὸν οἱ μὲν Παμισὸν οἱ δὲ Ἀμαθον καλοῦσιν, ἀφ' οὗ καὶ δ Πύλος Ἡμαθόεις εἰρῆσθαι 15 οὗτος δοκεῖ, διὰ δὲ τῆς χώρας τῆς Πυλίας δ Ἀλφειός.

Ἡλις δὲ ἡ νῦν πόλις οὕπω ἔκτιστο καθ' Ὁμηρον, 2
ἀλλ' ἡ χώρα πωμηδὸν φκεῖτο· ἐκαλεῖτο δὲ κοίλη Ἡλις
ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος· τοιαύτη γὰρ ἦν ἡ πλείστη καὶ
ἀριστη· ὀψὲ δέ ποτε συνῆλθον εἰς τὴν νῦν πόλιν Ἡλιν,
20 μετὰ τὰ Περσικά, ἐν πολλῶν δήμων. σχεδὸν δὲ καὶ
τοὺς ἄλλους τόπους τοὺς κατὰ Πελοπόννησον πλὴν
δλύγων, οὓς κατέλεξεν δ ποιητής, οὐ πόλεις ἀλλὰ χωρίς-
ρρας νομίζειν [δεῖ], συστήματα δήμων ἔχουσαν ἐκάστην
πλειω, ἐξ ᾧ ὑστερον αἱ γυναικιόμεναι πόλεις συνῳ-
25 σθησαν, οἷον τῆς Ἀρκαδίας Μαντίνεια μὲν ἐν πέντε
δήμων ὑπ' Ἀργείων συνῳσθη, Τεγέα δ' ἐξ ἐννέα, ἐκ
τοσούτων δὲ καὶ Ἡραία ὑπὸ Κλεομβρότου ἡ ὑπὸ
Κλεωνύμου· ὡς δ' αὗτως Αἴγιον ἐξ ἐπτὰ ἡ ὀκτὼ δή-
μων συνεπολίσθη, Πάτραι δὲ ἐξ ἐπτά, Λύμη δὲ ἐξ
30 ὀκτώ· οὕτω δὲ καὶ ἡ Ἡλις ἐκ τῶν περιοικίδων συνε-
πολίσθη· μία τούτων προσκειτις Ἀγριάδες. δεῖ
δὲ διὰ τῆς πόλεως δ Πηγειός ποταμὸς παρὰ τὸ γυμνά-

σιον αὐτῆς· ἐπραξάν τε τοῦτο Ἡλεῖοι χρόνοις ὕστερον πολλοῖς τῆς εἰς αὐτοὺς μεταστάσεως τῶν χωρίων τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι.

3 Ἡν δὲ ταῦτα ἡ τε Πισᾶτις, ἡς ἡ Ὄλυμπία μέρος, καὶ ἡ Τριφυλία καὶ ἡ τῶν Καυκάσουν. Τριφύλιοι δ' 5 ἐκλήθησαν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ἀπὸ τοῦ τρία φῦλα συνεληλυθέναι, τό τε τῶν ἀπ' ἄρχης Ἐπειῶν καὶ τὸ τῶν ἐποιησάντων ὕστερον Μινυῶν καὶ τὸ τῶν ὕστατα ἐπικρατησάντων Ἡλείων· οἱ δ' ἀντὶ τῶν Μινυῶν Ἀρ-
κάδας φασίν, ἀμφισβητήσαντας τῆς χώρας πολλάκις, 10 ἀφ' οὗ καὶ Ἀρκαδικὸς Πύλος ἐκλήθη ὁ αὐτὸς καὶ Τρι-
φυλιακός. Ὄμηρος δὲ ταύτην ἀπασαν τὴν χώραν μέ-
χρι Μεσσήνης καλεῖ Πύλον ὁμωνύμως τῇ πόλει. ὅτι
δὲ διώριστο ἡ κοιλη Ἡλις ἀπὸ τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι
τόπων, δ τῶν νεῶν κατάλογος δηλοῖ τοῖς τῶν ἥγεμο- 15
νων καὶ τῶν κατοικῶν ὀνόμασι. λέγω δὲ ταῦτα συμ-
βάλλων τά τε νῦν καὶ τὰ ὑφ' Ὄμηρον λεγόμενα·
ἀνάγκη γὰρ ἀντεξετάξεσθαι ταῦτα ἐκείνοις διὰ τὴν τοῦ
ποιητοῦ δόξαν καὶ συντροφίαν πρὸς ἡμᾶς, τότε νομί-
ζοντος ἐκάστου κατορθοῦσθαι τὴν παροῦσαν πρόθε- 20
σιν, ὅταν ἢ μηδὲν ἀντιπέπτουν τοῖς οὕτω σφόδρᾳ πι-
στευθεῖσι περὶ τῶν αὐτῶν λόγοις· δεῖ δὴ τά τε ὅντα
λέγειν καὶ τὰ τοῦ ποιητοῦ παρατιθέντας ἐφ' ὅσου προσ-
ήκει προσβοκοπεῖν.

4 Ἐστι δέ τις ἄκρα τῆς Ἡλείας πρόσβιορρος ἀπὸ ἔξη- 25
κοντα Δύμης Ἀχαλίης πόλεως Ἀραξος. ταύτην μὲν
οὖν ἀρχὴν τίθεμεν τῆς τῶν Ἡλείων παραλίας· μετὰ
δὲ ταύτην ἐστὶν ἐπὶ τὴν ἐσπέραν προίοντι τὸ τῶν Ἡλε-
ίων ἐπίνειον ἡ Κυλλήνη, ἀνάβασιν ἔχοντα ἐπὶ τὴν νῦν
πόλιν ἐκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων. μέμινται δὲ τῆς Κυλ- 30
λήνης ταύτης καὶ Ὄμηρος λέγων Ὅτου Κυλλήνιον ἀρ-
χὸν Ἐπειῶν. οὐ γὰρ ἀπὸ τοῦ Ἀρκαδικοῦ ὅρους ὅντα

έμελλεν ἡγεμόνα τῶν Ἐπειῶν ἀποφῆναι· ἔστι δὲ κώμη
μετρία, τὸν Ἀσκληπιὸν ἔχουσα τὸν Κολάτον, θαυμα-
στὸν ἴδειν ξόανον ἐλεφάντινον. μετὰ δὲ Κυλλήνην
ἀκρωτήριόν ἔστιν ὁ Χελωνάτας, δυσμικώτατον τῆς Πε-
5 λοπονυήσου σημεῖον. πρόκειται δ' αὐτοῦ νησίον καὶ 0.338
βραχέα ἐν μεθορίοις τῆς τε ιοίλης Ἡλιδος [καὶ τῆς]
Πισατῶν, ὅπερ εἰς Κεφαλληνίαν πλέοντι εἰσὶν οὐ
πλεῖοντος στάδιοι ὄγδοην κοντά. αὐτοῦ δέ που καὶ ὁ Ἐλ-
σων ἡ "Ἐλισα φελ ποταμὸς ἐν τῇ λεχθείσῃ μεθορίᾳ.
10 Μεταξὺ δὲ τοῦ Χελωνάτα καὶ τῆς Κυλλήνης ὁ τε 5
Πηνειὸς ἐκδίδωσι ποταμὸς καὶ ὁ Σελλήιεις ὑπὲ τοῦ ποιη-
τοῦ λεγόμενος, φέων ἐκ Φολόης· ἐφ' ὃ Ἐφύρα πόλις,
ἔτέρα τῆς Θεσπρωτικῆς καὶ Θετταλικῆς καὶ τῆς Κορίν-
θου, τετάρτη τις ἐπὶ τῇ ὁδῷ κειμένη τῇ ἐπὶ λασίωνα,
15 ἥτοι ἡ αὐτὴ οὖσα τῇ Βοιωτᾷ (τὴν γὰρ Οἰνόην οὕτω
καλεῖν εἰώθασιν) ἡ πλησίον ἐκείνης, διέχουσα τῆς
Ἡλείων πόλεως σταδίους ἑκατὸν εἴκοσιν· ἐξ ἣς ἡ τε
Τληπολέμου τοῦ Ἡρακλέους δοκεῖ λέγεσθαι μήτηρ
,,τὴν ἄγετ' ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἀπὸ Σελλήνετος“ (ἐκεῖ
20 γὰρ μᾶλλον αἱ τοῦ Ἡρακλέους στρατεῖαι, πρὸς ἐκεί-
ναις τε οὐδεὶς ποταμὸς Σελλήιεις), καὶ ὁ τοῦ Μέγητος
[θώραξ] „τόν ποτε Φυλεὺς ἡγαγεν ἐξ Ἐφύρης ποτα-
,,μοῦ ἀπὸ Σελλήνετος.“ ἐξ ἣς καὶ τὰ φάρμακα τὰ ἀν-
δροφόνα. εἰς Ἐφύραν γὰρ ἀφίχθαι [ἢ Ἀθηνᾶ] φησὶ τὸν
25 Όδυσσέα „φάρμακον ἀνδροφόνον διξήμενον, ὅφρα οἱ
,,εἴη ίοὺς χρίεσθαι“ καὶ τὸν Τηλέμαχον οἱ μητρῆρες
,,ἥδε καὶ εἰς Ἐφύρην ἐθέλει πιειραν ἄρουραν ἐλθεῖν,
,,ὅφρ ἐνθειν θυμοφθόρα φάρμακ’ ἐνείκη.“ καὶ γὰρ τὴν
Αὔγεον θυγατέρα τοῦ τῶν Ἐπειῶν βασιλέως ὁ Νέστωρ
30 ἐν τῇ διηγήσει τοῦ πρὸς αὐτοὺς πολέμου φαρμακίδα
εἰσάγει „πρῶτος ἐγὼν ἔλον ἄνδρα“ φήσας „Μούλιον
,,αἰχμητὴν, γαμβρὸς δ’ ἦν Λύγειαο, πρεσβυτάτην δὲ

,,θύγατρον είλκεν, ή τόσα φάρμακα ἥδη, ὅσα τρέφει ενδεῖα χθών.“ ἔστι δὲ καὶ περὶ Σικυῶνα Σελλήγεις ποταμὸς καὶ Ἐφύρα πλησίου κάστης, καὶ ἐν τῇ Ἀγραιᾷ τῆς Αἰτωλίας Ἐφύρα κάστης, οἱ δὲ ἀπ' αὐτῆς Ἐφύροι· καὶ ἄλλοι οἱ Περραιβῶν πρὸς Μακεδονίᾳ, οἱ Κραννώ-⁵ νιοι, καὶ οἱ Θεσπρωτικοὶ οἱ ἐκ Κιχύρου τῆς πρότερον Ἐφύρας.

- 6 Ἀπολλόδωρος δὲ διδάσκων ὃν τρόπον ὁ ποιητὴς εἰωθεὶς διαστέλλεσθαι τὰς δύμανυμιας, οἶνον ἐπὶ τοῦ Ὁρχομενοῦ τὸν μὲν Ἀρκαδικὸν πολύμηλον καλῶν τὸν δὲ 10 Βοιωτιακὸν Μινύειον, καὶ Σάμον Θρηικίην συντιθείεις C.389,, μεσσηγγύς τε Σάμοιο καὶ Ἰμβρου, “ ἵνα χωρίσῃ ἀπὸ τῆς Ἰωνικῆς, οὕτω φησὶ καὶ τὴν Θεσπρωτικὴν Ἐφύραν διαστέλλεσθαι τῷ τε „τηλόθεν“ καὶ τῷ „ποταμοῦ „ἄπο Σελλήνετος.“ ταῦτα δ' οὐχ ὁμολογεῖ τοῖς ὑπὸ τοῦ 15 Σκηνῶν Αημητρίου λεγομένοις, παρ' οὐ μεταφέρει τὰ πλεῖστα. ἐκεῖνος γάρ οὖν φησιν εἶναι Σελλήνετα ἐν Θεσπρωτοῖς ποταμούν, ἀλλ' ἐν τῇ Ἡλείᾳ παρὰ τὴν ἐκεῖ Ἐφύραν, ὡς προείπομεν. τοῦτό τε οὖν εἰρηκε σκέψεως δεόμενον καὶ περὶ τῆς Οἰχαλίας ὅτι φησιν οὐ μιᾶς οὕ-²⁰ σης, μίᾳν εἶναι πόλιν Εύρυτου Οἰχαλιῆος· δῆλον οὖν ὅτι τὴν Θετταλικήν, ἐφ' ἣς φησιν „οἵ τ' ἔχον Οἰχαλίην, „πόλιν Εύρυτου Οἰχαλιῆος.“ τίς οὖν ἔστιν ἐξ ἣς ὁρμηθέντα αἱ Μοῦσαι κατὰ Δώριον „ἀντόμεναι Θάμνοιν τὸν Θρήικα παῦσαν ἀοιδῆς;“ εἰ μὲν γάρ ἡ Θετταλική, οὐκ εὖ πάλιν δὲ Σκηνῶν Ἀρκαδικήν τινα λέγων, ἢν τῦν Ἀινδανίαν καλοῦσιν· εἰ δὲ οὗτος εὖ, καὶ ἡ Ἀρκαδικὴ πόλις Εύρυτου εἰρηται, ὥστ' οὐ μία μόνον· ἐκεῖνος δὲ μίαν φησί.

25. post ἀοιδῆς: φησὶ γάρ „Οἰχαλίηθεν ἴόντα παρ' Εύρυτου Οἰχαλιῆος“

Μεταξὺ δὲ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Σελλήεντος ἐκ- 7
 βολῆς Πύλος φάσείτο κατὰ τὸ Σκόλλιον, οὐχ ἡ τοῦ
 Νέστορος πόλις, ἀλλ' ἐτέρα τις, ἢ πρὸς τὸν Ἀλφειὸν
 οὐδέν ἔστι κοινώνημα, οὐδὲ πρὸς τὸν Παμισόν, εἰτε
 5 Ἄμαδον χοὴ καλεῖν. βιάζονται δ' ἔνιοι μητευόμενοι
 τὴν Νέστορος δόξαν καὶ τὴν εὐγένειαν· τριῶν γὰρ Πύ-
 λων ἴστορον μένων ἐν Πελοποννήσῳ — καθότι καὶ τὸ
 ἔπος εἰρηται τουτί „ἔστι Πύλος πρὸς Πύλοιο· Πύλος γε
 μέν ἔστι καὶ ἄλλος“ — τούτου τε καὶ τοῦ Αεπρεπικοῦ
 10 τοῦ ἐν τῇ Τριφυλίᾳ καὶ τῇ Πισάτιδι, τρίτου δὲ τοῦ
 Μεσσηνιακοῦ τοῦ κατὰ Κορυφάσιον, ἕκαστοι τὸν παρά
 σφισιν ἡμαδόειντα πειρῶνται δεικνύναι, καὶ τὴν τοῦ
 Νέστορος πατρίδα τοῦτον ἀποφαίνουσιν. οἱ μὲν οὖν
 πολλοὶ τῶν νεωτέρων καὶ συγγραφέων καὶ ποιητῶν
 15 Μεσσηνιόν φασι τὸν Νέστορα, τῷ σωζομένῳ μέχρι εἰς
 αὐτοὺς προστιθέμενοι· οἱ δ' Ὁμηρικάτεροι τοῖς ἔπεσιν
 ἀκολουθοῦντες τοῦτον εἶναι φασι τὸν τοῦ Νέστορος
 Πύλον, οὐ τὴν χώραν διέξεισιν ὁ Ἀλφειός· διέξεισι δὲ
 τὴν Πισάτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. οἱ δ' οὖν ἐκ τῆς κοι-
 20 λης Ἡλιδος καὶ τοιαύτην φιλοτιμίαν προσετίθεσαν τῷ
 παρ' αὐτοῖς Πύλῳ, καὶ γυνώρισματα δεικνύντες Γέρη-
 νον τόπον καὶ Γέροντα ποταμὸν καὶ ἄλλον Γεράνιον,
 εἰτ' ἀπὸ τούτων ἐπιθέτως Γερήνιον εἰρησθαι πιστού-
 μενοι τὸν Νέστορα. τοῦτο δὲ ταῦτὸ καὶ οἱ Μεσσηνιοι
 25 πεποιήκασι, καὶ πιθανώτεροι γε φαίνονται· μᾶλλον
 γὰρ γυνώριμά φασιν εἶναι τὰ παρ' ἐκείνοις Γέρηνα,
 συνοικουμένην ποτὲ εῦ. τοιαῦτα μὲν τὰ περὶ τὴν κοι-
 λην Ἡλιν ὑπάρχοντα νννί.

‘Ο δὲ ποιητὴς εἰς τέτταρα μέρη διελὼν τήνδε τὴν 8
 30 χώραν, τέτταρας δὲ καὶ τοὺς ἡγεμόνας εἰπών, οὐ σα-
 φῶς εἰρηκεν „οὐ δ' ἄρα Βουνπράσιόν τε καὶ Ἡλιδα δῖαν
 ,ἔναιον, δῖσσον ἐφ' Τρομίνη καὶ Μύρδινος ἐσχατόωσα

,πέτρη τ' Ὁλευήν καὶ Ἀλείσιον ἐντὸς ἔέργει, τῶν αὐ^{τῶν}
,,τέσσαρες ἀρχοὶ ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἑκάστῳ υῆς
,,ἔπουντο θοαῖ· πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί.“ τῷ μὲν
γὰρ Ἐπειοὺς ἀμφοτέρους προσαγορεύειν τούς τε Βου-
πρασιεῖς καὶ τοὺς Ἡλείους, Ἡλείους δὲ μηκέτι καλεῖν 5
τοὺς Βουπρασιεῖς, οὐ τὴν Ἡλείαν δόξειεν ἀν εἰς τέτ-
ταρα μέρη διαιρεῖν, ἀλλὰ τὴν τῶν Ἐπειῶν, ἣν εἰς δύο
μέρη διεἴλε πρότερον· οὐδέ τὸν μέρος εἶη τῆς Ἡλιδος
τὸ Βουπράσιον, ἀλλὰ τῶν Ἐπειῶν μᾶλλον. δτι γὰρ
Ἐπειοὺς καλεῖ τοὺς Βουπρασίους, δῆλον „ώς ὅπότε 10
„κρισίουτ’ Ἀμαρυγκέα θάπτον Ἐπειοὶ Βουπρασίω.“
πάλιν δὲ τῷ συγκαταριθμεῖσθαι Βουπράσιόν τε καὶ
Ἡλιδα διαν λέγοντα, εἰτὲ εἰς τέτταρας διαιρεῖν μερίδας,
ώς ἂν κοινῷ δοκεῖ τῷ τε Βουπρασίῳ καὶ τῇ Ἡλιδὶ αὐ-
τὰς ὑποτάτειν. ἦν δ', ώς ἔοικε, κατοικία τῆς Ἡλιδας 15
τὸ Βουπράσιον ἀξιύλογος, ἡ νῦν οὐκέτ' ἐστίν· ἡ δὲ
χώρα καλεῖται μόνον οὕτως ἡ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ Δύ-
μην ἐξ Ἡλιδος τῆς νῦν πόλεως. ὑπολάβοι δ' ἀν τις καὶ
ὑπερφορχήν τινα ἔχειν τότε τὸ Βουπράσιον παρὰ τὴν
Ἡλιν, ὥσπερ καὶ οἱ Ἐπειοὶ παρὰ τούτους· ὕστερον δ' 20
ἀντ' Ἐπειῶν Ἡλεῖοι ἐκλήθησαν. καὶ τὸ Βουπράσιον
μὲν δὴ μέρος ἦν τῆς Ἡλιδος. ποιητικῷ δέ τινι σχήματι
συγκαταλέγειν τὸ μέρος τῷ ὅλῳ φασὶ τὸν Ὀμηρον, ώς
τό „ἀν' Ἑλλάδα καὶ μέσον“ Ἀργος“ καὶ „ἀν' Ἑλλάδα
τε Φθίην τε“ „Κονοῆτες τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοί“ „οἱ 25
δ' ἐκ Δουλιχίου Ἐχινάων δ' Ιεράων.“ καὶ γὰρ τὸ Δου-
λίχιον τῶν Ἐχινάδων. χρῶνται δὲ καὶ οἱ νεώτεροι·
Ιππῶνας μέν „Κυπρίων βέκος φαγοῦσι καὶ Ἀμαθον-
,,σίων πυρόν.“ Κύπριοι γὰρ καὶ οἱ Ἀμαθούσιοι· καὶ

11. post Βουπρασίων: τὸ δὲ Βουπράσιον εἶναι τινα χώραν
τῆς Ἡλιδας, κατοικίαν οὐκ ἔχουσαν διμόνυμον· νυν φαίνεται
τῆς Ἡλιδος ὃν μέρος καὶ τοῦτο.

Αλημάν δέ „Κύπρου ιμερτὰν λιποῖσα καὶ Πάφου πε-
„φιωρύταν“ καὶ Αισχύλος „Κύπρου Πάφου τ' ἔχουσας.³⁴¹
„πάντα κλῆρον.“ εἰ δ' οὐκ εἰρηκεν Ἡλείων τοὺς Βου-
πρασίους, οὐδ' ἄλλα πολλὰ τῶν ὄντων, φήσομεν· ἄλλὰ
δ τοῦτ' οὐκ ἔστιν ἀπόδειξις τοῦ μὴ εἶναι, ἄλλὰ τοῦ μὴ
εἰπεῖν μόνου.

Ἐματαῖος δ' ὁ Μιλήσιος ἐτέρους λέγει τῶν Ἡλείων 9
τοὺς Ἐπειούς· τῷ γοῦν Ἡρακλεῖ συστρατεῦσαι τοὺς
Ἐπειούς ἐπὶ Αὐγέαν καὶ συνανελεῖν αὐτῷ τόν τε Αὐ-
10 γέαν καὶ τὴν Ἡλιν· φησὶ δὲ καὶ τὴν Δύμην Ἐπειάδα
καὶ Ἀχαιίδα. πολλὰ μὲν οὖν καὶ μὴ δυτα λέγουσιν οἱ
ἀρχαῖοι συγγραφεῖς, συντεθραμμένοι τῷ ψεύδει διὰ
τὰς μυθογραφίας· διὰ δὲ τοῦτο καὶ οὐχ διολογοῦσι
πρὸς ἄλλήλους περὶ τῶν αὐτῶν. οὐ μέντοι ἀπιστον
15 οὐδ' εἴ ποτε διάφοροι τοῖς Ἡλείοις ὄντες οἱ Ἐπειοὶ καὶ
ἐτεροεθνεῖς εἰς ταῦτὸ συνήρχοντο κατ' ἐπικράτειαν,
καὶ κοινὴν ἔνεμον τὴν πολιτείαν· ἐπεκράτουν δὲ καὶ
μέχρι Δύμης. ὁ μὲν γὰρ ποιητὴς οὐκ ὀνόμακε τὴν Δύ-
μην, οὐκ ἀπεικὸς δ' ἔστι τότε μὲν αὐτὴν ὑπὸ τοῖς
20 Ἐπειοῖς ὑπάρχει, ὑστερον δὲ τοῖς Ἰωσιν, ἡ μηδ' ἐκεί-
νοις ἄλλὰ τοῖς τὴν ἐκείνων χώραν κατασχοῦσιν Ἀχαι-
οῖς· τῶν δὲ τεττάρων μερίδων, ὃν ἐντός ἔστι καὶ τὸ
Βουπράσιον, ἡ μὲν Τρομίνη καὶ ἡ Μύρσινος τῆς Ἡλείας
ἔστιν, αἱ λοιπαὶ δὲ ἐπὶ τῶν ὅρων ἥδη τῆς Πισάτιδος,
25 ἡς οἶονταί τινες.

Τρομίνη μὲν οὖν πολίχνιον ἦν, νῦν δ' οὐκ ἔστιν· 10
ἄλλ' ἀκρωτήριον πλησίον Κυλλήνης ὁρεινόν ἔστι, κα-
λούμενον Ὁρμινα ἡ Τρομίνα· Μύρσινος δὲ τὸ νῦν
30 Μυρτούντιον, ἐπὶ θάλατταν καθήκουσα κατὰ τὴν ἐκ
Δύμης εἰς Ἡλιν ὄδὸν κατοικία, στάδια τῆς Ἡλείων πό-
λεως διέχουσα ἐβδομήκοντα. πέτρην δ' Ὡλενίην εἰνά-
ξουσι τὴν νῦν Σηόλλιν· ἀνάγκη γὰρ εἰκότα λέγειν, καὶ

τῶν τόπων καὶ τῶν ὄνομάτων μεταβεβλημένων, ἐκείνουν τε μὴ σφόδρα ἐπὶ πολλῶν σαφηνίζοντος· ἔστι δὲ ὅρος πετρῶδες ποινὸν Δυμαίων τε καὶ Τριταιέων καὶ Ἡλείων, ἔχόμενον ἐτέρους τινὸς Ἀρκαδικοῦ ὅρους Αμπείας, ὁ τῆς Ἡλιδος μὲν διέστηκεν ἐκ[ατὸν καὶ] τοιάδε 5 κοντά σταδίους, Τριταίας δὲ ἑκατόν, [καὶ Δύμης] τοὺς ἵσους, Ἀχαικῶν πόλεων. τὸ δὲ Ἀλείσιον ἔστι τὸ νῦν Ἀλεσιαῖον, χώρα περὶ τὴν Ἀμφιδολίδα, ἐν τῇ κατὰ μῆνα ἀγορὰν συνάγουσιν οἱ περίοικοι· κείται δὲ ἐπὶ τῆς ὁρεινῆς ὁδοῦ τῆς ἐξ Ἡλιδος εἰς Ὄλυμπίαν· πρότερον δὲ ἦν πόλις τῆς Πισάτιδος, ἄλλοτε ἄλλως τῶν ὅρων ἐπαλλαττόντων διὰ τὰς τῶν ἡγεμόνων μεταβολάς· τὸ δὲ Ἀλείσιον καὶ Ἀλεισίου κολώνην ὁ ποιητὴς καλεῖ C.342^οταν φῆ „μεσφ“ ἐπὶ Βουπρασίου πολυπύρου βῆσαμεν „ἴππους πέτρης τὸ Θλευνίης καὶ Ἀλεισίου ἐνθα κολώνη 15 „κέκληται.“ ὑπερβατῶς γάρ δεῖ δέξασθαι ἶσον τῷ „καὶ ἐνθα Ἀλεισίου κολώνη κέκληται.“ ἔνιοι δὲ καὶ ποταμὸν δεικνύουσιν Ἀλείσιον.

11 Λεγομένων δέ τινων ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυκάνων πρὸς τὴν Μεσσηνίαν, λεγομένης δὲ καὶ τῆς Δύμης Καυκάνων ὑπὸ τινῶν, ὃντος δὲ καὶ ποταμοῦ ἐν τῇ Δυμαίᾳ μεταξὺ Δύμης καὶ Τριταίας ὡς καλεῖται Καύκων, ξητοῦσι περὶ τῶν Καυκάνων μὴ διττοὶ λέγονται, οἱ μὲν περὶ τὴν Τριφυλίαν οἱ δὲ περὶ Δύμην καὶ Ἡλιν καὶ τὸν Καύκωνα· ἐμβάλλει δὲ οὗτος εἰς ἐτερον, ὃς 25 Τευθέας ἀρσενικῶς καλεῖται, ὁμώνυμος πολίχνη τινὶ τῶν εἰς τὴν Δύμην συνφυκισμένων, πλὴν ὅτι χωρὶς τοῦ σίγμα Τευθέα λέγεται θηλυκῶς αὔτη, ἐκτεινόντων τὴν ἐσχάτην συλλαβήν, ὅπου τὸ τῆς *Νεμυδίας Ἀρτέμιδος λερόν. ὁ δὲ Τευθέας εἰς τὸν Ἀχελῶν ἐμβάλλει τὸν 30

κατὰ Λύμην φέοντα, διμάνυμον τῷ κατὰ Ἀκαρναίων,
καλούμενον καὶ Πείρου. τοῦ δὲ Ἡσιόδου εἰπόντος
„ψῆνες δὲ” Θλευνήν πέτρην ποταμοῖο παρ’ ὅχθας εὐρεῖος
„Πείροιο,” μεταγράφουσί τινες Πώροιο οὐκ εὖ. οὗτε
5 γὰρ τὴν Δύμην δικόθεν Καυκωνίδα εἰρηθεῖται συμβέ-
βηκε παραλιπεῖν ἄξιον, οὗτε τὸν ποταμὸν δικόθεν Καύ-
κων εἰρηται, διὰ τὸ τοὺς Καύκωνας παρέχειν ζήτησιν,
οἵ τινες ποτέ εἰσιν, ὅπου φησὶν ἡ Ἀθηνᾶ βαδίζειν κατὰ
τὴν τοῦ χρέους κομιδὴν. εἰ γὰρ δὴ δεχοίμεθα τοὺς ἐν
10 τῇ Τριφυλίᾳ λέγεσθαι τοὺς περὶ Λέπρειον, οὐκ οἶδ’
ὅπως πιθανὸς ἔσται ὁ λόγος· διὸ καὶ γράφουσί τινες
„ἔνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται” Ἡλιδί δίη, οὐκ ὀλίγον.“
σαφεστέραν δὲ ἔξει τὴν ἐπισκεψιν τοῦτο, ἐπειδὴν τὴν
ἔξης χώραν περιοδεύσωμεν τὴν τε Πισάτιν καὶ τὴν
15 Τριφυλίαν μέχρι τῆς τῶν Μεσσηνίων μεθορίας.

Μετὰ δὲ τὸν Χελωνάταν ὁ τῶν Πισατῶν ἐστιν 12
αἰγαιαλὸς πολύς, εἰτ' ἄκρα Φειά· ἣν δὲ καὶ πολύχνη
,,Φειᾶς πὰρ τείχεσσιν, Ταρδάνουν ἀμφὶ δέειθρα·“ ἔστι
γὰρ καὶ ποτάμιον πλησίον. ἔνιοι δ' ἀρχὴν τῆς Πισά-³⁴³
20 τιδος τὴν Φειάν φασι· πρόκειται δὲ καὶ ταύτης νησίον
καὶ λιμήν, ἔνθεν εἰς Όλυμπίαν τὸ ἐγγυητάτῳ ἐκ θαλάτ-
της εἰσὶ στάδιοι ἑκατὸν εἶκοσιν. εἰτ' ἄλλῃ ἄκρᾳ εὐθὺς
ἐπὶ πολὺ προῦχοντα ἐπὶ τὴν δύσιν, καθάπερ δὲ Χελω-
νάτας, ἀφ' ἣς πάλιν ἐπὶ τὴν Κεφαλληνίαν στάδιοι ἑκα-
25 τὸν εἶκοσιν. εἰτ' δὲ Άλφειός ἐκδίδωσι, διέχων τοῦ Χε-

4. post οὐκ εὖ: περὶ δὲ τῶν Καυκάσων ξητοῦσι, φησίν,
ὅτι τῆς Ἀθηνᾶς τῆς τῷ Μέντορι σείχεται πόλις τὸν Νέστορα, ἀτί-
μηνούσης πρὸς τὸν Νέστορα με-
ούσδ'

μέτο δῶμα, πέμψον σύν διφρω
δοκεῖ σημαίνεσθαι χώρα τις ἐν
εἰχον, ἔτεροι σύντεται τῶν ἐν τῇ
Τοιφυλίᾳ, ἐπεντελεύοντες καὶ μέχοι τῆς Δυνατάς τυχόν.

λωνάτα σταδίους διαικοσίους ὅγδοήκοντα, Ἀράξου δὲ πεντακοσίους τετταράκοντα πέντε. φεῦ δ' ἐκ τῶν αὐτῶν τόπων ἐξ ὧν καὶ ὁ Εὐρώπας· καλεῖται δὲ Ἀσέα, οὐώμη τῆς Μεγαλοπολίτιδος, πλησίον ἀλλήλων ἔχουσα δύο πηγάς, ἐξ ὧν φέουσιν οἱ λεχθέντες ποταμοί· δύν- 5 τες δ' ὑπὸ γῆς ἐπὶ συχνοὺς σταδίους ἀνατέλλουσι πάλιν, εἰδὸς ὁ μὲν εἰς τὴν Λακωνικὴν ὁ δ' εἰς τὴν Πισάτιν κατάγεται. ὁ μὲν οὖν Εὐρώπας κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς Βλεμινάτιδος ἀναδεῖξε τὸ φεῦδρον, παρ' αὐτὴν τὴν Σπάρτην φύεται καὶ διεξιὰν αὐλῶνά τινα μακρὸν κατὰ 10 τὸ Ἐλος, οὐδὲ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής, ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυθείου τοῦ τῆς Σπάρτης ἐπινείου καὶ Ἀκραίων. ὁ δ' Ἀλφειὸς παραλαβὼν τόν τε Λάδωνα καὶ τὸν Ἐρύμανθον καὶ ἄλλους ἀσημοτέρους διὰ τῆς Φοιξῆς καὶ τῆς Πισάτιδος καὶ Τριφυλίας ἐνεχθεὶς παρ' αὐτὴν τὴν 15 Ὄλυμπίαν ἐπὶ θάλατταν τὴν Σικελικὴν ἐκπίπτει μεταξὺ Φειᾶς τε καὶ Ἐπιταλίου. πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τὸ τῆς Ἀλφειωνίας Ἀρτεμίδος ἢ Ἀλφειούσης ἄλσος ἐστὶ (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως), ἀπέχον τῆς Ὄλυμπίας εἰς ὅγδοήκοντα σταδίους. ταύτῃ δὲ τῇ θεῷ καὶ ἐν Ὄλυμ- 20 πίᾳ κατ' ἑτος συντελεῖται πανήγυρις, καθάπερ καὶ τῇ Ἐλαφίᾳ καὶ τῇ Δαφνίᾳ. μεστὴ δ' ἐστὶν ἡ γῆ πᾶσα ἀρτεμισίων τε καὶ ἀφροδισίων καὶ νυμφαῖων ἐν ἄλσεσιν ἀνθέων [πλέ]ῳς τὸ πολὺ διὰ τὴν εὐνδρίαν, συχνὰ δὲ καὶ ἐρμένα ἐν ταῖς ὁδοῖς, ποσείδια δ' ἐπὶ ταῖς ἀκταῖς. 25 ἐν δὲ τῷ τῆς Ἀλφειωνίας ἱερῷ γραφαὶ Κλεάνθους τε καὶ Ἀρήγοντος, ἀνδρῶν Κορινθίων, τοῦ μὲν Τροίας ἄλωσις καὶ Ἀθηνᾶς γοναῖ, τοῦ δὲ Ἀρτεμις ἀναφερομένη ἐπὶ γρυπός, σφόδρα εὐδόκιμοι.

13 Εἶτα τὸ διεῖργον ὅρος τῆς Τριφυλίας τὴν Μακι- 30 στίαν ἀπὸ τῆς Πισάτιδος· εἰτ' ἄλλος ποταμὸς Χαλκὶς καὶ κρήνη Κρουννοὶ καὶ κατοικία Χαλκίς, καὶ τὸ Σαμι-

κὸν μετὰ ταῦτα, ὅπου τὸ μάλιστα τιμώμενον τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνος ιερόν· ἔστι δὲ ἄλσος ἀγριελαιῶν πλέων· ἐπεμελοῦντο δὲ αὐτοῦ Μακιστιοι· οὗτοι δὲ καὶ τὴν ἐκεχειρίαν ἐπήγγελλον, ἦν καλοῦσι Σάμιον· συντελοῦσι δὲ εἰς τὸ ιερὸν πάντες Τριφύλιοι· καὶ τὸ τῆς Σκιλλονυτίας δὲ Ἀθηνᾶς ιερὸν τὸ περὶ Σκιλλοῦντα τῶν ἐπιφανῶν ἔστιν, Ὄλυμπίας πλησίον κατὰ τὸν φελλῶνα.

Κατὰ ταῦτα δέ πως τὰ ιερὰ ὑπέροχειται τῆς θαλάττης ἐν τριάκοντα ἡ μικρῷ πλείσι σταδίοις ὁ Τριφυλιακὸς Πύλος [ό] καὶ Δεπρεατικός, ὃν καλεῖ ὁ ποιη-C.344 τῆς ἡμαδρίεντα καὶ παραδίδωσι τοῦ Νέστορος πατρίδα, ὡς ἂν τις ἐκ τῶν ἐπῶν τεκμαίροιτο· εἴτε τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ πρὸς ἄρκτον Ἀμάδου καλουμένου πρότερον, ὃς νῦν *Μάμαος καὶ Ἀρκαδικὸς καλεῖται, 15 ὥστ' ἐντεῦθεν ἡμαδρίεντα κεκλησθαι· εἴτε τούτου μὲν Παμισοῦ καλουμένου ὁμοινύμως τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ δυσί, τῆς δὲ πόλεως ἀδηλον ἔχουσης τὴν ἐτυμολογίαν τοῦ ἐπιθέτου· καὶ γὰρ τὸ ἀμαδράδη τὸν ποταμὸν ἡ τὴν χώραν εἶναι φεῦδος φασι· πρὸς ἓω δὲ ἔστιν ὅρος τοῦ 20 Πύλου πλησίον ἐπώνυμον Μίνθης, ἦν μυθεύονται παλλακὴν τοῦ Ἀιδου γενομένην πατηθεῖσαν ὑπὸ τῆς κόρης εἰς τὴν ηπαλαν μίνθην μεταβαλεῖν, ἦν τινες ἡδύοσμον καλοῦσι· καὶ δὴ καὶ τέμενός ἔστιν Ἀιδου πρὸς τῷ ὅρει τιμώμενον καὶ ὑπὸ Μακιστίων, καὶ Δήμητρος ἄλσος ὑπεροχείμενον τοῦ Πυλιακοῦ πεδίου· τὸ δὲ πεδίον εὔγεών ἔστι τοῦτο, τῇ θαλάττῃ δὲ συνάψαν παρατείνει παρ' ἅπαν τὸ μεταξὺ τοῦ τε Σαμικοῦ καὶ ποταμοῦ Νέδας διάστημα. θινάδης δὲ καὶ στενός ἔστιν ὁ τῆς θαλάττης αἰγαλός, ὥστ' οὐκ ἀν ἀπογονοί τις 30 ἐντεῦθεν ἡμαδρίεντα ἀνομάσθαι τὸν Πύλον.

15 Πρὸς ἄροτον δ' ὅμορα ἦν τῷ Πύλῳ δύο πολίδια
 Τριφυλιακὰ Ἄπανα καὶ Τυμπανέαι, ὡν τὸ μὲν εἰς
 Ἑλιν συνφυλεσθη τὸ δ' ἔμεινε. καὶ ποταμοὶ δὲ δύο ἐγ-
 γὺς φέοντιν δὲ τε Δαλίων καὶ δὲ Ἀχέρων, ἐμβάλλοντες
 εἰς τὸν Ἀλφειόν. δὲ δὲ Ἀχέρων κατὰ τὴν πρὸς τὸν Ἀι- 5
 δην οἰκειότητα ὀνόμασται· ἐκτετίμηται γὰρ δὴ σφό-
 δρα τά τε τῆς Δήμητρος καὶ τῆς κόρης Ιερὰ ἐνταῦθα
 καὶ τὰ τοῦ Ἀιδου, τάχα διὰ τὰς ὑπεναντιότητας, ὡς
 φησιν ὁ Σηήψιος Δημήτριος. καὶ γὰρ εὔκαιρος ἐστι
 καὶ ἐρυσίβην γεννᾶ καὶ θρύσιν ἡ Τριφυλία· διόπερ 10
 ἀντὶ μεγάλης φορᾶς πυκνὰς ἀφορίας γίνεσθαι συμβα-
 νει κατὰ τοὺς τόπους.

16 Τοῦ δὲ Πύλου πρὸς νότον ἐστὶ τὸ Λεπρεῖον. ἦν δὲ
 καὶ αὕτη ἡ πόλις ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντα
 σταδίοις· μεταξὺ δὲ τοῦ Λεπρείου καὶ τοῦ *Ἀννίου τὸ 15
 Ιερὸν τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνος ἐστιν, ἐκατὸν σταδίους
 ἐκατέρον διέχον. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ Ιερὸν ἐν φυλαλη-
 φθῆναι φησιν δὲ ποιητὴς ὑπὸ Τηλεμάχου τὴν θυσίαν
 συντελοῦντας τοὺς Πυλίους „οἱ δὲ Πύλον, Νηλῆος
 ,ἐκπιτίμενον πτολεμόν, ξένον· τοι δ' ἐπὶ θινὶ θαλάσ- 20
 ,σης Ιερὰ φέζον, ταύρους παμμέλανας, Ἐνοσίχθονι
 C.345, κυανοχαίτη.“ πάρεστι μὲν γὰρ τῷ ποιητῇ καὶ πλάττειν
 τὰ μὴ ὄντα, ὅταν δ' ἡ δυνατόν, ἐφαρμόττειν τοῖς οὖσι
 τὰ ἐπη καὶ σώζειν τὴν διήγησιν. τὸ δὲ ἀπέκεισθαι
 προσῆκε μᾶλλον. χώραν δὲ εἶχον εὐδαίμονα οἱ Λε- 25
 πρεᾶται· τούτοις δ' ὅμοροι Κυπαρισσιεῖς. ἄμφω δὲ τὰ
 χωρία ταῦτα Καύκωνες κατεῖχον, καὶ τὸν Μάκιστον
 δέ, ὃν τινες Πλατανιστοῦντα καλοῦσιν. διμόνιον τῇ
 χώρᾳ [δέ] ἐστὶ τὸ πόλισμα. φασὶ δὲ ἐν τῇ Λεπρεάτιδι
 καὶ Καύκωνος εἶναι μνῆμα, εἰτ' ἀρχηγέτου τινὸς εἰτ' 30
 ἄλλως διμονύμου τῷ ἔθνει.

17 Πλείους δὲ εἰσὶ λόγοι περὶ τῶν Καυκώνων· καὶ

γὰρ Ἀρκαδικὸν ἔθνος φασί, καθάπερ τὸ Πελασγικόν,
καὶ πλανητικὸν ἄλλως, ὥσπερ ἐκεῖνο. Ιστορεῖ γοῦν ὁ
ποιητὴς καὶ τοῖς Τρωσὶν ἀφιγμένους συμμάχους, πό-
θεν δ' οὐ λέγει· δοκοῦσι δ' ἐκ Παφλαγονίας· ἐκεῖ γὰρ
5 ὄνομάζουσι Καυκωνιάτας τινὰς Μαριανδυνοῖς ὅμό-
ρους, οἱ καὶ αὐτὸι Παφλαγόνες εἰσὶ. μνησθῆσόμεθα
δ' αὐτῶν ἐπὶ πλέον, ὅταν εἰς ἐκεῖνον περιστῇ τὸν τό-
πον ἡ γραφή. νῦν δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυ-
κώνων ἔτι καὶ ταῦτα προσιστορητέον. οἱ μὲν γὰρ καὶ
10 ὅλην τὴν υῦν Ἡλείαν ἀπὸ τῆς Μεσσηνίας μέχρι Αύ-
μης Καυκωνίαν λεχθῆναι φασιν· Ἀντίμαχος γοῦν καὶ
Ἐπειοὺς καὶ Καύκωνας ἀπαντας προσαγορεύει. τινὲς
δὲ ὅλην μὲν μὴ κατασχεῖν αὐτούς, δίχα δὲ μεμερι-
σμένους οἰκεῖν, τοὺς μὲν πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ κατὰ
15 τὴν Τριφυλίαν τοὺς δὲ πρὸς τῇ Αὔμῃ κατὰ τὴν Βου-
πρασίδα καὶ τὴν ιοίλην Ἡλιν· Ἀριστοτέλης δ' ἐνταῦ-
θα μάλιστα οἶδεν ίδρυμένους αὐτούς. καὶ δὴ τοῖς ὑφ
Ὀμήρου λεγομένοις ὅμοιογενὲς μᾶλλον ἡ ὑστάτη ἀπόφα-
σις, τό τε ξητούμενον πρότερον λαμβάνει λύσιν. οἱ μὲν
20 γὰρ Νέστωρ ὑπόκειται τὸν Τριφυλιακὸν οἰκῶν Πύ-
λον, τά τε πρὸς νότον καὶ τὰ ἑαθινά (ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ
συγκυροῦντα πρὸς τὴν Μεσσηνίαν καὶ τὴν Δακωνι-
κήν) ὑπὲκείνω ἐστίν, ἔχουσι δ' οἱ Καύκωνες, ὥστε
τοῖς ἀπὸ τοῦ Πύλου βαδίζουσιν εἰς Δακεδαίμονα ἀνάγ-
25 κη διὰ Καυκώνων εἶναι τὴν ὁδόν. τὸ δὲ ιερὸν τοῦ
Σαμίου Ποσειδῶνος καὶ ὁ κατ' αὐτὸν ὄρμος, εἰς ὃν κα-
τήχθη Τηλέμαχος, πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτον ἀπο-
νεύει. εἰ μὲν τοίνυν οἱ Καύκωνες ἐνταῦθα μόνον οἰ-
κοῦσιν, οὐ σάξεται τῷ ποιητῇ ὁ λόγος. κελεύει γὰρ ἡ
30 μὲν Ἀθηνᾶς κατὰ τὸν Σωτάδην τῷ Νέστορι, τὸν μὲν Τη-
λέμαχὸν εἰς τὴν Δακεδαίμονα πέμψαι σὺν δίφρῳ τε
καὶ υἱέι εἰς τὰ πρὸς ἔω μέρη· αὐτὴ δ' ἐπὶ ναῦν βαδιεῖ-

σθαι νυκτερεύδοντα φησιν ἐπὶ τὴν δυσιν καὶ εἰς τούπισω, „ἀτὰρ ἡῶθεν μετὰ Καύκωνας μεγαθύμους“ πορεύσεσθαι ἐπὶ τὸ χρέος πάλιν εἰς τοῦμπροσθεν. τίς C.346οῦν δὲ τρόπος; παρῆν γὰρ τῷ Νέστορι λέγειν ὅτι τὸν γε Καύκωνες ὑπὲρ ἔμοι εἰσι καὶ πρὸ ὁδοῦ τοῖς εἰς Λακεδαιμονια βαδίζουσιν· ὥστε τί οὐ συνοδεύεις τοῖς περὶ Τηλέμαχον, ἀλλ᾽ ἀναγκωρεῖς εἰς τούπισω; ἂμα δὲ οἱ καὶ οὗ τῷ βαδίζοντι ἐπὶ χρέους κομιδὴν οὐκ ὀλίγον, ὡς φησι, πρὸς ἀνθρώπους ὑπὸ τῷ Νέστορι ὄντας, αἰτήσασθαι τινα παρ᾽ αὐτοῦ βοήθειαν, εἴ τι ἀγνωμονοῦτο (ὡσπερ εἰσθε) περὶ τὸ συμβόλαιον· οὐ γέγονε δὲ τοῦτο. εἰ μὲν τοίνυν ἐνταῦθα μόνον οἰκοῖσιν οἱ Καύκωνες, ταῦτα ἀν συμβαίνοι τὰ ἄτοπα· μεμερισμένων δὲ τινῶν καὶ εἰς τοὺς πρὸς Δύμη τόπους τῆς Ἡλείας, ἐκεῖσε ἀν εἰη λέγοντα τὴν ἔφοδον ὧδε Αθηναῖς, καὶ οὐκ ἀν εἴτε οὕτως ὧδε τὴν ναῦν κατέβασις ἔχοι τι ἀπεμφάνινον οὕτως δὲ τῆς συνοδίας ἀποσκασμός, εἰς τάναντία τῆς δοδοῦ οὕτης. παραπλησίως δὲ ἀν καὶ τὰ περὶ τοῦ Πόλου διαπορούμενα τύχοι τῆς προσηκούσης διατῆς ἐπελθοῦσι μικρὸν εἴτε τῆς χωρογραφίας μέχρι τοῦ Πύλου τοῦ Μεσσηνιακοῦ.

18 'Ἐλέγοντο δὲ Παρωρεῖται τινὲς τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ κατέχοντες ὅρη περὶ τὸ Λέπραιον καὶ τὸ Μάκιστον καθήκοντα ἐπὶ θάλατταν πληγῶν τοῦ Σαμιακοῦ ποσειδίου. 25

19 'Τπὸ τούτοις ἐστὶν δὲν τῇ παραλίᾳ δύο ἄντρα, τὸ μὲν ινυμφῶν Ἀνιγριάδων τὸ δὲ ἐν φέρει τὰς Ἀτλαντίδας καὶ τὴν Λαρδάνου γένεσιν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ ἄλση τό τε Ἰωναῖον καὶ τὸ Εὔρυκύδειον. τὸ μὲν οὖν Σαμικὸν ἐστιν ἔρυμα, πρότερον δὲ καὶ πόλις Σάμος προσαγορευομένη διὰ τὸ ὑψος ἵσως, ἐπειδὴ σάμους ἐκάλουν τὰ ὑψη· τάχα δὲ τῆς Ἀρηνῆς ἀκρόπολις

ἥν τοῦτο, ἡς ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται ὁ ποιητής „οἱ
,,δὲ Πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινήν.“ οὐ-
δαμοῦ γὰρ σαφῶς εὑρίσκοντες ἐνταῦθα μάλιστα εἰνά-
ζουσι τὴν Ἀρήνην, ὅπου καὶ ὁ παρακείμενος Ἀνιγρος
5 ποταμός, καλούμενος πρότερον Μινυέιος, δίδωσιν οὐ
μικρὸν σημεῖον· λέγει γὰρ ὁ ποιητής „ἔστι δέ τις πο-
,,ταμὸς Μινυήιος εἰς ἄλλα βάλλων ἐγγύθεν Ἀρήνης.“
πρὸς γὰρ δὴ τῷ ἄντρῳ τῶν Ἀνιγριάδων νυμφῶν ἔστι
πηγή, ὑφ' ἡς ἔλειον καὶ τιφᾶδες τὸ ὑποπλεπτον γίνεται
10 χωρίον· ὑποδέχεται δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ ὕδατος ὁ Ἀνι-
γρος βαθὺς καὶ ὑπτιος ὥν ὥστε λιμνάξειν· θινάδης
δ' ὥν ὁ τόπος ἐξ εἰκοσι σταδίων βαρεῖαν ὀσμὴν παρέ-
χει καὶ τοὺς ἰχθῦς ἀβρώτους ποιεῖ. μιθεύουσι δ' οἱ
μὲν ἀπὸ τοῦ τῶν τετρωμένων Κενταύρων τινὰς ἐν-
15 ταῦθ' ἀπονίψασθαι τὸν ἐκ τῆς Τροας ίόν, οἱ δ' ἀπὸ
τοῦ Μελάμποδα τοῖς ὕδασι τούτοις καθαρισίοις χρήσα-
σθαι πρὸς τὸν τῶν Προιτίδων καθαριμόν· ἀλφούς δὲ C.347
καὶ λεύκας καὶ λειχῆνας λαταὶ τὸ ἐντεῦθεν λουτρόν.
φασὶ δὲ καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἀπὸ τῆς τῶν ἀλφῶν θερα-
20 πείας οὔτως ἀνομάσθαι. ἐπειδὸν δὲ τὸν ὑπτιότης τοῦ
Ἀνιγρου καὶ αἱ ἀνακοπαὶ τῆς θαλάττης μονὴν μᾶλλον
ἢ φύσιν παρέχουσι τοῖς ὕδασι, * Μινυήιον φασιν εἰρη-
σθαι πρότερον, παρατρέψαι δέ τινας τούνομα καὶ ἀντ'
αὐτοῦ ποιῆσαι Μινυήιον. ἔχει δ' ἡ ἐτυμότης καὶ ἄλλας
25 ἀφορμάς, εἴτ' ἀπὸ τῶν μετὰ Χλωρίδος τῆς Νέστορος
μητρὸς ἐλθόντων ἐξ Ὁρχομενοῦ τοῦ Μινυείου, [εἴτε]
Μινυῶν, οἱ τῶν Ἀργοναυτῶν ἀπόγονοι διητές ἐν Λή-
μνου μὲν εἰς Λακεδαιμονια ἐξέπεσον ἐντεῦθεν δὲ εἰς τὴν
Τριφυλίαν, καὶ φυησαν περὶ τὴν Ἀρήνην ἐν τῇ χώρᾳ
30 τῇ νῦν Αἴπασίᾳ καλουμένῃ, οὐκ ἔχούσῃ οὐκέτι τὰ τῶν
Μινυῶν κτίσματα· ὡν τινὲς μετὰ Θήρα τοῦ Αὔτεσιω-
νος (ἥν δ' οὔτος Πολυνυείκους ἀπόγονος) πλεύσαντες

εἰς τὴν μεταξὺ Κυρηναίας καὶ τῆς Κορήτης νῆσον „Καλ-
„λίστην τὸ πάροιθε, τὸ δὲ ὕστερον οὔνομα Θήρων,“
ῶς φησι Καλλίμαχος, ἐκτισαν τὴν μητρόπολιν τῆς Κυ-
ρήνης Θήραν, ὅμωνυμον δὲ ἀπέδειξαν τῇ πόλει καὶ τὴν
νῆσον.

5

20 Μεταξὺ δὲ τοῦ Ἀνίγρου καὶ τοῦ ὄρους, ἐξ οὗ δεῖ,
ὅ τοῦ Ἰαρδάνου λειμῶν δείκνυται καὶ τάφος· καὶ Ἀχαι-
αὶ εἰσὶ δὲ πέτραι ἀπότομοι τοῦ αὐτοῦ ὄρους, ὑπὲρ ὧν
ἡ Σάμος, ως ἔφαμεν, γέγονε πόλις· οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ¹⁰
τῶν τοὺς περίπλους γραψάντων ἡ Σάμος μνημονεύε-
ται, τάχα μέν γε διὰ τὸ πάλαι κατεσπάσθαι, τάχα δὲ καὶ
διὰ τὴν θέσιν. τὸ μὲν γὰρ ποσεῖδιον ἔστιν ἄλσος, ως
εἶρηται, πρὸς τῇ θαλάττῃ· ὑπέροχεται δὲ αὐτοῦ λόφος
ὑψηλὸς ἐπίπροσθεν ὧν τοῦ νῦν Σαμικοῦ ἐφ' οὐδὲν
ἡ Σάμος, ὥστ' ἐκ θαλάττης μὴ δρᾶσθαι. καὶ πεδίον δὲ¹⁵
αὐτόθι καλεῖται Σαμικόν· ἐξ οὗ πλέον ἄν τις τεκμα-
ρούσιο ὑπάρχει ποτὲ πόλιν τὴν Σάμον. καὶ ἡ Ραδίνη
δὲ ἦν Στησίχορος ποιῆσαι δοκεῖ (ἥς ἀρχή, „ἄγε Μοῦ-
,,σα λύγει“, ἄρξον ἀοιδᾶς, Ἐρατώ, νόμους Σαμίων περὶ²⁰
„παίδων ἐρατῆ φθεγγομένα λύρᾳ“) ἐντεῦθεν λέγει τοὺς παῖδας.
ἐκδοθεῖσαν γὰρ τὴν Ραδίνην εἰς Κόριν-
θον τυράννῳ φησίν ἐκ τῆς Σάμου πλεῦσαι πνέοντος
ζεφύρου, οὐ δήπονθεν τῆς Ιωνικῆς Σάμου. [τῷ] δὲ²⁵
αὐτῷ ἀνέμῳ καὶ ἀρχιθέωρον εἰς Δελφούς [τὸν ἀδελ-
φὸν αὐτῆς ἐλθεῖν καὶ τὸν ἀνεψιὸν ἐρῶντα αὐτῆς ἄρ-
ματι εἰς Κόρινθον ἐξορμῆσαι παρ' αὐτήν. δὲ τε τύραν-
νος πτείνας ἀμφοτέρους ἄρματι ἀποκέμπει τὰ σώματα,
μεταγυνοὺς δὲ ἀνακαλεῖ καὶ θάπτει.

C.348

21 Ἀπὸ δὲ τοῦ Πύλου τούτου καὶ τοῦ Λεπρείου τε-
τρακοσίων που σταδίων ἐστὶ διάστημα ἐπὶ τὴν Μεσση-

νιακὴν Πύλον καὶ τὸ Κορυφάσιον ἐπὶ θαλάττη νείμενα φρούρια, καὶ τὴν παρακειμένην Σφαγίαν νῆσον, ἀπὸ δὲ Ἀλφειοῦ ἐπτακοσίων πεντήκοντα, ἀπὸ δὲ τοῦ Χελωνάτα χιλίων τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τὸ τε τοῦ 5 Μακιστίου Ἡρακλέους λεόντινόν εἶται καὶ ὁ Ἀκίδων ποταμός. φεῖ δὲ παρὰ τάφον Ἰαρδάνου καὶ Χάαν πόλιν ποτὲ ὑπάρχεισαν πλησίον Δεπρεοῦ, ὅπου καὶ τὸ πεδίον τὸ 10 Αἰπάσιον. περὶ ταύτης δὲ τῆς Χάας γενέσθαι φασὶν ἔνιοι τὸν πόλεμον τοῖς Ἀρκάσι πρὸς τοὺς Πυλίους, ὃν 15 ἐφράσεν Ὁμηρος, καὶ δεῖν οἰονται γράφειν „ἡβῖμ“, „ώς δέ τ’ ἐπ’ ὀκνούσῳ Ἀκίδοντι μάχοντο ἀγρόμενοι Πύ- „λιοι τε καὶ Ἀρκάδες Χάας πάρ τε λέγεσσιν,“ οὐ Κελάδοντι, οὐδὲ Φειᾶς· τῷ γὰρ τάφῳ τοῦ Ἰαρδάνου τοῦ- τον πλησιάζειν καὶ τοῖς Ἀρκάσι τὸν τόπον μᾶλλον ἡ 15 ἐκεῖνον.

Κυπαρισσία τέ ἐστιν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τῇ Τριφυ- 22 λιακῇ καὶ Πύργοι καὶ ὁ Ἀκίδων ποταμὸς καὶ Νέδα. νυνὶ μὲν οὖν τῇ Τριφυλίᾳ πρὸς τὴν Μεσσηνίαν ὅριόν 20 ἐστι τὸ τῆς Νέδας φεῦμα λάβρου ἐκ τοῦ Λυκαίου κα- τιὸν Ἀρκαδικοῦ ὄφους, ἐκ πηγῆς ἣν ἀναρρηξαὶ τεκοῦ- σαν τὸν Δία μυθεύεται Ῥέαν νίπτρων χάριν. φεῖ δὲ παρὰ Φιγαλίαν, καθ’ ὃ γειτνιᾶσι Πυρογῖται Τριφυλίων ἔσχατοι Κυπαρισσιεῦσι πρώτοις Μεσσηνίων. τὸ δὲ πα- λαιὸν ἄλλως διώριστο, ὡς καὶ τινὰς τῶν πέραν τῆς 25 Νέδας ὑπὸ τῷ Νέστορι εἶναι, τόν τε Κυπαρισσήεντα καὶ ἄλλα τινὰ ἐπέκεινα, καθάπερ καὶ τὴν θάλατταν τὴν Πυλίαν ὃ ποιητὴς ἐπεκτείνει μέχρι τῶν ἐπτὰ πό- λεων ὡν ὑπέσχετο Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „πᾶσαι δ’ „ἐγγὺς ἄλλος νέσται Πύλου ἡμαθόεντος.“ τοῦτο γὰρ 30 ἔσον τῷ „ἐγγὺς ἄλλος τῆς Πυλασ.“

Ἐφεξῆς δ’ οὖν τῷ Κυπαρισσήεντι ἐπὶ τὴν Μεσση- 23 νιακὴν Πύλον παραπλέοντι [καὶ] τὸ Κορυφάσιον ἡ τε

"Ἐρανα ἔστιν, ἦν τινες οὐκ εὐ' Ἀρήνην νομίζουσιν κε-
κλῆσθαι πρότερον ὁμωνύμως τῇ Πυλιακῇ, [καὶ ἡ ἄκρα]
Πλαταμώδης, ἀφ' ἣς ἐπὶ τὸ Κορυφάσιον καὶ τὴν υῦν
καλούμενην Πύλον ἐκατόν εἰσι στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ
νησίον καὶ πολύχνιον ἐν αὐτῷ ὁμάνυμον Πρωτή. οὐκ δὲ
ἄν δ' ἔξητάξομεν ἵσως ἐπὶ τοσοῦτον τὰ παλαιά, ἀλλ'
ἡρκει λέγειν ὡς ἔχει υῦν ἔκαστα, εἰ μή τις ἦν πα-
δῶν ἡμῖν παραδεδομένη φήμη περὶ τούτων· ἄλλων δ'
ἄλλα εἰπόντων ἀνάγκη διαιτᾶν. πιστεύονται δ' ὡς
ἐπὶ τὸ πολὺ οἱ ἐνδοξότατοι τε καὶ πρεσβύτατοι καὶ κατ'¹⁰
ἔμπειροι πρῶτοι· Ομήρου δ' εἰς ταῦτα ὑπερβεβλη-
0.349μένου πάντας, ἀνάγκη συνεπικοπεῖν καὶ τὰ ὑπ' ἔκει-
νου λεχθέντα καὶ συγκρούειν πρὸς τὰ υῦν, καθάπερ
καὶ μικρὸν ἔμπροσθεν ἔφαμεν.

24 Περὶ μὲν οὖν τῆς κοίλης Ἡλιδος καὶ τοῦ Βουπρα-15
σίου τὰ λεγθέντα ὑφ' Ομήρου προεπέσκεπται ἡμῖν.
περὶ δὲ τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι οὗτῳ φησίν „οἱ δὲ Πύλον
,,τ' ἐνέμουντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινὴν καὶ Θρύον, Ἀλ-
„φειοῖο πόρον, καὶ ἐύκτιτον Ἀλκυ καὶ Κυκαρισσήνετα
,,καὶ Ἀμφιγένειαν ἔναιον καὶ Πτελεὸν καὶ Ἐλος καὶ 20
„Δώριον, ἐνδια τε Μοῦσαι ἀντόμεναι Θάμυριν τὸν
„Θρήικα παῦσαν ἀοιδῆς, Οίχαλιθεν ἰόντα παρ' Εύ-
„ρύτου Οίχαλιθος.“ Πύλος μὲν οὖν ἔστι περὶ ἡς ἡ ξή-
τησις· αὐτίκα δ' ἐπισκεψόμεθα περὶ αὐτῆς. περὶ δὲ
τῆς Ἀρήνης εἰρηται· ἦν δὲ λέγει υῦν Θρύον, ἐν ἄλλοις 25
καλεῖ Θρυόεσσαν „ἔστι δὲ τις Θρυόεσσα πόλις, αἰπεῖνα
,,κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ.“ Ἀλφειοῦ δὲ πόρον φη-
σίν, ὅτι πεξῇ περατὸς εἶναι δοκεῖ κατὰ τοῦτον τὸν τό-
πον· καλεῖται δὲ υῦν Ἐπιτάλιον τῆς Μακιστίας χωρίου.
τὸ εὔκτιτον δ' Ἀλκυ ἔνιοι μὲν ξητοῦσι πότερον ποτέ-30
ρου ἐπίθετον, καὶ τις ἡ πόλις, καὶ εἰ αἱ υῦν Μαργάλαι
τῆς Ἀμφιδολίας· αὗται μὲν οὖν οὐ φυσικὸν ἔργυμα,

ἔτερον δὲ δείκνυται φυσικὸν ἐν τῇ Μακιστίᾳ. ὁ μὲν
οὖν τοῦδ' ὑπονοῶν φράζεσθαι ὅνομά φησι τῆς πό-
λεως τὸ Ἀλπυ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος φυσικῶς, ὡς
Ἐλος καὶ Ἀγγιαλὸν καὶ ἄλλα πλείω. ὁ δὲ τὴν Μαργά-
5 λαν τοῦμπαλιν ἴσως. Θρύον δὲ καὶ Θρυόεσσαν τὸ Ἐπι-
τάλιόν φασιν, ὅτι πᾶσα μὲν αὕτη ἡ χώρα θρυστής,
μάλιστα δ' οἱ ποταμοί· ἐπὶ πλέον δὲ διαφαινεται τοῦτο
κατὰ τοὺς περατοὺς τοῦ φειδρου τόπους. τάχα δέ φασι
Θρύον μὲν εἰρηθεῖ τὸν πόρον, εὔκτιτον δ' Ἀλπυ τὸ
10 Ἐπιτάλιον· ἔστι γὰρ ἐρυμνὸν φύσει· καὶ γὰρ ἐν ἄλ-
λοις αἰπεῖαν κολώνην λέγει,, ἔστι δέ τις Θρυόεσσα πό-
λις, αἰπεῖα κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ, πυμάτη Πύ-
λου ἡμαθόσιντος.“

‘Ο δὲ Κυπαρισσήεις ἔστι μὲν περὶ τὴν πρότερον 25
15 Μακιστίαν, ἥνινα καὶ πέραν τῆς Νέδας ἔτι ἡνὶ Μακι-
στία, ἄλλ’ οὐκ οἰκεῖται, ὡς οὐδὲ τὸ Μάκιστον· ἄλλη
δ’ ἔστιν ἡ Μεσσηνιακὴ Κυπαρισσία, διμάνυμος μὲν
οὗ, δύοις δὲ νῦν κάκείνη λέγεται Κυπαρισσία ἐνικῶς
τε καὶ θηλυκῶς, δὲ ποταμὸς Κυπαρισσήεις. καὶ Ἀμ-
20 φιγένεια δὲ τῆς Μακιστίας ἔστι περὶ τὸν Τψόντα, ὃν
τὸ τῆς Λητοῦς ιερόν. τὸ δὲ Πτελεὸν κτίσμα μὲν γέγονε
τῶν ἐκ Πτελεοῦ τοῦ Θετταλικοῦ ἐποιησάντων· λέγε-
ται γὰρ κάκεῖ, Ἀγγιαλόν τ’ Ἀντρῶνα ἰδὲ Πτελεὸν λε-
350 „χεποίην.“ ἔστι δὲ δρυμῶδες χωρίον ἀοίκητον, Πτελε-
25 άσιον καλούμενον. “Ἐλος δ’ οἱ μὲν περὶ τὸν Ἀλφειὸν
χώραν τινά φασιν, οἱ δὲ καὶ πόλιν, ὡς τὴν Λακωνι-
κήν, „Ἐλος τ’ ἔφαλον πτολειθρον.“ οἱ δὲ περὶ τὸ Ἀλά-
ριον ἔλος, οὗ τὸ τῆς Ἐλείας Ἀρτέμιδος ιερόν τῆς ὑπὸ³⁵⁵
τοῖς Ἀρκάσιν· ἐκεῖνοι γὰρ ἔσχον τὴν ιερωσύνην. Λώ-
30 φιον δ’ οἱ μὲν ὅρος, οἱ δὲ πεδίον, [οἱ δὲ πολίδιον] φα-
σίν· οὐδὲν δὲ νῦν δείκνυται· ὅμως δ’ ἔνιοι τὴν νῦν
“Ολουριν ἥ” Ολουραν ἐν τῷ καλούμενῳ αὐλῶνι τῆς

Μεσσηνίας κειμένην Δώριον λέγουσιν. αὐτοῦ δέ που καὶ ἡ Οἰχαλία ἐστὶν ἡ τοῦ Εὐδύτου ἡ νῦν Ἀνδανία, πολίχνιον Ἀρκαδικὸν ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ καὶ τῷ Εὐβοϊκῷ· ὅθεν φησὶν ὁ ποιητὴς ἐς τὸ Δώριον ἀφικόμενον Θάμυριν τὸν Θρῆνα ὑπὸ Μουσῶν ἀφαιρεθῆναι 5 τὴν μουσικήν.

- 26 *'Ἐκ δὴ τούτων δῆλον ὡς ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἀλφειοῦ .
ἡ ὑπὸ Νέστορι χώρα ἐστὶν, ἣν πᾶσαν ὄνομάζει Πυλίων
γῆν· οὐδαμοῦ δὲ ὁ Ἀλφειὸς οὗτε τῆς Μεσσηνίας ἐφά-
πτεται οὔτε τῆς κοιλῆς Ἡλιδος. ἐν ταύτῃ γὰρ τῇ χώρᾳ 10
ἐστὶν ἡ πατρὶς τοῦ Νέστορος, ἣν φαμεν Τριφυλιακὸν
Πύλον καὶ Ἀρκαδικὸν καὶ Λεπρεατικόν. καὶ γὰρ δὴ οἱ
μὲν ἄλλοι Πύλοι ἐπὶ θαλάττῃ δείκνυνται, οὗτος δὲ
πλείους ἢ τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ αὐτῆς, ὅπερ καὶ ἐκ
τῶν ἐπῶν δῆλον. ἐπὶ τε γὰρ τοὺς Τηλεμάχους ἔταιρους 15
ἄγγελος πέμπεται πρὸς τὸ πλοῖον καλῶν ἐπὶ ξενίαν, ὃ
τε Τηλέμαχος πατὴ τὴν ἐκ Σπάρτης ἐπάνοδον τὸν Πει-
σιστρατον οὐκ ἐῇ πρὸς τὴν πόλιν ἐλαύνειν, ἀλλὰ πα-
ρατρέψαντα ἐπὶ [τὴν] ναῦν σπεύδειν, ὡς οὐ τὴν αὐτὴν
οὖσαν ἐπὶ τὴν πόλιν καὶ τὸν ὄρμον. ὁ τε ἀπόπλους 20
τοῦ Τηλεμάχου οὕτως ἀν οἰκείως λέγοιτο „βὰν δὲ παρὰ
„Κρονιοὺς καὶ Χαλκίδα καλλιρέεθρον. δύετό τ' ἡέ-
„λιος, σκιόωντό τε πᾶσαι ἀγυιαῖς· ἡ δὲ Φεὰς ἐπέβαλλεν,
„ἀγαλλομένη Διὸς οὐρῷ, ἡδὲ παρὸς Ἡλιδα δῖαν, ὅθι
„κρατέουσιν Ἐπειοι.“ μέχρι μὲν δὴ δεῦρο πρὸς τὴν 25
ἄρκτον ὁ πλοῦς, ἐντεῦθεν δὲ ἐπὶ τὸ πρὸς ἐω μέρος ἐπι-
στρέφει. παρίησι δὲ τὸν εὐθὺν πλοῦν ἡ ναῦς καὶ τὸν
ἔξ ἀρχῆς καὶ τὸν εἰς Ἰθάκην διὰ τὸ τοὺς μυηστῆρας
ἔκει τὴν ἐνέδραν θέσθαι „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σά-
„μοιό τε· ἐνθεν δὲ αὖτις οἴσιν ἐπιπροσῆγε θοῆσι.“ 30
0.351 θοὰς δὲ εἰρηνε τὰς ὁξείας· τῶν Ἐχινάδων δὲ εἰσὶν αὖ-
ται, πλησιάζουσαι τῇ ἀρχῇ τοῦ Κορινθιακοῦ πόλου*

καὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Ἀχελώου. παραλλάξεις δὲ τὴν
Ίδανην, ὥστε κατὰ νάτου γενέσθαι, κάμπτει πάλιν
πρὸς τὸν οἰκεῖον δρόμον τὸν μεταξὺ τῆς Ἀκαρνανίας
καὶ τῆς Ίδανης, καὶ κατὰ θάτερα μέρη τῆς νήσου ποι-
5 εῖται τὴν καταγωγήν, οὐ κατὰ τὸν πορθμὸν τὸν Κε-
φαλληνιακόν, ὃν ἐφρούρουν οἱ μνηστῆρες.

Ἐλ γοῦν τὸν Ἡλιακὸν Πύλον εἶναι τις τὸν Νέστο- 27
ρος ἐπινοήσειεν, οὐκ ἀν οἰκείως λέγοιτο ἡ ἐντεῦθεν
ἀναχθεῖσα ναῦς παρὰ Κρουνοὺς ἐνεχθῆναι καὶ Χαλ-
10 κίδα μέχρι δύσεως, εἴτα Φεαῖς ἐπιβάλλειν νύκτωρ, καὶ
τότε τὴν Ἡλείαν παραπλεῖν· οὗτοι γὰρ οἱ τόποι πρὸς
νότον τῆς Ἡλείας εἰστε, πρῶται μὲν αἱ Φεαί, εἶδ' ἡ Χαλ-
κίς, εἶδ' οἱ Κρουνοί, εἶδ' ὁ Πύλος ὁ Τριφυλιακὸς καὶ
τὸ Σαμικόν. τῷ μὲν οὖν πρὸς νότον πλέοντι ἐκ τοῦ
15 Ἡλιακοῦ Πύλου οὗτος ἀν ὁ πλοῦς εἶη· τῷ δὲ πρὸς ἄρ-
κτον, ὅπου ἔστιν ἡ Ίδανη, ταῦτα μὲν πάντα ὀπίσω
λείπεται, αὐτὴν δ' ἡ Ἡλεία παραπλευστέα ἦν, καὶ πρὸ
δύσεώς γε· δέ φησι μετὰ δύσιν. καὶ μὴν εἰ καὶ πάλιν
ὑπόθοιτο τις τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον καὶ τὸ Κορυ-
20 φάσιον ἀρχὴν τοῦ παρὰ Νέστορος πλοῦ, πολὺ ἀν εἴη
τὸ διάστημα καὶ πλέονος χρόνου. αὐτὸν γοῦν τὸ ἐπὶ^{τὸν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ τὸ Σαμιακὸν ποσείδιον}
τετρακοσίων ἔστι σταδίων· καὶ ὁ παράπλους [οὐ] παρὰ
Κρουνοὺς καὶ Χαλκίδα καὶ Φεάν, ἀδόξων ποταμῶν
25 δύνοματα μᾶλλον δὲ ὀχετῶν, ἀλλὰ παρὰ τὴν Νέδαν
πρῶτον, εἰτ' Ἀκίδωνα, εἴτα τὸν Ἀλφειὸν καὶ τόπους
τούτων τοὺς μεταξύ· ὕστερον δ', εἰ ἄρα, κάκεινων
ἐχρῆν μνησθῆναι· καὶ γὰρ παρ' ἐκείνους ὑπῆρχεν ὁ
πλοῦς.

30 Καὶ μὴν ᾧ γε τοῦ Νέστορος διήγησις, ᾧ διατίθε- 28
ται πρὸς Πάτροκλον περὶ τοῦ γενομένου τοῖς Πυλίοις
πρὸς Ἡλείους πολέμου, συνηγορεῖ τοῖς ὑφ' ἡμῖν ἐπι-

χειρουμένοις, ἐὰν σκοπῇ τις τὰ ἔπη. φησὶ γὰρ ἐν αὐτοῖς, ὅτι πορθήσαντος Ἡρακλέους τὴν Πυλίαν ὥστε τὴν υεότητα ἐκλειφθῆναι πᾶσαν, δώδεκα δὴ παῖδων ὄντων τῷ Νηλεῖ, μόνον αὐτῷ περιγενέσθαι τὸν Νέστορα νέον τελέως· καταφρούνησαντες δ' οἱ Ἐπειοὶ τοῦ 5 Νηλέως διὰ γῆρας καὶ ἐρημίαν ὑπερηφάνως καὶ ὑβριστικῶς ἔχρωντο τοῖς Πυλίοις. ἀντὶ τούτων οὖν ὁ Νέστωρ συναγαγὼν τοὺς οἰκείους ὅσους οἶός τε ἦν ἐπελθεῖν φησιν ἐπὶ τὴν Ἡλείαν, καὶ περιελάσαι παμπόλλην λείαν „πεντήκοντα βοῶν ἀγέλας, τόσα πάσαι οἰῶν, 10 „τόσσα συῶν συβόσια,“ τοσαῦτα δὲ καὶ αἰπόλια, „ἴππους δὲ ἔκανθάς ἐκατὸν καὶ πεντήκοντα,“ ὑποπώλους 0.352 τὰς πλείστας. „καὶ τὰ μὲν ἡλασάμεσθα Πύλου“ φησί „Νηλίου εἰσω, ἐννύχιοι προτὶ ἄστυ,“ ὡς μεθ' ἡμέραν μὲν τῆς λεηλασίας γενομένης καὶ τῆς τροπῆς τῶν ἐκ- 15 βοηθησάντων, ὅτε κτανεῖν λέγει τὸν Ἰτυμονέα, υὔπιτωρ δὲ τῆς ἀφόδου γενομένης ὥστ' ἐννυχίους πρὸς τῷ ἄστει γενέσθαι· περὶ δὲ τὴν διανομὴν καὶ θυσίαν ὄντων οἱ Ἐπειοὶ τῇ τρίτῃ τῶν ἡμερῶν κατὰ πλῆθος ἀθροισθέντες πεζοὶ τε καὶ ἵππεῖς ἀντεπεξῆλθον 20 καὶ τὸ Θρύον ἐπὶ τῷ Ἀλφειῷ κείμενον περιεστρατοπέδευσαν. αἰσθόμενοι δ' εὐθὺς οἱ Πύλιοι βοηθεῖν ὥρμησαν· νυκτερεύσαντες δὲ περὶ τὸν Μινυήιον ποταμὸν ἐγγύθεν Ἀρήνης, ἐντεῦθεν ἔνδιοι πρὸς τὸν Ἀλφειὸν ἀφικνοῦνται· τοῦτο δ' ἐστὶ κατὰ μεσημβρίαν· 25 θύσαντες δὲ τοῖς θεοῖς καὶ νυκτερεύσαντες ἐπὶ τῷ ποταμῷ συμβάλλουσιν εἰς μάχην εὐθὺς ἔωθεν· λαμπρᾶς δὲ τῆς τροπῆς γενομένης οὐκ ἐπαύσαντο διώκοντές τε καὶ κτείνοντες πρὸν Βουκρασίου ἐπέβησαν „πέτρης 30 „τὸ Ωλενίης καὶ Ἀλεισίου ἔνθα κολάνη κέκληται, ὅθεν 35 αὗτις ἀπέτραπε λαὸν Ἀθήνη.“ καὶ ὑποβάς „αὐτὰρ

,Αχαιοὶ ἀψ ἀπὸ Βουκρασίοι Πύλουν δέχονται ὡκέας ἵπποις.“

Ἐκ τούτων δὴ πῶς ἂν ἦ τὸν Ἡλιακὸν Πύλον ὑπολάβοι τις ἦ τὸν Μεσσηνιακὸν λέγεσθαι; τὸν μὲν Ἡλιακόν, ὅτι τούτου πορθουμένου συνεπορθεῖτο καὶ ἡ τῶν Ἐπειῶν ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους· αὕτη δέ ἐστιν ἡ Ἡλεία. πῶς οὖν ἥμελλον οἱ συμπεπορθμένοι καὶ διόφυλοι τοιαύτην ὑπερηφανίαν καὶ ὕβριν κτήσασθαι κατὰ τῶν συναδικηθέντων; πῶς δέ ἂν τὴν οἰκείαν κατέτρεχον 10 καὶ ἐλεγλάτουν; πῶς δέ ἂν ἄμα καὶ Αὐγέας ἤρχε τῶν αὐτῶν καὶ Νηλεὺς ἔχθροὶ ὅντες ἀλλήλων; εἴη τῷ Νηλεῖ „χρείος μέγ’ ὄφελετ’ ἐν Ἡλιδι δίῃ, τέσσαρες „ἀθλοφόροι Ἰπποι αὐτοῖσιν ὅχεσφιν, ἐλθόντες μετ’ „ἄεθλα· περὶ τῷποδος γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι· τοὺς 15 „δ’ αὐθὶ ἀναξ ἀνδρῶν Αὐγείας κάσχεθε, τὸν δέ ἐλατῆρ’ „ἀφίει.“ εἰ δέ ἐνταῦθα φέκει ὁ Νηλεὺς, ἐνταῦθα καὶ ὁ Νέστωρ ἐπῆρχε. πῶς οὖν τῶν μὲν Ἡλείων καὶ Βουκρασίων „τέσσαρες ἀρχοὶ ἔσαν, δέκα δέ ἀνδρὶ ἐκάστῳ „νῆσες ἔποντο μοιλ, πολέες δέ ἔμβανον Ἐπειοί;“ εἰς 20 τέτταρα δὲ καὶ ἡ χώρα διήρητο, ὃν οὐδενὸς ἐπῆρχεν ὁ Νέστωρ, „οἱ δὲ Πύλον τ’ ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινήν“ καὶ τὰ ἔξης τὰ μέχρι Μεσσήνης; οἱ δὲ δὴ ἀντεπεξιόντες Ἐπειοὶ τοῖς Πυλίοις πῶς ἐπὶ τὸν Ἀλφειὸν ἔξορμῶσι καὶ τὸ Θρύον; πῶς δέ ἐκεὶ τῆς μάχης γενομένης τρεφθέντες ἐπὶ Βουκρασίου φεύγουσι; πάλιν δέ, C.363 εἰ τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον ἐπόρθησεν ὁ Ἡρακλῆς, πῶς οἱ τοσοῦτον ἀφεστῶτες ὕβριζον εἰς αὐτούς, καὶ ἐν συμβολαίοις ἥσαν πολλοῖς, καὶ ταῦτ’ ἀπεστέρων χρεοκοποῦντες, ὥστε διὰ ταῦτα συμβῆναι τὸν πόλεμον; 30 πῶς δὲ ἐπὶ τὴν λεηλασίαν ἔξιὼν Νέστωρ τοσαύτην περιελάσας λείαν συῶν τε καὶ προβάτων, ὃν οὐδὲν ὡκυπορεῖν οὐδὲ μακροπορεῖν δύναται, πλειόνων ἡ χιλιων

σταδίων ὄδὸν διήνυσεν εἰς τὴν πρὸς τῷ Κορυφαῖσθαι Πύλον, οἱ δὲ τρίτῳ ἡμέρᾳ πάντες ἐπὶ τὴν Θρυσσαν καὶ τὸν ποταμὸν τὸν Ἀλφειὸν ἥκουσι πολιορκήσοντες τὸ φρούριον; πῶς δὲ ταῦτα τὰ χωρία προσήκουντα ἦν τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ δυναστεύουσιν ἔχόντων Καυκό- 5 νων καὶ Τριφυλίων καὶ Πισατῶν; τὰ δὲ Γέροντα ἢ τὴν Γερονίαν (ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται) τάχα μὲν ἐπίτηδες ὀνόμασάν τινες· δύναται δὲ καὶ κατὰ τύχην οὕτως ὀνομάσθαι τὸ χωρίον. τὸ δ' ὅλον, τῆς Μεσσηνίας ὑπὸ Μενελάῳ τεταγμένης, ὑφ' ᾧ καὶ ἡ Λακωνικὴ ἐτέτακτο 10 (ώς δῆλον ἔσται καὶ ἐκ τῶν ὕστερον), καὶ τοῦ μὲν Παμισοῦ δέοντος διὰ ταύτης καὶ τοῦ Νέδωνος, Ἀλφειοῦ δ' οὐδαμῶς „ὅς τ' εὐρὺ δέει Πυλίων διὰ γαλῆς,“ ἢς ἐπῆρχεν δὲ Νέστωρ, τις ἀν γένοιτο πιθανὸς λόγος εἰς τὴν ἀλλοτρίαν ἀρχὴν ἐκβιβάζων τὸν ἄνδρα, ἀφαιρού- 15 μενος δὲ τὰς συγκαταλεγείσας αὐτῷ πόλεις * πάντας ὑπ' ἐκείνῳ ποιῶν;

- 30 Λοιπὸν δ' ἔστιν εἰπεῖν περὶ τῆς Ὀλυμπίας καὶ τῆς εἰς τοὺς Ἡλείους ἀπάντων μεταπτώσεως. ἔστι δ' ἐν τῇ Πισάτιδι τὸ ιερὸν σταδίους τῆς Ἡλιδος ἐλάττους ἢ τρι- 20 ακοσίους διέχον· πρόκειται δ' ἡλσος ἀγριελαίων ἐν ᾧ τὸ στάδιον· παραρρεῖ δ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκ τῆς Ἀρκαδίας δέων εἰς τὴν Τριφυλιακὴν θάλατταν μεταξὺ δύσεως καὶ μεσημβρίας. τὴν δ' ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἐξ ἀρχῆς μὲν διὰ τὸ μαντεῖον τοῦ Ὀλυμπίου Διός· ἐκείνου δ' ἐκλει- 25 φθέντος οὐδὲν ἡττον συνέμεινεν ἢ δόξα τοῦ ιεροῦ, καὶ τὴν αὔξησιν ὅσην ἴσμεν ἔλαβε διά τε τὴν πανήγυριν καὶ τὸν ἀγῶνα τὸν Ὀλυμπιακόν, στεφανίτην τε καὶ ιερὸν νομισθέντα, μέγιστον τῶν πάντων. ἐκοσμήθη δ' ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἀναθημάτων, ἀπερὸν ἐκ πάσης 30 ἀνετίθετο τῆς Ἑλλάδος· ὃν ἦν καὶ ὁ χρυσοῦς σφυρή- λατος Ζεύς, ἀνάθημα Κυψέλου τοῦ Κορινθίων τυράν-

νου. μέγιστον δὲ τούτων ὑπῆρξε τὸ τοῦ Διός ξόανον, δὲ ἐποίει Φειδίας Χαρμίδου Ἀθηναῖος ἐλεφάντινον, τηλικοῦτον τὸ μέγεθος ὡς καὶ περ μεγίστου ὅντος τοῦ νεώδειον ἀστοχῆσαι τῆς συμμετρίας τὸν τεχνίτην, 5 καθήμενον ποιήσαντα, ἀπτόμενον δὲ σχεδόν τι τῇ ορυφῇ τῆς ὁροφῆς ὥστ' ἔμφασιν ποιεῖν, ἐὰν ὁρθὸς γένηται διαναστάς, ἀποστεγάσειν τὸν νεών. ἀνέγραψαν^{0.354} δέ τινες τὰ μέτρα τοῦ ξοάνου, καὶ Καλλίμαχος ἐν λαύρῳ τινὶ ἔξειπτε. πολλὰ δὲ συνέπραξε τῷ Φειδίᾳ Πάναινος δὲ ξωγράφος, ἀδελφιδοῦς ἦν αὐτοῦ καὶ συνεργολάρβος, πρὸς τὴν τοῦ ξοάνου διὰ τῶν χρωμάτων οὔσμησιν καὶ μάλιστα τῆς ἐσθῆτος. δείκνυνται δὲ καὶ γραφαὶ πολλαὶ τε καὶ θαυμασταὶ περὶ τὸ ιερὸν ἐκείνουν ἔργα. ἀπομνημονεύουσι δὲ τοῦ Φειδίου, διότι πρὸς 10 τὸν Πάναινον εἶπε πυνθανόμενον πρὸς τί παράδειγμα μέλλοι ποιήσειν τὴν εἰκόνα τοῦ Διός, δῖτι πρὸς τὴν Ὁμήρου δι᾽ ἐπῶν ἐκτεθεῖσαν τούτων „ἢ καὶ κυανέῃσιν „ἐπ’ ὄφρούσι νεῦσε Κρονίων· ἀμβρόσιαι δ’ ἄρα χαῖται „ἐπερρώσαντο ἄνακτος ιρατὸς ἀπ’ ἀθανάτοιο, μέγαν 15 „δ’ ἐλέλιξεν” Ολυμπον.“ ἄξιοι δὲ μάλιστα τὴν αἰτίαν ἔχειν τῆς περὶ τὸ Ολυμπίασιν ιερὸν μεγαλοπρεπείας τε καὶ τιμῆς Ἡλεῖοι. κατὰ μὲν γὰρ τὰ Γραικὰ καὶ ἔτι πρὸ τούτων οὐκ ηύτύχουν, ὑπό τε τῶν Πυλίων ταπεινωθέντες καὶ ὑφ’ Ἡρακλέους ὕστερον, ἡνίκα Αὐγέας

20. post “Ολυμπον: εἰρησθαι γὰρ μάλιστα δοκεῖ καλῶς ἐν ταῖς ἄλλων καὶ τῶν ὄφρούσιν, δῖτι προκαλεῖται τὴν διάνοιαν διποιητῆς ἀναξωγραφεῖν μέγαν τινὰ τύπον καὶ μεγάλην δύναμιν ἀξίαν τοῦ Διός, καθάπερ καὶ ἐπὶ τῆς Ἡρας, ἀμαρτυρίας τὸ ἐφ’ ἐκατέρῳ πρέπον· ἔφη μὲν γάρ „σειστο δ’ εἰνὶ τὸ δ’ ἐπ’ ἐκείνης συμβάντον νεύσαντος, συμπαθούσης δὲ τι καὶ τῆς κόμης κομψῶς δ’ εἰρηται καὶ τὸ δ τὰς τῶν θεῶν εἰκόνας ἡ μόνος ἰδῶν ἡ μόνος δεῖξας.

δέ βασιλεύων αὐτῶν κατελύθη. σημεῖον δέ εἰς γὰρ τὴν Τροίαν ἐκεῖνοι μὲν τετταράκοντα ναῦς ἔστειλαν, Πύλιοι δὲ καὶ Νέστωρ ἐνενήκοντα. ὕστερον δὲ μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον συνέβη τάναντία. Αἰτωλοὶ γὰρ συγκατελθόντες τοῖς Ἡρακλείδαις μετὰ 5 Ὀξύλου καὶ συνοικήσαντες Ἐπειοῖς κατὰ συγγένειαν παλαιὰν ηὗξησαν τὴν κοίλην Ἁλιν καὶ τῆς τε Πισάτιδος ἀφείλοντο πολλήν, καὶ Ὄλυμπία ὑπ' ἐκείνοις ἐγένετο· καὶ δὴ καὶ ὁ ἄγων εὑρημά ἐστιν ἐκείνων δ' Ὄλυμπιακός, καὶ τὰς Ὄλυμπιάδας τὰς πρώτας ἐκείνοις συνε- 10 τέλουν. ἔᾶσαι γὰρ δεῖ τὰ παλαιὰ καὶ περὶ τῆς κτίσεως C.355τοῦ λεροῦ καὶ περὶ τῆς θέσεως τοῦ ἀγῶνος, τῶν μὲν ἔνα τῶν Ἰδαίων δακτύλων Ἡρακλέα λεγόντων ἀρχηγέτην τούτων, τῶν δὲ τὸν Ἀλκμήνης καὶ Διός, δὲν καὶ ἄγων/ισασθαι πρώτον καὶ νικῆσαι· τὰ γὰρ τοιαῦτα 15 πολλαχῷς λέγεται καὶ οὐ πάνυ πιστεύεται. ἐγγυτέρω δὲ πίστεως, ὅτι μέχρι τῆς ἔκτης καὶ εἰκοστῆς Ὄλυμπιάδος ἀπὸ τῆς πρώτης, ἐν ᾧ Κόροιβος ἐνίκα στάδιον Ἡλεῖος, τὴν προστασίαν είχον τοῦ τε λεροῦ καὶ τοῦ ἀγῶνος Ἡλεῖοι. κατὰ δὲ τὰ Τρωικὰ ἡ οὐκ ἦν ἄγων 20 στεφανίτης ἡ οὐκ ἐνδόξος, οὐδὲν δὲ τούτος οὔτ' ἄλλος οὐδεὶς τῶν νῦν ἐνδόξων· οὐδὲ μέμνηται τούτων Ὅμηρος οὐδενός, ἀλλ' ἐτέρων τινῶν ἐπιταφίων. καίτοι δοκεῖ τισὶ τοῦ Ὄλυμπιακοῦ μεμνῆσθαι, ὅταν φῇ τὸν Αὐγέαν ἀποστερῆσαι τέσσαρας ἀθλοφόρους ἵππους, ἐλθόντας 25 μετ' ἄεθλα· φασὶ δὲ τοὺς Πισάτας μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ πολέμου λερούς νομισθέντας τοῦ Διός. ἀλλ' οὐδὲν δὲ τοις Πισάτις ὑπὸ Αὐγέᾳ τόθ' ὑπῆρχεν, ἐν ᾧ ἐστι καὶ ἡ Ὄλυμπία, ἀλλ' ἡ Ἡλεία μόνον, οὐτ' ἐν Ἡλείᾳ συνετελέσθη δ' Ὄλυμπιακὸς ἄγων οὐδὲν ἄπαξ, ἀλλ' ἀεὶ 30 ἐν Ὄλυμπίᾳ. δὲ νῦν παρατεθεὶς ἐν Ἡλιδῃ φαίνεται γενόμενος, ἐν ᾧ καὶ τὸ χρέος ὀφείλετο „καὶ γὰρ τῷ χρείος

„[μέγ'] ὁφελετ' ἐν Ἡλιδι δίη, τέσσαρες ἀθλοφόροι
ἴπποι.“ καὶ οὗτος μὲν οὐ στεφανίτης (περὶ τρίποδος
γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι), ἐκεῖνος δέ. μετὰ [δὲ] τὴν
ἔκτην καὶ εἰκοστὴν Ὀλυμπιάδα οἱ Πισάται τὴν οἰκείαν
5 ἀπολαβόντες αὐτοὶ συνετέλουν, τὸν ἄγωνα δρῶντες
εὐδοκιμοῦντα· χρόνοις δ' ὕστερον μεταπεσούσης πά-
λιν τῆς Πισάτιδος εἰς τοὺς Ἡλείους μετέπεσεν εἰς αὐ-
τοὺς πάλιν καὶ ἡ ἄγωνοθεσία. συνέπραξαν δὲ καὶ οἱ
Λακεδαιμόνιοι μετὰ τὴν ἐσχάτην κατάλυσιν τῶν Μεσ-
10 σηνίων συμμαχήσασιν αὐτοῖς τάνατία τῶν Νέστορος
ἀπογόνων καὶ τῶν Ἀρκάδων συμπολεμησάντων τοῖς
Μεσσηνίοις· καὶ ἐπὶ τοσοῦτόν γε συνέπραξαν ὥστε
τὴν χώραν ἅπασαν τὴν μέχρι Μεσσήνης Ἡλείαν δη-
θῆναι καὶ διαμεῖναι μέχρι νῦν, Πισατῶν δὲ καὶ Τρι-
15 φυλῶν καὶ Καυκόνων μηδ' ὄνομα λειφθῆναι. καὶ
αὐτὸν δὲ τὸν Πύλον τὸν ἡμαθόεντα εἰς τὸ Λέπρειον
συνάψισαν, χαριζόμενοι τοῖς Λεπρεάταις ιρατήσασι
πολέμῳ, καὶ ἄλλας πολλὰς τῶν κατοικιῶν κατέσπασαν,
. δισας γ' ἑώρων αὐτοπραγεῖν ἐθελούσας, καὶ φόρους
20 ἐπράξαντο.

Διωνομάσθη δὲ ἡ Πισάτις τὸ μὲν πρῶτον διὰ 31
τοὺς ἡγεμόνας δυνηθέντας πλεῖστον, Οἰνόμαον τε καὶ 0.356
Πέλοπα τὸν ἐκεῖνον διαδεξάμενον καὶ τοὺς παῖδας αὐ-
τοῦ πολλοὺς γενομένους· καὶ ὁ Σαλμωνεὺς δ' ἐνταῦ-
25 θα βασιλεῦσαι λέγεται· εἰς γοῦν δικτὸν πόλεις μεριζο-
μένης τῆς Πισάτιδος, μία τούτων λέγεται καὶ ἡ Σαλ-
μώνη. διὰ ταῦτά τε δὴ καὶ [διὰ] τὸ Ιερὸν τὸ Ὀλυμπιασι
διατεθρύληται σφόδρα ἡ χώρα. δεῖ δὲ τῶν παλαιῶν
Ιστοριῶν ἀκούειν οὕτως ὡς μὴ ὁμολογουμένων σφό-
30 δρα· οἱ γὰρ νεώτεροι πολλὰ καινύζουσιν, ὥστε καὶ τὰ-

ναντία λέγειν, οἶον τὸν μὲν Αὐγέαν τῆς Πισάτιδος ἄρξαι τὸν δ' Οἰνόμαον καὶ τὸν Σαλμωνέα τῆς Ἡλείας· ἔνιοι δ' εἰς ταύτο συνάγουσι τὰ ἔθνη. δεῖ δὲ τοῖς ὁμολογουμένοις ὡς ἐπὶ πολὺ ἀκολουθεῖν, ἐπει οὐδὲ τοῦνομα τὴν Πισάτιν ἐτυμολογοῦσιν ὁμοίως· οἱ μὲν γὰρ 5 ἀπὸ Πίσης ὁμωνύμου τῇ ιρήνῃ πόλεως, τὴν δὲ ιρήνην Πίσαν εἰρήσθαι, οἶον πίστραν, ὅπερ ἐστὶ ποτίστρα· τὴν δὲ πόλιν ἰδρυμένην ἐφ' ὕψους δεικνύουσι μεταξὺ δυεῖν ὄροιν, "Οσσης καὶ Ὄλυμπον, ὁμωνύμων τοῖς ἐν Θετταλίᾳ. τινὲς δὲ πόλιν μὲν οὐδεμίαν γεγονέ- 10 ναι Πίσαν φασίν (εἶναι γὰρ ἀν μίαν τῶν ὄκτω), ιρήνην δὲ μόνην, ἥν νῦν καλεῖσθαι Βίσαν, Κικυσίου πλησίου πόλεως μεγίστης τῶν ὄκτω· Στησίχοδον δὲ καλεῖν πόλιν τὴν χώραν Πίσαν λεγομένην, ὡς ὁ ποιητὴς τὴν Λέσβιον Μάκαρος πόλιν. Εὐριπίδης δ' ἐν "Ιωνι „Εῦ- 15 „βοί" Ἀθήναις ἐστὶ τις γείτων πόλις" καὶ ἐν "Ραδαμάνθυι „οἱ γῆν ἔχουσ" Εύβοϊδα πρόσχωρον πόλιν" Σοφοκλῆς δ' ἐν Μυσοῖς „Ἄσια μὲν ἡ σύμπασα ιλή- „ἔται, ἔνε, πόλις δὲ Μυσῶν Μυσία προσήγορος."

32 'H δὲ Σαλμώνη πλησίου ἐστὶ τῆς ὁμωνύμου ιρή- 20 νης ἐξ ἣς φελ ὁ Ἐνιπεύς· ἐμβάλλει δ' εἰς τὸν Ἀλφείον. τούτου δ' ἐρασθῆναι τὴν Τυρώ φασιν „ἢ ποταμοῦ „ἢράσσατ" Ἐνιπῆος θείοιο." ἐνταῦθα γὰρ βασιλεῦσαι τὸν πατέρα αὐτῆς τὸν Σαλμωνέα, καθάπερ καὶ Εὐριπίδης ἐν Αἴόλῳ φησί. ἐγγὺς δὲ τῆς Σαλμώνης Ἡρά- 25 κλεια, καὶ αὕτη μία τῶν ὄκτω, ··διέχουσα περὶ τετταράκοντα σταδίους τῆς Ὄλυμπίας, κειμένη δὲ παρὰ τὸν Κυθήριον ποταμόν, οὗ τὸ τῶν Ιωνιάδων νυμφῶν λεφόν τῶν πεπιστευμένων θεραπεύειν νόσους τοῖς

21. post Ἀλφείον: καλεῖται δὲ νῦν Βαρνίχιος. 25. post φησί: τον δ' ἐν τῇ Θετταλίᾳ οὐδὲ τὸν Ὀδρενος δέχεται τὸν

ῦδασι. παρὰ δὲ τὴν Ὀλυμπίαν ἐστὶ καὶ ἡ Ἀρκινα, καὶ 0.357
αὐτη τῶν ὀκτώ, δι' ἣς φεῖ ποταμὸς Παρθενίας ὡς εἰς
Ἡραίαν λόντων· αὐτοῦ δ' ἐστι καὶ τὸ Κικύσιον τῶν
ὀκτὼ καὶ τὸ Δυσπόντιον κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐξ Ἡλιδος
5 εἰς Ὀλυμπίαν ἐν πεδίῳ κείμενον· ἔξελείφθη δέ, καὶ
ἀπῆραν οἱ πλείους εἰς Ἐπίδαμνον καὶ Ἀπολλωνίαν· καὶ
ἡ Φολόη δ' ὑπέροιειται τῆς Ὀλυμπίας ἐγγυτάτῳ, ὅρος
Ἀρκαδικόν, ὥστε τὰς ὑπαρείας τῆς Πισάτιδος εἶναι.
καὶ πᾶσα δ' ἡ Πισάτις καὶ τῆς Τριφυλίας τὰ πλεῖστα
10 ὄμορφες τῇ Ἀρκαδίᾳ· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀρκαδικὰ εἶναι
δοκεῖ τὰ πλεῖστα τῶν Πυλιακῶν ἐν καταλόγῳ φραζο-
μένων χωρίων· οὐ μέντοι φασὶν οἱ ἐμπειροι· τὸν γὰρ
Ἐρύμανθον εἶναι τὸν δρέποντα τὴν Ἀρκαδίαν τῶν εἰς
Ἀλφειὸν ἐμπιπτόντων ποταμῶν, ἕξω δ' ἐκείνου τὰ χω-
15 ρία ἰδοῦσθαι ταῦτα.

"Ἐφορος δέ φησιν Αἴτωλὸν ἐκπεσόντα ὑπὸ Σαλ- 33
μωνέως τοῦ βασιλέως Ἐπειῶν τε καὶ Πισατῶν ἐκ τῆς
Ἡλείας εἰς τὴν Αἴτωλίαν, ὀνομάσαι τε ἀφ' αὐτοῦ τὴν
χώραν καὶ συνοικίσαι τὰς αὐτόθι πόλεις· τούτου δ'
20 ἀπόγονον ὑπάρχειντα "Οξυλον φίλον τοὺς περὶ Τήμε-
νον Ἡρακλείδαις ἥγησασθαι τε τὴν ὁδὸν κατιοῦσιν εἰς
τὴν Πελοπόννησον καὶ μερίσαι τὴν πολεμίαν αὐτοῖς
χώραν καὶ ταῦλλα ὑποδέσθαι τὰ περὶ τὴν κατάκτησιν
τῆς χώρας, ἀντὶ δὲ τούτων λαβεῖν χάριν τὴν εἰς τὴν
25 Ἡλείαν κάθιδον, προγονικὴν οὖσαν, κατελθεῖν δὲ
ἀδροίσαντα στρατιὰν ἐν τῆς Αἴτωλίας ἐπὶ τοὺς κατέ-
χοντας Ἐπειοὺς τὴν Ἡλιν· ἀπαντησάντων δὲ τῶν
Ἐπειῶν μεđ' ὅπλων, ἐπειδὴ ἀντίκαλοι ἦσαν οἱ δυνά-
μεις, εἰς μονομαχίαν προελθεῖν κατὰ ἔθος τι παλαιὸν

3. post λόντων: ἡ δὲ Ἡραία ἐστὶ τῆς Ἀρκαδίας· ὑπέροιει-
ται δὲ τῆς Δυμαίας καὶ Βουνηρασίου καὶ Ἡλιδος· ἀπερ ἐστὶ^{τι}
πρὸς ἄρκτον τῇ Πισάτιδι.

τῶν Ἑλλήνων Πυραίχμην Αἰτωλὸν Δέγμενόν τ' Ἐπειόν,
 τὸν μὲν Δέγμενον μετὰ τόξου ψιλόν, ὃς περιεσόμενον
 φάδιος διπλίτον διὰ τῆς ἐκηβολίας, τὸν δὲ μετὰ σφεν-
 δόνης καὶ πήρας λίθων, ἐπειδὴ πατέμαθε τὸν δόλον.
 τυχεῖν δὲ νεωστὶ ὑπὸ τῶν Αἰτωλῶν εὑρημένον τὸ τῆς⁵
 σφενδόνης εἶδος· μακροβολωτέρας δ' οὕσης τῆς σφεν-
 δόνης πεσεῖν τὸν Δέγμενον, καὶ πατασχεῖν τοὺς Αἰ-
 τωλοὺς τὴν γῆν ἐκβαλόντας τοὺς Ἐπειούς· παραλα-
 βεῖν δὲ καὶ τὴν ἐπιμέλειαν τοῦ ιεροῦ τοῦ Ὄλυμπίασιν,
 ἣν εἶχον οἱ Ἀχαιοί· διὰ δὲ τὴν τοῦ Ὁξύλου φιλίαν πρὸς¹⁰
 τοὺς Ἡρακλείδας συνομολογηθῆναι φάδιος ἐκ πάντων
 C.355μεθ' ὄφουν τὴν Ἡλείαν ιερὰν εἰναι τοῦ Διός, τὸν δ'
 ἐπιόντα ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην μεδ' ὅπλων ἐναγῆ εἶναι,
 ὃς δ' αὔτως ἐναγῆ καὶ τὸν μὴ ἐπαμύνοντα εἰς δύνα-
 μιν· ἐκ δὲ τούτου καὶ τοὺς κτίσαντας τὴν Ἡλείων πό-¹⁵
 λιν ὕστερον ἀτείχιστον ἔσσαι, καὶ τοὺς δι' αὐτῆς τῆς
 χώρας ίόντας στρατοπέδῳ τὰ ὅπλα παραδόντας ἀπο-
 λαμβάνειν μετὰ τὴν ἐκ τῶν ὄφων ἐκβασιν· Ἰφιτόν τε
 θεῖναι τὸν Ὄλυμπικὸν ἄγωνα, ιερᾶν ὄντων τῶν Ἡλεί-
 ων. ἐκ δὴ τῶν τοιούτων αὔξησιν λαβεῖν τοὺς ἀνθρώπους·²⁰
 τῶν γὰρ ἄλλων πολεμούντων ἀεὶ πρὸς ἄλλη-
 λους, μόνοις ὑπάρξαι πολλὴν εἰρήνην, οὐν αὐτοῖς μό-
 νον ἄλλὰ καὶ τοῖς ξένοις, ὥστε καὶ εὐανδρῆσαι μά-
 λιστα πάντων παρὰ τοῦτο. Φείδωνα δὲ τὸν Ἀργεῖον,
 δέκατον μὲν ὄντα ἀπὸ Τημένου, δυνάμει δ' ὑπεροβε-²⁵
 βλημένον τοὺς κατ' αὐτόν, ἀφ' ἣς τὴν τε λῆξιν ὅλην
 ἀνέλαβε τὴν Τημένου διεσπασμένην εἰς πλείω μέρη,
 καὶ μέτρα ἔξενρε τὰ Φειδώνια καλούμενα καὶ σταθ-
 μοὺς καὶ νόμισμα κεχαραγμένον τό τε ἄλλο καὶ τὸ ἀρ-
 γυροῦν, πρὸς τούτοις ἐπιθέσθαι καὶ ταῖς ὑφ' Ἡρα-³⁰
 κλέους αἱρεθείσαις πόλεσι, καὶ τοὺς ἄγωνας ἀξιοῦν
 τιθέναι αὐτόν, οὓς ἐκεῖνος ἔθηκε· τούτων δὲ εἶναι καὶ

τὸν Ὀλυμπικόν· καὶ δὴ βιασάμενον ἐπελθόντα θεῖναι
αὐτόν, οὕτε τῶν Ἡλείων ἔχοντων ὅπλα ὥστε κωλύειν
διὰ τὴν εἰρήνην τῶν τε ἄλλων ιρατουμένων τῇ δυνα-
στείᾳ· οὐ μὴν τούς γε Ἡλείους ἀναγράψαι τὴν θέσιν
5 ταύτην, ἀλλὰ καὶ ὅπλα κτήσασθαι διὰ τοῦτο καὶ ἀρξα-
μένους ἐπικονρεῖν σφίσιν αὐτοῖς· συμπράττειν δὲ καὶ
Λακεδαιμονίους, εἴτε φθονήσαντας τῇ διὰ τὴν εἰρήνην
εὐτυχίᾳ εἴτε καὶ συνεργοὺς ἔξειν νομίσαντας πρὸς τὸ
καταλῦσαι τὸν Φείδωνα, ἀφηρημένον αὐτοὺς τὴν ἡγε-
10 μονίαν τῶν Πελοποννησίων, [ἢν ἔκει]νοι προεκέ-
κτηντο· καὶ δὴ καὶ συγκαταλῦσαι τὸν Φείδωνα· τοὺς
δὲ συγκατασκευάσαι τοῖς Ἡλείοις τὴν τε Πισάτιν καὶ
τὴν Τριφυλίαν. ὁ δὲ παφάπλους ἄπας ὁ τῆς υῦν Ἡλείας
μὴ κατακολπίζοντι χιλίων ὁμοῦ καὶ διακοσίων ἔστι
15 σταδίων. ταῦτα μὲν περὶ τῆς Ἡλείας.

Ἡ δὲ Μεσσηνία συνεχής ἔστι τῇ Ἡλείᾳ, περινεύ- **Δ**
ουσα τὸ πλέον ἐπὶ τὸν νότον καὶ τὸ Λιβυκὸν πέλαγος.
αὗτη δ' ἐπὶ μὲν τῶν Τρωικῶν ὑπὸ Μενελάῳ ἐτέτακτο,
μέρος οὖσα τῆς Λακωνικῆς, ἐκαλεῖτο δ' ἡ χώρα Μεσ-
20 σήνη· τὴν δὲ υῦν ὄνομαζομένην πόλιν Μεσσήνην, ἡς
ἀκρόπολις ἡ Ἰθώμη ὑπῆρξεν, οὕπω συνέβαινεν ἐκτί-
σθαι· μετὰ δὲ τὴν Μενελάου τελευτὴν, ἐξασθενησάν-
των τῶν διαδεξαμένων τὴν Λακωνικήν, οἱ Νηλεῖδαι
τῆς Μεσσηνίας ἐπῆρχον. καὶ δὴ κατὰ τὴν τῶν Ἡρα-
25 κλειδῶν κάθοδον καὶ τὸν τότε γενηθέντα μερισμὸν
τῆς χώρας ἣν Μέλανθος βασιλεὺς τῶν Μεσσηνίων
καθ' αὐτοὺς ταττομένων, πρότερον δ' ὑπῆρκοι ήσαν
τοῦ Μενελάου. σημεῖον δέ· ἐκ γὰρ τοῦ Μεσσηνιακοῦ
κόλπου καὶ τοῦ συνεχοῦς Ἀσίναιον λεγομένου ἀπὸ τῆς
30 Μεσσηνιακῆς Ἀσίνης αἱ ἐπτὰ ήσαν πόλεις, ἃς ὑπέσχετο
δώσειν δ' Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „Καρδαμύλην Ἐνό-
„πην τε καὶ Ἰρήν ποιήσσαν Φηράς τε ξαθέας ἡδ' Ἀν-

„θειαν βαθύλειμον καλήν τ' Ἀλπειαν καὶ Πήδασον
 ,ἀμπελόεσσαν,“ οὐκ ἀν τάς γε μὴ προσηκούσας μῆτ'
 αὐτῷ μήτε τῷ ἀδελφῷ ὑποσχόμενος. ἐκ δὲ τῶν Φηρῶν
 καὶ συστρατεύσαντας τῷ Μενελάῳ δηλοῖ ὁ ποιητής,
 τὸν δὲ [Οἰτυλον] καὶ συγκαταλέγει τῷ Λακωνικῷ κα- 5
 ταλόγῳ, ἰδ[ρυμένον] ἐν τῷ Μεσσηνιακῷ κόλπῳ. ἔστι
 δ' ἡ Μεσσήνη μετὰ Τοιφυλίαν· κοινὴ δ' ἔστιν ἀμφοῖν
 ἄκρα, μεθ' ἣν τὸ Κορυφάσιον· ὑπέροχειται δ' ὅρος ἐν
 ἑπτὰ σταδίοις τὸ Ἀλγαλέον τούτου τε καὶ τῆς θαλάττης.

- 2 Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ Πύλος ἡ Μεσσηνιακὴ ὑπὸ τῷ 10
 Αλγαλέῳ πόλις ἦν, κατεσπασμένης δὲ ταύτης ἐπὶ τῷ
 Κορυφασίῳ τινὲς αὐτῶν φάκησαν· προσέκτισαν δ' αὐ-
 τὴν Ἀδηναῖοι τὸ δεύτερον ἐπὶ Σικελίαν πλέοντες μετ' 15
 Εὔρυμέδοντος ἐπὶ Στρατοκλέους, ἐπιτελχισμα τοῖς Λα-
 κεδαιμονίοις. αὐτοῦ δ' ἔστι καὶ ἡ Κυπαρισσία ἡ Μεσ- 20
 σηνιακὴ καὶ ἡ καὶ ἡ προκειμένη πλησίου
 τοῦ Πύλου Σφαγία νῆσος, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Σφακτηρία
 λεγομένη, περὶ ἣν ἀπέβαλον ζωγρά Λακεδαιμόνιοι
 τριακοσίους ἐξ ἑαυτῶν ἄνδρας ὑπὸ Ἀδηναίων ἐκπο-
 λιορκηθέντας. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην τῶν Κυ- 25
 παρισσιέων πελάγιαι πρόκεινται· δύο νῆσοι προσαγο-
 ρευόμεναι Στροφάδες, τετρακοσίους ἀπέχουσαι μά-
 λιστά πως τῆς ἡπείρου σταδίους ἐν τῷ Λιβυκῷ καὶ με-
 σημβρινῷ πελάγει. φησὶ δὲ Θουκυδίδης ναύσταθμον
 ὑπάρξαι τῶν Μεσσηνίων ταύτην τὴν Πύλου· διέχει 30
 Ἡ Σπάρτης τετρακοσίους.

- 3 Ἐξῆς δ' ἔστι Μεθώνη· ταύτην δ' εἶναι φασι τὴν
 ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Πήδασον προσαγορευομένην, μίαν
 τῶν ἑπτὰ ὃν ὑπέσχετο τῷ Ἀχιλλεῖ ὁ Ἀγαμέμνων· ἐν-
 ταῦθα Ἀγρίππας τὸν τῶν Μαυρουσίων βασιλέα τῆς 35

8. post Κορυφάσιον: καὶ ἡ Κυπαρισσία. 20. ante τῶν: αἱ

Αντωνίου στάσεως ὅντα Βόγον κατὰ τὸν πόλεμον τὸν
Ἀκτιακὸν διέφθειρε, λαβὼν ἐξ ἐπίπλου τὸ χωρίον.

Τῇ δὲ Μεθώνη συνεχής ἐστιν ὁ Ἀκρίτας, ἀρχὴ 4
τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου· καλοῦσι δ' αὐτὸν καὶ Ἀσι-
ναῖον ἀπὸ Ἀσίνης, πολέχυης πρώτης ἐν τῷ κόλπῳ,
δμωνύμου τῇ Ἐρμιονικῇ. αὗτη μὲν οὖν ἡ ἀρχὴ πρὸς 360
δύσιν τοῦ κόλπου ἐστί, πρὸς ὥστε αἱ καλούμεναι Θυ-
οίδες, ὅμοροι τῇ νῦν Λακωνικῇ τῇ κατὰ Κιναίθιον καὶ
Ταίναρον. μεταξὺ δὲ ἀπὸ τῶν Θυρίδων ἀρχαῖαν
10 Οἰτυλός ἐστι· καλεῖται δ' ὑπό τινων Βοίτυλος· εἴτα
Λεῦκτρον τῶν ἐν τῇ Βοιωτίᾳ Λεύκτρων ἄποικος, εἴτε
ἐπὶ πέτρας ἔρυμνῆς ἔδονται Καρδαμύλη, εἴτα Φηραὶ
δμοροι Θουρίᾳ καὶ Γερήνοις, ἀφ' οὗ τόπου Γερήνιουν
τὸν Νέστορα κληθῆναι φασὶ διὰ τὸ ἐνταῦθα σωθῆναι
15 αὐτὸν, ὡς προειρήκαμεν. δείκνυται δ' ἐν τῇ Γερηνίᾳ
Τρικαίου λεγόντων Ἀσκληπιοῦ, ἀφίδρυμα τοῦ ἐν τῇ Θετ-
ταλικῇ Τρίκη. οἰκίσαι δὲ λέγεται Πέλοψ τό τε Λεῦ-
κτρον καὶ Χαράδραν καὶ Θαλάμας, τοὺς νῦν Βοιωτοὺς
20 καλουμένους, τὴν ἀδελφὴν Νιόβην ἐκδοὺς Ἀμφίονι
καὶ ἐκ τῆς Βοιωτίας ἀγαγόμενός τινας. παρὰ δὲ Φηρᾶς
Νέδων ἐκβάλλει φέαν διὰ τῆς Λακωνικῆς, ἐπερος ὡν
τῆς Νέδας· ἔχει δ' λεγόντων ἐπίσημον Ἀθηνᾶς Νεδουσίας.
*καὶ ἐν Ποιαέσσῃ δ' ἐστὶν Ἀθηνᾶς Νεδουσίας λεγόντων,
ἐπάνυμον τόπου τινὸς Νέδοντος, ἐξ οὗ φασιν οἰκίσαι
25 Τήλειλον Ποιαέσσαν καὶ Ἐχειάς καὶ Τράγιον.*

Τῶν δὲ προταθεισῶν ἐπτὰ πόλεων τῷ Ἀχιλλεῖ 5
περὶ μὲν Καρδαμύλης καὶ Φηρῶν εἰρήκαμεν καὶ Πη-
δάσον. Ἐνόπην δὲ οἱ μὲν τὰ Πέλλανά φασιν, οἱ δὲ τό-
πον τινὰ περὶ Καρδαμύλην, οἱ δὲ τὴν Γερηνίαν· τὴν
30 δὲ Ἰοὴν κατὰ τὸ ὄρος δεικνύουσι τὸ κατὰ τὴν Μεγαλό-
πολιν τῆς Ἀρκαδίας ὡς ἐπὶ τὴν Ἀνδανίαν λόντων, ἣν
ἔφαμεν Οἰχαλίαν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κεκληῆσθαι· οἱ δὲ

τὴν νῦν Μεσόλαν οὕτω καλεῖσθαι φασὶ καθήκουσαν εἰς τὸν μεταξὺ κόλπον τοῦ Ταῦγέτου καὶ τῆς Μεσσηνίας. ἡ δὲ Αἴπεια νῦν Θουρία καλεῖται, ἣν ἔφαμεν ὅμορον Φαραῆς· ὕδρυται δὲ ἐπὶ λόφου ὑψηλοῦ, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα. ἀπὸ δὲ τῆς Θουρίας καὶ δὲ Θουριά-
της κόλπος, ἐν ᾧ πόλισμα ἦν Ρίον τοῦνομα ἀπεναντίον Ταινάρου.⁵ Αὐθειαν δὲ οἱ μὲν αὐτὴν τὴν Θουρίαν φασίν, Αἴπειαν δὲ τὴν Μεθώνην, οἱ δὲ τὴν μεταξὺ Ἀσίνην τῶν Μεσσηνῶν πόλεων οἰκειότατα βαθύλειμον λεχθεῖσαν, ἢς πρὸς θαλάττην πόλις Κορώνη·¹⁰ καὶ ταύτην δέ τινες Πήδασον λεχθῆναι φασιν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. „πᾶσαι δὲ ἐγγὺς ἀλός,“ Καρδαμύλη μὲν ἐπ'
0.316αὐτῇ, Φαραὶ δὲ ἀπὸ πέντε σταδίων, ὑφορμον ἔχουσα θερινόν, αἱ δὲ ἄλλαι ἀνωμάλοις κέχοηνται τοῖς ἀπὸ θαλάττης διαστήμασι.

15

6 Πλησίον δὲ τῆς Κορώνης κατὰ μέσον πως τὸν κόλπον ὁ Παμισὸς ποταμὸς ἐκβάλλει, ταύτην μὲν ἐν δεξιᾷ ἔχων καὶ τὰς ἐξηγεῖ. ὅλην εἰσιν ἔσγαται πρὸς δύσιν Πύλος καὶ Κυπαρισσία, μέση δὲ τούτων Ερανα, ἣν οὐκ εὖ τινες Ἀρήνην . . . νενομίκασι πρότερον· Θουρίαν 20 δὲ καὶ Φαραὶ ἐν ἀριστερῷ]. μέγιστος δὲ ἐστὶ ποταμῶν τῶν ἐντὸς Ἰσθμοῦ καίπερ οὐ πλείους ἢ ἑκατὸν σταδίους ἐκ τῶν πηγῶν δυεὶς δαψιλῆς τῷ ὕδατι διὰ τοῦ Μεσσηνιακοῦ πεδίου καὶ τῆς Μακαρίας καλούμενης· ἀφέστηκέ τε τῆς νῦν Μεσσηνῶν πόλεως ὁ ποταμὸς 25 σταδίους πεντήκοντα. ἐστὶ δὲ καὶ ἄλλος Παμισὸς χαραδρώδης μικρὸς περὶ Λεῦκτρον δέων τὸ Λακωνικόν, περὶ οὐ κρίσιν ἔσχον Μεσσήνιοι πρὸς Λακεδαιμονίους ἐπὶ Φιλίππου· τὸν δὲ Παμισόν, δὲν Ἀμαθόν τινες ἀνόμασαν, προειρήκαμεν.

30

26. post σταδίους: διακοσίους καὶ 30. ante: προειρήκαμεν: ως

"Εφορος δὲ τὸν Κρεσφόντην, ἐπειδὴ εἶλε Μεσσήνη⁷ την, διελεῖν φησιν εἰς πέντε πόλεις αὐτήν, ὥστε Στενύκλαρον μὲν ἐν τῷ μέσῳ τῆς χ[ώρας ταύτης] κειμένην ἀποδεῖξαι βασίλειον αὐτῷ, [εἰς δὲ τὰς ἄλλας] βασιλέας δ πέμψαι, Πύλον καὶ Ρίον καὶ Μεσόλαν καὶ Ταμεῖτιν, ποιήσαντα Ισονόμους πάντας τοὺς Δωριεῦσι τοὺς Μεσσηνίους· ἀγανακτούντων δὲ τῶν Δωριέων μεταγνόντα μόνον τὸν Στενύκλαρον νομίσαι πόλιν, εἰς τοῦτον δὲ καὶ τὸν Δωριέας συναγαγεῖν πάντας.

10 'Η δὲ Μεσσηνίων πόλις ἔοικε Κορίνθῳ· ὑπέροχει⁸ ται γὰρ τῆς πόλεως ἐκατέρας ὅρος ὑψηλὸν καὶ ἀπότομον τείχει ποινῆ περιειλημμένον ὥστ' ἀκροπόλει χορησθαι, τὸ μὲν καλούμενον Ἰθώμη τὸ δὲ Ἀκροκόρινθος· ὥστ' οἰκείως δοκεῖ Αημήτριος ὁ Φάριος πρὸς Φίλιππον εἰπεῖν τὸν Αημητρίου, παρακελευόμενος τούτων ἔχεσθαι τῶν πόλεων ἀμφοῖν ἐπιθυμοῦντα τῆς Πελοποννήσου· „τῶν κεράτων γὰρ κρατῶν“ ἔφη „καθέεξεις τὴν βοῦν.“ κέρατα μὲν λέγων τὴν Ἰθώμην καὶ τὸν Ἀκροκόρινθον, βοῦν δὲ τὴν Πελοπόννησον. καὶ 20 δὴ διὰ τὴν εὐκαιρίαν ταύτην ἀμφήριστοι γεγόνασιν αἱ πόλεις αὖται. Κόρινθον μὲν οὖν κατέβκαψαν [Ρωμαῖοι] καὶ ἀνέστησαν πάλιν· Μεσσήνην δὲ ἀνεῖλον μὲν Λακεδαιμόνιοι, πάλιν δ' ἀνέλαβον Θηβαῖοι καὶ μετὰ ταῦτα Φίλιππος Ἀμύντου· αἱ δὲ ἀκροπόλεις ἀοιδητοι διέμειναν.

Tὸ δ' ἐν Λίμναις τῆς Ἀρτέμιδος ἱερόν, ἐφ' ὧ⁹ 362
Μεσσηνίοι περὶ τὰς παρθένους ὑβρίσαι δοκοῦσι τὰς ἀφιγμένας ἐπὶ τὴν θυσίαν, ἐν μεθορίοις ἐστὶ τῆς τε Λακωνικῆς καὶ τῆς Μεσσηνίας, ὅπου ποιητέοις λοιποῖς πανήγυριν καὶ θυσίαν ἀμφότεροι· μετὰ δὲ τὴν ὕβριν οὐδιδόντων δίκαιος τῶν Μεσσηνίων συστῆναι φασι τὸν πόλεμον. ἀπὸ δὲ τῶν Λιμνῶν τούτων καὶ

τὸ ἐν τῇ Σπάρτῃ Λιμναῖον εἰρηται τῆς Ἀρτέμιδος
Ιερόν.

10 Πλεονάκις δ' ἐπολέμησαν διὰ τὰς ἀποστάσεις τῶν
Μεσσηνίων. τὴν μὲν οὖν πρώτην κατάκτησιν αὐτῶν
φησι *Τυρταῖος* ἐν τοῖς ποιήμασι κατὰ τοὺς τῶν πατέ-
ρων πατέρας γενέσθαι· τὴν δὲ δευτέραν, καθ' ἥν ἐλό-
μενοι συμμάχους Ἀργείους τε καὶ Ἀρκάδας καὶ Πισά-
τας ἀπέστησαν, Ἀρκάδων μὲν Ἀριστοκράτην τὸν Ὁρ-
χομενοῦ βασιλέα παρεχομένων στρατηγόν, Πισατῶν
δὲ Πανταλέοντα τὸν Ὄμφαλίωνος· ἡνίκα φησιν αὐτὸς 10
στρατηγῆσαι τὸν πόλεμον τοῖς Λακεδαιμονίοις [ἐλ-
θὼν ἐξ Ἐρινεοῦ]. καὶ γὰρ εἶναι φησιν ἐκεῖθεν ἐν
τῇ ἐλεγείᾳ ἥν ἐπιγράφουσιν *Εὔνομίαν* „, αὐτὸς γὰρ
„, *Κρονίων*, καλλιστεφάνου πόσις *Ἡρος*, *Ζεὺς* Ἡρα-
„, κλείδαις τήνδε δέδωκε πόλιν· οἶσιν ἂμα προλιπόν-
„, τες Ἐρινεὸν ἡνεμόεντα, εὐρεῖαν Πέλοπος νῆσον ἄφι-
„, κόμισθα.“ ὦστε δὲ ταῦτα ἡ κύρωται τὰ ἐλεγεία, ἥν *Φι-*
λοχόφω ἀπιστητέον τῷ φήσαντι *Ἀθηναῖόν* τε καὶ Ἀφι-
δναῖον, καὶ *Καλλισθένει* καὶ ἄλλοις πλείσι τοῖς εἰποῦ-
σιν ἐξ *Ἀθηνῶν* ἄφικέσθαι δεηθέντων *Λακεδαιμονίων* 20
κατὰ χρησμόν, ὃς ἐπέταττε παρ' *Ἀθηναίων* λαβεῖν ἡγε-
μόνα. ἐπὶ μὲν οὖν τοῦ *Τυρταίου* ὁ δεύτερος ὑπῆρξε
πόλεμος· τοίτον δὲ καὶ τέταρτον συστῆναι φασιν, ἐν
φ κατελύθησαν οἱ *Μεσσήνιοι*. ὁ δὲ πᾶς παράπλους
οἱ *Μεσσηνιακὸς* στάδιοι ὀκτακόσιοι που κατακολπί-
ζοντι.

11 Ἀλλὰ γὰρ εἰς πλείω λόγου τοῦ μετρίου πρόιμεν
ἀκολουθοῦντες τῷ πλήθει τῶν ἴστορουμένων περὶ χώ-
ρας ἐκλελειμμένης τῆς πλείστης· ὅπου γε καὶ ἡ *Λακω-*
νικὴ λειπανδρεῖ κρινομένη πρὸς τὴν παλαιὰν εύαν-
δρίαν. ἔξω γὰρ τῆς *Σπάρτης* αἱ λοιπαὶ πολίχναι τινές
εἰσι περὶ τριάκοντα τὸν ἀριθμόν· τὸ δὲ παλαιὸν ἐκα-

τόμπολίν φασιν αὐτὴν καλεῖσθαι, καὶ τὰ ἑκατόμβαια διὰ τοῦτο θύεσθαι παρ' αὐτοῖς κατ' ἔτος.

"Εστι δ' οὖν μετὰ τὸν Μεσσηνιακὸν κόλπου ὁ Λα-**3**
κωνικὸς μεταξὺ Ταινάρου καὶ Μαλεῶν, ἐκκλίνων μι-
5 κρόδον ἀπὸ μεσημβρίας πρὸς ἕω· διέχουσι δὲ σταδίους
ἑκατὸν τριάκοντα αἱ Θυρίδες τοῦ Ταινάρου ἐν τῷ Μεσ-
σηνιακῷ οὖσαι κόλπῳ, φούδης κρημνός. τούτων δ'^ο 363
ὑπέρκειται τὸ Ταῦγετον· ἔστι δ' ὅρος μικρὸν ὑπὲρ τῆς
θαλάττης ὑψηλόν τε καὶ ὅρθιον, συνάπτον κατὰ τὰ
10 προσάρκτια μέρη ταῖς Ἀρκαδικαῖς ὑπωρείαις, ὥστε
καταλείπεσθαι μεταξὺ αὐλῶνα, καθ' ὃν ἡ Μεσσηνία
συνεχής ἔστι τῇ Λακωνικῇ. ὑποκέπτωκε δὲ τῷ Ταῦ-
γέτῳ ἡ Σπάρτη ἐν μεσογαίᾳ καὶ Ἀμύκλαι, οὗ τὸ τοῦ
'Απόλλωνος λεόντι, καὶ ἡ Φάροις. ἔστι μὲν οὖν ἐν κοιλο-
15 τέρῳ χωρίῳ τὸ τῆς πόλεως ἔδαφος καίπερ ἀπολαμβά-
νουν ὅρη μεταξύ· ἀλλ' οὐδέν γε μέρος αὐτοῦ λιμνάζει,
τὸ δὲ παλαιὸν ἐλίμναζε τὸ προάστειον, καὶ ἐκάλουν
αὐτὸν Λίμνας· καὶ τὸ τοῦ Διονύσου λεόντι ἐν Λίμναις
ἔφ' ὑγροῦ βεβηκός ἐτύγχανε, νῦν δ' ἐπὶ ξηροῦ τὴν
20 ίδρυσιν ἔχει. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ τῆς παραλίας τὸ μὲν Ταί-
ναρον ἀκτή ἔστιν ἐκκειμένη τὸ λεόντι ἔχοντα τοῦ Πο-
σειδῶνος ἐν ἄλσει ίδρυμένον· πλησίον δ' ἔστιν ἄν-
τρον, δι' οὗ τὸν Κέρβερον ἀναχθῆναι μυθεύουσιν ὑφ'
'Ηρακλέους ἔξ ἄδουν. ἐντεῦθεν δ' εἰς μὲν Φυκοῦντα
25 ἄκραν τῆς Κυρηναίας πρὸς νότον δίαρμά ἔστι σταδίων
τρισχιλίων· εἰς δὲ Πάχνην πρὸς δύσιν, τὸ τῆς Σικε-
λίας ἀκρωτήριον, τετρακισχιλίων ἔξαιροισιν, τινὲς δὲ
τετρακισχιλίων φασίν· εἰς δὲ Μαλέας πρὸς ἕω ἔξαιρο-
σιν ἐβδομήκοντα κατακολπίζοντι· εἰς δὲ "Ονου γνά-
30 θον, τακεινὴν χερρόνησον ἐνδυτέρῳ τῶν Μαλεῶν,
πεντακοσίων εἶκοσι (πρόκειται δὲ κατὰ τούτου Κύ-
θηρα ἐν τετταράκοντα σταδίοις, νῆσος εὐλίμενος, πύ-

λιν ἔχουσα διμώνυμον, ἦν ἔσχεν Εὐφυκλῆς ἐν μέρει
κτήσεως ἴδιας ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν Λακεδαιμονίων ἡγε-
μών· περίκειται δὲ υησίδια πλειστά τὰ μὲν ἐγγὺς τὰ δὲ
καὶ μικρὸν ἀπωτέρω)· εἰς δὲ Κάρυκον ἄκραν τῆς
Κρήτης ἐγγυτάτῳ πλοῦς ἔστι σταδίων ἑπτακοσίων 5
πεντήκοντα.

2 Μετὰ δὲ Ταίναρου πλέοντι ἐπὶ τὴν "Ονου γνάθον
καὶ Μαλέας Ψαμαθοῦς ἔστι πόλις· εἰτ' Ἀσίνη καὶ Γύ-
θειον τὸ τῆς Σπάρτης ἐπίνειον ἐν διακοσίοις καὶ τετ-
ταράκοντα σταδίοις ἰδρυμένον· ἔχει δ', ὥστε φασι, τὸ 10
ναύσταθμον ὄρυκτόν· εἰδ' ὁ Εὐρώπας ἐκδίδωσι με-
ταξὺ Γυθείου καὶ Ἀκραίων. τέως μὲν οὖν ὁ πλοῦς ἔστι
παρ' αἰγαὶ λὸν ὅσον διακοσίων καὶ τετταράκοντα στα-
δίων· εἰδ' ἐλῶδες ὑπέρκειται χωρίου καὶ κώμη "Ἐλος·
πρότερον δ' ἦν πόλις, καθάπερ καὶ "Ομηρός φησιν „οὗ 15
„τ' ἄρ' Ἀμύκλας εἶχον "Ἐλος τ' ἐφαλὸν πτολίεθρον.“
πτίσμα δ' Ἐλού φασὶ τοῦ Περσέως. ἔστι δὲ καὶ πεδίον
καλούμενον Λεύκη· εἰτα πόλις ἐπὶ χερρονήσου ἰδρυ-
μένη Κυπαρισσίᾳ λιμένα ἔχουσα· εἰτα ἡ "Ονου γνά-
θος λιμένα ἔχουσα· εἰτα Βοία πόλις, εἰτα Μαλέαι· στά- 20
διοι δ' εἰς αὐτὰς ἀπὸ τῆς "Ονου γνάθου πεντήκοντα
καὶ ἑκατόν· ἔστι δὲ καὶ Ἀσωπὸς πόλις ἐν τῇ Λακωνικῇ.

3 Τῶν δ' ὑφ' "Ομήρου καταλεγομένων τὴν μὲν Μέσ-
σην οὐδαμοῦ δείκνυσθαι φασι· Μεσσόαν δ' οὐ τῆς
χώρας εἶναι μέρος [ἄλλα] τῆς Σπάρτης, καθάπερ καὶ 25
τὸ Λιμναῖον, κατὰ τὸν κα. ἔνιοι δὲ κατὰ ἀποκο-
πὴν δέχονται τὴν Μεσσήνην· εἰρηται γὰρ ὅτι καὶ αὕτη
μέρος ἦν τῆς Λακωνικῆς. παραδείγμασι δὲ χρῶνται
τοῦ μὲν ποιητοῦ τῷ κρίνει καὶ δῶ καὶ μάψ, καὶ ἔτι „ἥρως
„δ' Αὐτομέδων τε καὶ "Αλκιμός,“ ἀντὶ τοῦ "Αλκιμέ- 30
δων· Ἡσιόδου δέ, ὅτι τὸ βριθὺ καὶ βριαρὸν βρεῖ λέγει.
Σοφοκλῆς δὲ καὶ "Ιων τὸ φάδιον φά· Ἐπίχαρμος δὲ τὸ

λίαν λι, Συρακώ δὲ τὰς Συρακούσσας· παρ' Ἐμπεδο-
κλεῖ δέ „μία γίνεται ἀμφοτέρων ὅψ“ ή ὅψις· καὶ παρ'
Ἀντιμάχῳ „Ἀγήμητρός τοι Ἐλευσινής οἱρὴ ὅψ.“ καὶ
τὸ ἄλφιτον ἄλφι· Εὐφορίων δὲ καὶ τὸν ἥλου λέγει ἥλ·
5 παρὰ Φιλήτᾳ δέ „δμωιδες εἰς ταλάρους λευκὸν ἄγου-
„σιν ἔρι“ [τὸ ἔριον] · „εἰς ἄνεμον δὲ τὰ πηδά“ τὰ πη-
δάλια”Ἀρατός φησι, Δωδὼ δὲ τὴν Δωδώνην Σιμιλίας.

Τῶν δ' ἄλλων τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κατανομα-
σμένων τὰ μὲν ἀνήροιται, τῶν δ' ἔχνη λείπεται, τὰ δὲ
10 μετανόμασται, καθάπερ αἱ Αὔγειαὶ Αἴγαιαι· [αἱ] γὰρ
ἐν τῇ Δοκοίδι οὐδὲν δῆλως περίεισι. τὴν δὲ Λᾶν οἱ Λιόσ-
κουροι ποτε ἐκ πολιορκίας ἐλεῖν ιστοροῦνται, ἀφ' οὗ
δὴ Λαπέρδαι προσηγορεύθησαν.

13. post προσηγορεύθησαν: καὶ Σοφοκλῆς λέγει που „τῇ τῷ Δαπέδῳ, νὴ τὸν Εὐράταν τοῖτον, νὴ τοὺς ἐν Ἀργείᾳ καὶ „κατὰ Σπάρτην φεύγεις.“

ἀφελέσθαι τὴν ἴσοτιμίαν καὶ συντελεῖν προστάξαι τῇ Σπάρτῃ. τοὺς μὲν οὖν ἄλλους ὑπακοῦσαι, τοὺς δ' Ἐλείους τοὺς ἔχοντας τὸ Ἔλος (καλεῖσθαι δὲ Εἴλωτας) ποιησαμένους ἀπόστασιν κατὰ ιράτος ἀλῶναι πολέμῳ καὶ ιριθῆναι δούλους ἐπὶ τακτοῖς τισιν, ὥστε τὸν 5 ἔχοντα μήτ' ἐλευθεροῦν ἔξειναι μήτε πωλεῖν ἔξω τῶν δρῶν τούτους· τοῦτον δὲ λεχθῆναι τὸν πρὸς τοὺς Εἴλωτας πόλεμον. σχεδὸν δέ τι καὶ τὴν εἰλωτείαν τὴν ὕστερον συμμείνασαν μέχρι τῆς Ρωμαίων ἐπικρατείας οἱ περὶ Ἀγιν εἰσὶν οἱ καταδεξαντες· τρόπουν γάρ τινα 10 δημοσίους δούλους εἶχον οἱ Λακεδαιμόνιοι τούτους, κατοικίας τινὰς αὐτοῖς ἀποδεξαντες καὶ λειτουργίας ίδιας.

5 Περὶ δὲ τῆς Λακώνιων πολιτείας καὶ τῶν γενομένων πιορ' αὐτοῖς μεταβολῶν τὰ μὲν πολλὰ παρείη τις 15 ἄν διὰ τὸ γνώριμον, τινῶν δ' ἄξιον ἵσως μνησθῆναι. Ἀχαιοὺς γὰρ τοὺς Φθιώτας φασὶ συγκατελθόντας Πέλοπι εἰς τὴν Πελοπόννησον οἰκήσαι τὴν Λακωνικήν, τοσοῦτον δ' ἀρετῇ διενεγκεῖν ὥστε τὴν Πελοπόννησον, ἐκ πολλῶν ἥδη χρόνων "Ἄργος λεγομένην, τότε Ἀχαϊ- 20 κὸν" Αργος λεχθῆναι, καὶ οὐ μόνον γε τὴν Πελοπόννησον ἀλλὰ καὶ ίδιας τὴν Λακωνικήν οὕτω προσαγορευθῆναι· τὸ γοῦν τοῦ ποιητοῦ „ποῦ Μενέλαιος ἔην; „ἢ οὐκ" Αργεος ἦεν Ἀχαιοῦ;" δέχονται τινες οὕτως „ἢ οὐκ ἦν ἐν τῇ Λακωνικῇ;" κατὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρα- 25 κλειδῶν κάθοδον Φιλονόμου προδόντος τὴν χώραν τοῖς Δωριεῦσι μετανέστησαν ἐκ τῆς Λακωνικῆς εἰς τὴν τῶν Ἰώνων τὴν καὶ νῦν Ἀχαΐαν καλούμενην· ἔροῦ- μεν δὲ περὶ αὐτῶν ἐν τοῖς Ἀχαϊκοῖς. οἱ δὲ κατασχόντες τὴν Λακωνικήν κατ' ἀρχὰς μὲν ἐσωφρόνουν, ἐπεὶ δ' 30

ούν Λυκούργῳ τὴν πολιτείαν ἐπέτρεψαν, τοσοῦτον ὑπερεβάλοντο τοὺς ἄλλους ὥστε μόνοι τῶν Ἑλλήνων καὶ γῆς καὶ θαλάττης ἐπῆρξαν, διετέλεσάν τε ἀρχοντες τῶν Ἑλλήνων ἔως ἀφείλοντο αὐτὸὺς τὴν ἡγεμονίαν Θηβαῖοι 5 καὶ μετ' ἐκείνους εὐθὺς Μακεδόνες. οὐ μὴν τελέως γε οὐδὲ τούτοις εἶξαν, ἀλλὰ φυλάττοντες τὴν αὐτονομίαν ἔριν εἶχον περὶ πρωτείων ἀεὶ πρός τε τοὺς ἄλλους Ἑλληνας καὶ πρὸς τοὺς τῶν Μακεδόνων βασιλέας· καταλυθέντων δὲ τούτων ὑπὸ Ρωμαίων, μικρὰ μέν τινα 10 προσέκρουσαν τοῖς πεμπομένοις ὑπὸ Ρωμαίων στρατηγοῖς τυραννούμενοι τότε καὶ πολιτευόμενοι μοχθηρῶς· ἀναλαβόντες δὲ σφᾶς ἐτιμήθησαν διαφερόντως καὶ ἔμειναν ἐλεύθεροι, πλὴν τῶν φιλικῶν λειτουργιῶν ἄλλο συντελοῦντες οὐδέν. νεωστὶ δ' Εὐρυκλῆς αὐτοὺς C.366
 15 ἐτάραξε δόξας ἀποχρήσασθαι τῇ Καισαρος φιλίᾳ πέρα τοῦ μετρίου πρὸς τὴν ἐπιστασίαν αὐτῶν, ἐπαύσατο δ' ἡ ἀρχὴ ταχέως, ἐκείνου μὲν παραχωρήσαντος εἰς τὸ χρεόν, τοῦ δ' υἱοῦ τὴν φιλίαν ἀπεστραμμένου τὴν τοιαύτην πάσαν· συνέβη δὲ καὶ τοὺς Ἐλευθερολάκων-
 20 νας λαβεῖν τινα τάξιν πολιτείας, ἐπειδὴ Ρωμαίοις προσέθεντο πρῶτοι οἱ περίοικοι τυραννούμενης τῆς Σπάρτης, οἵ τε ἄλλοι καὶ οἱ Εἴλωτες. Ἑλλάνικος μὲν οὖν Εὐρυσθένης καὶ Προκλέα φησὶ διατάξαι τὴν πολιτείαν,
 "Ἐφορος δ' ἐπιτιμᾷ φῆσας Λυκούργου μὲν αὐτὸν μηδα-
 25 μοῦ μεμνήσθαι, τὰ δ' ἐκείνου ἔφη γοῦν Λυκούργῳ ιερὸν ἰδρυσθαι καὶ θύεσθαι κατ' ἔτος, ἐκείνοις δὲ καίπερ οἰκισταῖς γενομένοις μηδὲ τοῦτο δεδόσθαι ὥστε τοὺς ἀπ' αὐτῶν τοὺς μὲν Εὐρυσθενίδας τοὺς δὲ Προκλείδας καλεῖ-
 30 σθαι, ἀ[λλὰ τοὺς μὲν] Ἀγίδας ἀπὸ Ἀγίδος τοῦ Εὐρυ-
 σθενούς τοὺς δ' [Εὐρυπωντίδας ἃ]πὸ Εὐρυπῶντος τοῦ Προκλέους· τοὺς μὲν [γὰρ δυναστεῦ]σαι δικαίως,

τοὺς δὲ δεξαμένους ἐκ[ήλυθας ἀνθρώπους, δι' ἐκεί-
νων δυναστεῦσαι· ὅθε[ν οὐδ' ἀρχηγέτας] νομισθῆναι
ὅπερ πᾶσιν ἀποδέδοται[ι οἰκισταῖς. Παν]σανίαν τε τῶν
Εὐρυπωνιδῶν ἐκπεσόν[τα τῆς] οἰκείας ἐν
τῇ φυγῇ συντάξαι λόγ[ον κατὰ τοῦ Λυκούρῳ]γου, νό- 5
μων ὅντος τῆς ἐκβαλούσῃ[ς αὐτὸν αἴτιον, καὶ] τοὺς
χρησμοὺς λέγειν τοὺς δοθέντα[ς αὐτῷ περὶ τῶν] πλε-
στων.

6 Περὶ δὲ τῆς φύσεως τῶν τόπων καὶ τούτων καὶ
τῶν Μεσσηνιακῶν ταῦτα μὲν ἀποδεκτέον λέγοντος 10
Εὐριπίδου· τὴν γὰρ Λακωνικὴν φησιν ἔχειν „πολὺν
„μὲν ἄροτρον, ἐκπονεῖν δ' οὐ δάμιον· κοίλη γάρ, ὅρεσι
„περίδρομος, τραχεῖά τε δυσείσβολός τε πολεμίοις,“
τὴν δὲ Μεσσηνιακὴν „καλλίκαρπον κατάρρυτόν τε
„μυρίοισι νάμασι, καὶ βουσὶ καὶ ποίμναισιν εὐβοτω- 15
„τάτην οὕτ' ἐν πνοαῖσι χείματος δυσχείμερον, οὕτ' αὖ
„τεθρίπποις ἡλίου θεομήν ἄγαν.“ καὶ ὑποβὰς τῶν
πάλιν φησιν ὃν οἱ Ἡρακλεῖδαι περὶ τῆς χώρας ἐποιή-
σαντο, τὸν μὲν πρότερον γενέσθαι „γαλας Λακαίνης
„κύριον, φαύλου χθονός·“ τὸν δὲ δεύτερον τῆς Μεσ- 20
σῆνης „ἀρετὴν ἔχούσης μεῖζον ἢ λόγῳ φράσαι.“ οἵαν
καὶ ὁ Τυρταῖος φράξει. τὴν δὲ Λακωνικὴν καὶ τὴν
Μεσσηνίαν ὁρίζειν αὐτοῦ φήσαντος „Παμισὸν εἰς θά-
„λασσαν ἔξοφμά μενον,“ οὐ συγχωρητέον, ὃς διὰ μέσης
ἥει τῆς Μεσσηνίας, οὐδαμοῦ τῆς νῦν Λακωνικῆς ἀ- 25
πτόμενος. οὐκ εὖ δὲ οὐδ' ὅτι τῆς Μεσσηνίας ὁμοίως
ἐπιθαλασσιαίς οὖσης τῇ Λακωνικῇ φησιν αὐτὴν πρό-
σω ναυτέλλοισιν εἶναι. ἀλλ' οὐδὲ τὴν Ἡλιν εὖ διορίζει
„*πρόσω δὲ βάντι ποταμὸν Ἡλις ἡ Διὸς γείτων καλεῖ-
C.367 „ται·“ εἰτε γὰρ τὴν νῦν Ἡλείαν βούλεται λέγειν, ἥτις 30
[όμο]ρεῖ τῇ Μεσσηνίᾳ, ταύτης οὐ προσάπτεται ὁ Πα-
μι[σός], ὡσπερ γε [οὐδὲ] τῆς Λακωνικῆς· εἴρηται γὰρ

ὅτι διὰ μέσης δ]εῖ τῆς Μεσσηνίας· εἴτε τὴν παλαιὰν τὴν κοίλην [καλούμενην, πολὺ μᾶλλον ἐκπίπτει τῆς ἀληθείας· διαβάν[τι γὰρ τ]ὸν Παμισὸν ἔστι πολλῇ τῆς Μεσσηνίας, εἰδ' ἡ τῶν ὥν ἄπασα καὶ *Μεσ-
5 σαίων, ἣν Τριφυλίαν ἐνάλουν, [εἰδ' ἡ Πι]σάτις καὶ ἡ Ὄλυμπία, είτα μετὰ τριακοσίους σταδίους] ἡ Ἡλις.

Γραφόντων δὲ τῶν μὲν „Δακεδαίμονα κητώεσ- 7
,,σαν“ τῶν δὲ „καιετάεσσαν,“ ἵξτοῦσι τὴν κητώεσσαν τίνα δέχεσθαι χρή, εἴτε ἀπὸ τῶν κητῶν εἴτε μεγάλην,
10 ὅπερ δοκεῖ πιθανώτερον εἶναι· τὴν δὲ καιετάεσσαν οἱ μὲν καλαμινθώδη δέχονται, οἱ δὲ ὅτι οἱ ἀπὸ τῶν σει- σμῶν φωχμοὶ *καιετοί λέγονται· καὶ ὁ καιέτας τὸ δε- σμωτήριον ἐντεῦθεν τὸ παρὰ Δακεδαιμονίοις, σπή-
λαιόν τι· ἔνιοι δὲ κώσους μᾶλλον τὰ τοιαῦτα κοιλώματα
15 λέγεσθαι φασιν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ „φηρόσιν ὀρεσκόφοισιν.“ εὔσειστος δ' ἡ Δακωνική· καὶ δὴ τοῦ Ταῦγέτου κορυ- φάς τινας ἀπορραγῆναι τινὲς μυημονεύουσιν. εἰσὶ δὲ λατομίαι λίθου πολυτελοῦς τοῦ μὲν Ταιναρίου ἐν Ται-
νάρῳ παλαιά, νεωστὶ δὲ καὶ ἐν τῷ Ταῦγέτῳ μέταλλον
20 ἀνέφεράν τινες εὐμέγεμες, χορηγὸν ἔχοντες τὴν τῶν Ρωμαίων πολυτέλειαν.

“Οτι δὲ Δακεδαίμονι διμωνύμως λέγεται καὶ ἡ χώρα 8
καὶ ἡ πόλις, δῆλος καὶ Ὁμηρος· λέγω δὲ χώραν σὺν τῇ Μεσσηνίᾳ. περὶ μὲν δὴ τῶν τόξων ὅταν λέγῃ „καλά,
25 „τὰ οἱ ἔεινος Δακεδαιμονι δῶκε τυχήσας, Ἰφιτος Εὐ-
„ρυτίδης,“ εἰτ' ἐπενέγκῃ „τὼ δ' ἐν Μεσσήνῃ ἔνυμβλή-
„την ἀλλήλουν οἰκῳ ἐν Ὁρτιλόχοιο,“ τὴν χώραν λέγει,
ἢ μέρος ἦν καὶ ἡ Μεσσηνία· οὐδὲν διήνεγκεν οὖν αὐτῷ
30 καὶ οὕτως εἰπεῖν „ἔεινος Δακεδαιμονι δῶκε τυχήσας,“
καὶ τὼ δ' ἐν Μεσσήνῃ ἔνυμβλήτην.“ ὅτι γὰρ αἱ Φηραὶ

είσιν ὁ τοῦ Ὁρτιλόχου οἶκος δῆλον „εἰς Φηρὰς δ' ἵκον-
 „τοῦ Διοκλῆος ποτὶ δῶμα, υἱέος Ὁρτιλόχοιο,“ ὃ τε Τη-
 λέμαχος καὶ ὁ Πεισίστρατος· αἱ δὲ Φηραὶ τῆς Μεσση-
 νίας εἰσίν. ὅταν δ' ἐκ τῶν Φηρῶν ὄφιμηθέντας τοὺς
 περὶ Τηλέμαχον πανημερίους φῆ σείειν ξυγόν, εἰτ⁵
 εἴκη „δύσετό τ' ἡέλιος, οἱ δ' ἔξον κοίλην Λακεδαίμονα
 „κητώεσσαν· πρὸς δ' ἄρα δώματ' ἔλαιν Μενελάου,“
 0.368 τὴν πόλιν δεῖ δέχεσθαι· εἰ δὲ μή, ἐκ Λακεδαίμονος εἰς
 Λακεδαίμονα φανεῖται λέγων τὴν ἄφιξιν· ἄλλως τε οὐ
 πιθανὸν μὴ ἐν Σπάρτῃ τὴν οἰκησιν είναι τοῦ Μενελ¹⁰
 λάου, [οὐδὲ] μὴ οὕσης ἐκεῖ τὸν Τηλέμαχον λέγειν „εἴμι
 „γὰρ εἰς Σπάρτην τε καὶ εἰς Πύλον.“ δοκεῖ [δὲ συμ]πί-
 πτειν τούτῳ τὸ τοῖς τῆς χώρας ἐπιθέτοις αὐ^{.....} εἰ
 μὴ νὴ Δια ποιητικῇ τις τοῦτο συγχωρήσει ἔξο[υσίᾳ].
 βέλ]τιον γὰρ τὴν Μεσσήνην μετὰ τῆς Λακωνικῆς καὶ 15
 Πύλουν ὑπὸ τῷ Νέστορι, μηδὲ δὴ καθ' αὐτὴν
 τάτ[τεσθαι ἐν τῷ] καταλόγῳ μηδὲ κοινωνοῦσαν τῆς
 στρα[τείας].

❶ *Μετὰ δὲ Μαλέας ὁ Ἀργολικὸς ἐκδέχεται κόλπος*
καὶ ὁ Ἐρμιονικός, ὁ μὲν μέχρι τοῦ Σκυλλαίου πλέοντι 20
ώς πρὸς ἓω βλέπων καὶ πρὸς τὰς Κυκλαίδας, ὁ δὲ ἓω-
θινώτερος τούτου μέχρι πρὸς Αἴγιναν καὶ τὴν Ἐπι-
δαυρίαν. τὰ μὲν δὴ πρῶτα τοῦ Ἀργολικοῦ Λάκωνες
ἔχουσι, τὰ δὲ λοιπὰ Ἀργεῖοι· ἐν οἷς ἔστι τῶν μὲν Λα-
κώνων τὸ Δήλιον ἱερὸν Ἀπόλλωνος ὁμάνυμον τῷ Βοι²⁵
ωτιακῷ, καὶ Μινώα φρούριον ὁμάνυμος καὶ αὖτη τῇ
Μεγαρικῇ, καὶ ἡ λιμηρὰ Ἐπιδαυρος, ὡς Ἀρτεμίδωρος
φησιν. Ἀπολλόδωρος δὲ Κυθήρων πλησίον ἴστορεῖ
ταύτην, εὐλίμενον δὲ οὖσαν βραχέως καὶ ἐπιτετμημέ-
νως λιμηρὰν εἰρησθαι ὡς ἀν λιμενηράν, μεταβεβλη³⁰
κέναι δὲ τοῦνομα. ἔστι δὲ τραχὺς ὁ παράπλους εὐθὺς
ἀπὸ Μαλεῶν ἀρξάμενος μέχρι πολλοῦ ὁ Λακωνικός,

ἔχει δ' ὅμως ὑφόρμους καὶ λιμένας. ἡ λοιπὴ δ' ἔστι παραλία εὐλίμενος, νησίδια τε πολλὰ πρόκειται αὐτῆς οὖν ἄξια μυήμης.

Τῶν δ' Ἀργείων αἱ τε Πρασιαὶ καὶ τὸ Τημένιον,²
 5 ἐν φέταπται Τήμενος, καὶ ἔτι πρότερον τὸ χωρίον,
 δι' οὗ φεῖ ποταμὸς ἡ Λέσηνη καλούμενη ὅμώνυμος τῇ
 λίμνῃ, ἐν ᾧ μεμύθευται τὰ περὶ τὴν Τίθραν. τὸ δὲ Τη-
 μένιον ἀπέχει τοῦ Ἀργούς ἔξι καὶ εἴκοσι σταδίους ὑπὲρ
 τῆς θαλάττης, ἀπὸ δὲ τοῦ Ἀργούς εἰς τὸ Ἡραῖον τετ-
 10 ταράκοντα, ἐνθεν δὲ εἰς Μυκήνας δέκα. μετὰ δὲ τὸ
 Τημένιον ἡ Ναυπλία, τὸ τῶν Ἀργείων ναύσταθμον.
 τὸ δ' ἐτυμον ἀπὸ τοῦ ταῖς ναυσὶ προσπλεῖσθαι. ἀπὸ
 τούτου δὲ πεπλάσθαι φασὶ τὸν Ναύπλιον καὶ τοὺς
 παῖδας αὐτοῦ παρὰ τοῖς νεωτέροις· οὐ γὰρ Ὁμηρον
 15 ἀμυημονῆσαι ἀν τούτων, τοῦ μὲν Παλαμήδους τοσαύ-
 την σοφίαν καὶ σύνεσιν ἐπιδειγμένου, δολοφονη-
 θέντος δὲ ἀδίκως, τοῦ δὲ Ναυπλίου τοσοῦτον ἀπεργα-
 σαμένου φθόρον ἀνθρώπων περὶ τὸν Καφηρέα. ἡ δὲ
 γενεαλογία πρὸς τῷ μυθώδει καὶ τοῖς χρόνοις διημάρ-
 20 τηται· δεδόσθω γὰρ Ποσειδῶνος εἶναι, Ἀμυμάνης δὲ
 πᾶς τὸν κατὰ τὰ Τρωικὰ ἔτι ξῶντα; ἐφεξῆς δὲ τῇ Ναυ-^{3.369}
 πλίᾳ τὰ σπήλαια καὶ οἱ ἐν αὐτοῖς οἰκοδομητοὶ λαβύριν-
 θοι, Κυκλώπεια δ' ὀνομάζουσιν.

Εἰτ' ἀλλὰ χωρία καὶ ἐφεξῆς δὲ Ἐρμιονικὸς κόλπος·³
 25 καὶ [γὰρ τοῦτον Ὁμ.]ῆρον τάξαντος ὑπὸ τῇ Ἀργείᾳ καὶ
 ἡμῖν οὐ [παροπτέος ἐνέ]φηνεν δὲ μερισμὸς τῆς περιο-
 δείας οὐτος. ἀρχεται δ' ἀπὸ *Ἀσίνης πολίχνης· εἶθ'
 Ἐρμιόνη καὶ Τροιέն· ἐν παράπλῳ δὲ πρόκειται καὶ
 Καλαυρία νῆσος, κύκλου ἔχοντα τριάκοντα σταδίων,
 30 πορθμῷ δὲ τετρασταδίῳ διεστῶσα τῆς ἡπείρου.

Εἶθ' δὲ Σαρωνικὸς κόλπος· οἱ δὲ πόντου λέγου-

σιν, οἱ δὲ πόρον, καθ' ὃ καὶ πέλαγος λέγεται Σαρωνικὸν πᾶς ὁ συνάπτων πόρος ἀπὸ τῆς Ἐρμιονικῆς καὶ τῆς περὶ τὸν Ἰσθμὸν θαλάττης τῷ τε Μυρτώῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ. τοῦ δὲ Σαρωνικοῦ Ἐπίδαυρος τέ ἐστι καὶ ἡ προκειμένη νῆσος Αἴγινα· εἰτα Κεγχρεαὶ τὸ 5 τῶν Κορινθίων ἐπὶ τὰ πρὸς ἔω μέρη ναύσταθμον· εἰτα λιμὴν Σχοινοῦς πλεύσαντι τετταράκοντα καὶ πέντε σταδίους· ἀπὸ δὲ Μαλεῶν τοὺς πάντας περὶ χιλίους καὶ ὅκτακοσίους. κατὰ δὲ τὸν Σχοινοῦντα ὁ δίολκος τὸ στενώτατον τοῦ Ἰσθμοῦ, περὶ δὲ τὸ τοῦ Ἰσθμίου 10 Ποσειδῶνος Ιερόν· ἀλλὰ [ταῦ]τα μὲν ὑπερκείσθω· ἔξω γάρ ἐστι τῆς Ἀργείας. ἀναλαβόντες δ' ἐφοδεύσωμεν πάλιν τὰ κατὰ τὴν Ἀργείαν.

5 Καὶ πρῶτον ποσαχῶς λέγεται παρὰ τῷ ποιητῇ τὸ "Ἀργος καὶ καθ' αὐτὸν καὶ μετὰ τοῦ ἐπιθέτου, Ἀχαιοὶ 15 κὸν Ἀργος καλοῦντος ἢ "Ιασον ἢ Ἰππιον ἢ Πελασγικὸν ἢ Ἰππόβοτον. καὶ γὰρ ἡ πόλις Ἀργος λέγεται „Ἀργος τε Σπάρτη τε.“ „οἱ δὲ Ἀργος τ' εἶχον Τί- „ρωνθά τε.“ καὶ ἡ Πελοπόννησος „ἥμετέρω ἐνὶ οἴκῳ „ἐν Ἀργεῖ.“ οὐ γὰρ ἡ πόλις γε ἦν οἴκος αὐτοῦ. καὶ δὴ 20 ἡ Ἑλλάς· Ἀργείους γοῦν καλεῖ πάντας καθάπερ καὶ Δαναοὺς καὶ Ἀχαιούς. τὴν δὲ οὖν ὅμωνυμίαν τοῖς ἐπιθέτοις διαστέλλεται, τὴν μὲν Θετταλίαν Πελασγικὸν Ἀργος καλῶν „ινῦν αὐτὸν δῆσσοι τὸ Πελασγικὸν „Ἀργος ἔναιον.“ τὴν δὲ Πελοπόννησον [Ἀχαιοὶ], εἰ 25 „δέ κεν Ἀργος ἴκοιμεθ' Ἀχαιοὶ“ „ἢ οὐκ Ἀργεος ἦσαν „Ἀχαιοὶ.“ σημαίνων ἐνταῦθα, διτὶ καὶ Ἀχαιοὶ ιδίως ὠνομάζοντο οἱ Πελοποννήσιοι κατ' ἄλλην σημασίαν. "Ιασόν τε Ἀργος τὴν Πελοπόννησον λέγει „εἰ πάντες „γ' ἐσίδοιεν ἀν' "Ιασόν Ἀργος Ἀχαιοί“ τὴν Πηνελό- 30

πην, ὅτι πλείους ἀν λάβοι μυηστῆρας· οὐ γὰρ τὸν δέ
ἐξ ὅλης τῆς Ἑλλάδος εἰκός, ἀλλὰ τοὺς ἐγγύς. ἐππόθο-
τον δὲ καὶ ἵππιον κοινῶς εἰρημέ.

Περὶ δὲ τῆς Ἑλλάδος καὶ Ἑλλήνων καὶ Πανελλή-
5 νων ἀντιλέγεται. Θουκυδίδης μὲν γὰρ τὸν ποιητὴν
μηδαμοῦ βαρβάρους εἰπεῖν φησι διὰ τὸ μηδὲ Ἑλληνάς
πω τὸ ἀντίκαλον εἰς ἐν ὄνομα ἀποκεκρίσθαι. καὶ Ἀπολ-
λόδωρος δὲ μόνους τοὺς ἐν Θετταλίᾳ καλεῖσθαι φησιν
“Ἑλληνας,, Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἑλληνες.“
10 Ἡσίοδον μέντοι καὶ Ἀρχίλοχον ἥδη εἰδέναι καὶ Ἑλλη-
νας λιγομένους τοὺς σύμπαντας καὶ Πανέλληνας, τὸν
μὲν περὶ τῶν Προιτίδων λέγοντα ὡς Πανέλληνες ἐμνή-
στευον αὐτάς, τὸν δὲ „ώς Πανελλήνων διξὺς ἐς Θά-
,,σον συνέδραμεν.“ ἄλλοι δ' ἀντιτιθέασιν ὅτι καὶ βαρ-
15 βάρους εἰρηκεν, εἰπών γε βαρβαροφάνους τοὺς Κᾶ-
ρας, καὶ Ἑλληνας τοὺς πάντας „ἀνδρός, τοῦ κλέος
,,εὐρὺν καθ' Ἑλλάδα καὶ μέσον“ Ἀργος·“ καὶ πάλιν „εἰ
,,δ' ἑθέλης [τραφθῆναι] ἀν' Ἑλλάδα καὶ μέσον“ Ἀργος.“

Ἡ μὲν οὖν πόλις ἡ τῶν Ἀργείων ἐν χωρίοις ἐπι-
20 πέδοις ἴδονται τὸ πλέον, ἄκραν δ' ἔχει τὴν καλούμενην
Λάρισαν, λόφον εὐεργῆ μετρίως ἔχοντα ἵερὸν Διός.
Φετὲ δ' αὐτῆς πλησίον δὲ Ἰναχος χαραδρώδης ποταμὸς
τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Λιυρκείου. περὶ δὲ τῶν μυθευομέ-
νων πηγῶν εἰρηται διότι πλάσματα ποιητῶν ἐστε· πλά-
25 σμα δὲ καὶ τὸ „Ἀργος ἄνυδρον ἐὸν Δαναοὶ θέσσαν“ Ἀρ-
,,γος ἔνυδρον,“ τῆς τε χώρας κοίλης οὕσης καὶ ποτα-
μοῖς διαρρεομένης καὶ ἔλη καὶ λίμνας παρεχομένης,
καὶ τῆς πόλεως εὐπορούμενης ὕδασι φρεάτων πολλῶν
καὶ ἐπικολαίων. αἰτιῶνται δὲ τῆς ἀπάτης τὸ,, καὶ κεν
30 „ἔλεγχιστος πολυδίψιον“ Ἀργος ἰκοίμην.“ τοῦτο δ' ἥτοι

23. post Λιυρκείου: τοῦ κατὰ τὴν Κυνουρίαν ὅρους τῆς Ἀρ-
καδίας.

ἀντὶ τοῦ πολυπόθητον κεῖται, ἡ χωρὶς τοῦ δὲ πολυψιονώς, πολύφθιορόν τε δῶμα Πελοπιδῶν τόδε[“] φησὶ Σοφοκλῆς· τὸ γάρ ἵψασθαι φθιοράν τινα καὶ βλάβην σημαίνει, νῦν μὲν πειρᾶται, τάχα δὲ ἵψεται νίας Ἀχαιῶν[“] ἄλλως τε οὐ τὴν πόλιν λέγει τὸ "Ἀργος" (οὐ γὰρ ἔκεισε δὲ μελλεν ἀφίξεσθαι) ἄλλὰ τὴν Πελοπόννησον, οὐ δῆπον καὶ ταύτην διψηρὰν οὖσαν. καὶ σὺν τῷ δὲ ὑπερβατῶς δέχονται [τινες κατὰ] συναλοιφὴν μετὰ τοῦ συνδέσμου τοῦ δέ, ἵν’ ἡ οὔτως, καὶ κεν ἐλέγχιστος πολὺ δὲ, ἵψιον "Ἀργος" ἰκοίμην,[“] πολυψιον "Ἀργοσδε 10 ἰκοίμην ἀντὶ τοῦ, εἰς "Ἀργος."[“]

C.371

Εἶς μὲν δὴ "Ιναχός" ἔστιν ὁ διαρρέων τὴν Ἀργείαν.
 8 ἄλλος δὲ ποταμὸς Ἐρασίνος ἐν τῇ Ἀργείᾳ ἔστιν· οὗτος δὲ τὰς ἀρχὰς ἐν Στυμφάλου τῆς Ἀρκαδίας λαμβάνει καὶ τῆς ἐκεῖ λίμνης τῆς καλούμενης Στυμφαλίδος, ἐν 15 ἥ τὰς ὅρνεις μυθολογοῦσι τὰς ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους τοξεύμασι καὶ τυμπάνοις ἔξελαθείσας, [ᾶς] καὶ αὐτὰς καλοῦσι Στυμφαλίδας· δύντα δὲ ὑπὸ γῆς φασὶ τὸν ποταμὸν τοῦτον ἐκπίπτειν εἰς τὴν Ἀργείαν καὶ ποιεῖν ἐπιφρόντιον τὸ πεδίον· φει δὲ καὶ ἄλλος διάστημας ἐκ τῆς 20 Ἀρκαδίας εἰς τὸν κατὰ Βοῦραν αἰγιαλόν· ἄλλος δὲ ἐστὶν δὲ Ἐρετρικός, καὶ ὁ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατὰ Βραυρῶνα. δείκνυται δὲ καὶ Ἀμυμώνη τις ιρήνη κατὰ Λέρονην. ἡ δὲ Λέρονη λίμνη τῆς Ἀργείας ἔστι καὶ τῆς Μυκηναίας, ἐν 25 ἥ τὴν Τδραν ἴστοροῦσι· διὰ δὲ τοὺς γινομένους καὶ διαφρούς ἐν αὐτῇ παροιμία τις ἔξεπεσε, „Λέρονη καιῶν.“ τὴν μὲν οὖν χώραν συγχωροῦσιν εὐνύδρειν, αὐτὴν δὲ τὴν πόλιν ἐν ἀνύδρῳ χωρίῳ κεῖσθαι, φρεάτων δὲ εὐπορεῖν (ἄ ταξις Δαναΐσιν ἀνάπτουσιν, ὡς ἐκείνων ἔξευ-

3. post γὰρ: προϊάψαι καὶ λάψαι καὶ
 4. post Ἀχαιῶν: κατὰ^{τὸν}
 χρόα καλὸν λάψῃ. Άιδι προϊάψειν. 20. post πεδίον: τὸν δὲ Ἐρασίνον καλοῦσι καὶ Ἀρσίνον.

ρουσῶν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ ἔπος * εἰπεῖν τοῦτο „Ἀργος ἄνυ-
δρον ἐὸν Δαναοὶ θέσαν“ Ἀργος ἔνυδρον⁴⁴), τῶν δὲ φρε-
άτων τέτταρα καὶ ἕρθε ἀποδειχθῆναι καὶ τιμᾶσθαι δια-
φερόντως, ἐν εὐπορίᾳ ὑδάτων ἀπορίαν εἰσάγοντες.

5 Τὴν δὲ ἀκρόπολιν τῶν Ἀργείων οἰκίσαι λέγεται ⁹
Δαναοῖς, ὃς τοσοῦτον τοὺς πρὸ αὐτοῦ δυναστεύοντας
ἐν τοῖς τόποις ὑπερβαλέσθαι δοκεῖ ὥστε κατ' Εὐριπί-
δην „Πελασγιώτας ὡνομασμένους τὸ πρὸν Δαναοὺς
„καλεῖσθαι υόμον ἔθηκ‘ ἀν‘ Ἐλλάδα.“ ἔστι δὲ καὶ τά-
10 φος αὐτοῦ κατὰ μέσην τὴν τῶν Ἀργείων ἀγοράν· κα-
λεῖται δὲ πλίνθος. οἷμαι δ’ ὅτι καὶ Πελασγιώτας καὶ
Δαναούς, ὥσπερ καὶ Ἀργείους, ἡ δόξα τῆς πόλεως
ταύτης ἀπ' αὐτῆς καὶ τοὺς ἄλλους Ἐλληνας καλεῖσθαι
παρεκεύασεν· οὕτω δὲ καὶ Ἰασίδας καὶ Ἰασονὸς Ἀργος.
15 καὶ Ἀπίαν καὶ Ἀπιδόνας οἱ νεώτεροι φασιν· Ὁμηρος
δ’ Ἀπιδόνας μὲν οὐ λέγει, Ἀπίαν δὲ τὴν πόρρω μᾶλλον.
ὅτι δ’ Ἀργος τὴν Πελοπόνυνησον λέγει, προσλαβεῖν
ἔστι καὶ τάδε „Ἀργεῖη δ’ Ἐλένη“ καὶ „ἔστι πόλις
„Ἐφύρη μυχῷ Ἀργεος“ καὶ „μέσον Ἀργος“ καὶ „πολ-
20 „λῆσιν νήσοισι καὶ Ἀργεῖ παντὶ ἀνάσσειν.“ ἄργος C.372
δὲ καὶ τὸ πεδίον λέγεται παρὰ τοῖς νεωτέροις, παρ'
‘Ομήρῳ δ’ οὐδὲ ἄπαξ· μάλιστα δ’ οἶονται Μακεδονι-
κὸν καὶ Θετταλικὸν εἶναι.

Τῶν δ’ ἀπογόνων τοῦ Δαναοῦ διαδεξαμένων τὴν ¹⁰
25 ἐν Ἀργει δυναστείαν, ἐπιμιχθέντων δὲ τούτοις τῶν
‘Αμυνθαονιδῶν ὁρμημένων ἐκ τῆς Πισάτιδος καὶ τῆς
Τριφυλίας, οὐκ ἀν θαυμάσειε τις εἰ συγγενεῖς ὅντες
οὕτω διείλοντο τὴν χώραν εἰς δύο βασιλείας τὸ πρῶ-
τον, ὥστε τὰς ἡγεμονευούσας ἐν αὐταῖς δύο πόλεις
30 ἀποδειχθῆναι πλησίου ἀλλήλων ἰδρυμένας ἐν ἐλάττο-
σιν ἡ πεντήκοντα σταδίοις, τό τε Ἀργος καὶ τὰς Μυ-
κήνας, καὶ τὸ Ἡραῖον εἶναι κοινὸν ἕρθον τὸ πρὸς τὰς

Μυκήναις ἀμφοῖν, ἐν φέτα Πολυκλείτου ξόανα τῇ μὲν τέχνῃ κάλλιστα τῶν πάντων πολυτελείᾳ δὲ καὶ μεγέθει τῶν Φειδίου λειπόμενα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν τὸ "Αργος" ἐπεκράτει μᾶλλον, εἰδίτ' αἱ Μυκῆναι μείζονα ἐπίδοσιν λαβοῦσαι διὰ τὴν τῶν Πελοπιδῶν εἰς αὐτὰς μεθίδρους· περιστάντων γὰρ εἰς τοὺς Ατρέως παῖδας ἀπάντων, Ἀγαμέμνων ὃν πρεσβύτερος παραλαβὼν τὴν ἔξουσίαν ἀμα τύχη τε καὶ ἀρετῆ πρὸς τοὺς οὓσι πολλὴν προσεκτήσατο τῆς χώρας, καὶ δὴ καὶ τὴν Ἀργολικὴν τῇ Μυκήναια προσέθηκε. Μενέλαος μὲν δὴ τὴν Λακωνίαν ἔσχε, Μυκήνας δὲ καὶ τὰ μέχρι Κορίνθου καὶ Σικυῶνος καὶ τῆς Ιάνων μὲν τότε καὶ Αἴγιαλέων καλούμένης Ἀχαιῶν δὲ ὑστερον Ἀγαμέμνων παρέλαβε. μετὰ δὲ τὰ Τραιακὰ τῆς Ἀγαμέμνονος ἀρχῆς καταλυθείσης ταπεινωθῆναι [συνέβη] Μυκήνας καὶ μάλιστα 15 μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον. κατασχόντες γὰρ οὗτοι τὴν Πελοπόννησον ἔξεβαλον τοὺς πρότερον κρατοῦντας ὥσθ' οἱ τὸ "Αργος" ἔχοντες εἶχον καὶ τὰς Μυκήνας συντελούσας εἰς ἐν· χρόνοις δ' ὑστερον κατεσκάφησαν ὑπ' Ἀργείων ὥστε νῦν μηδὲ ἔχνος εὑρίσκεται 20 σθαι τῆς Μυκηναίων πόλεως. ὅπου δὲ Μυκῆναι τοιαύτα πεπόνθασιν, οὐ δεῖ θαυμάζειν οὐδὲ εἰ τινες τῶν ὑπὸ τῷ "Αργει" καταλεγομένων ἀφανεῖς νῦν εἰσιν. ὁ μὲν δὴ κατάλογος ἔχει οὕτως „οἱ δὲ "Αργος τ' εἶχον Τίρροντα τε τειχίοιςσαν Ἐρμιόνην τ' "Ασίνην τε, [βα-25 „θὺ]ν κατὰ οὐλόπον ἔχούσας, Τροιζῆν" Ηιόνας τε καὶ „ἀμπελόεντ" Ἐπίδαυρον, οἵ τ' ἔχον Αἴγιναν Μάσητά „τε, κοῦροι Ἀχαιῶν.“ τούτων δὲ περὶ μὲν τοῦ "Αργοντοῦ" εἰρηται, περὶ δὲ τῶν ἄλλων λεκτέον.

11 Τῇ μὲν οὖν Τίρρονθι ὁρμητηρέωφ χρήσασθαι δοκεῖ 30 Προΐτος καὶ τειχίσαι διὰ Κυκλώπων, οὓς ἐπτὰ μὲν εἶναι καλεῖσθαι δὲ γαστερόχειρας τρεφομένους ἐν τῇς

- τέχνης, ἥκειν δὲ μεταπέμπτους ἐκ Αυγίας· καὶ ἵσως^{0.373}
 τὰ σπῆλαια τὰ περὶ τὴν Ναυπλίαν καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς
 ἔργα τούτων ἐπώνυμά ἔστιν. ἡ δὲ ἀκρόπολις Λίκυμνα
 ἐπώνυμος Λικυμνίου, διέχει δὲ τῆς *Ναυπλίους περὶ⁵
 δῶδεκα σταδίους· ἔργμος δ' ἔστι λάκεινη καὶ ἡ πλη-
 σίον Μιδέα, ἐτέρα οὖσα τῆς Βοιωτικῆς· ἔκεινη γὰρ
 ἔστι Μίδεια ὡς πρόνοια, αὕτη δὲ Μιδέα ὡς Τεγέα·
 ταύτη δ' ὅμοιος Πρόσυμνα αὕτη λεόδων ἔχουσα
 "Ηρας· ἥρήμωσαν δὲ τὰς πλείστας οἱ Ἀργεῖοι ἀπειθού-¹⁰
 σας. οἱ δ' οἰκητορες οἱ μὲν ἐκ [τῆς] Τίρουνθος ἀπῆλθον
 εἰς Ἐπίδαυρον, οἱ δὲ ἐ[κ τῆς] εἰς τὸν Ἀλιεῖς κα-
 λουμένους, οἱ δ' ἐκ τῆς Ἀ[σίνης (ἔστι δ')] αὕτη κάμη
 τῆς Ἀργείας πλησίον Ναυπλίας) ὑπὸ Λακεδαιμονίων
 εἰς τὴν Μεσσηνίαν μετωκισθ[ησαν, ὅπου] καὶ ἡ ὁμώ-¹⁵
 νυμος τῇ Ἀργολικῇ Ἀσίνῃ πολί[νη]. οἱ γὰρ Λακεδαι-
 μόνιοι, φησὶν ὁ Θεόπομπος, πολλὴν κατακτησάμενοι
 τῆς ἀλλοτρίας εἰς ταύτην κατάκιξον οὓς ἀν ύποδεξαν-
 το τῶν φυγόντων ἐπ' αὐτο[ύς· καὶ οἱ] ἐκ τῆς Ναυπλίας
 ἔκεισε ἀνεχώρησαν.
 20 'Ερμιόνη δ' ἔστι τῶν οὐκ ἀσήμων πόλεων, ἡς τὴν¹²
 παραλίαν ἔχουσιν Ἀλιεῖς λεγόμενοι θαλαττονοργοί τι-
 νεις ἄνδρες. παρ' Ἐρμιονεῦσι δὲ τεθρύληται τὴν εἰς
 "Αἰδουν κατάβασιν σύντομον εἶναι· διόπερ οὐκ ἐντιθέ-
 ασιν ἐνταῦθα τοῖς νεκροῖς ναῦλον.
 25 Δρυόπων δ' οἰκητήριόν φασι * καὶ τὴν Ἀσίνην,¹³
 εἰτ' ἐκ τῶν περὶ Σπερχειὸν τόπων δύτας αὐτοὺς Δρύ-
 οπος τοῦ Ἀρκάδος κατοικίσαντος ἐνταῦθα, ὡς Ἀρι-
 στοτέλης φησίν, εἴθ' Ἡρακλέους ἐκ τῆς περὶ τὸν Παρ-
 νασσὸν Δρυίδος ἔξελάσαντος αὐτούς. τὸ δὲ Σκύλ-³⁰
 λαιον τὸ ἐν Ἐρμιόνῃ ὠνομάσθαι φασὶν ἀπὸ Σκύλλης
 τῆς Νίσου θυγατρός, ἦν ἐξ ἔρωτος προδοῦσαν Μίνω
 τὴν Νίσαιαν καταποντωθῆναί φασιν ὑπ' αὐτοῦ, δεῦρο

δ' ἐκκυμανθεῖσαν ταφῆς τυχεῖν. Ἡιόνες δὲ κώμη τις
ἥν, ἥν ἐρημώσαντες Μυκηναῖοι ναύσταθμον ἐποίησαν,
ἀφαν[ισθεῖσα δ' ὕστερον] οὐδὲ ναύσταθμόν ἔστιν.

14 Τροιξὴν δὲ ιερά ἔστι Ποσειδῶνος, ἀφ' οὗ καὶ Πο-
σειδωνία ποτὲ ἐλέγετο· ὑπέροχειται δὲ τῆς θαλάττης εἰς 5
πεντεκαίδεκα σταδίους, οὐδὲ αὕτη ἄσημος πόλις. πρό-
κειται δὲ τοῦ λιμένος αὐτῆς Πώγωνος τοῦνομα Κα-
λαυρία νησίδιον ὅσον τριάκοντα σταδίων ἔχον τὸν κύ-
κλον· ἐνταῦθα ἥν ἄσυλον Ποσειδῶνος ιερόν, καὶ φασι
τὸν θεὸν τοῦτον ἀλλάξασθαι πρὸς μὲν Λητὰ τὴν Κα- 10
C.374 λαυρίαν ἀντιδόντα Δῆλον, πρὸς Ἀπόλλωνα δὲ Ταίνα-
ρον ἀντιδόντα Πυθώ. Ἐφορος δὲ καὶ τὸν χρησμὸν λέ-
γει „ἴσον τοι Δῆλόν τε Καλαύρειάν τε νέμεσθαι, Πυ-
θώ τ' ἡγαθέην καὶ Ταίναρον ἡνεμόεντα.“ ἥν δὲ καὶ
Ἀμφικτυνοί τις περὶ τὸ ιερὸν τοῦτο ἐπτὰ πόλεων αὖ 15
μετεῖχον τῆς θυσίας· ἥσαν δὲ Ἐρμιών Ἐπίδαυρος Αἴ-
γινα Ἀθῆναι Πρασιεῖς Ναυπλιεῖς Ὁρχομενὸς ὁ Μινύ-
ειος· ὑπὲρ μὲν οὖν Ναυπλιέων Ἀργεῖοι συνετέλουν,
ὑπὲρ Πρασιέων δὲ Λακεδαιμόνιοι. οὔτω δ' ἐπεκράτη-
σεν ἡ τιμὴ τοῦ θεοῦ τούτου παρὰ τοῖς Ἑλλησιν ὥστε 20
καὶ Μακεδόνες δυναστεύοντες ἥδη μέχρι δεύτρῳ ἐψύ-
λαττόν πως τὴν ἀσυλίαν, καὶ τοὺς ἵκετας ἀποσπᾶν
ἥδοῦντο τοὺς εἰς Καλαυρίαν καταφυγόντας· ὅπου γε
οὐδὲ Δημοσθένη ἐδάρρησεν Ἀρχίας βιάσασθαι στρα-
τιώτας ἔχων, φέρετετάκτο ὑπὸ Ἀντικάτρου ξῶντα 25
ἀγαγεῖν κάκεῖνον καὶ τῶν ἄλλων φητόρων ὃν ἀν εὗρη
τῶν ἐν ταῖς αἰτίαις ὅντων ταῖς παραπλησίοις, ἀλλὰ
πειθεῖν ἐπειράτο· οὐ μὴν ἐπεισέγε, ἀλλ' ἐφθη φαρ-
μάκῳ παραλύσας ἔαυτὸν τοῦ ξῆν. Τροιξὴν δὲ καὶ Πιτ-
θεὺς οἱ Πέλοπος ὁρμηθέντες ἐκ τῆς Πισάτιδος ὁ μὲν 30
τὴν πόλιν ὁμώνυμον ἔαυτοῦ κατέλιπεν, ὁ δὲ Πιτθεὺς
ἔβασίλευσεν ἐκεῖνον διαδεξάμενος. Ἀνθῆς δ' ὁ προ-

κατέχων πλεύσας Ἀλιμαρνασὸν ἔκπισεν· ἐροῦμεν δ'
ἐν τοῖς Καρικοῖς οὐ καὶ τοῖς Τραικοῖς.

‘Η Ἐπίδαυρος δ’ ἐκαλεῖτο Ἐπίταυρος· φησὶ δὲ 15
‘Αριστοτέλης κατασχεῖν αὐτὴν Κάρας, ὥσπερ καὶ Ἐρ-
5 μίδνα, τῶν δὲ Ἡρακλειδῶν κατελθόντων Ἰωνας αὐ-
τοῖς συνοικῆσαι τοὺς ἐκ τῆς Ἀττικῆς τετραπόλεως συν-
επομένους εἰς Ἀργος. καὶ αὕτη δ’ οὐκ ἄσημος ή πόλις
καὶ μάλιστα διὰ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ Ἀσκληπιοῦ θερα-
πεύειν νόσους παντοδαπὰς πεπιστευμένου, καὶ τὸ 10
10 ρὸν πλῆρες ἔχοντος ἀεὶ τῶν τε καμνόντων καὶ τῶν
ἀνακειμένων πινάκων, ἐν οἷς ἀναγεγραμμέναι τυγχά-
νουσιν αἱ θεραπεῖαι, καθάπερ ἐν Κῷ τε καὶ Τρίκηῃ.
κεῖται δ’ ἡ πόλις ἐν μυχῷ τοῦ Σαρωνικοῦ κόλπου, τὸν
περίπλουν ἔχονσα σταδίων πεντεκαίδεκα, βλέπουσα
15 πρὸς ἀνατολὰς θερινάς περικλείεται δ’ ὅρεσιν ὑψη-
λοῖς μέχρι πρὸς τὴν θάλατταν, ὥστ’ ἐρυμνὴ κατεσκεύ-
ασται φυσικῶς πανταχόθεν. μεταξὺ δὲ Τροιζῆνος καὶ
Ἐπιδαύρου χωρίου ἦν ἐρυμνὸν Μέθανα καὶ χερρόνη-
σος διώνυνμος τούτῳ· παρὰ Θουκυδίδῃ δὲ ἐν τισιν
20 ἀντιγράφοις Μεθώνη φέρεται ὁμονύμως τῇ Μακεδο-
νικῇ, ἐν ᾧ Φίλιππος ἔξεκόπη τὸν ὄφθαλμὸν πολιορ-
κῶν· διόπερ οἵσται τινας ἔξαπατηθέντας δὲ Σκήψιος. 375
Δημήτριος τὴν ἐν τῇ Τροιζηνίᾳ Μεθώνην ὑπονοεῖν,
καθ’ ἣς ἀράσασθαι λέγεται τοὺς ὑπ’ Ἀγαμέμνονος
25 πεμφθέντας ναυτολόγους μηδέποτε παύσασθαι [τοῦ]
τειχοδομεῖν, οὐ τούτων ἀλλὰ τῶν Μακεδόνων ἀνα-
νευσάντων, ὡς φησὶ Θεόκομπος· τούτους δ’ οὐκ εἰ-
κὸς ἐγγὺς ὅντας ἀπειθῆσαι.

Αἴγινα δ’ ἔστι μὲν καὶ τόπος τις τῆς Ἐπιδαυρίας, 16
30 ἔστι δὲ καὶ ηῆσος πρὸ τῆς ἡπείρου ταύτης, ἦν ἐν τοῖς
ἀρτίως παρατεθεῖσιν ἔκεσι βούλεται φράξειν δὲ ποιη-
τῆς· διὸ καὶ γράφουσί τινες „ηῆσόν τ’ Αἴγιναν“ ἀντὶ

τοῦ „οὗ τ' ἔχον Αἴγιναν,“ διαστελλόμενοι τὴν ὁμωνυμίαν. ὅτι μὲν οὖν τῶν σφόδρα γνωρίμων ἐστὶν ἡ νῆσος, τί δεῖ λέγειν; ἐντεῦθεν γὰρ Αἰακός τε λέγεται καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ καὶ θαλαττορατήσασά ποτε καὶ περὶ πρωτείων ἀμφισβητήσασα πρὸς Ἀθηναίους ἐν τῇ περὶ Σαλαμίνα ναυμαχίᾳ κατὰ τὰ Περσικά. λέγεται δὲ σταδίων ἑκατὸν ὄγδοην ταῦτα ὁ κύκλος τῆς νῆσου, πόλιν δ' ὁμώνυμον ἔχει τετραμμένην πρὸς λίβα· περιέχουσι δ' αὐτὴν ἥ τε Ἀττικὴ καὶ ἡ Μεγαρὶς καὶ τῆς Πελοποννήσου τὰ μέχρι Ἐπιδαύρου, σχεδόν τι ἑκατὸν σταδίους ἑκάστη διέχουσα· τὸ δὲ ἑωθινὸν μέρος καὶ τὸ νότιον πελάγει αἰλύζεται τῷ τε Μυρτώῳ καὶ τῷ Κορητικῷ· νησίδια δὲ περίκειται πολλὰ μὲν πρὸς τῇ ἡπείρῳ, Βέλβινα δὲ πρὸς τὸ πέλαγος ἀνατείνουσα. ἡ δὲ χώρα αὐτῆς κατὰ βάθους μὲν γεώδης ἐστί, περιφράσας δ' ἐπιπολῆς καὶ μάλιστα ἡ πεδιάς· διόπερ ψιλὴ πάσσα ἐστι, κριθοφόρος δὲ ίκανως. Μυρμιδόνας δὲ αιληθῆναι φασιν οὐχ ὡς ὁ μῦθος τοὺς Αἴγινητας, ὅτι λοιμοῦ μεγάλου συμπεσόντος οἱ μύρμηνες ἀνθρώποι γένοιντο κατ' εὐχὴν Αἰακοῦ, ἀλλ' ὅτι μυρμήνων τρόπον δρύπτοντες τὴν γῆν ἐπιφέροιεν ἐπὶ τὰς πέτρας ὥστ' ἔχειν γεωργεῖν, ἐν δὲ τοῖς δρύγυμασιν οἰκεῖν φειδόμενοι πλίνθων. ὀνομάζετο δ' Οἰνώνη πάλαι. ἐπώησαν δ' αὐτὴν Ἀργεῖοι καὶ Κορῆτες καὶ Ἐπιδαύριοι καὶ Δωριεῖς, ὕστερον δὲ κατεκληρούχησαν τὴν νῆσον Ἀθηναῖοι· ἀφελόμενοι δὲ Αἰακεδαιμόνιοι τοὺς Ἀθηναίους τὴν νῆσον ἀπέδοσαν τοῖς ἀρχαίοις οἰκήτορσιν. ἀποίκους δ' ἐστειλαν Αἴγινηται εἰς τε Κυδω-

23. πρὸς Ἑλεῖς
θεραῖς,
ἥς ἡ παροιμία „Οἰνώνη τὴν χαράδραν.“

νίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ εἰς Ὀμβρικούς. "Ἐφορος δ' ἐν Αἴγινη ἄργυρον πρῶτον κοπῆναι φησιν ὑπὸ Φείδωνος· ἐμπόριον γὰρ γενέσθαι, διὰ τὴν λυπρότητα τῆς χώρας τῶν ἀνθρώπων θαλαττουργούντων ἐμπορικῶς,
5 ἀφ' οὗ τὸν δῶπον Αἴγιναίαν ἐμπολὴν λέγεσθαι.

'Ο δὲ ποιητὴς ἔνια μὲν χωρά λέγει συνεχῶς ὅσπερ 17
καὶ κεῖται „οὖ δ' Ὁρίην ἐνέμοντο καὶ Αὐλίδα“ „οὖ δ'
„Ἄργος τ' εἰχον Τίρουνθά τε“ „Ἐρμιόνην τ' Ἀσίνην τε“
„Τροιέην“ Ηιόνας τε.“ ἄλλοτε δ' οὐχ ὡς ἔστι τῇ τάξει
10 „Σχοῖνόν τε Σκᾶλόν τε“ „Θέσπειαν Γραῖάν τε.“ τά τ'
ἐν ἡπείρῳ ταῖς νήσοις συμφράζει „οὖ δ' Ἰθάκην εἰχον,
„καὶ Κροκύλει ἐνέμοντο.“ τὰ γὰρ Κροκύλεια ἐν τοῖς
Ἀκαρνάσιν. οὕτω δὲ καὶ νῦν τῇ Αἴγινῃ τὸν Μάστηα
συνηψεν ὅντα τῆς Ἀργολικῆς ἡπείρου. Θυρέας δὲ Ὀμη-
15 ρος μὲν οὐκ ἀνόμασεν, οἱ δ' ἄλλοι θρυλοῦσι· περὶ
αὖλην Ἀργείοις καὶ Λακεδαιμονίοις συνέστη ἀγῶν τρια-
κοσίοις πρὸς τριακοσίους· ἐνίκων δὲ Λακεδαιμόνιοι
στρατηγούντος Ὀθρυάδα· εἶναι δέ φησι τὸ χωρίον τοῦ-
το Θουκυδίδης ἐν τῇ Κυνουρίᾳ κατὰ τὴν μεθορίαν τῆς
20 Ἀργείας καὶ τῆς Λακωνικῆς. εἰσὶ δὲ καὶ Τσίαι τόπος
γυνώριμος τῆς Ἀργολικῆς καὶ Κεγχρεά, αἱ κεῖται ἐπὶ
τῇ ὁδῷ τῇ ἐκ Τεγέας εἰς Ἀργος διὰ τοῦ Παρθενίου
ὅρους. "Ομηρος δ' αὐτὰς οὐκ οἶδεν.

Τῶν [δὴ] κατὰ Πελοπόννησον πόλεων ἐνδοξότα- 18
25 ται γεγόνασι καὶ μέχρι νῦν εἰσιν „Ἄργος τε Σπάρτη
„τε,“ διὰ δὲ τὸ πολυμόρυλητον ἥκιστα δεῖ μακρολογεῖν
περὶ αὐτῶν· τὰ γὰρ ὑπὸ πάντων εἰρημένα λέγειν δό-
ξομεν. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν ηὔδοκιμει τὸ Ἀργος μᾶλ-

23. post ὅρους: καὶ τοῦ Κρεοπώλου. ib. post οἰδεν: οὐδὲ
τὸ Λύριειον, οὐδὲ Ὀρνεάς· καῦμαι δὲ εἰσὶ τῆς Ἀργείας, ή μὲν ὅμω-
νυμος τῷ ὅρει τῷ [Λυρκείῳ], αἱ δὲ ταῖς Ὀρνεαῖς ταῖς μεταξὺ Κα-
ρύνθου καὶ Σικυώνος ὕδρυμέναις.

λον, ὑστερον δὲ καὶ μέχρι παντὸς ὑπερεβάλοντο Λα-
κεδαιμόνιοι καὶ διετέλεσαν τὴν αὐτονομίαν φυλάττον-
τες, πλὴν εἴ τι που μικρὸν προσπταίειν αὐτοὺς συνέ-
βαινεν. Ἀργεῖοι δὲ Πύρρον μὲν οὐκ ἐδέξαντο (ἀλλὰ
καὶ πρὸ τοῦ τείχους ἔπεισε γραφίου τινός, ὡς ἔοικε,⁵
κεραμίδα ἀφέντος ἄνωθεν ἐπὶ τὴν κεφαλήν) ὑπ' ἄλ-
C.377λοις δ'¹⁰ ἐγένοντο βασιλεῦσι, μετασχόντες δὲ τοῦ τῶν
'Αχαιῶν συστήματος σὺν ἔκείνοις εἰς τὴν τῶν Ρωμαίων
ἔξουσίαν ἥλθον, καὶ νῦν συνέστηκεν ἡ πόλις δευτε-
ρεύουσα τῇ τάξει μετὰ τὴν Σπάρτην.

19 Ἐξῆς δὲ λέγωμεν περὶ τῶν ὑπὸ Μυκήναις καὶ τῷ
'Αγαμέμνονι τεταγμένων τόπων ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν
νεῶν· ἔχει δ' οὕτω τὰ ἔπη, οἵ δὲ Μυκήναις εἰχον, ἐν-
,κτίμενον πτολεθρον, ἀφνειόν τε Κόρινθου ἐντιμέ-
,νας τε Κλεωνάς, Ὁρνειάς τ' ἐνέμοντο Ἀραιθυρέην 15
,[τ' ἐρατεινὴν] καὶ Σικυῶν', ὅθ' [ἄρ'] Ἀδρηστος πρᾶτ'
,ἐμβασίλευεν, οἴ δ' Τπερησίην τε καὶ αἰπεινὴν Γο-
,νόεσσαν Πελλήνην τ' εἰχον, ἥδ' Αἴγιον ἀμφενέ-
,μοντο, Αἴγιαλόν τ' ἀνὰ πάντα καὶ ἀμφ' Ἐλάκην εὐ-
,ρεταν.¹¹ αἱ μὲν οὖν Μυκῆναι νῦν οὐκέτ' εἰσίν, ἔκτισε 20
δ' αὐτὰς Περσεύς, διεδέξατο δὲ Σθένελος, εἰτ' Εὔρυ-
σθεύς· οἱ δ' αὐτοὶ καὶ τοῦ Ἀργούς ἥρξαν. Εὔρυσθεύς
μὲν οὖν στρατεύσας εἰς Μαραθῶνα ἐπὶ τοὺς Ἡρακλέ-
ούς παῖδας καὶ Ἰόλαον βοηθησάντων Ἀθηναίων ἰστο-
ρεῖται πεσεῖν ἐν τῇ μάγη, καὶ τὸ μὲν ἄλλο σῶμα Γαρ- 25
γηττοῖ ταφῆναι, τὴν δὲ κεφαλὴν χωρὶς ἐν Τρικορύνθῳ,
ἀποκόψαντος αὐτὴν Ἰολάου περὶ τὴν κρήνην τὴν Μα-
καρίαν ὑπὸ ἀμαξιτόν· καὶ ὁ τόπος καλεῖται Εὔρυσθέως
κεφαλή. αἱ δὲ Μυκῆναι μετέπεισον εἰς τοὺς Πελοπίδας
δομηθέντας ἐκ τῆς Πισάτιδος, εἰτ' εἰς τοὺς Ἡρακλεί- 30
δας καὶ τὸ Ἀργος ἔχοντας μετὰ δὲ τὴν ἐν Σαλαμῖνι
ναυμαχίαν Ἀργεῖοι μετὰ Κλεωναίων καὶ Τεγεατῶν

ἐπελθόντες ἄρδην τὰς Μυκήνας ἀνεῖλον καὶ τὴν χώραν διενείμαντο. διὰ δὲ τὴν ἐγγύτητα τὰς δύο πόλεις ὡς μίαν οἱ τραχικοὶ συνωνύμως προσαγορεύουσιν, Εὐριπίδης δὲ καὶ ἐν τῷ αὐτῷ δράματι τοτὲ μὲν Μυκήνας 5 καλῶν τοτὲ δ' Ἀργος τὴν αὐτὴν πόλιν, παθάπερ ἐν Ἰφιγενείᾳ καὶ Ὁρέστῃ. Κλεωναὶ δ' εἰσὶ πόλισμα ἐπὶ τῇ ὁδῷ κείμενον τῇ ἐξ Ἀργους εἰς Κόρινθον ἐπὶ λόφου περιοικουμένου πανταχόθεν καὶ τετειχισμένου καλῶς, ὥστ' οἰκεῖως εἰρηῆσθαι μοι δοκεῖ τὸ ἐντιμένας Κλεωνάς.¹⁰ ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Νεμέα μεταξὺ Κλεωνῶν καὶ Φλιοῦντος καὶ τὸ ἄλσος, ἐν φέρεται τὰ Νέμεα συντελεῖν ἔθος τοῖς Ἀργείοις, καὶ τὰ περὶ τὸν Νεμεαῖον λέοντα μυθευόμενα, καὶ ἡ Βέμβινα κάθη· διέχουσι δ' αἱ Κλεωναὶ τοῦ μὲν Ἀργους σταδίους ἐκατὸν εἴκοσι, Κορίνθου δὲ ὄγδοήκοντα. καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ Ἀιροκορίνθου κατωπτεύσαμεν τὸ ιτίσμα.

Οἱ δὲ Κόρινθος ἀφνειὸς μὲν λέγεται διὰ τὸ ἐμπόριον,<sup>C.378
20</sup> ἐπὶ τῷ Ἰσθμῷ κείμενος καὶ δυεῖν λιμένων [ῳν] κύριος, ὃν δὲ τῆς Ἀσίας δὲ τῆς Ἰταλίας ἐγγύς 20 ἐστι καὶ φαδίας ποιεῖ τὰς ἐκατέρωθεν ἀμοιβάς τῶν φορτίων πρὸς ἀλλήλους τοῖς τοσοῦτον ἀφεστᾶσιν. ἢν δ' ὥσπερ δὲ πορθμὸς οὐκ εὔπλοις δὲ κατὰ τὴν Δικελλίαν τὸ παλαιόν, οὗτοι καὶ τὰ πελάγη καὶ μάλιστα τὸ ὑπὲρ Μαλεῶν διὰ τὰς ἀντικνοίας ἀφ' οὗ καὶ παροιμιάζονται „Μαλέας δὲ κάμψας ἐπιλάθου τῶν οἰκαδες.“ ἀγαπητὸν οὖν ἐκατέροις ἦν τοῖς τε ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ ἐκ τῆς Ἀσίας ἐμπόροις, ἀφεῖσι τὸν περὶ Μαλέας πλοῦν, κατάγεσθαι τὸν φόρτον αὐτόθι· καὶ πεξῆ ὁ δὲ τῶν ἐκκομιζομένων ἐκ τῆς Πελοποννήσου καὶ τῶν εἰσαγομένων 30 ἐπιπτε τὰ τέλη τοῖς τὰ κλεῖθρα ἔχουσι. διέμεινε δὲ

τοῦτο καὶ εἰς ὕστερον μέχρι παντός· τοῖς δ' ὕστερον καὶ πλείω προσεγίνετο πλεονεκτήματα· καὶ γὰρ ὁ Ἰσθμικὸς ἀγὼν ἐκεῖ συντελούμενος ὅχλους ἐπῆγετο, καὶ οἱ Βακχιάδαι τυραννήσαντες, πλούσιοι καὶ πολλοὶ καὶ γένος λαμπροί, διακόσια ἔτη σχεδόν τι κατέσχον⁵ τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ ἐμπόριον ἀδεῶς ἐκαρπώσαντο· τούτους δὲ Κύψελος καταλύσας αὐτὸς ἐτυράννησε, καὶ μέχρι τριμονίας ὁ οἶκος αὐτοῦ συνέμεινε· τοῦ δὲ περὶ τὸν οἶκον τοῦτον πλούτον μαρτύριον τὸ Ὄλυμπιασιν ἀνάθημα Κυψέλου, σφροήλατος χρυσοῦς ἀνδριὰς¹⁰ εὑμεγέθης [Διός]. Αημάρατός τε, εἰς τῶν ἐν Κορίνθῳ δυναστευσάντων, φεύγων τὰς ἐκεῖ στάσεις τοσοῦτον ἡνέγκατο πλοῦτον οἶκοθεν εἰς τὴν Τυρρηνίαν ὥστε αὐτὸς μὲν ἥρξε τῆς δεξαμένης αὐτὸν πόλεως, ὁ δ' υἱὸς αὐτοῦ καὶ Ρωμαίων κατέστη βασιλεύς. τό τε τῆς Ἀφροδίτης¹⁵ λερὸν οὕτω πλούσιον ὑπῆρξεν ὥστε πλείους ἦχοις ιεροδυνύλους ἐκέκτητο ἐταίρας, ἃς ἀνετίθεσαν τῇ θεῷ καὶ ἄνδρες καὶ γυναικες. καὶ διὰ ταύτας οὖν πολυωχλεύτο ἡ πόλις καὶ ἐπλουτίζετο· οἱ γὰρ ναυάκηροι φαδίως ἔξανηλίσκοντο, καὶ διὰ τοῦτο ἡ παροιμία φησίν²⁰ „οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐσ Κόρινθόν ἐσθ’ ὁ πλοῦς.“ καὶ δὴ καὶ μημονεύεται τις ἐταίρα πρὸς τὴν ὀνειδίζουσαν²⁵ ὅτι οὐ φιλεργὸς εἴη οὐδὲ ἐρίων ἀπτοίτο, εἰπεῖν „ἔγω, μέντοι ἡ τοιαύτη τρεῖς ἥδη καθεῖλον ίστοὺς ἐν βραχεῖ χρόνῳ τούτῳ.“²⁵

21 *Tὴν δὲ τοποθεσίαν τῆς πόλεως, ἐξ ᾧ Ιεράνυμός C.379τε εἰρηκε καὶ Εὔδοξος καὶ ἄλλοι καὶ αὐτὸς δὲ εἶδομεν νεωστὶ ἀναληφθείσης ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, τοιάνδε εἰναι συμβιάνει. ὅρος ὑψηλὸν ὅσου τριῶν ἡμισυ σταδίων ἔχον τὴν κάθετον, τὴν δὲ ἀνάβασιν καὶ τριάκοντα 30 σταδίων, εἰς δέξειαν τελευτῇ κορυφήν· καλεῖται δὲ Ἀκροκόρινθος, οὗ τὸ μὲν πρὸς ἄρκτον μέρος ἐστὶ τὸ*

μάλιστα ὅρθιον, ὑφ' ᾧ κεῖται ἡ πόλις ἐπὶ τραπεζώδους
 ἐπιπέδου χωρίου πρὸς αὐτῇ τῇ φίξῃ τοῦ Ἀκροκόριν-
 θου. αὐτῆς μὲν οὖν τῆς πόλεως ὁ κύκλος καὶ τετυρά-
 κοντα σταδίων ὑπῆρχεν· ἐτετέχιστο δ' ὅσον τῆς πό-
 λεως γυμνὸν ἦν τοῦ ὄφους· συμπεριείληπτο δὲ τῷ
 περιβόλῳ τούτῳ καὶ τὸ ὄφος αὐτὸν ὁ Ἀκροκόρινθος ἢ
 δυνατὸν ἦν τειχισμὸν δέξασθαι, καὶ ἡμῖν ἀναβαίνου-
 σιν ἦν δῆλα τὰ ἔρεπτα τῆς σχοινίας· ὥσθ' ἡ πᾶσα πε-
 φίμετρος ἐγένετο περὶ πέντε καὶ ὄγδοήκοντα σταδίων.
 10 ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων μερῶν ἥττον ὅρθιόν ἐστι τὸ ὄφος,
 ἀνατέταται μέντοι ἐνθένδε ἵκανῶς καὶ περίοπτόν ἐστιν.
 ἡ μὲν οὖν κορυφὴ ναῦδιον ἔχει Ἀφροδίτης, ὑπὸ δὲ τῇ
 κορυφῇ τὴν Πειρήνην εἶναι συμβαίνει κορήνην, ἕκρυ-
 σιν μὲν οὐκ ἔχουσαν μεστὴν δ' ἀεὶ διαυγοῦσι καὶ ποτί-
 15 μον ὕδατος. φασὶ δὲ καὶ ἐνθένδε καὶ ἔξ ἄλλων ὑπονό-
 μων τινῶν φλεβίων συνθλίβεσθαι τὴν πρὸς τῇ φίξῃ
 τοῦ ὄφους κορήνην ἐκρέουσαν εἰς τὴν πόλιν ὥσθ' ἵκα-
 νῶς ἀπ' αὐτῆς ὑδρεύεσθαι. ἐστι δὲ καὶ φρεάτων εὐ-
 πορία κατὰ τὴν πόλιν, λέγουσι δὲ καὶ κατὰ τὸν Ἀκρο-
 20 κόρινθον· οὐ μὴν ἡμεῖς γε εἰδομεν. τοῦ δ' οὖν Εὐρι-
 πίδου φήσαντος οὕτως „ῆκω περίκλυνστον προλιποῦσ·
 „Ἀκροκόρινθον, λερὸν ὄχθον, πόλιν Ἀφροδίτας,“ τὸ
 περίκλυνστον ἥτοι κατὰ βάθους δεκτέον, ἐπεὶ καὶ *φρέ-
 ατα καὶ ὑπόνομοι λιθάδες διήκουσι δι' αὐτοῦ, ἡ τὸ πα-
 25 λαιὸν ὑποληπτέον τὴν Πειρήνην ἐπιπολάξειν καὶ κα-
 τάρρυντον ποιεῖν τὸ ὄφος. ἐνταῦθα δέ φασι πίνοντα
 τὸν Πήγασον ἀλῶναι ὑπὸ Βελλεροφόντου, πτηνὸν
 ἵππον ἐν τοῦ τραχῆλου τοῦ Μεδούσης ἀναπαλέντα
 κατὰ τὴν γοργοτομίαν· τὸν δ' αὐτόν φασι καὶ τὴν
 30 ἵππου κορήνην ἀναβαλεῖν ἐν τῷ Ἐλικῶνι πλήξαντα
 τῷ ὄνυχι τὴν ὑποῦσαν πέτραν. ὑπὸ δὲ τῇ Πειρήνῃ τὸ
 Σισύφειόν ἐστιν, λεροῦ τινος ἢ βασιλείου λευκῶν λι-

θων πεποιημένου διασῶξον ἐρείπια οὐκ ὀλίγα. ἀπὸ δὲ τῆς ιορυφῆς πρὸς ἄρκτον μὲν ἀφορᾶται ὁ τε Παρνασσός καὶ ὁ Ἐλικάν, δῆῃ ψηλὰ καὶ νιφόβολα, καὶ ὁ Κρισαῖος κόλπος ὑποπέπτωντος ἀμφοτέρους, περιεχόμενος ὑπὸ τῆς Φωκίδος καὶ τῆς Βοιωτίας καὶ τῆς Μεγαρίδος 5 καὶ τῆς ἀντιπόρθμου τῇ Φωκίδι Κορινθίας καὶ Σικυωνίας· πρὸς ἐσπέραν δὲ ὑπέρκειται δὲ τούτων 0.380 ἀπάντων τὰ καλούμενα "Ουεια ὅρη διατείνοντα μέχρι Βοιωτίας καὶ Κιθαιρῶνος ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων περιῶν, ἀπὸ τῆς παρὰ ταύτας ὁδοῦ πρὸς τὴν Ἀττικήν. 10

22 Ἀρχὴ δὲ τῆς παραλίας ἐκατέρας τῆς μὲν τὸ Λέχαιον τῆς δὲ Κεγχρεαὶ κάμη καὶ λιμὴν ἀπέχων τῆς πόλεως ὅσον ἔβδομήν κοντα σταδίους· τούτῳ μὲν οὖν χρᾶνται πρὸς τοὺς ἐκ τῆς Ἀσίας πρὸς δὲ τοὺς ἐκ τῆς Ἰταλίας τῷ Λεχαίῳ. τὸ δὲ Λέχαιον ὑποπέπτωκε τῇ πόλει 15 λει κατοικίαν ἔχον οὐ πολλήν· σκέλη δὲ καθείλκυσται σταδίων περὶ δώδεκα ἐκατέρωθεν τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ τὸ Λέχαιον. ἐντεῦθεν δὲ παρεκτείνουσα ἡ ἥπαν μέχρι Παγῶν τῆς Μεγαρίδος αλύζεται μὲν ὑπὸ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου, κοίλη δ' ἐστὶ καὶ ποιεῖ τὸν δίολκον 20 πρὸς τὴν ἐτέραν ἥποντα τὴν κατὰ Σχοινοῦντα πλησίου ὅντα τῶν Κεγχρεῶν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τοῦ Λεχαίου καὶ Παγῶν τὸ τῆς Ἀκραίας μαντεῖον "Ηρας ὑπῆρχε τὸ παλαιόν, καὶ αἱ Ὄλμιαι τὸ ποιοῦν ἀκρωτήριον τὸν κόλπον ἐν φέρειδ' ἡ Κρομμυωνία. πρόκειται δὲ τῆς ἥποντος ταύτης ὁ τε Σαρωνικὸς κόλπος καὶ ὁ Ἐλευσινιακός, τρόπον τινὰ ὁ αὐτὸς ὕπη, συνεχῆς τῷ Ἐρμιονικῷ. ἐπὶ 30 δὲ τῷ Ἰσθμῷ καὶ τὸ τοῦ Ἰσθμίου Ποσειδῶνος λεφόν ἄλσει πιτυώδει συνηρεφές, ὅπου τὸν ἄγωνα τῶν Ἰσθμίων

Κορίνθιοι συνετέλουν. ἡ δὲ Κρομμυῶν ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, πρότερον δὲ τῆς Μεγαρίδος, ἐν ᾧ μυθεύονται τὰ περὶ τὴν Κρομμυωνίαν ὅν, ἢν μητέρα τοῦ Καλυδωνίου κάπρου φασί· καὶ τῶν Θησέως ἄδηλων ἔνα 5 τοῦτον παραδιδόσι τὴν τῆς ὑὸς ταύτης ἔξαίρεσιν. καὶ ἡ Τενέα δ' ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, ἐν ᾧ τοῦ Τενεάτου Ἀπόλλωνος λεόπον· λέγεται δὲ καὶ Ἀρχίᾳ τῷ στελλαντι τὴν εἰς Συρακούσας ἀποικίαν τοὺς πλείστους τῶν ἐποίκων ἐντεῦθεν συνεπακολούθησαι, καὶ μετὰ 10 ταῦτα εὐθηνεῖν μάλιστα τῶν ἄλλων τὴν κατοικίαν ταύτην, τὰ δ' ὕστατα καὶ καθ' αὐτοὺς πολιτεύεσθαι, προσθέσθαι τε τοῖς Ῥωμαίοις ἀποστάντας Κορινθίων καὶ κατασκαφείσης τῆς πόλεως συμμεῖναι. φέρεται δὲ καὶ χρησμὸς ὁ δοθεὶς τινι τῶν ἐκ τῆς Ἀσίας ἐρωτῶντι 15 εἰ λῶν εἴη μετοικεῖν εἰς Κόρινθον „εὐδαιμών ὁ Κόρινθος, ἐγὼ δ' εἶην Τενεάτης.“ διπερ κατ' ἄγνοιάν τινες παρατρέπουσιν „ἐγὼ δ' εἶην Τεγεάτης.“ λέγεται δ' ἐνταῦθα ἐκθρέψαι Πόλυβος τὸν Οἰδίπουν. δοκεῖ δὲ καὶ συγγένειά τις εἶναι Τενεδίοις πρὸς τούτους ἀπὸ 20 Τέννου τοῦ Κύκνου, καθάπερ εἰρηκεν Ἀριστοτέλης· καὶ ἡ τοῦ Ἀπόλλωνος δὲ τιμὴ παρ' ἀμφοτέροις δύοις οὖσα δίδωσιν οὐ μικρὰ σημεῖα.

Κορίνθιοι δ' ὑπὸ Φιλίππων ὄντες ἐκείνῳ τε συνε- C.381
φιλονείκησαν καὶ ἴδια πρὸς Ῥωμαίους ὑπεροπτικῶς 23
είχον, ὥστε τινὲς καὶ τῶν πρέσβεων παριόντων τὴν
οἰκίαν αὐτῶν ἐθάρρησαν καταντλῆσαι βόρβιον. ἀντὶ²³
τούτων μὲν οὖν καὶ ἄλλων ὃν ἔξημαρτον ἔτισαν δίκας
αὐτίκα· πεμφθείσης γὰρ ἀξιολόγου στρατιᾶς, αὐτῇ
τε κατέσκαπτο ὑπὸ Λευκίου Μομύου καὶ τάλλα μέχρι²³
30 Μακεδονίας ὑπὸ Ῥωμαίους ἐγένετο, ἐν ἄλλοις ἄλλων
πεμπομένων στρατηγῶν· τὴν δὲ χώραν ἔσχον Σικυώνιοι τὴν πλείστην τῆς Κορινθίας. Πολύβιος δὲ τὰ συμ-

βάντα περὶ τὴν ἄλωσιν ἐν οἴκτον μέρει λέγων προστίθησι καὶ τὴν στρατιωτικὴν ὀλιγωρίαν τὴν περὶ τὰ τῶν τεχνῶν ἔργα καὶ τὰ ἀναθήματα. φησὶ γὰρ ἵδεν παρὼν ἐρριμμένους πίνακας ἐπ' ἑδάφους, πεττεύοντας δὲ τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τούτων. ὁνομάζει δ' αὐτῶν Ἀρι-⁵ στείδου γραφὴν τοῦ Διονύσου, ἐφ' οὗ τινες εἰρηθαὶ φασι τὸ „οὐδὲν πρόστὸν Διόνυσον,“ καὶ τὸν Ἡρακλέα τὸν καταπονούμενον τῷ τῆς Δημητρίας χιτῶνι. τοῦτον μὲν οὖν οὐχ ἐωράκαμεν ἡμεῖς, τὸν δὲ Διόνυσον ἀνακείμενον ἐν τῷ Δημητρείῳ τῷ ἐν Ῥώμῃ κάλλιστον ¹⁰ ἔργον ἐωράμεν· ἐμπρησθέντος δὲ τοῦ νεώ συνηφανίσθη καὶ ἡ γραφὴ νεωστέ. σχεδὸν δέ τι καὶ τῶν ἄλλων ἀναθημάτων τῶν ἐν Ῥώμῃ τὰ πλείστα καὶ ἄφιστα ἐντεῦθεν ἀφέχθαι· τινὰ δὲ καὶ αἱ κύκλῳ τῆς Ῥώμης πόλεις ἔσχον. μεγαλόφρων γὰρ ὃν μᾶλλον ἢ φιλότεχνος ¹⁵ ὁ Μόρμυιος, ὃς φασι, μετεδίδοντας τοὺς δεηθεῖσι. Λεύκολλος δὲ κατασκευάσας τὸ τῆς Εὐτυχίας λερὸν καὶ στοάν τινα χρῆσιν ἥττήσατο ὃν εἶχεν ἀνδριάντων ὁ Μόρμυιος, ὃς κοσμήσων τὸ λερὸν μέχρι ἀναδείξεως, εἰτ' ἀποδώσων· οὐκ ἀπέδωκε δέ, ἀλλ' ἀνέθηκε κελεύσας ²⁰ αἰρειν εἰ βούλεται· πράως δ' ἥντικεν ἐκεῖνος οὐ φροντίσας οὐδέν, ὃστ' ηὐδοκίμει τοῦ ἀναθέντος μᾶλλον. πολὺν δὲ χρόνον ἐρήμη μείνασα ἡ Κόρινθος ἀνελήφθη πάλιν ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ διὰ τὴν εὐφυΐαν, ἐποίησος πέμψαντος τοῦ ἀπελευθερικοῦ γένους πλείστους. ²⁵ οὐ τὰ ἔρεπτα κινοῦντες καὶ τοὺς τάφους συνανασκάπτοντες εὑρισκον ὀστρακίνων * τορευμάτων πλήθη, πολλὰ δὲ καὶ χαλκόματα· θαυμάζοντες δὲ τὴν κατασκευὴν οὐδένα τάφου ἀσκευώρητον εἰασαν, ὃστε εὐπορήσαντες τῶν τοιούτων καὶ διατιθέμενοι πολλοῦ ³⁰ C.382 νεκροκορινθίων ἐπλήρωσαν τὴν Ῥώμην· οὕτω γὰρ ἐκάλουν τὰ ἐκ τῶν τάφων ληφθέντα, καὶ μάλιστα τὰ

δόστροάνινα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἐπιμήθη σφόδρα δόμοίως τοῖς χαλιώμασι τοῖς κορινθιουργέσιν, εἰτ' ἐπαύσαντο τῆς σπουδῆς, ἐκλιπόντων τῶν δόστράκων καὶ οὐδὲ κατωρθωμένων τῶν πλείστων. ἡ μὲν δὴ πόλις ἡ τῶν 5 Κορινθίων μεγάλη τε καὶ πλουσία διὰ παντὸς ὑπῆρξεν, ἀνδρῶν τε ηὐπόρησεν ἀγαθῶν εἰς τε τὰ πολιτικὰ καὶ εἰς τὰς τέχνας τὰς δημιουργικάς· μάλιστα γὰρ καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν Σικυῶνι ηὐεξήθη γραφική τε καὶ πλαστικὴ καὶ πᾶσα ἡ τοιαύτη δημιουργία. χώραν δὲ ἔσχεν 10 οὐκ εὑγεων σφόδρα, ἀλλὰ σκολιάν τε καὶ τραχεῖαν, ἀφ' οὗ πάντες διφρυνόντα Κόρινθον εἰρήκασι καὶ παροιμιάζονται „Κόρινθος διφρυφὲ τε καὶ κοιλαίνεται.“

'Ορνεαί δὲ εἰσὶν ἐπώνυμοι τῷ παραρρέοντι ποτα- 24 μῷ, νῦν μὲν ἔρημοι πρότερον δὲ οἰκούμεναι καλῶς, 15 ιερὸν ἔχουσαι Πριάπουν τιμώμενον, ἀφ' ᾧ καὶ ὁ τὰ Πριάπεια ποιήσας Εὐφορίων Ὁρνεάτην καλεῖ τὸν θεόν· κεῖνται δὲ ὑπὲρ τοῦ πεδίου τοῦ Σικυωνίων, τὴν δὲ χώραν ἔσχον Ἀργεῖοι. Ἀραιιθυρέα δὲ ἐστὶν ἡ νῦν Φλιασία καλούμενη, πόλιν δὲ εἶχεν δόμανυμον τῇ χώρᾳ 20 πρὸς ὅρει Κηλώσση· οἱ δὲ ὕστερον ἀναστάντες ἐκεῖθεν πρὸ τριάκοντα σταδίων ἔκτισαν πόλιν, ἥν ἐκάλεσαν Φλιοῦντα· τῆς δὲ Κηλώσσης μέρος ὁ Καρνεάτης, δῆθεν λαμβάνει τὴν ἀρχὴν Ἀσωπὸς ὁ παραρρέων τὴν Σικυῶνα καὶ ποιῶν τὴν Ἀσωπίαν χώραν, μέρος οὐ- 25 σαν τῆς Σικυωνίας. ἔστι δὲ Ἀσωπὸς καὶ ὁ παρὰ Θήβας φέων καὶ Πλαταιαὶς καὶ Τάναγραν, ἄλλος δὲ ἔστιν ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τραχινίᾳ παρὰ κάμην φέων ἥν Παρασωπίους δινομάζουσι, τέταρτος δὲ ὁ ἐν Πάρῳ. κεῖται δὲ ὁ Φλιοῦς ἐν μέσῳ Σικυωνίας Ἀργείας Κλεωνῖν καὶ 30 Στυμφάλου κύκλῳ περιεχόμενος· τιμᾶται δὲ ἐν Φλιοῦντι καὶ Σικυῶνι τὸ τῆς Διας ἱερόν· καλοῦσι δὲ οὕτω τὴν Ἡβῆν.

STRABO II.

25 Τὴν δὲ Σικυῶνα πρότερον Μηκάνην ἐκάλουν, ἔτι δὲ πρότερον Αλγιαλεῖς· ἀνφίπισε δ' αὐτὴν ἀπὸ θαλάττης ὅσου εἶκοσι σταδίοις (οἱ δὲ δώδεκα φασιν) ἐπὶ λόφον ἐρυμυδὸν Λημήτριος· τὸ δὲ παλαιὸν κτίσμα ἐπινειόν ἔστιν ἔχον λιμένα. ὁρίζει δὲ τὴν Σικυωνίαν καὶ 5 τὴν Κορινθίαν ποταμὸς Νεμέα· ἐτυραννήθη δὲ πλεῖστον χρόνον, ἀλλ᾽ ἀεὶ τοὺς τυραννους ἐπιεικεῖς ἄνδρας ἔσχεν, "Αρατον δ' ἐπιφανέστατον, ὃς καὶ τὴν πόλιν ἡλευθέρωσε, καὶ Ἀχαιῶν ἥρξε παρ' ἐκόντων λαβὼν τὴν ἔξουσίαν, καὶ τὸ σύστημα ηὔξησε προσθεῖς αὐτῷ 10 C.383 τὴν τε πατρίδα καὶ τὰς ἄλλας πόλεις τὰς ἐγγύς. Ὄπερησίην δὲ καὶ τὰς ἔξης πόλεις ἂς ὁ ποιητὴς λέγει, καὶ τὸν Αλγιαλὸν τῶν Ἀχαιῶν ἥδη συμβέβηκεν εἶναι μέχρι Δύμης καὶ τῶν ὅρων τῆς Ἡλείας.

7 Ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν παλαιὸν "Ιωνες ἐκρά- 15 τονν, ἔξ Αθηναίων τὸ γένος ὄντες, ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν παλαιὸν Αλγιάλεια καὶ οἱ ἐνοικοῦντες Αλγιαλεῖς, ὕστερον δ' ἀπ' ἐκείνων Ιωνία, καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, ἀπὸ "Ιωνος τοῦ Ξούθου. φασὶ δὲ Λευκαλίωνος μὲν Ἐλληνα εἶναι, τοῦτον δὲ περὶ τὴν Φθίαν τῶν μεταξὺ Πηνειοῦ 20 καὶ Ἀσωποῦ δυναστεύοντα τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν πατέρων παραδοῦναι τὴν ἀρχήν, τοὺς δ' ἄλλους ἔξω διαπέμψαι ξητήσοντας ἴδρυσιν ἔκαστον αὐτῷ· ὃν Δωρὸς μὲν τοὺς περὶ Παρνασσὸν Λωριέας συνοικίσας κατέλιπεν ἐπωνύμους αὐτοῦ, Ξοῦθος δὲ τὴν Ἐρεχθέως θυ- 25 γατέρα γῆμας φέκισε τὴν τετράπολιν τῆς Ἀττικῆς, Οἰνόην Μαραθῶνα Προβάλινθον καὶ Τοικόδυνθον. τῶν δὲ τούτου πατέρων Ἀχαιός μὲν φόνον ἀκούσιον πράξας ἔφυγεν εἰς Λακεδαίμονα καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐκεῖ οὐληθῆναι παρεσκεύασεν, "Ιων δὲ τοὺς μετ' Εὐμόλπουν νι- 30 κήσας Θρᾶκας οὕτως ηὐδοκίμησεν ὥστε ἐπέτρεψαν αὐτῷ τὴν πολιτείαν Ἀθηναῖοι. ὁ δὲ πρῶτον μὲν εἰς

τέτταρας φυλὰς διείλε τὸ πλῆθος, εἶτα εἰς τέτταρας βίους· τοὺς μὲν γάρ γεωργοὺς ἀπέδειξε τοὺς δὲ δημιουργοὺς τοὺς δὲ λεροποιούς, τετάρτους δὲ τοὺς φύλακας· τοιαῦτα δὲ πλεισταὶ διατάξαις τὴν χώραν ἐπώνυμον
 5 ἔαυτοῦ κατέλιπεν. οὗτοι δὲ πολυανδρῆσαι τὴν χώραν τότε συνέπεσεν ὅστε καὶ ἀποικίαν τῶν Ἰωνῶν ἔστειλαν εἰς Πελοπόννησον· Αθηναῖοι, καὶ τὴν χώραν ἦν κατέσχον ἐπώνυμον ἔαυτῶν ἐποίησαν Ἰωνίαν ἀντ' Αἴγιαλου αἱληθεῖσαν, οἵ τε ἄνδρες ἀντὶ Αἴγιαλέων Ἰωνες προσ-
 10 ηγορεύθησαν εἰς δώδεκα πόλεις μερισθέντες. μετὰ δὲ τὴν Ἡρακλειδῶν κάθοδον ὑπ' Ἀχαιῶν ἔξελαθέντες ἐπανῆλθον πάλιν εἰς Αθήνας· ἐκεῖθεν δὲ μετὰ τῶν Κοδριδῶν ἔστειλαν τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰς τὴν Ἀσταν· ἕκτισαν δὲ δώδεκα πόλεις ἐν τῇ παραλίᾳ τῆς Κα-
 15 ρας καὶ τῆς Λυδίας, εἰς τοσαῦτα μέρη διελόντες σφᾶς δύσα καὶ ἐν τῇ Πελοποννήσῳ κατεῖχον. οἱ δὲ Ἀχαιοὶ Φθιῶται μὲν ἥσαν τὸ γένος, φύησαν δὲ ἐν Λακεδαίμονι, τῶν δὲ Ἡρακλειδῶν ἐπικρατησάντων ἀναληφθέντες ὑπὸ Τισαμενοῦ τοῦ Ὁρέστου παιδός, ὃς προ-
 20 ειρήκαμεν, τοῖς Ἰωβίν ἐπέδειντο, καὶ γενόμενοι κρείττους τοὺς μὲν ἔξεβαλον, αὐτοὶ δὲ κατέσχον τὴν γῆν,
 καὶ διεφύλαξαν τὸν αὐτὸν τῆς χώρας μερισμὸν ὅπερ
 καὶ παρέλαβον. οὗτοι δὲ ἵσχυσαν ὅστε τὴν ἄλλην Πε-
 384 λοπόννησον ἔχόντων τῶν Ἡρακλειδῶν ὃν ἀπέστη-
 25 σαν, ἀντεῖχον δύμας πρὸς ἀπαντας Ἀχαΐαν ὀνομάσαν-
 τες τὴν χώραν. ἀπὸ μὲν οὖν Τισαμενοῦ μέχρι Ὁργύγου βασιλευόμενοι διετέλουν· εἶτα δημοκρατηθέντες το-
 σοῦτον ἡδονικῆσαν περὶ τὰς πολιτείας ὅστε τοὺς Ἰτα-
 λιώτας μετὰ τὴν στάσιν τὴν πρὸς τοὺς Πυθαρορείους
 30 τὰ πλεῖστα τῶν νομίμων μετενέγκασθαι παρὰ τούτων συνέβη· μετὰ δὲ τὴν ἐν Λεύκτροις μάχην ἐπέτρεψαν Θηβαῖοι τούτοις τὴν δίαιταν περὶ τῶν ἀντιλεγομένων

ταῖς πόλεσι πρὸς ἀλλήλας· ὅστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων λυθείσης τῆς κοινωνίας ἀνέλαβον σφᾶς πάλιν κατὰ μικρόν· ἥρξαν δὲ Πύρρον στρατεύσαντος εἰς Ἰταλίαν τέτταρες συνιοῦσαι πόλεις, ἣν ἦσαν Πάτραι καὶ Δύμη· εἶτα προσελάμβανόν τινας τῶν δώδεκα 5 πλὴν Ὀλένου καὶ Ἐλάκης, τῆς μὲν οὐ συνελθούσης τῆς 2 δ' ἀφανισθείσης ὑπὸ κύματος. ἔξαρσθὲν γὰρ ὑπὸ σεισμοῦ τὸ πέλαγος κατέκλυσε καὶ αὐτὴν καὶ τὸ Ιερὸν τοῦ Ἐλικωνίου Ποσειδῶνος, δὲν καὶ νῦν ἔτι τιμῶσιν "Ιωνες, 10 καὶ θύμουσιν ἐκεῖ τὰ Πανιώνια. μέμνηται δ', ὡς ὑπο- 15 νοοῦσί τινες, ταύτης τῆς θυσίας Ὄμηρος ὅταν φῇ „αὐτὰρ ὁ θυμὸν ἀσθεῖ καὶ ἥρυγεν, ὡς ὅτε ταῦρος ἥρυγεν ἐλκόμενος Ἐλικώνιον ἀμφὶ ἄνακτα.“ τεκμα- ρονταί τε νεώτερον εἰναι τῆς Ιωνικῆς ἀποικίας τὸν ποιητὴν, μεμνημένον γε τῆς Πανιωνικῆς θυσίας ἥν ἐν 20 τῇ Πριηνέων χώρᾳ συντελοῦσιν "Ιωνες τῷ Ἐλικωνίῳ Ποσειδῶνι, ἐπεὶ καὶ αὐτοὶ οἱ Πριηνεῖς ἔξι Ἐλάκης εἰναι λέγονται· καὶ δὴ πρὸς τὴν θυσίαν ταύτην καθιστᾶσιν ἄνδρα νέον Πριηνέα τὸν τῶν Ιερῶν ἐπιμελησόμενον. τεκμηριοῦνται δ' ἔτι μᾶλλον τὸ προκείμενον ἐκ τῶν 25 περὶ τοῦ ταύρου πεφρασμένων· τότε γὰρ νομίζουσι καλλιερεῖν περὶ τὴν θυσίαν ταύτην Ιωνες, ὅταν θυδμενος ὁ ταῦρος μυκήσηται. οἱ δ' ἀντιλέγοντες μεταφέροντιν εἰς τὴν Ἐλάκην τὰ λεχθέντα τεκμήρια περὶ τοῦ ταύρου καὶ τῆς θυσίας, ὡς ἐκεὶ νενομισμένων τού- 30 των καὶ τοῦ ποιητοῦ παραβάλλοντος τὰ ἐκεὶ συντελούμενα. κατεκλύσθη δ' ἡ Ἐλάκη δυσὶν ἔτεσι πρὸ τῶν Λευκτρικῶν. Ἐρατοσθένης δὲ καὶ αὐτὸς ἰδεῖν φησι τὸν τόπον, καὶ τοὺς πορθμέας λέγειν ὡς ἐν τῷ πόρῳ ὁρθὸς ἐστήκει Ποσειδῶν χάλκεος, ἔχων ἵπποκαμπον 35 ἐν τῇ χειρὶ κίνδυνον φέροντα τοῖς δικτυεῦσιν. Ἡρα- κλείδης δέ φησι κατ' αὐτὸν γενέσθαι τὸ πάθος νύκτωρ,

δωδεκα σταδίους διεχούσης τῆς πόλεως ἀπὸ θαλάττης^{C.385}
 καὶ τούτου τοῦ χωρίου παντὸς σὺν τῇ πόλει καλυφθέν-
 τος, δισχιλίους δὲ παρὰ τῶν Ἀχαιῶν πεμφθέντας ἀνε-
 λέσθαι μὲν τοὺς νεκροὺς μὴ δύνασθαι, τοῖς δ' ὅμοροις
 5 νεῖμαι τὴν χώραν. συμβῆναι δὲ τὸ πάθος κατὰ μῆνιν
 Ποσειδῶνος· τοὺς γὰρ ἐκ τῆς Ἐλίκης ἐκπεσόντας "Ιω-
 νας αἰτεῖν πέμψαντας παρὰ τῶν Ἐλικέων μάλιστα μὲν
 τὸ βρέτας τοῦ Ποσειδῶνος, εἰ δὲ μή, τοῦ γε ἵεροῦ τὴν
 ἀφίδρουσιν· οὐ δόντων δὲ πέμψαι πρὸς τὸ κοινὸν τῶν
 10 Ἀχαιῶν· τῶν δὲ ψηφισαμένων οὐδέ τῶν ὑπακοῦσαι·
 τῷ δ' ἔξης χειμῶνι συμβῆναι τὸ πάθος, τοὺς δ' Ἀχαι-
 οὺς ὑστερούντας δοῦναι τὴν ἀφίδρουσιν τοῖς "Ιωσιν. Ἡσιο-
 δος δὲ καὶ ἄλλης Ἐλίκης μέμνηται Θετταλικῆς.

Ἐλκοσι μὲν δὴ ἔτη διετέλεσαν γραμματέα κοινὸν 3
 15 ἔχοντες καὶ στρατηγοὺς δύο κατ' ἐνιαυτὸν οἱ Ἀχαιοὶ,
 καὶ κοινοβούλιον εἰς ἓνα τόπον συνήγετο αὐτοῖς (ἐκα-
 λεῖτο δὲ Ἀμάριον) ἐν ᾧ τὰ κοινὰ ἔχοντας αὐτοῖς καὶ οὗτοι
 καὶ "Ιωνες πρότερον· εἴτα ἐδοξεν ἓνα χειροτονεῖσθαι
 στρατηγόν. Ἄρατος δὲ στρατηγήσας ἀφείλετο Ἀντίγο-
 20 νον τὸν Ἀκροκόρινθον, καὶ τὴν πόλιν τοῖς Ἀχαιοῖς
 προσέθηκε καθάπερ καὶ τὴν πατρίδα· προσελάβετο δὲ
 καὶ Μεγαρέας· καὶ τὰς παρ' ἑκάστοις τυραννίδας κα-
 ταλύων Ἀχαιοὺς ἐποίει τοὺς ἐλευθερωθέντας
 τὴν δὲ Πελοπόννησον ἡλευθέρωσε τῶν τυραννίδων,
 25 ὥστε καὶ Ἀργος καὶ Ἐρμιῶν καὶ Φλιοῦς καὶ Μεγάλη
 πόλις, ἡ μεγίστη τῶν ἐν Ἀρκαδίᾳ, προσετέθη τοῖς
 Ἀχαιοῖς, ὅτε δὴ καὶ πλεῖστον ηὔξηντο. ἦν δ' ὁ καιρὸς
 ἥνικα Ῥωμαῖοι Καρχηδονίους ἐκ τῆς Σικελίας ἐκβα-
 λόντες ἐστράτευσαν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Πάδον Γαλάτας.
 30 μέχρι δὲ τῆς Φιλοποίμενος στρατηγίας συμμείναντες
 ἵκαινᾶς οἱ Ἀχαιοὶ διελύθησαν κατ' ὀλίγον, ἥδη Ῥω-
 μαῖων ἔχόντων τὴν Ἑλλάδα σύμπασαν καὶ οὐ τὸν αὐτὸν

τρόπον ἐκάστοις χρωμένων, ἀλλὰ τοὺς μὲν συνέχειν τοὺς δὲ καταλύειν βουλομένων

4 Ήδὲ τάξις τῶν τόπων, οὓς κατέκουν εἰς δώδεκα μέρη διηγημένοι, τοιαύτη τίς ἔστι· μετὰ Σικυῶνα Πελλήνη κεῖται· εἰτα Αἴγειρα δευτέρᾳ· τρίτη Αἴγαι, Πο- 5 σειδῶνος λεόντην ἔχουσα· τετάρτη Βοῦρα· μετ' αὐτὴν Ἐλίκη, εἰς ἣν καταπεφεύγεισαν Ἰωνες, μάχη ιρατηθέντες ὑπ' Ἀχαιῶν, καὶ τὸ τελευταῖον ἔξεπεσον ἐνθέν-
C.386δε· μετὰ δὲ Ἐλίκην Αἴγιον καὶ Ρύπες καὶ Πατρεῖς καὶ Φαρεῖς· εἰτ' Ὄλενος, παρ' ὃν ποταμὸς μέγας * Μέλας· 10 εἰτα Δύμη καὶ Τριταιεῖς. οἱ μὲν οὖν Ἰωνες κωμηδὸν φύκουν, οἱ δ' Ἀχαιοὶ πόλεις ἔκτισαν, ὡς εἰς τινας ὕστερον συνώκισαν καὶ ἐκ τῶν ἄλλων μερίδων ἐνίας, καθάπερ τὰς Αἴγας εἰς Αἴγειραν (Αἴγαιοι δ' ἐλέγοντο οἱ ἐνοικοῦντες), Ὄλενον δὲ εἰς Δύμην. δείκνυται δ' ἵχνη 15 μεταξὺ Πατρῶν καὶ Δύμης τοῦ παλαιοῦ τῶν Ὄλενῶν κτίσματος· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκληπιοῦ λεόντην ἐπίσημον, [δ] Δύμης μὲν ἀπέχει τετταράκοντα σταδίους, Πατρῶν δὲ ὅγδοήκοντα. διμώνυμοι δ' εἰσὶ ταῖς μὲν Αἴγαις ταύταις αἱ ἐν Εὐβοίᾳ, τῷ δὲ Ὄλένῳ τὸ ἐν Αἴτω- 20 λίᾳ κτίσμα καὶ αὐτὸν ἵχνη σῶζον μόνον. ὁ δὲ ποιητὴς τοῦ μὲν ἐν Ἀχαιᾶς Ὄλένου οὐ μέμνηται, ὥσπερ οὐδὲ ἄλλων πλειόνων τῶν περὶ τὸν Αἴγιαλὸν οἰκούντων, ἀλλὰ κοινότερον λέγει „Αἴγιαλόν τ' ἀνὰ πάντα καὶ „ἀμφ' Ἐλίκην εύρεται.“ τοῦ δ' Αἴτωλικοῦ μέμνηται 25 ὅταν φῆ „οἱ Πλευρῶν“ ἐνέμοντο καὶ Ὄλενον.“ τὰς δ' Αἴγας ἀμφοτέρας λέγει, τὴν μὲν Ἀχαικήν „οἱ δέ τοι „εἰς Ἐλίκην τε καὶ Αἴγας δῶρον ἀνάγουσι.“ ὅταν δὲ φῆ

2. post βουλομένων: εἰτα λέγει αἴτιαν τοῦ ἐμπλατύνεσθαι τοῖς περὶ Ἀχαιῶν λόγοις τὸ ἐπὶ τοσοῦτον αὐξῆθεντας, ὃς καὶ λακεδαιμονίους ὑπερβαλέσθαι, μὴ ἀξιώς γνωρίζεσθαι.

,,Αλγάς, ἔνθα τέ οἱ κλυτὰ δώματα βένθεσι λίμνης· „ἔνθ' ἵππους ἔστησε Ποσειδάων,“ βέλτιον δέχεσθαι τὰς ἐν Εὐβοίᾳ, ἀφ' ὧν εἰκὸς καὶ τὸ πέλαγος Αλγαῖον λεχθῆναι· ἐκεῖ δὲ καὶ τῷ Ποσειδῶνι ἡ πραγματεία πε-
5 ποίηται ἡ περὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον. πρὸς δὲ ταῖς Ἀχαϊκαῖς Αλγαῖς ὁ Κρᾶθις φεὶ ποταμὸς ἐκ δυεῖν ποτα-
μῶν αὐξόμενος, ἀπὸ τοῦ οἰνασθαι τὴν ὄνομασίαν ἔχων· ἀφ' οὗ καὶ ὁ ἐν Ἰταλίᾳ Κρᾶθις.

Ἐπάστη δὲ τῶν δώδεκα μεριδῶν ἐκ δήμων συνει- 5
10 στήκει ἐπτὰ καὶ ὅκτα· τοσοῦτον εὐανδρεῖν τὴν χώραν συνέβαινεν. ἔστι δ' ἡ Πελλήνη στάδια ἔξηκοντα τῆς θαλάττης ὑπεροκειμένη, φρούριον ἐρυμνόν. ἔστι δὲ καὶ κώμη Πελλήνη, ὅθεν καὶ αἱ Πελλήνικαὶ χλαῖναι, ἃς καὶ ἄθλα ἐτίθεσαν ἐν τοῖς ἀγῶσι· κεῖται δὲ μεταξὺ Αλ-
15 γίου καὶ Πελλήνης· τὰ δὲ Πέλλανα ἔτερα τούτων ἔστι,
Λακωνικὸν χωρίον, ὃς πρὸς τὴν Μεγαλοπολῖτιν νεῖον.
Αἴγειρα δὲ ἐπὶ βουνοῦ κεῖται. Βοῦρα δ' ὑπέροκειται τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντά περ σταδίοις, ἣν ὑπὸ σεισμοῦ καταποθῆναι συνέβη. ἀπὸ δὲ τῆς ἐνταῦθα 20 κορήνης Συβάριδος τὸν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ποταμὸν ὄνομασθῆναι φασιν. ἡ δ' Αἴγα (καὶ γὰρ οὕτω λέγουσι τὰς 387
Αἴγας) νῦν μὲν οὐκ οἰκεῖται, τὴν δὲ χώραν ἔχοντιν Αἴ-
γιεις. Αἴγιον δὲ Ικανῶς οἰκεῖται· Ιστοροῦσι δ' ἐνταῦθα τὸν Αἴα ὑπ' αἴγος ἀνατραφῆναι, καθάπερ φησὶ καὶ 25 Ἄρατος „αἵξεισθή, τὴν μέν τε λόγος Αἴα μαξὸν ἐπι-
„σχεῖν.“ ἐπιλέγει δὲ καὶ ὅτι „Ωλενίην δέ μιν αἴγα Αἰός οιαλέουσ' ὑποφῆται“ δηλῶν τὸν τόπον διότι πλησίου Ωλένη. αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Κερύνεια ἐπὶ πέτρας ὑψηλῆς ἰδρυμένη. Αἴγιειν δ' ἐστὶ καὶ ταῦτα καὶ Ἐλίκη καὶ τὸ 30 τοῦ Αἰός ἄλσος τὸ Αμάριον, ὃπου συνήγεσαν οἱ Αχαιοὶ βουλευσόμενοι περὶ τῶν κοινῶν. φεὶ δὲ διὰ τῆς Αἴ-
γιειν ὁ Σελινοῦς ποταμός, διμώνυμος τῷ τε ἐν Ἐφέσῳ

παρὰ τὸ Ἀρτεμίσιον φέοντι, καὶ τῷ ἐν τῇ νῦν Ἡλείᾳ τῷ παραρρέοντι τὸ χωρίον ὃ φησιν ὀνήσασθαι τῇ Ἀρτέμιδι Εενοφῶν κατὰ χρησμόν· ἄλλος δὲ Σελινοῦς ὁ παρὰ τοῖς Τριλαίοις Μεγαρεῦσιν, οὓς ἀνέστησαν Καρχηδόνιοι. τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν Ἀχαϊκῶν εἴτε 5 μερίδων Ρύπες μὲν οὐκ οἰκουνται, τὴν δὲ χώραν Ρυπίδα καλουμένην ἔσχον Αἴγιεῖς καὶ *Φαριεῖς· ἐκ δὲ τῶν Ρυπῶν ἦν ὁ Μύσκελλος ὁ Κρότωνος οἰκιστής· τῆς δὲ Ρυπίδος καὶ τὸ Λευκτρον ἦν, δῆμος τῶν Ρυπῶν. μετὰ δὲ τούτους Πάτραι πόλις ἀξιόλογος· μεταξὺ δὲ τὸ Ρίον 10 ἀπέχον Πατρῶν στάδια τετταράκοντα. Ρωμαῖοι δὲ νεωτέρι μετὰ τὴν Ἀκτιακὴν νίκην ἵδρυσαν αὐτόδι τῆς στρατιᾶς μέρος ἀξιόλογον, καὶ διαφερόντως εὐανδρεῖ 15 νῦν ἀποικία Ρωμαίων οὖσα· ἔχει δὲ ὑφορμού μέτριον. ἐψεῆς δ' ἐστὶν ἡ Δύμη, πόλις ἀλίμενος, πασῶν δυσμη- 20 πωτάτη, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα· πρότερον δ' ἐκαλεῖτο Στράτος· διαιρεῖ δ' αὐτὴν ἀπὸ τῆς Ἡλείας κατὰ Βουπράσιον ὁ Λάρισος ποταμός, φέων ἐξ ὅρους· τοῦτο δ' οἱ μὲν Σκόλλιν καλοῦσιν, "Ομηρος δὲ πέτρην Θλευτῆν. τοῦ δ' Ἀντιμάχου Καυκωνίδα τὴν Δύμην εἰπόν- 25 τος, οἱ μὲν ἐδέξαντο ἀπὸ τῶν Καυκώνων ἐπιθέτως εἰρησθαι αὐτὸ μέχρι δεῦρο καθηκόντων, καθάπερ ἐπάνω προείπομεν· οἱ δ' ἀπὸ Καύκωνος ποταμοῦ τινος, ὡς αἱ Θῆβαι Διρκαῖαι καὶ Ἀσωπίδες, "Ἀργος δ' Ἰνάχειον, Τροία δὲ Σιμουντίς. δέδεκται δ' οἰκήτορας καὶ 388άπὸ τοῦ πειρατικοῦ πλήθους περιλιπεῖς ἔσχε Πομπήιος, καταλύσας τὰ ληστήρια καὶ ἰδρύσας τοὺς μὲν ἐν Σόλοις τοῖς Κιλικίοις τοὺς δ' ἄλλοθι καὶ δὴ καὶ ἐν-

7. post Φαριεῖς: καὶ Αἰσχύλος δὲ λέγει που „Βουραν διεράν καὶ νεραννίας Ρύπας.“ 10. post Ρίον: καὶ τὸ Ἀντίρριον

ταῦθα. ἡ δὲ Φάρα συνορεῖ μὲν τῇ Δυμαίᾳ. καλοῦνται δὲ οἱ μὲν ἐκ ταύτης τῆς Φάρας* Φαριεῖς, οἱ δὲ ἐκ τῆς Μεσσηνιακῆς Φαραίται· ἔστι δὲ ἐν τῇ Φαραίκῃ Δίρκη ιφήνη ὁμώνυμος τῇ ἐν Θήβαις. ἡ δὲ Θλενος ἔστι μὲν 5 ἔρημος, κεῖται δὲ μεταξὺ Πατρῶν καὶ Δύμης· ἔχουσι δὲ Δυμαῖοι τὴν χώραν. εἰτ' Ἀραξος, τὸ ἀκρωτήριον τῆς Ἑλείας, ἀπὸ Ισθμοῦ στάδιοι χίλιοι [τριάκοντα].

Ἄρκαδία δὲ ἔστιν ἐν μέσῳ μὲν τῆς Πελοποννήσου, **B** πλείστην δὲ χώραν ὁρεινὴν ἀποτέμνεται. μέγιστον δὲ 10 ὄρος ἐν αὐτῇ Κυλλήνη· τὴν γοῦν κάθετον οἱ μὲν εἰκοσι σταδίων φασὶν οἱ δὲ ὄσον πεντεκαΐδεκα. δοκεῖ δὲ παλαιότατα ἔθνη τῶν Ἑλλήνων εἶναι τὰ Ἀρκαδικά, Ἀξάνες τε καὶ Παρράσιοι καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι. διὰ δὲ τὴν τῆς χώρας παντελὴ κάκωσιν οὐκ ἀν προσήκοι μακρο- 15 λογεῖν περὶ αὐτῶν· αἱ τε γὰρ πόλεις ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἡφανίσθησαν ἔνδοξοι γενούμεναι πρότερον, τὴν τε χώραν οἱ γεωργήσαντες ἐκλειστάπασιν ἐξ ἐκεί- νων ἔτι τῶν χρόνων ἐξ ἦν εἰς τὴν προσαγορευθεῖσαν Μεγάλην πόλιν αἱ πλεῖσται συνφωνίσθησαν. νυνὶ δὲ 20 καὶ αὐτῇ ἡ Μεγάλη πόλις τὸ τοῦ ιωμικοῦ πέπονθε καὶ „ἔφημία μεγάλη ὅτιν ἡ Μεγάλη πόλις.“ βοσκήμασι δὲ εἰσὶ νομαὶ δαψιλεῖς, καὶ μάλιστα ἵπποις καὶ ὄνοις τοῖς ἵπποβάτοις· ἔστι δὲ καὶ τὸ γένος τῶν ἵππων ἄριστον τὸ Ἀρκαδικόν, καθάπερ καὶ τὸ Ἀργολικὸν καὶ τὸ Ἐπι- 25 δαύριον. καὶ ἡ τῶν Αἰτωλῶν δὲ καὶ Ἀκαρνάνων ἔρη- μία πρὸς ἵπποτροφίαν εὐφυής γέγονεν οὐχ ἥττον τῆς Θετταλίας.

Mαντίνειαν μὲν οὖν ἐπούησεν ἔνδοξον Ἐπαμεινών- **2** δας, τῇ δευτέρᾳ νικήσας μάχῃ Λακεδαιμονίους ἐν ᾧ καὶ 30 αὐτὸς ἐτελεύτα. καὶ αὕτη δὲ καὶ Ὁροχομενὸς καὶ Ἡραία καὶ Κλείτωρ καὶ Φενεός καὶ Στύμφαλος καὶ Μαίναλος καὶ Μεθύδριον καὶ Καφυεῖς καὶ Κύναιθα ἡ οὐκέτ' εἰσὶν

ἥ μόλις αὐτῶν ἵχνη φαίνεται καὶ σημεῖα. Τεγέα δ' ἔτι μετρίως συμμένει καὶ τὸ ἵερὸν τῆς Ἀλέας Ἀθηνᾶς· τιμάται δ' ἐπὶ μικρὸν καὶ τὸ τοῦ Λυκαίου Διὸς ἵερὸν κατὰ τὸ Λύκαιον [μέγιστρον] ὅρος. τῶν δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων „Ρίπην τε Στρατίην τε καὶ ἡνεμόεσ- 5 „σαν Ἐνίσπην“ εὑρεῖν τε χαλεπὸν καὶ εὔροῦσιν οὐδὲν ὅφελος διὰ τὴν ἐρημίαν.

3 "Ορη δ' ἐπιφανῆ πρὸς τῇ Κυλλήνῃ Φοιλόη τε καὶ
C.389 Λύκαιον καὶ Μαίναλος καὶ τὸ Παρθένιον καλούμενον
καθῆκον ἐπὶ τὴν Ἀργείαν ἀπὸ τῆς Τεγεάτιδος. 10

4 Περὶ δὲ τοῦ Ἀλφειοῦ καὶ τοῦ Εὔρωτα τὸ συμβεβηκὸς παράδοξον εἰρηται καὶ τὸ περὶ Ἐρασῖνον τὸν ἐκδιδόντα ἐκ τῆς Στυμφαλίδος λίμνης εἰς τὴν Ἀργείαν νῦν, πρότερον δ' οὐκ ἔχοντα ἔκρυσιν, τῶν βερέθρων, ἢ καλοῦσιν οἱ Ἀρκάδες ἔρεθρα, τυφλῶν ὄντων καὶ μὴ 15 δεχομένων ἀπέρασιν ὥστε τὴν τῶν Στυμφαλίων πόλιν νῦν μὲν καὶ πεντήκοντα διέχειν σταδίους ἀπὸ τῆς λίμνης, τότε δ' ἐπ' αὐτῆς κεῖσθαι. τάναντία δ' ὁ Λάδων ἔπαθε τοῦ φεύματος ἐπισχεθέντος ποτὲ διὰ τὴν ἔμφραξιν τῶν πηγῶν· συμπεσόντα γὰρ τὰ περὶ Φενεὸν 20 βέρεθρα ὑπὸ σεισμοῦ, δι' ᾧ ἦν ἡ φορά, μονὴν ἐποιησε τοῦ φεύματος μέχρι τῶν κατὰ βάθους φλεβῶν τῆς πηγῆς. καὶ οἱ μὲν οὗτοι λέγουσιν Ἐρατοσθένης δέ φησι περὶ Φενεὸν μὲν τὸν Ἀνίαν καλούμενον ποταμὸν λιμνάζειν τὰ πρὸ τῆς πόλεως, καταδύεσθαι δ' εἰς τινας 25 ἥδιμους οὓς καλεῖσθαι ἔρεθρα· τούτων δ' ἔμφραχθέντων ἔσθ' ὅτε ὑπερχεῖσθαι τὸ ὕδωρ εἰς τὰ πεδία, πάλιν δ' ἀναστομουμένων ἄθρουν ἐκ τῶν πεδίων ἐκπεσὸν εἰς τὸν Λάδωνα καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἔμβάλλειν, ὥστε καὶ τῆς Ὄλυμπίας κατεύθυναι ποτε τὴν περὶ τὸ 30 ἱερὸν γῆν, τὴν δὲ λίμνην συσταλῆναι· τὸν Ἐρασῖνον δὲ παρὰ Στυμφάλου φέοντα ὑποδύντα ὑπὸ τὸ ὅρος ἐν

τῇ Ἀργείᾳ πάλιν ἀναφανῆναι· διὸ δὴ καὶ Ἰφικράτη πολιορκοῦντα τὸν Στύμφαλον καὶ μηδὲν περαιώνυτα ἐπιχειρῆσαι τὴν κατάδυσιν ἀποφράξαι σπόγγους πορφισάμενον πολλούς, παύσασθαι δὲ διοσημίας γενομένης. περὶ Φενεὸν δ' ἔστι καὶ τὸ καλούμενον Στυγὸς ὕδωρ, λιβάδιον ὀλεθρίου ὕδατος νομιζόμενον ἵερον. τοσαῦτα καὶ περὶ Ἀρκαδίας εἰρήσθω.

Πολυβίου δ' εἰρηνότος τὸ ἀπὸ Μαλεῶν ἐπὶ τὰς 5 ἄρκτους μέχρι τοῦ Ἰστρου διάστημα περὶ μυρίους στα-
10 δίους, εὐθύνει τοῦτο ὁ Ἀρτεμίδωρος οὐκ ἀτόπως, ἐπὶ μὲν Αἴγιου χιλίους καὶ [τετρακοσ]ίους εἶναι λέγων ἐκ Μαλεῶν ὄδόν, ἐνθένδε εἰς [Κίρραν πλοῦν] διακοσίων,
ἐνθένδε διὰ Ἡρακλείας [εἰς Θαυμακοὺς] πεντακοσίων
ὄδόν, εἰτα εἰς Λάρισαν [καὶ τὸν Πηγειόν] τριακοσίων
15 τετταράκοντα, εἰτα διὰ [τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς Πηγ]νειού
ἐκβολὰς διακοσίων τετταράκοντα, εἰτα εἰς τὴν Θεσσα-
λονίκειαν ἔξακοσίων ἔξηκοντα, ἐντεῦ[θεν ἐπ'] Ἰστρου
διὰ Εἰδομ]ένης καὶ Στόβων καὶ Δαρδανίων τρισχι[λίους
καὶ διακοσίο]υς. κατ' ἐκεῖνον δὴ συμβαίνει τὸ ἐκ [τοῦ
20 Ἰστρου ἐπὶ τὰς Μαλ]έας ἔξακισχιλίων πεντακοσίων.
αὖτιον δὲ τούτου τὸ μὴ τὴν σύντομον καταμετρεῖν,
ἄλλὰ τὴν τυχοῦσαν ἥν ἐπορεύθη τῶν στρατηγῶν τις.

Οὐκ ἄτοπον δ' ἔσως καὶ τοὺς οἰκιστὰς προσθεῖναι
τῶν τὴν Πελοπόννησον οἰκούντων, οὓς εἰπεν "Ἐφορος,
25 τοὺς μετὰ τὴν Ἡρακλειδῶν καθόδον· Κορίνθου μὲν
Ἀλήτην, Σικυῶνος δὲ Φάλκην, Ἀχαΐας δὲ Τισαμενόν,
Ἡλιδος δ' Ὁξυλον, Μεσσήνης δὲ Κρεσφόντην, Λακε-
δαίμονος δὲ Εὐρυσθένη καὶ Προκλῆ, Ἀργους δὲ Τή-
μενον καὶ Κισσόν, τῶν δὲ] περὶ τὴν Ἀκτὴν Ἀγραῖον
30 καὶ Δηιφόντην.

— Θ —

C.390 **1** Περιτθευκόσι δὲ τὴν Πελοπόννησον, ἣν πρώτην
 ἔφαμεν καὶ ἐλαχίστην τῶν συντιθεισῶν τὴν Ἑλλάδα
 χερρουήσων, ἔφεξῆς ἀν εἴη τὰς συνεχεῖς ἐπελθεῖν. ἦν δὲ
 δευτέρα μὲν ἡ προστιθεῖσα τῇ Πελοποννήσῳ τὴν
 Μεγαρίδα, ὡστε τὸν Κρομμυῶνα Μεγαρέων εἶναι καὶ
 μὴ Κορινθίων· τοίτη δὲ ἡ πρὸς ταύτῃ προσλαμβά-
 νουσα τὴν Ἀττικὴν καὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τῆς Φωκίδος
 τι μέρος καὶ τῶν Ἐπικυνημιδίων Λοκρῶν. περὶ τούτων 10
 οὖν [λεκτέον]. φησὶ δ' Εὔδοξος, εἰ τις νοήσειεν ἀπὸ
 τῶν Κεραυνίων ὁρῶν ἐπὶ Σουνίου τὸ τῆς Ἀττικῆς
 ἄκρον ἐπὶ τὰ πρὸς ἓω μέρη τεταμένην εὐθεῖαν, ἐν δε-
 ἔιᾳ μὲν ἀπολείψειν τὴν Πελοπόννησον ὅλην πρὸς νό-
 τον, ἐν ἀριστερᾷ δὲ καὶ πρὸς τὴν ἄρκτον τὴν ἀπὸ τῶν 15
 Κεραυνίων ὁρῶν συνεχῇ παραλίαν μέχρι τοῦ Κρισαίου
 κόλπου καὶ τῆς Μεγαρίδος καὶ συμπάσης τῆς Ἀττικῆς.
 νομίζει δ' οὐδ' ἀν κοιλαίνεσθαι οὕτως] τὴν ἥδινα τὴν
 ἀπὸ Σουνίου μέχρι [τοῦ Ἰσθμοῦ ὡστε μεγάλην] ἔχειν
 ἐπιστροφὴν, εἰ μὴ προσῆν τῇ [ἥδιν ταύτῃ καὶ] τὰ συν- 20
 εχῆ τῷ Ἰσθμῷ χωρία τὰ [ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν]
 Ἐρμιονικὸν καὶ τὴν Ἀκτήν· ὡς δ' αὖ[τως οὐδ'] ἀν τὴν
 ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον
 ἔχειν τινὰ τοσαύ[την ἐπιστροφο]φὴν ὡστε κοιλαίνεσθαι
 κολποειδῶς καθ' αὐ[τήν, εἰ μὴ τὸ] Ρίον καὶ τὸ Ἀν- 25
 τίρριον συναγόμενα εἰς στενὸν [ἐπολει τὴν] ἔμφασιν
 ταύτην· διοίως δὲ καὶ τὰ περι[έχοντα] τὸν μυχόν, εἰς
 ἀκαταλήγειν συμβαίνει τὴν [ταύτη] θάλατταν.

2 Οὕτω δ' εἰρηκότος Εὔδοξον, μαθηματικοῦ ἀν-
 δρὸς καὶ σχημάτων ἐμπείρου καὶ κλιμάτων καὶ τοὺς 30
 τόπους τούτους εἰδότος, δεῖ νοεῖν τήνδε τὴν πλευρὰν
 τῆς Ἀττικῆς σὺν τῇ Μεγαρίδι τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι

Ίσθμοῦ κοίλην μὲν ἀλλ' ἐπὶ μικρόν. ἐνταῦθα δ' ἔστι
κατὰ μέσην που τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν ὁ Πειραιεὺς
τὸ τῶν Ἀθηνῶν ἐπίνειον. διέχει γάρ τοῦ μὲν Σχοι-
νοῦντος τοῦ κατὰ τὸν Ἰσθμὸν περὶ τριακοσίους πεντή-
κιοντα σταδίους, τοῦ δὲ Σουνίου τριάκοντα καὶ τρια-
κοσίους· τόσον πάς ἔστι διάστημα καὶ τὸ ἐπὶ Πηγὰς
ἀπὸ τοῦ Πειραιῶς], ὅσουπερ καὶ ἐπὶ Σχοινοῦντα·
δέκα δ' ὅμως στα[δίοις] πλεονάξειν φασί. κάμψαντι δὲ
τὸ Σούνιον πρὸς ἄρχτον μὲν ὁ πλοῦς, ἐκκλίνων [δὲ]
10 πρὸς δύσιν.

'Ακτὴ δ' ἔστιν [ἡ Ἀττικὴ] ἀμφιθάλαττος, στενὴ τὸ 3
πρῶτον, εἰτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν πλατύνεται, μηνοειδῆ
δ' οὐδὲν ἥττον ἐπιστροφὴν λαμβάνει πρὸς Ὡρωπὸν
τῆς Βοιωτίας τὸ κυρτὸν ἔχονταν πρὸς θαλάττην· τοῦτο
15 δ' ἔστι τὸ δεύτερον πλευρὸν ἑψον τῆς Ἀττικῆς. τὸ δὲ
λοιπὸν ἥδη τὸ προσάρκτιόν ἔστι πλευρὸν ἀπὸ τῆς
Ωρωπίας ἐπὶ δύσιν παρατείνον μέχρι τῆς Μεγαρίδος,
ἡ Ἀττικὴ ὁρεινή, πολυώνυμός τις, διείργοντα τὴν
Βοιωτίαν ἀπὸ τῆς Ἀττικῆς· ὡσδ', διπερ εἴπον ἐν τοῖς
20 πρόσθεν, ἰσθμὸν γίνεσθαι τὴν Βοιωτίαν ἀμφιθάλατ-
τον οὖσαν τῆς τρίτης χερονήσου τῆς λεχθείσης, ἀπο-
λαμβάνοντα ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Πελοποννήσῳ τὴν τε
Μεγαρίδα καὶ τὴν Ἀττικὴν. διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀκτὴν
25 φασὶ λεχθῆναι τὸ παλαιὸν καὶ Ἀττικὴν τὴν νῦν Ἀττι-
κὴν παρονομασθεῖσαν, ὅτι τοῖς ὄρεσιν ὑποπέπτωκε τὸ
πλεῖστον μέρος αὐτῆς ἀλιτεύεις καὶ στενόν, μήκει δ'
ἀξιολόγῳ κεχρημένον, προπεπτωκὸς μέχρι Σουνίου.
ταύτας οὖν διέξιμεν ἀναλαβόντες πάλιν ἀπὸ τῆς πα-
ραλίας ἀφ' ἥσπερ ἀπελίπομεν.
30 *Μετὰ δὴ Κρομμυῶνα ὑπέροκεινται τῆς ** Ἀττικῆς 4
αἱ Σκειρωνίδες πέτραι πάροδον οὐκ ἀπολείπονται πρὸς
θαλάττην· ὑπὲρ αὐτῶν δ' ἔστιν ἡ ὁδὸς ἡ ἐπὶ Μεγάρων

καὶ τῆς Ἀττικῆς ἀπὸ τοῦ Ἰσθμοῦ· οὗτω δὲ σφόδρα πλησιάζει ταῖς πέτραις ἡ ὁδὸς ὥστε πολλαχοῦ καὶ παράρημνός ἐστι διὰ τὸ ὑπεριείμενον ὅρος δύσβατόν τε καὶ ὑψηλόν· ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται τὰ περὶ τοῦ Σκείρωνος καὶ τοῦ Πιτυνοάμπτου τῶν ληζομένων τὴν λε-
χθεῖσαν ὁρεινήν, οὓς καθεῖται Θησεύς. ἀπὸ δὲ τῶν ἄκρων τούτων καταγίζοντα σκαιὸν τὸν ἀργεστην σκείρωνα προσηγορεύκασιν Ἀθηναῖοι. μετὰ δὲ τὰς Σκείρωνίδας πέτρας ἄκρα πρόκειται Μινφά ποιοῦσα τὸν ἐν τῇ Νισαίᾳ λιμένα. ἡ δὲ Νισαία ἐπίνειόν ἐστιν τῶν 10
Μεγάρων δεκαοντά σταδίους τῆς πόλεως διέχον, σκέ-
C.392 λεσιν ἐκατέρωθεν συναπτόμενον πρὸς αὐτήν· ἐκα-
λείτο δὲ καὶ τοῦτο Μινφά.

5 Τὸ παλαιὸν μὲν οὖν Ἰωνες εἶχον τὴν χώραν ταύ-
την οὔπερ καὶ τὴν Ἀττικήν, οὕπω τῶν Μεγάρων ἐκτι-
σμένων· διόπερ οὐδὲ δὲ ποιητὴς μέμνηται τῶν τόπων
τούτων ἰδίως, ἀλλ᾽ Ἀθηναίους καλῶν τοὺς ἐν τῇ Ἀτ-
τικῇ πάντας συμπεριείληφε καὶ τούτους τῷ κοινῷ ὀνό-
ματι Ἀθηναίους νομίζων, ὡς ὅταν φῆ ἐν τῷ καταλό-
γῳ „οὐδὲ δὲ ἔργον Ἀθήνας εἶχον, ἐνυπίμενον πτολεμόροι“
δέχεσθαι δεῖ καὶ τοὺς νῦν Μεγαρέας, ὡς καὶ τούτους
μετασχόντας τῆς στρατείας. σημεῖον δέ· ἡ γὰρ Ἀττικὴ
τὸ παλαιὸν Ἰωνία καὶ Ἰάς ἐκαλεῖτο, καὶ δὲ ποιητὴς ὅταν
φῇ „ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες“ τοὺς Ἀθηναίους
6 λέγει· ταύτης δὲ ἦν μερὶς καὶ ἡ Μεγαρίς. καὶ δὴ καὶ τῶν
δόρων ἀμφισβητοῦντες πολλάκις οἵ τε Πελοπον-
νήσιοι καὶ Ἰωνες, ἐν οἷς ἦν καὶ ἡ Κρομμυωνία, συνέ-
βησαν καὶ στήλην ἔστησαν ἐπὶ τοῦ συνομολογηθέντος
τόπου περὶ αὐτὸν τὸν Ἰσθμόν, ἐπιγραφὴν ἔχουσαν
ἐπὶ μὲν τοῦ πρὸς τὴν Πελοπόννησον μέρους „τάδε“ ἐστὶ 30
„Πελοπόννησος οὐκ Ἰωνία,“ ἐπὶ δὲ τοῦ πρὸς Μέγαρα
„τάδε“ οὐχὶ Πελοπόννησος ἀλλ᾽ Ἰωνία.“ οἵ τε δὴ τὴν

Ατθίδα συγγράψαντες πολλὰ διαφωνοῦντες τοῦτό γε ὄμολογοῦσιν οὖς γε λόγου ἄξιοι, διότι τῶν Πανδιονιδῶν τεττάρων δύντων, Αἰγέως τε καὶ Λύκου καὶ Πάλλαντος καὶ τετάρτου Νίσου, καὶ τῆς Ἀττικῆς εἰς τέτταρα μέρη διαιρεθεῖσης, ὁ Νίσος τὴν Μεγαρίδα λάχοι καὶ κτίσαι τὴν Νίσαιαν. Φιλόχορος μὲν οὖν ἀπὸ Ἰσθμοῦ μέχρι τοῦ Πυθίου διήκειν αὐτοῦ φῆσι τὴν ἀρχήν, "Ανδρῶν δὲ μέχρι Ελευσῖνος καὶ τοῦ Θριασίου πεδίου. τὴν δὲ εἰς τέτταρα μέρη διανομὴν ἄλλων ἄλλως εἰρηκότων ἀρχεῖ ταῦτα παρὰ Σοφοκλέους λαβεῖν· φησὶ δὲ ὁ Αἴγενος διὰ τὸ πατήρ τῷ φησεν ἐμοὶ μὲν ἀ[πελθεῖ]ν εἰς ἀκτὰς τῆσδε γῆς πρεσβεῖα νείμασ· [εἰτ]α Λύκων, τὸν ἀντιπλευρον αῆπον Εύβοιας νέμει, Νίσω δὲ τὴν διμαυλον ἔξαιρεῖ καθόνα Σκελετονος ἀκτῆς, τῆς δὲ γῆς τὸ πρὸς νότον δικληρὸς οὔτος καὶ γίγαντας ἐκτρέφων εἶληχε Πάλλας." διὰ μὲν οὖν ἡ Μεγαρὶς τῆς Ἀττικῆς μέρος ἦν, τούτοις χρωνται τεκμηρίοις.

Μετὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον καὶ τὸν γράφας μερισμὸν ὑπ' αὐτῶν καὶ τῶν συγκατελθόντων αὐτοῖς Δωριέων ἐκπεσεῖν τῆς οἰκείας συνέβη πολ-^{C.393} λοὺς εἰς τὴν Ἀττικήν, ὃν ἦν καὶ ὁ τῆς Μεσσήνης βασιλεὺς Μέλανθος· οὔτος δὲ καὶ τῶν Ἀθηναίων ἐβασίλευσεν ἐκόντων, υικήσας ἐν μονομαχίᾳ τὸν τῶν Βοιωτῶν βασιλέα Ξάνθον. εὐανδρούσης δὲ τῆς Ἀττικῆς διὰ τοὺς φυγάδας φοβηθέντες οἱ Ἡρακλεῖδαι, παροξυνόντων αὐτοὺς μάλιστα τῶν ἐν Κορίνθῳ καὶ τῶν ἐν Μεσσήνῃ, τῶν μὲν διὰ τὴν γειτνασιν, τῶν δὲ διὰ τὸ Κόδρος τῆς Ἀττικῆς ἐβασίλευε τότε ὁ τοῦ Μελάνθου παῖς, ἐστρατευσαν ἐπὶ τὴν Ἀττικήν· ἡττηθέντες δὲ μάχῃ τῆς 30 μὲν ἄλλης ἔξεστησαν γῆς, τὴν Μεγαρικὴν δὲ κατέσχον καὶ τὴν τε πόλιν ἔκτισαν τὰ Μέγαρα καὶ τοὺς ἀνθρώπους Δωριέας ἀντὶ Ιάνθινων ἐποίησαν· ἡφάνισαν δὲ καὶ

τὴν στήλην τὴν ὁρίζουσαν τούς τε "Ιωνας καὶ τοὺς Πελοποννησίους.

8 Πολλαῖς δὲ κέχρηται μεταβολαῖς ἡ τῶν Μεγαρέων πόλις, συμμένει δ' ὅμως μέχρι νῦν. ἔσχε δέ ποτε καὶ φιλοσόφων διατριβὰς τῶν προσαγορευθέντων Μεγαρικῶν, Εὐκλείδην διαδεξαμένων ἄνδρα Σωκρατικόν, Μεγαρέα τὸ γένος· καθάπερ καὶ Φαιδωνα μὲν τὸν Ἡλεῖον οἱ Ἡλειακὸν διεδέξαντο, καὶ τούτον Σωκρατικόν, ὃν ἦν καὶ Πύρρων, Μενέδημον δὲ τὸν Ἐρετριέα οἱ Ἐρετρικοί. ἔστι δ' ἡ χώρα τῶν Μεγαρέων παράλυτος καθάπερ καὶ ἡ Ἀττικὴ, καὶ τὸ πλέον αὐτῆς ἐπέχει τὰ καλούμενα "Ονεια ὄρη, φάγις τις μηκυνομένη μὲν ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν ἐπὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Κιθαιρωνίαν, διαίργονται δὲ τὴν κατὰ Νίσαιαν θάλατταν ἀπὸ τῆς κατὰ τὰς Παγὰς Ἀλκυονίδος προσαγορευομένης.

9 Πρόκειται δ' ἀπὸ Νίσαιας πλέοντι εἰς τὴν Ἀττικὴν πέντε υησία. είτα Σαλαμίς ἐβδομήκοντά που σταδίων οὖσα τὸ μῆκος, οἱ δὲ ὅγδοιήκοντά φασιν· ἔχει δ' ὁμώνυμους πόλιν τὴν μὲν ἀρχαίαν ἐφημον πρὸς Αἴγιναν τετραμμένην καὶ πρὸς νότον (καθάπερ καὶ Αἰσχύλος εἰρηκεν „Αἴγινα δὲ αὐτῇ πρὸς νότου κεῖται πνοάς“), τὴν δὲ νῦν ἐν κόλπῳ κειμένην ἐπὶ χερρονησοειδοῦς τόπου συνάπτοντος πρὸς τὴν Ἀττικήν. ἐκαλεῖτο δὲ ἐτέροις ὀνόμασι τὸ παλαιόν· καὶ γὰρ Σκιρᾶς καὶ Κύριος ἀπό τινων ἥρωών, ἀφ' οὗ μὲν Ἀθηνᾶ τε λέγεται Σκιρᾶς καὶ τόπος Σκιρᾶ ἐν τῇ Ἀττικῇ καὶ ἐπὶ Σκιρῷ λεροποιίᾳ τις καὶ ὁ μὴν ὁ Σκιροφοριών, ἀφ' οὗ δὲ καὶ Κυρρείδης ὄφις, ὃν φησιν Ἡσίοδος τραφέντα ὑπὸ Κυρρείως ἐξελαθῆναι ὑπὸ Εὐρυλόχου λυμαῖνόμενον τὴν 30 υῆσον, ὑποδέξασθαι δὲ αὐτὸν τὴν Δήμητρα εἰς Ἐλευθερίαν καὶ γενέσθαι ταύτης ἀμφίπολον. ὀνομάσθη δὲ

καὶ Πιτυοῦσσα ἀπὸ τοῦ φυτοῦ· ἐπιφανῆς δὲ ἡ νῆσος ὑπῆρξε διά τε τοὺς Αἰακίδας ἐπάρξαντας αὐτῆς, καὶ μάλιστα δὶ' Αἴαντα τὸν Τελαμώνιον, καὶ διὰ τὸ περὶ τὴν νῆσον ταύτην καταναυμαχηθῆναι θέρξην ὑπὸ τῶν 5 Ἑλλήνων καὶ φυγεῖν εἰς τὴν οἰκείαν. συναπέλαυσαν δὲ καὶ Αἰγινῆται τῆς περὶ τὸν ἄγωνα τοῦτον δόξης, γεί- τονές τε ὄντες καὶ ναυτικὸν ἀξιόλογον παρασχόμενοι. Βώκαρος δ' ἐστὶν ἐν Σαλαμῖνι ποταμός, ὁ νῦν Βώκα- λλα καλούμενος.

- 10 Καὶ νῦν μὲν ἔχουσιν Ἀθηναῖοι τὴν νῆσον, τὸ δὲ 10 παλαιὸν πρὸς Μεγαρέας ὑπῆρξεν αὐτοῖς ἔρις περὶ αὐ- τῆς· καὶ φασιν οἱ μὲν Πεισίστρατον οἱ δὲ Σόλωνα παρεγγοράφαντα ἐν τῷ νεῶν καταλόγῳ μετὰ τὸ ἔπος τοῦτο „Αἴας δὲ ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν δυοκαΐδενα νῆας“
 15 ἔξης τοῦτο „στῆσε δὲ ἄγων, ἵνα Ἀθηναίων ἴσταντο φά- „λαγγες,“ μάρτυρι χρήσασθαι τῷ ποιητῇ τοῦ τὴν νῆσον ἔξι ἀρχῆς Ἀθηναίων ὑπάρξει. οὐ παραδέχονται δὲ τοῦθ’ οἱ ιοριτοὶ διὰ τὸ πολλὰ τῶν ἐπῶν ἀντιμαρτυρεῖν αὐ- τοῖς. διὰ τί γὰρ ναυλοχῶν ἔσχατος φαίνεται ὁ Αἴας, οὐ
 20 μετ’ Ἀθηναίων ἀλλὰ μετὰ τῶν ὑπὸ Πρωτεσιλάφ Θετ- ταλῶν; „Ἐνθ’ ἔσαν Αἴαντός τε νέες καὶ Πρωτεσιλάους“
 καὶ ἐν τῇ ἐπιπλαήσει ὁ Ἀγαμέμνων „εὗρος υἱὸν Πετεῶο
 „Μενεσθῆα πλή[ξιππον ἔστα]ότ“, ἀμφὶ δὲ Ἀθηναῖοι,
 „μήστωρες ἀντῆς. αὐτὰρ ὁ πλησίουν ἔστήκει πολύμη-
 25 „τις Ὄδυσσεύς, πὰρ δὲ Κεφαλλήνων ἀμφὶ στίχες.“
 ἐπὶ δὲ τὸν Αἴαντα καὶ τοὺς Σαλαμῖνους πάλιν „ἥλθε
 „δέ ἐπ’ Αἴαντεσσι,“ καὶ παρ’ αὐτούς „ἰδομενεὺς δέ
 „ἔτέρωθεν,“ οὐ Μενεσθεύς. οἱ μὲν δὴ Ἀθηναῖοι τοι-
 αὐτὴν τινὰ σκήψασθαι μαρτυρίαν παρ’ Ὁμήρου δο-
 30 κοῦσιν, οἱ δὲ Μεγαρεῖς ἀντιπαρωδῆσαι οὕτως „Αἴας
 „δέ ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν νέας, ἐκ τε Πολίχνης, ἐκ τ’
 „Αἴγιερούσσης Νισαίης τε Τριπόδων τε.“ ᾧ ἐστι χωρία

*Μεγαρικά, ὧν οἱ Τοξικοδεῖς Τρικοδίσκιον λέγονται,
καθ' ὃ ἡ νῦν ἀγορὰ τῶν Μεγάρων κεῖται.*

- 11 Τινὲς δ' ἀπὸ τεῦ τὴν ἱέρειαν τῆς Πολιάδος Ἀθη-
C.395νᾶς χλωροῦ τυροῦ τοῦ μὲν ἐπιχωρίου μὴ ἄπτεσθαι,
ξενικὸν δὲ μόνον προσφέρεσθαι, χρῆσθαι δὲ καὶ τῷ 5
Σαλαμινίῳ, ξένην φασὶ τῆς Ἀττικῆς τὴν Σαλαμῖνα
οὐκ εὖ· καὶ γὰρ τὸν ἀπὸ τῶν ἄλλων νήσων τῶν ὁμολο-
γουμένως τῇ Ἀττικῇ προσχώρων προσφέρεται, ξενικὸν
πάντα τὸν διαπόντιον νοησάντων τῶν ἀρξάντων τοῦ
ἔθους τούτου. Εοικε δὴ τὸ παλαιὸν ἡ νῦν Σαλαμῖς καθ' 10
αὐτὴν τάττεσθαι, τὰ δὲ Μέγαρα τῆς Ἀττικῆς ὑπάρξαι
μέρος. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ τῇ κατὰ Σαλαμῖνα οεῖσθαι
συμβαίνει τὰ ὅρια τῆς τε Μεγαρικῆς καὶ τῆς Ἀτθίδος,
ὅρη δύο ἥ καλοῦσι Κέρατα.
- 12 Ἐτ τὸ Ελευσίς πόλις, ἐν ἦ τὸ τῆς Δήμητρος ιερὸν 15
τῆς Ελευσινίας καὶ ὁ μυστικὸς σηκός, ὃν κατεσκευά-
σεν Ἰατένος ὄχλον θεάτρου δεξασθαι δυνάμενον, ὃς
καὶ τὸν παρθενῶν ἐποίησε τὸν ἐν ἀκροπόλει τῇ Ἀθη-
νᾶ, Περικλέους ἐπιστατοῦντος τῶν ἔργων· ἐν δὲ τοῖς
δῆμοις καταριθμεῖται ἡ πόλις. 20
- 13 Ἐτα τὸ Θριάσιον πεδίον καὶ ὁμώνυμος αἰγιαλὸς
καὶ δῆμος· εἰδ' ἡ ἀκρα ἡ Ἀμφιάλη καὶ τὸ ὑπεροκείμε-
νον λατόμιον καὶ ὁ εἰς Σαλαμῖνα πορθμὸς ὃσον δι-
στάδιος, ὃν διαχοῦν ἐπειρᾶτο Λέρος· ἔφθη δὲ ἡ ναυ-
μαχία γενομένη καὶ φυγὴ τῶν Περσῶν. ἐνταῦθα δὲ 25
καὶ αἱ Φαρμακοῦσσαι, δύο νησία ὧν ἐν τῷ μείζονι Κίρ-
κης τάφος δείκνυται.
- 14 Τπὲρ δὲ τῆς ἀκτῆς ταύτης ὅρος ἐστὶν ὃ καλεῖται
Κορυδαλλός, καὶ ὁ δῆμος οἱ Κορυδαλλεῖς· εἰδ' ὁ Φω-
ρων λιμὴν καὶ ἡ Ψυττάλεια, νησίον ἔρημον πετρῶδες 30
ὅ τινες εἴπον λήμην τοῦ Πειραιᾶς· πλησίον δὲ καὶ ἡ
Ἀταλάντη ὁμώνυμος τῇ περὶ Εὔβοιαν καὶ Λοκρούς,

καὶ ἄλλο νησίον ὅμοιον τῇ Ψυτταλείᾳ καὶ τοῦτο· εἰδὲ· ὁ Πειραιεὺς καὶ αὐτὸς ἐν τοῖς δήμοις ταπτόμενος καὶ ἡ Μουνυχία.

Δόφος δὲ ἔστιν ἡ Μουνυχία χερούνησιάς των καὶ 15 κοῦλος καὶ ὑπόνομος πολὺ μέρος φύσει τε καὶ ἐπίτηδες ὥστε οἰκήσεις δέχεσθαι, στομίῳ δὲ μικρῷ τὴν εἰσοδον ἔχων. ὑποπίπτουσι δὲ αὐτῷ λιμένες τρεῖς. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν ἐτετέχιστο καὶ συνάγκιστο ἡ Μουνυχία παραπλησίως ὥσπερ ἡ τῶν Ροδίων πόλις, προσειληφυῖα τῷ 10 περιβόλῳ τὸν τε Πειραιᾶ καὶ τοὺς λιμένας πλήρεις νεωρίων, ἐν οἷς καὶ ἡ διπλοθήκη Φίλωνος ἔργον· ἀξιόν τε ἦν ναύσταθμον ταῖς τετρακοσίαις ναυσίν, ὡς οὐκ ἐλάττους ἕστελλον Ἀθηναῖοι. τῷ δὲ τείχει τούτῳ συνήπτε τὰ καθειλκυσμένα ἐκ τοῦ ἄστεος σκέλη· ταῦτα δὲ 15 ἦν μακρὰ τείχη τετταράκοντα σταδίων τὸ μῆκος, συνάπτοντα τὸ ἄστυ τῷ Πειραιεῖ. οἱ δὲ πολλοὶ πόλεμοι τὸ τείχος κατήρειψαν καὶ τὸ τῆς Μουνυχίας ἔργυμα, τόν τε Πειραιᾶ συνέστειλαν εἰς ὀλύγην κατοικίαν τὴν περὶ C.396 τοὺς λιμένας καὶ τὸ ιερὸν τοῦ Διός τοῦ σωτῆρος· τοῦ 20 δὲ ιεροῦ τὰ μὲν στοῦντα ἔχει πίνακας θαυμαστούς, ἔργα τῶν ἐπιφανῶν τεχνιτῶν, τὸ δὲ ὑπαιθρον ἀνδριάντας. κατέσπασται δὲ καὶ τὰ μακρὰ τείχη, λακεδαιμονίων μὲν καθελόντων πρότερον Ρωμαίων δὲ ὑστερόν, ἥνικα Σύλλας ἐκ πολιορκίας εἶλε καὶ τὸν Πειραιᾶ καὶ τὸ ἄστυ. 25 Τὸ δὲ ἄστυ αὐτὸν πέτρα ἔστιν ἐν πεδίῳ περιοικον- 16 μένη κύκλῳ· ἐπὶ δὲ τῇ πέτρᾳ τὸ τῆς Ἀθηνᾶς ιερὸν δὲ ἀρχαῖος νεώς ὁ τῆς Πολιάδος ἐν φέρεται δὲ ἀσβεστος λύχνος, καὶ δὲ παρθενῶν ὃν ἐποίησεν Ἰκτῖνος, ἐν φέρεται τὸ τοῦ Φειδίου ἔργον ἐλεφάντινον ἡ Ἀθηνᾶ. ἀλλὰ γὰρ 30 εἰς πλῆθος ἐμπίπτων τῶν περὶ τῆς πόλεως ταύτης ὑμνουμένων τε καὶ διαβοωμένων δικυνᾶ πλεονάζειν, μὴ συμβῆ τῆς προθέσεως ἐκπεσεῖν τὴν γραφήν. ἐπεισι

γὰρ ὁ φησιν Ἡγησίας „ὅρῶ τὴν ἀκρόπολιν καὶ τὸ πε-
 „ριττῆς τριαίνης ἐκεῖθι σημεῖον, ὅρῶ τὴν Ἐλευσῖνα, καὶ
 „τῶν ἱερῶν γέγονα μύστης· ἐκεῖνο Λεωκόριον, τοῦτο
 „Θησείον· οὐδὲνα μάμαι δηλῶσαι καθ' ἐν ἔκαστον· ἡ
 „γὰρ Ἀττικὴ θεῶν αὐτοῖς καταλαβόντων καὶ
 „τῶν προγόνων ἡρώων“ οὗτος μὲν οὖν ἐνὸς
 ἐμνήσθη τῶν ἐν ἀκροπόλει σημείων, Πολέμων δ' ὁ πε-
 ριηγητῆς τέτταρα βιβλία συνέγραψε περὶ τῶν ἀναθη-
 μάτων τῶν ἐν ἀκροπόλει· τὸ δ' ἀνάλογον συμβαίνει
 καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων τῆς πόλεως μερῶν καὶ τῆς χώρας· 10
 Ἐλευσῖνά τε εἰπὼν ἔνα τῶν ἑκατὸν ἑβδομήκοντα δῆ-
 μῶν πρὸς δὲ καὶ τεττάρων, ὡς φασιν, οὐδένα τῶν
 ἄλλων ἀνόμακεν.

- 17 Ἐχουσι δὲ κανὸν εἰ μὴ πάντες οἵ γε πολλοὶ μυθοποι-
 ίας συχνὰς καὶ ἴστορίας· καθάπερ Ἀφιδνα μὲν τὴν τῆς 15
 Ἐλένης ἀρπαγὴν ὑπὸ Θησέως καὶ τὴν ὑπὸ τῶν Διοσ-
 κούρων ἐκπόρθησιν αὐτῆς καὶ ἀνακομιδὴν τῆς ἀδελ-
 φῆς, Μαραθὼν δὲ τὸν Περσικὸν ἀγῶνα, Ῥαμνοῦς δὲ
 τὸ τῆς Νεμέσεως ἔδανον, ὃ τινες μὲν Διοδότου φασὶν
 ἔργον τινὲς δὲ Ἀγορακρίτου τοῦ Παρίου, καὶ μεγέθει 20
 καὶ κάλλει σφόδρα κατωρθωμένον καὶ ἐνάμιλλον τοῖς
 Φειδίουν ἔργοις. οὗτοι δὲ καὶ Δεκέλεια μὲν τὸ ὁρμητή-
 ριον τῶν Πελοποννησίων κατὰ τὸν Δεκέλεικὸν πόλε-
 μον, Φυλὴ δὲ ὅθεν ἐπήγαγε τὸν δῆμον Θρασύβουλος
 εἰς Πειραιᾶ κάκεῖθεν εἰς ἄστυ. οὗτοι δὲ καὶ ἐπ' ἄλλων 25
 πλειόνων ἔστιν ἴστορειν πολλά· καὶ ἔτι τὸ Λεωκόριον
 καὶ τὸ Θη[σεῖον μύθο]υς ἔχει, καὶ τὸ Αύκειον καὶ τὸ
 Ὄλυμπιον δὲ τὸ Ὄλυμπιον, ὅπερ ἡμιτελὲς
 κατέλιπε τελευτῶν ὁ ἀναθεὶς βασιλεὺς· ὅμοιως δὲ καὶ ἡ
 Ἀκαδημία καὶ οἱ κῆποι τῶν φιλοσόφων καὶ τὸ Ὁιδεῖον 30
 καὶ ἡ ποικίλη στοὰ καὶ τὰ ἱερὰ τὰ ἐν τῇ πό[λει πλειστα]
 ἔχοντα τεχνιτῶν ἔργα.

Πολὺ δ' ἀν πλείων εἰη λόγος, εἰ τοὺς ἀρχηγέτας^{C.397} 18 τοῦ κτίσματος ἔξετάξοι τις ἀρξάμενος ἀπὸ Κέκροπος· οὐδὲ γὰρ ὅμοιως λέγουσιν ἄπαντες. τοῦτο δὲ καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομάτων δῆλον· Ἀκτὴν μὲν γὰρ ἀπὸ Ἀκταίωνος φασίν, Ἀτθίδα δὲ καὶ Ἀττικὴν ἀπὸ Ἀτθίδος τῆς Κραναοῦ, ἀφ' οὗ καὶ Κραναοὶ οἱ ἔνοικοι, Μοψοκλαν δὲ ἀπὸ Μοψόπου, Ἰωνίαν δὲ ἀπὸ Ἰωνος τοῦ Διούθου, Ποσειδῶνίαν δὲ καὶ Ἀθήνας ἀπὸ τῶν ἐπωνύμων θεῶν. εἴρηται δ' ὅτι κάνταῦθα φαίνεται τὸ τῶν Πελασγῶν 10 ἔθνος ἐπιδημῆσαν, καὶ διότι ὑπὸ τῶν Ἀττικῶν Πελασγὸν προσηγορεύθησαν διὰ τὴν πλάνην.

"Οσφ δὲ πλέον ἔστι τὸ φιλότιμον περὶ τὰ ἔνδοξα 19 καὶ πλείους οἱ λαλήσαντές τι περὶ αὐτῶν, τοσῷδε μείζων ὁ ἔλεγχος, ἐὰν μὴ κρατῇ τις τῆς ἴστορίας· οἶνον ἐν τῇ 15 συναγωγῇ τῶν ποταμῶν ὁ Καλλίμαχος γελᾶν φησιν, εἰ τις θαρρεῖ γράφειν τὰς τῶν Ἀθηναίων παρθένους „ἀφύσσεσθαι καθαρὸν γάνον Ἡριδανοῖο,“ οὐ καὶ τὰ βοσκήματα ἀπόσχοιτ' ἀν. εἰσὶ μὲν νῦν αἱ πηγαὶ καθαροῦ καὶ ποτίμου ὕδατος, ὡς φασιν, ἐκτὸς τῶν Διο- 20 χάροντος καλούμενων πυλῶν πλησίον τοῦ Λυκείου· πρότερον δὲ καὶ κρήνη κατεσκεύαστό τις πλησίον πολλοῦ καὶ καλοῦ ὕδατος· εἰ δὲ μὴ νῦν, τί ἀν εἰη θαυμαστόν, εἰ πάλαι πολὺ καὶ καθαρὸν ἦν ὥστε καὶ πότιμον εἶναι, μετέβαλε δὲ ὕστερον; ἐν μὲν οὖν τοῖς καθ' 25 ἔκαστα τοσούτοις οὖσιν οὐκ ἐνδέχεται διατρίβειν, οὐ μὴν οὐδὲ σιγῇ παρελθεῖν ὥστε μηδ' ἐν κεφαλαίῳ μνησθῆναι τινων.

Τοσαῦτ' οὖν ἀπόχρονη προσθεῖσιν ὅτι φησὶ Φι- 20 λόχορος πορθουμένης τῆς χώρας ἐκ θαλάττης μὲν ὑπὸ Καρῶν ἐκ γῆς δὲ ὑπὸ Βοιωτῶν, οὓς ἐκάλουν "Αονας, Κέκροπα πρῶτον εἰς διάδεικτα πόλεις σιγνοικίσαι τὸ πλήθος, ὃν ὀνόματα Κεκροπία Τετράπολις Ἐπανοία Δε-

κέλεια Ἐλευσίς Ἀφιδνα (λέγουσι δὲ καὶ πληθυντικῶς Ἀφίδνας) Θόρικος Βραυρών Κύθηρος Σφηττὸς Κηφισιά πάλιν δὲ ὕστερον εἰς μίαν πόλιν συναγαγεῖν λέγεται τὴν νῦν τὰς δώδεκα Θησεύς. ἐβασιλεύοντο μὲν [οὖν οἱ Ἀθηναῖοι] πρότερον, εἶτ' εἰς δημοκρατίαν μετέστησαν· τυράννων δὲ ἐπιθεμένων αὐτοῖς, Πεισιστράτου καὶ τῶν πατέρων, ὕστερον τε ὀλιγαρχίας γενομένης τῆς τε τῶν τετρακοσίων καὶ τῆς τῶν τριάκοντα τυράννων, οὓς ἐπέστησαν Λακεδαιμόνιοι, τούτους μὲν διεκρούσαντο ḥαδίως, ἐφύλαξαν δὲ τὴν δημοκρατίαν μέχρι τῆς Ρωμαίων ἐπικρατείας. καὶ γὰρ εἰ τι μικρὸν ὑπὸ τῶν Μακεδονικῶν βασιλέων παρελυπήθησαν ὥσθ' ὑπακούειν αὐτῶν ἀναγκασθῆναι, τόν γε δλοσχερῆ τύπον τῆς πολιτείας τὸν αὐτὸν διετήρουν. ἔνιοι δέ φασι καὶ βέλτιστα τότε αὐτοὺς πολιτεύσασθαι δεκαετῆ χρόνου ὃν ἤρχε Μακεδόνων Κάσανδρος. οὗτος γὰρ ὁ ἀνὴρ πρὸς μὲν τὰ ἄλλα δοκεῖ τυραννικάτερος γενέσθαι, πρὸς Ἀθηναίους δὲ εὐγνωμόνησε λαβὼν ὑπήκοον τὴν πόλιν· ἐπέστησε γὰρ τῶν πολιτῶν Δημήτριον τὸν Φαληρέα τῶν Θεοφράστου τοῦ φιλοσόφου γνωφίμων, ὃς οὐ μόνον οὐ κατέλυσε τὴν δημοκρατίαν ἄλλὰ καὶ ἐπηνώρθωσε. δηλοῖ δὲ τὰ ὑπομνήματα ἃ συνέγραψε περὶ τῆς πολιτείας ταύτης ἐκεῖνος. ἄλλ' οὕτως ὁ φθόνος ἴσχυσε καὶ ἡ πρὸς ὅλην της ἀπέχθεια ὥστε μετὰ τὴν Κασάνδρου τελευτὴν ἡναγκάσθη φυγεῖν εἰς Αἴγυπτον· τὰς δὲ εἰκόνας αὐτοῦ πλείους ἡ τριακοσίας κατέβασαν οἱ ἐπαναστάτες καὶ κατεχόντες αὐτοὺς ἐφύλαξαν, ἔνιοι δὲ καὶ προστιθέασιν ὅτι καὶ εἰς ἀμίδας. Ρωμαῖοι δὲ οὖν παραλαβόντες αὐτοὺς δημοκρατούμενους ἐφύλαξαν τὴν αὐτονομίαν αὐτοῖς καὶ τὴν ἐλευθερίαν. ἐπικεστὸν δὲ ὁ Μιθριδατικὸς πόλεμος τυράννους αὐτοῖς κατέστησεν οὓς ὁ βασιλεὺς ἐβούλετο· τὸν

δ' ἵσχύσαντα μάλιστα τὸν Ἀριστίωνα καὶ ταύτην βια-
σάμενον τὴν πόλιν ἐκ πολιορκίας ἔλων Σύλλας ὁ τῶν
Ρωμαίων ἡγεμὼν ἐκόλασε, τῇ δὲ πόλει συγγνώμην
ἔνειμε· καὶ μέχρι τοῦτον ἐν ἑλευθερίᾳ τέ ἐστι καὶ τιμῆ
τοις Ρωμαίοις.

Μετὰ δὲ τὸν Πειραιᾶ Φαληρεῖς δῆμος ἐν τῇ ἐφε- 21
ξῆς παραλίᾳ· εἰδί· Ἀλιμούσιοι Αἴξωνεῖς Ἀλαιεῖς οἱ Αἴ-
ξωνικοὶ Ἀναγυράσιοι· εἰτα Θοραιεῖς Λαμπτρεῖς Αἴγυ-
λεῖς Ἀναφλύστιοι Ἀξηνιεῖς· οὗτοι μὲν οἱ μέχρι τῆς
10 ἄκρας τοῦ Σουνίου· μεταξὺ δὲ τῶν λεχθέντων δήμων
μακρὰ ἄκρα, πρώτη μετὰ τοὺς Αἴξωνέας Ζωστήρ, εἰτί·
ἄλλη μετὰ Θοραιέας Ἀστυπάλαια· ὃν τῆς μὲν πρόκει-
ται υῆσος Φάρδα τῆς δ' Ἐλαιοῦσσα· καὶ κατὰ τοὺς Αἴ-
ξωνέας δ' ἔστιν Τύροῦσσα· περὶ δὲ Ἀνάφλυστόν ἐστι
15 καὶ τὸ Πανεῖον καὶ τὸ τῆς Κωλιάδος Ἀφροδίτης Ιερόν,
εἰς δὲ τόπον ἐκκυμανθῆναι τὰ τελευταῖα τὰ ἐκ τῆς περὶ
Σαλαμῖνα ναυμαχίας τῆς Περσικῆς ναυάγια φασι, περὶ
οὗ καὶ τὸν Ἀπόλλω προειπεῖν „Κωλιάδες δὲ γυναικες
,,ἐρετμοῖσι φρύξουσι.“ πρόκειται δὲ καὶ τούτων τῶν
20 τόπων Βέλβινα υῆσος οὐ πολὺ ἄπωθεν καὶ ὁ Πατρό-
κλου χάραξ· ἐρημοὶ δ' αἱ πλεῖσται τούτων.

Κάμψαντι δὲ τὴν κατὰ τὸ Σούνιον ἄκραν ἀξιόλο- 22
γος δῆμος Σούνιον, εἰτα Θόρικος, εἰτα Ποταμὸς δῆμος
οὗτοι καλούμενοι, ἐξ οὗ οἱ ἄνδρες Ποτάμιοι, εἰτα Πρα- 399
25 σιὰ Στειριὰ Βραυρών, ὅπου τὸ τῆς Βραυρωνίας Ἀρ-
τέμιδος Ιερόν, [Ἀλαὶ Ἀραφῇ]νίδες, ὅπου τὸ τῆς Ταν-
τοπόλου, Μυρρινοῦς Προβάλινθος Μαραθών, ὅπου
Μιλτιάδης τὰς μετὰ Δάτιος τοῦ Πέρσου δυνάμεις ἀρ-
δην διέφθειρεν οὐ περιμείνας ὑστερίζοντας Λακεδαι-
30 μονίους διὰ τὴν πανσέληνον· ἐνταῦθα μεμυθεύνασι
καὶ τὸν Μαραθώνιον ταῦρον δὲν ἀνεῖλε Θησεύς. μετὰ
· δὲ Μαραθῶνα Τοικόρυνθος, εἰτα Ραμνοῦς, [ὅπου] τὸ

τῆς Νεμέσεως λερόν, εἴτα Ψαφίς ἡ τῶν Ὡρωπίων· ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἀμφιαράειόν ἐστι τετιμημένον ποτὲ μαντεῖον, ὅπου φυγόντα τὸν Ἀμφιάρεων, ὃς φησι Σοφοκλῆς, „ἐδέξατο δαγεῖσα Θηβαία κόνις αὐτοῖσιν „ὅπλοις καὶ τετρωρίστῳ δίφρῳ.“ Ὡρωπὸς δ' ἐν ἀμφισ-
βητησίμῳ γερένηται πολλάκις· ἔδρυται γὰρ ἐν μεθορίῳ τῆς τε Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. πρόκειται δὲ τῆς παρα-
λίας ταύτης πρὸ μὲν τοῦ Θορίου καὶ τοῦ Σουνίου νῆ-
σος Ἐλένη τραχεῖα καὶ ἔρημος, παραμήκης ὅσον ἔξη-
κοντα σταδίων τὸ μῆκος, ἵστι φασὶ μεμνησθαι τὸν ποι-
ητὴν ἐν οἷς Ἀλεξανδρος λέγει πρὸς τὴν Ἐλένην „οὐδὲ“
„ὅτε σε πρῶτον Λακεδαιμονος ἐξ ἐρατεινῆς [ἔπλεον]
„ἀρπάξας ἐν ποντοπόροισι νέεσσι, υῆσθι δ' ἐν Κρα-
„νάῃ ἐμίγην φιλότητι καὶ εὔνη.“ ταύτην γὰρ λέγει
Κρανάῃ τὴν νῦν Ἐλένην ἀπὸ τοῦ ἑκεῖ γενέσθαι τὴν 15
μέτιν. μετὰ δὲ τὴν Ἐλένην ἡ Εύβοια πρόκειται τῆς
ἔξης παραλίας, ὁμοίως στενὴ καὶ μακρὰ καὶ κατὰ μῆ-
κος τῇ ἡπείρῳ παραβεβλημένη καθάπερ ἡ Ἐλένη. ἔστι
δ' ἀπὸ τοῦ Σουνίου πρὸς τὸ νότιον τῆς Εύβοιας ἄκρον,
ὅ καλοῦσι Λευκὴν ἀκτὴν, σταδίων τριακοσίων πλοῦς· 20
ἄλλὰ περὶ Εύβοιας μὲν λέξομεν ὑστερον], τοὺς δ' ἐν
τῇ μεσογαίᾳ δήμοις τῆς Ἀττικῆς μακρὸν εἰπεῖν διὰ τὸ
πλῆθος.

23 Τῶν δ' ὄρῶν τὰ μὲν ἐν δύματι μάλιστά ἐστιν ὅ τε
Τμητὸς καὶ Βριλησσὸς καὶ Λυκαβηττός, ἔτι δὲ Πάρ-
νης καὶ Κορυδαλλός. μαρμάρου δ' ἐστὶ τῆς τε Τμητ-
τίας καὶ τῆς Πεντελικῆς κάλλιστα μέταλλα πλησίον τῆς
πόλεως· ὁ δ' Τμητὸς καὶ μέλι ἄριστον ποιεῖ. τὰ δ'
ἀργυρεῖα τὰ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀξιόλογα,
νῦν δ' ἐκλείπει· καὶ δὴ καὶ οἱ ἐργαζόμενοι, τῆς με-
ταλλείας ἀσθενῶς ὑπακονούσης, τὴν παλαιὰν ἐκβο-
λάδα καὶ σκωρίαν ἀναγωνεύοντες εῦρισκον ἔτι ἔξ αὐτῆς ·

ἀποκαθαιρόμενον ἀργύριον, τῶν ἀρχαίων ἀπελέως κα-
μινευόντων. τοῦ δὲ μέλιτος ἀρίστου τῶν πάντων ὅν-
τος τοῦ Ἀττικοῦ πολὺ βέλτιστόν φασι τὸ ἐν τοῖς ἀρ-0.400
γυρεοῖς, ὃ καὶ ἀκάπνιστον καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τρόπου
δ τῆς σκευασίας.

Ποταμὸί δ' εἰσὶν δὲ μὲν Κηφισσὸς ἐκ Τρινεμέων 24
τὰς ἀρχὰς ἔχων φέων δὲ διὰ τοῦ πεδίου, ἐφ' οὗ καὶ ἡ
γέφυρα καὶ οἱ γεφυρισμοί, διὰ δὲ τῶν σικελῶν τῶν ἀπὸ
τοῦ ἄστεος εἰς τὸν Πειραιᾶ καθηκόντων ἐκδίδωσιν εἰς
10 τὸ Φαληρικόν, χειμαρρώδης τὸ πλέον, θέρος δὲ μει-
οῦται τελέως. ἔστι δὲ τοιοῦτος μᾶλλον ὁ Ἰλισσός, ἐκ
θατέρου μέρους τοῦ ἄστεος φέων εἰς τὴν αὐτὴν παρα-
λίαν ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Ἀγρας καὶ τοῦ Λυκείου μερῶν
καὶ τῆς πηγῆς ἣν ὑμνησεν ἐν Φαιδρῷ Πλάτων. περὶ
15 μὲν τῆς Ἀττικῆς ταῦτα.

'Εξῆς δ' ἔστιν ἡ Βοιωτία, περὶ ἣς λέγοντα καὶ περὶ 2
τῶν συνεχῶν ἐθνῶν ἀνάμνησιν ποιήσασθαι καὶ τοῦ
σαφοῦς χάριν ὡν εἴπομεν πρότερον. [ἔλεγομ]εν δὲ
τὴν ἀπὸ Σουνίου παραλίαν μέχρι Θετταλο[νικείας] ἐπὶ¹
20 τὰς ἄφοτους τετάσθαι, μικρὸν ἐκκλίνονταν [πρὸς δύ-
σιν καὶ] ἔχουσαν τὴν θάλατταν πρὸς ἔω, τὰ δὲ ὑπερ-
[κείμενα μέρο]η πρὸς δύσιν ὡς ἀν ταινίας τινὰς διὰ τῆς
[πάσης χώρας] τεταμένας παραλλήλους· ὡν πρώτη
ἔστιν [ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ] Μεγαρίδι ὡς ἀν ταινία τις, τὸ
25 μὲν ἐωθι[νὸν πλευρὸν ἔχου]σα τὴν ἀπὸ Σουνίου μέ-
χρι Ζεραπού καὶιας, τὸ δὲ ἐσπέριον τόν τε
Ίσθμὸν καὶ τὴν [Ἄλκυονίδα θάλ]ατταν τὴν κατὰ Πα-
γγὰς μέχρι τῶν [τόπων τῆς Βοιωτίας τῶν περὶ Κρέον-
σαν· τὰ δὲ λοιπὰ [τὴν ἀπὸ Σουνίου] μέχρι Ίσθμοῦ πα-
30 ραλίαν καὶ τὴν ὡς ἀνς ὁρεινὴν τὴν διείρ-
γουσαν ἀπὸ τῆς [Βοιωτίας τὴν Ἀττικήν. δευτέρᾳ δ'
ἔστιν ἡ Βοιωτία ἀπὸ τῆς ἔω ἐπὶ δύσιν τεταμένη ταινία

τις ἀπὸ τῆς κατ' Εὐβοιαν θαλάττης ἐπὶ θάλατταν τὴν
κατὰ τὸν Κρισαῖον κόλπον, Ισομήκης πας τῇ Ἀττικῇ
ἢ καὶ ἐλάττων κατὰ μῆκος· ἀρετῇ μέντοι τῆς χώρας
πάμπολυ διαφέρει.

- 2 Ἔφορος δὲ καὶ ταύτῃ κρείττω τὴν Βοιωτίαν ἀπο-
φαίνει τῶν ὁμόρων ἐθνῶν καὶ ὅτι μόνη τριθάλαττός
ἐστι καὶ λιμένων εὐπορεῖ πλειόνων, ἐπὶ μὲν τῷ Κρι-
σαῖο κόλπῳ καὶ τῷ Κορινθιακῷ τὰ ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ
Σικελίας καὶ Λιβύης δεχομένη, ἐπὶ δὲ τῶν πρὸς Εὐβοιαν
μερῶν ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Εὐρίπου σχιζομένης τῆς παρα-
λίας τῇ μὲν ἐπὶ τὴν Αὔλιδα καὶ τὴν Ταναγρικὴν τῇ δ'
ἐπὶ τὸν Σαλγανέα καὶ τὴν Ἀνθηδόνα, τῇ μὲν εἰναι συν-
εχῇ τὴν κατ' Αἴγυπτον καὶ Κύρδον καὶ τὰς νήσους θά-
λατταν τῇ δὲ τὴν κατὰ Μακεδόνας καὶ τὴν Προποντίδα
καὶ τὸν Ἑλλήσποντον. προστίθησι δὲ ὅτι καὶ τὴν Εὐ-
βοιαν τρόπον τινὰ μέρος αὐτῆς πεποίηκεν δὲ Εὐρίπος
οὗτοι στενὸς ὥν καὶ γεφύρᾳ συνεξεγμένος πρὸς αὐ-
τὴν διπλέθρῳ. τὴν μὲν οὖν χώραν ἐπαινεῖ διὰ ταῦτα,
καὶ φησι πρὸς ἡγεμονίαν εὐφυῶς ἔχειν, ἀγωγῇ δὲ καὶ
παιδείᾳ μὴ χρησαμένους * ἐπεὶ μηδὲ τοὺς ἀεὶ προΐστα-
μένους αὐτῆς, εἰ καὶ [τέ] ποτε κατώρθωσαν, ἐπὶ μικρὸν
τὸν χρόνον συμμεῖναι, καθάπερ Ἐπαμεινώνδας ἔδειξε-
τελευτήσαντος γὰρ ἔκείνου τὴν ἡγεμονίαν ἀποβαλεῖν
εὐθὺς τοὺς Θηβαίους γενεσαμένους αὐτῆς μόνουν· αἰ-
τιον δὲ εἶναι τὸ λόγων καὶ διμιλίας τῆς πρὸς ἀνθρώ-
πους ὀλιγωρῆσαι, μόνης δὲ ἐπιμεληθῆναι τῆς κατὰ πό-
λεμον ἀρετῆς. ἔδει δὲ προσθεῖναι διότι τοῦτο πρὸς
Ἑλληνας μάλιστα χρήσιμόν ἐστιν, ἐπεὶ πρὸς γε τοὺς
βαρβάρους βίᾳ λόγουν κρείττων ἐστί. καὶ Ῥωμαῖοι δὲ
τὸ παλαιὸν μὲν ἀγριωτέροις ἐθνεσι πολεμοῦντες οὐδὲν 30.
ἔδειντο τῶν τοιούτων παιδευμάτων, ἀφ' οὐδὲ ἦρ-
ξαντο πρὸς ἡμερώτερα ἐθνη καὶ φῦλα τὴν πραγμα-

τείαν ἔχειν, ἐπέθεντο καὶ ταύτῃ τῇ ἀγωγῇ καὶ κατέστη-
σαν πάντων κύριοι.

'Η δ' οὖν Βοιωτία πρότερον μὲν ὑπὸ βαρβάρων 3
φύετο Ἀόνων καὶ Τεμμίκων ἐν τοῦ Σουνίου πεπλα-
5 νημένων καὶ Λελέγων καὶ Τάντων· εἰτα Φοίνικες
ἔσχον οἱ μετὰ Κάδμου, ὃς τὴν τε Καδμείαν ἐτείχισε
καὶ τὴν ἀρχὴν τοῖς ἔκγρονοις ἀπέλιπεν. ἐκεῖνοι δὲ τὰς
Θήβας τῇ Καδμείᾳ προσέκτισαν, καὶ συνεφύλαξαν τὴν
ἀρχὴν ἥρούμενοι τῶν πλείστων Βοιωτῶν ἔως τῆς τῶν
10 Ἔπιγόνων στρατείας. κατὰ δὲ τούτους ὀλίγον χρόνον
ἐκλιπόντες τὰς Θήβας ἐπανῆλθον πάλιν· ὡς δ' αὕτως
ὑπὸ Θρακῶν καὶ Πελασγῶν ἐκπεσόντες ἐν Θετταλίᾳ
συνεστήσαντο τὴν ἀρχὴν μετὰ Ἀρναίων ἐπὶ πολὺν
χρόνον, ὥστε καὶ Βοιωτοὺς κληθῆναι πάντας. εἰτ'
15 ἀνέστρεψαν εἰς τὴν οἰκείαν, ἥδη τοῦ Αἰολικοῦ στόλου
παρεσκευασμένου περὶ Αὐλίδα τῆς Βοιωτίας, ὃν ἔστελ-
λον εἰς τὴν Ἀσίαν οἱ Ὁρέτου παῖδες. προσθέντες δὲ
τῇ Βοιωτίᾳ τὴν Ὁρχομενίαν (οὐ γὰρ ἥσαν κοινῇ πρό-
τερον, οὐδὲ "Ομηρος μετα Βοιωτῶν αὐτοὺς κατέλεξεν
20 ἀλλ' ἵδια, Μινύας προσαγορεύσας) μετ' ἐκείνων ἔξε-
βαλον τοὺς μὲν Πελασγοὺς εἰς Ἀθήνας, ἀφ' ᾧν ἐκλή-
θη μέρος τι τῆς πόλεως Πελασγικόν (φέκησαν δὲ ὑπὸ
τῷ Τμηττῷ), τοὺς δὲ Θρᾷκας ἐπὶ τὸν Παρνασσόν.
Ταντες δὲ τῆς Φωκίδος Ταν πόλιν φέκισαν.

25 Φησὶ δ' "Ἐφρόδος τοὺς μὲν Θρᾷκας ποιησαμένους 4
σπουδὰς πρὸς τοὺς Βοιωτοὺς ἐπιθέσθαι υὔκτωρ στρα-
τοπεδεύουσιν ὄλιγῳρότερον ὡς εἰρήνης γεγονυῖας·
διακρουσαμένων [δ'] αὐτοὺς αἰτιωμένων τε ἄμα ὅτι
τὰς σπουδὰς παρέβαινον, μὴ παραβῆναι φάσκειν ἐκεί-
30 νους· συνθέσθαι γὰρ ἡμέρας, υὔκτωρ δ' ἐπιθέσθαι · C.402
ἀφ' οὗ δὴ καὶ τὴν παροιμίαν εἰρῆσθαι,,Θρᾳκία παρεύ-
,,ρεσις.“ τοὺς δὲ Πελασγοὺς μένοντος ἔτι τοῦ πολέμου

χρηστηριασομένους ἀπελθεῖν, ἀπελθεῖν δὲ καὶ τοὺς Βοιωτούς· τὸν μὲν οὖν τοῖς Πελασγοῖς δοθέντα χρησμὸν ἔφη μὴ ἔχειν εἰπεῖν, τοῖς δὲ Βοιωτοῖς ἀνελεῖν τὴν προφῆτιν ἀσεβήσαντας εῦ πράξειν· τοὺς δὲ θεωροὺς ὑπονοήσαντας χαριζομένην τοῖς Πελασγοῖς τὴν προφῆτιν δικαίη τὸ συγγενὲς (ἐπειδὴ καὶ τὸ ιερὸν Πελασγικὸν ἐξ ἀρχῆς ὑπῆρξεν) οὕτως ἀνελεῖν, ἀρπάσαντας τὴν ἄνθρωπον εἰς πυρὰν ἐμβαλεῖν ἐνθυμηθέντας, εἴτε κακούργησασαν εἴτε μή, πρὸς ἀμφότερα ὁρθῶς ἔχειν, εἰ μὲν παρεχρηστηρίασε, κολασθείσης αὐτῆς, εἰ δ' οὐδὲν ἕκα-10 κούργησε, τὸ προσταχθὲν αὐτῶν πραξάντων. τοὺς δὲ περὶ τὸ ιερὸν τὸ μὲν ἀκρίτους κτείνειν τοὺς πράξαντας, καὶ ταῦτ' ἐν ιερῷ, μὴ δοκιμάσαι, καθιστάναι δ' εἰς κρίσιν, καλεῖν δ' ἐπὶ τὰς ιερείας, ταύτας δὲ εἶναι τὰς προφήτιδας αἱ λοιπαὶ τριῶν οὐσῶν περιῆσαν· λε-15 γόντων δ' ὡς οὐδαμοῦ νόμος εἰη δικάζειν γυναικας, προσαλέσθαι καὶ ἄνδρας ίσους ταῖς γυναιξὶ τὸν ἀριθμόν· τοὺς μὲν οὖν ἄνδρας ἀπογνῶναι, τὰς δὲ γυναῖκας καταγνῶναι, ίσων δὲ τῶν ψήφων γενομένων τὰς ἀπολυούσας νικῆσαι· ἐκ δὲ τούτων Βοιωτοῖς μόνοις 20 ἄνδρας προθεσπέζειν ἐν Διωδώνῃ. τὰς μέντοι προφήτιδας ἔξηγουμένας τὸ μαντεῖον εἰπεῖν, ὅτι προστάττοι ὁ θεὸς τοῖς Βοιωτοῖς τοὺς παρ' αὐτοῖς τριπόδας* συλλέγοντας εἰς Διωδώνην πέμπειν κατ' ἔτος· καὶ δὴ καὶ ποιεῖν τοῦτο· ἀεὶ γάρ τινα τῶν ἀνακειμένων τριπόδων 25 νύκτιῳ καθαιροῦντας καὶ κατακαλύπτοντας ἴματίους ὡς ἂν λάθρᾳ τριποδηφορεῖν εἰς Διωδώνην.

⁵ Μετὰ δὲ ταῦτα τὴν Αἰολικὴν ἀποικίαν συνέπραξαν τοῖς περὶ Πενθίλον, πλείστους ἐξ ἑαυτῶν συμπέμψαντες, ὥστε καὶ Βοιωτικὴν προσαγορευθῆναι. Ὅστε-30

9. πει κακούργησασαν: περὶ τῶν γυναικῶν τῶν δικαστῶν

ρον δὲ χρόνοις πολλοῖς ὁ Περσικὸς πόλεμος περὶ Πλαταιᾶς γενόμενος διελυμήνατο τὴν χώραν. εἰτ' ἀνέλαβον σφᾶς πάλιν ἐπὶ τοσοῦτον ὥστε καὶ τῆς τῶν Ἑλλήνων ἀρχῆς ἀμφισβητῆσαι Θηβαίους δυσὶ μάχαις κρατήσαντας Λακεδαιμονίους. Ἐπαμεινάνδα δὲ πεσόντος ἐν τῇ μάχῃ ταύτης μὲν τῆς ἐλπίδος διεσφάλησαν, ὑπὲρ δὲ τῶν Ἑλλήνων ὅμως ἐπολέμησαν πρὸς Φωκέας τοὺς τὸ Ιερὸν συλήσαντας τὸ κοινόν. κακωθέντες δ' ὑπό τε C.403 τούτου τοῦ πολέμου καὶ τῶν Μακεδόνων ἐπιθεμένων 10 τοῖς Ἑλλησιν, ὑπὸ τῶν αὐτῶν τούτων καὶ ἀπέβαλον τὴν πόλιν καταστραφεῖσαν καὶ ἀνέλαβον ἀνακτισθεῖσαν. ἐξ ἐκείνου δ' ἡδη πράττοντες ἐνδεέστερον ἀεὶ μεχρι εἰς ἡμᾶς οὐδὲ καύμης ἀξιολόγου τύπον σωζουσι· καὶ [αἱ] ἄλλαι δὲ πόλεις ἀνὰ λόγον πλὴν Τανάγρας καὶ 15 Θεσπιῶν· αὗται δ' ἵκανος συμμένουσι πρὸς ἐκείνας κρινόμεναι.

'Εξῆς δὲ τὴν περιήγησιν τῆς χώρας ποιητέον ἀρ- 6
ξαμένους ἀπὸ τῆς πρὸς Εύβοιαν παραλίας τῆς συνεχοῦς τῇ Ἀττικῇ. ἀρχὴ δ' ὁ Ὁρωπὸς καὶ ὁ Ιερὸς λιμὴν 20 ὃν καλοῦσι Δελφίνιον, καθ' ὃν ἡ παλαιὰ Ἐρέτρια ἐν τῇ Εύβοιᾳ, διάπλουν ἔχουσα ἔξηκοντα σταδίων. μετὰ δὲ τὸ Δελφίνιον ὁ Ὁρωπὸς ἐν εἶκοσι σταδίοις· κατὰ δὲ τοῦτον ἔστιν ἡ νῦν Ἐρέτρια, διάπλους δ' ἐπ' αὐτὴν στάδιοι τετταράκοντα.

25 *Εἶτα Δήλιον τὸ Ιερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος ἐκ Δήλου 7
ἀφιδρυμένου, Ταναγραίων πολίχνιον Άύλιδος διέχουν
σταδίους τριάκοντα, ὅπου μάχῃ λειψθέντες Ἀθηναῖοι
προτροπάδην ἔψυγον· ἐν δὲ τῇ φυγῇ πεσόντα ἀφ' ἵππου
της ἔνοφῶντα ίδων κείμενον τὸν Γρύλλον Σωκρά-*
30 *τος ὁ φιλόσοφος στρατεύων πεξὸς τοῦ ἵππου γεγονότος
ἐκποδὼν ἀνέλαβε τοῖς ὅμοις αὐτόν, καὶ ἐσωσεν ἐπὶ^{τοῦ}
πολλοὺς σταδίους ἔως ἐπαύσατο ἡ φυγή.*

- 8 Είτα λιμὴν μέγας ὃν καλοῦσι Βαθὺν λιμένα· εἴθ' ἡ Αὔλις πετρῶδες χωρίον καὶ κώμη Ταναγραῖων· λιμὴν δ' ἔστι πεντήκοντα πλοίοις, ὥστ' εἰκὸς τὸν ναύσταθμον τῶν Ἑλλήνων ἐν τῷ μεγάλῳ ὑπάρξαι λιμένι. καὶ ὁ Εὔριπος δ' ἔστι πλησίον ὁ Χαλκίδος, εἰς ὃν ἀπὸ 5 Σουνίου στάδιοι * ἔβδομηκοντα· ἔστι δ' ἐπ' αὐτῷ γέφυρα δίπλεθρος, ὡς εἰρηκα· πύργος δ' ἐκατέρωθεν ἐφέστηκεν ὃ μὲν ἐκ τῆς Χαλκίδος ὃ δ' ἐκ τῆς Βοιωτίας διφοδόμηται δ' εἰς αὐτοὺς σῦριγξ. περὶ δὲ τῆς παλιρροίας τοῦ Εὐρίπου τοσοῦτον μόνον εἰπεῖν ἴκανόν, διτέλεις 10 ἑπτάκις μεταβάλλειν φασὶ καθ' ἡμέραν ἐκάστην καὶ νύκτα· τὴν δ' αἰτίαν ἐν ἄλλοις σκεπτέον.
- 9 Πλησίον δ' ἔστιν ἐφ' ὕψους κείμενον χωρίον Σαλγανεύς, ἐπάνυμον τοῦ ταφέντος ἐπ' αὐτῷ Σαλγανέως ἀνδρὸς Βοιωτίου, καθηγησαμένου τοῖς Πέρσαις εἰς-15 πλέουσιν εἰς τὸν διάπλον τοῦτον ἐκ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου, ὃν φασιν ἀναιρεθῆναι πρὸν ἦ τῷ Εὔριπῳ συνάπτειν ὑπὸ τοῦ ναυάρχου Μεγαβάτου νομισθέντα κακούργον, ὡς ἐξ ἀπάτης ἐμβαλόντα τὸν στόλον εἰς τυφλὸν τῆς θαλάττης στενωπόν· αἰσθόμενον δὲ τὸν 20 βάρβαρον τὴν περὶ αὐτὸν ἀπάτην μεταγνῶντας τε καὶ ταφῆς ἀξιῶσαι τὸν ἀναιτίως ἀποθανόντα.
- 0.404 Καὶ ἡ Γραία δ' ἔστι τόπος Ὡρωποῦ πλησίον καὶ τὸ ιερὸν τοῦ Ἀμφιαράου καὶ τὸ Ναρκίσσου τοῦ Ἐρετριέως μνῆμα ὃ καλεῖται Σιγηλοῦ, ἐπειδὴ σιγῶσι πα-25 φιόντες· τινὲς δὲ τῇ Τανάγρᾳ τὴν αὐτήν φασιν· ἡ Ποιμανδρὶς δ' ἔστιν ἡ αὐτὴ τῇ Ταναγρικῇ· καλοῦνται δὲ καὶ Γεφυραῖοι οἱ Ταναγραῖοι. ἐκ Κυπρίας δὲ τῆς Θηραϊκῆς μεδιδού[θη κατὰ χρησμὸν] δεῦρο τὸ Ἀμφιαράειον.
- 10 Καὶ ὁ Μυκαλησσὸς δὲ κώμη τῆς Ταναγραϊκῆς·

κεῖται δὲ παρ' ὁδὸν [τὴν ἐκ] Θηβῶν εἰς Χαλκίδα· ὡς
δ' αὐτῶς καὶ τὸ "Αρμα, τῆς Ταναγραῖκῆς κάμη ἔρημος
περὶ τὴν Μυκαλησσόν, ἀπὸ τοῦ Ἀμφιαράου ἄρματος
λαβοῦσα τοῦνομα, ἐτέρα οὖσα τοῦ "Αρματος τοῦ κατὰ
5 τὴν Ἀττικήν, ὅ ἐστι περὶ Φυλήν, δῆμον τῆς Ἀττικῆς
ὅμορον τῇ Τανάγρᾳ. ἐντεῦθεν δὲ ἡ παροιμία τὴν ἀρ-
χὴν ἔσχεν ἡ λέγουσα „δύοταν δι' "Αρματος ἀστράψῃ,“
ἀστραπήν τινα σημειούμενων κατὰ χρησμὸν τῶν λε-
γομένων Πυθαΐστῶν, βλεπόντων ὡς ἐπὶ τὸ "Αρμα καὶ
10 τότε πεμπόντων τὴν θυσίαν εἰς Δελφοὺς ὅταν ἀστρά-
ψαντα ἰδωσιν· ἐτήρουν δ' ἐπὶ τρεῖς μῆνας, καθ' ἑκα-
στον μῆνα ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας καὶ νύκτας, ἀπὸ τῆς ἔσχά-
ρας τοῦ ἀστραπαίου Διός· ἐστι δ' αὐτῇ ἐν τῷ τελεῖ
μεταξὺ τοῦ Πυθίου καὶ τοῦ Ὄλυμπου. περὶ δὲ τοῦ
15 "Αρματος τοῦ Βοιωτιακοῦ οἱ μέν φασιν ἐκπεσόντος ἐκ
τοῦ ἄρματος ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Ἀμφιαράου κατὰ τὸν τό-
πον, ὃπου νῦν ἐστὶ τὸ Ιερὸν αὐτοῦ, τὸ ἄρμα ἔρημον
ἐνεχθῆναι ἐπὶ τὸν ὁμώνυμον τόπον· οἱ δὲ τοῦ Ἀδρά-
στον συντριβῆναι τὸ ἄρμα φεύγοντός φασιν ἐνταῦθα,
20 τὸν δὲ διὰ τοῦ Ἀρείονος σωθῆναι. Φιλόχορος δ' ὑπὸ
τῶν καμητῶν σωθῆναι φησιν αὐτόν, καὶ διὰ τοῦτο
ἰσοπολιτείαν αὐτοῖς παρὰ τῶν Ἀργείων ὑπάρξαι.

"Ἐστι δὲ τῷ ἐκ Θηβῶν εἰς * "Αργος ἀνιόντι ἐν ἀρι- 12
στερῷ ἡ Τάναγρα κ..... ἐν δεξιᾷ κεῖται· καὶ
25 ἡ "Τρία δὲ τῆς Ταναγραίας νῦν ἐστί, πρότερον δὲ τῆς
Θηβαΐδος· ὃπου δὲ Τριεὺς μεμύθευται καὶ ἡ τοῦ "Ωρί-
ωνος γένεσις, ἣν φησι Πίνδαρος ἐν τοῖς διθυράμβοις·
κεῖται δὲ ἐγγὺς Αύλιδος. ἐνιοι δὲ τὰς "Τριάς Τρίην λέγε-
σθαι φασι, τῆς Παρασωπίας οὖσαν ὑπὸ τῷ Κιθαιρῶνι
30 πλησίον Ἐρυθρῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ, ἀποικον "Τριέων,

1. post Χαλκίδα: καλοῦσι δὲ βοιωτιακῶς Μυκαληττόν.

κτίσμα δὲ Νυκτέως τοῦ Ἀντιόκης πατρός. εἰσὶ δὲ καὶ
ἐν τῇ Ἀργείᾳ ὅσαι κώ[μη], οἱ δὲ ἐξ αὐτῆς ὅσαι λέ-
γονται. τῶν δὲ Ἐρυθρῶν τούτων ἄποικοι αἱ ἐν Ἰωνίᾳ
Ἐρυθραῖ. καὶ ὁ Ἐλεῖν δὲ ἐστὶ κάμη Ταναγρική, ἀπὸ
τῶν ἑλῶν ὀνομασμένη.

5

13 Μετὰ δὲ Σαλγανέα Ἀνδηδῶν πόλις λιμένα ἔχου-
σα, ἐσχάτη τῆς Βοιωτιακῆς παραλίας τῆς πρὸς Εύβοιά,
C.405 καθάπερ καὶ ὁ ποιητὴς εἰρηκεν „Ἀνδηδόνα τ' ἐσχατό-
,,ωσαν.“ εἰσὶ μέντοι ἔτι προέόντι μικρὸν πολίχναι δύο
τῶν Βοιωτῶν, Λάρυμνά τε, παρ' ἣν δὲ Κηφισσὸς ἐκδί- 10
δωσι, καὶ ἔτι ἐπέκεινα Ἄλαι, ὅμωνυμοι τοῖς Ἀττικοῖς
δήμοις. πατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην κεῖσθαι φασιν
Ἄλγας τὰς ἐν Εύβοιᾷ, ἐν αἷς τὸ τοῦ Ποσειδῶνος λεόν
τοῦ Άλγαλον· ἐμνήσθημεν δὲ αὐτοῦ καὶ πρότερον. δι-
αρμα δὲ ἐστὶν ἀπὸ μὲν τῆς Ἀνδηδόνος εἰς Άλγας ἐκα- 15
τὸν εἶκοσι στάδιοι, ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων τόπων πολὺ¹
ἔλαττον· κεῖται δὲ ἐπὶ ὄρους ὑψηλοῦ τὸ λεόν, ἣν δέ
ποτε καὶ πόλις· ἐγγὺς δὲ τῶν [Άλγῶν] καὶ αἱ Ὁρόβιαι.
ἐν δὲ τῇ Ἀνδηδόνᾳ Μεσσάπιον ὄρος ἐστὶν ἀπὸ Μεσ-
σάπου, ὃς εἰς τὴν Ἰακυνγίαν ἐλθὼν Μεσσαπίαν τὴν 20
χώραν ἐκάλεσεν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ περὶ τὸν Γλαῦκον
μυθεύεται τὸν Ἀνδηδόνιον, ὃν φασιν εἰς κῆτος μετα-
βαλεῖν.

14 Πλησίον δὲ ἐστὶν Ἀνδηδόνος λεόπορεπῆς τόπος
τῆς Βοιωτίας, ἵχην πόλεως ἔχων, ὁ καλούμενος Ἰσός 25
συστέλλοντι τὴν πρώτην συλλαβὴν. οἰονται δέ τινες
δεῖν γράφειν „Ισόν τε ξαθέην Ἀνδηδόνα τ' ἐσχατό-
,,σαν“ ἐκτείνοντες τὴν πρώτην συλλαβὴν ποιητικῶς
διὰ τὸ μέτρον, ἀντὶ τοῦ „Νίσάν τε ξαθέην.“ ἡ γὰρ
Νίσα οὐδαμοῦ φαίνεται τῆς Βοιωτίας, ὡς φησιν Ἀπολ- 30
λόδωρος ἐν τοῖς περὶ νεῶν. [ε]ἴη, εἰ μὴ τὴν
Νίσαν οὕτως εἰρηκεν· ἡν γὰρ δὲ Μεγαρικῇ,

ἐκεῖθεν ἀπωκιδμένη πρόσ[χωρος τοῦ Κιθα]ιρῶνος,
ἐκλέλειπται δὲ νῦν. τινὲς δὲ γράφουσι „Κρεῦσάν τε
„ζαθέην,“ τὴν νῦν Κρέουσαν δεχόμενοι, τὸ τῶν Θε-
σπιέων ἐπίνειον ἐν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ ιδρυμένον· ἄλ-
λοι δὲ „Φαράς τε ζαθέας.“ ἔστι δὲ τῆς τετρακοινίας τῆς
περὶ Τάναγραν, Ἐλεῶνος Ἀρματος Μυκαλησσοῦ Φα-
ρᾶν. γράφουσι δὲ καὶ τοῦτο „Νῦσάν τε ζαθέην.“
κώμη δ' ἔστι τοῦ Ἐλικῶνος ἡ Νῦσα. ἡ μὲν οὖν παρα-
λία τοιαύτη τις ἡ πρὸς Εὔβοιαν.

- 10 Τὰ δ' ἔξης ἐν τῇ μεσογαίᾳ πεδία ἔστι κοῖλα πάν- 15
τοθεν ἐκ τῶν ἄλλων μερῶν ὅρεσι περιεχόμενα, τοῖς
Ἀττικοῖς μὲν πρὸς νότον, πρὸς ἀρκτούν δὲ τοῖς Φωκι-
κοῖς· ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ὁ Κιθαιρῶν λοξὸς ἐμπίπτει
μικρὸν ὑπὲρ τῆς Κρισαίας θαλάττης, ἔχων τὴν ἀοχὴν
15 συνεγγῆ τοῖς Μεγαρικοῖς καὶ τοῖς Ἀττικοῖς ὅρεσιν, εἰτ'
ἐπιστρέφων εἰς τὰ πεδία, παυόμενος δὲ περὶ τὴν Θη-0.406
βαίαν.

Τῶν δὲ πεδίων τούτων τὰ μὲν λιμνάζει, ποταμῶν 16
ἀναχειμένων εἰς αὐτά, τῶν δ' ἐμπικτόντων, εἰτα ἐκρύ-
20 σεις λαμβανόντων· τὰ δ' ἀνέψυκται καὶ γεωργεῖται
παντοδαπῶς διὰ τὴν εὐκαρπίαν. ὑπάντρου δὲ καὶ ση-
ραγγώδους οὖσης κατὰ βάθους τῆς γῆς, σεισμοὶ γενό-
μενοι πολλάκις ἔξαίσιοι τοὺς μὲν ἔφραξαν τῶν πόρων
τοὺς δὲ ἀνέφεν, τοὺς μὲν μέχρι τῆς ἐπιφανείας τοὺς
25 δὲ δι' ὑπονόμων· συμβαίνει δὴ καὶ τοῖς ὑδασι τοῖς μὲν
δι' ὑπονόμων φέρεσθαι τῶν φείδων τοῖς δ' ἐπιπολῆς,
τοῖς τε λιμναίοις καὶ τοῖς ποταμίοις. ἐγχωσθέντων δὲ
κατὰ βάθους τῶν πόρων αὕξεσθαι τὰς λίμνας συμ-
βαίνει μέχρι τῶν οἰκουμένων τόπων ὥστε καὶ πόλεις
30 καταπίνεσθαι καὶ χώρας, ἀνοιχθέντων δὲ τῶν αὐτῶν
ἡ ἄλλων ἀνακαλύπτεσθαι, καὶ τοὺς αὐτοὺς τόπους
ποτὲ μὲν πλεῖσθαι ποτὲ δὲ πεξεύεσθαι, καὶ τὰς αὐ-

τὰς πόλεις ποτὲ μὲν ἐπὶ τῇ λίμνῃ ποτὲ δὲ ἄπωθεν κεῖσθαι.

17 Διττῶς δὲ τοῦτο γίνεται· καὶ γὰρ μενούσσων ἀκινήτων τῶν πόλεων, ὅταν ἡ αὔξησις τῶν ὑδάτων ἥττων ἢ τῆς ὑπερχύσεως διὰ ὑψος τῶν οἰκήσεων ἢ διὰ ἀπόστασιν, καὶ διὰ ἀνοικισμόν, ὅταν τῷ πλησιασμῷ κινδυνεύσαντες πολλάκις ἀπαλλαγὴν πορθέωνται τοῦ φόρου τὴν μετάληψιν τῶν χωρίσων τῶν ἄπωθεν ἢ τῶν ἐν ὑψει. παρακολουθεῖ δὲ τοῖς οὕτως ἀνοικισθεῖσι τὸ τὴν αὐτὴν προσηγορίαν φυλάττουσιν, ἐτύμως πρότερον 10 λεγομένοις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τοπικᾶς, νῦν μητέ [κέτι] λέγεσθαι ἐτύμως. Πλαταιὰς γὰρ ἀπὸ τῆς πλάτης τῶν καπῶν εἰρησθαι πιθανὸν καὶ Πλαταιέας τοὺς ἀπὸ καπηλασίας ξῶντας, ἀλλὰ νῦν ἄπωθεν τῆς λίμνης οἰκοῦντες οὐκέτ' ἀν προσαγορεύοντο ἐτύμως. Ἔλος 15 τε καὶ Ἐλεὰν καὶ Ἑλλέσιον ἐκλήθη διὰ τὸ ἐπὶ τοῖς ἔλεσιν ἰδρυσθαι· νῦν δὲ οὐχ ὅμοιως ἔχει ταῦτα, ἢ ἀνοικισθέντων ἢ τῆς λίμνης ἐπιπολὺ ταπεινωθείσης διὰ τὰς ὕστερους γενομένας ἐκρύσεις· καὶ γὰρ τοῦτο δυνατόν.

18 Δηλοὶ δὲ καὶ ὁ Κηφισσός τοῦτο μάλιστα τὴν Κω- 20 παῖδα λίμνην πληρῶν. αὐξομένης γὰρ αὐτῆς ὥστε κινδυνεύειν καταποθῆναι τὰς Κώπας, [Ἄς] ὅ τε ποιητὴς δινομάξει, καὶ ἀκ' αὐτῶν ἡ λίμνη τὴν ἐπωνυμίαν εἰληφε, χάσμα γενηθὲν πρὸς τῇ λίμνῃ πλησίον τῶν Κωπῶν ἀνέφεξεν ὑπὸ γῆς φειδρον ὅσον τριάκοντα σταδίων 25 καὶ ἐδέξατο τὸν ποταμόν, εἰτα ἔξερηζεν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν κατὰ Λάρυμναν τῆς Λοκρίδος τὴν ἄνω· καὶ γὰρ ἐτέρα ἐστίν, ἡς [ἐμνήσθη]μεν, [ἡ] Βοιωτιακη, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ, ἢ προσέθεσαν Ρωμαῖοι τὴν ἄνω. κα-
C.407 λεῖται δ' ὁ τόπος Ἀγχόη· ἔστι δὲ καὶ λίμνη ὁμώνυμος· 30 ἐντεῦθεν δ' ἥδη ὁ Κηφισσός ἐκδίδωσιν ἐπὶ τὴν θάλατταν. τότε μὲν οὖν πανσαμένης τῆς πλημμυρίδος,

παῦλα καὶ τοῦ κινδύνου τοῖς παροικοῦσιν ὑπῆρξε,
πλὴν τῶν ἥδη καταποθεισῶν πόλεων. πάλιν δὲ ἔγχου-
μένων τῶν πόρων, δι μεταλλευτὴς Κράτης ἀνήρ Χαλ-
κιδεὺς ἀνακαθαίρειν τὰ ἐμφράγματα ἐπαύσατο στα-
5 σιασάντων τῶν Βοιωτῶν, καίπερ, ὡς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς
Ἀλέξανδρον ἐπιστολῇ φησιν, ἀνεψυγμένων ἥδη πολ-
λῶν, ἐν οἷς οἱ μὲν τὸν Ὀρχομενὸν οἰκεῖσθαι τὸν ἀρ-
χαῖον ὑπελάμβανον, οἱ δὲ Ἐλευσῖνα καὶ Ἀθῆνας παρὰ
τὸν Τρίτωνα ποταμόν· λέγεται [δὲ οἰκεῖσαι] Κέκροπα,
10 ἦνίκα τῆς Βοιωτίας ἐπῆρξε καλούμενης τότε Ὡρυγίας,
ἀφανισθῆναι δὲ ταύτας ἐπικλυσθείσας ὕστερον. γενέ-
σθαι δέ φασιν καὶ κατὰ Ὀρχομενὸν χάσμα, καὶ δεξε-
σθαι τὸν Μέλανα ποταμὸν τὸν δέοντα διὰ τῆς Ἀλιαρ-
τίας καὶ ποιοῦντα ἐνταῦθα τὸ ἔλος τὸ φύον τὸν αὐλη-
15 τικὸν κάλαμον. ἀλλ᾽ οὗτος ἡφάνισται τελέως, εἴτε
τοῦ χάσματος διαχέοντος αὐτὸν εἰς ἀδήλους πόρους,
εἴτε τῶν περὶ Ἀλιαρτον ἔλαν καὶ λιμνῶν προαναλι-
σκόντων αὐτόν, ἀφ' ὃν ποιήσαται καλεῖ τὸν [τόπον] ὁ
ποιητὴς „καὶ ποιήσεις Ἀλιαρτον“ λέγων.

20 Οὗτοι μὲν οὖν ἐν τῶν Φωκικῶν ὄρῶν οἱ ποταμοὶ 19
καταφέρονται, ὃν δὲ Κηφισσὸς ἐκ Λιλαίας Φωκικῆς
πόλεως τὴν ἀρχὴν λαμβάνει, καθάπερ καὶ Ὁμηρός φη-
σιν „οἵ τε Λίλαιαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ Κηφισσοῖο··· δι’
Ἐλατείας δὲ φυεὶς μεγίστης τῶν ἐν Φωκεῦσι πόλεων,
25 καὶ διὰ Παραποταμίων καὶ Φανοτέων ὁμοίως Φωκι-
κῶν πολισμάτων, εἰς Χαιράνειαν τῆς Βοιωτίας πρό-
εισιν, εἴτα διὰ τῆς Ὀρχομενίας καὶ τῆς Κορωνειακῆς
εἰς τὴν Κωπαΐδα λίμνην ἔξιησι· καὶ δὲ Περιμησσὸς δὲ
καὶ Ὁλμειός, ἐκ τοῦ Ἐλικῶνος συμβάλλοντες ἀλλή-
30 λοις, εἰς τὴν αὐτὴν ἐμπίπτουσι λίμνην τὴν Κωπαΐδα
τοῦ Ἀλιάρτου πλη[σίον· καὶ ἄλλα] δὲ φεύματα εἰς αὐ-
τὴν ἐμβάλλει. ἔστι μὲν οὖν μεγάλη, τὴν περίμετρον

ἔχουσα ὁγδοήκοντα καὶ τριακοσίων σταδίων, αἱ δὲ
ἐκρύσσεις οὐδαμοῦ φαίνονται πλὴν τοῦ δεχομένου τὸν
Κηφισσὸν χάσματος καὶ τῶν ἑλῶν.

- 20 [Τῶν δὲ περικειμένων λίμνων ἔστιν ἡ τε * Τρε-
φία καὶ ἡ Κ[ηφισίς, ἥς] μέμνηται καὶ "Ομηρος „ὅς δ' 5
„ἐν "Τλη ναίεσκε μέγα πλούτοιο μεμηλώς, λίμνη κε-
„κλιμένος Κηφισσίδι." οὐ γάρ λίμνην τὴν Κωπαΐδα
βούλεται λέγειν, ὡς οἰονται τινες, ἀλλὰ τὴν Τλικὴν
προσαγορευομένην ἀπὸ τῆς πλησίου κάμης ἢν καλοῦ-
σιν "Τλας, οὐδὲ "Τδην, ὡς ἔνιοι γράφουσιν „ὅς δ' ἐν 10
„Τδη ναίεσκεν." ἡ μὲν γάρ ἔστιν ἐν Λυδίᾳ, Τμάλῳ
C.408, ὑπὸ νιφόδεντι, "Τδης ἐν πίονι δήμῳ," ἡ δὲ Βοιωτιακή·
ἐπιφέρει γοῦν τῷ „λίμνῃ πεκλιμένος Κηφισσίδι" τὸ
„πάρο δὲ οἱ ἄλλοι ναῖον Βοιωτοί." ἡ μὲν γάρ ἔστι με-
γάλη καὶ οὐκ ἐν τῇ Θηβαΐδι, ἡ δὲ μικρά, ἐκεῖθεν δι' 15
ὑπονόμων πληρούμένη, κειμένη μεταξὺ Θηβῶν καὶ
Αυθηδόνος. "Ομηρος δ' ἐνικᾶς ἐκφέρει τοτὲ μὲν ἐκτεί-
νων τὴν πρώτην συλλαβήν, ὡς ἐν τῷ καταλόγῳ „ἥδ'
„Τλην καὶ Πετεῶνα," ποιητικᾶς, τοτὲ δὲ συστέλλων
„ὅς δ' ἐν "Τλη ναίεσκε" „σκυτοτόμων ὅχ' ἄριστος" Τλη 20
„ἐνι οἰκία ναῖον." οὐδὲ ἐνταῦθα εὗ γραφόντων τι-
νῶν "Τδη ἔνι· οὐ γάρ ὁ Αἴας ἐκ Λυδίας τὸ σάκος μετε-
πέμπετο.
- 21 [Αὔται δ' αἱ] λίμναι τὴν τάξιν τῶν ἐφεξῆς τόπω[ν
ὑπογράφουσιν ὥστε] λόγῳ περιληφθῆναι σαφῶς, δῆτι 25
ὁ [ποιητὴς ἀτάκτως χρῆται] τοῖς ὀνόμασι τῶν τόπων
τῶν τε ἀξ[ιολόγων καὶ τῶν μη· καὶ] χαλεπὸν ἐν το-
σούτοις καὶ ἀσήμοις τοῖς πλείστοις καὶ ἐν μεδογαίᾳ μη-
δαμοῦ τῇ τάξει διαπεσεῖν· ἡ παραλία δ' ἔχει τι πλεο-
νέκτημα πρὸς τοῦτο· καὶ γυναικιμώτεροι οἱ τόποι, καὶ 30

9. post προσαγορευομένην: τῇ προσῳδίᾳ ὡς λυρικὴν 10.
post Τλας: ὡς λύρας καὶ θύρας 20. post ναίεσκε: Τύχιος

ἡ θάλαττα τό γε ἔξης ὑπαγορεύει βέλτιον· διόπερ καὶ
ἡμεῖς ἐκεῖθεν πειρώμ[ενα περιοδεύειν]. ἐνταῦθα δ'
ἐάσαντες τοῦτο τῷ π[οιητῇ] ἀκολουθοῦντες ποιήσομεν
τὴν [διαφίδιον] προστιθέντες ὅ τι ἀν χρήσιμον ἥ
5 [πρὸς τὴν ὑπόθεσιν] ἡμῖν, ὑπὲκείνουν δὲ παραλειφθέν.
ἄρχεται [δ' ἀπὸ τῆς Τριῶν] καὶ τῆς Αὐλίδος, περὶ ᾧ
εἰρήκαμεν.

Σχοῖνος δ' ἔστι χώρα τῆς Θηβαϊκῆς κατὰ τὴν ὁδὸν 22
τὴν ἐπὶ Ἀνδηδόνος, διέχουσα τῶν Θηβῶν ὅσουν πεντή-
10 κοντα σταδίους· φεὶ δὲ καὶ ποταμὸς δι' αὐτῆς Σχοινοῦς.

Σκῶλος δ' ἔστι κώμη τῆς Παρασπίας ὑπὸ τῷ 23
Κιθαιρῶν, δυσοίκητος τόπος καὶ τραχύς, ἀφ' οὗ καὶ
ἡ παροιμία „εἰς Σκῶλον μήτ' αὐτὸς ἵναι, μήτ' ἄλλω
ἔπεσθαι.“ καὶ τὸν Πενθέα δὲ ἐνθένδε καταγόμενον
15 διασπασθῆναι φασιν. ἦν δὲ καὶ τῶν περὶ "Ολυνθον
πόλεων δμάνυμος αὐτῇ Σκῶλος. εἰδογται δ' ὅτι Πα-
ρασπίοι καὶ κώμη τις καλεῖται ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τρα-
χινίᾳ, παρ' ἦν φεὶ Ἀσωπὸς ποταμός, καὶ ὅτι ἐν Σι-
κυωνίᾳ ἄλλος ἔστιν Ἀσωπὸς καὶ ἡ χώρα Ἀσωπία, δι'
20 ἥς φεὶ.

Ο 'Ἐτεωνὸς δὲ Σκάρφη μετωνομάσθη, καὶ αὕτη 24
δὲ τῆς Παρασπίας. ὁ γὰρ Ἀσωπὸς καὶ ὁ Ἰσμηνὸς διὰ
τοῦ πεδίου φέουσι τοῦ πρὸ τῶν Θηβῶν· ἔστι δὲ καὶ ἡ
Αίρη κρήνη καὶ Πότνιαι, ἐφ' ᾧ μυθεύεται τὰ περὶ C.409
25 τὸν Ποτνιέα Γλαῦκον τὸν διασπασθέντα ὑπὸ τῶν Ποτ-
νιάδων ἐππιν τῆς πόλεως πλησίου, καὶ ὁ Κιθαιρῶν δὲ
οὐκ ἄπαθεν τῶν Θηβῶν τελευτῇ· παρ' αὐτὸν δὲ ὁ
Ἀσωπὸς φεὶ, τὴν ὑπώρειαν αὐτοῦ κλύζων καὶ ποιῶν
τοὺς Παρασπίους εἰς κατοικίας πλείους διηρημένους,
30 ἄπαντας δ' ὑπὸ Θηβαίοις ὄντας (Ἔτεροι δ' ἐν τῇ Πλα-

20. post φεὶ: εἰσὶ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ δμάνυμοι τῷ ποταμῷ
τούτῳ.

ταιέων φασὶ τόν τε Σκῶλον καὶ τὸν Ἐτεωνὸν καὶ τὰς
Ἐρυθρὰς· καὶ γὰρ παρα[ρρεῖ] Πλαταιάς καὶ παρὰ Τά-
ναγραν ἐκδίδωσιν)· ἐν δὲ τῇ Θηβαίων εἰσὶ καὶ αἱ Θε-
ράπναι καὶ ὁ Τευμησσός, ὃν ἐκόσμησεν Ἀντίμαχος
διὰ πολλῶν ἐπῶν, τὰς μὴ προσούσας ἀρετὰς διαριθ-
μούμενος „ἔστι τις ἡ νεμόεις ὀλίγος λόφος.“ γνώριμα
δὲ τὰ ἔπη.

- 26 Θέσπειαν δὲ λέγει τὰς νῦν Θεσπιάς, πολλῶν ὄνο-
μάτων τῶν μὲν ἀμφοτέρως λεγομένων καὶ ἐνικῶς καὶ
πληθυντικῶς, καθάπερ καὶ ἀρρενικῶς καὶ θηλυκῶς, 10
τῶν δὲ ὑποτέρως. ἔστι δὲ πόλις πρὸς τῷ Ἐλικῶνι νο-
τιωτέρα αὐτοῦ, ἐπικειμένη δὲ τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ καὶ
αὐτὴ καὶ ὁ Ἐλικών· ἐπίνειον δὲ ἔχουσιν αἱ Θεσπιαὶ
Κρέονσαν, ἣν καὶ Κρεούσιδα καλοῦσιν. ἐν δὲ τῇ Θε-
σπιέων ἔστι καὶ ἡ Ἀσκρη κατὰ τὸ πρὸς Ἐλικῶνα μέρος, 15
ἡ τοῦ Ἡσιόδου πατρίς· ἐν δεξιᾷ γάρ ἔστι τοῦ Ἐλικῶ-
νος, ἐφ' ὑψηλοῦ καὶ τραχέος τόπου κειμένη, ἀπέχουσα
τῶν Θεσπιῶν ὅσον τετταράκοντα σταδίους, ἣν καὶ κε-
κωμόδηκεν αὐτὸς ἐπιλαβόμενος] τοῦ πατρός, ὅτι ἐκ
Κύμης τῆς Αἰολίδος μ[ετέστη, θρασύ]τερον λέγων 20
„νάσσαστο δὲ ἄγχος Ἐλικῶνος δίξυρος [ἐνὶ κώμῃ], Ἀσκρη
χείμα κακῆ, θέρει ἀργαλέη, οὐδέ ποτε [ἐσθλῆ].“ ὁ δὲ
Ἐλικών συνεχής ἔστι τῇ Φωκίδι ἐκ τῶν πρὸς ἄρκτον
αὐτοῦ μερῶν· μικρὰ δὲ καὶ ἐκ τῶν πρὸς ἐσπέραν κατὰ
τὸν ὕστατον λιμένα τῆς Φωκίδος, ὃν καλοῦσιν ἀπὸ 25
τοῦ συμβεβηκότος μυχόν· ὑπέροχειται γὰρ κατὰ τοῦ-
τον μάλιστα τὸν λιμένα τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ὁ
Ἐλικών καὶ ἡ Ἀσκρη καὶ ἔτι αἱ Θεσπιαὶ καὶ τὸ ἐπίνειον
αὐτῆς ἡ Κρέονσα. τοῦτο δὲ καὶ κοιλότατον νομίζεται
το μέρος τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ἀπλῶς τοῦ Κοριν-
θιακοῦ· στάδιοι δὲ εἰσὶ τῆς [παραλίας] τῆς ἀπὸ τοῦ
μυχοῦ τοῦ λιμένος εἰς Κρέονσαν ἐνε[νήκοντα]· ἐντεῦ-

θεν δὲ ἐκατὸν εἴκοσιν ἔως τῆς ἄποδας ἦν [Ολυμπίας] κα-
λοῦσιν· ἐν δὲ τῷ κοιλοτάτῳ τοῦ κόλπου τοῦ [Κρισαίου
συμβέβηκε τὰς Πηγὰς κεῖσθαι καὶ τὴν Οἰνόην, πε[ρὶ]
ῶν εἰρήκαμεν. ὁ μὲν οὖν Ἐλικὼν οὐ πολὺ διεστηκὼς
5 τοῦ Παρνασσοῦ ἐνάμιllός ἐστιν ἐκείνῳ κατά τε ὑψος
καὶ περίμετρον· ἀμφω γὰρ χιονόβολα τὰ ὅρη καὶ πε- C.410
τρώδη, περιγράφεται δ' οὐ πολλῇ χώρᾳ. ἐνταῦθα δ'
ἐστι τό τε τῶν Μουσῶν ιερὸν καὶ ἡ Ἰππουν κρήνη καὶ
τὸ τῶν Λειβηθρίδων υυμφῶν ἄντρον· ἐξ οὗ τεκμαί-
10 ροιτ' ἄν τις Θρᾷκας είναι τοὺς τὸν Ἐλικῶνα ταῖς Μού-
σαις καθιερώσαντας, οἱ καὶ τὴν Πιερίδα καὶ τὸ Λειβη-
θρόν καὶ τὴν Πίμπλειαν ταῖς αὐταῖς θεαῖς ἀνέδειξαν·
ἐκαλοῦντο δὲ Πίερες· ἐκλιπόντων δ' ἐκείνων Μακε-
δόνες υῦν ἔχουσι τὰ χωρία ταῦτα. εἰρηται δ' ὅτι τὴν
15 Βοιωτίαν ταύτην ἐπώκησάν ποτε Θρᾷκες βιασάμενοι
τοὺς Βοιωτοὺς καὶ Πελασγοὺς καὶ ἄλλοι βάρβαροι. αἱ
δὲ Θεσπιαὶ κρότερον μὲν ἐγνωρίζοντο διὰ τὸν Ἔρωτα
τὸν Πραξιτέλους, ὃν ἔγλυψε μὲν ἐκεῖνος, ἀνέθηκε δὲ
Γλυκέρα ἡ ἐταίρα Θεσπιεῦσιν ἐκεῖθεν οὖσα τὸ γένος,
20 λαβοῦσα δᾶρον παρὰ τοῦ τεχνίτου. πρότερον μὲν οὖν
ὁψόμενοι τὸν Ἔρωτά τινες ἀνέβαινον ἐπὶ τὴν Θεσπειαν
ἄλλως οὐκ οὖσαν ἀξιοθέατον, νῦν δὲ μόνη συνέστηκε
τῶν Βοιωτιακῶν πόλεων καὶ Τάναγρα· τῶν δ' ἄλλων
ἔρειπια καὶ ὀνόματα λέλειπται.

25 [Μετὰ] δὲ Θεσπιὰς καταλέγει Γραῖαν καὶ Μυκα- 26
[λησσόν, περὶ] ἣν εἰρήκαμεν· ὡς δ' αὕτως καὶ περὶ
τῶν [ἄλλων „οἵ τ'“] ἀμφ' Ἀρμ' ἐνέμοντο καὶ Εἵλεσιον
,,καὶ Ἐρύθρας, [οἵ τ' Ἐλεῶν'] εἶχον ἥδ' Τλην καὶ Πε-
„τεῶνα.“ Πετεών δὲ κάμη τῆς Θηβαΐδος ἐγγὺς τῆς
30 ἐπ' Ἀνθηδόνα ὁδοῦ, ἡ δ' Ὁκαλέη μέση Ἀλιάρτου καὶ
Ἀλαλκομενίου ἐκατέροις τριάκοντα σταδίους ἀπέχου-
σα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ποτάμιον ὄμώνυμον. Μεδεῶν

δ' ὁ μὲν Φωκικὸς ἐν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ, διέχων Βοιωτίας σταδίους ἑκατὸν ἔξήκοντα, ὁ δὲ Βοιωτιακὸς ἀπ' ἑκείνους κέκληται, πλησίον δ' ἐστὶν Ὁγχηστοῦ ὑπὸ τῷ Φοινικῷ ὅρει, ἀφ' οὗ καὶ μετωνόμασται Φοινικής· τῆς δὲ Θηβαίας καὶ τοῦτο λέγεται, [ὑπ' ἐν]τιν δὲ τῆς Ἀλι- 5 αρτίας καὶ Μεδεῶν καὶ Ὡκαλέα.

27 Εἰτά φησι „Κώπας Εὔτρησίν τε πολυτροήρωνά τε „Θίσβην.“ περὶ μὲν οὖν Κωπῶν εἰρηται· προσάρκτιος δέ ἐστιν ἐπὶ τῇ Κωπαΐδι λίμνῃ· αἱ δ' ἄλλαι κύκλῳ εἰ- σὶν αἵδε, Ἀκραιφίαι Φοινικὶς Ὁγχηστὸς Ἀλιαρτος Ὡκα- 10 λέα Ἀλαλκομεναὶ Τιλφούσιον Κορώνεια. καὶ τό γε C.411 παλαιὸν οὐκ ἦν τῆς λίμνης κοινὸν ὄνομα, ἀλλὰ καθ' ἑκάστην πρὸς αὐτῇ κατοικίαν ἐκείνης ἐπώνυμος ἐλέ- γετο, Κωπαῖς μὲν τῶν Κωπῶν, Ἀλιαρτίς δὲ Ἀλιάρτου, καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων, ὕστερον δ' ἡ πᾶσα Κωπαῖς 15 ἐλέκθη κατ' ἐπικράτειαν· κοιλότατον γὰρ τοῦτο τὸ χω- ρίον. Πίνδαρος δὲ καὶ Κηφισσίδα καλεῖ ταύτην· πα- ρατίθησι γοῦν τὴν Τιλφῶσσαν κοήνην ὑπὸ τῷ Τιλ- φωσσίῳ ὅρει φέουσαν πλησίον Ἀλιάρτου καὶ Ἀλαλκο- μενῶν, ἐφ' ἥ τὸ Τειρεσίου μνῆμα· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ 20 τοῦ Τιλ[φωσσίου Ἀπόλλω]νος ιερόν.

28 Ο δὲ ποιητὴς ἐφεξῆς ταῖς Κώπαις Εὔτρησιν τί- θησι κωμίον Θεσπιέων· ἐνταῦθα φασὶ Ζῆδον καὶ Ἀμφίονα οἰκῆσαι πρὸν βασιλεῦσαι Θηβῶν. ἡ δὲ Θίσβη Θίσβαι υῦν λέγονται, οἰκεῖται δὲ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θα- 25 λάττης ὅμορον Θεσπιεῦσι τὸ χωρίον καὶ τῇ Κορώνει- ακῇ, ὑποκεπταικὸς ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τῷ Ἐλικῶνι καὶ αὐτό· ἐπίνειον δ' ἔχει πετρῶδες περιστερῶν με- στόν, ἐφ' οὗ φησιν ὁ ποιητὴς „πολυτροήρωνά τε Θί- „σβην.“ πλοῦς δ' ἐστὶν ἐνθένδε εἰς Σικυῶνα σταδίων 30 ἑκατὸν ἔξήκοντα.

29 Ἐξῆς δὲ Κορώνειαν καταλέγει καὶ Ἀλιάρτου καὶ

Πλαταιάς καὶ Γλίσσαντα. ἡ μὲν οὖν Κορώνεια ἐγγὺς τοῦ Ἑλικῶνός ἐστιν ἐφ' ὑψους ἰδρυμένη, κατελάβοντο δ' αὐτὴν ἐπανιόντες ἐκ τῆς Θετταλικῆς⁴¹² Αρνης οἱ Βοιωτοὶ μετὰ τὰ Τρωικά, ὅτε περ καὶ τὸν Ὁροχομενὸν 5 ἔσχον· ορατήσαντες δὲ τῆς Κορωνείας ἐν τῷ πρὸ αὐτῆς πεδίῳ τὸ τῆς Ἰτωνίας Ἀθηναῖς ἵερὸν ἰδούσαντο ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ, καὶ τὸν παραρρέοντα ποταμὸν Κουάριον προσηγόρευσαν ὁμοφώνως τῷ ἐκεῖ. Ἀλλαῖος δὲ καλεῖ Κωράλιον λέγων „[ῳ' ν]ασσ“ Ἀθανάα 10 „πολε[μηδόκος], ἢ ποι Κορωνίας ἐπιλαῖω ναύω πάροι„, θεν ἀμφι[βαίνεις] Κωραλίω ποταμῶ παρ' ὅχθαις.“ ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ Παμβοιώτια συνετέλουν· συγκαθίδονται δὲ τῇ Ἀθηνᾶ ὁ Ἀιδηνᾶς κατά τινα, ὡς φασι, μυστικὴν αἰτίαν. οἱ μὲν οὖν ἐν τῇ Κορωνείᾳ Κορώνιοι 15 λέγονται, οἱ δὲ ἐν τῇ Μεσσηνιακῇ Κορωναεῖς.

Ἀλίαρτος δὲ νῦν οὐκέτι ἐστὶ κατακυαφεῖσα ἐν τῷ 30 πρὸς Περσέα πολέμῳ, τὴν χώραν δ' ἔχουσιν Ἀθηναῖοι δόντων Ῥωμαίων. ἔκειτο δὲ ἐν στενᾷ χωρίῳ μεταξὺ ὑπερφειμένου δροντος καὶ τῆς Κεπαΐδος λίμνης πλησίου 20 τοῦ Περμησσοῦ καὶ τοῦ Ὄλμειοῦ καὶ τοῦ ἔλους τοῦ φύοντος τὸν αὐλητικὸν κάλαμον.

Πλαταιαὶ δέ, ἂς ἐνικῶς εἶπεν ὁ ποιητής, ὑπὸ τῷ 31 Κιθαιρῶνί εἰσι μεταξὺ αὐτοῦ καὶ Θηβῶν κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν εἰς Ἀθήνας καὶ Μέγαρα ἐπὶ τῶν δρῶν τῶν. 412 25 τῆς Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. [αἱ] γὰρ Ἐλευθεραὶ πλησίον, ἂς οἱ μὲν [τῆς Ἀττικῆς, οἱ δὲ] τῆς Βοιωτίας φασίν. εἴρηται δ' ὅτι παραρρεῖ τὰς Πλαταιὰς ὁ Ἀσωπός. ἐνταῦθα Μαρδόνιον καὶ τὰς τριάκοντα μυριάδας Περσῶν αἱ τῶν Ἐλλήνων δυνάμεις ἄρδην ἥφαντισαν· ἰδρύ- 30 σαντό τε ἐλευθερίου Διὸς ἵερὸν καὶ ἀγῶνα γυμνικὸν στεφανίτην ἀπέδειξαν, Ἐλευθέρια προσαγορεύσαντες· ταφή τε δείκνυται δημοσίᾳ τῶν τελευτησάντων ἐν τῇ

μάχη. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Σικυωνίᾳ δῆμος Πλαταιαί, ὃθενπερ ἦν Μνασάλκης ὁ ποιητής. Γλίσσαντα δὲ λέγει κατοικίαν ἐν τῷ Τράπατῳ ὅσει ὁ ἔστιν ἐν τῇ Θηβαϊκῇ πλησίον Τευμησοῦ καὶ τῆς Καδμείας, ὃ ὑποπίπτει τὸ Λόνιον καλούμενον πεδίον, ὃ διατείνει [εἰς 5 τὴν Καδμείαν ἀπὸ τοῦ Τράπατον ὄφους.

32 Τὸ δ' οὕτω δηθέν „οἵ δ' ὑπὸ Θήβας εἶχον“ οἱ μὲν δέχονται πολιδιόν τι Τροποδήβας καλούμενον, οἱ δὲ τὰς Ποτνίας· τὰς γὰρ Θήβας ἐκλελεῖφθαι διὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων στρατείαν καὶ μὴ μετασχεῖν τοῦ Τροπικοῦ 10 πολέμου· οἱ δὲ μετασχεῖν μὲν οἰκεῖν δὲ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ τότε ἐν τοῖς ἐπιπέδοις χωρίοις μετὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων ἄφοδον, τὴν Καδμείαν ἀδυνατοῦντας ἀνακτήσαι· ἐπεὶ δὲ ἡ Καδμεία ἐκαλεῖτο Θήβαι, ὑπὸ Θήβας εἰπεῖν ἀντὶ τοῦ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ οἰκοῦντας τὸν ποιητὴν 15 τὸν τότε Θηβαίους.

33 Ὁγχηστὸς δ' ἔστιν, ὃ που τὸ Αμφικτυονικὸν συνήγετο ἐν τῇ Άλιαρτίᾳ πρὸς τῇ Κωπαΐδι λίμνῃ καὶ τῷ Τηνερικῷ πεδίῳ, ἐν ὑψει κείμενος ψιλός, ἔχων Ποσειδῶνος ιερὸν καὶ αὐτὸν ψιλόν. οἱ δὲ ποιηταὶ κοσμοῦσιν, 20 ἄλση καλοῦντες τὰ ιερὰ πάντα κανὸν γῆ ψιλά· τοιοῦτόν ἔστι καὶ τὸ τοῦ Πινδάρου περὶ τοῦ Απόλλωνος λεγόμενον „[δι]υηθεὶς ἐπῆει γᾶν τε καὶ θάλασσαν, καὶ σκοπιαῖσιν „[μεγάλαι]ς ὄρέων ὑπερ ἔστα, καὶ μυχοὺς * δεινάσατο „βαλλό[μενος] κρηπίδας ἄλσέων.“ οὐκ εῦ δ' ὁ Άλ-25 καῖος, ἀσπερ τὸ τοῦ ποταμοῦ ὄνομα παρέτρεψε τοῦ Κουαρίου, οὕτω καὶ τοῦ Ὁγχηστοῦ κατέψευσται πρὸς ταῖς ἐσχατιαῖς τοῦ Ἐλικῶνος αὐτὸν τιθείς· ὁ δ' ἔστιν 3.413 ἄπωθεν ἴκανῶς τούτου τοῦ ὄφους.

34 Tὸ δὲ Τηνερικὸν πεδίον ἀπὸ Τηνέρου προσηγό- 30

2. post ποιητῆς: Μνασάλκεος τὸ μνᾶμα τῷ Πλαταιάδα.
4. post Καδμείας: γεώλοφα καλεῖται δρία

ρενται μυθεύεται δ' Ἀπόλλωνος υἱὸς ἐκ Μελίας,
προφήτης τοῦ μαντείου κατὰ τὸ Πτέρων ὄρος, ὃ φῆσιν
εἶναι τριμόρφου ὁ αὐτὸς ποιητής „καὶ ποτε τὸν τρι-
„κάρανον Πτωίου κευθμῶνα κατέσχεθε·“ καὶ τὸν Τή-
5 νερον καλεῖ „ναοκόλον μάντιν δαπέδοισιν ὁμοιλέα·“
ὑπέρμειται δὲ τὸ Πτέρων τοῦ Τηνερικοῦ πεδίου καὶ τῆς
Καπαλδοσ λίμνης πρὸς Ἀκραίφιον· Θηβαίων δ' ἦν τό
τε μαντείον καὶ τὸ ὄρος· τὸ δ' Ἀκραίφιον καὶ αὐτὸ
κεῖται ἐν ὑψει. φασὶ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι Ἀρην ὑπὸ³⁵
10 τοῦ ποιητοῦ, ὁμώνυμον τῇ Θετταλικῇ.

Oἱ δέ φασι καὶ τὴν Ἀρην ὑπὸ τῆς λίμνης κατα- 35
ποθῆναι καὶ τὴν Μίδειαν. Ζηνόδοτος δὲ γράφων „οἵ
„δὲ πολυστάφυλον Ἀσκρην ἔχον,“ οὐκ ἔοικεν ἐντυ-
χόντι τοῖς ὑπὸ Ἡσιόδου περὶ τῆς πατρίδος λεχθεῖσι καὶ
15 τοῖς ὑπὲρ Ἑύδοξου πολὺ χειρῶ λέγοντος περὶ τῆς Ἀσκρης.
πῶς γὰρ ἀν τις πολυστάφυλον τὴν τοιαύτην ὑπὸ τοῦ
ποιητοῦ λέγεσθαι πιστεύσειεν; οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ οἱ Τάρ-
νην ἀντὶ τῆς Ἀρηνς γράφοντες· οὐδὲ γὰρ μία δείκνυ-
ται Τάρνη παρὰ τοῖς Βοιωτοῖς, ἐν δὲ Λυδοῖς ἔστιν, ἡς
20 καὶ Ὁμηρος μέμνηται „Ιδομενεὺς δ' ἄρα Φαιστον
„ἐνήρατο Μήονος υἱὸν Βάρδου, ὃς ἐκ Τάρνης ἐοιβώ-
„λακος εἰλληλούθει.“ λοιπαὶ δὲ εἰσὶ τῶν μὲν περικειμέ-
νων τῇ λίμνῃ αἱ τε Ἀλαλκομεναὶ καὶ τὸ Τιλφώσσιον,
τῶν δ' ἄλλων Χαιρώνεια καὶ Λεβάδεια καὶ Λεῦκτρα,
25 περὶ ᾧ ἄξιον μνησθῆναι.

Ἄλαλκομενῶν τοίνυν μέμνηται ὁ ποιητής, ἀλλ' 36
οὐκ ἐν καταλόγῳ „Ἡρη τ' Ἀργείη καὶ Ἀλαλκομενῆς
Ἀθήνη·“ ἔχει δὲ ἀρχαῖον ἱερὸν Ἀθηνᾶς σφόδρα τιμώμε-
νον, καὶ φασί γε τὴν θεὸν γεγενῆσθαι ἐνθάδε, καθά-
30 περ καὶ τὴν Ἡραν ἐν Ἀργείη, καὶ διὰ τοῦτο τὸν ποιητὴν
ώς ἀπὸ πατρίδων τούτων ἀμφοτέρας οὕτως ὀνομάσαι.
διὰ τοῦτο δ' ἵσως οὐδὲ ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται τῶν

ένταῦθα ἀνδρῶν, ἐπειδὴ λεροὶ ὅντες παρεῖντο τῆς στρατείας. καὶ γὰρ καὶ ἀπόρθητος ἀεὶ διετέλεσεν ἡ πόλις, οὕτε μεγάλῃ οὖσα οὕτ' ἐν εὐερκεῖ χωρίῳ κειμένη, ἀλλ' ἐν πεδίῳ· τὴν δὲ θεὸν σεβόμενοι πάντες ἀπείχοντο πάσης βίᾳς, ὥστε καὶ Θηβαῖοι κατὰ τὴν τῶν 5 Ἐπιγόνων στρατείαν ἐκλιπόντες τὴν πόλιν ἔκεισθε λέγονται καταφεύγειν καὶ εἰς τὸ ὑπεροχείμενον ὄρος ἐρυμνὸν τὸ Τιλφώσσιον, ὑφ' ὃ Τιλφώσσα κρήνη καὶ τὸ τοῦ Τειρεσίου μνῆμα ἐκεῖ τελευτήσαντος κατὰ τὴν φυγήν.

C.414 10

37 *Χαιρώνεια* δ' ἐστὶν Ὁρχομενοῦ πλησίον, ὅπου Φίλιππος δ' Ἀμύντου μάχῃ μεγάλῃ νικήσας Ἀθηναίους τε καὶ Βοιωτοὺς καὶ Κορινθίους κατέστη τῇς Ἑλλάδος κύριος· δείκνυται δὲ κάνταῦθα ταφὴ τῶν πεσόντων ἐν τῇ μάχῃ δημοσίᾳ· περὶ δὲ τοὺς τόπους τοὺς αὐτοὺς 15 καὶ Ρωμαίοις τὰς Μιθριδάτου δυνάμεις πολλῶν μυριάδων κατηγωνίσαντο, ὥστ' ὀλίγους ἐπὶ θάλατταν σωθέντας φυγεῖν ἐν ταῖς ναυσί, τοὺς δ' ἄλλους τοὺς μὲν ἀπολέσθαι τοὺς δὲ καὶ ἀλῶναι.

38 *Λεβάδεια* δ' ἐστὶν, ὅπου Λιὸς Τροφωνίου μαν-20 τελον ἰδρυται, χάσματος ὑπονόμου κατάβασιν ἔχον, καταβαίνει δ' αὐτὸς ὁ χρηστηριαζόμενος· κεῖται δὲ μεταξὺ τοῦ Ἐλικῶνος καὶ τῆς Χαιρώνείας, Κορωνείας πλησίον.

39 *Τὰ δὲ Λεῦκτρά* ἐστὶν, ὅπου Λακεδαιμονίους μέ-25 γάλη μάχῃ νικήσας Ἐπαμεινῶνδας ἀρχὴν εὗρετο τῆς καταλύσεως αὐτῶν· οὐκέτι γὰρ ἐξ ἐκείνου τὴν τῶν Ἑλλήνων ἡγεμονίαν ἀναλαβεῖν ἵσχυσαν ἦν εἰχον πρότερον, καὶ μάλιστ' ἐπειδὴ καὶ τῇ δευτέρᾳ συμβολῇ τῇ περὶ Μαντίνειαν κακῶς ἐπραξαν. τὸ μέντοι μὴ ὑφ' 30 ἐτέροις εἶναι καίπερ οὕτως ἐπταιχόσι συνέμεινε μέχρι τῆς Ρωμαίων ἐπικρατείας· καὶ παρὰ τούτοις δὲ τιμώ-

μενοι διατελοῦσι διὰ τὴν τῆς πολιτείας ἀρετήν. θελ-
κυνται δὲ ὁ τόπος οὗτος κατὰ τὴν ἐκ Πλαταιῶν εἰς
Θεσπιὰς ὁδόν.

Ἐξῆς δ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τοῦ τῶν Ὀρχομε- 40
5 νίων καταλόγου, χωρίζων αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ Βοιωτια-
κοῦ ἔθνους. καλεῖ δὲ Μινύειον τὸν Ὀρχομενὸν ἀπὸ
ἔθνους τοῦ Μινυῶν· ἐντεῦθεν δὲ ἀποικῆσαι τινας
τῶν Μινυῶν εἰς Ἰωλκόν φασιν, ὅθεν τοὺς Ἀργο-
ναύτας Μινύας λεχθῆναι. φαίνεται δὲ τὸ παλαιὸν
10 καὶ πλούσια τις γεγονυῖα πόλις καὶ δυναμένη μέγα·
τοῦ μὲν οὖν πλούτου μάρτυς καὶ Ὄμηρος· δια-
ριθμούμενος γὰρ τοὺς τόπους τοὺς πολυχρηματή-
σαντάς φησιν „οὐδ' ὅσ' ἐς Ὀρχομενὸν ποτινίσσεται,
„οὐδ' ὅσα Θήβας Αἴγυπτίας.“ τῆς δυνάμεως δέ, δῆτι
15 Θηβαῖοι δασμὸν ἐτέλουν τοῖς Ὀρχομενίοις καὶ Ἐργίνῳ
τῷ τυραννοῦντι αὐτῶν, ὃν ὑφ' Ἡρακλέους καταλυ-
θῆναι φασιν. Ἐτεοκλῆς δέ, τῶν βασιλευσάντων ἐν
Ὀρχομενῷ τις, Χαρίτων Ιερὸν ἰδρυσάμενος πρῶτος
ἀμφότερα ἐμφαίνει, καὶ πλοῦτον καὶ δύναμιν, ὃς
20 εἰτ' ἐν τῷ λαμβάνειν χάριτας εἰτ' ἐν τῷ διδόναι
κατορθῶν εἰτε καὶ ἀμφότερα, τὰς θεὰς ἐτίμησε. 415
ταύτας. λέγουσι δὲ τὸ χωρίον, ὅπερ ἡ λίμνη κατέ-

εχει, την αμοιρην εχει. το γαρ κενουμενον αμι και πληψυμενον
πρὸς τὴν χρειαν ἀει πλῆρες ἐστιν, ὃ δὲ διδοὺς μὲν μη λαμβάνων
δὲ οὐδ' ἀν ἐπι λατέρα κατορθοίη· παύεται γὰρ διδοὺς ἐπι-
λείποντος τοῦ ταμείου, καύεται δὲ καὶ οἱ διδόντες τῷ λαμβά-
νοντι μόνον, χαριζομένω δὲ μηδέν, ὥστ' οὐδὲ οὗτος ἐτέρως ἀν
κατορθοίη. ὅμοια δὲ καὶ περὶ δυνάμεως λέγοιτ' ἀν. χωρὶς δὲ
τοῦ κοινοῦ λόγου διότι, τὰ χρήματ' ἀνθρώποισι τιμιώτατα, δύ-
, ναμίν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποισι ἔχει, “ καὶ ἐν τῶν παθ-

χει νῦν ἡ Κωπαΐς, ἀνεψήχθαι πρότερον καὶ γεωργεῖσθαι παντοδαπῶς ὑπὸ τοῦς Ὁρχομενίοις δὲ πλησίον οἰκοῦσι· καὶ τοῦτ' οὖν τεκμήριον τοῦ πλούτου τιθέασι.

41 Τὴν δὲ Ἀσπληνόνα χωρὶς τῆς πρώτης συλλαβῆς ἔκάλουν τινές· εἴτε Ἔύδειελος μετωνυμάσθη καὶ αὐτὴ καὶ ἡ χώρα, τάχα τι Ἰδίωμα προσφερομένη ἐκ τοῦ δειλινοῦ κλίματος οἰκεῖον τοῖς κατοικοῦσι, καὶ μάλιστα τὸ εὐχείμερον. διέχει δὲ τοῦ Ὁρχομενοῦ στάδια εἴκοσι μεταξὺ δὲ ὁ Μέλας ποταμός.

10

C.416 42 Τρέφειται δὲ Ὁρχομενίας ὁ Πανοπεύς, Φωκικὴ πόλις, καὶ Τάμπολις· τούτοις δὲ ὁμορεῖ Ὁποῦς, ἡ τῶν Λοκρῶν μητρόπολις τῶν Ἐπικυνημιδίων. πρότερον μὲν οὖν οἰκεῖσθαι τὸν Ὁρχομενόν φασιν ἐπὶ πεδίῳ, ἐπιπολαζόντων δὲ τῶν ὑδάτων ἀνοικισθῆναι πρὸς τὸ Ακόνιον ὄρος, παρατεῖνον ἐπὶ ἔξηκοντα σταδίους μέχρι Παραποταμίων τῶν ἐν τῇ Φωκίδι. Ιστοροῦσι δὲ τοὺς ἐν τῷ Πόντῳ καλούμένους Ἀχαιοὺς ἀποίκους Ὁρχομενίων εἶναι τῶν μετὰ Ιαλμένου πλανηθέντων ἐκεῖσε μετὰ τὴν τῆς Τροίας ἄλωσιν. καὶ περὶ Κάρυστου δὲ ἢν 20

ἐκαστα σκοπεῖν δεῖ. μάλιστα γὰρ τοὺς βασιλέας δύνασθαι φαμεν· διόπερ καὶ δυνάστας προσαγγορεύομεν. δύνανται δὲ ἄγοντες ἐφ' ἀριστόνται τὰ πλήθη διὰ πειθοῦς ἢ βίας. πειθοῦσι μὲν οὖν δι' εὐεργεσίας μάλιστα· οὐ γὰρ ἡ γε διὰ τῶν λόγων ἐστὶ βασιλική, ἀλλ' αὕτη μὲν δητορική· βασιλικὴν δὲ πειθὼ λέγομεν, ὅταν εὐεργεσίαις φέρωσι καὶ ἀγωσιν ἐφ' ἀριστόνται· πειθοῦσι μὲν δὴ δι' εὐεργεσιῶν, βιάζονται δὲ διὰ τῶν ὅπλων. ταῦτα δὲ ἀμφοτεροῖς τρόποις ἀντίστοιταν· καὶ γὰρ στρατιὰν ἔχει πλεῖστην δὲ πλείστα κακημένος.

9. post εὐχείμερον: ψυχρότατα μὲν γὰρ τὰ ἄκρα τῆς ἥμέρας ἔστι, τούτων δὲ τὸ δειλινὸν τοῦ ἔωθιστον ψυχρότερον· εἰς ἐπίτασιν γὰρ ἀγει πλησιάζον τῇ νυκτὶ, τὸ δὲ εἰς ἄντειν ἀφιστάμενον τῆς νυκτός. Λαμαδὲ τοῦ ψύχονς δὲ ἥλιος· τὸ οὖν ἥλιαζόμενον πλεῖστον ἐν τῷ ψυχροτάτῳ καιρῷ εὐχείμερότατον.

τις Ὁρχομενός. ενδ' γὰρ τὴν τοιαύτην ὕλην ὑποβεβλή-
κασιν ἡμῖν οἱ πά τε περὶ τῶν νεῶν συγγράψαντες, οἵς
ἀκολουθοῦμεν ὅταν οἰκεῖα λέγωσι πρὸς τὴν ἡμετέραν
ὑπόθεσιν.

5 Μετὰ δὲ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Ὁρχομενὸν ἡ Φω- 3
κίς ἐστι πρὸς ἄρκτον παραβεβλημένη τῇ Βοιωτίᾳ πα-
ραπλησίως ἀπὸ θαλάττης εἰς θάλατταν τό γε παλαιόν.
ὅ γὰρ Δαφνοῦς ἦν τότε τῆς Φωκίδος, σχίζων ἐφ' ἐκά-
τερα τὴν Λοκρίδα καὶ μέσος ταπτόμενος τοῦ τε Ὄπουν-
10 τίου κόλπου καὶ τῆς τῶν Ἐπικυνημάτων παραλίας· νῦν
δὲ Λοκρῶν ἐστὶν ἡ χώρα (τὸ δὲ πόλισμα κατέσκαπται),
ῶστ' οὐδὲ ἐκεῖ καθήκει οὐκέτι μέχρι τῆς πρὸς Εὐβοία
θαλάττης ἡ Φωκίς, τῷ δὲ Κρισαίῳ κόλπῳ συνηῆπται.
αὐτὴν γὰρ ἡ Κρίσα τῆς Φωκίδος ἐστὶν ἐπ' αὐτῆς ἰδου-
15 μένη τῆς θαλάττης καὶ Κίρρα καὶ Ἀντικύρα καὶ τὰ
ὑπὲρ αὐτῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ συνεχῇ κείμενα χωρία πρὸς
τῷ Παρνασσῷ, Δελφοί τε καὶ Κίρφις καὶ Δαυλλίς καὶ
αὐτὸς ὁ Παρνασσὸς τῆς τε Φωκίδος ὃν καὶ ἀφορίζων
τὸ ἐσπέριον πλευρόν. ὃν τρόπον δ' ἡ Φωκίς τῇ Βοιω-
20 τίᾳ παράκειται, τοῦτον καὶ ἡ Λοκρὸς τῇ Φωκίδι ἐκα-
τέρα. διπτὴ γάρ ἐστι διηρημένη ὑπὸ τοῦ Παρνασσοῦ
δίχα, ἡ μὲν ἐκ τοῦ ἐσπερίου μέρος παρακειμένη τῷ
Παρνασσῷ καὶ μέρος αὐτοῦ νεμομένη, καθήκουσα δ'
ἐπὶ τὸν Κρισαῖον κόλπον, ἡ δὲ ἐκ τοῦ πρὸς ἔω τελευ-
25 τῶσα ἐπὶ τὴν πρὸς Εὐβοίᾳ θάλατταν. καλοῦνται δὲ οἱ
μὲν ἐσπέριοι Λοκροὶ καὶ Ὀξόλαι, ἔχουσι τε ἐπὶ τῇ δη-
μοσίᾳ σφραγῖδι τὸν ἐσπερίον ἀστέρα ἐγκεχαραγμένον.
οἱ δὲ ἔτεροι δίχα πως καὶ αὐτοὶ διηρημένοι, οἱ μὲν
Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, ὅμοιοι Φωκεῦσι καὶ
30 Βοιωτοῖς, οἱ δὲ Ἐπικυνημάτιοι ἀπὸ ὅρους Κυνημίδος,
προσεχεῖς Οἰταίοις τε καὶ Μαλιεῦσιν. ἐν μέσῳ δὲ ἀμ-
φοῖν τῶν τε Ἐσπερίων καὶ τῶν ἐτέρων Παρνασσός,

παραμήκης εἰς το ἀριστάρχιον μέρος ἐκτεινόμενος
 C 417 ἀπὸ τῶν περὶ Δελφοὺς τόπων μέχρι τῆς συμβολῆς τῶν
 τε Οἰταίων ὁρῶν καὶ τῶν Αἴτωλικῶν καὶ τῶν ἀνὰ μέ-
 σουν Δωριέων. πάλιν γὰρ ὥσπερ ἡ Δο[κοὶς διττὴ οὖ]σα
 τοῖς Φωκεῦσι παραβέβληται, οὕτω [καὶ ἡ πᾶσα Οἰταία] 5
 μετὰ τῆς Αἴτωλίας καὶ τινῶν ἀνὰ μέσουν τ[όπων τῆς
 Δωρικῆς τετραπόλεως τῇ Δοκοίδι ἐκατέρᾳ [καὶ Παρ-
 νασ]σῷ καὶ τοῖς Δωριεῦσιν. ὑπὲρ τούτων δ' ἥδη [οἱ
 Θετταλοὶ] καὶ τῶν Αἴτωλῶν οἱ προσάρχοι καὶ Ἀκαρ-
 ν[ᾶνες καὶ τινα] τῶν Ἡπειρωτικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν 10
 Μακεδονικῶν· [δεῖ δέ,] ὅπερ ἔφαμεν καὶ πρότερον,
 παραλλήλους ὥσ[περ ταινίας] τινὰς τεταμένας ἀπὸ
 τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὰς ἀ[νατολὰς] νοῆσαι τὰς λεχθεί-
 σας χώρας. Ιεροπορεπῆς δ' ἐστὶ πᾶς ὁ Παρνασσός,
 ἔχων ἄντρα τε καὶ ἄλλα χωρία τιμώμενά τε καὶ 15
 ἀγιστευόμενα· ὃν ἐστι γυναικιώτατόν τε καὶ ιάλ-
 λιστον τὸ Καρύκιον υμφῶν ἄντρον διμόνυμον τῷ
 Κιλικίῳ. τῶν δὲ πλευρῶν τοῦ Παρνασσοῦ τὸ μὲν
 ἐσπέριον νέμονται Δοκοί τε οἱ Ὁξόλαι καὶ τινες τῶν
 Δωριέων καὶ Αἴτωλοι κατὰ τὸν Κόρακα προσαγορευ- 20
 ὄμενον Αἴτωλικὸν ὄρος, τὸ δὲ Φωκεῖς καὶ Δωριεῖς οἱ
 πλείους, ἔχοντες τὴν Τετράπολιν περικειμένην πως
 τῷ Παρνασσῷ, πλειονάζουσαν δὲ τοῖς πρὸς ἔω. αἱ μὲν
 οὖν κατὰ τὸ μῆκος πλευ[ραὶ τῶν] λεχθεισῶν χωρῶν τε
 καὶ ταινιῶν ἐκάστης παρ[άλληλοι] ἀπασαὶ εἰσὶν, ἡ μὲν 25
 οὖσα προσάρχιος ἡ [δὲ πρὸς νότον]. αἱ δὲ λοιπαὶ
 ἐσπέριοι ταῖς ἔφαις οὖκ εἰσὶ π[αράλληλοι]. οὐδὲ ἡ
 παραλία ἐκατέρα, ἡ τε τοῦ Κρι[σαίου κόλπου μέ]χοι
 Ἀκτίου καὶ ἡ πρὸς Εὔβοιαν μέχρι τῆς [Θεσσαλονικείας]
 παράλληλοι ἀλλήλαις εἰσὶν, εἰς ἀς τελ[ευτὴ ταῦτα τὰ] 30
 ἐθνη· ἀλλ' οὕτω δέχεσθαι δεῖ τὰ σχήματα [τούτων
 τῶν χωρίων ὡς ἀν ἐν τριγώνῳ παρὰ τὴν [βάσιν τε-

ταμένων] γραμμῶν πλειόνων· τὰ γὰρ ἀποληφ[θέντα σχήματα πα]ράλληλα μὲν ἀλλήλοις ἔσται, καὶ τὰς [κατὰ μῆκος ἐναν]τίον πλευρὰς ἔξει παραλλήλους, τ[ὰς δὲ κατὰ πλάτος οὐ]κέτι. ὁ μὲν οὖν ὄλοσχερής τύπος οὗτος
5 τῆς λοιπῆς καὶ ἐφεξῆς περιοδείας, τὰ καθ' ἕκαστα δ'
ἔξης λέγωμεν ἀπὸ τῆς Φωκίδος ἀρξάμενοι.

Ταύτης δ' ἐπιφανέσταται δύο πόλεις Δελφοί τε 2
καὶ Ἐλάτεια· Δελφοὶ μὲν διὰ τὸ ἰερὸν τοῦ Πυθίου
Ἀπόλλωνος καὶ τὸ μαντεῖον ἀρχαῖον ὅν, εἰ γε Ἀγαμέ-
10 μνων ἀπ' αὐτοῦ χοηστηριάσασθαι λέγεται ὑπὸ τοῦ
ποιητοῦ· ὁ γὰρ κιθαρῳδὸς ἄδων εἰσάγεται „νεῦκος
„Οδυσσῆος καὶ Πηλείδεω Ἀχιλῆος, ὃς ποτε δηρί-
„σαντο. — ἄναξ δ' ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων χαῖρε νόφ.“
„ὣς γάρ οἱ χρείων μυθήσατο Φοίβος Ἀπόλλων Πυ-
15 „θοῖ.“ Δελφοὶ μὲν δὴ διὰ ταῦτα, Ἐλάτεια δὲ ὅτι πασῶν
μεγίστη τῶν ἐνταῦθα πόλεων καὶ ἐπικαιριωτάτη διὰ τὸ
ἐπικεῖσθαι τοῖς στενοῖς καὶ τὸν ἔχοντα ταύτην ἔχειν τὰς
εἰσβολὰς τὰς εἰς τὴν Φωκίδα καὶ τὴν Βοιωτίαν. ὅρη γάρ
ἐστιν Οἰταῖα πρῶτον, ἐπειτα τὰ τῶν Λοκρῶν καὶ τῶν
20 Φωκέων, οὐ πανταχοῦ στρατοπέδους βάσιμα τοῖς ἐκ
Θετταλίας ἐμβάλλονσιν, ἀλλ' ἔχει παφόδους στενὰς
μὲν ἀφωρισμένας δέ, ἀς αἱ παρακείμεναι πόλεις φρου-
ροῦσιν· ἀλουσῶν δ' ἐκείνων κρατεῖσθαι συμβαίνει
καὶ τὰς παρόδους. ἐπεὶ δ' ἡ τοῦ ἰεροῦ ἐπιφάνεια τοῦ
25 ἐν Δελφοῖς ἔχει προσβεῖσον, καὶ ἂμα ἡ θέσις τῶν χω-
ρῶν ἀρχὴν ὑπαγορεύει φυσικήν (ταῦτα γάρ ἔστι τὰ
ἐσπεριώτατα μέρη τῆς Φωκίδος), ἐντεῦθεν ἀρντέον.

Εἶρηται δ' ὅτι καὶ ὁ Παρνασσὸς ἐπὶ τῶν ἐσπε- 3
ρῶν ὅρων ἴδρυται τῆς Φωκίδος. τούτου δὴ τὸ μὲν
30 πρὸς δύσιν πλευρὸν οἱ Λοκροὶ κατέχουσιν οἱ Ὁξόλαι,
τὸ δὲ νότιον οἱ Δελφοί, πετρῶδες χωφίον θεατροειδές,
κατὰ κορυφὴν ἔχον τὸ μαντεῖον καὶ τὴν πόλιν, στα-

δίων ἐκκαίδενα νύκλον πληροῦσαν. ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ Λυκόρεια, ἐφ' οὗ τόπου πρότερον ὑδρυντο οἱ Δελφοὶ ὑπὲρ τοῦ λεροῦ· νῦν δ' ἐπ' αὐτῷ οἰκοῦσι περὶ τὴν κρήνην τὴν Κασταλίαν. πρόκειται δὲ τῆς πόλεως ἡ Κίρφις ἐκ τοῦ νοτίου μέρους, ὅρος ἀπότομον, νάπην ἀπολιπὸν μεταξύ, δὲ ἡς Πλειστος διαρρεῖ ποταμός. ὑπέπτωκε δὲ τῇ ὁ Κίρφει πόλις ἀρχαία Κίρρα, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἰδρυμένη, ἀφ' ἣς ἀνάβασις εἰς Δελφοὺς ὄγδοη-κοντά που σταδίων ὑδρυται δ' ἀπαντικρὺ Σικυῶνος. πρόκειται δὲ τῆς Κίρρας τὸ Κρισαῖον πεδίον εῦδαιμον. 10 πάλιν γὰρ ἐφεξῆς ἐστιν ἄλλη πόλις Κοῖσα, ἀφ' ἣς ὁ κόλπος Κρισαῖος· εἰτα Ἀντικύρα, ὁμώνυμος τῇ κατὰ τὸν Μαλιακὸν κόλπον καὶ τὴν Οἰτην. καὶ δή φασιν ἐκεῖ τὸν ἔλλεβορον φύεσθαι τὸν ἀστεῖον, ἐνταῦθα δὲ σκευάζεσθαι βέλτιον, καὶ διὰ τοῦτο ἀποδημεῖν δεῦρο 15 πολλοὺς καθάρσεως καὶ θεραπείας χάριν· γίνεσθαι γάρ τι σησαμοειδὲς φάρμακον ἐν τῇ Φωκικῇ, μεθ' οὖ σκευάζεσθαι τὸν Οἰταιον ἔλλεβορον.

4. ⁴¹⁹ Αὕτη μὲν οὖν συμμένει, ἡ δὲ Κίρρα καὶ ἡ Κοῖσα κατεσπάσθησαν, ἡ μὲν ὕστερον ὑπὸ Εὐ-20 ρυλόχου τοῦ Θετταλοῦ κατὰ τὸν Κρισαῖον πόλεμον· εὐτυχήσαντες γὰρ οἱ Κρισαῖοι διὰ τὰ ἐκ τῆς Σικελίας καὶ τῆς Ἰταλίας τέλη, πικρῶς ἐτελώνουν τοὺς ἐπὶ τὸ 25 λερὸν ἀφικνουμένους καὶ παρὰ τὰ προστάγματα τῶν Ἀμφικτυόνων. τὰ δ' αὐτὰ καὶ τοῖς Ἀμφισσεῦσι συν- οὔτοι τῶν Ὁδολῶν. ἐπελθόντες γὰρ καὶ οὗτοι τὴν τε Κοῖσαν ἀνέλαβον, καὶ τὸ πεδίον τὸ ὑπὸ τῶν Ἀμφικτυόνων ἀνιερωθὲν αὐθις κατεγεώργυνν, καὶ χείρους ἥσαν περὶ τοὺς ξένους τῶν πάλαι Κρισαίων. καὶ τούτους οὖν ἐπιμαρήσαντο οἱ Ἀμφι-30 ιτύονες, καὶ τῷ θεῷ τὴν χώραν ἀπέδοσαν. ὠλιγώρηται δ' ίκανῶς καὶ τὸ λερόν, πρότερον δ' ὑπερβαλλόντως

[έτιμηθη]. δηλοῦσι δ' οἵ τε θησαυροὶ οὓς καὶ δῆμοι καὶ δυνάσται κατεσκεύασαν, εἰς οὓς καὶ χρήματα ἀνείθεντο καθιερωμένα καὶ ἔργα τῶν ἀρίστων δημιουργῶν, καὶ ὁ ἄγων ὁ Πυθικὸς καὶ τὸ πλῆθος τῶν ἴστο-
5 φουμένων χρησμῶν.

Φασὶ δ' εἶναι τὸ μαντεῖον ἄντρον κοῖλον κατὰ 5 βάθους οὐ μάλα εὐρύστομον, ἀναφέρεσθαι δ' ἐξ αὐτοῦ πνεῦμα ἐνθουσιαστικόν, ὑπερκεῖσθαι δὲ τοῦ στομάτου τρίποδα ὑψηλόν, ἐφ' ὃν τὴν Πυθίαν ἀναβαί-
10 νουσαν δεχομένην τὸ πνεῦμα ἀποθεεπίζειν ἐμμετρά τε καὶ ἀμετρα· ἐντείνειν δὲ καὶ ταῦτα εἰς μέτρον ποιητάς τινας ὑπονομοῦντας τῷ ιερῷ. πρώτην δὲ Φημονόην γενέσθαι φασὶ Πυθίαν, κεκλησθαι δὲ καὶ τὴν προφῆ-
τιν οὗτον καὶ τὴν πόλιν ἀπὸ τοῦ πυθέσθαι, ἐκτετά-
15 σθαι δὲ τὴν πρώτην συλλαβήν, ὡς ἐπὶ τοῦ ἀθανάτου καὶ ἀκαμάτου καὶ διακόνου.

'Η μὲν οὖν ἐπὶ τὸ πλεῖον τιμὴ τῷ ιερῷ τούτῳ διὰ 6 τὸ χρηστήριον συνέβη δόξαντι ἀψευδεστάτῳ τῶν πάντων ὑπάρξαι, προσέλαβε δέ τι καὶ ἡ θέσις τοῦ τόπου.
20 τῆς γὰρ Ἑλλάδος ἐν μέσῳ πώς ἐστι τῆς συμπάσης, τῆς τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ καὶ τῆς ἐκτός, ἐνομίσθη δὲ καὶ τῆς οἰκουμένης, καὶ ἐνάλεσαν τῆς γῆς ὅμφαλόν, προσπλάσαντες καὶ μῆδον ὃν φησι Πίνδαρος, ὅτι συμπέσοιεν ἐνταῦθα οἱ ἀετοὶ οἱ ἀφεθέντες ὑπὸ τοῦ Διός, ὁ μὲν
25 ἀπὸ τῆς δύσεως ὁ δ' ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς· οἱ δὲ κόρακάς C.420

16. post διακόνου: ή μὲν οὖν ἐπίνοια αὕτη τῆς τε τῶν πόλεων κτίσεως καὶ τῆς τῶν κοινῶν ιερῶν ἐκτιμήσεως. καὶ γὰρ κατὰ πόλεις συνήσσαν καὶ κατὰ ἕθνος, φυσικῶς κοινωνικοὶ ὅντες, καὶ ἂμα τῆς παρ' ἀλλήλων χρείας χάριν, καὶ εἰς τὰ ιερὰ τὰ κοινὰ ἀπήντων διὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας, ἐορτὰς καὶ πανηγύρεις συντελοῦντες. φιλικὸν γὰρ πᾶν τὸ τοιοῦτον, ἀπὸ τῶν διμοτροπείων ἀργάμενον καὶ πλειόνων

φασι. δείκνυνται δὲ καὶ ὄμφαλός τις ἐν τῷ ναῷ τεταυ-
νιωμένος καὶ ἐπ' αὐτῷ αἱ δύο εἰκόνες τοῦ μύθου.

- 7 Τοιαύτης δὲ τῆς εὐκαιρίας οὕσης τῆς περὶ τοὺς Δελφούς, συνήσσαν τε φάδιως ἔκεῖσε, μάλιστα δ' οἱ ἐγγύθεν, καὶ δὴ καὶ τὸ Ἀμφικτυονικὸν σύστημα ἐκ τούτων συνετάχθη περὶ τε τῶν κοινῶν βουλευόμενον καὶ τοῦ λεροῦ τὴν ἐπιμέλειαν ἔξον κοινοτέραν, ἀτε καὶ χρημάτων ἀποκειμένων πολλῶν καὶ ἀναθημάτων φυ-
λακῆς καὶ ἀγιστείας δεομένων μεγάλης. τὰ πάλαι μὲν οὖν ἀγνοεῖται, Ἀκρίσιος δὲ τῶν μνημονευομένων 10 πρῶτος διατάξαι δοκεῖ τὰ περὶ τοὺς Ἀμφικτύονας καὶ πόλεις ἀφορίσαι τὰς μετεχούσας τοῦ συνεδρίου καὶ ψῆφον ἐκάστη δοῦναι, τῇ μὲν καθ' αὐτὴν τῇ δὲ μεθ' ἑτέρας ἡ μετὰ πλειόνων, ἀποδεῖξαι δὲ καὶ τὰς Ἀμφι-
κτυονικὰς δίκαιας ὅσαι πόλεισι πρὸς πόλεις εἰσίν. Ὅστε- 15
ρον δ' ἂλλαι πλείους διατάξεις γεγόνασιν, ὡς κατε-
λύθη καὶ τοῦτο τὸ σύνταγμα, καθάπερ τὸ τῶν Ἀχαιῶν.
αἱ μὲν οὖν πρῶται δυοκαίδεκα συνελθεῖν λέγονται πόλεις· ἐμάστη δ' ἐπεμπε πυλαγόραν, δις κατ' ἕτος οὕ-
σης τῆς συνόδου ἔαρός τε καὶ μετοπάθουν. Ὅστερον δὲ 20
καὶ πλείους προσῆλθον πόλεις. τὴν δὲ σύνοδον Πυ-
λαίαν ἐκάλουν τὴν μὲν ἔαριν ἢν τὴν δὲ μετοπωρινήν,
ἐπειδὴ ἐν Πύλαις συνήγοντο, ἃς καὶ Θερμοπύλας κα-
λοῦσιν. ἔθυον δὲ τῇ Δήμητρι οἱ πυλαγόροι. τὸ μὲν οὖν ἐξ ἀρχῆς τοῖς ἐγγὺς μετῆν * καὶ τούτων καὶ τοῦ 25
μαντείου, Ὅστερον δὲ καὶ οἱ πόρρωθεν ἀφικνοῦντο καὶ ἔχρωντο τῷ μαντείῳ καὶ ἐπεμπον δῶρα καὶ θησαυ-
ροὺς κατεσκεύαζον, καθάπερ Κροῖσος καὶ ὁ πατὴρ
Ἀλυάττης καὶ Ἰταλιστῶν τινες καὶ Σικελοί.

- 8 Ἐπίφθονος δ' ᾧν ὁ πλοῦτος δυσφύλακτός ἐστι 30
καὶ λερός ἡ. νυνὶ γέ τοι πενέστατον ἐστι τὸ ἐν Δελφοῖς
λερὸν χρημάτων γε χάριν, τῶν δ' ἀναθημάτων τὰ μὲν

ηρται τὰ δὲ πλείω μένει. πρότερον δὲ πολυχρήματον
 ἦν τὸ Ιερόν, καθάπερ Ὁμηρός τε εἴρηκεν „οὐδὲ ὅσα
 „λάινος οὐδὸς ἀφήτορος ἐντὸς ἔέργει Φοίβου Ἀπόλ-
 „λωνος Πυθοῖ ἐνὶ πετρηέσσῃ,“ καὶ οἱ θησαυροὶ δη-
 5 λοῦσι καὶ ἡ σύλησις ἡ γενηθεῖσα ὑπὸ τῶν Φωκέων, ἔξ
 ἥς ὁ Φωκικὸς καὶ Ιερὸς καλούμενος ἔξήφθη πόλεμος.
 αὗτη μὲν οὖν ἡ σύλησις γεγένηται κατὰ Φίλιππον τὸν
 Ἀμύντου· προτέραν δὲ ἄλλην ὑπονοοῦσιν ἀρχαίαν, ἡ
 τὸν ύψῳ Ὁμηρού λεγόμενον πλοῦτον ἔξεφόρησεν· οὐδὲ C.421
 10 γὰρ ἵχνος αὐτοῦ σωθῆναι πρὸς τοὺς ὕστερον χρόνοις
 ἐν οἷς οἱ περὶ Ὀνόμαρχον καὶ Φάνταλον ἐσύλησαν τὸ
 Ιερόν, ἀλλὰ τὰ μὲν ἀπενεχθέντα νεώτερα ἐκείνων
 εἶναι τῶν χρημάτων· ἀποκεῖσθαι γὰρ ἐν θησαυροῖς,
 ἀπὸ λαφύρων ἀνατεθέντα, ἐπιγραφὰς σώζοντα ἐν
 15 αἷς καὶ οἱ ἀναθέντες· „Γύγον“ γὰρ καὶ „Κροίσου“ καὶ
 „Συβαριτῶν“ καὶ „Σπινητῶν τῶν περὶ τὸν Ἀδρίαν“,
 καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων. οὕτ——...· ἥκιοι τὰ πα-
 λαιὰ χρήματα ἀναμεμῆχθαι· [ῶς] καὶ ἄλλοι τόποι δια-
 σημαίνουσιν ὑπὸ τούτων σκευωρηθέντες τῶν ἀνδρῶν.
 20 ἔνιοι δὲ τὸν ἀφήτορα δεξάμενοι λέγεσθαι θησαυρόν,
 ἀφήτορος δὲ οὐδὸν κατὰ γῆς θησαυρισμόν, ἐν τῷ ναῷ
 κατορωρύχθαι φασὶ τὸν πλοῦτον ἐκεῖνον, καὶ τοὺς περὶ
 τὸν Ὀνόμαρχον ἐπιχειρήσαντας ἀνασκάπτειν νύκτωρ
 σεισμῶν γενομένων μεγάλων ἔξω τοῦ ναοῦ φυγεῖν καὶ
 25 παύσασθαι τῆς ἀνασκαφῆς, ἐμβαλεῖν δὲ καὶ τοῖς ἄλ-
 λοις φόβον τῆς τοιαύτης ἐπιχειρήσεως.

Τῶν δὲ ναῶν τὸν μὲν πτέρινον εἰς τοὺς μύθους 9
 τακτέον, τὸν δὲ δεύτερον Τροφωνίου καὶ Ἀγαμήδους
 ἔργον φασί, τὸν δὲ νῦν Ἀμφικτύονες κατεσκεύασαν.
 30 δείκνυται δὲ ἐν τῷ τεμένει τάφος Νεοπτολέμου κατὰ
 χρησμὸν γενόμενος, Μαχαιρέως Δελφοῦ ἀνδρὸς ἀνε-
 λόντος αὐτόν, ὃς μὲν ὁ μῦθος, δίκας αἰτοῦντα τὸν

θεὸν τοῦ πατρόφου φόνου, ὡς δὲ τὸ εἰκός, ἐπιθέμενον τῷ ιερῷ. τοῦ δὲ Μαχαιρέως ἀπόγονον Βράγχον φασὶ τὸν προστατήσαντα τοῦ ἐν Διδύμοις ιεροῦ.

10 Ἀγὼν δὲ ὁ μὲν ἀρχαῖος ἐν Δελφοῖς κιθαρῳδῶν ἔγενηθη παιᾶνα ἀδόντων εἰς τὸν θεόν· ἔθηκαν δὲ 5 Δελφοί· μετὰ δὲ τὸν Κριστονόπολεμον οὐ' Ἀμφικτύονες ἵππικὸν καὶ γυμνικὸν ἐπ' Εὐρυλόχου διέταξαν στεφανίτην καὶ Πύθια ἑκάλεσαν. προσέθεσαν δὲ τοῖς κιθαρῳδοῖς αὐλητάς τε καὶ κιθαριστὰς χωρὶς ὅδης, ἀποδώσοντάς τι μέλος ὃ καλεῖται νόμος Πυθικός. πέντε 10 δ' αὐτοῦ μέρη ἔστιν, ἄγκρουςις ἀμπειρα κατακελευσμὸς ἱαμβοὶ καὶ δάκτυλοι σύριγγες. ἐμελοποίησε μὲν οὖν Τιμοσθένης, ὃ ναύαρχος τοῦ δευτέρου Πτολεμαίου ὁ καὶ τοὺς λιμένας συντάξας ἐν δέκα βίβλοις. βούλεται δὲ τὸν ἀγῶνα τοῦ Ἀπόλλωνος τὸν πρὸς τὸν δράκοντα 15 διὰ τοῦ μέλους ὑμνεῖν, ἄγκρουσιν μὲν τὸ προοίμιον δηλῶν, ἀμπειραν δὲ τὴν πρώτην κατάπειραν τοῦ ἀγῶνος, κατακελευσμὸν δὲ αὐτὸν τὸν ἀγῶνα, ἱαμβοὺς δὲ καὶ δάκτυλον τὸν ἐπιπαιανισμὸν τὸν [γινόμενον] ἐπὶ 0.422τῇ νίκῃ μετὰ τοιούτων διαμετρῶν, ὥστε 20 ὁ μὲν ὑμνοὶς ἔστιν οἰκεῖος ὃ δ' ἱαμβος κακισμοῖς, σύριγγας δὲ τὴν ἔκλειψιν τοῦ θηρίου, μιμουμένων ὡς ἄν καταστρέφοντος ἐσχάτους τινὰς συριγμούς.

11 "Ἐφορος δ', ὃ τὸ πλεῖστον προσχρώμεθα διὰ τὴν περὶ ταῦτα ἐπιμέλειαν, καθάπερ καὶ Πολύβιος μαρτυρῶν τυγχάνει, ἀνὴρ ἀξιόλογος, δοκεῖ μοι τάνατία ποιεῖν ἔσθ' ὅτε τῇ προαιρέσει καὶ ταῖς ἐξ ἀρχῆς ὑποσχέσειν. ἐπιτιμήσας γοῦν τοῖς φιλομυθοῦσιν ἐν τῇ τῆς Ιστορίας γραφῇ καὶ τὴν ἀλήθειαν ἐπαινέσας προστίθησι τῷ περὶ τοῦ μαντείου τούτου λόγῳ σεμνήν τινα 30 ὑπόσχεσιν, ὡς πανταχοῦ μὲν ἄριστον νομίζει τὰληθές,

21. post κακισμοῖς: ὡς καὶ τὸ ἱαμβίζειν 23. ante ἐσχάτους: εἰς

μάλιστα δὲ κατὰ τὴν ὑπόθεσιν ταύτην. ἄτοπον γὰρ εἰ περὶ μὲν τῶν ἄλλων τὸν τοιοῦτον ἀεὶ τρόπον διώκομεν, φησί, περὶ δὲ τοῦ μαντικοῦ λέγοντες, ὃ πάντων ἐστὶν ἀψευδέστατον, τοῖς οὕτως ἀπίστοις καὶ ψευδέσι 5 χρησόμεθα λόγοις. ταῦτα δ' εἰπὼν ἐπιφέρει παραχρῆμα, ὅτι ὑπολαμβάνουσι κατασκευάσαι τὸ μαντεῖον Ἀπόλλωνα μετὰ Θέμιδος ὥφελῆσαι βουλόμενον τὸ γένος ἡμῶν. εἶτα τὴν ὠφέλειαν εἰπὼν ὅτι εἰς ἡμερότητα προύκαλεντο καὶ ἐσωφρόνιζε, τοῖς μὲν χρηστηριάξων 10 καὶ τὰ μὲν προστάττων τὰ δὲ ἀπαγορεύων, τοὺς δ' οὐδὲ δλῶς προσιέμενος, ταῦτα διοικεῖν νομίζουσι, φησίν, αὐτόν, οἱ μὲν αὐτὸν τὸν θεὸν σωματοειδῆ γινόμενον, οἱ δὲ ἀνθρώποις ἔννοιαν παραδιδόντα τῇσι ἑαυτοῦ βουλήσεως.

15 Τηοβᾶς δὲ περὶ τῶν Δελφῶν οἵτινές εἰσι διαλε- 12 γόμενος φησὶ τὸ παλαιὸν Παρνασσίους τινὰς αὐτόχθονας καλούμενους οἰκεῖν τὸν Παρνασσόν· καθ' ὃν χρόνον Ἀπόλλωνα τὴν γῆν ἐπιόντα ἡμεροῦν τοὺς ἀνθρώπους ἀπό τε τεῦν ἡμέρων καρπῶν καὶ τῶν βίων, ἐξ 20 Ἀθηνῶν δὲ ὁρμηθέντα ἐπὶ Δελφοὺς ταύτην ἵεναι τὴν ὁδόν, ἢ νῦν Ἀθηναῖοι τὴν Πυθιάδα πέμπουσι· γενούμενον δὲ κατὰ Πανοπέας Τιτυὸν καταλῦσαι ἔχοντα τὸν τόπον, βίαιον ἄνδρα καὶ παράνομον· τοὺς δὲ Παρνασσίους συμπλέξαντας αὐτῷ καὶ ἄλλον μηνῦσαι χαλεπὸν ἄνδρα Πύθωνα τοῦνομα, ἐπίκλησιν δὲ Δράκοντα, 25 κατατοξεύοντος δὲ ἐπικελεύειν ἵε παιάν, ἀφ' οὐ τὸν παιανισμὸν οὕτως ἐξ ἔθους παραδοθῆναι τοῖς μέλλουσι συμπίκτειν εἰς παράταξιν· ἐμπρησθῆναι δὲ καὶ σκηνὴν τότε τοῦ Πύθωνος ὑπὸ τῶν Δελφῶν, καθάπερ καὶ νῦν ἔτι * καὶ ἀεὶ ὑπόμνημα ποιουμένους τῶν τότε γενομένων. τί δὲ ἀν εἴη μυθωδέστερον ἢ Ἀπόλλων τοξεύων καὶ κολάξων Τιτυοὺς καὶ Πύθωνας καὶ C.423

όδεύων ἐξ' *Αθήνων* εἰς *Δελφοὺς* καὶ γῆν πᾶσαν ἐπιών; εἰ δὲ ταῦτα μὴ ὑπελάμβανε μύθους εἶναι, τί ἔχοην τὴν μυθευομένην Θέμιν γυναικαναλεῖν, τὸν δὲ μυθευόμενον δράκοντα ἀνθρώπουν; πλὴν εἰ συγχεῖν ἐβούλετο τόν τε τῆς Ιστορίας καὶ τὸν τοῦ μύθου τύπον. παρα-⁵ πλήσια τούτοις καὶ τὰ περὶ τῶν *Αἰτωλῶν* εἰρημένα. φῆσας γὰρ ἀπορθήτους αὐτοὺς ἐκ παντὸς τοῦ χρόνου τοτὲ μὲν *Αἰολέας* φησὶν οἰκηῆσαι τοὺς κατέχοντας βαρβάρους ἐκβαλόντας, τοτὲ δ' *Αἰτωλὸν* μετὰ τῶν ἐξ' *Ηλιδος* Ἐπειῶν τῶν ἐχθρῶν· τούτους δ' ὑπ' ¹⁰ *Ἀλκμέωνος* καὶ *Διομήδους*. ἀλλ' ἐπάνειμι ἐπὶ τοὺς Φωκέας.

13 Ἐξῆς γὰρ ἐν τῇ παραλίᾳ μετὰ τὴν *Αντικύραν* πολιχνιόν ἐστιν *'Οπισθομάραθος*· εἰτ' ἄκρα Φαρύγιον ἔχουσα ὕφορμον· εἰδί³ ὁ λιμὴν ὕστετος ὁ προσαγορευ-¹⁵ θεὶς μυχὸς ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ὑπὸ τῷ *Ἐλικῶνι* καὶ τῇ *Ασκρῃ* κείμενος. οὐδέ³ αἱ *Ἄβαι* δὲ τὸ μαντεῖον ἀπωθεν τῶν τόπων τούτων ἐστίν, οὐδέ³ ἡ *Αμβρυσσος*, [οὐδέ³ ἡ *Με*]δεῶν ὄμάνυμος τῇ *Βοιωτιακῇ*. ἔτι δὲ μᾶλλον ἐν τῇ μεσογαίᾳ μετὰ *Δελφοὺς* ως πρὸς τὴν ἐω²⁰ *Δαυλλές* πολιχνιόν, ὅπου *Τηρέα* τὸν *Θρᾶκα* φασι δυναστεῦσαι· καὶ τὰ περὶ *Φιλομήλαν* καὶ *Πρόκνην* ἐκεῖ μυθεύουσι. τοῦνομα δὲ τῷ τόπῳ γεγονέναι ἀπὸ τοῦ δάσους· δαυλοὺς γὰρ καλοῦσι τὰ δάση. *"Ομηρος* μὲν οὖν *Δαυλλίδα* εἴπεν, οἱ δ' *ὕστερον Δαυλίαν*. καὶ τὸ ²⁵ „[οἱ] *Κυπάρισσον* ἔχον“ δέχονται διττῶς, οἱ μὲν ὄμωνύμως τῷ φυτῷ οἱ δὲ παρωνύμως κάμην ὑπὸ τῇ *Λυκωρείᾳ*.

14 Πανοπεὺς δ' ὁ νῦν *Φανοτεύς*, ὅμορος τοῖς περὶ *Λεβάδειαν* τόποις, ἡ τοῦ Ἐπειοῦ πατρίς. καὶ τὰ περὶ ³⁰

23. post μυθεύουσι: Θουκυδίδης δ' ἐν *Μεγάροις* φησί·

τὸν Τιτυὸν δὲ ἐνταῦθα μυθεύονται. Ὅμηρος δέ φησιν
ὅτι οἱ Φαιήκες τὸν Ραδάμανθυν εἰς Εὔβοιαν, ἥγαγον,
„δψόμενον Τιτυὸν γαιήνον υἱόν.“ καὶ Ἐλάριόν τι σπή-
λαιον ἀπὸ τῆς Τιτυοῦ μητρὸς Ἐλάρας δείκνυται κατὰ
δὴ τὴν υῆσον καὶ ἡρῷον τοῦ Τιτυοῦ καὶ τιμαί τινες. πλη-
σίον δὲ Λεβαδείας καὶ ἡ Τραχίν, διώνυμος τῇ Οἰταίᾳ,
Φωκικὴ πολίχνη· οἱ δὲ ἐνοικοῦντες Τραχίνιοι λέγονται.

Ἡ δὲ Ἀνεμώρεια ὠνόμασται ἀπὸ τοῦ συμβαίνοντος 15
τος πάθους· καταγίζει γὰρ εἰς αὐτὴν δὲ καλούμενος
10 Κατοπτήριος χῶρος, κρημνός τις ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ
διήκων· ὅριον δὲ ἦν δὲ τόπος οὗτος Δελφῶν τε καὶ Φω-
κεών, ἦνίκα ἀπέστησαν τοὺς Δελφοὺς ἀπὸ τοῦ κοινοῦ
συστήματος τῶν Φωκέων Λακεδαιμόνιοι καὶ ἐπέτρε-
ψαν καθ' αὐτοὺς πολιτεύεσθαι· τινὲς δὲ Ἀνεμώρειαν C.424
15 καλοῦσιν. εἰδὲ Τάμπολις (Τα μετὰ ταῦτα ἐκλήθη
ὑπό τινων), εἰς ἣν ἐκ Βοιωτίας ἐκπεσεῖν ἔφαμεν τοὺς
Ταντας· ἔστι δὲ ἐν τῇ μεσογαίᾳ μάλιστα καὶ αὕτη,
πλησίον τῶν Παραποταμίων, ἐτέρα οὖσα τῆς ἐν τῷ
Παρνασσῷ Ταμπεῖ[ας], καὶ Ἐλάτεια ἡ μεγίστη πόλις
20 τῶν Φωκιῶν, ἦν Ὅμηρος μὲν οὐκ οἶδε (νεωτέρα γάρ
ἔστι τῆς ἡλικίας ἑκείνου), ἐπικαιρίως δὲ ἴδουται πρὸς
τὰς ἐκ τῆς Θετταλίας εἰσβολάς. δηλοῖ δὲ τὴν εὐφυΐαν
ταύτην καὶ Δημοσθένης, φράζων τὸν θόρυβον τὸν γε-
νηθέντα Ἀθήνησιν αἴφνιδίως, ἐπειδὴ ἦκε τις ἀπαγ-
25 γέλλων ὡς τοὺς πρυτάνεις ὡς Ἐλάτεια κατείληπται.

Παραποτάμιοι δὲ εἰσὶ κατοικία τις ἐπὶ τῷ Κηφισσῷ 16
ίδρυμένη πλησίον Φανοτεῦσι καὶ Χαιρωνεῦσι καὶ Ἐλα-
τείᾳ. φησὶ δὲ Θεόπομπος τὸν τόπον τοῦτον διέχειν τῆς
μὲν Χαιρωνείας δόσον τετταράκοντα σταδίους, διορί-
30 ζειν δὲ τοὺς Αμβρυσέας καὶ Πανοπέας καὶ Δαυλιέας·
κεῖσθαι δὲ ἐπὶ τῆς ἐμβολῆς τῆς ἐκ Βοιωτίας εἰς Φωκέας
ἐν λόφῳ μετρίως ὑψηλῷ, μεταξὺ τοῦ τε Παρνασσοῦ

καὶ τοῦ [Αδυλίου ὅ]ρους πενταστάδιον σχεδόν τι ἀπο-
λειπόντων ἀν[ὰ μέσον χω]ρίον, διαιρεῖν δὲ τὸν Κη-
φισὸν στενὴν ἐκατέρωθεν διδόντα πάροδον, τὰς μὲν
ἀρχὰς ἐκ Λιλαίας ἔχοντα Φωκικῆς πόλεως (καθάπερ
καὶ Ὁμηρός φησιν „οἵ τε Λίλαιαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ Κη- 5
„φισσοῖο“), εἰς δὲ τὴν Κωπαΐδα λίμνην ἐκδιδόντα· τὸ
δὲ Αδύλιον παρατείνειν ἐφ' ἔξήκοντα σταδίους μέχρι
τοῦ *Τφαντείου, ἐφ' ᾧ κεῖται ὁ Ὁροχομενός. καὶ Ἡσιο-
δος δ' ἐπὶ πλέον περὶ τοῦ ποταμοῦ λέγει καὶ τῆς δύ-
σεως, ὡς δι' ὅλης φέοι τῆς Φωκίδος σκολιῶς καὶ δρα- 10
κοντοειδῶς „παρὰ Πανοπῆα διὰ Γλήχωνά τ' ἐρυμνὴν
„καὶ τε δι' Ὁροχομενοῦ ελλιγμένος εἰσὶ δράκων ὕσ.“
τὰ δὲ στενὰ τὰ περὶ τοὺς Παραποταμίους ἢ τὴν Παρα-
ποταμίαν (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) περιμάχητα ὑπῆρ-
ξεν ἐν τ[ῷ] Φωκικῷ πολέ]μῳ, μίαν ἔχόντων ταύτην ἐμ- 15
βολὴν [εἰς τὴν Φωκίδα]. ἔστι δὲ Κηφισὸς ὁ τε Φωκι-
κὸς καὶ ὁ Ἀθήνησι καὶ ὁ ἐν Σαλαμῖνι, τέταρτος δὲ καὶ
πέμπτος ὁ ἐν Σικυῶνι καὶ ὁ ἐν Σκύρῳ, ἐν Ἀπολλωνίᾳ
δὲ τῇ πρὸς Ἐπιδάμνῳ πηγή ἔστι κατὰ τὸ γυμνάσιον,
ἥν καλοῦσι Κηφισόν. 20

17. Δαφνοῦς δὲ νῦν μὲν κατέσκαπται· ἥν δέ ποτε
τῆς Φωκίδος πόλις ἀπτομένη τῆς Εὐβοϊκῆς θαλάττης,
διαιροῦσα τοὺς Ἐπικυνημιδίους Λοκρούς, τοὺς μὲν ἐπὶ
τὸ πρὸς Βοιω[τίαν μέρος τοὺς δὲ πρὸς] Φωκίδα τὴν
C.425ἀπὸ θαλάττης καθήκ[οι·σαν τότε ἐπὶ θάλατταν]. τε- 25
κμήριον δὲ τὸ ἐν αὐτῷ Σχεδιεῖον, ὃ φασιν εἶναι τάφου
Σχεδίου. [εἰρη]ται δὲ ὁ Δαφνοῦς ἐφ' ἐκάτερα τὴν Λο-
κρίδα [σχίσαι, ὥστε μηδαμοῦ ἄπτεσθαι ἀλλήλων τούς
τ' Ἐπικυνημιδίους καὶ το]ὺς Ὄπουντίους· ὕστερον δὲ

18. post Σκύρῳ: ἕκτος δὲ ὁ ἐν Ἀργει τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Λυρ-
κείου

προσωρίσθη τοῖς [Όπουντίοις ὁ τό]πος. περὶ μὲν δὴ τῆς Φωκίδος ἀπόχρον.

Ἐφεξῆς δ' ἔστιν ἡ Λοκρίς, ὥστε περὶ ταύτης λε-¹
κτέουν. διήρηται δὲ δίχα· τὸ μὲν γὰρ αὐτῆς ἔστιν οἱ
5 πρὸς Εῦβοιαν Λοκροί, [οὓς ἐλέγομεν σχίζεσθαι ποτε
ἐφ' ἑπάτερα τοῦ Δαφνοῦντος· ἐπεκαλοῦντο δ' οἱ μὲν
Όπουντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, οἱ δ' Ἐπικυνημίδιοι
ἀπὸ ὅρους τινὸς Κυνημίδος· τὸ δὲ λοιπὸν οἱ ἐσπέριοι
εἰσὶ Λοκροί, οἱ δ' αὐτοὶ καὶ Οξόλαι καλοῦνται. χωρί-
10 ξει δ' αὐτοὺς ἀπὸ τῶν Όπουντίων καὶ τῶν Ἐπικυνημι-
δίων ὃ τε Παρνασσός μεταξὺ ἰδρυμένος καὶ ἡ τῶν Δω-
ριέων τετράπολις. ἀρχτέον δ' ἀπὸ τῶν Όπουντίων.

Ἐφεξῆς τοίνυν ταῖς Ἀλαΐς, εἰς ἣς κατέληγεν ἡ 2
Βοιωτιακὴ παραλία ἡ πρὸς Εὔβοια, τὸν Όπουντιον
15 κόλπον κείσθαι συμβαίνει. ὁ δ' Όπούς ἔστι μητρόπο-
λις, καθάπερ καὶ τὸ ἐπίγραμμα δηλοῖ τὸ ἐπὶ τῇ πρώτῃ
τῶν πέντε στηλῶν τῶν περὶ Θερμοπύλας ἐπιγεγραμ-
μένον πρὸς τῷ πολυανδρῷ „τούσδε ποθεῖ φθιμένους
„ὑπὲρ Ἑλλάδος ἀντία Μήδων, μητρόπολις Λοκρῶν εὐ-
20 „θυνθύμων Όπειει.“ ἀπέχει δὲ τῆς θαλάττης περὶ πεν-
τεκαίδεκα σταδίους, τοῦ δ' ἐπινείου καὶ ἔξηκοντα. Κύ-
νος δ' ἔστι τὸ ἐπίνειον, ἄκρα τερματίζουσα τὸν Όπουν-
τιον κόλπον σταδίων ὄντα περὶ τετταράκοντα· μεταξὺ
δὲ Όπουντος καὶ Κύνου πεδίου εὖδαιμον· κείται δὲ
25 κατὰ Αἰδηψὸν τῆς Εὐβοίας, ὅπου τὰ θερμὰ τὰ Ἡρα-
κλέους, πορθμῷ διειργόμενος σταδίων ἔξηκοντα καὶ
ἐκατόν. ἐν δὲ τῷ Κύνῳ Δευκαλίωνά φασιν οἰκῆσαι,
καὶ τῆς Πύρρας αὐτόθι δείκνυται σῆμα, τοῦ δὲ Δευ-
καλίωνος Ἀθήνησι. διέχει δὲ τῆς Κυνημίδος ὁ Κύνος
30 ὅσον πεντήκοντα σταδίους. καὶ ἡ Ἀταλάντη δὲ νῆσος
κατὰ Όπουντα ἴδρυται, ὁμοίως τῇ πρὸ τῆς Ἀττι-
κῆς. λέγεσθαι δ' Όπουντίους τινὰς καὶ ἐν τῇ Ἡλείᾳ

φασίν, ἃν οὐκ ἄξιον μεμνῆσθαι, πλὴν ὅτι συγγένειαν
αὐτῶν ἔξανανεοῦνται τοῖς Ὀπούντιοις ὑπάρχουσαν.
ὅτι δ' ἐξ Ὁπούντος ἦν ὁ Πάτροκλος λέγει Ὄμηρος, καὶ
διότι φόνον ἀκούσιον πράξας ἔφυγεν εἰς Πηλέα, ὁ δὲ
πατὴρ Μενοίτιος ἐμεινεν ἐν τῇ πατρίδι· ἐκεῖσε γάρ 5
φησιν δὲ Ἀχιλλεὺς ὑποσχέθαι τῷ Μενοίτῳ κατάξειν
τὸν Πάτροκλον ἐκ τῆς στρατείας ἐπανελθόντα. οὐ μὴν
ἔβασιλευέ γε ἐκεῖνος τῶν Ὀπούντιων, ἀλλ' Άϊας ὁ
Λοκρός, πατρίδος ὅν, ὡς φασι, Ναρύκου. Αἴανην
δὲ ὄνομάζουσι τὸν ἀναιρεθέντα ὑπὸ τοῦ Πατρόκλου, 10
ἀφ' οὗ καὶ τέμενος Αἰάνειον δείκνυται καὶ κρήνη τις
Αἰανίς.

C.426 1 'Εξῆς μετὰ τὸν Κῦνον Ἀλόπη ἐστὶ καὶ ὁ Δαφνοῦς,
3 ὃν ἔφαμεν κατεσπάσθαι· λιμὴν δὲ ἐστὶν αὐτόθι διέχων
Κύνου περὶ ἐνευήκοντα σταδίους, Ἐλατείας δὲ πεζεύ- 15
οντι εἰς τὴν μεσόγαιαν ἐκατὸν εἰκοσιν. Ἡδη δὲ ἐστὶ¹
ταῦτα τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου· μετὰ γὰρ τὸν Ὁπούν-
τιον συνεχής ἐστιν οὗτος.

4 Μετὰ δὲ Δαφνοῦντα Κυνημίδες χωρίον ἐρυμνὸν
ὅσον σταδίους εἰκοσι πλεύσαντι· καθ' ὃ τὸ Κήναιον 20
ἐκ τῆς Εὐβοίας ἀντίκειται ἄκρα βλέπουσα πρὸς ἐσπέ-
ραν καὶ τὸν Μαλιέα κόλπον, πορθμῷ διειργομένη σχε-
δὸν εἰκοσασταδίῳ. ταῦτα δὲ ἥδη τῶν Ἐπικηνημίδων
ἐστὶ Λοκρῶν. ἐνταῦθα καὶ αἱ Λιχάδες καλούμεναι
τρεῖς νῆσοι πρόκεινται ἀπὸ Λίχα τοῦνομα ἔχουσαι. 25
καὶ ἄλλαι δὲ εἰσὶν ἐν τῷ λεχθέντι παράπλῳ, ἀς ἐκόντες
παραλείπομεν. μετὰ δὲ εἰκοσι σταδίους ἀπὸ Κυνημίδων
λιμήν, ὑπὲρ οὖν κεῖται τὸ Θρόνιον ἐν σταδίοις τοῖς ἵσοις
κατὰ τὴν μεσόγαιαν. εἰδὲ ὁ Βοάγριος ποταμὸς ἐκδί-
δωσιν ὁ παραρρέων τὸ Θρόνιον, Μάνην δὲ ἐπονομά- 30
ζουσιν αὐτόν· ἔστι δὲ χειμάρρος ὃστε ἀβρόχοις ἐμ-
βαίνειν τοῖς ποσίν, ἄλλοτε δὲ καὶ δίπλεθρον ἴσχειν

πλάτος. μετὰ δὲ ταῦτα Σκάρφεια σταδίους ὑπερηγει-
μένη τῆς θαλάττης δέκα, διέχουσα δὲ τοῦ Θρονίου τρι-
άκοντα, ἐλάττοσι δὲ μικρῷ ἔπειτα Νίκαια ἐστι
καὶ αἱ Θεομοκύλαι.

5 Τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν μὲν ἄλλων οὐκ ἄξιον 5
μεμυνθῆσαι· ὡν δ' Ὁμηρος μέμνηται Καλλίαρος μὲν
οὐκέτι οἰκεῖται, [εὐήροτον δὲ νῦν ἐσ]τι πεδίον· κα-
λοῦσι δ' οὕτως ἀπὸ τοῦ [συμβεβηκότος· καὶ Βῆσσα
δ'] οὐκ ἔστι, δρυμώδης τις τόπος· οὐδέ [αἱ Αὐγειαί,
10 τὴν δὲ χώραν ἔχουσι Σκαρφιεῖς· ταύτην μὲν οὖν τὴν
Βῆσσαν ἐν τοῖς δυσὶ γραπτέον σίγμα (ἀπὸ γὰρ
τοῦ δρυμώδους ὀνόμασται ὁμωνύμως, ὥσπερ καὶ
Νάπη ἐν τῷ Μηθύμνης πεδίῳ, ἦν Ἑλλάνικος ἀγνο-
ῶν Λάπην ὀνομάζει), τὸν δὲ ἐν τῇ Ἀττικῇ δῆ-
15 μον, ἀφ' οὗ Βησσαεῖς οἱ δημόται λέγονται, ἐν τῷ ἐνὶ
σίγμα.

'Η δὲ Τάρφη κεῖται ἐφ' ὕψους, διέχουσα [Θρονίου] 6
σταδίους εἴκοσι, χώραν δ' εὔκαιροπόν τε καὶ εὔδενδρον
ἔχει· ἥδη γὰρ καὶ αὕτη ἀπὸ τοῦ δάσους ὀνόμασται. κα-
20 λεῖται δὲ νῦν Φαρύγαι· ἵδρυται δ' αὐτόθι Ἡρας Φα-
ρυγαίας ιερὸν ἀπὸ τῆς ἐν Φαρύγαις τῆς Ἀργείας· καὶ
δὴ καὶ ἀποικοὶ φασιν εἶναι Ἀργείων.

Τῶν γε μὴν ἐσπερίων Λοκρῶν⁴²⁷ Ὅμηρος οὐ μέμνη- 7
ται, ἡ οὐ δητῶς γε, ἀλλὰ μόνον τῷ δοκεῖν ἀντιδια-
25 στέλλεσθαι τούτοις ἐκείνους περὶ ὃν εἰρήναμεν „Λο-
κρῶν, οἱ ναίοντες πέροιν ιερῆς Εὐβοίης,“ ὡς καὶ ἐτέ-
ρων διντων. ἀλλ' οὐδέ ὑπὸ τῶν ἄλλων τεθρύληνται
πολλῶν· πόλεις δὲ ἔσχον Ἀμφισσάν τε καὶ Ναύπα-
κτον, ὃν ἡ Ναύπακτος συμμένει τοῦ Ἀντιρρίου πλη-
30 σίου, ὀνόμασται δὲ ἀπὸ τῆς ναυπηγίας τῆς ἐκεῖ γενο-
μένης, εἵτε τῶν Ἡρακλειδῶν ἐκεῖ ναυπηγησαμένων
τὸν στόλον, εἰδί³ (ὡς φησιν Ἐφορος) Λοκρῶν ἔτι πρό-

τερον παρασκευασάντων· ἔστι δὲ νῦν Αἰτωλῶν Φιλίππου προσκρίναντος.

8 Αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Χαλκίς, ἡς μέμνηται καὶ ὁ ποιητὴς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ, ὑποκάτω Καλυδῶνος· αὐτοῦ δὲ καὶ ὁ Ταφιασσὸς λόφος, ἐν φέτῳ τοῦ Νέσσου 5 μηῆμα καὶ τῶν ἄλλων Κενταύρων, ὃν ἀπὸ τῆς σηπεδόνος φασὶ τὸ ὑπὸ τῇ φίξῃ τοῦ λόφου προχεόμενον δυσῶδες καὶ θρόμβους ἔχον ὕδωρ φεῖν· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ὁξόλας καλεῖσθαι τὸ ἔθνος, καὶ ἡ Μολύκρεια δ' ἔστι 10 κατὰ τὸ Ἀντίρριον, Αἰτωλικὸν πολίχνιον. ἡ δ' Ἀμ- φισσα ἐπὶ τοῖς ἄκροις ἴδρυται τοῦ Κρισαίου πεδίου, κατέσπασαν δ' αὐτὴν οἱ Αμφικτύονες, καθάπερ εἰρή- καμεν· [καὶ Ολάνθει]α δὲ καὶ Εὔκαλιον Λοκρῶν εἰσὶν. 15 ὁ δὲ πᾶς παφάπλους ὁ Λοκρικὸς μικρὸν ὑπερβάλλει τῶν διακοσίων σταδίων.

9 Ἀλόπην δὲ καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν τοῖς Ἐπικυνημιδίοις 20 ὄνομάζουσι καὶ ἐν τῇ Φθιώτιδι· οὗτοι μὲν οὖν ἄποι- κοι τῶν Ἐπικυνημιδίων εἰσὶν, οἱ δ' Ἐπιξεφύριοι τούτων.

10 Τοῖς δὲ Λοκροῖς τοῖς μὲν ἐσπερίοις συνεχεῖς εἰσιν Αἰτωλοί, τοῖς δ' Ἐπικυνημιδίοις Αἶνιανες συνεχεῖς οἱ 25 τὴν Οἰτην ἔχοντες, καὶ μέσοι Λωριεῖς. οὗτοι μὲν οὖν εἰσιν οἱ τὴν τετράπολιν οἰκήσαντες, ἣν φασιν εἶναι μητρόπολιν τῶν ἀπάντων Λωριέων, πόλεις δ' ἔσχον Ἐρινεὸν Βοϊον Πίνδον Κυτίνιον· ὑπέροκειται δ' ἡ Πίν- δος τοῦ Ἐρινεοῦ, παραφρεῖ δ' αὐτὴν διμάνυμος ποτα- 30 μὸς ἐμβάλλων εἰς τὸν Κηφισσὸν οὐ πολὺ τῆς Λιλαίας ἄπωθεν· τινὲς δ' Ἀκύφαντα λέγουσι τὴν Πίνδον. τούτων ὁ βασιλεὺς Αλγίμιος ἐκπεσὼν τῆς ἀρχῆς κατήγιθη πάλιν, ὡς ἵστοροῦσιν, ὑφ' Ἡρακλέους· ἀπεμνημόνευ- σεν οὖν αὐτῷ τὴν χάριν τελευτήσαντι περὶ τὴν Οἰτην· 35 "Τίλλον γὰρ εἰσεποιήσατο τὸν πρεσβύτατον τῶν ἐκείνον παιδῶν, καὶ διεδέξατο ἐκεῖνος τὴν ἀρχὴν καὶ οἱ ἀπό-

γονοι. ἐντεῦθεν δρμηθεῖσι τοις Ἡρακλείδαις ὑπῆρξεν
ἡ εἰς Πελοπόννησον κάθοδος.

Τέως μὲν οὖν ἡσαν ἐν ἀξιώμαστι αἴ πόλεις, καίπερ 11
οὔσαι μικραὶ καὶ λυπρόχωροι, ἔπειτ' ἀλιγαρήθησαν.
5 ἐν δὲ τῷ Φωκικῷ πολέμῳ καὶ τῇ Μακεδόνων ἐπικρα-
τείᾳ καὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀθαμάνων θαυμαστὸν εἶ καὶ
ἴχνος αὐτῶν εἰς Ρωμαίους ἥλθε. τὰ δ' αὐτὰ πεπόνθασι
καὶ Αἰνιᾶνες· καὶ γὰρ τούτους ἔξεφθειραν Αἰτωλοί τε
καὶ Ἀθαμᾶνες, Αἰτωλοὶ μὲν μετὰ Αιαρνάνων πολε-
10 μοῦντες καὶ μέγα δυνάμενοι, Ἀθαμᾶνες δ' ὕστατοι
τῶν Ἡπειρωτῶν εἰς ἀξιώμα προαχθέντες, ἥδη τῶν ἄλ-
λων ἀπειρηκότων, καὶ μετ' Ἀμυνάνδρου τοῦ βασι-
λέως δύναμιν κατακινυασάμενοι. οὗτοι δὲ τὴν Οἰτην^{0.428}
διακατεῖχον.

15 Τὸ δ' ὅρος διατείνει ἀπὸ Θερμοπυλῶν καὶ τῆς 12
ἀνατολῆς μέχρι πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ
τὴν ἐσπέραν· τρόπον δέ τινα καὶ πρὸς ὁρθὰς τέμνει
τὴν ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ μέχρι Πίνδου καὶ τῶν ὑπερ-
κειμένων βαρθάρων ὁρεινὴν τὸ ὅρος τοῦτο. τούτου δὴ
20 τὸ μὲν πρὸς Θερμοπύλας νενευκός μέρος Οἰτη καλεῖ-
ται σταδίων διακοσίων τὸ μῆκος, τραχὺν καὶ ὑψηλόν,
ὑψηλότατον δὲ κατὰ τὰς Θερμοπύλας· κορυφοῦται γὰρ
ἐνταῦθα καὶ τελευτὴ πρὸς δέξεις καὶ ἀποτόμους μέχρι
τῆς θαλάττης κρημνούς, ὀλίγην δ' ἀπολείπει πάροδον
25 τοῖς ἀπὸ τῆς παραλίας ἐμβάλλουσιν εἰς τοὺς Λοκροὺς
ἐκ τῆς Θετταλίας.

Τὴν μὲν οὖν πάροδον Πύλας καλοῦσι καὶ στενὰ 13
καὶ Θερμοπύλας· ἔστι γὰρ καὶ θερμὰ πλησίον ὕδατα
τιμώμενα ὡς Ἡρακλέους λερά· τὸ δ' ὑπερκείμενον
30 ὅρος Καλλίδρομον· τινὲς δὲ καὶ τὸ λοιπὸν τὸ δι' Αἰτω-
λίας καὶ τῆς Αιαρνανίας διῆκον μέχρι τοῦ Ἀμβρακι-
κοῦ κόλπου Καλλίδρομον προσαγορεύουσι. πρὸς δὲ

ταῖς Θερμοπύλαις ἐστὶ φρούρια ἐντὸς τῶν στενῶν, Νίκαια μὲν ἐπὶ θάλατταν Δοκόων, Τειχιοῦς δὲ καὶ Ἡράκλεια ὑπὲδ αὐτῆς, ἡ Τραχὺν καλουμένη πρότερον, Ακανθαιμονίων οπίσμα· διέχει δὲ τῆς ἀρχαίας Τραχύνος περὶ ἔξ σταδίους ἡ Ἡράκλεια· ἔξης δὲ ἡ Ῥοδουντία, χωρίου ἐρυμόν.

14 Ποιεῖ δὲ δυσείσθιολα τὰ χωρία ταῦτα ἡ τε τραχύτης καὶ τὸ πλήθος τῶν ὑδάτων φάραγγας ποιούντων, ἃς διέξεισι. πρὸς γὰρ τῷ Σπερχειῷ τῷ παραφρέοντι τὴν Ἀντικύραν καὶ ὁ Δύρας ἐστίν, ὃν φασιν ἐπιχειρῆ— 10 σαι τὴν Ἡρακλέους σβέσαι πυράν· καὶ ἄλλος Μέλας διέχων Τραχύνος εἰς πέντε σταδίους. πρὸς δὲ μεσημβρίαν τῆς Τραχύνος φησὶν Ἡρόδοτος εἶναι βαθεῖαν διασφάγα, δι' ἦς Ἀσωπός, δύμώνυμος τοῖς εἰρημένοις Ἀσωποῖς, εἰς τὴν θάλατταν ἐκπίπτει τὴν ἐκτὸς Πυλῶν, 15 παραλαβὼν καὶ τὸν Φοίνικα ἐκ τῆς μεσημβρίας συμβάλλοντα αὐτῷ, δύμώνυμον τῷ ἥρωι, οὖ καὶ τάφος πλησίου δείκνυται· στάδιοι δ' εἰσὶν ἐπὶ Θερμοπύλας ἀπὸ τοῦ Ἀσωποῦ πεντεκαίδεκα.

15 Τότε μὲν οὖν ἦν ἐνδοξότατα τὰ χωρία ταῦτα, 20 ἥνινα τῶν κλείθρων ἐκυρίευε τῶν περὶ τὰ στενά, καὶ τοῖς ἔξω τῶν στενῶν πρὸς τοὺς ἐντὸς ἥσαν ἀγῶνες πρωτείων· καθάπερ καὶ πέδαις ἐκάλει Φίλιππος τῆς Ἑλλάδος τὴν Χαλκίδα καὶ τὴν Κόρινθον, πρὸς τὰς ἐκ τῆς Μακεδονίας ἀφορμὰς βλέπων· ἐπιδέσμους δ' οἱ 25 ὕστερον προσηγόρευον ταύτας τε καὶ ἔτι τὴν Δημητριάδα· καὶ γὰρ αὕτη παρόδων ἦν κυρία τῶν περὶ τὰ 0.429 Τέμπη, τό τε Πήλιον ἔχοντα καὶ τὴν Ὀσσαν. ὕστερον δὲ πάντων ὑπὸ μίᾳν ἔξουσίαν ὑπηγμένων, ἀπαντ' ἀτελεύτεται πᾶσι καὶ ἀνέψυγε. 30

16 Περὶ δὲ τὰ στενὰ ταῦτα οἱ περὶ Λεωνίδαν μετὰ ὄλλην τῶν δύμόδων τοῖς τόποις ἀντέσχον πρὸς τὰς το-

σαύτας τῶν Περσῶν δυνάμεις, μέχρι περιελθόντες δι' ἀτραπῶν τὰ ὅρη κατέκοψαν αὐτοὺς οἱ βάροβαροι. καὶ νῦν τὸ πολυάνδριον ἐκείνων ἔστι καὶ στῆλαι καὶ ἡ θρυλουμένη ἐπιγραφὴ τῇ Λακεδαιμονίων στήλῃ οὐ-
5 τως ἔχουσα „ὦ ξέν’ ἀπάγγειλον Λακεδαιμονίοις ὅτι „τῇδε κείμενα τοῖς κείνων πειθόμενοι νομίμοις.“

Ἐστι δὲ καὶ λιμὴν μέγας αὐτόθι καὶ Αήμητρος 1ε- 17 ρόν, ἐν ᾧ κατὰ πᾶσαν Πυλαίαν θυσίαν ἐτέλουν οἱ Ἀμφικτύονες. ἐκ δὲ τοῦ λιμένος εἰς Ἡράκλειαν τὴν 10 Τραχῆνα πεζῇ στάδιοι τετταράκοντα, πλοῦς δ' ἐπὶ τὸ Κήναιον ἐβδομήκοντα. ἔξω δὲ Πυλῶν εὐθὺς ὁ Σπερ-
χειός ἐκδίδωσιν. ἐπὶ δὲ Πύλας ἀπὸ Εὔροπου στάδιοι πεντακόσιοι τριάκοντα. καὶ ἡ μὲν Λοκρὶς τέλος ἔχει.
τὰ δ' ἔξω Θετταλῶν ἔστι τὰ πρὸς ἔω καὶ τὸν Μαλιακὸν 15 οἴκλπον, τὰ δὲ πρὸς δύσιν Αἰτωλῶν καὶ Ἀναργύρων.
Ἄθαμάνες δὲ καὶ αὐτὸι ἐκλειοίπασι.

Μέγιστον δὴ καὶ παλαιότατον τῶν Θετταλῶν σύ- 18 στημα, ὃν τὰ μὲν Ὁμηρος εἰρηκε τὰ δ' ἄλλοι πλείους.
Αἰτωλοὺς δ' Ὁμηρος μὲν ἀεὶ ἐνὶ ὄνόματι λέγει, πόλεις 20 οὐκ ἔθνη τάττων ὑπ' αὐτοῖς, πλὴν εἰ τοὺς Κουροῖτας,
οὓς ἐν μέρει τακτέον Αἰτωλικῶν. ἀπὸ Θετταλῶν δ' ἀρ-
κτέον, τὰ μὲν σφόδρα παλαιὰ καὶ μυθώδη καὶ οὐχ ὄμο-
λογούμενα τὰ πολλὰ ἔωντες, καθάπερ καὶ ἐν τοῖς 25
ἄλλοις ἐποιήσαμεν, τὰ δὲ φαινόμενα ἡμῖν καίρια λέ-
γοντες.

Ἐστι δ' αὐτῆς πρὸς θαλάττην μὲν ἡ ἀπὸ Θερμοπυ- 3 λῶν μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῶν ἄκρων τοῦ Πηλίου παραλία βλέπουσα πρὸς ἔω καὶ πρὸς τὰ ἄκρα τῆς Εὐρωπούς τὰ βόρεια. ἔχουσι δὲ τὰ μὲν πρὸς Εύ-
30 βοίας καὶ Θερμοπύλαις Μαλιεῖς καὶ οἱ Φθιῶται Ἀχαιοί,
τὰ δὲ πρὸς τῷ Πηλίῳ Μάγνητες. αὕτη μὲν οὖν ἡ πλευ-
ρὰ τῆς Θετταλίας ἔως λεγέσθω καὶ παραλία. ἐκατέρω-

θεν δ' ἀπὸ μὲν Πηλίου καὶ Πηνειοῦ πρὸς τὴν μεσόγαιαν Μακεδόνες παράκεινται μέχρι Παιονίας καὶ τῶν Ἡπειρωτικῶν ἐθνῶν, ἀπὸ δὲ τῶν Θερμοπυλῶν τὰ παράληλα τοῖς Μακεδόσιν ὅρη τὰ Οἰταῖα καὶ Αἰτωλικά, τοῖς Δωριεῦσι καὶ τῷ Παρνασσῷ συνάπτοντα. καλεῖ-
5 σθω δὲ τὸ μὲν πρὸς τοῖς Μακεδόσι πλευρὸν ἀρκτικόν, τὸ δ' ἔτερον νότιον. λοιπὸν δ' ἐστὶ τὸ ἐσπέριον, ὃ περικλείουσιν Αἰτωλοὺς καὶ Ἀκαρνᾶνες καὶ Ἀμφίλοχοι
0.430 καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν Ἀθαμᾶνες καὶ Μολοττοὶ καὶ ἡ τῶν Αἰθίων ποτὲ λεγομένη γῆ καὶ ἀπλῶς ἡ περὶ Πίν-
10 δον πλὴν τοῦ Πηλίου καὶ τῆς Ὀσσης. ταῦτ' ἔξηρται μὲν ἴκανως, οὐ μήν γε πολλὴν περιλαμβάνει κύκλῳ χώραν, ἀλλ' εἰς τὰ πεδία τελευτᾷ.

2 Ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ μέσα τῆς Θετταλίας, εὐδαιμονεστάτη χώρα πλὴν ὅση ποταμόκλυστός ἐστιν. ὁ γὰρ 15 Πηνειός διὰ μέσης ὁέσων καὶ πολλοὺς δεχόμενος ποταμοὺς ὑπερχείται πολλάκις· τὸ δὲ παλαιὸν καὶ ἐλιμνάζετο, ὡς λόγος, τὸ πεδίον ἐκ τε τῶν ἄλλων μερῶν ὅρεσι περιειργόμενον καὶ τῆς παραλίας μετεωρότερα τῶν πεδίων ἔχούσης τὰ χωρία. ὑπὸ δὲ σεισμῶν δήγματος γε-
20 νομένου [κατὰ] τὰ νῦν καλούμενα Τέμπη καὶ τὴν Ὀσσαν ἀποσχίσαντος ἀπὸ τοῦ Όλύμπου, διεξέπεσε ταύτη πρὸς θάλατταν ὁ Πηνειός καὶ ἀνέψυξε τὴν χώραν ταύτην. ὑπολείπεται δ' ὅμως ἡ τε Νεσσωνὶς λίμνη μεγάλη καὶ ἡ Βοιβηὴς ἐλάττων ἐκείνης καὶ πλησιεστέρα τῇ πα-
25 ραλίᾳ.

3 Τοιαύτη δ' οὖσα εἰς τέτταρα μέρη διῃρητο· ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν Φθιῶτις τὸ δὲ Ἐστιαιῶτις τὸ δὲ Θετταλιῶτις τὸ δὲ Πελασγιῶτις. ἔχει δ' ἡ μὲν Φθιῶτις τὰ νότια τὰ παρὰ τὴν Οἰτην ἀπὸ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου 30 καὶ Πυλαῖκοῦ μέχρι τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου διατείνοντα, πλατυνόμενα δὲ μέχρι Φαρσάλου καὶ τῶν

πεδίων τῶν Θετταλικῶν· ἡ δὲ Ἐστιαιώτις τὰ ἐσπέρια
καὶ τὰ μεταξὺ Πίνδου καὶ τῆς ἄνω Μακεδονίας· τὰ δὲ
λοιπὰ οἱ τε ὑπὸ τῇ Ἐστιαιώτιδι νεμόμενοι τὰ πεδία,
καλούμενοι δὲ Πελαγιῶται, συνάπτουτες ἡδη τοῖς
5 κάτω Μακεδόσι, καὶ οἱ ἐφεξῆς τὰ μέχρι Μαγνητικῆς
παραλίας ἐκπληροῦντες χωρία. κάνταῦθα δὲ ἐνδόξων
ὄνομάτων ἔσται ἀριθμητικῶν καὶ ἄλλως [καὶ] διὰ τὴν
Ὄμήρου ποίησιν· τῶν δὲ πόλεων δλγαὶ σώζουσι τὸ
πάτριον ἀξέωμα, μάλιστα δὲ Λάρισα.

10 'Ο δὲ ποιητὴς εἰς δέκα μέρη καὶ δυναστείας διελὼν 4
τὴν σύμπασαν γῆν ἣν νῦν Θετταλίαν προσαγορεύομεν,
προσλαβών τενα καὶ τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Λοκρικῆς, ὡς
δ' αὐτῶς καὶ τῆς ὑπὸ Μακεδόσιν νῦν τεταγμένης, ὑπο-
γράφει τι κοινὸν καὶ πάσῃ χώρᾳ συμβαῖνον, τὸ μετα-
15 βάλλεσθαι καὶ τὰ ὅλα καὶ τὰ καθ' ἕκαστα παρὰ τὰς
τῶν ἐπικρατούντων δυνάμεις.

Πρώτους δὴ καταλέγει τοὺς ὑπὸ Ἀχιλλεῖ τοὺς τὸ 5
νότιον πλευρὸν κατέχοντας καὶ παρακειμένους τῇ τε
Οἰτη καὶ τοῖς Ἐπικυνημιδίοις Λοκροῖς,, ὅσοι τὸ Πελασ-
20,, γιαδὸν "Ἀργος ἔναιον,",, οἵ τ' "Ἄλον οὖτ' Ἀλόπην οὖτε
,,Τορχῖν" ἐνέμοντο,, οἵ τ' εἶχον Φθίνην ἥδ' Ἑλλάδα
,,καλλιγύναικα,, „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἑλλη-
,,νες καὶ Ἀχαιοί.“ συξεγύννυσι δὲ τούτοις καὶ τὸν ὑπὸ C.431
τῷ Φοίνικι καὶ κοινὸν ἀμφοῖν ποιεῖ τὸν στόλον. ὁ μὲν
25 οὖν ποιητὴς οὐδαμοῦ μέμνηται Δολοκικῆς στρατιᾶς
κατὰ τοὺς περὶ Ἰλιον ἀγωνας· οὐδὲ γὰρ αὐτῶν τὸν ἥγε-
μόνα Φοίνικα πεποίηκεν εἰς τὸν κινδύνους ἔξιόντα,
καθάπερ τὸν Νέστορα· ἄλλοι δὲ εἰρήκασι, καθάπερ
καὶ Πίνδαρος μηνσθεὶς τοῦ Φοίνικος,, ὃς Δολόπων
30,, ἄγαγε θρασὺν δμιλον σφενδονᾶσαι, ἐπτοδάμων Δα-

17. ante τοὺς: καὶ

„ναῶν βέλεσι πρόσφορον.“ τοῦτο δὴ καὶ παρὰ τῷ ποιητῇ κατὰ τὸ σιωπάμενον, ὃς εἰώθασι λέγειν οἱ γραμματικοὶ, συνυπακουούστεον. γελοῖον γὰρ τὸ τὸν βασιλέα μετέχειν τῆς στρατείας, τοὺς δ' ὑπηκόους μὴ παρεῖναι [αὐτῷ]. οὐδὲ γὰρ συστρατεύειν ἀν τῷ Ἀχιλλεῖ δόξειεν, 5 ἀλλὰ μόνον ἐπιστάτης καὶ δήτωρ ἐπεσθαῖ, εἰ δ' ἄρα, σύμβουλος. τὰ δ' ἐπη βούλεται καὶ τοῦτο δηλοῦν· τοιοῦτον γὰρ τὸ „μύθων τε δητῆρος“ ἔμεναι προητηρά τε „ἔργων.“ ταῦτα λέγων.

6. Εἴρηται τό τε ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ [καὶ τῷ Φοῖ]νικι· 10 αὐτὰ δὲ λεχθέντα περὶ τῶν ὑπ' [Ἀχιλλεῖ] ἐν ἀντιλογίᾳ ἔστι. τό τε [γὰρ] Ἀργος τὸ Πελασγικὸν [οἱ μὲν] καὶ πόλιν δέχονται Θετταλικὴν περὶ Λάρισαν ἰδρυμένην ποτὲ νῦν δ' οὐκέτι οὖσαν· οἱ δ' οὐ πόλιν ἀλλὰ τὸ τῶν Θετταλῶν πεδίον οὗτος ὀνοματικῶς λεγόμενον, θεμένου 15 τοῦνομα Ἀβαντος ἐξ Ἀργους δεῦρος ἀποικήσαντος. Φθίαν τε οἱ μὲν τὴν αὐτὴν εἶναι τῇ Ἑλλάδι καὶ Ἀχαΐῃ, ταύτας δ' εἶναι διατεμνομένης τῆς συμπάσης Θετταλίας θάτερον μέρος τὸ νότιον· οἱ δὲ διαιροῦσιν. ἔοικε δ' ὁ ποιητὴς δύο ποιεῖν τὴν τε Φθίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα 20 ὅταν οὕτως φῇ „οὐ τ' ἂλιχον Φθίην ἢδ' Ἑλλάδα,“ ὡς δυεῖν οὔσῶν· καὶ δταν οὕτως „φεῦ[γον]“ ἐπειτ' ἀπάντηνθε δι' Ἑλλάδος εὐρυχόροοι, Φθίην δ' ἔξικόμην,“ καὶ δτι „πολλαὶ [Ἀχαιΐδε]ς εἰσὶν ἀν' Ἑλλάδα τε Φθίην „τε.“ ὁ μὲν οὖν ποιητὴς δύο ποιεῖ, πότερον δὲ πόλεις 25 ἢ χώρας οὐ δηλοῖ. οἱ δὲ ὕστερον τὴν Ἑλλάδα οἱ μὲν εἰπόντες χώραν διατετάσθαι φασὶν [εἰς] τὰς Θήβας τὰς Φθιώτιδας ἀπὸ Παλαιφαρσάλου (ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ καὶ τὸ Θετταλεῖον ἔστι πλησίον τῶν Φαρσάλων ἀμφοῖν τῆς τε παλαιᾶς καὶ τῆς νέας, κάκ τοῦ Θετταλείου τεκμαί- 30

4. post στρατείας: ναῖον δ' ἐσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσιν ἀνάστον 6. posl μόνον: ὀλίγων ἔστιν

ρόμενοι τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ μέρος εἶναι καὶ τήνδε τὴν
χώραν), οἱ δὲ εἰπόντες πόλιν Φαρσάλιοι μὲν δεικνύ-
ουσιν ἀπὸ ἔξηκοντα σταδίων τῆς ἐαυτῶν πόλεως κατε-
σιαμμένην πόλιν ἣν πεπιστεύκασιν εἶναι τὴν Ἑλλάδα.⁴³²
5 καὶ δύο κοίνας πλησίου Μεσσηνίας καὶ Τριφέρειαν, Μελι-
ταιεῖς δὲ ἄπωθεν ἐαυτῶν ὅσον δέκα σταδίους οἰκεῖσθαι
τὴν Ἑλλάδα πέραν τοῦ Ἐνιπέως, ἥνικα ἡ ἐαυτῶν πό-
λις Πύρρα ὡνομάζετο, ἐκ δὲ τῆς Ἑλλάδος ἐν ταπεινῷ
χωρίῳ πειμένης εἰς τὴν ἐαυτῶν μετοικῆσαι τοὺς Ἑλλη-
10 νας· μαρτύριον δὲ εἶναι τὸν ἐν τῇ ἀγορᾷ τῇ σφραγέᾳ
τάφον τοῦ Ἐλληνος τοῦ Δευκαλίωνος υἱοῦ καὶ Πύρ-
ρας. Ιστορεῖται γὰρ ὁ Δευκαλίων τῆς Φθιώτιδος ἄρ-
ξαι καὶ ἀπλῶς τῆς Θετταλίας· δὲ δὲ τῆς Ἐνιπεύς ἀπὸ τῆς
15 Ὄδρους παρὰ Φάρσαλον δυνεὶς εἰς τὸν Ἀπιδανὸν παρα-
βάλλει, δὲ δὲ τὸν Πηνειόν. περὶ μὲν Ἑλλήνων ταῦτα.

Φθῖοι δὲ καλοῦνται οἵ τε ὑπὸ Ἀχιλλεῖ καὶ ὑπὸ τῆς
Πρωτεσιλάῳ καὶ Φιλοκτήτῃ· δὲ ποιητὴς τούτου μάρ-
τυς. εἰπὼν γὰρ ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν ὑπὸ Ἀχιλλεῖ,,οἱ
,,τ' εἰχον Φθίην,,“ ἐν τῇ ἐπὶ ναυσὶ μάχῃ τούτους μὲν
20 ὑπομένοντας ἐν ταῖς ναυσὶ πεποίηκε μετὰ τοῦ Ἀχιλ-
λέως καὶ καθ' ἡσυχίαν ὄντας, τοὺς δὲ ὑπὸ Φιλοκτή-
τη μαχομένους ἔχοντας Μέδον[τα ἡγεμόνα] καὶ τοὺς
ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ, Ποδάρκους πε]ρὶ ᾧν κοι-
νᾶς μὲν οὕτω φησίν „ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ιάονες
25 „έλκεχίτωνες, Λοκροὶ καὶ Φθῖοι καὶ φαιδιμόεντες
„Ἐπειοί.“ Ιδίως δέ „πρὸ Φθίων δὲ Μέδων τε μενε-
„πτόλεμός τε Ποδάρκης. οἱ μὲν πρὸ Φθίων μεγαθύ-
„μων θωρηκθέντες ναῦφιν ἀμυνόμενοι [μετὰ Βοιω]-
„τῶν ἐμάχοντο.“ τάχα δὲ καὶ οἱ σὺν Εὐρυπύλῳ Φθῖοι
30 ἐλέγοντο, ὅμοροι τούτοις ὄντες· νῦν μέντοι Μαγνη-
σίας νομίζουσι τῆς τε ὑπὸ Εὐρυπύλῳ τὰ περὶ Ορμένιον
καὶ τὴν ὑπὸ Φιλοκτήτῃ πᾶσαν, τὴν δὲ ὑπὸ [Πρωτε-

σιλάω] τῆς Φθίας ἀπὸ Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου μέχρι τῆς Μαγνητικῆς θαλάσσης· μέχρι δὲ τῆς ὑπὸ Πρωτεσιλάω πόλεως Ἀντρῶνος, ἢ νῦν πληθυντικῶς λέγεται, τὸ πλάτος ἀφορίζεται τῆς ὑπὸ Πηλεῖ καὶ Ἀχιλλεῖ γ[ῆς, ἀπὸ] τῆς Τραχινίας καὶ τῆς Οἰταίας ἀρξαμένοις· [τὸ] 5 δ' αὐτὸ σχεδόν τι μῆκός ἔστι τοῦ Μαλιακοῦ κ[όλπου].

8 Περὶ Ἀλού δὲ καὶ Ἀλόπης διαποροῦσι μὴ οὐ τούτους λέγει τοὺς τόπους οἱ νῦν ἐν τῷ Φθιώτικῷ τέλει φέρονται, ἀλλὰ τοὺς ἐν Λοκροῖς, μέχρι δεῦρο ἐπικρατοῦντος τοῦ Ἀχιλλέως, ὥσπερ καὶ μέχρι Τραχίνος 10 καὶ τῆς Οἰταίας. ἔστι γὰρ καὶ Ἀλος καὶ Ἀλιοῦς ἐν τῇ παραλίᾳ τῶν Λοκρῶν, καθάπερ καὶ Ἀλόπη. οἱ δὲ τὸν Ἀλιοῦντα ἀντὶ Ἀλόπης τιθέασι καὶ γράφουσιν οὕτως „οἵ θ' Ἀλον οἴ θ' Ἀλιοῦνθ' οἴ τε Τρηχίν” ἐνέ-
0.433,,μοντο.“ ὁ δὲ Φθιώτικὸς Ἀλος ὑπὸ τῷ πέρατι κείται 15 τῆς Ὁθρυος ὅρους πρὸς ἄρκτον κειμένου τῇ Φθιώτιδι, δύμόρου δὲ τῷ Τυφρηστῷ καὶ τοῖς Δόλοψιν, κάνθάνδε παρατείνοντος εἰς τὰ πλησίον τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου. ἀπέχει δὲ Ἰτάνου περὶ ἔξηκοντα σταδίους ὁ Ἀλος ἢ ἡ Ἀλος· λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως. ὕπησε δὲ ὁ Ἀθάμας τὴν 20 Ἀλον, ἀφανισθεῖσαν [δὲ] συνφ[υσαν Φαρσάλιοι] χρόνοις ὕστερον. ὑπέρμειται δὲ τοῦ Κροκίου πεδίου· διεῖ δὲ ποταμὸς Ἀμφρυσος πρὸς τῷ [τείχει]. ὑπὸ δὲ τῷ Κροκίῳ Θῆβαι εἰσὶν αἱ Φθιώτιδες, καὶ ἡ Ἀλος δὲ Φθιώτις καλεῖται καὶ Ἀχαλκή, συνάπτουσα τοῖς Μαλιεῦσιν, 25 ὥσπερ καὶ οἱ τῆς Ὁθρυος πρόποδες. καθάπερ δὲ ἡ Φυλάκη ἡ ὑπὸ Πρωτεσιλάω τῆς Φθιώτιδός ἔστι τῆς προσχώρου τοῖς Μαλιεῦσιν, οὗτος καὶ ἡ Ἀλος· διέχει δὲ Θηβᾶν περὶ ἑκατὸν σταδίους, ἐν μέσῳ δ' ἔστι Φαρσάλου καὶ Φθιώτων· Φίλιππος μέντοι Φαρσαλίοις 30 προσένειμεν ἀφελόμενος τῶν Φθιώτων. οὗτος δὲ συμβαίνει τοὺς ὅρους καὶ τὰς συντάξεις τῶν τε ἐθνῶν καὶ

τῶν τόπων ἀλλάττεσθαι ἀεί, καθάπερ εἴπομεν. οὗτοι
καὶ Σοφοκλῆς τὴν Τραχῖνα Φθιώτιν εἴρηκεν, Ἀρτε-
μίδωρος δὲ τὴν "Ἄλον ἐν τῇ παραλίᾳ τίθησι, ἔξω μὲν
τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου κειμένην, Φθιώτιν δέ. προὶὼν
5 γὰρ ἐνθένδε ὡς ἐπὶ τὸν Πηγειὸν μετὰ τὸν Ἀντρῶνα
τίθησι Πτελεόν, εἰτα τὸν "Ἄλον ἀπὸ τοῦ Πτελεοῦ διέ-
χοντα ἐκατὸν καὶ δέκα σταδίους. περὶ δὲ τῆς Τραχῖνος
εἴρηται ὅποια τις· καὶ δὲ ποιητὴς κατονομάζει.

Τοῦ δὲ Σπερχειοῦ μεμυημένος πολλάκις ὡς ἐπὶ- 9

10 χωρίου ποταμοῦ, τὰς πηγὰς ἔχοντος ἐκ Τυφρηστοῦ
Δρυοπικοῦ ὄρους, τοῦ καλούμενου πο]ότερον,
ἐκδιδόντος δὲ πλησίου Θερμοπολῶν μεταξὺ αὐτῶν
καὶ Λαμίας, δῆλος ὅτι καὶ τὰ ἐντὸς πυλῶν ὅσα τοῦ Μα-
λιακοῦ κόλπου καὶ τὰ ἐκτὸς ὑπ' ἐκείνῳ ḥν· ἀπέχει δὲ
15 Λαμίας ὁ Σπερχειός περὶ τριάκοντα σταδίους ὑπεροκει-
μένης πεδίου τινὸς καθήκοντος ἐπὶ τὸν Μαλιακὸν κόλ-
πον· ὅτι δ' ὁ Σπερχειός ἐπιχωρίος, ἐκ τε τοῦ τρέφειν
ἐκείνῳ τὴν ιόμην φάσκειν καὶ τοῦ τὸν Μενέσθιον,
ἔνα τῶν λοχαγῶν αὐτοῦ, Σπερχειοῦ λέγεσθαι παῖδα
20 καὶ τῆς ἀδελφῆς τῆς Ἀχιλλέως. Μυρμιδόνας δ' εἰκὸς
καλεῖσθαι πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ καὶ τῷ Πατρό-
κλῳ, οὐ συνηκολούθησαν ἐξ Ἀλγίνης φεύγοντι τῷ Πη-
λεῖ. Ἀχαιοὶ δ' ἐκαλοῦντο οἱ Φθιώται πάντες.

Διαριθμοῦνται δὲ τὰς ὑπὸ τῷ Φθιώτικῷ τέλει τῷ 10

25 ὑπ' Ἀχιλλεῖ κατοικίας [ἀπὸ] Μαλιέων ἀρξάμενοι πλεύ-
οντος μέν, ἐν δὲ αὐταῖς Θήβας τὰς Φθιώτιδας Ἐχῖνον Λά-
μιαν, περὶ ḥν δὲ Λαμιακὸς συνέστη πόλεμος Μακεδόσι
καὶ Ἀντικάτρῳ πρὸς Ἀθηναίους· ἐν δὲ Λεωσθένης τε
ἐπεσε τῶν Ἀθηναίων στρατηγός, [καὶ Λεοννάτος] ὁ Ἀλε-
30 ξάνδρου τοῦ βασιλέως ἐταῖρος. [ἔτι δὲ Ναρθάκ]ιον Ἐρι-
νεὸν Κορώνειαν, διμάνυμον τῇ Βοιωτικῇ, Μελίταιαν
Θαυμακοὺς Πρόερηναν Φάρσαλον Ἐρέτριαν, διμάνυμον

τῇ Εὐβοϊκῇ, Παραχελωτας καὶ τούτους ὁμονύμους τοῖς Αἰτωλικοῖς· καὶ γὰρ ἐνταῦθά ἔστιν Ἀχελῶος ποταμὸς πλησίον Λαμίας, παρ' ὃν οἰκοῦσιν οἱ Παραχελωταὶ. παρέτεινε δὲ ἡ χώρα αὕτη πρὸς ἄρκτον μὲν τῇ τῶν Ἀσπληγχαδῶν τῷν μάλιστα προσεπερίων καὶ τῇ 5 Εὐρυπύλουν καὶ [ἔτι τῇ] Πρωτεσιλάου, ταῖς πρὸς ἐώ κεκλιμέναις, πρὸς νότον δὲ τῇ Οἰταίᾳ εἰς τετταρεσκαβδεκα δῆμους διηρημένῃ, Ἡράκλειάν τε καὶ τὴν Δρυοπίδα, τετράπολιν γεγονυῖαν ποτε καθάπερ καὶ τὴν Αιωρίδα, μητρόπολιν δὲ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ Δρυό-10 παν νομιζομένην. τῆς δὲ Οἰταίας καὶ ὁ Ἀκύφας ἔστι καὶ Παρασωπιὰς καὶ Οἰνειάδαι καὶ Ἀντικύρα, διμάνυμος τῇ ἐν Δουροῖς τοῖς ἐσπερίοις. λέγω δὲ τὰς διατάξεις ταύτας οὐκ ἀεὶ μεμενηκυίας τὰς αὐτάς, ἀλλὰ ποικίλως μεταβεβλημένας· αἱ δὲ ἐπισημόταται μάλιστα ἄξιαι 15 μνήμης εἰσί.

11 Τοὺς δὲ Δόλοπας φράζει καὶ ὁ ποιητὴς Ἰκανῶς ὅτι ἐπὶ ταῖς ἐσχατιαῖς εἰσὶ τῆς Φθίας, καὶ ὅτι ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἥγεμόνι ἦσαν τῷ Πηλεῖ οὔτοι τε καὶ οἱ Φθιῶται· ἔναιον γάρ, φησίν, ἐσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσιν ἀνάσ-20 σων, δόντος τοῦ Πηλέως. γειτνιᾷ δὲ τῇ Πίνδῳ καὶ τοῖς περὶ αὐτὴν χωρίοις Θετταλικοῖς οὖσι τοῖς πλείστοις. διὰ γὰρ τὴν ἐπιφάνειάν τε καὶ τὴν ἐπικράτειαν τῶν Θετταλῶν καὶ τῶν Μακεδόνων οἱ πλησιάζοντες αὐτοῖς μάλιστα τῶν Ἡπειρωτῶν, οἱ μὲν ἐκόντες οἱ δὲ 25 ἀκοντες, μέρη καθίσταντο Θετταλῶν ἢ Μακεδόνων, καθάπερ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἴθικες καὶ Τάλαρες Θετταλῶν, Ὁρέσται δὲ καὶ Πελαγόνες καὶ Ἐλιμιῶται Μακεδόνων.

12 Ἡ δὲ Πίνδος ὅρος ἔστι μέγα, πρὸς ἄρκτον μὲν τὴν 30

Μακεδόνων, πρὸς ἐσπέραν δὲ Περραιβοὺς μετανάστας ἀνθρώπους [ἔχον], πρὸς δὲ μεσημβρίαν Δόλοπας, [πρὸς ἔω δὲ . . . αὔτη δ' ἐστὶ τῆς Θετταλίας· ἐπ' αὐτῇ δὲ εῇ Πίνδῳ φύκουν Τάλαρες Μολοττικὸν φῦλον, τῶν 5 περὶ τὸν Τόμαρον ἀπόσπασμα, καὶ Αλθικες, [εἰς] οὓς ἔξελαθῆναι φησιν ὑπὸ Πειρίθου τοὺς Κενταύρους ὁ ποιητὴς· ἐκλελοιπέναι δὲ νῦν ιστοροῦνται. τὴν δ' ἔκλεψιν διπτῶς ἀκουστέον· ἡ γὰρ ἀφανισθέντων τῶν 10 ἀνθρώπων καὶ τῆς χώρας τελέως ἡρημωμένης, ἡ τοῦ δύναματος τοῦ ἐθνικοῦ μηκέτι ὄντος, μηδὲ τοῦ συστήματος διαμένοντος τοιούτου. ὅταν οὖν ἄσημον τελέως^{ο.435} 15 ἦ τὸ λειπόμενον νῦν σύστημα, οὐκ ἄξιον μηδῆτις θεμεν οὕτ' αὐτὸν οὕτε τοῦνομα τὸ μεταληφθέν, ὅταν δ' ἔχῃ τοῦ μεμνῆσθαι δικαίαν πρόφασιν, λέγειν ἀναγκαῖον τὴν μεταβολήν.

*Λοιπὸν δ' εἰπεὶν τῆς παραλίας τὴν τάξιν τῆς ὑπὸ 13 τῷ Ἀχιλλεῖ ἀπὸ Θερμοπυλῶν ἀρξαμένους· τὴν γὰρ Λοκρικὴν καὶ [τὴν Οἰταίαν] εἰρήκαμεν. αἱ τοίνυν Θερμοπύλαι τοῦ μὲν Κηναίον διεστήκασιν ἐβδομη- 20 κοντασταδίῳ πορθμῷ, παραπλέοντι δ' ἔξω Πυλῶν τοῦ Σπερχειοῦ ὡς σταδίους * δέκα· ἔνθεν δ' εἰς Φάλαρα εἰκοσι· τῶν δὲ Φαλάρων ἀπὸ θαλάττης ὑπέροχειται πεντήκοντα σταδίους ἡ τῶν [Λαμιέων πόλι]ς. εἰδί^{της} 25 ἔξῆς παραπλεύσαντι σταδίοις ἑκατὸν ὁ Ἐχῖνος ὑπέρκειται. τῆς δ' ἔξῆς παραλίας ἐν μεσογαίᾳ ἐστὶν ἡ Κρεμαστὴ Λάρισα εἰκοσι σταδίους αὐτῆς διέχουσα, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Πελασγία λεγομένη Λάρισα. εἴτα Μυόνυη- 30 σος νησίον, εἴτ' Αντρών· ἥν δὲ αὔτη ὑπὸ Πρωτεσιλάφ. τοσαῦτα μὲν περὶ τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ με[ρίδος].*

Ἐπεὶ δ' ὁ ποιητὴς εἰς πολλὰ καὶ γνώριμα μέρη¹⁴ διε[λὼν δι]ὰ τὸ ὄνομάξειν τούς τε ἡγεμόνας καὶ τὰς ὑπ' αὐτοῖς [πόλεις] τὸν σύμπαντα τῆς Θετταλίας κύκλου

διέταξεν, [ῆμεῖς ἀκολ]ουθοῦντες τούτῳ πάλιν ὥσπερ
 ἐν τοῖς ἐπάνω [προ]σεκπληρώσομεν τὴν λοιπὴν περιο-
 δείαν τῆς χώ[ρα]ς. καταλέγει τοίνυν ἐφεξῆς τοῖς ὑπ’
 Ἀχιλλεῖ τοὺς ὑπὸ Πρωτειλάφ· οὗτοι δ’ εἰσὶν οἱ καὶ
 ἐφεξῆς ὄντες τῇ ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ παραλίᾳ μέχρι Ἀν- 5
 τρῶνος. δριζομένη τοίνυν [τῆς ἐφ]εξῆς ἐστὶν ἡ ὑπὸ τῷ
 Πρωτειλάφ, ἔξω μὲν οὖσα τοῦ [Μαλιακ]οῦ κόλπου,
 ἕτι δ’ ἐντὸς τῆς Φθιώτιδος, οὐ μὴν τῆς [ὑπὸ τῷ] Ἀχιλ-
 λεῖ]. ἡ μὲν οὖν Φυλάκη ἐγγὺς Θηβῶν ἐστι τῶν Φθιω-
 τίδων, αἵπερ εἰσὶ καὶ αὐταὶ ὑπὸ τῷ Πρωτειλάφ· καὶ 10
 "Ἄλος δὲ καὶ Λάρισα ἡ Κρεμαστὴ καὶ τὸ Δημήτριον ὑπ’
 ἐκείνῳ, πᾶσαι πρὸς ἓω τῆς Ὄθρους. τὸ δὲ Δημήτριον
 Δημητρὸς εἰρηνεί τέμενος καὶ ἐκάλεσε Πύρασον. ἣν δὲ
 πόλις εὐλίμενος ἡ Πύρασος ἐν δυσὶ σταδίοις, ἔχουσα
 Δημητρὸς ἄλσος καὶ ιερὸν ἄγιον, διέχουσα Θηβῶν 15
 σταδίους εἴκοσι· ὑπέροχεινται δὲ Πυράσον μὲν αἱ Θῆ-
 βαι. τῶν Θηβῶν δὲ ἐν τῇ μεσογαίᾳ τὸ Κρόνιον πεδίον
 πρὸς τῷ καταλήγοντι τῆς Ὄθρους, δι’ οὐδὲν Ἀμφρυσος
 φελ. τούτου δ’ ὑπέροχειται δὲ Ἰτωνός, ὅπου τὸ τῆς Ἰτω-
 νίας ιερόν, ἀφ’ οὗ καὶ τὸ ἐν τῇ Βοιωτίᾳ, καὶ δὲ Κονά- 20
 ριος ποταμός· εἰρηται δὲ περὶ τούτου καὶ τῆς Ἀρνης
 ἐν τοῖς Βοιωτιακοῖς. ταῦτα δὲ ἐστὶ τῆς Θετταλιώτι-
 δος μιᾶς τῶν τεττάρων μεριδῶν τῆς συμπάσης Θεττα-
 λίας, ἡς καὶ τὰ ὑπὸ Εὐρυπύλων καὶ δὲ Φύλλος, ὅπου
 Ἀπόλλωνος τοῦ Φυλλίου ιερόν, καὶ Ἰχναι, ὅπου ἡ Θέ- 25
 μις Ἰχναία τιμᾶται. καὶ Κίερος δὲ εἰς αὐτὴν συντελεῖ
 καὶ [τάλλα μέχρι] τῆς Ἀθαμανίας. κατὰ δὲ τὸν Ἀν-
 τρῶνα ἔρμα ὑφαλον ἐν τῷ πρὸς Εύβοιά ἐστὶ πόρῳ κα-
 λούμενον ὄνος Ἀντρῶνος. εἶτα Πτελεὸν καὶ δὲ Ἀλος·
 εἶτα τὸ τῆς Δημητρὸς ιερόν καὶ δὲ Πύρασος κατεσκαμ- 30
 μένος, ὑπὲρ αὐτὸν δὲ αἱ Θῆβαι· εἶτα ἄκρα Πύρρα καὶ

δύο νησία πλησίου, ὃν το μὲν Πύρρα τὸ δὲ Λευκαλίων
καλεῖται· ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Φθιῶτις πας τελευτᾶ.

Ἐξῆς δὲ τοὺς ὑπὸ τῷ Εὐμήλῳ καταλέγει, τὴν συν-^{C.436}
εχῆ παραλίαν, ἥπερ ἐστὶν ἡδη Μαγνησίας καὶ τῆς Πε-¹⁵
5 λασγιωτίδος γῆς. Φεραὶ μὲν οὖν εἰσὶ πέρας τῶν Πε-
λασγικῶν πεδίων πρὸς τὴν Μαγνησίαν, ἢ παρατείνει
μέχρι τοῦ Πηλίου σταδίους ἔκατὸν ἔξηκοντα. ἐπίνειον
δὲ τῶν Φερῶν Παγασαὶ διέχουν ἐνευήκοντα σταδίους
αὐτῶν, Ἰωλιοῦ δὲ εἴκοσιν. ἡ δ' Ἰωλιὸς κατέσκαπται
10 μὲν ἐκ παλαιοῦ, ἐντεῦθεν δ' ἔστειλε τὸν Ἰάσονα καὶ
τὴν Ἀργὸν Πελίας· ἀπὸ δὲ τῆς ναυπηγίας τῆς Ἀργοῦς
καὶ Παγασὰς λέγεσθαι μνημένουσι τὸν τόπον, οἱ δὲ πι-
θανώτερον ἥγοῦνται τοῦνομα τῷ τόπῳ τεθῆναι τοῦτο
ἀπὸ τῶν πηγῶν αἱ πολλαὶ τε καὶ δαψιλεῖς φέουσι· πλη-
15 σίον δὲ καὶ Ἀφέται ὡς ἂν ἀφετήριόν τι τῶν Ἀργοναυ-
τῶν. τῆς δὲ Δημητριάδος ἐπτὰ σταδίους ὑπέροχειται
τῆς θαλάττης Ἰωλιός. ἔκτισε δὲ Δημήτριος δ πολιορ-
κητὴς ἐπώνυμον ἐαυτοῦ τὴν Δημητριάδα μεταξὺ Νη-
λείας καὶ Παγασῶν ἐπὶ θαλάττη τὰς πλησίου πολίχνας
20 εἰς αὐτὴν συνοικίσας, Νήλειάν τε καὶ Παγασὰς καὶ
Ὀρμένιον, ἔτι δὲ Ριζοῦντα Σηπιάδα Ολιξῶνα Βοΐβην
Ἰωλιόν, αἱ δὴ υῦν εἰσὶ καῦμαι τῆς Δημητριάδος. καὶ
δὴ καὶ ναύσταθμον ἦν τοῦτο καὶ βασίλειον μέχρι πολ-
λοῦ τοῖς βασιλεῦσι τῶν Μακεδόνων, ἐπεκράτει δὲ καὶ
25 τῶν Τεμπῶν καὶ τῶν ὁρῶν ἀμφοῖν, ὥσπερ εἰρηται,
τοῦ τε Πηλίου καὶ τῆς Ὀσσης· υῦν δὲ συνέσταλται
μέν, τῶν δ' ἐν τῇ Μαγνησίᾳ πασῶν ὅμως διαφέρει. ἡ
δὲ Βοΐβης λίμνη πλησιάζει μὲν ταῖς Φεραῖς, συνάπτει
δὲ καὶ τοῖς ἀπολήγουσι τοῦ Πηλίου πέρασι καὶ τῆς Μα-
30 γνησίας· Βοΐβη δὲ χωρίου ἐπὶ τῇ λίμνῃ κείμενον. κα-
θάπερ δὲ τὴν Ἰωλιὸν αὐξηθεῖσαν ἐπὶ πλέον κατέλυσαι
αἱ στάσεις καὶ αἱ τυραννίδες, οὗτως καὶ τὰς Φερὰς

συνέστειλαν ἔξαρθείσας ποτὲ καὶ συγκαταλυθείσας τοῖς τυράννοις. πλησίον δὲ τῆς Δημητριάδος ὁ Ἀναυρος φέλ. καλεῖται δὲ καὶ συνεχὴς αἰγιαλὸς Ἰωλιός· ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν *Πυλαίκην πανήγυριν συνετέλουν. ὁ δὲ Ἀρτεμίδωρος ἀπωτέρῳ τῆς Δημητριάδος τίθησι 5 τὸν Πλασιτικὸν κόλπον εἰς τοὺς ὑπὸ Φιλοκτήτῃ τόπους· ἐν δὲ τῷ οὐλπῷ φησὶν εἶναι τὴν Κικύνηθον νῆσον καὶ πολίχνην ὅμωνυμον.

- 16 Ἐξῆς δ' αἱ ὑπὸ Φιλοκτήτῃ πόλεις καταλέγονται.
 ή μὲν οὖν Μηθώνη ἐτέρᾳ ἐστὶ τῆς Θρακίας Μεθώνης, 10
 ἥν κατέσκαψε Φίλιππος· ἐμινήσθησεν δὲ καὶ πρότερον τῆς τῶν ὄνομάτων τούτων καὶ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ τροπῆς· τάλλα δὲ [δι]ηρίθμηται, ἡ τε Θαυμακία καὶ [δὸ] Ολιξ]ῶν καὶ ἡ Μελίβοια, [ᾶ] τῆς ἔξῆς παραλίας ἐστίν. πρόκεινται δὲ τῶν Μαγνήτων νῆσοι συχναὶ μέν, 15
 αἱ δὲ ἐν ὄνόματι Σκίαθός τε καὶ Πεπάρηθος καὶ Ἰκὸς Ἀλόννησός τε καὶ Σκῦρος, ὁμονύμους ἔχουσαι πόλεις. μάλιστα δὲ ἐστὶν ἐν ὄνόματι Σκῦρος διὰ τὴν Λυκομήδους πρὸς Ἀχιλλέα οἰκειότητα καὶ τὴν Νεοπτολέμου 437τοῦ Ἀχιλλέως ἐνταῦθα γένεσίν τε καὶ ἐκτροφήν. ὕστε- 20
 ρον δὲ Φίλιππος αὐξήθεις, δρῶν Ἀδηναλίους ἐπικρατοῦντας τῆς θαλάττης καὶ τῶν νήσων ἀρχοντας καὶ τούτων καὶ τῶν ἄλλων, ἐποίησε τὰς πλησίους ἑαυτῷ μάλιστα ἐνδόξους. πολεμῶν γὰρ περὶ τῆς ἡγεμονίας ἐπεχείρει πρώτοις ἀεὶ τοῖς ἐγγύθεν, καὶ καθάπερ αὐτὸς τῆς τῆς Μαγνήτιδος τὰ πολλὰ μέρη Μακεδονίαν ἐποίησε καὶ τῆς Θράκης καὶ τῆς ἄλλης τῆς κύκλῳ γῆς, οὕτω καὶ τὰς πρὸ τῆς Μαγνησίας νήσους ἀφηρεῖτο, καὶ τὰς ὑπὸ οὐδενὸς γνωριζομένας πρότερον περιμαχήτους καὶ γνωρίμους ἐποίει. τὴν δὲ οὖν Σκῦρον καὶ μάλιστα μὲν 30
 αἱ ἀρχαιολογίαι συνιστῶσιν, ἀλλὰ καὶ τὰ τοιαῦτα θρυλεῖσθαι ποιεῖ, οἷον αἱ τῶν αἰγῶν ἀρεταὶ τῶν Σκυρίων,

καὶ τὰ μέταλλα τῆς ποικίλης λίθου τῆς Σκυρίας, κα-
θάπερ τῆς Καρυστίας καὶ τῆς * Δευκαλλίας καὶ τῆς
Συνναδικῆς * Ἰεραπολιτικῆς. μονολίθους γὰρ κίονας
καὶ πλάκας μεγάλας ὁρᾶν ἔστιν ἐν τῇ Ρώμῃ τῆς ποικί-
λης λιθείας, ἀφ' ἧς ἡ πόλις κοσμεῖται δημοσίᾳ τε καὶ
ἰδίᾳ, πεποιηκέ τε τὰ λευκόλιθα οὐ πολλοῦ ἄξια.

Ο δ' οὗν ποιητὴς μέχρι δεῦρο προελθὼν τῆς Μα- 17
γνητικῆς παραλίας ἐπάνεισιν ἐπὶ τὴν ἄνω Θεττάλιαν·
καὶ γὰρ τὰ παρατείνοντα τῇ Φ[θιώτιδι], ἀρξάμενος
10 ἀπὸ τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου, [μέχρι τῆς] κάτω
Θετταλίας διεξεισιν „οἱ δὲ εἰχον Τρίκκην καὶ Ἰθώμην
„κλωμακόεσσαν.“ ταῦτα τὰ χωρία ἔστι μὲν τῆς Ἰστιαι-
ώτιδος, ἐκαλεῖτο δ', ὡς φασι, πρότερον Δωρίς· κατα-
σχόντων δὲ τῶν Περραιβῶν αὐτήν, οἱ καὶ τῆς Εύβοίας
15 τὴν Ἰστιαιῶτιν κατεστρέψαντο καὶ τοὺς ἀνθρώπους
εἰς τὴν ἥπειρον ἀνέσπασαν, διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐπο-
ιησάντων Ἰστιαιῶν τὴν χώραν ἀπ' ἐκείνων οὕτως ἐκά-
λεσαν. καλοῦσι δὲ καὶ [αὐτὴν καὶ] τὴν Δολοπίαν τὴν
ἄνω Θετταλίαν, ἐπ' εὐθείας οὖσα[ν τῇ ἄνω] Μακεδο-
20 νίᾳ, καθάπερ καὶ τὴν κάτω τῇ κάτω. ἔστι δὲ ἡ μὲν
Τρίκκη, ὅπου τὸ Ιερὸν τοῦ Ἀσκληπιοῦ τὸ ἀρχαιότατον
καὶ ἐπιφανέστατον, ὅμορος τοῖς τε Δόλοφιν καὶ τοῖς
περὶ τὴν Πίνδου τόποις. τὴν δὲ Ἰθώμην δμωνύμως τῇ
Μεσσηνιακῇ λεγομένην οὕ φασι δεῖν οὕτως ἐκφέρειν,
25 ἀλλὰ τὴν πρώτην συλλαβὴν ἀφαιρεῖν· οὕτω γὰρ κα-
λεῖσθαι πρότερον, νῦν δὲ * Θαμαὶ μετωνομάσθαι, χω-
ρίον ἐρυμανὸν καὶ τῷ ὄντι κλωμακόεν, ἰδρυμένον με-
ταξὺ τεττάρων φρουρίων ὥσπερ ἐν τετραπλεύρῳ κει-
μένων, Τρίκκης τε καὶ Μητροπόλεως καὶ Πελινναίου
30 καὶ Γόμφων. τῆς δὲ δὴ Μητροπόλεων ἔστι χώρας ἡ
Ἰθώμη. ἡ δὲ Μητρόπολις πρότερον μὲν ἐκ τριῶν συ-
φίκιστο πολιχνίων ἀσήμων, ὕστερον δὲ καὶ πλείους

προσελήφθησαν, ὡς ἦν καὶ ἡ Ἰθάμη. Καλλίμαχος μὲν C.438Ούν φησιν ἐν τοῖς λάμβοις τὰς Ἀφροδίτας (ἡ θεὸς γὰρ οὐ μία) τὴν Καστνιῆτιν ὑπερβάλλεσθαι πάσας τῷ φρονεῖν, ὅτι μόνη παραδέχεται τὴν τῶν ὑδῶν θυσίαν. καὶ μὴν πολυίστωρ, εἰ τις ἄλλος, καὶ πάντα τὸν βίον, ὡς 5 αὐτὸς εἰρηκεν, ὁ ταῦτα * μυθεῖσθαι βουλόμενος. οἱ δ' ὑστεροὶ οἵλεγξαν οὐ μίαν Ἀφροδίτην μόνον ἀλλὰ καὶ πλείους ἀποδεδεγμένας τὸ ἔδος τοῦτο, ὡς εἶναι καὶ τὴν ἐν τῇ Μητροπόλει· ταύτη δὲ μίαν τῶν συνοικισθεισῶν εἰς αὐτὴν πόλεων παραδοῦναι τὸ ἔδος Ὁνδύ- 10 ριον. ἔστι δὲ καὶ Φαρκαδὼν ἐν τῇ Ἰστιαιώτιδι, καὶ φει δι' αὐτῶν ὁ Πηνειός καὶ ὁ Κουράλιος· ὡς ὁ Κουράλιος ἔνεις παρὰ τὸ τῆς Ἰτωνίας Ἀθηνᾶς λερὸν εἰς τὸν Πηνειὸν ἔξεισιν, αὐτὸς δ' ὁ Πηνειός ἄρχεται μὲν ἐκ Πενδον, παθάπερ εἰρηται, ἐν ἀριστερῷ δ' ἀφεὶς Τοίκην 15 τε καὶ Πελινναῖον καὶ Φαρκαδόνα φέρεται παρά τε "Ατρανα καὶ Λάρισαν, καὶ τοὺς ἐν τῇ Θετταλιώτιδι δεξάμενος ποταμὸὺς πρόσεισι διὰ τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς ἐκβολάς. τὴν δ' Οἰχαλίαν πόλιν Εὐρύτου λεγομένην ἐν τε τοῖς τόποις τούτοις ἰστοροῦσι καὶ ἐν Εὐβοίᾳ καὶ 20 ἐν Ἀρκαδίᾳ, καὶ μετονομάζουσιν [ἄλλοι] ἄλλως, ὁ καὶ ἐν τοῖς Πελοποννησιακοῖς εἰρηται. περὶ δὲ τούτων ξητοῦσι καὶ μάλιστα τίς ἦν ἡ ὑπὸ Ἡρακλέους ἀλοῦσα, καὶ περὶ τίνος συνέγραψεν ὁ ποιήσας τὴν Οἰχαλίας ἄλωσιν. ταῦτα μὲν δὴ τὰ χωρία τοῖς Ἀσκληπιάδαις ὑπέ- 25 ταξεῖν.

18 Ἐξῆς δὲ λέγει τὴν ὑπὸ Εὐρυπύλῳ „οἱ δὲ ἔχον Ὁρμές, νιον οἵ τε κρήνην Τπέρειαν, οἵ τ' ἔχον Ἀστέριον Τιτάνον τε λευκὰ κάρδηνα.“ τὸ μὲν οὖν Ὁρμένιον νῦν Ὁρμήνιον καλεῖται, ἔστι δὲ ὑπὸ τῷ Πηλίῳ κάσμη κατὰ τὸν 30 Παγασιτικὸν κόλπον τῶν συνωκισμένων εἰς τὴν Δημητριάδα πόλεων, ὡς εἰρηται. ἀνάγκη δὲ καὶ τὴν Βοιβηΐδα

λίμνην εἶναι πλησίον, ἐπειδὴ καὶ ἡ Βοΐβη τῶν περιοι-
αίδων ἦν τῆς Δημητριάδος καὶ αὐτὸ τὸ Ὀρμένιον. τὸ
μὲν οὖν Ὀρμένιον ἀπέχει τῆς Δημητριάδος πεξῆ στα-
δίους ἐπτὰ καὶ εἴκοσιν, ὁ δὲ τῆς Ἰωλκοῦ τόπος ἐν ὅδῳ
5 κείμενος τῆς μὲν Δημητριάδος ἐπτὰ σταδίους διέστηκε,
τοῦ δ' Ὀρμενίου τοὺς λοιποὺς σταδίους εἴκοσι. φησι
δ' ὁ Σκήψιος ἐκ τοῦ Ὀρμενίου τὸν Φοίνικα εἶναι, καὶ
φεύγειν αὐτὸν ἐνθένδε παρὰ τοῦ „πατρὸς Ἀμύντορος
,,Ὀρμενίδαο“ εἰς τὴν Φθίλαν „ἐς Πηλῆα ἄνακτα.“ ἐκτί-
10 σθαι γὰρ ὑπὸ Ὀρμένιου τὸ χωρίον τοῦτο τοῦ * Κερφίου
τοῦ Αἰόλου· παῖδας δὲ τοῦ Ὀρμένιου γενέσθαι τόν τε
Ἀμύντορα καὶ Εὐαίμονα, ὃν τοῦ μὲν εἶναι Φοίνικα τοῦ 439
δ' Εὐρύπυλον· φυλαχθῆναι δὲ τῷ Εὐρυπύλῳ τὴν δια-
δοχὴν κοινήν, ἀτε ἀν ἀπελθόντος τοῦ Φοίνικος ἐκ τῆς
15 οἰκείας· καὶ δὴ καὶ γράφει οὕτως „οἶον ὅτε πρῶτον λί-
„πον Ὀρμένιον πολύμηλον,“ ἀντὶ τοῦ „λίπον Ἑλλάδα
,,καλλιγύναικα.“ Κράτης δὲ Φωκέα ποιεῖ τὸν Φοίνικα,
τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ κράνους τοῦ Μέγητος ὃ ἔχοη-
σατο ὁ Ὁδυσσεὺς κατὰ τὴν υπεργεόσιαν, περὶ οὐ φη-
20 σιν δὲ ποιητὴς ὅτι „ἐξ Ἐλεῶνος Ἀμύντορος Ὀρμενίδαο
,,ἔξελετ' Αὔτόλυνος, πυκινὸν δόμον ἀντιτορήσας.“ τόν
τε γὰρ Ἐλεῶνα ἐν τῷ Παρνασσῷ πολέμηνον εἶναι, τόν
τε Ὀρμενίδην Ἀμύντορα οὐκ ἄλλον τινὰ λέγεσθαι ἢ
τὸν τοῦ Φοίνικος πατέρα, καὶ τὸν Αὔτόλυνον οἰκοῦντα
25 ἐν τῷ Παρνασσῷ τοιχωρυχεῖν τὰ τῶν γειτόνων, ὅπερ
κοινόν ἔστι τοιχωρύχου παντός, οὐ τὰ τῶν πόρρωθεν.
ὁ δὲ Σκήψιος φησι μήτε Ἐλεῶνα μηδένα τόπον τοῦ
Παρνασσοῦ δείκνυσθαι, ἀλλὰ Νεῶνα, καὶ ταύτην οἰ-
κισθεῖσαν μετὰ τὰ Τρωιά, μήτ' ἐκ γειτόνων τὰς τοι-
30 χωρυχίας γίνεσθαι μόνον. καὶ ἄλλα δ' ἔστιν ἀ λέγοι
τις ἄν, ἀλλ' οὖν ὀκνῶ διατρίβειν ἐπὶ πλέον. ἄλλοι δὲ
γράφουσιν ἐξ Ἐλεῶνος· Ταναγρικὴ δέ ἔστιν αὕτη· καὶ

μᾶλλον ἐλέγχοι ἀτόπως ἀν λεγόμενον τό „φεῦγον ἔπειτ
 „ἀπάνευθε δι' Ἑλλάδος, Φθίην δ' ἔξικόμην.“ ἡ δ'
 ‘Τπέραια κρήνη ἐν μέσῃ ἐστὶ τῇ Φεραίων πόλει Εύμηλου
 ωῆση· ἀτοπον τοίνυν [δοῦναι Εύρυπν]λφ. Τίτανος
 δ' ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ἀνομάσθη· λευκόγεων γάρ 5
 ἐστι τὸ χωρίον “Ἀρνης πλησίον καὶ [τῶν]Αφε]τῶν· καὶ
 τὸ Ἀστέριον δ' οὐκ ἄπωθεν τούτων ἐστί.

19 Συνεχεῖς δὲ τῇ μερίδι ταύτῃ λέγονται οἱ ὑπὸ τῷ
 Πολυποίη „οἱ δ' Ἀργισσαν ἔχον καὶ Γυρτώνην ἐν-
 „μοντο, “Ορθην Ἡλώνην τε πόλιν τ' Ὀλοοσσόνα λευ- 10
 „κήν.“ ταύτην τὴν χώραν πρότερον μὲν ὕκουν Περ-
 φραιβοί, τὸ πρὸς θαλάττη μέρος νεμόμενοι καὶ τῷ Πη-
 νειῷ μέχοι τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ καὶ Γυρτώνος πόλεως
 Περφραιβίδος. εἰτα ταπεινώσαντες ἐκείνους Λαπίθαι
 κατέσχουν αὐτοὺς τὰ χωρία, Ἰξίων καὶ διὰ τοὺς Πειρίθους, 15
 δις καὶ τὸ Πήλιον κατετήσατο βιασάμενος τοὺς κατα-
 σχόντας Κενταύρους, ἄγριόν τι φῦλον. τούτους μὲν
 οὖν „ἐν Πηλίου ώσε καὶ Αἴθικεσσι πέλασσε,“ τοῖς δὲ
 C.440 Λαπίθαις τὰ πεδία παρέδωκε· τινὰ δ' αὐτῶν καὶ οἱ
 Περφραιβοὶ κατεῖχον, τὰ πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ· ἐστι δὲ ποὺν 20
 καὶ δύο ἀναμίξ τοῖς Λαπίθαις ὕκουν. ἡ μὲν οὖν Ἀρ-
 γισσα, ἡ νῦν Ἀργονφα, ἐπὶ τῷ Πηνειῷ κεῖται· ὑπέροχει-
 ται δὲ αὐτῆς Ἀτραξ ἐν τετταράκοντα σταδίοις, τῷ πο-
 ταμῷ πλησιάζουσα καὶ αὕτη· τὴν δὲ ἀνὰ μέσον ποτα-
 μίαν είχον Περφραιβοί. “Ορθην δὲ τινὲς τὴν ἀκρόπολιν 25
 τῶν Φαλαννιών εἰρήκασιν· ἡ δὲ Φάλαννα Περφραι-
 βικὴ πόλις πρὸς τῷ Πηνειῷ πλησίον τῶν Τεμπῶν. οἱ
 μὲν οὖν Περφραιβοὶ καταδυναστευθέντες ὑπὸ τῶν Λα-
 πίθων εἰς τὴν ὁρεινὴν ἀπανέστησαν οἱ πλείους τὴν
 περὶ Πίνδου καὶ Ἀθαμάνας καὶ Δόλοπας, τὴν δὲ χώραν 30

14. post ἐκείνους: εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίᾳν

καὶ τοὺς ὑπολειφθέντας τῶν Περραιβῶν κατέσχον Λα-
ρισαῖοι, πλησίου μὲν οἰκοῦντες τοῦ Πηγειοῦ, γειτνιῶν-
τες δ' ἐκείνοις, νεμόμενοι δὲ τὰ εὐδαιμονέστατα μέρη
τῶν πεδίων, πλὴν εἴ τι σφόδρα κοῖλον πρὸς τῇ λίμνῃ
ἢ τῇ Νεσσωνίδι, εἰς ἣν ὑπερκλύζων ὁ ποταμὸς ἀφηρεῖτό
τι τῆς ἀφοσίμου τοὺς Λαρισαῖους· ἀλλ' ὕστερον παρα-
χώμασιν ἐπηνάρθωσαν Λαρισαῖοι. οὗτοι δ' οὖν κα-
τεῖχον τέως τὴν Περραιβίαν καὶ φόρους ἐπράττοντο,
ἔνως Φιλιππος κατέστη κύριος τῶν τόπων. Λάρισα δ'
10 ἔστι καὶ ἐν τῇ "Οσση χωρίον· καὶ ἡ Κρεμαστή, ὑπό τι-
νων δὲ Πελασγία λεγομένη· καὶ ἐν τῇ Κρήτῃ πόλις ἡ
νῦν εἰς Ιεράπυτναν συνοικισθεῖσα, ἀφ' ἣς καὶ τὸ ὑπο-
κείμενον πεδίον νῦν Λαρίσιον καλεῖται· καὶ ἐν Πελο-
ποννήσῳ ἡ τε τῶν Ἀργείων ἄκρα καὶ ὁ τὴν Ἡλείαν ἀπὸ
15 Δύμης διορέζων Λάρισος ποταμός. Θεόπομπος δὲ καὶ
πόλιν λέγει ἐν τῇ αὐτῇ μεθορίᾳ κειμένην Λάρισαν· καὶ
ἐν τῇ Ἀσίᾳ ἡ τε Φρικιωνὶς ἡ περὶ τὴν Κύμην καὶ ἡ κατὰ
Ἀμαξιτὸν τῆς Τροφάδος· καὶ ἡ Ἐφεσία Λάρισά ἔστι καὶ
ἐν Συρίᾳ· τῆς δὲ Μιτυλήνης ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων
20 εἰσὶ Λαρισαῖαι πέτραι κατὰ τὴν ἐπὶ Μηθύμνης ὁδὸν·
καὶ ἐν τῇ Ἀττικῇ δ' ἔστι Λάρισα· καὶ τῶν Τραλλεων
διέχουσα κάμη τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς πόλεως
ἐπὶ Καῦστρου πεδίον διὰ τῆς Μεσωγίδος ἵντων κατὰ
τὸ τῆς Ἰσοδρόμης Μητρὸς ιερόν, δύμοιαν τὴν θέσιν καὶ
25 τὴν ἀρετὴν ἔχουσα τῇ Κρεμαστῇ Λαρίσῃ· καὶ γὰρ εὐ-
υδρος καὶ ἀμπελόφυτος· ἵσως δὲ καὶ ὁ Λαρίσιος Ζεὺς
ἐκεῖθεν ἐπινόμασται· καὶ ἐν τοῖς ἀριστεροῖς δὲ τοῦ
Πόντου κάμη τις καλεῖται Λάρισα μεταξὺ Ναυλό[χου]
καὶ Ὄδησσοῦ] πλησίον τῶν ἄκρων τοῦ Άλμου.

30 Καὶ Ὁλοσσῶν δὲ λευκὴ προσαγορευθεῖσα ἀπὸ
τοῦ λευκάργιλος εἶναι, καὶ Ἡλώνη Περραιβικαὶ πόλεις,
καὶ Γόνυος. ἡ δ' Ἡλώνη μετέβαλε τοῦνομα Λειμώνη

μετονομασθεῖσα· κατέσκαπται δὲ νῦν· ἄμφω δ' ὑπὸ
0.441τῷ Ὀλύμπῳ κεῖνται οὐ πολὺ ἀπωθεν τοῦ Εὐρώπου
ποταμοῦ, ὃν ὁ ποιητὴς Τιταρήσιον καλεῖ.

20 Λέγει δὲ καὶ περὶ τούτου καὶ περὶ τῶν Περραιβῶν
ἐν τοῖς ἔξης ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ „Γουνεὺς δ' ἐκ Κύφου 5
,,ῆγε δύω καὶ εἴκοσι υῆας. τῷ δ' Ἐνιῆνες ἐποντο με-
,,νεπτόλεμοί τε Περραιβοί, οἱ περὶ Δωδώνην δυσχείμε-
,,ρον οἰκί' ἔθεντο, [οὐ τ'] ἄμφ' ἵμερτὸν Τιταρήσιον
,,ἔργον ἐνέμοντο.“ λέγει μὲν οὖν τούτους τοὺς τόπους
τῶν Περραιβῶν, ἀπὸ μέρους τῆς Ἔστιαιώτιδος ἐπειλη- 10
φότας· ἡσαν δὲ καὶ ὑπὸ τῷ Πολυποίητῃ ἐκ μέρους Περ-
ραιβικαί, τοῖς μέντοι Δαπίδαις προσένεψε διὰ τὸ ἀνα-
μίξ οἰκεῖν καὶ τὰ μὲν πεδία κατέχειν τοὺς Δαπίδας καὶ
τὸ ἐνταῦθα Περραιβικὸν ὑπὸ τούτους τετάχθαι ὡς ἐπὶ
πλέον, τὰ δ' δρεινότερα χωρία πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ καὶ 15
τοῖς Τέμπεσι τοὺς Περραιβούς, καθάπερ τὸν Κύφου
καὶ τὴν Δωδώνην καὶ τὰ περὶ τὸν Τιταρήσιον, δις ἔξ
ὅρους Τιταρίου συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ φέων εἰς τὰ
πλησίον τῶν Τεμπῶν χωρία τῆς Περραιβίας αὐτοῦ που
τὰς συμβολὰς ποιεῖται πρὸς τὸν Πηνειόν. τὸ μὲν οὖν 20
τοῦ Πηνειοῦ καθαρόν ἐστιν ὕδωρ, τὸ δὲ τοῦ Τιταρη-
σίου λιπαρὸν ἐκ τινος ὕλης ὥστ' οὐ συμμίσγεται,, ἀλλά
,,τέ μιν καθύπερθεν ἐπιτρέχει ἡύτ' ἔλαιον.“ διὰ δὲ τὸ
ἀναμίξ οἰκεῖν Σιμωνίδης Περραιβούς καὶ Δαπίδας κα-
λεῖ τοὺς Πελασγιώτας ἀπαντας, τοὺς τὰ ἔρηα κατέχον- 25
τας τὰ περὶ Γυρτῶνα καὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Πηνειοῦ καὶ
Οσσαν καὶ Πήλιον καὶ τὰ περὶ Δημητριάθα καὶ τὰ ἐν
τῷ πεδίῳ, Λάρισαν Κραννῶνα Σκοτοῦσσαν Μόψιον
Ατρακαί, καὶ τὰ περὶ τὴν Νεσσωνίδα λίμνην καὶ [τὴν]
Βοιβηΐδα· ὃν ὁ ποιητὴς ὀλίγων μέμνηται διὰ τὸ μὴ οὐ- 30
κισθῆναι πω τάλλα τῇ φαύλως οἰκισθῆναι διὰ τοὺς κα-
τακλυσμοὺς ἄλλοτ' ἄλλους γινομένους· ἐπεὶ οὐδὲ τῆς

Νεσσωνίδος μέμνηται λίμνης, ἀλλὰ τῆς Βοιβηίδος μόνον πολὺ ἐλάττονος οὕσης, ταύτης δὲ μόνης μενούσης, ἐκείνης δὲ ὡς εἰκὸς τοτὲ μὲν πληρουμένης ἀπάκτως, τοτὲ δ' ἐκλειπομένης. τῆς δὲ Σκοτούσσης ἐμνήσθημεν καὶ ἐν τοῖς περὶ Αιδαίνης λόγοις καὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Θετταλίᾳ, διότι περὶ τοῦτον ὑπῆρξε τὸν τόπον. ἔστι δ' ἐν τῇ Σκοτούσσῃ χωρίον τι Κυνὸς οεφαλαὶ καλούμενον, περὶ δὲ Ρωμαῖοι μετ' Αἰτωλῶν καὶ Τίτος Κοῖντιος ἐνίκων μάχη μεγάλη Φίλιππον τὸν Δημητρίου, Μακεδόνων βασιλέα.

Πέπουθε δέ τι τοιοῦτο καὶ ἡ Μάγνητις· κατη- 21
ριθμημένων γὰρ ἥδη πολλῶν αὐτῆς τόπων οὔδενας τούτων ὀνόματε Μάγνητας Ὁμηρος, ἀλλ' ἐκείνους^{0.442} μόνους οὓς τυφλῶς καὶ οὐ γνωρίμως διασαφεῖ,,οἱ περὶ 15 „Πηνειὸν καὶ Πήλιον εἰνοσίφυλλον ναίεσκον.“ ἀλλὰ μὴν περὶ τὸν Πηνειὸν καὶ τὸ Πήλιον οἶκοῦσι καὶ οἱ τὴν Γυρτῶνα ἔχοντες, οὓς ἥδη κατέλεξε, καὶ τὸ Ὀρμένιον καὶ ἄλλοι πλείους, καὶ ἔτι ἀπωτέρω τοῦ Πηλίου ὅμως Μάγνητες ἥσαν ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν ὑπ' Εὔμήλῳ,
20 κατά γε τοὺς ὕστερον ἀνθρώπους. ἐοίκασιν οὖν διὰ τὰς συνεχεῖς μεταστάσεις καὶ ἔξαλλάξεις τῶν πολιτειῶν καὶ ἐπιμέξεις συγχεῖν καὶ τὰ ὄνόματα καὶ τὰ ἔθνη, ὥστε τοῖς νῦν ἔσθ' ὅτε ἀπορίαν παρέχειν, καθάπερ τοῦτο τὸ πρῶτον μὲν ἐπὶ Κραννωνίους καὶ τῆς Γυρτῶνος γεγέ-
25 νηται. τοὺς μὲν γὰρ Γυρτωνίους Φλεγύνας πρότερον ἐκάλουν ἀπὸ Φλεγύνου τοῦ Ἰξίονος ἀδελφοῦ, τοὺς δὲ Κραννωνίους Ἐφύρους, ὥστε διαπορεῖν, ὅταν φῆ ὁ ποιητής,,τῷ μὲν ἄρ' ἐκ Θρήνης Ἐφύρους μέτα θῶ-,
„οήσσοντο ἡὲ μετὰ Φλεγύνας μεγαλήτορας,“ τίνας ποτὲ 30 βούλεται λέγειν. ἔπειτα τοῦτο καὶ ἐπὶ τῶν Περοραιβῶν²² καὶ τῶν Αἰνιάνων συνέβη. Ὁμηρος μὲν γὰρ συνέζευξεν αὐτοὺς ὡς πλησίουν ἀλλήλων οἴκοῦντας· καὶ δὴ

καὶ λέγεται ὑπὸ τῶν ὕστερον ἐπὶ χρόνου συχνὸν ἡ οἰκησις τῶν Αἰνιάνων ἐν τῷ Δωτίῳ γενέσθαι πεδίῳ, τοῦτο δ' ἐστὶ πλησίον τῆς ἀρτί λεχθείσης Περραιβίας καὶ τῆς "Οσσης καὶ ἔτι τῆς Βοιβηίδος λίμνης, ἐν μέσῃ μὲν πικρὸς τῇ Θετταλίᾳ λόφοις δὲ ἰδίοις περικλείσμενον, 5 περὶ οὖς Ἡσιόδος οὔτες εἴρηκεν „ἡ οἶη Διδύμους λε- „ροὺς ναίουσα κολωνοὺς Δωτίῳ ἐν πεδίῳ, πολυνβό- „τρονος ἄντ' Ἀμύροιο, νίψατο Βοιβιάδος λίμνης πόδα „παρθένος ἀδμής.“ οἱ μὲν οὖν Αἰνιάνες οἱ πλείους εἰς τὴν Οἰτην ἐξηλάθησαν ὑπὸ τῶν Λαπιθῶν, κἀνταῦθα 10 δὲ ἐδυνάστευσαν ἀφελόμενοι τῶν τε Δωριέων τινὰ μέρη καὶ τῶν Μαλιέων μέχρι Ἡρακλείας καὶ Ἐγίνου, τινὲς δ' αὐτῶν ἔμειναν περὶ Κύφον, Περραιβικὸν δρός διμάνυμον κατοικίαν ἔχον. οἱ δὲ Περραιβοὶ τινὲς μὲν συσταλέντες περὶ τὰ ἐσπέρια τοῦ Ὀλύμπου μέρη κατέ- 15 μενον αὐτόθι πρόσχωροι ὄντες Μακεδόνι, τὸ δὲ πολὺ μέρος εἰς τὰ περὶ τὴν Ἀθαμανίαν δρη καὶ τὴν Πλευρὰν ἐξέπεσε· νυνὶ δὲ μικρὸν ἡ οὐδὲν αὐτῶν ἔχνος σώζεται. τοὺς δ' οὖν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεχθέντας Μάγνητας ὕστάτους ἐν τῷ Θετταλικῷ καταλόγῳ νομιστέον τοὺς 20 0.443 ἐντὸς τῶν Τεμπῶν ἀπὸ τοῦ Πηγειοῦ καὶ τῆς "Οσσης ἔως Πηλίου, Μακεδόνων τοῖς Πιεριώταις ὁμόροντες τοῖς ἔχοντι τὴν τοῦ Πηγειοῦ περαιάν μέχρι τῆς θαλάττης. τὸ μὲν οὖν Ὁμόλιον ἡ τὴν Ὁμόλην (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) ἀποδοτέον αὐτοῖς· εἴρηται δ' ἐν τοῖς Μακεδο- 25 νικοῖς ὅτι ἐστὶ πρὸς τῇ "Οσση κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς τοῦ Πηγειοῦ διὰ τῶν Τεμπῶν διεκβολῆς. εἰ δὲ καὶ μέχρι τῆς παραλίας προπτέον τῆς ἐγγυτάτω τοῦ Ὁμολίου, λόγον ἔχει ὥστε [καὶ] τὸν Ριζούντα προσνέμειν καὶ Ἐρυμανᾶς ἐν τῇ ὑπὸ Φιλοκτήτη παραλίᾳ κειμένας καὶ τῇ 30 ὑπὸ Εὔμηλῳ. τοῦτο μὲν οὖν ἐν ἀσαφεῖ κείσθω. καὶ ἡ τάξις δὲ τῶν ἐφεξῆς τόπων μέχρι Πηγειοῦ οὐ διαφα-

νως λέγεται, ἀδόξων δ' ὅντων τῶν τόπων οὐδὲν ἡμῖν περὶ πολλοῦ θετέον. ἡ μέντοι Σηπιὰς ἀκτὴ καὶ τετραγώ-
δηται μετὰ ταῦτα καὶ ἔξυμνηται διὰ τὸν ἐνταῦθα ἀφα-
νισμὸν τοῦ Περσικοῦ στόλου· ἔστι δ' αὕτη μὲν ἀκτὴ
5 πετρώδης, μεταξὺ δ' αὐτῆς καὶ Κασθαναίας ωάμης
ὑπὸ τῷ Πηλίῳ κειμένης αἰγιαλός ἔστιν, ἐν φύῳ δὲ θέρεον
στόλος ναυλοχῶν ἀπηλιώτου πολλοῦ πνεύσαντος ὃ
μὲν εὐθὺς αὐτοῦ πρὸς τὸ ξηρὸν ἔξωκειλε καὶ διελύθη
παραχρῆμα, δὲ δ' εἰς Ἰπνοὺς τόπουν τραχὺν τῶν περὶ τὸ
10 Πήλιον παρενεχθεὶς ὃ δ' εἰς Μελίβοιαν ὃ δ' εἰς τὴν
Κασθαναίαν διεφθάρη. τραχὺς δ' ἔστιν ὃ παράπλους
πᾶς ὁ τοῦ Πηλίου ὅσον σταδίων ὀγδοήκοντα· τοσοῦ-
τος δ' ἔστι καὶ τοιοῦτος καὶ ὁ τῆς Ὀσσης. μεταξὺ δὲ
κόλπος σταδίων πλειόνων ἡ διακοσίων, ἐν φύῃ δὲ Μελί-
15 βοια. ὁ δὲ πᾶς ἀπὸ Δημητριάδος ἐγκολπίζοντι ἐπὶ τὸν
Πηνειὸν μείζων τῶν χιλίων, [ἀπὸ δὲ Σπε]ρχειοῦ καὶ
ἄλλων ὀκτακοσίων, ἀπὸ δὲ Εύρεπον διεγιλίων τριακο-
σίων πεντήκοντα. Ἱερώνυμος δὲ τῆς πεδιάδος Θεττα-
λίας καὶ Μαγνήτιδος τὸν κύκλον τρισχιλίων ἀποφαί-
20 νεται σταδίων, φάκησθαι δ' ὑπὸ Πελασγῶν, ἔξελαθῆ-
ναι δὲ τούτους εἰς τὴν Ἰταλίαν ὑπὸ Λαπισθῶν· εἶναι δὲ
τὸ νῦν καλούμενον Πελασγικὸν πεδίον, ἐν [φύῃ] Λάρισα
καὶ Γυρτώνη καὶ Φεραὶ καὶ Μόψιον καὶ Βοιβηλὶς καὶ
Ὀσσα καὶ Όμόλη καὶ Πήλιον καὶ Μαγνῆτις· Μόψιον
25 δ' ὧνόμασται οὐκ ἀπὸ Μόψου τοῦ Μαντοῦς τῆς Τει-
ρεσίου, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ Λαπισθοῦ τοῦ συμπλεύσαντος
τοῖς Ἀργοναύταις· ἄλλος δ' ἔστι Μόψοκος, ἀφ' οὗ ἡ
'Αττικὴ Μοψοπία.

Tὰ καθ' ἔκαστα μὲν ταῦτα περὶ Θετταλίας, καθ' 23
30 δὲν δ' ὅτι Πυρραία πρότερον ἐκαλεῖτο ἀπὸ Πύρρας
τῆς Δευκαλίωνος γυναικός, Αἴμονία δὲ ἀπὸ Αἴμονος,
Θετταλία δὲ ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ Αἴμονος. ἔνιοι δὲ διε-

λόντες δίχα τὴν μὲν πρὸς νότον λαχεῖν φασι Λευκα-
λίωνι καὶ καλέσαι Πανδάρου ἀπὸ τῆς μητρός, τὴν δ'
C.444 ἑτέρουν Αἴμονι, ἀφ' οὗ Αἴμονίαν λεχθῆναι· μετανο-
μάσθαι δὲ τὴν μὲν Ἑλλάδα ἀπὸ Ἑλληνος τοῦ Λευκα-
λίωνος, τὴν δὲ Θετταλίαν ἀπὸ τοῦ υἱοῦ Αἴμονος· τινὲς 5
δὲ ἀπὸ Ἔφύρας τῆς Θεσπρωτίδος ἀπογόνους Ἀντίφου
καὶ Φειδίκου, τῶν Θετταλοῦ τοῦ Ἡρακλέους, ἐπελθόν-
τας ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ ἑαυτῶν προγόνου τὴν χώραν
ὄνομάσαι. εἰρ[ηται] δὲ καὶ Νεσσωνὶς ὄνομασθῆναι ποτε
ἀπὸ Νέσσωνος τοῦ Θετταλοῦ, καθάπερ καὶ ἡ λίμνη. 10

— I —

1 Ἐπεὶ δὲ ἡ Εὔβοια παρὰ πᾶσαν τὴν παραλίαν ταύ-
την παραβέβληται τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχοι Θετταλίας,
πλὴν τῶν ἄκρων ἐκατέρῳθεν, οἰκεῖον ἀν εἰη συνάψαι 15
τοῖς εἰρημένοις τὰ περὶ τὴν υῆσον, εἰδ' οὐτω μεταβῆ-
ναι πρός τα τὰ Αἰτωλικὰ καὶ τὰ Ἀκαρνανικά, ἀπερ
λοιπά ἔστι τῶν τῆς Εὐρώπης μερῶν.

2 Παραμήκης μὲν τοίνυν ἔστιν ἡ υῆσος ἐπὶ χιλίους
σχεδόν τι καὶ διακοσίους σταδίους ἀπὸ Κηναίου πρὸς 20
Γεραιστόν, τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλος, κατὰ δὲ τὸ πλέον
ὅσον πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίων. τὸ μὲν οὖν Κή-
ναιον ἔστι κατὰ Θεομοπύλας καὶ τὰ ἔξω Θεομοπυλῶν
ἐπ' δλίγον, Γεραιστὸς δὲ καὶ Πεταλία πρὸς Σουνίφ.
γίνεται οὖν ἀντίποδθμος τῇ τε Ἀττικῇ καὶ Βοιωτίᾳ καὶ 25
Λοκοίδι καὶ τοῖς Μαλιεῦσι. διὰ δὲ τὴν στενότητα καὶ
τὸ λεχθὲν μῆκος ὑπὸ τῶν παλαιῶν Μάκρις ὄνομάσθη.

C.445 συνάπτει δὲ τῇ ἡπειρῷ κατὰ Χαλκίδα μάλιστα, κυρτὴ
προπίπτουσα πρὸς τοὺς κατὰ τὴν Αὐλίδα τόπους τῆς
Βοιωτίας καὶ ποιοῦσα τὸν Εὔριπον, περὶ οὗ διὰ πλει- 30
όνων εἰρήκαμεν, σχεδὸν δέ τι καὶ περὶ τῶν ἀντιπόρθ-
μων ἀλλήλοις τόπων κατά τε τὴν ἡπειρον καὶ κατὰ

τὴν νῆσον ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Εὐρίπου, τά τε ἐντὸς καὶ τὰ ἔκτός. εἰ δέ τι ἐλλέλειπται, νῦν προσδιαβαφήσομεν. καὶ πρῶτον, ὅτι τῆς Εὔβοιας τὰ Κοῖλα λέγουσι τὰ μεταξὺ Αὐλίδος καὶ τῶν περὶ Γεραιστὸν τόπων· κολ-
5 πούται γὰρ ἡ παραλία, πλησιάζουσα δὲ τῇ Χαλκίδι κυρτοῦται πάλιν πρὸς τὴν ἥπειρον.

Οὐ μόνον δὲ Μάκρις ἐκλήθη ἡ νῆσος, ἀλλὰ καὶ 3
Ἀβαντίς. Εὔβοιαν γοῦν εἰπὼν ὁ ποιητὴς τοὺς ἀπ' αὐ-
τῆς Εὔβοιέας οὐδέποτε εἰρηκεν, ἀλλ᾽ Ἀβαντας ἀεὶ „οἱ δ'
10 „Εὔβοιαν ἔχον μένεα πνείουστες” Ἀβαντες.“ „τῷ δ' ἄμ'
„Ἀβαντες ἔποντο.“ φησὶ δὲ Ἀριστοτέλης ἐξ Ἀβας τῆς
Φωκικῆς Θρᾳκας ὁρμηθέντας ἐποικῆσαι τὴν νῆσον καὶ
ἐπονομάσαι Ἀβαντας τοὺς ἔχοντας αὐτήν· οἱ δ' ἀπὸ
ἡρωός φασι, καθάπερ καὶ Εὔβοιαν ἀπὸ ἡρωίνης. τάχα
15 δ' ὥσπερ βιὸς αὐλὴ λέγεται τι ἄντρον ἐν τῇ πρὸς [τὸν]
Αἴγαιον τετραμένη παραλίᾳ, ὃπου τὴν Ἰώ φασι τεκεῖν
“Ἐπαφον, καὶ ἡ νῆσος ἀπὸ τῆς αὐτῆς αἰτίας ἔσχε τοῦτο
τοῦνομα. καὶ Ὁχη δὲ ἐκαλεῖτο ἡ νῆσος, καὶ ἔστιν ὁμώ-
νυμον αὐτῇ τὸ μέγιστον τῶν ἐνταῦθα ὄραν. καὶ Ἐλ-
20 λοπία δ' ὠνομάσθη ἀπὸ Ἐλλοπος τοῦ Ἰωνος· οἱ δὲ Ἀλ-
κλου καὶ Κόδου ἀδελφόν φασιν, ὃς καὶ τὴν Ἐλλοπίαν
κτίσαι λεγεται, χωρίου ἐν τῇ Ὡρείᾳ καλουμένη τῆς
Ἴστιαιώτιδος πρὸς τῷ Τελεθρίῳ ὄρει, καὶ τὴν Ἰστίαιαν
προσκτήσασθαι καὶ τὴν πεδιάδα καὶ Κήρυνθον καὶ Αἰ-
25 δηψὸν καὶ Ὄροβίας, ἐν φιλαντεῖον ἦν ἀφευδεστατον·
ἥν δὲ μαντεῖον τοῦ Σελινουντίου Ἀπόλλωνος· μετφ-
κησαν δὲ εἰς τὴν Ἰστίαιαν οἱ Ἐλλοπιεῖς, καὶ ηὕξησαν
τὴν πόλιν Φιλιστίδου τοῦ τυράννου βιασαμένου μετα-
τὰ Λευκτριακά. Δημοσθένης δὲ ὑπὸ Φιλίππου πατα-
30 σταθῆναι τύραννόν φησι καὶ τῶν Ὡρειτῶν τὸν Φιλι-

στίδην· οὕτω γὰρ ὀνομασθῆσαν ὑστερον οἱ Ἰστιαι-
εῖς, καὶ ἡ πόλις ἀντὶ Ἰστιαιάς Θρεός· ἔνιοι δὲ ὑπὸ Ἀθη-
ναλων ἀποικισθῆναι φασι τὴν Ἰστιαιαν ἀπὸ τοῦ δήμου
τοῦ Ἰστιαιέων, ὡς καὶ ἀπὸ τοῦ Ἐρετριέων τὴν Ἐρέ-
τριαν. Θεόπομπος δέ φησι Περικλέους χειρουμένουν
Εῦβοιαν τοὺς Ἰστιαιεῖς καθ' ὄμολογίας εἰς Μακεδονίαν
μεταστῆναι, δισχιλίους δὲ ἔξι Ἀθηναίων ἐλθόντας τὸν
Θρεὸν οἰκῆσαι, δῆμον δὲ ταῦτα πρότερον τῶν Ἰστιαιέων.

4 κεῖται δὲ ὑπὸ τῷ Τελεθρίῳ ὅρει ἐν τῷ Δρυμῷ κα-
C.446 λουμένῳ παρὰ τὸν Κάλλαντα ποταμὸν ἐπὶ πέτρας 10
ὑψηλῆς, ὥστε τάχα καὶ διὰ τὸ τοὺς Ἑλλοπιεῖς ὁρείους
εἶναι τοὺς προοικήσαντας ἐτέθη τοῦνομα τοῦτο τῇ πό-
λει· δοκεῖ δὲ καὶ ὁ Θρίων ἐνταῦθα τραφεὶς οὕτως ὀνο-
μασθῆναι· ἔνιοι δὲ τοὺς Θρείτας πόλιν ἔχοντας ἰδίαν
φασὶ πολεμουμένους ὑπὸ τῶν Ἑλλοπιέων μεταβῆναι 15
καὶ συνοικῆσαι τοῖς Ἰστιαιεῦσι, μίαν δὲ γενηθεῖσαν πό-
λιν ἀμφοτέροις χοήσασθαι τοῖς ὄνομασι, καθάπερ Δα-
ναεδαίμων τε καὶ Σπάρτη ἡ αὐτή. εἴρηται δὲ ὅτι καὶ ἐν
Θετταλίᾳ Ἰστιαιῶτις ἀπὸ τῶν ἀνασπασθέντων ἐνθένδε
ὑπὸ Περδαίβων ὀνόμασται. 20

5 'Ἐπειδὲ δὲ ἡ Ἑλλοπία τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς Ἰστιαιάς
καὶ τοῦ Θρεοῦ προσηγάγετο ἡμᾶς ποιήσασθαι, τὰ συν-
εκῆ λέγωμεν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δὲ ἐν τῷ Θρεῷ
τούτῳ τὸ τε Κήναιον πλησίον καὶ ἐπ' αὐτῷ τὸ Δίον καὶ
Ἀθῆναι αἱ Διάδει, κτίσματα Ἀθηναίων, ὑπερκείμενον 25
τοῦ ἐπὶ Κῦνον πορθμοῦ· ἐκ δὲ τοῦ Δίον Κάναι τῆς
Αἰολίδος ἀπφικίσθησαν· ταῦτά τε δὴ τὰ χωρία περὶ
τὴν Ἰστιαιάν ἔστι καὶ ἔτι Κήρινθος πολιδιον ἐπὶ τῇ θα-
λάττῃ· ἐγγὺς δὲ Βούδορος ποταμὸς διμώνυμος τῷ κατὰ
τὴν Σαλαμῖνα ὅρει τῷ πρὸς τῇ Ἀττικῇ. 30

6 Κάρυστος δέ ἔστιν ὑπὸ τῷ ὅρει τῇ "Οχῃ· πλησίον
δὲ τὰ Στύρα καὶ τὸ Μαρμάριον, ἐν φέτῳ λατόμιον τῶν

Καρυστίων κιόνων, λερὸν ἔχον Ἀπόλλωνος Μαρμαρίνου, ὅθεν διάπλους εἰς ἄλλας τὰς Ἀραφηνίδας. ἐν δὲ τῇ Καρύστῳ καὶ ἡ λίθος φύεται ἡ ξαινομένη καὶ ὑφαινομένη, ὥστε τὰ ὑψηλή χειρόμακτρα γίνεσθαι, δυπαθέντα

5 *δ' εἰς φλόγα βάλλεσθαι καὶ ἀποκαθαίρεσθαι τῇ πλύσει τῶν λίνων παραπλησίως· φύκεσθαι δὲ τὰ χωρία ταῦτα φασιν ὑπὸ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ Μαραθῶνα καὶ Στειρεών· κατεστράφη δὲ τὰ Στύρα ἐν τῷ Λαμιακῷ πολέμῳ ὑπὸ Φαίδρου τοῦ Ἀθηναίων στρατηγού· τὴν*

10 *χώραν ἔχουσιν Ἐρετροί· εἰς. Κάρυστος δέ ἔστι καὶ ἐν τῇ Λακωνικῇ τόπος τῆς Αἴγυνος πρὸς Αρκαδίαν, ἀφ' οὐ Καρύστιον οἶνον Ἀλκμάνερηκε.*

Γεραιστὸς δ' ἐν μὲν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν οὐκ 7
εἴρηται, μέμνηται δ' ὁ ποιητὴς ὅμως αὐτοῦ,, ἐσ δὲ Γε-
15 φαιστὸν ἐννύχιοι κατάγοντο, “καὶ δηλοῖ διότι τοῖς διαιρουσιν ἐκ τῆς Ἀσίας εἰς τὴν Ἀττικὴν ἐπικαιρίως κεῖται τῷ Σούνιῳ πλησιάζον τὸ χωρίον· ἔχει δ' λερὸν Ποσειδῶνος ἐπισημότατον τῶν ταύτῃ καὶ κατοικίαν ἀξιόλογον.

20 *Μετὰ δὲ τὸν Γεραιστὸν Ἐρέτρια πόλις μεγίστη τῆς 8
Εὐβοίας μετὰ Χαλκίδα, ἐπειδὴν ἡ Χαλκὶς μητρόπολις τῆς υήσου τρόπου τινά, ἐπ' αὐτῷ τῷ Εὐρίπῳ ἰδρυμένη· ἀμφότεραι δὲ πρὸ τῶν Τρωικῶν ὑπὸ Ἀθηναίων^{ο. 447} ἐκτίσθαι λέγονται, καὶ μετὰ τὰ Τρωικὰ Αἰκλος καὶ Κό-
25 θος ἐξ Ἀθηνῶν ὁρμηθέντες δὲ μὲν τὴν Ἐρέτριαν φύκεσθαι Κόθος δὲ τὴν Χαλκίδα· καὶ τῶν Αἰολέων δέ τινες ἀπὸ τῆς Πενθέλου στρατιᾶς κατέμειναν ἐν τῇ υήσῳ, τὸ δὲ παλαιὸν καὶ Ἀραβεῖς οἱ Κάδμῳ συνδιαβάντες. αἱ δὲ οὖν πόλεις αὗται διαφερόντως αὐξηθεῖσαι καὶ ἀποι-
30 κίας ἔστειλαν ἀξιολόγους εἰς Μακεδονίαν· Ἐρέτρια μὲν γὰρ συνφύκεσθαι τὰς περὶ Παλλήνην καὶ τὸν Ἀθω πόλεις, ἡ δὲ Χαλκὶς τὰς ὑπὸ Ολύνθῳ, ἡς Φίλιππος*

διελυμήνατο. καὶ τῆς Ἰταλίας δὲ καὶ Σικελίας πολλὰ
χωρία Χαλκιδέων ἐστίν· ἔσταλησαν δὲ αἱ ἀποικίαι αὐταῖ,
καθάπερ εἴρηκεν Ἀριστοτέλης, ἡνίκα ἡ τῶν Ἰπ-
ποβοτῶν καλουμένη ἐπεκράτει πολιτείᾳ· προέστησαν
γὰρ αὐτῆς ἀπὸ τιμημάτων ἄνδρες ἀριστοκρατικῶς ἀρ-
χοντες. κατὰ δὲ τὴν Ἀλεξάνδρου διάβασιν καὶ τὸν πε-
ρίβολον τῆς πόλεως ηὗξησαν, ἐντὸς τείχους λαβόντες
τόν τε Κάνηθον καὶ τὸν Εὔρυπον, ἐπιστήσαντες τῇ γε-
φύρᾳ πύργους καὶ πύλας καὶ τείχος.

9 Τπέροειται δὲ τῆς τῶν Χαλκιδέων πόλεως τὸ Λή- 10
λαντον καλούμενον πεδίον. ἐν δὲ τούτῳ θερμῶν τε
νῦδάτων εἰσὶν ἐκβολαὶ πρὸς θεραπείαν νόσων εὐφυεῖς,
οἷς ἔχοντας καὶ Σύλλας Κορυνήλιος ὁ τῶν Ρωμαίων
ἡγεμών· καὶ μέταλλον δ' ὑπῆρχε θαυμαστὸν χαλκοῦ
καὶ σιδήρου ποιούν, ὅπερ οὐχ ἰστοροῦσιν ἀλλαχοῦ 15 ·
συμβαῖνον· νυνὶ μέντοι ἀμφότερα ἐκλέλοιπεν, [ὡσπερ
καὶ Ἀθήνησι τάργυρρεῖα.] ἔστι δὲ καὶ ἄπασα μὲν ἡ Εὔ-
ρηα εὖσειστος, μάλιστα δ' ἡ περὶ τὸν πορθμόν, καὶ
δειχομένη πνευμάτων ὑποφοράς, καθάπερ καὶ ἡ Βοιω-
τία καὶ ἄλλοι τόποι, περὶ ᾧν ἐμνήσθημεν διὰ πλειόνων 20
πρότερον. ὑπὸ τοιοῦτε πάθους καὶ ἡ ὁμώνυμος τῇ
νήσῳ πόλις καταποθῆναι λέγεται, ἡς μέμνηται καὶ Αἰ-
σχύλος ἐν τῷ Ποντίῳ Γλαιύῳ „Ἐύβοϊδα καμπτὴν ἀμφὶ¹
„Κηναίον Λιὸς ἀκτὴν, κατ' αὐτὸν τύμβουν ἀθλίουν
„Λίχα.“ Χαλκὶς δ' ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἐν Αἰτωλίᾳ 25
„Χαλκίδα τ' ἀγχίαλον, Καλυδῶνά τε πετρήεσσαν,“
καὶ ἐν τῇ νῦν Ἡλείᾳ „βὰν δὲ παρὰ Κρουνοὺς καὶ Χαλ-
„κίδα πετρήεσσαν“ οἱ περὶ Τηλέμαχον ἀπιόντες παρὰ
Νέστορος εἰς τὴν οἰκείαν.

10 Ἐρέτριαι δ' οἱ μὲν ἀπὸ Μακίστου τῆς Τριφυλίας 30
ἀποικισθῆναι φασιν ὑπ' Ἐρετρίεως, οἱ δ' ἀπὸ τῆς
Ἀθήνησιν Ἐρετρίας, ἡ νῦν ἐστὶν ἀγορά· ἔστι δὲ καὶ

περὶ Φάρσαλον Ἐρέτρια, ἵερὰ τοῦ Ἀπόλλωνος. Ἀδμήτου δ' ἔδρυμα λέγεται τὸ Ἱερόν, παρ' ὃ μητεῖσαι λέγουσι τὸν θεὸν * αὐτόν. Μελανῆς δ' ἐκαλεῖτο πρότερον ἡ Ἐρέτρια καὶ Ἀρότρια· ταύτης δ' ἐστὶ οὐμη ἡ C.448
 5 Ἀμάρουνθος ἀφ' ἑπτὰ σταδίων τοῦ τείχους. τὴν μὲν οὖν ἀρχαὶν πόλιν κατέσκαψαν Πέρσαι, σαγηνεύσαντες, ὡς φησιν Ἡρόδοτος, τοὺς ἀνθρώπους τῷ πλήθει, περιχυθέντων τῶν βαρβάρων τῷ τείχει· καὶ δεικνύουσιν ἔτι τοὺς θεμελίους, καλοῦσι δὲ παλαιὰν Ἐρέτριαν, ἡ δὲ νῦν ἐπέκτισται. τὴν δὲ δύναμιν τὴν Ἐρετριέων ἥν ἔσχον ποτὲ μαρτυρεῖ ἡ στήλη, ἥν ἀνέθεσάν ποτε ἐν τῷ Ἱερῷ τῆς Ἀμαρουνθίας Ἀρτέμιδος· γέγραπται δ' ἐν αὐτῇ τρισχιλίοις μὲν διπλεῖς ἔξαποσίοις δ' ἵππεῦσιν ἐξήκοντα δ' ἄρμασι ποιεῖν τὴν πομ-
 10 πήν· ἐπῆρχον δὲ καὶ Ἀνδρίων καὶ Τηνίων καὶ Κείων καὶ ἄλλων υῆσιν. ἐποίκους δ' ἔσχον ἀπ' Ἡλιδος, ἀφ' οὐ καὶ τῷ γράμματι τῷ δῶ πολλῷ χρησάμενοι οὐκ ἐπὶ τέλει μόνον τῶν δημάτων ἀλλὰ καὶ ἐν μέσῳ οειωμόδηνται. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλις ἥν Τάμυναι πλησίον
 15 τοῦ πορθμοῦ. ἔστι δὲ καὶ Οἰχαλία οὐμη τῆς Ἐρετρικῆς, λείψανον τῆς ἀναιρεθείσης πόλεως ὑπὸ Ἡρακλέους, διμώνυμος τῇ Τραχινίᾳ καὶ τῇ περὶ Τρικηνην καὶ τῇ Ἀρκαδικῇ, ἥν Ἀνδανίαν οἱ ὑστερον ἐκάλεσαν, καὶ τῇ ἐν Αίτωλᾳ περὶ τοὺς Εὐρυτᾶνας.

20 τὰ πρωτεῖα καὶ μητρόπολις αὗτη λέγεται τῶν Εὐβοέων, δευτερεύει δ' ἡ Ἐρέτρια. ἀλλὰ καὶ πρότερον αὗται μέγα εἶχον ἀξιωματα καὶ πρὸς πόλεμον καὶ πρὸς εἰρήνην, ὥστε καὶ φιλοσόφοις ἀνδράσι παρασχεῖν διαγωγὴν
 25 ἡδεῖαν καὶ ἀθόρυβον. μαρτυρεῖ δ' ἡ τε τῶν Ἐρετρικῶν φιλοσόφων σχολὴ τῶν περὶ Μενέδημουν ἐν τῇ Ἐρετρίᾳ γενομένη, καὶ ἔτι πρότερον ἡ Ἀριστοτέλους

ἐν τῇ Χαλκίδι διατριβή, ὃς γε κάκεῖ κατέλυσε τὸν βίον.

12 Τὸ μὲν οὖν πλέον ὁμολόγουν ἀλλήλαις αἱ πόλεις αὗται, περὶ δὲ Ληλάντου διενεχθεῖσαι οὐδὲ οὔτω τελέως ἐπαύσαντο ὥστ' ἐν τῷ πολέμῳ κατὰ αὐτὸύ δάδειαν δρᾶν ἔκαστα, ἀλλὰ συνέθεντο ἐφ' οἷς συστήσονται τὸν ἄγωνα. Δηλοῦ δὲ καὶ τοῦτο ἐν τῷ Ἀμαρυνθίῳ στήλῃ τις φράξουσα μὴ χρῆσθαι τηλεβόλοις.

13 Οἱ δὲ Εὐβοεῖς ἀγαθοὶ πρὸς μάχην ὑπῆρξαν τὴν σταδίαν, ἢ καὶ συστάδην λέγεται καὶ ἐκ χειρός. δόρασι 10 δ' ἐχρῶντο τοῖς ὀρεκτοῖς, ὡς φησιν ὁ ποιητής „αἰχμη-
C.449., ταὶ μεμαῶτες ὀρεκτῆσι μελίῃσι θώρηκας φήσσειν.“ ἀλλοίων ἵσως ὅντων τῶν παλτῶν, οἷαν εἰκὸς εἶναι τὴν Πηλιάδα μελίην ἦν, ὡς φησιν ὁ ποιητής „οἶος ἐπειταὶ πῆλαι Ἀχιλλεύς“ καὶ ὁ εἰπὼν „δονοὶ δ' ἀκούνται, τιέω, δύον οὐκ ἄλλος τις διστῷ,“ τῷ παλτῷ λέγει δόρατι. καὶ οἱ μονομαχοῦντες τοῖς παλτοῖς χρώμενοι δόρασιν εἰσάγονται πρότερον, εἴτα ἐπὶ τὰ ἔιφη βαδίζοντες ἀγχέμαχοι δ' εἰσὶν οὐχ οἱ ἔιφει χρώμενοι μόνον, ἀλλὰ καὶ δόρατι ἐκ χειρός, ὡς φησιν „οὕτησε ἐντῷ χαλκῆρεν, λῦσε δὲ γυναῖς.“ τοὺς μὲν οὖν Εὐβοέας τούτῳ τῷ τρόπῳ χρωμένους εἰσάγει, περὶ δὲ Λοκρῶν τάναντία λέγει ὡς „οὕ σφιν σταδίης ὑσμίνης ἔργα μέμηλεν, ἀλλ' ἄρα τόξοισι καὶ ἐντρόφῳ οἰὸς ἀώτῳ“ Ιλιον εἰς, ἄμ' ἔποντο.“ περιφέρεται δὲ καὶ χρησμὸς ἐκδοθεὶς 25

καὶ γὰρ δὴ καὶ τῶν πολεμικῶν ἔθῶν καὶ
ἔστιν οὗτ' ἦν ἔνθος· ἀλλ' οἱ μὲν τηλευτοῖς χρωνται, καθαπέρ οἱ τοξόται καὶ οἱ σφενδονῆται καὶ
οἱ ἀκοντισταί, οἱ δὲ ἀποδίδωσι· τῷ δὲ πολέμῳ τοῦτον τὸν
δρεκτῷ χρώμενοι· δὲ τοῦτον τὸν πολέμονταν τὸν τοῦτον τὸν
χειρός ηδὸν τοῖς παλτοῖς, καθαπέρ οἱ ποντὸς ἀμφοτέρας τὰς
χρεῖας ἀποδίδωσι· καὶ γὰρ συστόθησαν καὶ ποντοβολούντων· διπερ οὐκ ηδὸν σάρισσα δύναται καὶ ὁ ὑσσός.

*Αλγιεῦσιν, ἵππον Θεσσαλικόν, Λακεδαιμονίαν δὲ γυ-
,,ναῖνα, ἀνδρας δ' οἱ πίνουσιν ὕδωρ ιερῆς Ἀρεθού-
,,σης, “τοὺς Χαλκιδέας λέγων ὡς ἀρίστους· ἔκει γὰρ ἡ
Ἀρέθουσα.*

5 *Εἰσὶ δὲ νῦν Εὐβοῖται ποταμοὶ Κηφεὺς καὶ Νηλεύς, 14
ῶν ἀφ' οὗ μὲν πίνοντα τὰ πρόβατα λευκὰ γίνεται, ἀφ'
οὗ δὲ μέλλαντα· καὶ περὶ τὸν Κράθιν δὲ εἴρηται τοιοῦ-
τόν τι συμβαῖνον.*

Τῶν δ' ἐκ Τροίας ἐπανιόντων Εὐβοέων τινὲς εἰς 15
10 Ἰλλυριοὺς ἐκπεσόντες, ἀποβαίνοντες οἶκαδε διὰ τῆς
Μακεδονίας περὶ Ἔδεσσαν ἔμειναν συμπολεμήσαντες
τοῖς ὑποδεξαμένοις, καὶ ἔκτισαν πόλιν Εὔβοιαν· ἦν
δὲ καὶ ἐν Σικελίᾳ Εὔβοια Χαλκιδέων τῶν ἔκει πτίσμα,
ἥν Γέλων ἔξανεστησε, καὶ ἐγένετο φρούριον Συρακου-
15 σίων· καὶ ἐν Κερκύρᾳ δὲ καὶ ἐν Λήμνῳ τόπος ἦν Εὔ-
βοια καὶ ἐν τῇ Ἀργείᾳ λόφος τις.

Ἐπειδὴ δὲ τοῖς Θετταλοῖς καὶ Οἰταίοις πρὸς ἐσπέραν 16
Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρνᾶνες εἰσὶ καὶ Ἀθαμᾶνες, εἰ χοὴ καὶ
τούτους Ἑλληνας εἰπεῖν, λοιπὸν ἔξηγήσασθαι περὶ τού-
20 των, ἵνα ἔχωμεν τὴν περίοδον ἀπασαν τὴν τῆς Ἑλλά-
δος· προσθεῖναι δὲ καὶ τὰς νήσους τὰς προσχώρους
μάλιστα τῇ Ἑλλάδι καὶ οἰκουμένας ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων
δύσας μὴ περιθεύκαμεν.

Αἰτωλοὶ μὲν τοῖνυν καὶ Ἀκαρνᾶνες δύμοροῦσιν 2
25 ἀλλήλοις, μέσον ἔχοντες τὸν Ἀχελῶν ποταμὸν δέοντα
ἀπὸ τῶν ἄρκτων καὶ τῆς Πίνδου πρὸς νότον διὰ τε
Ἀγραίων Αἰτωλικοῦ ἔθνους καὶ Ἀμφιλόχων, Ἀναρ-0.450
νᾶνες μὲν τὸ πρὸς ἐσπέραν μέρος ἔχοντες τοῦ ποταμοῦ
μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ πόλου τοῦ κατὰ Ἀμφιλόχους
30 καὶ τὸ ιερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, Αἰτωλοὶ δὲ τὸ
πρὸς ἔω μέχρι τῶν Ὀξιολῶν Δοκρῶν καὶ τοῦ Παρνασ-
σοῦ καὶ τῶν Οἰταίων. ὑπέροχεινται δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ

καὶ τοῖς προσβορείοις μέρεσι τῶν μὲν Ἀκαρνάνων Ἀμφίλοχοι, τούτων δὲ Λόλοπες καὶ ἡ Πίνδος, τῶν δ' Αἰτωλῶν Περραιβοὶ τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αίνιάνων τι μέρος τῶν τὴν Οἰτην ἔχοντων· τὸ δὲ νότιον πλευρόν, τό τε Ἀκαρνανικὸν ὅμοιώς καὶ τὸ Αἰτωλικόν, κλύξε-5 ται τῇ ποιούσῃ θαλάττῃ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον, εἰς ὃν καὶ ὁ Ἀχελῶς ποταμὸς ἔξιησιν, ὁρίζων τὴν τῶν Αἰτωλῶν παραλίαν καὶ τὴν Ἀκαρνανικήν· ἐκαλεῖτο δὲ Θόας ὁ Ἀχελῶς πρότερον. ἔστι δὲ καὶ ὁ παρὰ Λύμην ὁμώνυμος τούτῳ, καθάπερ εἴρηται, καὶ ὁ περὶ Λάμιαν. 10 εἴρηται δὲ καὶ ὅτι ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου τὸ στόμα τοῦδε τοῦ ποταμοῦ φασι.

2 Πόλεις δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς Ἀκαρνᾶσιν Ἀνακτόριόν τε ἐπὶ χερρονήσου ίδρυμένον Ἀκτίου πλησίον, ἐμπόριον τῆς νῦν ἐκτισμένης ἐφ' ἡμῶν Νικοπόλεως, καὶ 15 Στράτος, ἀνάπλουν ἔχουσα τῷ Ἀχελῷ πλεύσιν τὴν διακοσίαν σταδίων, καὶ Οἰνειάδαι, καὶ αὐτὴ ἐπὶ τῷ ποταμῷ, ἡ μὲν παλαιὰ οὖ κατοικουμένη, ἵσον ἀπέχουσα τῆς τι θαλάττης καὶ τοῦ Στράτου, ἡ δὲ νῦν ὅσον ἐβδομήκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς ἐκβολῆς διέχουσα· καὶ ἄλλ-20 λαι δ' εἰσί, Πάλαιρός τε καὶ Ἀλυξία καὶ Λευκάς καὶ Ἀργος τὸ Ἀμφιλοχικὸν καὶ Ἀμβρακία, ὃν αἱ πλεῦσται περιοικίδες γεγόνασιν ἡ καὶ πᾶσαι τῆς Νικοπόλεως· ιεται δ' ὁ Στράτος κατὰ μέσην τὴν ἐξ Ἀλυξίας ὁδὸν εἰς Ἀνακτόριον.

25

3 Αἰτωλῶν δ' εἰσὶ Καλυδών τε καὶ Πλευρών, νῦν μὲν τεταπεινωμέναι, τὸ δὲ παλαιὸν πρόσχημα τῆς Ἑλλάδος ἦν ταῦτα τὰ πτίσματα. καὶ δὴ καὶ διηρῆσθαι συνέβαινε δίχα τὴν Αἰτωλίαν, καὶ τὴν μὲν ἀρχαίαν λέγεσθαι τὴν δ' ἐπίκτητον· ἀρχαίαν μὲν τὴν ἀπὸ τοῦ 30 Ἀχελώου μέχρι Καλυδῶνος παραλίαν ἐπὶ πολὺ καὶ τῆς μεσογαίας ἀνήκουσαν εὐκάρπου τε καὶ πεδιάδος, ἡ

εστὶ καὶ Στράτος καὶ τὸ Τριχώνιον ἀρίστην ἔχον γῆν· ἐπίκτητον δὲ τὴν τοῦς Λοκροῖς συνάπτουσαν ὡς ἐπὶ Ναύπακτόν τε καὶ Εὐπάλιον, τραχυτέραν τε οὖσαν καὶ λυπροτέραν, μέχρι τῆς Οἰταλίας καὶ τῆς Ἀθαμάνων δὲ καὶ τῶν ἐφεξῆς ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἥδη περισταμένων ὅρων τε καὶ ἐδήνων.

Ἐχει δὲ καὶ ἡ Αἰτωλία ὅρος μέγιστον μὲν τὸν Κό-⁴ρακα, συνάπτοντα τῇ Οἰτῃ, τῶν δὲ ἄλλων ἐν μέσῳ μὲν μᾶλλον τὸν Ἀράνυνθον, περὶ δὲ τὴν νεωτέραν⁵ 10 Πλευρῶνα συνφύκειν τὰς παλαιὰς ἐγγὺς κειμένην Καλυδᾶνος οἱ οἰκήτορες, εὔκαιρον οὖσαν καὶ πεδιάδα, πορθοῦντος τὴν χώραν Δημητρίου τοῦ ἐπικληθέντος Αἰτωλικοῦ· ὑπὲρ δὲ τῆς Μολυκρείας Ταφιασσὸν καὶ Χαλκίδα, δῷη ἴκανως ὑψηλά, ἐφ' οὓς ποιήσει 15 λίχνια Ἰδρυτο Μακυνία τε καὶ Χαλκίς, διμάνυμος τῷ ὅρει, ᾧν καὶ Τποχαλκίδα καλοῦσσι· Κούριον δὲ πλησίον τῆς παλαιᾶς Πλευρῶνος, ἀφ' οὗ τοὺς Πλευρῶνος Κουρῆτας ὀνομασθῆναι τινες ὑπέλαβον.

Ο δὲ Εὔηνος ποταμὸς ἀρχεται μὲν ἐκ Βωμιέων 20 τῶν ἐν Ὁφιεῦσιν Αἰτωλικῷ ἔθνει (καθάπερ καὶ οἱ Εὐρυτᾶνες καὶ Ἀγραῖοι καὶ Κουρῆτες καὶ ἄλλοι), φει δὲ οὐ διὰ τῆς Κουρητικῆς κατ' ἀρχάς, ἣτις ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ Πλευρῶνίᾳ, ἀλλὰ διὰ τῆς προσεψάς μᾶλλον παρὰ τὴν Χαλκίδα καὶ Καλυδᾶνα· εἰτ' ἀνακάμψας ἐπὶ τὰ 25 τῆς Πλευρῶνος πεδία τῆς παλαιᾶς καὶ παραλλάξεις εἰς δύσιν ἐπιστρέψει πρὸς τὰς ἐκβολὰς καὶ τὴν μεσημβρίαν· ἐναλεῖτο δὲ Λυκόδομας πρότερον· καὶ ὁ Νέσσος ἐνταῦθα λέγεται πορθμεὺς ἀποδειγμένος ὑφ' Ἡρακλέους ἀποθανεῖν, ἐπειδὴ πορθμεύων τὴν Δηιάνειραν 30 ἐπεχείρει βιάσασθαι.

Καὶ Ὁλενον δὲ καὶ Πυλήνην ὀνομάζει πόλεις ὁ ποιητὴς Αἰτωλικάς, ὃν τὴν μὲν Ὁλενον διμωνύμως τῇ

Αχαϊκῇ λεγομένην Αἰολεῖς κατέσκαψαν, πλησίου οὖσαν τῆς νεωτέρας Πλευρῶνος, τῆς δὲ χώρας ἡμφισβήτουν Ἀκαρνᾶνες· τὴν δὲ Πυλήνην μετενέγκαντες εἰς τοὺς ἀνώτερους τόπους ἥλλαξαν αὐτῆς καὶ τοῦνομα Πρόσχιον καλέσαντες. Ἐλλάνικος δ' οὐδὲ τὴν περὶ 5 ταύτας ἴστορίαν οἶδεν, ἀλλ' ὡς ἔτι καὶ αὐτῶν οὔσων ἐν τῇ ἀρχαίᾳ καταστάσει μέμνηται, τὰς δ' ὑστερούν καὶ τῆς τῶν Ἡρακλειδῶν καθόδου κτισθείσας Μακυνίαν καὶ Μολύκρειαν ἐν ταῖς ἀρχαίαις καταλέγει, πλείστην εὐχέρειαν ἐπιδεικνύμενος ἐν πάσῃ σχεδόν τι τῇ γραφῇ. 10

7 Καθόλου μὲν οὖν ταῦτα περὶ τῆς χώρας ἐστὶ τῆς τῶν Ἀκαρνάνων καὶ τῶν Αἰτωλῶν, περὶ δὲ τῆς παραλίας καὶ τῶν προκειμένων οὐδέτερων ἐτίμων ταῦτα προσληπτέον· ἀπὸ γὰρ τοῦ στόματος ἀφεξαμένοις τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου πρῶτον ἐστιν Ἀκαρνάνων χωρίον τὸ 15 Ἀκτιον. ὁμονύμως δὲ λέγεται τό τε Ιερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος καὶ ἡ ἄκρα ἡ ποιοῦσα τὸ στόμα τοῦ κόλπου, ἔχουσα καὶ λιμένα ἐκτός. τοῦ δ' Ιεροῦ τετταράκοντα μὲν σταδίους ἀπέχει τὸ Ἀνακτόριον ἐν τῷ κόλπῳ ἰδούμενον, διακοσίους δὲ καὶ τετταράκοντα ἡ Λευκάς. 20

8 Αὕτη δ' ἦν τὸ παλαιὸν μὲν χερρόνησος τῆς Ἀκαρνάνων γῆς, καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς αὐτὴν ἀκτὴν ἡπείρου, τὴν περαίαν τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡπειρον C.452 καλῶν· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἀκαρνανία· ὥστε, ὅταν φῇ ἀκτὴν ἡπείρου, τῆς Ἀκαρνανίας ἀκτὴν δέχεσθαι δεῖ. 25 τῆς δὲ Λευκάδος ἡ τε Νήριτος, ἦν φησιν ἐλεῖν ὁ Λαέρτης „ἢ μὲν Νήριτον εἴλον ἐυκτίμενον πτολιεύθρον, „ἀκτὴν ἡπείρου, Κεφαλλήνεσσιν ἀνάσσων,“ καὶ ἂς ἐν καταλόγῳ φησί „καὶ Κροκύλει ἐνέμοντο καὶ Αἴγιλιπα „τρηχεῖαν.“ Κορίνθιοι δὲ πεμφθέντες ὑπὸ Κυψέλου 30 καὶ Γόργου ταύτην τε κατέσχον τὴν ἀκτὴν καὶ μέχρι τοῦ Αμβρακικοῦ κόλπου προηῆθον, καὶ ἡ τε Ἀμβρακία

συνωφισθη καὶ Ἀνακτόριον, καὶ τῆς χερρονήσου διο-
γύξαντες τὸν ἴσθμον ἐποίησαν υῆσον τὴν Λευκάδα,
καὶ μετενέγκαντες τὴν Νήριτον ἐπὶ τὸν τόπον, ὃς ἦν
ποτὲ μὲν ἴσθμὸς υῦν δὲ πορθμὸς γεφύρᾳ ξενικτός, με-
5 τωνόμασαν Λευκάδα, ἐπώνυμον δοκῶ μοι τοῦ Λευ-
κάτα· πέτρα γάρ ἔστι λευκὴ τὴν χρόαν, προκειμένη
τῆς Λευκάδος εἰς τὸ πέλαγος καὶ τὴν Κεφαλληνίαν, ὡς
ἐντεῦθεν τοῦνομα λαβεῖν.

Ἐχει δὲ τὸ τοῦ Λευκάτα Ἀπόλλωνος ἱερὸν καὶ τὸ 9
10 ἄλμα τὸ τοὺς ἔρωτας παύειν πεπιστευμένον· „οὗ δὴ λέ-
„γεται πρώτη Σαπφώ“ ὡς φησιν ὁ Μένανδρος „τὸν
„ὑπέροχομπον ὅθρῶσα Φάσων“ οἰστρῷντι πόθῳ φίψαι
„πέτρας ἀπὸ τηλεφανοῦς ἄλμα κατ’ εὐχὴν σήν, δέ-
„σποτ“ ἄναξ.“ ὁ μὲν οὖν Μένανδρος πρώτην ἀλέσθαι
15 λέγει τὴν Σαπφώ, οἱ δὲ ἔτι ἀρχαιολογικάτεροι Κέφα-
λόν φασιν ἐρασθέντα Πτερέλα τὸν Δηιονέως. ἦν δὲ
καὶ πάτριον τοὺς Λευκαδίοις κατ’ ἐνιαυτὸν ἐν τῇ θυσίᾳ
τοῦ Ἀπόλλωνος ἀπὸ τῆς σκοπῆς ὁπτεῖσθαι τινα τῶν
ἐν αἰτίαις ὅντων ἀποτροπῆς χάριν, ἔξαπτομένων ἐξ
20 αὐτοῦ παντοδαπῶν πτερῶν καὶ ὁρνέων ἀνακονφίζειν
δυναμένων τῇ πτήσει τὸ ἄλμα, ὑποδέχεσθαι δὲ κάτω
μικραῖς ἀλιάσι κύκλῳ περιεστῶτας πολλοὺς καὶ περι-
σώζειν εἰς δύναμιν τῶν ὅρων ἔξω τὸν ἀναληφθέντα.

Ο δὲ τὴν Ἀλκμαιονίδα γράφας, Ἰκαρίον τοῦ Πη-
25 νελόπης πατρὸς υἱεῖς γενέσθαι δύο, Ἀλυξέα καὶ Λευ-
κάδιον, δυναστεῦσαι δὲ ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τούτους μετὰ
τοῦ πατρός· τούτων οὖν ἐπωνύμους τὰς πόλεις Ἐφο-
ρος λέγεσθαι δοκεῖ.

Κεφαλλῆνας δὲ υῦν μὲν τοὺς ἐκ τῆς υῆσον τῆς 10
30 Κεφαλληνίας λέγουσιν, Ὅμηρος δὲ πάντας τοὺς ὑπὸ
τῷ Ὁδυσσεῖ, ὧν εἰσὶ καὶ οἱ Ἀκαρνᾶνες· εἰπὼν γάρ
„αὐτὰρ Ὁδυσσεὺς ἤγε Κεφαλλῆνας, οἵ δ’ Ἰθάκην εἶχον

„καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον“ (τὸ ἐν ταύτῃ ὅρος ἐπιφα-
0.453νές, ὡς καὶ „οἱ δὲ ἐκ Δουλιχίου Ἐχινάσιν θὲ λεράσων“
καὶ αὐτοῦ τοῦ Δουλιχίου τῶν Ἐχινάδων ὅντος· καὶ
„οἱ δὲ ἄρα Βουκράσιόν τε καὶ Ἡλιδα“ καὶ τοῦ Βου-
πρασίου ἐν Ἡλιδι ὅντος· [καὶ] „οἱ δὲ Εὔβοιαι ἔχον καὶ 5
„Χαλκίδα τὸ Ἐλαέτριάν τε“ καὶ τούτων ἐν Εύβοιᾳ οὐ-
σῶν· καὶ „Τρῷες καὶ Λύκιοι καὶ Δάρδανοι“ ὡς καὶ
ἔκεινων Τρῷων ὅντων)· πλὴν μετά γε Νήριτον φησί
„καὶ Κροκύλει ἐνέμοντο καὶ Αἴγιλιπα τρηχεῖαν, οὗ τε
„Ζάκυνθον ἔχον ἥδε οἱ Σάμοι ἀμφενέμοντο, οὗ τὸ 10
„ἥπειρον ἔχον ἥδε ἀντιπέραι ἐνέμοντο.“ ἥπειρον μὲν
οὖν τὰ ἀντιπέραι τῶν νήσων βούλεται λέγειν, ἂμα τῇ
Λευκάδῃ καὶ τὴν ἄλλην Ἀκαρνανίαν συμπεριλαβεῖν
βουλόμενος, περὶ τῆς καὶ οὕτω λέγει, „δώδεκα“ ἐν ἥπειρῳ
ἄγελαι, τόσα πάσα μήλων, „τάχα τῆς Ἡπειρώτιδος τὸ 15
παλαιὸν μέχρι δεῦρο διατεινούσης καὶ ὀνόματι κοινῷ
ἥπειρον λεγομένης· Σάμον δὲ τὴν νῦν Κεφαλληνίαν,
ὡς καὶ ὅταν φῇ „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σάμοιό τε παι-
„παλοέσσης.“ τῷ γὰρ ἐπιθέτῳ τὴν δύμωνυμίαν διέ-
σταλται, ὡς οὐκ ἐπὶ τῆς πόλεως ἀλλ’ ἐπὶ τῆς νήσου τι-
20 θεὶς τοῦνομα. τετραπόλεως γὰρ οὕσης τῆς νήσου μία
τῶν τεττάρων ἔστιν ἡ καὶ Σάμος καὶ Σάμη καλούμενη
καθ’ ἐκάτερον τοῦνομα, δύμωνυμούσα τῇ νήσῳ. ὅταν
δ’ εἶπῃ „ὅσσοι γὰρ νήσοισιν ἐπικρατέουσιν ἄριστοι
„Δουλιχίῳ τε Σάμη τε καὶ ὑλήεντι Ζακύνθῳ,“ τῶν 25
νήσων ἀριθμὸν ποιῶν δῆλος ἔστι καὶ Σάμην καλῶν
τὴν νήσον, ἦν πρότερον Σάμον ἐκάλεσεν. Ἀπολλόδω-
ρος δὲ τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ λέγων διεστάλθαι τὴν ἀμ-
φιβολίαν εἰπόντα „Σάμοιό τε παιπαλοέσσης,“ ὡς τὴν
νήσου λέγοντα, τοτὲ δὲ γράφεσθαι δεῖν „Δουλιχίῳ τε 30
„Σάμῳ τε“ ἀλλὰ μη „Σάμη τε“ δῆλος ἔστι τὴν μὲν
πόλιν Σάμην καὶ Σάμον συνωνύμως ὑπολαμβάνων

ἐκφέρεσθαι, τὴν δὲ υῆσον Σάμου μόνον· ὅτι γὰρ Σάμη λέγεται ἡ πόλις δῆλον εἶναι ἐκ τε τοῦ διαφιδμούμενον τοὺς ἐξ ἑκάστης πόλεως μνηστῆρας φάναι,,ἐκ δὲ Σάμης πίσυρές τε καὶ εἴκοσι φωτες ἔασι,“ καὶ ἐκ τοῦ περὶ τῆς Κτιμένης λόγου „,τὴν μὲν ἐπειτα Σάμηνδ’ „,ἔδοσαν.“ ἔχει δὲ ταῦτα λόγον. οὐ γὰρ εὔκρινᾶς ἀπο-C.454 διδωσιν ὁ ποιητὴς οὕτε περὶ τῆς Κεφαλληνίας οὕτε περὶ τῆς Ἰθάκης καὶ τῶν ἄλλων πλησίον τόπων, ὥστε καὶ οἱ ἔξηγούμενοι διαφέρονται καὶ οἱ ἰστοροῦντες.

- 10 Αὐτίκα γὰρ ἐπὶ τῆς Ἰθάκης ὅταν φῇ „οὖ δ’ Ἰθά- 11 „,καὶν εἰχον καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον,“ ὅτι μὲν τὸ Νήριτον ὄφος λέγει τῷ ἐπιθέτῳ δηλοῖ. ἐν ἄλλοις δὲ καὶ φητῶς ὄφος „,ναιετάω δ’ Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ’ „,ὄφος αὐτῇ, Νήριτον εἰνοσίφυλλον ἀριπρεπές.“ Ἰθά- 15 κην δ’ εἴτε τὴν πόλιν εἴτε τὴν υῆσον λέγει, οὐ δῆλον ἐν τούτῳ γε τῷ ἐπει „,οὖ δ’ Ἰθάκην εἰχον καὶ Νήριτον.“ οὐδέως μὲν γὰρ ἀκούων τις τὴν πόλιν δέξαιτ’ ἄν, ὡς καὶ Ἀθήνας καὶ Λυκαβηττὸν εἴ τις λέγοι, καὶ Ρόδον καὶ Ἀτάβυρον, καὶ ἔτι Λακεδαίμονα καὶ Ταῦγετον. 20 ποιητικῶς δὲ τούναντίον. ἐν μέντοι τῷ „,ναιετάω δ’ „,Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ’ ὄφος αὐτῇ Νήριτον“ [δῆλον]. ἐν γὰρ τῇ υῆσῳ οὐκ ἐν τῇ πόλει τὸ ὄφος. ὅταν δὲ οὕτω φῇ „,ῆμεῖς ἐξ Ἰθάκης ὑπὸ Νηίου εἰλήλουθ- „,μεν,“ ἀδηλον, εἴτε τὸ αὐτὸ τῷ Νηρίῳ λέγει τὸ Νή- 25 ιον εἴτε ἐτερον η ὄφος η χωρίον.

Καὶ τοῦτο δὲ δοκεῖ ὑπεναντιότητά τινα δηλοῦν 12 „,αὐτὴ δὲ χθαμαλὴ πανυπερτάτη εἰν ἀλλι κεῖται.“ χθα- μαλὴ μὲν γὰρ ἡ ταπεινὴ καὶ χαμηλή, πανυπερτάτη δὲ

25. post χωρίον : ὁ μέντοι ἀντὶ Νηρίτον γράφων Νήριους, η ἀνάπταλιν, παραπταλεῖ τελέως· τὸ μὲν γὰρ εἰνοσίφυλλον κα- λεῖ ὁ ποιητὴς, τὸ δὲ ἐντίμενον πτολεθρον, καὶ τὸ μὲν ἐν Ἰθάκῃ, τὸ δὲ ἀκτὴν ἡ πελροίο.

ἡ ὑψηλή, οἵαν διὰ πλειόνων σημαίνει, Κραυαὴν καλῶν· καὶ τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ τοῦ λιμένος,, τρηχεῖαν ἀταρο,, πὸν χῶρον ἀν' ὑλήεντα“ καὶ „οὐ γάρ τις νήσων εὔ-,, δείελος, οὐδὲ εὐλείμων, αὐτὸν ἀλλὰ κεκλίαται· Ἰθάκη,, δέ τε καὶ περὶ πασέων.“ ἔχει μὲν οὖν ἀπεμφάσεις τοι-5 αύτας ἡ φράσις, ἔξηγοῦνται δὲ οὐ κακῶς· οὕτε γὰρ χθαμαλὴν δέχονται ταπεινὴν ἐνταῦθα, ἀλλὰ πρόσχω-ρον τῇ ἡπείρῳ ἐγγυτάτῳ οὔσαν αὐτῆς· οὕτε πανυπερ-τάτην ὑψηλοτάτην ἀλλὰ πανυπερτάτην πρὸς ξόφουν,, οἷον ὑπὲρ πάσας ἐσχάτην τετραμμένην πρὸς ἄρκτον· 10 τοῦτο γὰρ βούλεται λέγειν τὸ πρὸς ξόφουν, τὸ δὲ ἐναν-0.455τίον πρὸς νότον „αἰ δέ τ᾽ ἀνευθε πρὸς ἥω τὸ ἡέλιόν τε.“¹⁵ τὸ γὰρ ἀνευθε πόρρον καὶ χωρὶς ἔστιν, ὡς τῶν μὲν ἀλ-λων πρὸς νότον κεκλιμένων καὶ ἀπωτέρω τῆς ἡπείρου, τῆς δὲ Ἰθάκης ἐγγύθεν καὶ πρὸς ἄρκτον. δτὶ δὲ οὕτω 15 λέγει τὸ νότιον μέρος καὶ ἐν τοῖσδε φανερόν „εἴτ᾽ ἐπὶ „, δεξεῖς ἵωσι, πρὸς ἥω τὸ ἡέλιόν τε, εἴτ᾽ ἐπὶ ἀριστερὰ τούγε, „ποτὶ ξόφουν ἡερόεντα“ καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν τοῖσδε „ῷ φί-„λοι, οὐ γάρ τὸ ἰδμεν, ὅπη ξόφος, οὐδὲ ὅπη ἥώς, οὐδὲ ὅπη „, ἡέλιος φαεσίμβροτος εἰσ τὸ πόρον γαῖαν, οὐδὲ ὅπη ἀνυεῖ-20 „, ται.“ ἔστι μὲν γὰρ δεξασθαι τὰ τέτταρα κλίματα τὴν ἥω δεκομένους τὸ νότιον μέρος, ἔχει τέ τινα τοῦτο ἐμ-φασιν· ἀλλὰ βέλτιον τὸ κατὰ τὴν πάροδον τοῦ ἥλιου νοεῖν ἀντιτιθέμενον τῷ ἀρκτικῷ μέρει· ἔξαλλαξιν γάρ τινα τῶν οὐρανίων πολλὴν βούλεται σημαίνειν ὁ λό-25 γος, οὐχὶ φιλὴν ἐπίκρουψιν τῶν κλιμάτων. δεῖ γὰρ κατὰ πάντα συννεφῆ καιρόν, ἢν δὲ ἡμέρας ἢν τε νύκτωρ συμβῇ, παρακολουθεῖν· τὰ δὲ οὐράνια ἔξαλλάττει ἐπὶ πλέον τῷ πρὸς μεσημβρίαν μᾶλλον ἡ ἡττον παραχω-ρεῖν ἡμᾶς ἡ εἰς τοὺν αντίον. τοῦτο δὲ οὐ δύσειν καὶ 30 ἀνατολῆς ἐγκαλούφεις ποιεῖ (καὶ γὰρ αἰθρίας οὕσης συμβαίνει), ἀλλὰ μεσημβρίας καὶ ἄρκτου. οὐλιστα

γὰρ ἀρκτικός ἐστιν ὁ πόλος· τούτου δὲ κινουμένου,
καὶ ποτὲ μὲν κατὰ πορυφήν ἡμῖν γινομένου ποτὲ δὲ
ὑπὸ γῆς ὅντος, καὶ οἱ ἀρκτικοὶ συμμεταβάλλουσι, ποτὲ
δὲ συνεκλείπουσι κατὰ τὰς τοιαύτας παραχωρήσεις,
5 ὥστε οὐκ ἄν εἰδείης ὅπου ἐστὶ τὸ ἀρκτικὸν οὐλίμα, οὐδὲ
εἰ ἀρχὴν ἐστίν· εἰ δὲ τοῦτο, οὐδὲ τούναντίου ἄν γνοίης.

Κύκλος δὲ τῆς Ἰθάκης ἐστὶν ὡς ὁγδοήκοντα στα-
δίων. περὶ μὲν Ἰθάκης ταῦτα.

Τὴν δὲ Κεφαλληνίαν τετράπολιν οὖσαν οὕτ' αὐτοῦ 13
10 τὴν εἶρηκε τῷ νῦν ὀνόματι οὗτε τῶν πόλεων οὐδεμίαν,
πλὴν μᾶς εἴτε Σάμης εἴτε Σάμου, ἢ νῦν μὲν οὐκέτι
ἐστὶν, ἵχνη δ' αὐτῆς δείκνυται κατὰ μέσον τὸν πρὸς
Ἰθάκην πορθμόν· οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Σαμαῖοι καλοῦνται·
αἱ δ' ἄλλαι καὶ νῦν εἰσὶν ἔτι μικραὶ πόλεις τινές, [Πα-
15 λεῖ] Πρώτησος καὶ Κράνιοι. ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ ἄλλην
προσέκτισε Γάιος Ἀντώνιος, δὲ θεῖος Μάρκου Ἀντω-
νίου, ἡνίκα φυγὰς γενόμενος μετὰ τὴν ὑπατείαν, ἦν
συνηρξε Κικέρωνι τῷ δόγτορι, ἐν τῇ Κεφαλληνίᾳ διέ-
τριψε καὶ τὴν δλην υῆσον ὑπήκοον ἔσχεν ὡς ἴδιου
20 πτῆμα· οὐκ ἔφθη μέντοι συνοικίσας, ἀλλὰ καθόδουν
τυχὼν πρὸς ἄλλοις μεῖζοσιν ὃν κατέλυσε τὸν βίον.

Οὐκ ἄκνησαν δέ τινες τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτοῦ 14
τὴν τῷ Δουλιχίῳ φάναι, οἱ δὲ τῇ Τάφῳ, καὶ Ταφίους C.456
τοὺς Κεφαλληνίους, τοὺς δὲ αὐτοὺς καὶ Τηλεβόας, καὶ
25 τὸν Ἀμφιτρύωνα δεῦρο στρατεῦσαι μετὰ Κεφάλου τοῦ
Δηιονέως ἐξ Ἀθηνῶν φυγάδος παραληφθέντος, κα-
τασχόντα δὲ τὴν υῆσον παραδοῦναι τῷ Κεφάλῳ, καὶ
ταύτην μὲν ἐπώνυμον ἐκείνου γενέσθαι τὰς δὲ πόλεις
τῶν παίδων αὐτοῦ. ταῦτα δ' οὐχ ὅμηρικά· οἱ μὲν
30 γὰρ Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὄδυσσεϊ καὶ Λαέρτῃ, ἡ δὲ Τάφος
ὑπὸ τῷ Μέντῃ,, Μέντης Ἀγχιάλοιο δαῖφρονος εῦχομαι
,,εἰναι υἱός, ἀτὰρ Ταφίοισι φιληρέτμοισιν ἀνάσσω.“

καλεῖται δὲ νῦν Ταφιὰς ἡ Τάφος. οὐδέ τοι Ἐλλάνικος ὅμηρος Δουλίχιον τὴν Κεφαλληνίαν λέγων. τὸ μὲν γὰρ ὑπὸ Μέγητι εἰρηται καὶ αἱ λοιπαὶ Ἐχινάδες, οἵ τε ἐνοικοῦντες Ἐπειοὶ ἐξ Ἑλιδος ἀφιγμένοι· διόπερ καὶ τὸν Ὅτον τὸν Κυλλήνιον „Φυλείδεω ἔταρον μεγαθύμων 5 „ἀρχὸν Ἐπειῶν“ καλεῖ. „αὐτὰρ Ὁδυσσεὺς ἦγε Κεφαλλῆνας μεγαθύμους.“ οὗτος οὖν Δουλίχιον ἡ Κεφαλληνία καθ' Ὀμηρον οὕτε τῆς Κεφαλληνίας τὸ Δουλίχιον, ὡς Ἀνδρων φησι· τὸ μὲν γὰρ Ἐπειοὶ κατεῖχον, τὴν δὲ Κεφαλληνίαν ὅλην Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὁδυσσεῖ, 10 οἱ δὲ ὑπὸ Μέγητι. οὐδὲ Παλεῖς Δουλίχιον ὑφ' Ὀμηρον λέγονται, ὡς γράφει Φερεκύδης. μάλιστα δὲ ἐναντιοῦται Ὀμηροφ δ τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτὴν τῷ Δουλίχῳ λέγων, εἴπερ τῶν μνηστήρων „ἐκ μὲν Δουλιχίου δύω καὶ πεντήκοντα“ ἥσαν, ἐκ δὲ Σάμης „πισυρέσ τε 15 „καὶ εἶκοσιν.“ οὐ γὰρ τοῦτο ἀν εἰη λέγων, ἐξ ὅλης μὲν τόσους ἐκ δὲ μιᾶς τῶν τεττάρων παρὰ δύο τοὺς ἥμισεις. εἰ δὲ ἄρα τοῦτο δώσει τις, ἐρησόμενα τις ἀν εἰη ἡ Σάμη, ὅταν οὕτω φῇ „Δουλίχιον τε Σάμην τ' ἥδις“ „ὑλήντα Ζάκυνθον.“ 20

15 Κεῖται δὲ ἡ Κεφαλληνία κατὰ Ἀκαρνανίαν, διέχουσα τοῦ Λευκάτα περὶ πεντήκοντα (οἱ δὲ τετταράκοντά φασι) σταδίους, τοῦ δὲ Χελωνάτα περὶ δύο διηκονούτα. αὐτὴ δὲ ἐστὶν ὡς τριακοσίων τὴν περίμετρον, μακρὰ δὲ ἀνήκουσα πρὸς εὐδρον, δρεινή· μέγιστον δὲ 25 ὅρος ἐν αὐτῇ ἐν φέτῳ τὸ Διὸς Αἰνησίου λεόρον· καθ' ὃ δὲ στενωτάτη ἐστὶν ἡ υῆσος, ταπεινὸν λεθμὸν ποιεῖ ὕσθι ὑπεροκλύζεσθαι πολλάκις ἐκ θαλάττης εἰς θάλατταν· πλησίον δὲ εἰσὶ τῶν στενῶν ἐν κόλπῳ Κράνιοι τε καὶ Παλεῖς. 30

10. ante ὑπὸ: καὶ

Μεταξὺ δὲ τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡ 16
 Ἀστερία νησίον ('Αστερίς δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεται)
 ἦν ὁ μὲν Συήψιος μὴ μένειν τοιαύτην οὖσαν φησὶν ὁ
 ποιητής „λιμένες δ' ἔνι ναύλοχοι αὐτῇ ἀμφίδυμοι.“ ὁ
 δὲ Ἀπολλόδωρος μένειν καὶ νῦν, καὶ πολέχνιον λέγει^{c.457}
 ἐν αὐτῇ Ἀλακομενὰς τὸ ἐπ' αὐτῷ τῷ ισθμῷ κείμενον.

Καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς Σάμον καὶ τὴν Θρακίαν, ἦν 17
 νῦν Σαμοθράκην καλοῦμεν. τὴν δ' Ἰωνικὴν οἶδε μέν,
 ὡς εἰκός· καὶ γὰρ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰδέναι φαί-
 10 νεται· οὐκ [ἄν] ἀντιδιέστειλε δὲ τὴν ὄμωνυμίαν, περὶ
 τῆς Σαμοθράκης λέγων, τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ „ὑφοῦ
 „, ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς Σάμου ὑληέσσης, Θρηικίης“
 τοτὲ δὲ τῇ συζυγίᾳ τῶν πλησίον υῆσαν „ἐς Σάμουν ἐς
 „, τ' Ἰμβρον καὶ Λῆμνον ἀμιχθαλόεσσαν“ καὶ πάλιν
 15 „, μεσσηγύς τε Σάμοιο καὶ Ἰμβρον παιπαλοέσσης.“ ἥδει
 μὲν οὖν, οὐκ ὡνόμασε δ' αὐτήν· οὐδὲ ἐκαλεῖτο τῷ
 αὐτῷ ὄντι ματι πρότερον, ἀλλὰ Μελάμψυλλος, εἴτ' Ἀν-
 θεμίς, εἴτα Παρθενία ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Παρθε-
 νίου, ὃς Ἰμβρασος μετωνομάσθη. ἐπει οὖν κατὰ τὰ
 20 Τρωικὰ Σάμος μὲν καὶ ἡ Κεφαλληνία ἐκαλεῖτο καὶ ἡ
 Σαμοθράκη (οὐ γὰρ ἄν Ἐπάβη εἰσήγετο λέγουσα ὅτι
 τοὺς παιδας αὐτῆς „πέρνασχ“ ὃν κα λάβοι ἐς Σάμουν ἐς
 „, τ' Ἰμβρον“,), Ἰωνικὴ δ' οὐκ ἀπώκιστό πω, δῆλον ὅτι
 ἀπὸ τῶν προτέρων τινὸς τὴν ὄμωνυμίαν ἔσχεν· ἐξ ὧν
 25 κάκεῖνο δῆλον, ὅτι παρὰ τὴν ἀρχαίαν ίστορίαν ὃ λέ-
 γουσιν οἱ φήσαντες, μετὰ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν καὶ
 τὴν Τεμβρίωνος παρουσίαν ἀποίκους ἐλθεῖν ἐκ Σάμου
 καὶ ὄνομάσαι Σάμουν τὴν Σαμοθράκην, ὡς οἱ Σάμιοι
 τοῦτ' ἐπλάσαντο δόξης χάριν. πιθανότεροι δ' εἰσὶν
 30 [οἱ] ἀπὸ τοῦ σάμους καλεῖσθαι τὰ ὕψη φήσαντες εὐρῆ-
 σθαι τοῦτο τοῦνομα τὴν υῆσον· ἐντεῦθεν γάρ „, ἐφαί-
 „, νετο πᾶσα μὲν Ἰδη, φαίνετο δὲ Πριάμοιο πόλις καὶ

„νῆες Ἀχαιῶν.“ τινὲς δὲ Σάμον καλεῖσθαι φασιν ἀπὸ Σαῖων, τῶν οἰκούντων Θρακῶν πρότερον, οἵ καὶ τὴν ἥπειρον ἔσχον τὴν προσεχῆ, εἴτε οἱ αὐτοὶ τοῖς Σαπαιοῖς ὄντες ἢ τοῖς Σιντοῖς, οὓς Σίντιας καλεῖ ὁ ποιητής, εἰδ' ἔτεροι. μέμνηται δὲ τῶν Σαῖων Ἀρχιλόχος „ἀσπί-
„δα μὲν Σαῖων τὶς ἀνείλετο, τὴν παρὰ θάμνῳ ἐντος
„ἀμώμητον κάλλικον οὐκ ἐθέλων.“

- 18 Δοιπὴ δ' ἔστι τῶν ὑπὸ τῷ Ὁδυσσεῖ τεταγμένων νήσων ἡ Ζάκυνθος, μικρῷ πρὸς ἐσπέραν μᾶλλον τῆς 458 Κεφαλληνίας πεκλιμένη τῆς Πελοποννήσου, συνά-10 πτουσα δ' αὐτῇ πλέον. ἔστι δ' ὁ κύκλος τῆς Ζακύνθου σταδίων ἔκηκοντα· διέχει δὲ καὶ τῆς Κεφαλλη-
νίας ὅσον ἔκηκοντα σταδίους, ύλαδης μὲν εὔκαιρος δέ· καὶ ἡ πόλις ἀξιόλογος, διμώνυμος. ἐντεῦθεν εἰς Ἐσπερίδας τῆς Λιβύης στάδιοι τρισχίλιοι ἔξακόσιοι. 15
19 Καὶ ταύτης δὲ καὶ τῆς Κεφαλληνίας πρὸς ἦν τὰς Ἐχινάδας ἰδρυσθαι νήσους συμβέβηκεν, ἃν τό τε Δου-
λιχίον ἔστι (καλοῦσι δὲ νῦν Δολίχαν) καὶ αἱ Ὁξεῖαι κα-
λούμεναι, ἃς Θοὰς ὁ ποιητής εἶπε· καὶ ἡ μὲν Δολίχα 20
κεῖται κατὰ Οίνιαδας καὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἀχελώου, διέχουσα Ἀράξου τῆς τῶν Ἡλείων ἄκρας ἔκατον, αἱ
λοιπαὶ δ' Ἐχινάδες (πλείους δ' εἰσὶ, πᾶσαι λυπραὶ καὶ
τραχεῖαι) πρὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Ἀχελώου, πεντεκαΐδεκα σταδίους ἀφεστῶσα ἡ ἀπωτάτω, ἡ δ' ἐγγυτάτω πέντε,
πελαγίζουσαι πρότερον, ἀλλ' ἡ χοῦς τὰς μὲν ἔξηπει-25
ρωκεν αὐτῶν ἥδη, τὰς δὲ μέλλει πολλὴ καταφερομένη.
ἥπερ καὶ τὴν Παραχελωίτιν καλούμενην χώραν, ἥν
ὁ ποταμὸς ἐπικλύζει, περιμάχητον ἐποίει τὸ παλαιόν
τοὺς ὄφους συγκέουσα ἀεὶ τοὺς ἀποδεικνυμένους τοῖς 30
Ἀκαρνᾶσι καὶ τοῖς Αἰτωλοῖς· ἐκρίνοντο γὰρ τοῖς ὅπλοις

10. ante τῆς: καὶ 21. ante αἱ: καὶ 23. ante πρὸ: καὶ

οὐκ ἔχοντες διαιτητάς, ἐνίκων δ' οἱ πλέον δυνάμενοι· ἀφ' ἣς αἰτίας καὶ μῆδος ἐπλάσθη τις, ὡς Ἡρακλέους καταπολεμήσαντος τὸν Ἀχελῶν καὶ ἐνεγκαμένου τῆς νίκης ἄθλου τὸν Δηιανείρας γάμον τῆς Οἰνέως θυ-
 5 γατόδος, ἦν πεποίηκε Σοφοκλῆς τοιαῦτα λέγοντα
 „μηνηστὴρ γὰρ ἦν μοι ποταμός, Ἀχελῶν λέγω, δις μ'
 „ἐν τοισὶν μυρφαῖσιν ἔξήτει πατόδος, φοιτῶν ἐναργῆς
 „ταῦρος, ἄλλοτ' αἰόλος δράκων ἐλικτός, ἄλλοτ' ἀν-
 δρείω κύτει βούπρῳδος.“ προστιθέασι δ' ἔνιοι καὶ
 10 τὸ τῆς Ἀμαλθείας τοῦτ' εἶναι λέγοντες κέρας, δὲ ἀπέ-
 κλασσεν ὁ Ἡρακλῆς τοῦ Ἀχελῶν καὶ ἔδωκεν Οἰνεῖ τῷν
 γάμων ἔδνον· οἱ δὲ εἰκάζοντες ἔξ αὐτῶν τὰλληθὲς ταύ-
 ρῳ μὲν ἑοικότα λέγεσθαι τὸν Ἀχελῶν φασι, καθάπερ
 καὶ τοὺς ἄλλους ποταμούς, ἀπό τε τῶν ἥχων καὶ τῶν
 15 κατὰ τὰ φεῖθρα καμπῶν, ἃς καλοῦσι κέρατα, δράκοντι
 δὲ διὰ τὸ μῆκος καὶ τὴν σκολιότητα, βούπρῳδον δὲ διὰ
 τὴν αὐτὴν αἰτίαν δι' ἦν καὶ ταυρῷπόν· τὸν Ἡρακλέα
 δὲ καὶ ἄλλας εὐεργετικὸν ὄντα καὶ τῷ Οἰνεῖ κηδεύ-
 σοντα παραχώμασί τε καὶ ποιητείας βιάσασθαι τὸν
 20 ποταμὸν πλημμελῶς φέοντα καὶ πολλὴν τῆς Παραχε-
 459 λωτίδος ἀναψύξαι χαριζόμενον τῷ Οἰνεῖ· καὶ τοῦτ'
 εἶναι τὸ τῆς Ἀμαλθείας κέρας. τῷν μὲν οὖν Ἐχινάδων
 καὶ τῷν Ὁξειῶν κατὰ τὰ Τρωικὰ Μέγητα ἄρχειν φησὶν
 "Ομηρος „δὲ τίκτε Διὸς φίλος ἵππότα Φυλεύς, δις ποτε
 25 „Δουλίχιονδ' ἀπενάσσατο, πατὸν χολωθείς.“ πατὴρ δ'
 ἦν Αὔγεας ὁ τῆς Ἡλείας καὶ τῷν Ἐπειῶν ἄρχων· ὥστε
 Ἐπειοὶ τὰς νήσους ταύτας εἶχον οἱ συνεξάραντες εἰς τὸ
 Δουλίχιον τῷ Φυλεῖ.

Ἄλι δὲ τῶν Ταφίων νῆσοι, πρότερον δὲ Τηλεβοῶν, 20
 30 ὅν ἦν καὶ ἡ Τάφος νῦν δὲ Ταφιὰς καλούμενη, χωρὶς
 ἥσαν τούτων οὐ τοῖς διαστήμασιν (ἔγγυς γὰρ κεῖνται)
 ἀλλὰ ὑφ' ἐτέροις ἥγεμόσι ταπτόμεναι, Ταφίοις καὶ

Τηλεβόαις· πρότερον μὲν οὖν Ἀμφιτρύων ἐπιστρατεύσας αὐτοῖς μετὰ Κεφάλου τοῦ Δημονέως ἐξ Ἀθηνῶν φυγάδος, ἐκείνῳ τὴν ἀρχὴν παρέδωκεν αὐτῶν· ὁ δὲ ποιητὴς ὑπὸ Μέντη τετάχθαι φησὶ ληστὰς οὐλῶν αὐτούς, καθάπερ καὶ τοὺς Τηλεβόας ἄπαντάς φασι. 5 τὰ μὲν περὶ τὰς νήσους τὰς πρὸ τῆς Ἀκαρνανίας ταῦτα.

21 Μεταξὺ δὲ Λευκάδος καὶ τοῦ Ἀμφρακικοῦ κόλπου λιμνοθάλαττά ἔστι Μυρτούντιον λεγομένη. ἀπὸ δὲ Λευκάδος ἔξης Πάλαιρος καὶ Ἀλυξία τῆς Ἀκαρνανίας εἰσὶ πόλεις, ὅν ἡ Ἀλυξία πεντεκαίδεκα ἀπὸ θαλάττης 10 διέχει σταδίους, καθ' ᾧ ἔστι λιμὴν Ἡρακλέους λερὸς καὶ τέμενος, ἐξ οὗ τοὺς Ἡρακλέους ἄθλους, ἕογα Λυσίππου, μετήνεγκεν εἰς Ρώμην τῶν ἡγεμόνων τις, παρὰ τόπου κειμένους διὰ τὴν ἐρημίαν. εἴτα ἄκρα Κριθάρη καὶ [αἱ] Ἐγινάδεις καὶ πόλις Ἀστακός, διμώνυμος 15 τῇ περὶ Νικομήδειαν καὶ τὸν Ἀστακηνὸν κόλπον (καὶ ἡ Κριθάρη δ' ὁ διμώνυμος πολίχνη τῶν ἐν τῇ Θρακίᾳ Χερρονήσῳ)· πάντα δ' εὐλίμενα τὰ μεταξύ· εἴτε Ὁλυάδαι καὶ δ' Ἀχελῶος· εἴτα λίμνη τῶν Οἰνιαδῶν Μελίτη οὐαλουμένη, μῆκος μὲν ἔχουσα τριάκοντα σταδίων 20 πλάτος δὲ εἰκοσι, καὶ ἄλλη Κυνία διπλασία ταύτης καὶ μῆκος καὶ πλάτος, τρίτη δ' Οὔρα πολλῷ τούτων μικροτέρα· ἡ μὲν οὖν Κυνία καὶ ἐκδίωσιν εἰς τὴν θάλατταν, αἱ λοιπαὶ δὲ ὑπέροχενται ὅσον ἡμιστάδιον· εἴθ' ὁ Εὔηνος, εἰς δὲν ἀπὸ τοῦ Ἀκτίου στάδιοι ἔξακό- 25 σιοι ἐβδομήκοντα· μετὰ δὲ τὸν Εὔηνον τὸ δρός ἡ Χαλκίς, ἡνὶ Χαλκίαν εἰρηκεν Ἀρτεμίδωρος· εἴθ' ἡ Πλευρών, εἴθ' ἡ Ἀλίκυρνα οώμη, ἡς ὑπέροχενται Καλυδὼν ἐν τῇ μεσογαίᾳ σταδίοις τριάκοντα· περὶ δὲ τὴν Καλυδῶν ἔστι τὸ τοῦ Λαφρίου Ἀπόλλωνος λερόν· εἴθ' ὁ Ταφιασ-

30

σὸς τὸ ὄρος, εἶτα Μακυνία πόλις, εἶτα Μολύκρεια καὶ C.460 πλησίον τὸ Ἀντίρριον τὸ τῆς Αἴτωλίας ὄριον καὶ τῆς Λοκρίδος, εἰς ὅ ἀπὸ τοῦ Εὐήνου στάδιοι περὶ ἑκατὸν εἰκοσιν. Ἀρτεμίδωρος μὲν [οὐχ] οὕτω περὶ τῆς εἴτε Χαλκίδος εἴτε Χαλκίας τοῦ ὄρους, μεταξὺ τοῦ Ἀχελώου καὶ τῆς Πλευρῶνος ἰδρύων αὐτὴν, Ἀπολλόδωρος δέ, ώς πρότερον εἶπον, ὑπὲρ τῆς Μολυκρείας καὶ τὴν Χαλκίδα καὶ τὸν Ταφιασσόν· καὶ τὴν δὲ Καλυδῶνα μεταξὺ ἰδρῦσθαι φησι τῆς τε Πλευρῶνος καὶ τῆς Χαλκίδος· εἰ μὴ ἄρα ἔτερον θέτειον τὸ πρὸς Πλευρῶνι ὄρος Χαλκίαν καλούμενον, ἔτερον δὲ τὴν Χαλκίδα τὴν πρὸς Μολυκρείᾳ. ἔστι δέ τις καὶ πρὸς τῇ Καλυδῶνι λιμνη μεγάλη καὶ εὔοψος, ἣν ἔχουσιν οἱ ἐν Πάτραις Ρωμαῖοι.

15 Τῆς δὲ μεσογαίας κατὰ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν Ἐρυ- 22 σιχαίους τινάς φησιν Ἀπολλόδωρος λέγεσθαι, ὡν Ἀλκμὰν μέμυηται,,οὐδὲ Ἐρυσιχαῖος, οὐδὲ ποιμήν, ἀλλὰ „Σαρδίων ἀπ’ ἀκρᾶν.“ κατὰ δὲ τὴν Αἴτωλίαν ἦν Ὡλενος, ἦς ἐν τῷ Αἴτωλικῷ καταλόγῳ μέμυηται”Ομηρος, 20 ἶχνη δ’ αὐτῆς λείπεται μόνον ἐγγὺς τῆς Πλευρῶνος ὑπὸ τῷ Ἀρακύνθῳ· ἦν δὲ καὶ Λυσιμάχεια πλησίον, ἥφαντισμένη καὶ αὐτή, κειμένη πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ νῦν μὲν Λυσιμαχείᾳ πρότερον δὲ Ὄδρα, μεταξὺ Πλευρῶνος καὶ Ἀρσινόης πόλεως, ἡ κώμη μὲν ἦν πρότερον κα- 25 λουμένη Κωνώπα, κτίσμα δὲ ὑπῆρξεν Ἀρσινόης τῆς Πτολεμαίου τοῦ δευτέρου γυναικὸς ἀμα καὶ ἀδελφῆς, εὐφυῶς ἐπικειμένη πως τῇ τοῦ Ἀχελώου διαβάσει· παραπλήσιον δέ τι καὶ ἡ Πυλήνη τῷ Ὁλένῳ πέπονθεν. ὅταν δὲ φῇ τὴν Καλυδῶνα αἰπεῖάν τε καὶ πετρήεσσαν, 30 ἀπὸ τῆς χώρας δευτέρου· εἴρηται γὰρ ὅτι τὴν χώραν

δίχα διελόντες τὴν μὲν ὁρεινὴν καὶ ἐπίκτητον τῇ Καλυδῶνι προσένειμαν, τὴν πεδιάδα δὲ τῇ Πλευρῶνι.

23 Νῦν μὲν οὖν ἐκπεπόνηται καὶ ἀπηγόρευκεν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἡ τ' Ἀκαρνανία καὶ Αἰτωλοί, καθάπερ καὶ πολλὰ τῶν ἄλλων ἐθνῶν· πλεῖστον μέν-5 τοι χρόνον συνέμειναν Αἰτωλοί μετὰ τῶν Ἀκαρνάνων πρός τε τοὺς Μακεδόνας καὶ τοὺς ἄλλους Ἑλληνας, ὅστατα δὲ καὶ πρὸς Ρωμαίους περὶ τῆς αὐτονομίας ἀγωνιζόμενοι. ἐπεὶ δὲ καὶ Ὁμηρος αὐτῶν ἐπὶ πολὺ μέμνηται καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταί τε καὶ συγγραφεῖς, τὰ μὲν 10 εὐσήμως τε καὶ ὁμολογουμένως, τὰ δ' ἡττον γνωρίμως (καθάπερ τοῦτο καὶ ἐν τοῖς ἥδη λεχθεῖσι περὶ αὐτῶν ἀποδέδεικται), προσληπτέον καὶ τῶν παλαιοτέρων τινὰ τῶν ἀρχῆς ἔχοντων τάξιν ἢ διαπορουμένων.

2.461

24 Εὐθύς ἐπὶ τῆς Ἀκαρνανίας ὅτι μὲν αὐτὴν ὁ Λαέρ-15 της καὶ οἱ Κεφαλλῆνες κατεκτήσαντο εἰρηται ἡμῖν, τίνων δὲ κατεχόντων πρότερον πολλοὶ μὲν εἰρήκασιν· οὐχ ὁμολογούμενα δὲ εἰπόντων ἐπιφανῆ δέ, ἀπολείπεται τις λόγος ἡμῖν διαιτητικὸς περὶ αὐτῶν. φασὶ γὰρ τοὺς Ταφίους τε καὶ Τηλεβόας λεγομένους οἰκεῖν τὴν 20 Ἀκαρνανίαν πρότερον, καὶ τὸν ἡγεμόνα αὐτῶν Κέφαλον τὸν κατασταθέντα ὑπὸ Ἀμφιτρύωνος κύριον τῶν περὶ τὴν Τάφον νήσων κυριεῦσαι καὶ ταύτης τῆς χώρας· ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Λευκάτα νομιζόμενον ἄλμα τούτῳ πρώτῳ προσμυθεύοντιν, ὡς προεί-25 φηται. ὁ δὲ ποιητὴς ὅτι μὲν ἥρχον οἱ Τάφιοι τῶν Ἀκαρνάνων πρὸν ἡ τοὺς Κεφαλλῆνας καὶ τὸν Λαέρτην ἐπελθεῖν οὐ λέγει, διότι δ' ἡσαν φίλοι τοῖς Ἰδανησίοις λέγει, ὥστ' ἡ οὐδ' ὅλως ἐπῆρξαν τῶν τόπων κατ' αὐτόν, ἡ ἐκόντες παρεχώρησαν ἡ καὶ σύνοικοι ἐγέ-30 νοντο. φαίνονται δὲ καὶ ἐκ Λακεδαιμονός τινες ἐποιήσαι τὴν Ἀκαρνανίαν, οἱ μετ' Ἰκαρίου τοῦ Πηνελό-

πης πατρός· καὶ γὰρ τοῦτον καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς
 ξῶντας παραδίδωσιν δὲ ποιητὴς κατὰ τὴν Ὀδύσσειαν
 „οἱ πατρὸς μὲν ἐς οἶκον ἀπερρίγασι νέεσθαι Ἰηαρίου,
 „ὣς καὶ αὐτὸς ἐεδυώσασι τὸ θύγατρα.“ καὶ περὶ τῶν
 5 ἀδελφῶν „ἥδη γάρ φα πατήρ τε κασίγνητοί τε κέλον-
 „ται Εὐρυμάχῳ γήμασθαι.“ οὕτε γὰρ ἐν Λακεδαιμονι
 πιθανὸν αὐτοὺς οἰκεῖν (οὐ γὰρ ἂν ὁ Τηλέμαχος παρὰ
 Μενελάῳ κατήγετο ἀφιγμένος ἐκεῖσε), οὕτ' ἄλλην οἴ-
 κησιν παρειλήφαμεν αὐτῶν. φασὶ δὲ Τυνδάρεων καὶ
 10 τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν Ἰηαρίου ἐκπεσόντας ὑπὸ Ἰπ-
 ποκόωντος τῆς οἰκείας ἐλθεῖν παρὰ Θέστιου τὸν τῶν
 Πλευρῶν ἄρχοντα, καὶ συγκατακήσασθαι τὴν πέ-
 ραν τοῦ Ἀχελώου πολλὴν ἐπὶ μέρει τὸν μὲν οὖν Τυν-
 15 θάρεων ἐπανελθεῖν οἰκαδε γήμαντα Δήδαν τὴν τοῦ
 Θεστίου θυγατέρα, τὸν δὲ Ἰηαρίου ὑπομεῖναι τῆς Ἀκαρ-
 νανίας ἔχοντα μέρος, καὶ τεκνοποιήσασθαι τὴν τε Πη-
 νελόπην ἐκ Πολυκάστης τῆς Λυγαίου θυγατρὸς καὶ
 τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς. ἡμεῖς μὲν οὖν ἀπεδείξαμεν ἐν
 τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν καὶ τοὺς Ἀκαρνανίας καταριθ-
 20 μουμένους καὶ μετασχόντας τῆς ἐπὶ Ἰλιον στρατείας,
 ἐν οἷς κατωνομάζοντο οἵ τε τὴν ἀκτὴν οἰκοῦντες καὶ
 ἔτι, „οἱ τέ ἥπειρον ἔχον ἥδ' ἀντιπέραι ἐνέμοντο.“ οὕτε
 δέ ἡ ἥπειρος Ἀκαρνανία ὠνομάζετο πω οὕθ' ἡ ἀκτὴ
 Λευκάς.

25 "Ἐφορος δέ οὖ φησι συστρατεῦσαι. Ἀλιμένωνα γὰρ 25 C.462
 τὸν Ἀμφιάρεω στρατεύσαντα μετὰ Διομήδους καὶ τῶν
 ἄλλων Ἐπιγόνων καὶ κατορθώσαντα τὸν πρὸς Θηβαί-
 ους πόλεμον συνελθεῖν Διομήδει καὶ τιμωρήσασθαι
 μετ' αὐτοῦ τοὺς Οἰνέως ἐχθρούς, παραδόντα δέ ἐκεί-
 30 νοις τὴν Αἰτωλίαν αὐτὸν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν παρελ-
 θεῖν καὶ ταύτην καταστρέψεσθαι. Ἀγαμέμνονα δέ ἐν
 τούτῳ τοῖς Ἀργείοις ἐπιθέμενον κρατῆσαι δαδίως, τῶν

πλείστων τοῖς περὶ Διομήδη συνακολουθησάντων. μικρὸν δ' ὑστερούν ἐπιπεδουσῆς τῆς ἐπ᾽ Ἰλιον ἔξόδου, δεισαντα μὴ ἀπόντος αὐτοῦ κατὰ τὴν στρατείαν ἐπανελθόντες οἶκαδε οἱ περὶ τὸν Διομήδη (καὶ γὰρ ἀκούεσθαι μεγάλην περὶ αὐτὸν συνεστραμμένην δύναμιν) κατά- 5 σχοιεν τὴν μάλιστα προσήκουσαν αὐτοῖς ἀρχήν (τὸν μὲν γὰρ Ἀδράστου τὸν δὲ τοῦ πατρὸς εἶναι οὐληρούμον), ταῦτα δὴ διανοηθέντα καλεῖν αὐτοὺς ἐπὶ τε τὴν τοῦ Ἀργούς ἀπόληψιν καὶ τὴν κοινωνίαν τοῦ πολέμου· τὸν μὲν οὖν Διομήδη πεισθέντα μετασχεῖν τῆς στρα- 10 τείας, τὸν δὲ Ἀλκμέωνα ἀγανακτοῦντα μὴ φροντίσαι· διὰ δὲ τοῦτο μηδὲ κοινωνῆσαι τῆς στρατείας μόνους τοὺς Ἀκαρνᾶνας τοῖς Ἑλλησι· τούτοις δ', ὡς εἰκός, τοῖς λόγοις ἐπακολουθησάντες οἱ Ἀκαρνᾶνες σοφίσασθαι λέγονται Ῥωμαίους καὶ τὴν αὐτονομίαν παρ' 15 αὐτῶν ἔξανύσασθαι, λέγοντες ὡς οὐ μετάσχοιεν μόνοι τῆς ἐπὶ τοὺς προγόνους τοὺς ἐκείνων στρατείας· οὕτε γὰρ ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ φράζοιντο οὕτε ἴδιᾳ· οὐδὲ γὰρ ὅλως τοῦνομα τοῦτ' ἐμφέροιτο ἐν τοῖς ἔπεσιν.

26 ‘Ο μὲν οὖν Ἐφορος πρὸ τῶν Τρωικῶν ἥδη τὴν Ἀκαρνανίαν ὑπὸ τῷ Ἀλκμέωνι ποιήσας, τό τε Ἀργος τὸ Ἀμφιλοχικὸν ἐκείνου κτίσμα ἀποφαίνει, καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν ὄνομάσθαι φησὶν ἀπὸ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ Ἀκαρνανος, Ἀμφιλόχους δὲ ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Ἀμφιλόχου· 26 ὅστε ἀκίπτει εἰς τὰ παρὰ τὴν ὁμηρικὴν ἵστορίαν λεγόμενα. Θουκυδίδης δὲ καὶ ἄλλοι τὸν Ἀμφιλόχον ἀπὸ τῆς στρατείας τῆς Τρωικῆς ἐπανιόντα, οὐκ ἀρεσκόμενον τοῖς ἐν Ἀργει, ταύτην οἰκῆσαι φασι τὴν χώραν, οἱ μὲν κατὰ διαδοχὴν ἥκοντα τῆς τοῦ ἀδελφοῦ δυναστείας, οἱ δὲ ἄλλως. καὶ ἴδιᾳ μὲν περὶ Ἀκαρνάνων ταῦτα λέγοντ’ ἄν, κοινῇ δὲ ὅσα καὶ τοῖς Αἰτωλικοῖς ἐπιπλέκεται νῦν

έροῦμεν, τὰ Αἰτωλικὰ λέγοντες ἐφεξῆς ὅσα προσλα-
βεῖν τοῖς εἰρημένοις ἔγνωμεν.

Τοὺς δὲ Κουρῆτας τῶν μὲν Ἀκαρνᾶσι τῶν δ' Αἰτωλοῖς προσνεμόντων, καὶ τῶν μὲν ἐκ Κορήτης τῶν δ'
5 ἐξ Εὐβοίας τὸ γένος εἶναι φασκόντων, ἐπειδὴ καὶ Ὁμηρος αὐτῶν μέμνηται, τὰ παρ' ἐκείνου πρῶτον ἐπισκεψάμενον. οἶνται δ' αὐτὸν λέγειν Αἰτωλοὺς μᾶλλον ἢ
Ἀκαρνᾶνας, εἴπερ οἱ Πορθανίδαι ἥσαν, „Ἄγριος ἡδὲ
„Μέλλας, τρίταος δ' ἦν ἵππότα Οἰνεύς· φίλεον δ' ἐν
10 „Πλευρῶνι καὶ αἰκεινῇ Καλυδῶνι.“ αὗται δ' εἰσὶν Αἰτωλικαὶ πόλεις ἀμφότεραι καὶ φέρονται ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ ὡστε, ἐπεὶ τὴν Πλευρῶνα οἰκοῦντες φαίνονται καὶ κατ' αὐτὸν οἱ Κουρῆτες, Αἰτωλοὶ ἂν εἰεν. οἱ δ' ἀντιλέγοντες τῷ τρόπῳ τῆς φράσεως παράγονται διατανθέας „Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ
„μενεχάρμαι ἀμφὶ πόλιν Καλυδῶνα.“ οὐδὲ γὰρ ἀν κυρίως εἰπεν οὕτως, „ἐμάχοντο Βοιωτοὶ καὶ Θηβαῖοι πρὸς ἀλλήλους“ οὐδὲ „Ἀργεῖοι καὶ Πελοποννήσιοι.“ ἐδείχθη δ' ἐν τοῖς ἐμπροσθεν διτὶ καὶ διμηρικὸν τὸ
20 ἔθος τοῦτο τῆς φράσεως καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων ποιητῶν τετριμένον· τοῦτο μὲν οὖν εὐαπολόγητον. ἐκεῖνοι δὲ λεγέτωσαν πᾶς ἀν μὴ ὁμοεθνεῖς διτας μηδὲ Αἰτωλοὺς τοὺς Πλευρῶνίους ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς κατέλεγεν.

“Ἐφορος δὲ τοὺς Αἰτωλοὺς εἰπὼν ἔθνος εἶναι μηδεπώποτε γεγενημένον ὑφ' ἐτέφοις, ἀλλὰ πάντα τὸν μημονευόμενον χρόνον μεμενηκὸς ἀπόρθητον διά τε τὰς δυσχωρίας τῶν τόπων καὶ διὰ τὴν περὶ τὸν πόλεμον ἀσκησιν, ἐξ ἀρχῆς μὲν φησιν ἀπισκαν τὴν χώραν Κουρῆτας κατασχεῖν, ἀφικομένου δ' ἐξ Ἡλιδος Αἰτωλοῦ τοῦ Ἔνδυμιῶνος καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐτῶν, τοὺς μὲν Κουρῆτας εἰς τὴν νῦν καλουμένην Ἀκαρναίαν ὑποχωρῆσαι, τοὺς δ' Αἰτωλοὺς συγκατελθόν-

τας Ἐπειοῖς τὰς ἀρχαιοτάτας πτίσαι τῶν ἐν Αἰτωλίᾳ πόλεων, δεκάτη δ' ὕστερον γενεᾶ τὴν Ἡλιν ὑπὸ Ὁξύλου τοῦ Αἴμονος συνοικισθῆναι περαιωθέντος ἐκ τῆς Αἰτωλίας. παρατίθησι δὲ τούτων μαρτύρια τὰ ἐπιγράμματα, τὸ μὲν ἐν Θέρμοις τῆς Αἰτωλίας, ὃπου τὰς ἀρχαιοεσίας ποιεῖσθαι πάτριον αὐτοῖς ἔστιν, ἐγκεχαραγμένον τῇ βάσει τῆς Αἰτωλοῦ εἰκόνος,, χώρης οἰκιστῆροι, παρ' Ἀλφειοῦ ποτε δίναις θρεφθέντα, σταδίων γείτονος Ὄλυμπιάδος, Ἐνδυμίανος παῖδ' Αἰτωλὸν τόνδ' ἀνέθηκαν Αἰτωλοί, σφετέρας μνῆμ' ἀρε-
τῆς ἐσορᾶν.“ τὸ δ' ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν Ἡλείων ἐπὶ τῷ Ὁξύλου ἀνδριάντι „Αἰτωλός ποτε τόνδε λιπὼν αὐτό-
χθονα δῆμον πτήσατο Κουρῆτιν γῆν δορὶ πολλὰ κα-
0.464, μάν· τῆς δ' αὐτῆς γενεᾶς δεκατόσπορος Αἴμονος υἱός
„Οξυλος ἀρχαίην ἔκτισε τήνδε πόλιν.“ 15

3 Τὴν μὲν οὖν συγγένειαν τὴν πρὸς ἄλλήλους τῶν τε Ἡλείων καὶ τῶν Αἰτωλῶν δρῦῶς ἐπισημαίνεται διὰ τῶν ἐπιγραμμάτων, ἔξομολογουμένων ἀμφοῖν οὐ τὴν συγγένειαν μόνον ἀλλὰ καὶ τὸ ἀρχηγέτας ἄλλήλων εἶναι· δι' οὗ καλῶς ἔξελέγχει ψευδομένους τοὺς φάσκον-
τας τῶν μὲν Αἰτωλῶν ἀποίκους εἶναι τοὺς Ἡλείους,
μὴ μέντοι τῶν Ἡλείων τοὺς Αἰτωλούς. τὴν δ' ἀνομολογίαν τῆς γραφῆς καὶ τῆς ἀποφάσεως φαίνεται τὴν αὐτὴν ἐπιδεδειγμένος κάνταῦθα ἥνπερ ἐπὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Δελφοῖς παρεστήσαμεν. εἰπὼν γὰρ ἀπόδο-
θητον ἐκ τοῦ μημονευομένου χρόνου παντὸς τὴν Αἰτωλίαν, εἰπὼν δὲ καὶ ἐξ ἀρχῆς τὴν χώραν ταύτην τοὺς Κουρῆτας κατασχεῖν ὥφειλε μὲν τοῖς εἰρημένοις ἀκόλουθον τοῦτο [ἐπι]φέρειν, ὅτι οἱ Κουρῆτες διέμειναν ἔως εἰς αὐτὸν κατέχοντες τὴν Αἰτωλίαν γῆν· οὕτω γὰρ 30

έμελλεν ἀπόρθητος τε καὶ οὐδέποτε ὑπ' ἄλλοις γεγο-
νυῖα ὁρθῶς λεχθῆσεοθαί. ὁ δ' ἐγλαυθόμενος τῆς ὑπο-
σχέσεως οὐ τοῦτ' ἐπιφέρει ἀλλὰ τούναντίου, ως ἀφι-
κομένου ἐξ Ἡλιδος Αἰτωλοῦ καὶ τοῖς πολέμοις ιδα-
β τοῦντος αὐτῶν οἱ Κουρῆτες ἀπῆλθον εἰς τὴν Ἀκαρνα-
νίαν· τί οὖν ἄλλο πορθήσεως ἵδιον ἢ τῷ πολέμῳ
ικρατηθῆναι καὶ τὴν χώραν ἐκλιπεῖν; τοῦτο δὲ καὶ τὸ
ἐπίγραμμα μυρτυφεῖ τὸ παρὰ τοῖς Ἡλείοις· ὁ γάρ „Αἰ-
τωλός“ φησί „κτήσατο Κουρῆτιν γῆν δορὶ πολλὰ κα-
10 „μάν.“

”Ισως δή τις ἂν φαίη λέγειν αὐτὸν ἀπόρθητον τὴν 4
Αἰτωλίαν ἀφ' οὐ τοῦνομα τοῦτ' ἔσχε μετὰ τὴν Αἰτω-
λοῦ παρουσίαν· ἀλλ' ἀφήρηται καὶ [τούτου] τοῦ νοή-
ματος τὸν λόγον, φήσας ἐν τοῖς ἐφεξῆς τὸ μὲν πλεῖστον
15 τοῦ λαοῦ τοῦ διαμένοντος ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς τοῦτο εἰ-
ναι τὸ τῶν Ἐπειῶν, συμμιχθέντων δ' αὐτοῖς ὕστερον
Αἰολέων τῶν ἀμα Βοιωτοῖς ἐκ Θετταλίας ἀναστάντων
κοινῇ μετὰ τούτων τὴν χώραν κατασχεῖν. ἀρ' οὖν ἔστι
[πιστὸν] χωρὶς πολέμου τὴν ἀλλοτρίαν ἐπελθόντας
20 συγκατανείμασθαι τοῖς ἔχουσι μηδὲν δεομένοις κοινω-
νίας τοιαύτης; ἡ τοῦτο μὲν οὐ πιστόν, τὸ δὲ ικρατου-
μένοις τοῖς ὄπλοις ἐπ' ἶσοις συμβῆναι πιστόν; τέ οὖν
ἄλλο πόρθησις ἢ τὸ ικρατεῖσθαι τοῖς ὄπλοις; καὶ Ἀπολ-
λόδωρος δ' εἰρηνευ ἐκ τῆς Βοιωτίας ἐπελθόντας^{Ταν-}
25 τας ἴστορεῖσθαι καὶ ἐποίκους τοῖς Αἰτωλοῖς γενομέ-
νους· ὁ δ' ὥσπερ καταρρευκὼς ἐπιλέγει διότι ταῦτα
καὶ τὰ τοιαῦτα διακριβοῦν εἰώθαμεν, ὅταν ἢ τι τῶν
πραγμάτων ἢ παντελῶς ἀπορούμενον ἢ ψευδῆ δό-
ξαν ἔχον.

30 Τοιοῦτος δ' ἦν Ἔφορος ἐτέρων ὅμως ιφείττων^{C.465} 5

16. post Ἐπειῶν: λέγων
STRABO II.

ἐστι· καὶ αὐτὸς ὁ ἐσπουδασμένως οὗτος ἐπαινέσας αὐτὸν Πολύβιος καὶ φήσας περὶ τῶν Ἑλληνικῶν καλῶς μὲν Εῦδοξον, κάλλιστα δὲ Ἐφορον ἔξηγεῖσθαι περὶ πτίσεων συγγενειῶν μεταναστάσεων ἀρχηγετῶν,,ἥμεῖς „δε“ φησί „τὰ νῦν ὅντα δηλώσομεν καὶ περὶ θέσεως δ „τόπων καὶ διαστημάτων· τοῦτο γάρ ἐστιν οἰκειότατον χωρογραφίᾳ.“ ἀλλὰ μὴν σύ γε, ὡς Πολύβιε, δ τὰς λαοδογματικὰς ἀποφάσεις περὶ τῶν διαστημάτων εἰσάγων οὐκ ἐν τοῖς ἔξι τῆς Ἑλλάδος μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς Ἑλληνικοῖς, * καὶ διδοὺς εὐθύνας τὰς μὲν Ποσει- 10 δωνίδης τὰς δὲ Ἀρτεμιδώρῳ τὰς δὲ ἄλλοις πλείοσι. καὶ ἡμῖν οὖν συγγνώμην καὶ οὐ δυσχεραίνειν δεῖ παρὰ τῶν τοιούτων μεταφέρουσι τὴν πολλὴν ἴστορίαν ἐάν τι πταίωμεν, ἀλλ’ ἀγαπᾶν ἐὰν τὰ πλείω τῶν εἰρημένων ἐτέροις ἀμεινον λέγωμεν ἢ τὰ παραλειφθέντα κατ’ 15 ἄγνοιαν προστιθῶμεν.

6 Περὶ δὲ Κουρῆτων ἔτι καὶ τοιαῦτα λέγεται, τὰ μὲν ἔγγυτέρω ὅντα τῆς περὶ Αἴτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων ἴστορίας τὰ δὲ ἀπωτέρω· ἔγγυτέρω μὲν τὰ τοιαῦτα οἴα προειρηται, ὅτι τὴν χώραν ἥ νῦν Αἴτωλα καλεῖται 20 Κουρῆτες φίκουν, ἐλθόντες δὲ οἱ Αἴτωλοι μετὰ Αἴτωλοῦ τούτους ἐξέβαλον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν· καὶ ἔτι τὰ τοιαῦτα, ὅτι τὴν Πλευρωνίαν ὑπὸ Κουρῆτων οἰκουμένην καὶ Κουρῆτιν προσαγορευομένην Αἰολεῖς ἐπελθόντες ἀφείλοντο, τοὺς δὲ κατέχοντας ἐξέβαλον. Ἀρ- 25 χέμαχος δὲ ὁ Εὐθοεύς φησι τοὺς Κουρῆτας ἐν Χαλκίδι συνοικῆσαι, συνεχῶς δὲ περὶ τοῦ Αηλάντου πεδίου πολεμοῦντας, ἐπειδὴ οἱ πολέμιοι τῆς κόμης ἐδράτοντο τῆς ἐμπροσθεν καὶ κατέσπων αὐτούς, ὅπισθεν κομῶντας γενέσθαι, τὰ δὲ ἐμπροσθεν κείρεσθαι· διὸ 30 καὶ Κουρῆτας ἀπὸ τῆς κουρδᾶς κληθῆναι· μετοικῆσαι δὲ εἰς τὴν Αἴτωλίαν, καὶ κατασχόντας τὰ περὶ Πλευ-

ρῶνα χωρία τοὺς πέροις οἰκοῦντας τοῦ Ἀχελώου διὰ τὸ
ἀκούρους φυλάττειν τὰς κεφαλὰς Ἀκαρνᾶνας καλέσαι·
ἔνιοι δ' ἀπὸ ἥρως τοῦνομα σχεῖν ἐκάτερον τὸ φῦλον·
οἱ δ' ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Κουρόου τοὺς Κουρῆτας ὄνο-
μασθῆναι τοῦ ὑπεροιμένου τῆς Πλευρᾶνος, εἶναι τε
φῦλόν τι Αἰτωλικὸν τοῦτο, ὡς Ὁφιεῖς καὶ Ἀγραίους
καὶ Εὐρυτᾶνας καὶ ἄλλα πλείω. ὡς δ' εἰρηται, τῆς Αι-
τωλίας δίχα διηρημένης τὰ μὲν περὶ Καλυδῶνα τὸν
Οἰνέα ἔχειν φασί, τῆς δὲ Πλευρῶνας μέρος μέν τι καὶ
10 τοὺς Πορθανίδας ἔχειν τοὺς περὶ τὸν Ἀγριον, εἴπερ
„φίκεον ἐν Πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ ἐπι-0.466
κρατεῖν μέντοι Θέστιον τῆς Πλευρῶνας, τὸν πενθε-
ρὸν τοῦ Οἰνέως Ἀλδαίας δὲ πατέρα, ἥγούμενον τῶν
Κουρῆτων· πολέμου δ' ἐμπεσόντος τοῖς Θεστιάδαις
15 ποδὸς Οἰνέα καὶ Μελέαγρον, ὡς μὲν ὁ ποιητής „ἀμφὶ¹
συὸς κεφαλῆς καὶ δέρματι“ κατὰ τὴν περὶ τοῦ κάπρου
μυθολογίαν, ὡς δὲ τὸ εἰκὸς περὶ μέρος τῆς χώρας,
οὗτο δὴ λέγεται „Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ²
„μενεχάρματι.“ ταῦτα μὲν τὰ ἐγγυτέρω.

20 Τὰ δ' ἀπωτέρῳ τῆς ὑποθέσεως ταύτης, ἄλλως δὲ 7
διὰ τὴν δμωνυμίαν εἰς ταύτον ὑπὸ τῶν Ιστορικῶν ἀγό-
μενα, ἅπερ Κουρητικὰ μὲν καὶ περὶ Κουρῆτων λέγε-
ται, ὅμοιας ὥσπερ καὶ τὰ περὶ τῶν τὴν Αἰτωλίαν καὶ
τὴν Ἀκαρνανίαν οἰκησάντων, ἐκείνων μὲν διαφέρει,
25 ἔοικε δὲ μᾶλλον τῷ περὶ Σατύρων καὶ Σειληνῶν καὶ
Βακχῶν καὶ Τιτύρων λόγῳ· τοιούτους γάρ τινας δαί-
μονας ἡ προπόλους θεῶν τοὺς Κουρῆτάς φασιν οἱ πα-
ραδόντες τὰ Κρητικὰ καὶ τὰ Φοινύια, Ιερουργίαις τισὶν
ἐμπεπλεγμένα ταῖς μὲν μυστικαῖς ταῖς δ' ἄλλαις περὶ³
30 τε τὴν τοῦ Διὸς παιδοτροφίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ τοὺς
τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ὀργιασμοὺς ἐν τῇ Φοινυίᾳ καὶ
τοῖς περὶ τὴν Ἰδην τὴν Τρωικὴν τόποις. τοσαύτη δ'

ἐστιν ἐν τοῖς λόγοις τούτοις ποικιλία, τῶν μὲν τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κουρῆσι τοὺς Κορύβαντας καὶ Καβείρους καὶ Ἰδαίους δακτύλους καὶ Τελχῖνας ἀποφαινόντων, τῶν δὲ συγγενεῖς ἀλλήλων καὶ μικράς τινας αὐτῶν πρὸς ἀλλήλους διαφορὰς διαστελλομένων, ὡς δὲ τύπῳ 5 εἰπεῖν καὶ κατὰ τὸ πλέον; ἅπαντας ἐνθουσιαστικούς τινας καὶ βαυχικοὺς καὶ ἐνοπλίῳ κινήσει μετὰ θορύβου καὶ φόφου καὶ κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ ὅπλων, ἔτι δ' αὐλοῦ καὶ βοῆς ἐκπλήττοντας κατὰ τὰς Ιερουργίας ἐν σχήματι διακόνων, [ῳδ]τε καὶ τὰ ιερὰ 10 τρόπον τινὰ κοινοποιεῖσθαι ταῦτά τε καὶ τῶν Σαμοθράκων καὶ τὰ ἐν Αἴγινῳ καὶ ἄλλα πλείω διὰ τὸ τοὺς προπόλους λέγεσθαι τοὺς αὐτούς. ἔστι μὲν οὖν θεολογικὸς πᾶς ὁ τοιοῦτος τρόπος τῆς ἐπισκέψεως καὶ οὐκ ἀλλότριος τῆς τοῦ φιλοσόφου θεωρίας.

15

- 8 Ἐπεὶ δὲ δι’ ὅμωνυμιαν τῶν Κουρῆτων καὶ οἱ ἴστορικοὶ συνήγαγον εἰς ἐν τὰ ἀνόμοια, οὐδ’ ἀν αὐτὸς ὀκνήσαιμ’ ἀν εἰπεῖν περὶ αὐτῶν ἐπὶ πλέον ἐν παραβάσει, προσθεῖς τὸν οἰκεῖον τῇ ἴστορίᾳ φυσικὸν λόγον. καίτοι τινὲς καὶ συνοικειοῦντι βούλονται ταῦτ’ ἐκείνοις, 20 καὶ τυχὸν ἵσως ἔχονται τινος πιθανοῦ· θηλυστολοῦντας γὰρ ὡς αἱ κόραι τοῦνομα σχεῖν τοῦτο τοὺς περὶ τὴν Αἰτωλίαν φασίν· εἶναι γὰρ καὶ τινα τοιοῦτον ἔηλον ἐν τοῖς Ἔλλησι, καὶ Ιάονας ἐλκεχθεώντας εἰρῆσθαι 0.467[καὶ κράβυλον καὶ τέττιγα ἐμπλέκεσθαι], καὶ τοὺς περὶ 25 Λεωνίδαν πτενιζομένους, δτ’ ἔξήεσαν εἰς τὴν μάχην, καταφρονηθῆναι λέγοντιν ὑπὸ τῶν Πιροσῶν, ἐν δὲ τῇ μάχῃ θαυμασθῆναι. ἀπλῶς δ’ ή περὶ τὰς κόμας φιλοτεχνία συνέστηκε περὶ τε θρέψιν καὶ πουρὰν τριχός, ἀμφοτὲς κόραις καὶ κόροις ἐστὶν οἰκεῖα, ὥστε πλεονα- 30 χῶς τὸ ἐτυμολογεῖν τοὺς Κουρῆτας ἐν εὐπόρῳ νεῖται. εἰκὸς δὲ καὶ τὴν ἐνόπλιον ὅρχησιν ὑπὸ τῶν ἡσημένων

οῦτω περὶ κόμην καὶ στολὴν πρῶτον εἰσαχθεῖσαν, ἐκεί-
νων Κουρῆτων καλούμενων, παρασχεῖν πρόφασιν καὶ
τοῖς στρατιωτικοτέροις ἑτέρων καὶ τὸν βίον ἐνόπλιον
ἔχουσιν, ὃσθ' ὁμοιώμως καὶ αὐτοὺς Κουρῆτας λεχθῆ-
5 ναι, τοὺς δὲ Εὐβοίᾳ λέγω καὶ Λίτιαλίᾳ καὶ Ἀκαρνανίᾳ.
καὶ Ὅμηρος δὲ τοὺς νέους στρατιώτας οὗτω προσηγό-
ρευσε, κρινάμενος κούρογητας ἀριστῆς Παναχαιῶν, δῶ-
,,φα διοῖς παρὰ νηὸς ἐνεγκεῖν, ὅσσ' Ἀχιλῆι χθιζοὶ ὑπέ-
,,στημεν“ καὶ πάλιν „δῶφα φέρον κούρογητες Ἀχαιοί.“
10 περὶ μὲν οὖν τῆς τῶν Κουρῆτων ἐτυμολογίας ταῦτα.

Τὸ δὲ εἰς δὲν συμφέρεσθαι τὰ τοσαῦτα ὄνόματα καὶ 1
τὴν ἐνοῦσαν θεολογίαν δὲν τῇ περὶ αὐτῶν ἴστορίᾳ νῦν
ἐπισκεπτέον· κοινὸν δὴ τοῦτο καὶ τῶν Ἑλλήνων καὶ
τῶν βαρβάρων ἔστι τὸ τὰς λεροποιίας μετὰ ἀνέσεως
15 ἐορταστικῆς ποιεῖσθαι, τὰς μὲν σὺν ἐνθουσιασμῷ τὰς
δὲ καρφίς, καὶ τὰς μὲν μετὰ μουσικῆς τὰς δὲ μή, καὶ τὰς
μὲν μυστικῶς τὰς δὲ ἐν φανερῷ· καὶ τοῦθ' ἡ φύσις
οὕτως ὑπαγορεύει. ἡ τε γὰρ ἀνεστις τὸν νοῦν ἀπάγει
ἀπὸ τῶν ἀνθρωπικῶν ἀσχολημάτων, * τὸν δὲ ὅντως
20 νοῦν τρέπει πρὸς τὸ θεῖον· ὁ τε ἐνθουσιασμὸς ἐπί-
πνευσίν τινα θείαν δέχει καὶ τῷ μαντικῷ γένει
πλησιάζειν· ἡ τε κρύψις ἡ μυστικὴ τῶν λερῶν σεμνο-
ποιεῖ τὸ θεῖον, μιμουμένη τὴν φύσιν αὐτοῦ φεύγου-
σαν ἡμῶν τὴν αἰσθησιν· ἡ τε μουσικὴ περὶ τε ὄρχησιν
25 οὖσα καὶ δυνθρόν καὶ μέλος ἥδονῇ τε ἄμα καὶ καλλι-
τεχνίᾳ πρὸς τὸ θεῖον ἡμᾶς συνάπτει κατὰ τοιαύτην
αἰτίαν. εὐ μὲν γὰρ εἴρηται καὶ τοῦτο, τοὺς ἀνθρώπους
τότε μάλιστα μιμεῖσθαι τοὺς θεοὺς ὅταν εὐεργετῶσιν·
ἄμεινον δὲ ἀν λέγοι τις, ὅταν εὐδαιμονῶσι· τοιοῦτον

10. post ταῦτα: ἡ δὲ ἐνόπλις: οὐδὲν τοιαῦτα τοιαῦτην πνηρότερη δῆλος καὶ δὲ Πύρριχος, αὐτῆς ἀσκησεως τῶν νέων καὶ τὰ στρατιωτικά.

δὲ τὸ χαίρειν καὶ τὸ ἑορτάζειν καὶ τὸ φιλοσοφεῖν καὶ
μουσικῆς ἀπτεσθαι· μὴ γὰρ εἰ τις ἐκπτωσις πρὸς τὸ
χεῖρον [γε]γένηται, τῶν μουσικῶν εἰς ἡδυπαθείας τρε-
C.468πόντων τὰς τέχνας ἐν τοῖς συμποσίοις καὶ θυμέλαις καὶ
σκηναῖς καὶ ἄλλοις τοιούτοις, διαβαλλέσθω τὸ πρᾶγμα, 5
ἄλλ' ἡ φύσις ἡ τῶν παιδευμάτων ἔξεταξέσθω τὴν ἀρ-
χὴν ἐνθένδε ἔχουσα.

10 Καὶ διὰ τοῦτο μουσικὴν ἐκάλεσε Πλάτων καὶ ἔτι
πρότερον οἱ Πυθαγόρειοι τὴν φιλοσοφίαν, καὶ καθ'
ἀρμονίαν τὸν κόσμον συνεστάναι φασί, πᾶν τὸ μουσι- 10
κὸν εἶδος θεῶν ἔργον ὑπολαμβάνοντες. οὔτω δὲ καὶ
αἱ Μοῦσαι θεαὶ καὶ Ἀπόλλων μουσηγέτης καὶ ἡ ποιη-
τικὴ πᾶσα ὑμνητική. ὥσταντος δὲ καὶ τὴν τῶν ἡθῶν
κατασκευὴν τῇ μουσικῇ προσνέμουσιν, ὡς πᾶν τὸ ἐπα-
νορθωτικὸν τοῦ νοῦ τοῖς θεοῖς ἐγγὺς ὅν. οἱ μὲν οὖν 15
Ἐλληνες οἱ πλεῖστοι τῷ Διονύσῳ προσέθεσαν καὶ τῷ
Ἀπόλλωνι καὶ τῇ Ἐκάτῃ καὶ ταῖς Μούσαις καὶ Δήμη-
τρι, νῇ Δίᾳ, τὸ δργιαστικὸν πᾶν καὶ τὸ βακχικὸν καὶ
τὸ χορικὸν καὶ τὸ περὶ τὰς τελετὰς μυστικόν, "Ιανχόν
τε καὶ τὸν Διόνυσον καλοῦσι καὶ τὸν ἀρχηγέτην τῶν 20
μυστηρίων, τῆς Δήμητρος δαίμονα· δενδροφορίαι τε
καὶ χορεῖαι καὶ τελεταὶ κοιναὶ τῶν θεῶν εἰσι τούτων.
αἱ δὲ Μοῦσαι καὶ δ' Ἀπόλλων αἱ μὲν τῶν χορῶν προε-
στᾶσιν ὁ δὲ καὶ τούτων καὶ τῶν κατὰ μαντικὴν· πρό-
πολοι δὲ τῶν Μουσῶν οἱ πεπαιδευμένοι πάντες, καὶ 25
ἴδιας οἱ μουσικοί, τοῦ δ' Ἀπόλλωνος οὗτοι τε καὶ οἱ
περὶ μαντικήν, Δήμητρος δὲ οἱ τε μύσται καὶ δάδοῦχοι
καὶ λεοφάνται, Διονύσου δὲ Σειληνοί τε καὶ Σάτυροι
καὶ Τίτυροι καὶ Βάκχαι, Λῆναι τε καὶ Θυῖαι καὶ Μι-
μαλλόνες καὶ Ναΐδες καὶ Νύμφαι προσαγορευόμεναι. 30

11 Ἐν δὲ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῦτα καὶ τὰ τοῦ Διος λεό-
ιδίας ἐπετελεῖτο μετ' δργιασμοῦ καὶ τοιούτων προπό-

- λαν οἶοι περὶ τὸν Διόνυσόν εἰσιν οἱ Σάτυροι· τούτους
 δ' ὀνόμαζον Κουρῆτας, νέους τινὰς ἐνόπλιον αἴνησιν
 μετ' ὀρχήσεως ἀποδιδόντας, προστησάμενοι μῦθον
 τὸν περὶ τῆς τοῦ Διὸς γενέσεως, ἐν ᾧ τὸν μὲν Κρόνον
 5 εἰσάγουσιν εἰδίσμένον καταπίνειν τὰ τέκνα ἀπὸ τῆς
 γενέσεως εὐθύς, τὴν δὲ Ρέαν πειρωμένην ἐπικρύπτε-
 σθαι τὰς ὀδῖνας καὶ τὸ γεννηθὲν βρέφος ἐκποδὼν ποι-
 εῖν καὶ περιστᾶξειν εἰς δύναμιν, πρὸς δὲ τοῦτο συνερ-
 γοὺς λαβεῖν τοὺς Κουρῆτας, οἵ μετὰ τυμπάνων καὶ
 10 τοιούτων ἄλλων ψόφων καὶ ἐνοπλίου χορείας καὶ θο-
 ρύβου περιέποντες τὴν θεὸν ἐκπλήξειν ἔμελλον τὸν
 Κρόνον καὶ λήσειν ὑποσκάσαντες αὐτοῦ τὸν παῖδα, τῇ
 δ' αὐτῇ ἐπιμελεῖα καὶ τρεφόμενον ὑπ' αὐτῶν παραδί-
 δοσθαι· ὥσθ' οἱ Κουρῆτες ἦτοι διὰ τὸ νέοι καὶ κόροι
 15 ὅντες ὑπουργεῖν ἢ διὰ τὸ κουροτροφεῖν τὸν Δία (λέγε-
 ται γὰρ ἀμφοτέρως) ταύτης ἡξιώθησαν τῆς προσηγο-
 ρίας, οἷονεὶ Σάτυροί τινες ὅντες περὶ τὸν Δία. οἱ μὲν C.469
 οὖν Ἐλληνες τοιοῦτοι περὶ τοὺς ὁργιασμούς.
- Οἱ δὲ Βερέκυντες Φονγῶν τι φῦλον καὶ ἀπλῶς οἱ 12
- 20 Φρύγες καὶ τῶν Τρῶων οἱ περὶ τὴν Ἰδην κατοικοῦντες
 Ρέαν μὲν καὶ αὐτὸι τιμῶσι καὶ ὁργιάζουσι ταύτῃ, μη-
 τέρα καλοῦντες θεῶν καὶ Ἀγδιστιν καὶ Φονγίαν θεὸν
 μεγάλην, ἀπὸ δὲ τῶν τόπων Ἰδαίαν καὶ Δινδυμήνην
 καὶ Σικυληνὴν καὶ Πεσσινονυτίδα καὶ Κυβέλην [καὶ
 25 Κυβήβην]. οἱ δὲ Ἐλληνες τοὺς προπόλους αὐτῆς διμω-
 νύμως Κουρῆτας λέγουσιν, οὐ μήν γε ἀπὸ τῆς αὐτῆς
 μυθοποιίας, ἀλλ' ἐτέρους ὡς ἀν ὑπουργούς τινας, τοῖς
 Σατύροις ἀνὰ λόγον· τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Κορύβαντας
 καλοῦσι.
- 30 Μάρτυρες δ' οἱ ποιηταὶ τῶν τοιούτων ὑπονοιῶν. 13
 ὅ τε γὰρ Πίνδαρος ἐν τῷ διηνράμβῳ οὖν ἡ ὀρχή „πρὸν
 „μὲν εἰρπε σχοινοτένεια τ' ἀοιδὰ διηνράμβων,“ μη-

σθεὶς τῶν πέρι τὸν Διόνυσον ὑπὲν τῶν τε παλαιῶν
 καὶ τῶν ὑστερούν, μεταβὰς ἀπὸ τούτων φῆσί,, σοὶ μὲν
 „κατάρχειν; μᾶτερ μεγάλα, πάρα φόμβοι κυριβάλων,
 „ἐν δὲ κεχλάδειν κρόταλ’ αἰθομένα τε δῆς ὑπὸ ξαν-
 „θαιᾶσι πεύκαις,“ τὴν κοινωνίαν τῶν περὶ τὸν Διόνυ- 5
 σον ἀποδειχθέντων νοείμων παρὰ τοῖς Ἐλλησι καὶ τῶν
 παρὰ τοῖς Φρουραῖς περὶ τὴν μητέρα τῶν θεῶν συνοι-
 κειῶν ἀλλήλοις. Εὐριπίδης τε ἐν ταῖς Βάκχαις τὰ πα-
 φαπλήσια ποιεῖ, τοῖς Φρουργοῖς ἅμα καὶ τὰ Λύδια συμ-
 φέρων διὰ τὸ ὄμορφον „ἀλλ’ ὡς λικοῦσαι Τυλλιον, ἔρυμα 10
 „Ανδρας, θλασος ἐμὸς γυναικες, [ἄς ἐκ βαρβάρων ἐκό-
 „μισα παρέδροντος καὶ ἔννεμπτόφοντος ἐμοι, αἰρεσθε τά-
 „πικχώροι’ ἐν πόλει Φρουρῶν τύμπανα, ‘Ρέας τε μητρὸς
 „ἐμά δ’ εὑρόηματα.’] καὶ πάλιν „ὦ μάκαρ, δοτις εὐδαί-
 „μων [τελετὰς θεῶν εἰδάσ], βιοτὰν ἀγιστεύει. τά τε 15
 „ματρὸς μεγάλας ὅργια Κυβέλας θεμιστεύων ἀνὰ θύρ-
 „ον τε τεινάσσων, κισσῷ [τε] στεφανωθεὶς [Διόνυ-
 „σον] θεραπεύει. ἵτε Βάκχαι, [ἵτε Βάκχαι,] βρόμιον
 „παιδα θεὸν Διόνυσον κατάγονται Φρουρῶν ἐξ
 „ὅρεων Ἐλλάδος εἰς εὐρυχόροους ἀγυιάς.“ πάλιν δ’ 20
 „ἐν τοῖς ἔξης καὶ τὰ Κορητικὰ συμπλέκει τούτοις „ὦ θα-
 „λάμενμα Κουρήτων, ζάθεοι τε Κορήτας διογενέτορες
 „ἔναντιοι, ἔνθα τρικόρυθες ἄντροις βυρσότονον κύ-
 0.470, κλωμα τόδε μοι Κορύβαντες εὔρον. ἀνὰ δὲ βακχεῖα
 „συντόνῳ κέρασαν ἀδυρβόᾳ Φρουρῶν αὐλῶν πνεύματι, 25
 „ματρός τε Ῥέας εἰς χέρα θῆκαν κτύπον εὐάσμασι
 „Βακχᾶν, παρὰ δὲ μαινόμενοι Σάτυροι ματέρος ἔξα-
 „νύσσαντο Ῥέας. εἰς δὲ χορεύματα προσῆψαν τριετη-
 „φίδων, αἷς καίρει Διόνυσος.“ καὶ ἐν Παλαμήδει φη-
 σὶν ὁ χορός „οὐ σὺν Διονύσῳ * κωμᾶν, δος ἀν’ Ἰδαν 30
 „τέρπεται σὺν ματρὶ φίλᾳ τυμπάνων λάκχοις.“

14 Καὶ Σειληνὸν καὶ Μαρσύαν καὶ Ὀλυμπον συνά-

γοντες εις θν και ενρετας αυλων ιστοροῦντες πάλιν και οὗτως τὰ Διονυσιακὰ και Φρύγια εις θν συμφέρουσι, τήν τε Ἰδην και τὸν Ὀλυμπον συγκεχυμένως πολλάκις ὡς τὸ αὐτὸ δρος πτυκοῦσιν. εἰσὶ μὲν οὖν λόγοι τέτταρες Ὀλυμποι καλούμενοι τῆς Ἰδης κατὰ τὴν Ἀντανδρίαν, ἔστι δὲ και ὁ Μυσὸς Ὀλυμπος, ὅμορος μὲν οὐχ ὁ αὐτὸς δὲ τῇ Ἰδῃ. ὁ δ' οὖν Σοφοκλῆς ποιήσας τὸν Μενέλαον ἐκ τῆς Τροίας ἀπαίρειν σπεύδοντα ἐν τῇ Πολυξένῃ, τὸν δ' Ἀγαμέμνονα μικρὸν ὑπολειπθῆναι βουλόμενον τοῦ ἔξιλάσασθαι τὴν Ἀθηνᾶν χάριν, εἰσάγει λέγοντα τὸν Μενέλαον „σὺ δ' αὐθὶ μέτα μνων που κατ' Ἰδαν χθόνα ποίμνας Ὀλύμπου συναγαγὼν θυηπόλει.“

Τῷ δ' αὐλῷ και πτύπῳ ιροτάλων τε και κυμβά-
15 λων και τυμπάνων και ταῖς ἐπιβοήσεσι και εὐασμοῖς και παδοκρουστήσις οἰκεῖα ἔξενύροντο και τινα τῶν ὄνομάτων, ἃ τὸν προπόλους και χορευτὰς και θεοαπευτὰς τῶν Ιερῶν ἐκάλουν, Καβείρους και Κορύβαντας και Πᾶνας και Σατύρους και Τιτύρους και τὸν θεὸν Βάκχον και τὴν Ρέαν Κυβέλην και Κυβήβην και Δινδυμήνην κατὰ τὸν τόπους αὐτούς. και ὁ Σαβά-
ξιος δὲ τῶν Φρυγιακῶν ἔστι και τρόπον τινὰ τῇ μητρὸς τὸ παιδίον παραδοὺς τὰ τοῦ Διονύσου και αὐτός.

Τούτοις δ' ἔσικε και τὰ παρὰ τοῖς Θραξὶ τά τε Κο-
25 τύτται και τὰ Βενδίδεια, παρ' οἷς και τὰ Ὁρφικὰ τὴν καταρχὴν ἔσχε. τῇς μὲν οὖν Κότυος τῆς ἐν τοῖς Ἡδωνοῖς Αἰσχύλος μέμνηται και τῶν περὶ αὐτὴν ὁργάνων. εἰπὼν γάρ „σεμνὰ Κότυς“ ἐν τοῖς Ἡδωνοῖς „ὅφεια δ' ὕργαν“ ἔχοντες, „τὸν περὶ τὸν Διόνυσον εὐθέως 30 ἐπιφέρει „οὐ μὲν ἐν χερσὶν βόμβυκας ἔχειν, τόρνους „κάματον, δακτυλόδικτον πληπλῆσι μέλος, μανίας „ἐπαγωγὸν ὄμοκλάν· οὐ δὲ χαλκοδέτοις κοτύλαις ὅτο-

C.471,,βεῖ.“ καὶ πάλιν „ψαλμὸς δ’ ἀλαλάζει· ταυρόφθογγοι
 „δ’ ὑπομυκῶνται ποθὲν ἐξ ἀφανοῦς φοβεροὶ μῆμοι,
 „τυπάνου δ’ εἰκὼν ὕσθι ὑπογαίου βροντῆς φέρεται
 „βαρυταρβής.“ ταῦτα γὰρ ἔοικε τοῖς Φρυγίοις· καὶ
 οὐκ ἀπεικός γε, ὥσπερ αὐτὸι οἱ Φρύγες Θρακῶν ἄποι-5
 κοὶ εἰσιν, οὕτω καὶ τὰ ιερὰ ἐκεῖθεν μετενηγέχθαι. καὶ
 τὸν Διόνυσον δὲ καὶ τὸν Ἡδωνὸν Δυνοῦργον συνά-
 γοντες εἰς ἐν τὴν διοιοτροπίαν τῶν ιερῶν αἰνίττονται.

17 Ἀπὸ δὲ τοῦ μέλους καὶ τοῦ φυθμοῦ καὶ τῶν ὁρ-
 γάνων καὶ ἡ μουσικὴ πᾶσα Θρακία καὶ Ἀσιάτις νεινό-10
 μισται. δῆλον δ’ ἐκ τε τῶν τόπων ἐν οἷς αἱ Μοῦσαι
 τετίμηνται· Πιερία γὰρ καὶ Ὄλυμπος καὶ Πίμπλα καὶ
 Λείβηθρον τὸ παλαιὸν ἦν Θράκια χωρία καὶ ὅρη, νῦν
 δὲ ἔχονσι Μακεδόνες· τόν τε Ἐλικῶνα καθιέρωσαν
 ταῖς Μούσαις Θρᾷκες οἱ τὴν Βοιωτίαν ἐποικήσαντες, 15
 οἵπερ καὶ τὸ τῶν Λειβηθριάδων υμφῶν ἄντρον κα-
 θιέρωσαν. οὗτοί εἰπεληθέντες τῆς ἀρχαίας μουσικῆς
 Θρᾷκες λέγονται, Ὁρφεύς τε καὶ Μουσαῖος καὶ Θάμυ-
 ροις, καὶ τῷ Εὔμόληπτῷ δὲ τούνομα ἐνθένδε, καὶ οἱ τῷ
 Σιονύσῳ τὴν Ἀσίαν ὅλην καθιερώσαντες μέχρι τῆς 20
 Ἰνδικῆς ἐκεῖθεν καὶ τὴν πολλὴν μουσικὴν μεταφέρου-
 σι· καὶ ὁ μέν τίς φησίν „κιθάραν Ἀσιάτιν ὃσσων,“ ὁ
 δὲ τοὺς αὐλοὺς Βερεκυντίους καλεῖ καὶ Φρυγίους· καὶ
 τῶν ὁργάνων ἔνια βαρβάρως ὠνόμασται νάβλας καὶ
 σαμβύκη καὶ βάρβιτος καὶ μαγάδις καὶ ἄλλα πλείω. 25

18 Ἀθηναῖοι δ’ ὥσπερ περὶ τὰ ἄλλα φιλοξενοῦντες
 διατελοῦσιν, οὕτω καὶ περὶ τοὺς θεούς. πολλὰ γὰρ
 τῶν ξενικῶν ιερῶν παρεδέξαντο ὥστε καὶ ἐκωμῳδή-
 θησαν· καὶ δὴ καὶ τὰ Θράκια καὶ τὰ Φρυγία. τῶν μὲν
 γὰρ Βενδιδείων Πλάτων μέμνηται, τῶν δὲ Φρυγίων 30
 Αημοσθένης διαβάλλων τὴν Αἰσχίνου μητέρα καὶ αὐ-
 τὸν ὡς τελούσῃ τῇ μητρὶ συνόντα καὶ συνθιασεύοντα

καὶ ἐπιφθεγγόμενον „εὐοῖ σαβοῖ“ πολλάκις καὶ „ῦης
„ἄττης [ἄττης] ῦης.“ ταῦτα γάρ ἔστι σαβάξια καὶ
μητρῷα.

Ἐπι δ' ἄν τις καὶ ταῦτα [εῦροι] περὶ τῶν δαιμόνων 19
5 τούτων καὶ τῆς τῶν ὀνομάτων ποικιλίας, καὶ ὅτι οὐ
πρόπολοι θεῶν μόνον ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ θεοὶ προσηγο-
ρεύθησαν. Ἡσίοδος μὲν γάρ *Ἐκ τέρῳ καὶ τῆς Φο-
ρωνέως θυγατρὸς πέντε γενέσθαι θυγατέρας φησίν
,,ἔξι ὡν οὔρειαι Νύμφαι θεαὶ [ἔξι]εγένουντο, καὶ γένος
10 „οὐτιδανῶν Σατύρων καὶ ἀμηχανοεργῶν, Κουρῆτες
,,τε θεοὶ φιλοπαίγμονες δραχηστῆρες.“ ὁ δὲ τὴν Φο-
ρωνίδα γράψας αὐλητὰς καὶ Φρύγας τοὺς Κουρῆτας.⁴⁷²
λέγει, ἄλλοι δὲ γηγενεῖς καὶ χαλκάσπιδαις· οἱ δὲ οὐ
τοὺς Κουρῆτας, ἀλλὰ τοὺς Κορύβαντας Φρύγας, ἐκεί-
15 νοις δὲ Κρῆτας, περιιδέσθαι δ' ὅπλα χαλκᾶ· πρώτους
ἐν Εὐβοίᾳ· διὸ καὶ Χαλκιδέας αὐτοὺς κληθῆναι· οἱ
δὲ ὑπὸ Τιτάνων Ρέας δοθῆναι προπόλους ἐνόπλους
τοὺς Κορύβαντας ἐκ τῆς Βακτριανῆς ἀφιγμένους, οἱ
δὲ ἐκ Κόλχων φασίν. ἐν δὲ τοῖς Κρητικοῖς λόγοις οἱ
20 Κουρῆτες Διὸς τροφεῖς λέγονται καὶ φύλακες, εἰς
Κρήτην ἐκ Φρυγίας μεταπεμφθέντες ὑπὸ τῆς Ρέας· οἱ
δὲ Τελχίνων ἐν Ρόδῳ ἐννέα ὄντων τοὺς Ρέας συνακο-
λουθήσαντας εἰς Κρήτην καὶ τὸν Δια κουροτροφήσαν-
τας Κουρῆτας ὀνομασθῆναι· Κύρβαντα δὲ τούτων
25 ἑταῖρον Ἱεραπύτνης ὄντα κτίστην παρὰ τοῖς Ρόδοις
παρασχεῖν πρόφασιν τοῖς Πρασίοις ὥστε λέγειν, ὡς
εἰεν Κορύβαντες δαίμονές τινες Ἀθηνᾶς καὶ Ἡλίου
παῖδες. ἔτι δὲ Κρόνου τινές, ἄλλοι δὲ Διὸς καὶ Καλ-
λιόπης φασὶ τοὺς Κορύβαντας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κα-
30 βείροις ὄντος, ἀπελθεῖν δὲ τούτους εἰς Σαμοθράκην

καλουμένην πρότερον Μελίτην, τὰς δὲ πράξεις αὐτῶν μυστικὰς εἶναι.

20 Ταῦτα δ' οὐκ ἀπόδεξάμενος ὁ Σκῆψιος ὁ τοὺς μύθους συναγαγὼν τούτους, ὡς μηδενὸς ἐν Σαμοθράκῃ μυστικοῦ λόγον περὶ Καβείρων λεγομένου, παρατίθη-
σιν δμοῖως καὶ Σιησιμβρότου τοῦ Θασίου δόξαν, ὡς
τὰ ἐν Σαμοθράκῃ λερὰ τοῖς Καβείροις ἐπιτελοῦτο· κα-
λεῖσθαι δέ φησιν αὐτοὺς ἐκεῖνος ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ ἐν
τῇ Βερεκυντίᾳ Καβείρουν. οἱ δὲ Ἐκάτης προπόλους
νομίζουσι τοὺς Κουρῆτας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κορύβα-
10 σιν ὄντας. φησὶ δὲ πάλιν ὁ Σκῆψιος ἐν τῇ Κορήτῃ
τὰς τῆς Ρέας τιμὰς μὴ νομίζεσθαι μηδὲ ἐπιχωριά-
ζειν, ὑπεναντιούμενος τῷ τοῦ Εὐριπίδου λόγῳ, ἀλλ᾽
ἐν τῇ Φρογγίᾳ μόνον καὶ τῇ Τρωάδι, τοὺς δὲ λέγοντας
μυθολογεῖν μᾶλλον ἢ ἰστορεῖν, πρὸς τοῦτο δὲ καὶ τὴν 15
τῶν τόπων ὁμονυμίαν συμπράξαι τυχόν ἵσως αὐτοῖς.
"Ιδη γὰρ τὸ ὄρος τό τε Τρωικὸν καὶ τὸ Κρητικόν, καὶ
Δίκτη τόπος ἐν τῇ Σκηψίᾳ καὶ ὄρος ἐν Κορήτῃ· τῆς δὲ
"Ιδης λόφος Πύτνα... ἀφ' οὖν Ιεράπεντνα ἢ πόλις, Ἰππο-
κόρωνά τε τῆς Ἀδραμυττηνῆς καὶ Ἰπποκορώνιον ἐν 20
Κορήτῃ, Σαμώνιόν τε τὸ ἔωθινὸν ἀκρωτήριον τῆς υῆ-
σον καὶ πεδίον ἐν τῇ Νεανδρίδι καὶ τῇ Ἀλεξανδρέων.

21 'Ακουνσίλαος δ' ὁ Ἀργεῖος ἐκ Καβείροῦς καὶ Ηφαί-
στου Κάμιλλον λέγει, τοῦ δὲ τρεῖς Καβείρους, *οἷς
νύμφας Καβειρίδας· Φερεκύδης δ' ἐξ Ἀπόλλωνος καὶ 25
Ρητίας Κύρβαντας ἐννέα, οἰκησαι δ' αὐτοὺς ἐν Σα-
μοθράκῃ· ἐκ δὲ Καβείρους τῆς Πρωτέως καὶ Ἡφαί-
στου Καβείρους τρεῖς καὶ νύμφας τρεῖς Καβειρίδας,
C.473έκατέροις δ' λερὰ γίνεσθαι. μάλιστα μὲν οὖν ἐν Ἰμ-
βρῳ καὶ Λήμνῳ τοὺς Καβείρους τιμᾶσθαι συμβέβη-
30 κεν, ἀλλὰ καὶ ἐν Τροίᾳ κατὰ πόλεις· τὰ δ' ὄνόματα
αὐτῶν ἔστι μυστικά. Ἡρόδοτος δὲ καὶ ἐν Μέμφει λέ-

γει τῶν Καβείρων ιερὰ παθάπερ καὶ τοῦ Ἡφαίστου,
διαφθεῖραι δ' αὐτὰ Καμβύσην. ἔστι δ' ἀοίκητα τὰ
χωρία τῆς τῶν δαιμόνων τούτων τιμῆς, τό τε Κορυ-
βαντεῖον τὸ ἐν τῇ Ἀμαξειτίᾳ τῆς νῦν Ἀλεξανδρέων χώ-
ρας ἐγγὺς τοῦ Σμινθίου, καὶ ἡ Κορύβισσα ἐν τῇ Σκη-
ψίᾳ περὶ ποταμὸν Εὔρηντα καὶ κάμην διάνυμον καὶ
ἔτι χείμαρρον Αἰθαλόεντα. πιθανὸν δέ φησιν ὁ Σκη-
ψιος, Κουρῆτας μὲν καὶ Κορύβαντας εἶναι τοὺς αὐ-
τούς, οὐ περὶ τὰς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ὄγιστείας πρὸς
10 ἐνόπλιον ὅρχησιν ἥθεοι καὶ κόροι τυγχάνουσι παρει-
λημμένοι. καὶ Κορύβαντες δὲ ἀπὸ τοῦ κορύπτοντας
βαίνειν ὅρχηστικῶς, οὓς καὶ βητάρμονας λέγει ὁ ποιη-
τής „δεῦτ' ἄγε Φαιήκων βητάρμονες, ὅσσοι ἄριστοι.“
τῶν δὲ Κορυβάντων ὅρχηστικῶν καὶ ἐνθουσιαστικῶν
15 ὄντων καὶ τοὺς μανικῶς κινουμένους κορυβαντιᾶν
φαμεν.

*Δακτύλους δ' Ἰδαιόνς φασί τινες κεκλησθαι τοὺς 22
πρώτους οἰκήτορας τῆς κατὰ τὴν Ἰδην ὑπωρείας· πό-
δας μὲν γὰρ λέγεσθαι τὰς ὑπωρείας, κορυφὰς δὲ τὰ
20 ἄκρα τῶν ὁρῶν· αἱ οὖν κατὰ μέρος ἐσχατιαὶ καὶ πᾶ-
σαι τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ιεραὶ περὶ τὴν Ἰδην.....
Σοφοκλῆς δὲ οἰεται πέντε τοὺς πρώτους ἄρσενας γε-
νέσθαι, οὐ σιδηρόν τε ἔξευρον καὶ εἰργάσαντο πρῶτοι
· καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων, πέντε
25 δὲ καὶ ἀδελφὰς τούτων, ἀπὸ δὲ τοῦ ἄριθμοῦ δακτύ-
λους κληθῆναι. ἄλλοι δ' ἄλλως μυθεύουσιν ἀπόροις
ἄπορα συνάπτοντες, διαφόροις δὲ καὶ τοῖς ὀνόμασι
καὶ τοῖς ἀριθμοῖς χρῶνται, ὃν Κέλμιν ὀνομάζουσι
τινα καὶ Δαμναμενέα καὶ Ἡρακλέα καὶ Ἀκμονα· καὶ
30 οἱ μὲν ἐπιχωρίους τῆς Ἰδης οἱ δὲ ἐποίκους, πάντες δὲ
σιδηρον εἰργάσθαι ὑπὸ τούτων ἐν Ἰδη πρῶτόν φασι,
πάντες δὲ καὶ γόητας ὑπειλήφασι καὶ περὶ τὴν μητέρα*

τῶν θεῶν καὶ ἐν Φρονγίᾳ φάγηκότας περὶ τὴν Ἰδην,
Φρονγίαν τὴν Τροφάδα καλούντες διὰ τὸ τοὺς Φρούγας
ἐπικρατῆσαι πλησιοχώρους ὄντας τῆς Τροίας ἐκπεπορ-
θημένης. ὑπονοοῦσι δὲ τῶν Ἰδαιών δακτύλων ἐκγό-
νους εἰναι τοὺς τε Κουρῆτας καὶ τοὺς Κορύβαντας·⁵
τοὺς γοῦν πρώτους γεννηθέντας ἐν Κρήτῃ ἑκατὸν ἄν-
δρας Ἰδαιόντας δακτύλους κληθῆναι, τούτων δ' ἀπο-
γόνους φασὶ Κουρῆτας ἐννέα γενέσθαι, τούτων δ'
ἕκαστον δέκα παιδας τεκνῶσαι τοὺς Ἰδαιούς καλούμε-
νους δακτύλους.

10

⁴⁷⁴ ²³ Προήχθημεν δὲ διὰ πλειόνων εἰπεῖν περὶ τούτων
καί περ ἥκιστα φιλομυθοῦντες, ὅτι τοῦ θεολογικοῦ
γένους ἐφάπτεται τὰ πράγματα ταῦτα. πᾶς δὲ ὁ περὶ
τῶν θεῶν λόγος ἀρχαῖς ἔξετάζει δόξας καὶ μύθους,
αἰνιττομένων τῶν παλαιῶν ἀς εἶχον ἐννοίας φυσικὰς ¹⁵
περὶ τῶν πραγμάτων καὶ προστιθέντων ἀεὶ τοῖς λό-
γοις τὸν μῦθον. ἀπανταὶ μὲν οὖν τὰ αἰνίγματα λύειν
ἐπ' ἀκριβὲς οὐ διάδοιν, τοῦ δὲ πλήθους τῶν μυθευο-
μένων ἐκτεθέντος εἰς τὸ μέδον, τῶν μὲν ὁμολογούν-
των ἀλλήλοις τῶν δ' ἐναντιουμένων, εὐπορώτερον ²⁰
ἄν τις δύναιτο εἰκάζειν ἐξ αὐτῶν τάληθές· οἷον τὰς
ὅρειβασίας τῶν περὶ τὸ θεῖον σπουδαζόντων καὶ αὐ-
τῶν τῶν θεῶν καὶ τοὺς ἐνθουσιασμοὺς εἰκότως μυ-
θεύοντις κατὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν καθ' ἥν καὶ οὐρανίους·
νομίζουσι τοὺς θεοὺς καὶ προνοητικοὺς τῶν τε ἄλλων ²⁵
καὶ τῶν προσημασιῶν· τῇ μὲν οὖν ὁρειβασίᾳ τὸ με-
ταλλευτικὸν καὶ τὸ θηρευτικὸν [καὶ] ξηρητικὸν τῶν
πρὸς τὸν βίον χρησίμων ἐφάνη συγγενές, τῶν δ' ἐν-
θουσιασμῶν καὶ θρησκείας καὶ μαντικῆς τὸ ἀγνοτικὸν
καὶ γοητεία ἐγγύς. τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ φιλότεχνον μά- ³⁰
λιστα τὸ περὶ τὰς Διονυσιακὰς τέχνας καὶ τὰς Ὀρφι-
κὰς. ἀλλ' ἀπόχρον περὶ αὐτῶν.

Ἐπεὶ δὲ πρῶτον περὶ τῶν τῆς Πελοποννήσου νή̄⁴
 σων τῶν τε ἄλλων διῆλθον καὶ τῶν ἐν τῷ Κορινθιακῷ
 κόλπῳ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ, περὶ τῆς Κορήτης ἐφεξῆς
 φητέον (καὶ γὰρ αὕτη τῆς Πελοποννήσου ἔστι) καὶ εἰ̄
 5 τις περὶ τὴν Κορήτην ἐν δὲ ταύταις αἱ τε Κυκλαδες
 εἰσὶ καὶ αἱ Σποράδες, αἱ μὲν ἄξιαι μνήμης αἱ δ' ἀση-
 μότεραι.

Nυνὶ δὲ περὶ τῆς Κορήτης πρῶτον λέγωμεν. Εὗ̄²
 δοξος μὲν οὖν ἐν τῷ Αἴγαιώ φησὶν αὔτην ἰδρυσθαι·
 10 δεῖ δὲ μὴ οὕτως, ἀλλὰ κεῖσθαι μὲν μεταξὺ τῆς Κυρη-
 ναίας καὶ τῆς Ἑλλάδος τῆς ἀπὸ Σουνίου μέχρι τῆς Λα-
 κωνικῆς, ἐπὶ μῆκος ταύταις ταῖς χώραις παράλληλον
 ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἔω· κλύζεσθαι δὲ ἀπὸ μὲν
 τῶν ἄρκτων τῷ Αἴγαιώ πελάγει καὶ τῷ Κορητικῷ, ἀπὸ
 15 δὲ τοῦ νότου τῷ Λιβυκῷ τῷ συνάπτουν πρὸς τὸ Αἴ-
 γύπτιον πέλαγος. τῶν δὲ ἄκρων τὸ μὲν ἐσπέριον ἔστι
 τὸ περὶ Φαλάσαρνα, πλάτος ἔχον διακοσίων πον στα-
 δίων καὶ εἰς δύο ἀκρωτήρια μεριζόμενον (ὦν τὸ μὲν
 νότιον καλεῖται Κριοῦ μέτωπον τὸ δ' ἀρκτικὸν Κίμα-
 20 ρος), τὸ δ' ἔφον τὸ Σαμάνιόν ἔστιν ὑπερπέπτον τοῦ
 Σουνίου οὐ πολὺ πρὸς ἔω.

Μέγεθος δὲ Σωσικράτης μέν, ὃν φησιν ἀκριβοῦν³
 Ἀπολλόδωρος τὰ περὶ τὴν νῆσον, ἀφορίζεται μήκει
 μὲν πλειόνων ἡ δισχιλίων σταδίων καὶ τριακοσίων,⁴⁷⁵
 25 πλάτει δὲ *ὑπὸ τὸ μέγεθος, ὥσθ' ὁ κύκλος κατὰ τοῦ-
 τον γίνοιτ' ἀν πλέον ἡ πεντακισχίλιοι στάδιοι Ἀρτε-
 μίδωρος δὲ τετρακισχιλίους καὶ ἑκατόν φησιν. Ιερώ-
 νυμος δὲ μῆκος δισχιλῶν φήσας τὸ δὲ πλάτος ἀνώμα-
 λον, πλειόνων ἀν εἴη λέγων τὸν κύκλον ἡ ὅσσων Ἀρ-
 30 τεμίδωρος. κατὰ δὲ τὸ τρίτον μέρος τοῦ μήκους. . .

τὸ δὲ ἔνθεν ἵσθμος ἔστιν ὡς ἑκατὸν σταδίων ἔχων κα-

τοικιαν πρὸς μὲν τῇ βορείῳ θαλάττῃ Ἀμφίμαλλαν, πρὸς δὲ τῇ νοτίῳ Φοίνικα τὸν Λαμπέων πλατυτάτη δὲ κατὰ τὸ μέσον ἐστι, πάλιν δ' ἐντεῦθεν εἰς στενώτερον τοῦ προτέρου συμπίκτουσιν ἵσθμὸν αἱ ἥρόνες περὶ ἔξηκοντα σταδίων, τὸν ἀπὸ Μινύας τῆς Αιγαίων⁵ εἰς Ἱεράπυτναν καὶ τὸ Αιβυνὸν πέλαγος· ἐν μόλπῳ δ' ἐστὶν ἡ πόλις. εἴτα πρόεισιν εἰς δέξὺ ἀκρωτήριον τὸ Σαμώνιον ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον νεῦον καὶ τὰς Ροδίων νήσους.

4 “Ἐστι δ' ὁρεινὴ καὶ δασεῖα ἡ νῆσος, ἔχει δ' αὐλῶνας εὐκάρπους. τῶν δ' ὁρῶν τὰ μὲν πρὸς δύσιν καλεῖται Λευκά, οὐ λειπόμενα τοῦ Ταῦγέτου κατὰ τὸ ὑψος, ἐπὶ τὸ μῆκος δ' ἐκτεταμένα ὅσον τριακοσίων σταδίων καὶ ποιοῦντα φάριν τελευτᾶσάν πως ἐπὶ τὰ στενά. ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ κατὰ τὸ εὐρυχωρότατον τῆς νήσου τὸ Ἰδαῖον ὄρος ὑψηλότατον τῶν ἐκεῖ, περιφερὲς δὲς δ' ἐν κύκλῳ σταδίων ἔξακοσίων· περιοικεῖται δ' ὑπὸ τῶν ἀριστων πόλεων. ἄλλα δ' ἐστὶ πάρισα τοῖς Λευκοῖς, τὰ μὲν ἐπὶ νότου τὰ δὲ ἐπὶ τὴν ἕω λήγοντα.

5 “Ἐστι δ' ἀπὸ τῆς Κυρηναίας ἐπὶ τὸ Κριοῦ μέτωπον δυεῖν ἡμερῶν καὶ υγιτῶν πλοῦς, ἀπὸ δὲ Κιμάρου²⁰ [ἐπὶ Ταίναρον] εἰσὶ στάδιοι ἐπτακόσιοι (μεταξὺ δὲ Κύθηρα), ἀπὸ δὲ τοῦ Σαμωνίου πρὸς Αἴγυπτον τεττάρων ἡμερῶν καὶ υγιτῶν πλοῦς, οἱ δὲ τριῶν φασι· σταδίων δὲ εἰναι τοῦτον τινες πεντακισχιλίων εἰρήκασιν, οἱ δὲ ἔτι ἐλαττόνων. Ἐρατοσθένης δ' ἀπὸ μὲν²⁵ τῆς Κυρηναίας μέχρι Κριοῦ μετώπου δισχιλίους φησίν, ἔνθεν δὲ εἰς Πελοπόννησον ἐλάττους. . . .

6 „Ἄλλη δ' ἄλλων γλῶσσα μεμιγμένη“ φησὶν δὲ ποιητής „ἐν μὲν Ἀχαιοί, ἐν δὲ Ἐτεόνορητες μεγαλήτορες, ἐν δὲ Κύδωνες, Αιωριέες τε τριχάκιες διοί τε³⁰ Πελασγοί.“ τούτων φησὶ Στάφυλος τὸ μὲν πρὸς ἕω Δωριεῖς κατέχειν, τὸ δὲ δυσμικὸν Κύδωνας, τὸ [δὲ]

νότιον Ἐτεόκρητας, ὃν εἶναι πολέμων Πρᾶσον, ὃπου τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἵερόν τοὺς δ' ἄλλους ἵσχύοντας πλέον οἰκῆσαι τὰ πεδία. τοὺς μὲν οὖν Ἐτεόκρητας καὶ τοὺς Κύδωνας αὐτόχθονας ὑπάρξαι εἰκός, τοὺς δὲ 5 λοιποὺς ἐπήλυδας, οὓς ἐκ Θετταλίας φησιν ἔλθειν¹⁵ Ἀνδρῶν τῆς Δωρίδος μὲν πρότερον νῦν δὲ Ἐστιαιώτιδος λεγομένης· ἐξ ἣς ὀφρύθησαν, ὡς φησιν, οἱ περὶ τὸν Παρνασσὸν οἰκήσαντες Δωριεῖς καὶ ἔκτισαν τὴν τεο.⁴⁷⁶ Ερινεὸν καὶ Βοιὸν καὶ Κυτίνιον, ἀφ' οὗ καὶ τριχάκιες 10 ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγονται. οὐ πάνυ δὲ τὸν τοῦ Ἀνδρῶνος λόγον ἀποδέχονται, τὴν μὲν τετράπολιν Δωρίδα τρίπολιν ἀποφαίνοντος, τὴν δὲ μητρόπολιν τῶν Δωριέων ἀποικου Θετταλῶν· τριχάκιας δὲ δέχονται ἥτοι ἀπὸ τῆς τριλοφίας ἢ ἀπὸ τοῦ τριχίνους εἶναι τοὺς 15 λόφους.

Πόλεις δ' εἰσὶν ἐν τῇ Κρήτῃ πλείους μέν, μέγι- 7 σται δὲ καὶ ἐπιφανέσταται τρεῖς, Κυνωσσὸς Γόρτυνα Κυδωνία. διαφερόντως δὲ τὴν Κυνωσσὸν καὶ Ὄμηρος ὑμνεῖ μεγάλην καλῶν καὶ βασίλειον τοῦ Μίνω καὶ οἱ 20 ὕστερον. καὶ δὴ καὶ διετέλεσε μέχρι πολλοῦ φερομένη τὰ πρῶτα, εἴτα ἐπαπεινώθη καὶ πολλὰ τῶν νομίμων ἀφηρέθη, μετέστη δὲ τὸ ἀξιωματοῦ τε Γόρτυναν καὶ Λύττον, ὕστερον δὲ ἀνέλαβε πάλιν τὸ παλαιὸν σχῆμα τὸ τῆς μητροπόλεως. κεῖται δὲ ἐν πεδίῳ κύκλου ἔχουσα 25 ἡ Κυνωσσὸς τὸν ἀρχαῖον τριάκοντα σταδίων, μεταξὺ τῆς Λιυκίας καὶ τῆς Γορτυνίας, [διέχουσα τῆς μὲν Γορτύνης] σταδίους διακοσίους, τῆς δὲ Λύττου, ἦν δὲ ποιητὴς Λύττον ἀνόμασεν, ἐκατὸν εἴκοσι· τῆς δὲ θαλάττης Κυνωσσὸς μὲν τῆς βορείου πέντε καὶ εἴκοσι, Γόρτυνα δὲ τῆς Λιβυκῆς ἐνενήκοντα, Λύττος δὲ καὶ αὐτὴ

15. post λόφους: εὐαμισολόφος.

τῆς Λιβυκῆς ὁγδοήκοντα. ἔχει δὲ ἐπίνειον τὸ Ἡρα-
κλειον ἡ Κνωσσός.

καταντικρὺ τῆς Πελοποννήσου· καὶ αὐτὴ δ' ἐστὶ προσ-
βόρειος. ὡς δ' εἰρηκεν "Ἐφορος, ξηλωτὴς ὁ Μίνως
ἀρχαίου τινὸς Ραδαμάνθυος δικαιοτάτου ἀνδρὸς ὅμω-
νύμου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὃς πρῶτος τὴν υῆσον ἔξη-
μερῶσαι δοκεῖ νομίμοις καὶ συνοικισμοῖς πόλεων καὶ
πολιτείαις, σκηνψάμενος παρὰ Διὸς φέρειν ἔκαστα τῶν
τιθεμένων δογμάτων εἰς μέσον. τοῦτον δὴ μιμούμε-
νος καὶ ὁ Μίνως δι' ἐννέα ἑτᾶν, ὡς ἔοικεν, ἀναβαί-
νων ἐπὶ τὸ τοῦ Διὸς ἄντρον καὶ διατοιβων ἐνθάδε, 20
ἀπήει συντεταγμένα ἔχων παραγγέλματά τινα, ἢ ἐφα-
σκεν εἶναι προστάγματα τοῦ Διός· ἀφ' ἣς αἰτίας καὶ
τὸν ποιητὴν οὕτως εἰρηκέναι „ἐνθάδε Μίνως ἐννέω-
,,ρος βασίλευε Διὸς μεγάλου δαριστῆς.“ τοιαῦτα δ'
επόντος οἱ ἀρχαῖοι περὶ αὐτοῦ πάλιν ἄλλους εἰρήκασι 25
λόγους ὑπεναντίους τούτοις, ὡς τυραννικός τε γέ-
C.477νοιτο καὶ βίαιος καὶ δασμολόγος, τραγῳδοῦντες τὰ
περὶ τὸν Μινώταυρον καὶ τὸν λαβύρινθον καὶ τὰ
Θησεῖ συμβάντα καὶ Δαιδάλῳ.

- ⁹ Ταῦτα μὲν οὖν δύοτέρως ἔχει χαλεπὸν εἰπεῖν: 30
ἔστι δὲ καὶ ἄλλος λόγος οὐχ δυολογούμενος, τῶν μὲν
ξένουν τῆς οὐρανοῦ τὸν Μίνωα λεγόντων τῶν δ' ἐπιχώριον.

ο μέντοι ποιητής τῇ δευτέρᾳ δοκεῖ μᾶλλον συνηγορεῖν ἀποφάσει, ὅταν φῇ ὅτι [Ζεὺς] „πρῶτον Μίνωα τέκε „Κρήτη ἐπίουρον.“ ὑπὲρ τῆς Κρήτης ὅμοιογεῖται διότι κατὰ τοὺς παλαιοὺς χρόνους ἐτύγχανεν εὔνομουν 5 μένη καὶ ξηλωτὰς ἔαντης τοὺς ἀρίστους τῶν Ἑλλήνων ἀπέφηνεν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις Λακεδαιμονίους, καθάπερ Πλάτων τε ἐν τοῖς νόμοις δηλοῖ καὶ Ἐφορος ἐν τῇ Εὐρώπῃ ἀναγέγραφεν· ὕστερον δὲ πρὸς τὸ χεῖρον μετέβαλεν ἐπὶ πλεῖστον. μετὰ γὰρ τοὺς Τυρρηνούς, οἱ 10 μάλιστα ἐδήσαν τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, οὗτοί εἰσιν οἱ διαδεξάμενοι τὰ ληστήρια· τούτους δ' ἐπόρθησαν ὕστερον οἱ Κίλικες· κατέλυσαν δὲ πάντας Ῥωμαῖοι τὴν τε Κρήτην ἐκπολεμήσαντες καὶ τὰ πειρατικὰ τῶν Κιλκίων φρούρια. νῦν δὲ Κυνωσσός καὶ Ῥωμαίων 15 ἀποικίαν ἔχει.

Περὶ μὲν οὖν Κυνωσσοῦ ταῦτα, πόλεως οὐκ ἄλλο- 10 τρίας ἥμιν, διὰ δὲ τάνθρωπινα καὶ τὰς ἐν αὐτοῖς μεταβολὰς καὶ συντυχίας ἐκλελειμμένων τῶν συμβολαίων τῶν ὑπαρξάντων ἥμιν πρὸς τὴν πόλιν. Δορύ- 20 λαος γὰρ ἦν ἀνὴρ τακτικός, τῶν Μιθριδάτου τοῦ Εὐεργέτου φίλων· οὗτος διὰ τὴν ἐν τοῖς πολεμικοῖς ἐμπειρίαν ἔνιοιογεῖν ἀποδειχθεὶς πολὺς ἦν τε τῇ Ἑλλάδι καὶ τῇ Θράκῃ, πολὺς δὲ καὶ τοῖς παρὰ τῆς Κρήτης Ιούσιν, οὕπω τὴν ηῆσον ἐχόντων Ῥωμαίων, 25 συχνοῦ δὲ ὄντος ἐν αὐτῇ τοῦ μισθοφορικοῦ καὶ στρατιωτικοῦ πλήθους, ἐξ οὗ καὶ τὰ ληστήρια πληροῦσθαι συνέβαινεν. ἐπιδημοῦντος δὲ τοῦ Δορυλάου κατὰ τύχην ἐνέστη πολεμος τοῖς Κυνωσσίοις πρὸς τοὺς Γορτυνίους· αἰρεθεὶς δὲ στρατηγὸς καὶ κατορθώσας διὰ τα- 30 χέων ἥρατο τιμὰς τὰς μεγίστας, καὶ ἐπειδὴ μικρὸν

8. post Εὐρώπῃ: τῇ πολιτείᾳ 19. ante τῶν: καὶ

ῦστερον ἐξ ἐπιβουλῆς δολοφονηθέντα ἔγνω τὸν Εὐεργέτην ὑπὸ τῶν φίλων ἐν Σινάπῃ, τὴν διαδοχὴν δὲ εἰς γυναικαν καὶ παιδία ἥκουσαν, ἀπογνοὺς τῶν ἐκεῖ κατέμεινεν [ἐν] τῇ Κυωσσῷ· τεκνοκοιεῖται δ' ἐκ Μακέτιδος γυναικὸς Στερόπης τοῦνομα δύο μὲν υἱεῖς Λαγέταν καὶ Στρατάρχαν, ὃν τὸν Στρατάρχαν ἐσχατόγηρον καὶ ἡμεῖς ἥδη εἶδομεν, θυγατέρα δὲ μίαν. δυεῖν δὲ ὄντων υἱῶν τοῦ Εὐεργέτου διεδέξατο τὴν βασιλείαν Μιθριδάτης ὁ προσαγορευθεὶς Εὐπάτωρ ἔνδεικα ἔτη γεγονώσ· τούτῳ σύντροφος ὑπῆρξεν ὁ τοῦ Φιλεταί-
C.478ρον Δορύλαος· ἦν δ' ὁ Φιλέταιρος ἀδελφὸς τοῦ τακτικοῦ Δορυλάου. ἀνδρωθεὶς δ' ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τοσοῦτο ἥρητο τῇ συντροφίᾳ τῇ πρὸς τὸν Δορύλαον ὥστ' οὐκ ἐκεῖνον μόνον εἰς τιμᾶς ἤγε τὰς μεγίστας, ἀλλὰ καὶ τῶν συγγενῶν ἐπεμελεῖτο καὶ τοὺς ἐν Κυωσσῷ μετε-
15 πέμπετο· ἥσαν δ' οἱ περὶ Λαγέταν, τοῦ μὲν πατρὸς ἥδη τετελευτηκότος, αὐτὸλ δ' ἥνδρωμένοι, καὶ ἥκουν ἀφέντες τὰ ἐν Κυωσσῷ· τοῦ δὲ Λαγέτα θυγάτηρ ἦν ἡ μήτηρ τῆς ἐμῆς μητρός. εὐτυχοῦντος μὲν δὴ ἐκείνου συνευτυχεῖν καὶ τούτοις συνέβαινε, καταλυθέντος δὲ 20 (ἔφωρδάθη γὰρ ἀφιστὰς τοῖς Ρωμαίοις τὴν βασιλείαν ἐφ' ὃ αὐτὸς εἰς τὴν ἀρχὴν καταστήσεται) συγκατελύθη καὶ τὰ τούτων καὶ ἐταπεινώθησαν· ὡλιγωρήθη δὲ καὶ τὰ προς τοὺς Κυωσίους συμβόλαια καὶ αὐτοὺς μυρίας μεταβολὰς δεξαμένους.

25

11 Ἀλλὰ γὰρ ὁ μὲν περὶ τῆς Κυωσσοῦ λόγος τοιοῦτος. μετὰ δὲ ταύτην δευτερεῦσαι δοκεῖ κατὰ τὴν δύναμιν ἡ τῶν Γορτυνίων πόλις. συμπράττουσαί τε γὰρ ἀλλήλαις ἀπαντας ὑπηκόους εἰχον αὗται τοὺς ἄλλους, στασιάσασαί τε διέστησαν τὰ κατὰ τὴν οῆσον· προσ-
30 θήκη δ' ἦν ἡ Κυδωνία μεγίστη ὁποτέροις προσγένοιτο. καίται δ' ἐν πεδίῳ καὶ ἡ τῶν Γορτυνίων πόλις,

τὸ παλαιὸν μὲν ἵσως τετειχισμένη (καθάπερ καὶ Ὁμηρος εἰρηκε „Γόρτυνά τε τειχήσσαν“), ὑστερον δὲ ἀποβαλοῦσα τὸ τεῖχος ἐκ θεμελίων καὶ πάντα τὸν χρόνον μείνασα ἀτείχιστος· καὶ γὰρ ὁ Φιλοπάτωρ Πτολεμαῖος ἀρξάμενος τειχίζειν ὅσον ἐπὶ ὄγδοηκοντα σταδίους παρῆλθε μόνον· ἀξιόλογον δὲ οὖν ἔξεπλήρου ποτὲ κύκλου ἡ οἰκησις ὅσον πεντήκοντα σταδίων· διέχει δὲ τῆς Λιβυνῆς θαλάττης κατὰ Λεβῆνα τὸ ἐμπόριον αὐτῆς ἐνενήκοντα· ἔχει δέ τι καὶ ἄλλο ἐπίνειον τὸ Μάταλον, διέχει δὲ αὐτῆς ἐκατὸν τριάκοντα· διαρρεῖ δὲ αὐτὴν ὅλην ὁ Ληθαῖος ποταμός.

Ἐκ δὲ Λεβῆνος ἦν Λευκοκόμας τε καὶ ὁ ἔραστὴς 12 αὐτοῦ Εὐξύνθετος, οὓς ἴστορεὶ Θεόφραστος ἐν τῷ περὶ ἔρωτος λόγῳ, ἄθλων ὡν ὁ Λευκοκόμας τῷ Εὔξυνθέτῳ προσέσταξεν ἐνα φῆσας εἶναι τοῦτον, τὸν ἐν Πράσῳ κύνα ἀναγαγεῖν αὐτῷ· ὅμοροι δὲ εἰσὶν αὐτοῖς οἱ Πράσιοι, τῆς μὲν θαλάττης ἐβδομήκοντα Γόρτυνυς δὲ διέχοντες ἐκατὸν καὶ ὄγδοηκοντα. εἰρηται δὲ ὅτι τῶν Ἐτεοκρήτων ὑπῆρχεν ἡ Πρᾶσος καὶ διότι ἐνταῦθα 20 τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· καὶ γὰρ ἡ Δίκτη πλησίον, οὐχ ὡς Ἀρατος „ὅρεος σχεδὸν Ἰδαίοιο.“ καὶ γὰρ χιλίους ἡ Δίκτη τῆς Ἰδης ἀπέχει, πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ἀπ’ αὐτῆς κειμένη, τοῦ δὲ Σαμωνίου ἐκατόν. μεταξὺ δὲ τοῦ Σαμωνίου καὶ τῆς Χειρονήσου ἡ Πρᾶσος ἔδρυτο ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐξήκοντα σταδίοις· καὶ 479 τέσκαψαν δὲ Ἱεραπύτνιοι. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ τὸν Καλλίμαχον λέγειν φασίν, ὡς ἡ Βριτόμαρτις φεύγουσα τὴν Μίνω βίᾳν ἀπὸ τῆς Δίκτης ἀλοιτο εἰς ἀλιέων δίκτυα, καὶ διὰ τοῦτο αὐτὴ μὲν Δίκτυννα ὑπὸ τῶν Κυδωνια- 30 τῶν προσαγορευθείη, Δίκτη δὲ τὸ ὄρος· οὐδὲ γὰρ ὅλως ἐκ γειτόνων ἐστὶ τοῖς τόποις τούτοις ἡ Κυδωνία, πρὸς δὲ τοῖς ἐσπεριοῖς κεῖται τῆς νήσου πέρασι. τῆς

μέντοι Κυδωνίας ὅρος ἐστὶ Τίτυρος, ἐν φῶ ιερόν ἐστιν οὐ Δικταῖον ἀλλὰ Δικτύνναιον.

13 Κυδωνία δ' ἐπὶ θαλάττη μὲν ἔδρυται βλέπουσα πρὸς τὴν Λάκωνικήν, διέχει δ' ἑκατέρας τὸ ἵσον τῆς τε Κυδωνοῦ καὶ τῆς Γόρτυνος οἰον δικασίους στα- 5 δίους, Ἀπτέρας δὲ ὄγδοην ταῦτα, τῆς ταύτης δὲ θαλάττης τετταράκοντα. Ἀπτέρας δ' ἐπίνειόν ἐστι Κίβαμος· πρὸς ἐσπέραν δ' ὅμοροι τοῖς Κυδωνιάταις Πολυρρήνιοι, παρ' οὓς ἐστι τὸ τῆς Δικτύννης ιερόν· ἀπέχουσι δὲ τῆς θαλάττης ὡς τριάκοντα σταδίους, Φαλασάριντος δὲ 10 ἔξηκοντα. πωμηδὸν δ' φύκουν πρότερον· εἰτ' Ἀχαιοὶ καὶ Λάκωνες συνφέρουσι τειχίσαντες ἐρυμνὸν χωρίον βλέπον πρὸς μεσημβρίαν.

14 Τῶν δ' ὑπὸ Μίνω συνφυκιδένων τριῶν τὴν λοιπὴν (Φαιστὸς δ' ἦν αὕτη) κατέσκαψαν Γορτύνιοι, τῆς 15 μὲν Γόρτυνος διέχουσαν ἔξηκοντα, τῆς δὲ θαλάττης εἴκοσι, τοῦ δὲ Ματάλου τοῦ ἐπινείου τετταράκοντα· τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν οἱ κατασκάψαντες. Γορτυνίων δ' ἐστὶ καὶ τὸ Ῥύτιον σὺν τῇ Φαιστῷ „Φαιστόν τε Ῥύτιόν τε.“ ἐκ δὲ τῆς Φαιστοῦ τὸν τοὺς καθαρμοὺς ποιή- 20 σαντα διὰ τῶν ἐπῶν Ἐπιμενίδην φασὶν εἶναι. καὶ ὁ Λισσὴν δὲ τῆς Φαιστίας. Λύττου δέ, ἡς ἔμνήσθημεν καὶ πρότερον, ἐπίνειόν ἐστιν ἡ λεγομένη Χερρόνησος, ἐν ᾗ τὸ τῆς Βριτομάρτεως ιερόν· αἱ δὲ συγκαταλεχθεῖσαι πόλεις οὐκέτ' εἰσὶ Μίλητός τε καὶ Λύκαστος, τὴν 25 δὲ χώραν τὴν μὲν ἐνείμαντο Λύττιοι τὴν δὲ Κνώσσοι κατασκάψαντες τὴν πόλιν.

15 Τοῦ δὲ ποιητοῦ τὸ μὲν ἑκατόμπολιν λέγοντος τὴν Κρήτην τὸ δὲ ἐνευηρούντα πολιν, "Ἐφορος μὲν ὕστερον ἐπικτισθῆναι τὰς δέκα φησὶ μετὰ τὰ Τρωικὰ ὑπὸ τῶν 30

15. ante κατέσκαψαν: ἦν

Αλθαιμένει τῷ Ἀργείῳ συνακολουθησάντων Αιωρί-
έων· τὸν μὲν οὖν Ὁδυσσέα λέγει ἐνευηκοντάπολιν ὄνο-
μάσαι· οὗτος μὲν οὖν πιθανός ἐστιν ὁ λόγος. ἄλλοι δ'
ὑπὸ τῶν Ἰδομενέως ἔχθρῶν πατασκαφῆναι φασι τὰς
5 δέκα· ἀλλ' οὕτε πατὰ τὰ Τρωιαί φησιν ὁ ποιητὴς ἐκα-
τοντάπολιν ὑπάρξαι τὴν Κρήτην, ἀλλὰ μᾶλλον πατ'
αὐτόν (ἐκ γὰρ τοῦ ίδιου προσώπου λέγει· εἰ δ' ἐκ τῶν
τότε ὕντων τινὸς ἦν ὁ λόγος, παθάπερ ἐν τῇ Ὁδυσσείᾳ,^{c.480}
ἡνίκα ἐνευηκοντάπολιν φράζει, καλῶς εἶχεν [ἄν] οὕτω
10 δέχεσθαι), οὕτ' εἰ συγχωρήσαιμεν τοῦτο γε, ὁ ἔξης λα-
γος σώζοιτ' ἄν. οὕτε γὰρ πατὰ τὴν στρατείαν οὕτε
μετὰ τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν τοῦ Ἰδομενέως εἰκός
ἐστιν ὑπὸ τῶν ἔχθρῶν αὐτοῦ τὰς πόλεις ἡφανίσθαι
ταύτας· ὁ γὰρ ποιητὴς φήσας „πάντας δ' Ἰδομενεὺς
15 „Κρήτην εἰσήγαγ' ἐταίρους, οἱ φύγον ἐκ πολέμου,
„πόντος δέ οἱ οὔτιν' ἀπηύρα,“ καὶ τούτου τοῦ πάθους
ἔμεμνητ' ἄν· οὐ γὰρ δήπου Ὁδυσσεὺς μὲν ἔγνω τὸν
ἀφανισμὸν τῶν πόλεων ὁ μηδενὶ συμμιξας τῶν Ἑλλή-
νων μήτε πατὰ τὴν πλάνην μήδ' ὕστερον, ὁ δὲ καὶ συ-
20 στρατεύσας τῷ Ἰδομενεῖ καὶ συνανασθείς οὐκ ἔγνω
τὰ συμβάντα οἷκοι αὐτῷ. ἀλλὰ μὴν οὐδὲ μετὰ τὴν ἐπά-
νοδον· εἰ γὰρ μετὰ πάντων ἐσώθη τῶν ἐταίρων, ἵσχυ-
ρὸς ἐπανῆλθεν, ὥστ' οὐκ ἔμελλον ἵσχύειν οἱ ἔχθροι
τοσοῦτον δύον δέκα ἀφαιρεῖσθαι πόλεις αὐτόν.

25 Τῆς μὲν οὖν χώρας τῶν Κρητῶν τοιαύτη τις ἡ πε- 16
ριοδεία. τῆς δὲ πολιτείας ἡς "Ἐφρόδος ἀνέγραψε τὰ κυ-
ριώτατα ἐπιδραμεῖν ἀποχρώντως ἀν ἔχοι. δοκεῖ δέ, φη-
σίν, ὁ νομοθέτης μέγιστον ὑποθέσθαι ταῖς πόλεσιν
ἀγαθὸν τὴν ἐλευθερίαν· μόνην γὰρ ταύτην ἰδια ποιεῖν
30 τῶν κτησαμένων τὰ ἀγαθά, τὰ δ' ἐν δουλείᾳ τῶν ἀρ-

12. ante εἰκός: ὡς 21. post αὐτῷ· πατὰ τὴν στρατείαν
οὕτε τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν.

χόντων ἀλλ' οὐχὶ τῶν ἀρχομένων εἶναι· τοῖς δὲ ἔχουσι ταύτην φυλακῆς δεῖν· τὴν μὲν οὖν ὁμόνοιαν διχοστάσιας αἱρομένης ἀπαντᾶν, ἢ γίνεται διὰ πλεονεξίαν καὶ τρυφήν· σωφρόνως γὰρ καὶ λιτῶς ξῶσιν ἀπασιν οὕτε φθόνον οὕθ' ὑβριν οὕτε μῆσος ἀπαντᾶν πρὸς τοὺς διοίσους· διόπερ τοὺς μὲν παιδας εἰς τὰς δύνομαξομένας ἀγέλας κελεῦσαι φοιτᾶν, τοὺς δὲ τελείους ἐν τοῖς συσσιτίοις ἢ καλοῦσιν ἀνδρεῖα συσσιτεῖν, ὅπως τῶν ἵσων μετάσχοιεν τοῖς εὐπόροις οἱ πενέστεροι δημοσίᾳ τρεφόμενοι· πρὸς δὲ τὸ μὴ δειλίαν ἀλλ' ἀνδρεῖαν ιρα- 10 τεῖν ἐκ παιδῶν ὅπλοις καὶ πόνοις συντρέψειν, ὥστε καταφρονεῖν καύματος καὶ ψύχους καὶ τραχείας ὁδοῦ καὶ ἀνάντους καὶ πληγῶν τῶν ἐν γυμνασίοις καὶ μάχαις ταῖς κατὰ σύνταγμα· ἀσκεῖν δὲ καὶ τοξικῇ καὶ ἐνοπλῷ ὁρκήσει, ἢν καταδεῖξαι Κουρῆτα πρώτον, ὕστε- 15 ρον δὲ καὶ συντάξαντα τὴν κληθεῖσαν ἀπ' αὐτοῦ πυρείην, ὥστε μηδὲ τὴν παιδιὰν ἄμοιρον εἶναι τῶν πρὸς πόλεμον χρησίμων· ὡς δὲ αὕτως καὶ τοῖς φυδμοῖς Κρητικοῖς χρῆσθαι κατὰ τὰς φύδας συντονωτάτοις οὖσιν C.481οῦς Θάλητα ἀνευρεῖν, φὶ καὶ τοὺς παιᾶνας καὶ τὰς ἄλλας τὰς ἐπιχωρίους φύδας ἀνατιθέασι καὶ πολλὰ τῶν νομίμων· καὶ ἐσθῆτι δὲ καὶ ὑποδέσει πολεμικῇ χρῆσθαι, καὶ τῶν δώρων τιμιώτατα αὐτοῖς εἶναι τὰ ὅπλα.

17 Λέγεσθαι δὲ ὑπό τινων ὡς Λακωνικὰ εἴη τὰ πολλὰ τῶν νομίζομένων Κρητικῶν, τὸ δὲ ἀληθὲς εὑρησθαι 25 μὲν ὑπ' ἐκείνων, ἡρῷιβωκέναι δὲ τοὺς Σπαρτιάτας, τοὺς δὲ Κρῆτας ὀλιγωρῆσαι, κακωθεισῶν τῶν πόλεων καὶ μάλιστα τῆς Κνωσσῶν, τῶν πολεμικῶν· μεῖναι δέ τινα τῶν νομίμων παρὰ Λυττίοις καὶ Γορτυνίοις καὶ ἄλλοις τισὶ πολιχνίοις μᾶλλον ἢ παρ' ἐκείνοις· καὶ δὴ 30 καὶ τὰ Λυττίων νόμιμα ποιεῖσθαι μαρτύρια τοὺς τὰ Λακωνικὰ πρεσβύτερα ἀποφαίνοντας· ἀποίκους γὰρ

δύντας φυλάττειν τὰ τῆς μητροπόλεως ἔθη, ἐπει ἄλλως γε εὑηθες εἶναι τὸ τοὺς βέλτιους συνεστῶτας καὶ πολιτευομένους τῶν χειρόνων ζηλωτὰς ἀποφαίνειν· οὐκ εῖ δὲ ταῦτα λέγεσθαι· οὗτε γὰρ ἐκ τῶν νῦν καθεστη-
 5 κότων τὰ παλαιὰ τεκμηριοῦσθαι δεῖν, εἰς τὰν αντία ἑκατέρων μεταπεπτωκότων· καὶ γὰρ ναυκρατεῖν πρότερον τοὺς Κρήτας, ὥστε καὶ παροιμιάζεσθαι πρὸς τοὺς προσποιουμένους μὴ εἰδέναι ἃ ἵσασιν „δ Κρήτες „ἀγνοεῖ τὴν θάλατταν,“ νῦν δὲ ἀποβεβληκέναι τὸ
 10 ναυτικόν· [οὕτε] ὅτι ἀποικοί τινες τῶν πόλεων γεγόνασι τῶν ἐν Κρήτῃ Σπαρτιατῶν, ἐν τοῖς ἐκείνων νομίμοις διαμένειν ἐπηναγκάσθαι· πολλὰς γοῦν τῶν ἀποικίδων μὴ φυλάττειν τὰ πάτραια, πολλὰς δὲ καὶ τῶν μὴ ἀποικίδων ἐν Κρήτῃ τὰ αὐτὰ ἔχειν τοῖς ἀποικίσις ἔθη.

Τῶν τε Σπαρτιατῶν τὸν νομοθέτην Λυκοῦρον 18 πέντε γενεαῖς νεώτερον Ἀλθαιμένους εἶναι τοῦ στελλαντος τὴν εἰς Κρήτην ἀποικίαν· τὸν μὲν γὰρ ἴστορες οὐδεὶς Κίσσου παῖδα τοῦ τὸν Ἀργος κτίσαντος περὶ τὸν
 20 αὐτὸν χρόνον ἡνίκα Προκλῆς τὴν Σπάρτην συνφύκει, Λυκοῦρογον δὲ διμολογεῖσθαι παρὰ πάντων ἐκτονὸν ἀπὸ Προκλέους γεγονέναι· τὰ δὲ μιμήματα μὴ εἶναι πρότερα τῶν παραδειγμάτων μηδὲ τὰ νεώτερα τῶν πρεσβυτέρων· τὴν τε ὄφησιν τὴν παρὰ τοῖς Λακεδαιμονίοις ἐπιχωριάζουσαν καὶ τοὺς διυθμοὺς καὶ παιᾶνας τοὺς κατὰ νόμου ἀδομένους καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν νομίμων Κρητικὰ καλεῖσθαι παρ’ αὐτοῖς ὡς ἀν ἐκεῖθεν ὁρμώμενα· τῶν δὲ ἀρχέων τὰ μὲν καὶ τὰς διοικήσεις ἔχειν τὰς αὐτὰς καὶ τὰς ἐπωνυμίας, ὥσπερ καὶ τὴν τῶν
 30 γερόντων ἀρχὴν καὶ τὴν τῶν ἱππέων (πλὴν ὅτι τοὺς ἐν Κρήτῃ ἵππεας καὶ ἵππους κεκτῆσθαι συμβέβηκεν· C.482 ἔξ οὖτε τεκμαίρονται πρεσβυτέρων εἶναι τῶν ἐν Κρήτῃ

Ιππέων τὴν ἀρχήν· σώζειν γὰρ τὴν ἐτυμότητα τῆς προσηγορίας· τοὺς δὲ μὴ ἵπποτροφεῖν), τοὺς ἐφόδους δὲ τὰ αὐτὰ τοῖς ἐν Κρήτῃ κόσμοις διοικοῦντας ἐτέρως ὀνομάσθαι· τὰ δὲ συσσίτια ἀνδρεῖα παρὰ μὲν τοῖς Κρησὶν καὶ νῦν ἔτι καλεῖσθαι, παρὰ δὲ τοῖς Σπαρτιάταις μὴ διαμεῖναι καλούμενα ὅμοιῶς πρότερον· παρ' Ἀλκμάνι γοῦν οὕτω κεῖσθαι „φοίναις δὲ καὶ ἐν Θιάσοισιν ἀνδρεῖσιν παρὰ δαιτυμόνεσσι πρέπει παιᾶνα „κατάρχειν.“

- 19 Λέγεσθαι δ' ὑπὸ τῶν Κρητῶν ὡς καὶ παρ' αὐτοὺς ἀφίκοιτο Λυκοῦργος κατὰ τοιαύτην αἰτίαν· ἀδελφὸς ἦν πρεσβύτερος τοῦ Λυκούργου Πολυδέκτης· οὗτος τελευτῶν ἔγκυον κατέλιπε τὴν γυνναῖκα· τέως μὲν οὗν ἐβασίλευεν ὁ Λυκοῦργος ἀντὶ τοῦ ἀδελφοῦ, γενομένου δὲ παιδὸς ἐπετρόπευεν ἐκεῖνον, εἰς δὲν ἡ ἀρχὴ καθῆται κουσα ἐτύγχανε· λοιδορούμενος δή τις αὐτῷ σαφῶς εἶπεν εἰδέναι διότι βασιλεύσοι· λαβὼν δ' ὑπόνοιαν ἐκεῖνος ὡς ἐκ τοῦ λόγου τούτου διαβάλλοιτο ἐπιβουλὴ ἐξ αὐτοῦ τοῦ παιδός, δείσας μὴ ἐκ τύχης ἀποδανόντος αἰτίαν αὐτὸς ἔχοι παρὰ τῶν ἐχθρῶν, ἀπῆρεν εἰς 20 Κρήτην. ταύτην μὲν δὴ λέγεσθαι τῆς ἀποδημίας αἰτίαν· ἐλθόντα δὲ πλησιάσαι Θάλητι μελοποιῷ ἀνδρὶ καὶ νομοθετικῷ, ἰστορήσαντα δὲ παρ' αὐτοῦ τὸν τρόπον δὲν Ῥαδάμανθύς τε πρότερον καὶ ὕστερον Μίνως, ὡς παρὰ τοῦ Διός, τοὺς νόμους ἐκφέροι εἰς ἀνδρῶπον, γενόμενον δὲ καὶ ἐν Αἴγυπτῳ καὶ καταμαθόντα καὶ τὰ ἐκεῖ νόμιμα, ἐντυχόντα δ', ὡς φασί τινες, καὶ Ὁμήρως διατρίβοντι ἐν Χίῳ, κατάραι πάλιν εἰς τὴν οἰκείαν, καταλαβεῖν δὲ τὸν τοῦ ἀδελφοῦ υἱὸν τὸν Πολυδέκτον Χαρίλαον βασιλεύοντα· εἰδ' ὅρμησαι 30 διαθέναι τοὺς νόμους φοιτῶντα ὡς τὸν θεὸν τὸν ἐν Δελφοῖς, καὶ εἶθεν κομβίζοντα τὰ προστάγματα, καθά-

περὶ περὶ Μίνω ἐκ τοῦ ἄντρου τοῦ Λιὸς παραπλήσια
ἐκεῖνοις τὰ πλείω.

Τῶν Κρητικῶν τὰ κυριώτατα τῶν καθ' ἔκαστα 20
τοιαῦτα εἰρημένα. γαμεῖν μὲν ἀμα πάντες ἀναγκάζονται
5 παρ' αὐτοῖς οἱ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἐκ τῆς τῶν παι-
δῶν ἀγέλης ἐκριθέντες, οὐκ εὐθὺς δ' ἄγονται παρ'
ἔαυτοὺς τὰς γαμηθείσας παιδας, ἀλλ' ἐπάν ήδη διοι-
κεῖν ἵκαναι ὡσι τὰ περὶ τὸν οἰκους· φερνὴ δ' ἐστίν,
ἄν ἀδελφοὶ ὡσι, τὸ ήμισυ τῆς τοῦ ἀδελφοῦ μερίδος·
10 παιδας δὲ γράμματά τε μανθάνειν καὶ τὰς ἐκ τῶν νό-
μων φύδας καὶ τινα εἰδὴ τῆς μουσικῆς. τοὺς μὲν οὖν ἔτι C.483
νεωτέρους εἰς τὰ συσσίτια ἄγουσι τὰ ἀνδρεῖα· χαμαὶ¹
δὲ καθήμενοι διαιτῶνται μετ' ἀλλήλων ἐν φαύλοις
τριβωνίοις καὶ χειμῶνος καὶ θέρους τὰ αὐτά, διακο-
15 νοῦσί τε καὶ ἔαυτοῖς καὶ τοῖς ἀνδράσι· συμβάλλουσι
δ' εἰς μάχην καὶ οἱ ἐκ τοῦ αὐτοῦ συσσιτίου πρὸς ἀλλή-
λους, καὶ πρὸς ἑτερα συσσίτια· καθ' ἔκαστον δὲ ἀν-
δρεῖον ἐφέστηκε παιδονόμος· οἱ δὲ μείζους εἰς τὰς ἀγέ-
λας ἄγονται· τὰς δ' ἀγέλας συνάγουσιν οἱ ἐπιφανέ-
20 στατοι τῶν παιδῶν καὶ δυνατώτατοι ἔκαστος ὅσους
πλείστους οἶος τέ ἐστιν ἀνθροίξων· ἐκάστης δὲ τῆς ἀγέ-
λης ἀρχῶν ἐστὶν ὡς τὸ πολὺ ὁ πατὴρ τοῦ συναγαγόν-
τος, ωρίος ὃν ἐξάγειν ἐπὶ θήραν καὶ δρόμους, τὸν δ'
ἀπειθοῦντα κολάζειν· τρέφονται δὲ δημοσίᾳ· τακταῖς
25 δέ τισιν ἡμέραις ἀγέλη πρὸς ἀγέλην συμβάλλει μετὰ
αὐλοῦ καὶ λύρας εἰς μάχην ἐν δύναμι, ὥσπερ καὶ ἐν
τοῖς πολεμικοῖς εἰωθασιν, ἐκφέρουσι δὲ καὶ τὰς πλη-
γὰς τὰς μὲν διὰ χειρὸς τὰς δὲ καὶ δι' ὅπλων σιδηρῶν.

"Ιδιον δ' αὐτοῖς τὸ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμον· οὐ 21
30 γὰρ πειθοὶ κατεργάζονται τοὺς ἔρωτας ἀνθρώπους ἀλλ' ἀρ-
παγῇ· προλέγει τοῖς φύλοις πρὸ τριῶν ἡ πλειόνων ἡμε-
ρῶν ὁ ἔραστὴς ὅτι μέλλει τὴν ἀρπαγὴν ποιεῖσθαι· τοῖς

δ' ἀποκρύπτειν μὲν τὸν παῖδα η̄ μὴ ἔαν πορεύεσθαι τὴν τεταγμένην ὅδὸν τῶν αἰσχύστων ἐστίν, ὡς ἐξομολογουμένοις ὅτι ἀνάξιος ὁ παῖς εἴη τοιούτου ἐραστοῦ τυγχάνειν· συνιόντες δ', ἂν μὲν τῶν ἵσων η̄ τῶν ὑπερεχόντων τις η̄ τοῦ παιδὸς τιμῆ καὶ τοῖς ἄλλοις ὁ ἀρπάζων, ἐπιδιώκοντες ἀνθήψαντο μόνον μετρίως τὸ νόμιμον ἐκπληροῦντες, τάλλα δ' ἐπιτρέποντιν ἄγειν χαλφούτες· ἂν δ' ἀνάξιος, ἀφαιροῦνται· πέρας δὲ τῆς ἐπιδιώξεως ἐστιν ἔως ἂν ἀχθῇ ὁ παῖς εἰς τὸ τοῦ ἀρπάσαντος ἀνθρεῖον. ἐράσμιον δὲ νομίζουσιν οὐ τὸν κάλλοις διαφέροντα, ἀλλὰ τὸν ἀνθρείᾳ καὶ κοσμιώτητι καὶ δωρησάμενος ἀπάγει τὸν παῖδα τῆς χώρας εἰς ὃν βούλεται τόπον· ἐπακολούθουσι δὲ τῇ ἀρπαγῇ οἱ παραγενόμενοι, ἐστιαθέντες δὲ καὶ συνθηρεύσαντες διμηνον (οὐ γὰρ ἔξεστι πλείω χρόνον κατέχειν τὸν παῖδα) εἰς τὴν πόλιν καταβαίνονται. ἀφίεται δ' ὁ παῖς δῶρα λαβὼν στολὴν πολεμικὴν καὶ βοῦν καὶ ποτήριον. ταῦτα μὲν τὰ κατὰ τὸν νόμον δῶρα καὶ ἄλλα πλείω καὶ πολυτελῆ, ὥστε συνεργανίζειν τοὺς φίλους διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀναλωμάτων. τὸν μὲν οὖν βοῦν θύει τῷ 20 Διὶ καὶ ἐστιὶ τοὺς συγκαταβαίνοντας, εἰτ' ἀποφαίνεται περὶ τῆς πρὸς τὸν ἐραστὴν διμιλίας εἰτ' ἀσμενίζων C.484 τετύχηνεν εἰτε μή, τοῦ νόμου τοῦτον ἐπιτρέψαντος, ἵν' εἰτις αὐτῷ βίᾳ προσενήνεται κατὰ τὴν ἀρπαγήν, ενταῦθα παρῇ τιμωρεῖν ἔαυτῷ καὶ ἀπαλλάττεσθαι. τοῖς 25 δὲ καλοῖς τὴν ἰδέαν καὶ προγόνων ἐπιφανῶν [αἰσχρὸν] ἐραστῶν μὴ τυχεῖν, ὡς διὰ τὸν τρόπον τοῦτο παθοῦσιν. ἔχουσι δὲ τιμὰς οἱ παρασταθέντες (οὗτοι γὰρ καλοῦσι τοὺς ἀρπαγέντας)· ἔν τε γὰρ τοῖς χοροῖς καὶ τοῖς δρόμοις ἔχουσι τὰς ἐντιμοτάτας χώρας, τῇ τε στολῇ 30 κοσμεῖσθαι διαφερόντως τῶν ἄλλων ἐφίεται τῇ δοθείσῃ παρὰ τῶν ἐραστῶν, καὶ οὐ τότε μόνον ἄλλὰ καὶ

τέλειοι γενόμενοι διάσημοιν ἐσθῆτα φέρουσιν, ἀφ' ἣς γνωσθήσεται ἔκαστος κλεινὸς γενόμενος· τὸν μὲν γὰρ ἔρωμενον καλοῦσι κλεινὸν τὸν δ' ἔραστὴν φιλήτορα.
ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμα. ἄρχοντας δὲ 22
5 δέκα αἰροῦνται· περὶ δὲ τῶν μεγίστων συμβούλοις
χρῶνται τοῖς γέροντις καλούμενοις· παθίστανται δ' εἰς
τοῦτο τὸ συνέδριον οἱ τῆς τῶν πόσμων ἀρχῆς ἡξιωμέ-
νοι καὶ τάλλα δόκιμοι ἀρινόμενοι. ἀξίαν δ' ἀναγρα-
φῆς τὴν τῶν Κορητῶν πολιτείαν ὑπέλαβον διά τε τὴν
10 ἰδιότητα καὶ τὴν δόξαν· οὐ πολλὰ δὲ διαμένει τούτων
τῶν νομίμων, ἀλλὰ τοῖς Ρωμαίων διατάγμασι τὰ πλεῖ-
στα διοικεῖται, παθάπερ καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις ἐπαρχίαις
συμβαίνει.

Περὶ δὲ τὴν Κορήτην εἰσὶν ιῆσοι, Θήρα μὲν ἡ τῶν 3
15 Κυρηναίων μητρόπολις, ἅποικος Λακεδαιμονίων, καὶ
πλησίον ταύτης Ἀνάφη, ἐν ἥ τὸ τοῦ Αἴγλητον Ἀπόλ-
λωνος λεόδον. λέγει δὲ καὶ Καλλίμαχος τοτὲ μὲν οὕτως
„Αἴγλητην Ἀνάφην τε Λακωνίδι γείτονα Θήρη,“ τοτὲ
δὲ τῆς Θήρας μυησθείς „μήτηρ εὐίππου πατρίδος ἡμε-
20 „τέρης.“ ἔστι δὲ μακρὰ ἡ Θήρα, διακοσίων οὖσα τὴν
περίμετρον σταδίων, κειμένη δὲ κατὰ Δίαν ιῆσον τὴν
πρὸς Ἡρακλειώ τῷ Κυνωσίῳ, διέχει δὲ τῆς Κορήτης εἰς
ἐπτακοσίους· πλησίον δ' αὐτῆς ἡ τε Ἀνάφη καὶ Θηρα-
σία. ταύτης δ' εἰς ἐκατὸν ἀπέχει υησίδιον „Ιος,“ ἐν ᾧ
25 κεκηδεύσθαι τινές φασι τὸν ποιητὴν Ὄμηρον· ἀπὸ δὲ
τῆς „Ιου πρὸς ἐπέρεαν ἵόντι Σίκινος καὶ Λάγουσα καὶ
Φοιλέγανδρος, ἦν „Ἄρατος σιδηρείην ὀνομάζει διὰ τὴν
τραχύτητα· ἔγγυς δὲ τούτων Κίμωλος, δῆεν ἡ γῆ ἡ
Κίμωλία· ἐνθεν ἡ Σίφνιος ἐν ὅψει ἐστίν, ἐφ' ἥ λέγουσι
30 Σίφνιον ἀστραγαλον διὰ τὴν εὔτελειαν. ἔτι δ' ἔγγυ-
τέρω καὶ τῆς Κίμωλου καὶ τῆς Κορήτης ἡ Μῆλος ἀξιο-
λογωτέρα τούτων, διέχουσα τοῦ Ἐρμιονικοῦ ἀκρωτη-

ρίου τοῦ Σκυλλαίου σταδίους ἐπτακοσίους· τοσούτους δὲ σχεδόν τι καὶ τοῦ Δικτυνναίου· Ἀθηναῖοι δέ ποτε πέμψαντες στρατείαν ἡβῆδὸν κατέσφραξαν τοὺς πλεί-
C.485ους. αὗται μὲν οὖν ἐν τῷ Κρητικῷ πελάγει, ἐν δὲ τῷ
Αἰγαίῳ μᾶλλον αὐτή τε ἡ Ἀῆλος καὶ αἱ περὶ αὐτὴν Κυ- 5
κλαδες καὶ αἱ ταύταις προσκείμεναι Σποράδες, ᾧν εἰσι
καὶ αἱ λεχθεῖσαι περὶ τὴν Κρήτην.

2 Ἡ μὲν οὖν Ἀῆλος ἐν πεδίῳ κειμένην ἔχει τὴν πό-
λιν καὶ τὸ ιερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τὸ Λητῶν· ὑπέρ-
κειται δὲ τῆς πόλεως ὅρος ψιλὸν ὁ Κύνθος καὶ τραχύ, 10
ποταμὸς δὲ διαρρεεῖ τὴν νῆσον Ἰνωπὸς οὐ μέγας· καὶ
γὰρ ἡ νῆσος μικρά. τετίμηται δὲ ἐκ παλαιοῦ διὰ τοὺς
θεοὺς ἀπὸ τῶν ἡρωιῶν χρόνων ἀρξαμένη· μυθεύεται
γὰρ ἐνταῦθα ἡ Λητώ τὰς ὡδῖνας ἀποθέσθαι τοῦ τε
Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Ἀρτέμιδος. „ἥν γὰρ τοπάρουιθε 15
„φορητά“ φησίν ὁ Πίνδαρος „κυμάτεσσιν παντοδα-
„πῶν τ’ ἀνέμων φιπαῖσιν· ἀλλ’ ἀ Κοιογενῆς ὅπότ’
„ῳδίνεσσι θύοισ’ ἀγχιτόκοις ἐπέβα νιν, δὴ τότε τέσ-
„σαρες ὁρθαὶ πρέμυνων ἀπώρουσσαν χθονίων, ἂν δ’
„ἐπικράνοις σχέδον πέτραν ἀδαμαντοπέδιλοι πίονες· 20
„ἐνθα τεκοῖσ’ εὐδαίμονις ἐπόφατο γέννηναν.“ ἐνδοξον
δ’ ἐποίησαν αὐτὴν αἱ περιοικίδες νῆσοι, καλούμε-
ναι Κυκλάδες, κατὰ τιμὴν πέμπουσαι δημοσίᾳ θεω-
ρούς τε καὶ θυσίας καὶ χοροὺς παρθένων πανηγύρεις
τε ἐν αὐτῇ συνάγουσαι μεγάλας. 25

3 Κατ’ ἀρχὰς μὲν οὖν δώδεκα λέγονται· προσεγέ-
νοντο δὲ καὶ πλείους. Ἀρτεμίδωρος γοῦν [πεντεκαΐδε-
κα] διαριθμεῖται, περὶ τῆς Ἐλένης εἰπὼν ὅτι ἀπὸ Θορί-
κου μέχρι Σουνίου παράκειται μακρὰ σταδίων ὅσον ἐξή-
κοντα τὸ μῆκος, ἀπὸ ταύτης γάρ, φησίν, αἱ καλούμεναι 30
Κυκλάδες εἰσίν· ὀνομάζει δὲ Κέω τὴν ἐγγυτάτω τῇ
Ἐλένῃ, καὶ μετὰ ταύτην Κύθνον καὶ Σέριφον καὶ Μῆ-

λον καὶ Σίφνουν καὶ Κίμωλον καὶ Πρεπέσινθον καὶ Ὥλιαρον, καὶ πρὸς ταύταις Πάρον Νάξον Σύρον Μύκονον Τήνον" Ανδρον Γύαρον. τὰς μὲν οὖν ἄλλας τῶν δώδεκα νομίζω, τὴν δὲ Πρεπέσινθον καὶ Ὥλιαρον καὶ 5 Γύαρον ἔττον· ὅν τῇ Γυάρῳ προσορμισθεὶς ἔγνων κωμίον ὑπὸ ἀλιέων συνοικούμενον· ἀπαίροντες δὲ ἐδεξάμεθα πρεσβευτὴν ἐνθένδε ὡς Καΐσαρα προκεχειρισμένον τῶν ἀλιέων τινά (ἥν δὲ ἐν Κορίνθῳ Καΐσαρ βαδίζων ἐπὶ τὸν Θρίαμβον τὸν Ἀκτιακόν). συμπλέων 10 δὴ ἔλεγε πρὸς τοὺς πυθομένους ὅτι πρεσβεύοι περὶ κουφισμοῦ τοῦ φόρου· τελοῖεν γὰρ δραχμὰς ἑκατὸν πεντήκοντα καὶ τὰς ἑκατὸν χαλεπῶς ἀν τελοῦντες. δη-
λοῦ δὲ τὰς ἀπορίας αὐτῶν καὶ "Ἄρατος ἐν τοῖς κατὰ λεπτόν,, ὁ Λητοῦ, σὺ μὲν ἦ με σιδηρείη Φολεγάνδρῳ
15 „δειλὴν ἥ Γυάρῳ παρελεύσεαι αὐτέχ" διοίην."

Τὴν μὲν οὖν Δῆλον ἔνδοξον γενομένην οὕτως ἔτι 4 μᾶλλον ἡὕησε κατασκαφεῖσα ὑπὸ Ρωμαίων Κόρινθος· ἐκεῖσε γὰρ μετεχώρησαν οἱ ἐμποροι, καὶ τῆς ἀτελείας τοῦ ιεροῦ προκαλούμενης αὐτὸν καὶ τῆς εὐκαιρίας τοῦ λιμένος· ἐν καλῷ γὰρ κεῖται τοῖς ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν Ἀσίαν πλέουσιν· ἥ τε πανήγυρις ἐμπορικόν τι πρᾶγμα ἐστι, καὶ συνήθεις ἡσαν αὐτῇ καὶ Ρωμαῖοι τῶν ἄλλων μάλιστα, καὶ ὅτε συνειστήκει ἡ Κόρινθος· Ἀθηναῖοί τε λαβόντες τὴν υῆσον καὶ 20 τῶν ιερῶν ἄμμα καὶ τῶν ἐμπόρων ἐπεμελοῦντο ἴκανῶς· ἐπελθόντες δὲ οἱ τοῦ Μιθριδάτου στρατηγοὶ καὶ ὁ ἀποστήσας τύραννος αὐτὴν διελυμήναντο πάντα, καὶ παρέλαβον ἐρήμην οἱ Ρωμαῖοι πάλιν τὴν υῆσον, ἀναγωρήσαντος εἰς τὴν οἰκείαν τοῦ βασιλέως, καὶ διετέλεσε 25 30 μέχρι οὗν ἐνθεῶς πράττουσα. ἔχουσι δὲ αὐτὴν Ἀθηναῖοι. Ρήναια δὲ ἐρημον υησίδιόν ἐστιν ἐν τέτταρσι ἵ τῆς Δῆλου σταδίοις, ὅπου τὰ μηνήματα τοῖς Αηλίοις

έστιν. οὐ γὰρ ἔξεστιν ἐν αὐτῇ τῇ Δήλῳ θάπτειν οὐδὲ καίειν νεκρόν. οὐκ ἔξεστι δὲ οὐδὲ κύνα ἐν Δήλῳ τρέφειν. ὀνομάζετο δὲ καὶ Ὁρτυγία πρότερον.

6 Κέως δὲ τετράπολις μὲν ὑπῆρξε, λείπονται δὲ δύο, ἡ τε Ἰουλίς καὶ ἡ Καρθαία, εἰς ἣς συνεπολέσθησαν αἱ 5 λοιπαί, ἡ μὲν Ποιήσσα εἰς τὴν Καρθαίαν ἡ δὲ Κορησία εἰς τὴν Ἰουλίδα. ἐκ δὲ τῆς Ἰουλίδος ὁ τε Σιμωνίδης ἦν ὁ μελοποιὸς καὶ Βακχυλίδης ἀδελφιδοῦς ἑκείνου, καὶ μετὰ ταῦτα Ἐρασίστρατος ὁ Ιατρὸς καὶ τῶν ἐκ τοῦ περιπάτου φιλοσόφων Ἀρίστων ὁ τοῦ Βορυσθενίτου 10 Βίλινος ξηλωτής. παρὰ τούτοις δὲ δοκεῖ τεθῆναι ποτε νόμος, οὗ μέμνηται καὶ Μένανδρος „καλὸν τὸ Κείων „νόμιμόν ἐστι, Φανία· ὁ μὴ δυνάμενος ξῆν καλῶς οὐ „ξῆν κακῶς.“ προσέταττε γάρ, ὡς ἔοικεν, ὁ νόμος τοὺς ὑπὲρ ἔξηκοντα ἔτη γεγονότας κωνειάζεσθαι καὶ τοῦ 15 διαρκεῖν τοῖς ἄλλοις τὴν τροφήν· καὶ πολιορκουμένους δέ ποτε ὑπὸ Ἀθηναίων ψηφίσασθαι φασι τοὺς πρεσβυτάτους ἐξ αὐτῶν ἀποθανεῖν, ὁρισθέντος πλήθους ἐτῶν, τοὺς δὲ παύσασθαι πολιορκοῦντας. κεῖται δ' ἐν ὅρῃ τῆς θαλάττης διέχουσα ἡ πόλις ὅσον πέντε 20 καὶ εἴκοσι σταδίους, ἐπίνειον δ' ἔστιν αὐτῆς τὸ χωρίον ἐν φύΐδρου τῷ Κορησίᾳ κατοικίαν οὐδὲ κώμης ἔχουσα. C.487 Εστι δὲ καὶ πρὸς τῇ Κορησίᾳ Σμινθαίου Ἀπόλλωνος λερὸν καὶ πρὸς Ποιήσση, μεταξὺ δὲ τοῦ λεροῦ καὶ τῶν τῆς Ποιησῆς ἐρειπίων τὸ τῆς Νεδουσίας Ἀθηνᾶς 25 λερόν, ἰδρυσαμένου Νέστορος κατὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον. ἔστι δὲ καὶ Ἐλιξός ποταμὸς περὶ τὴν Κορησίαν.

7 Μετὰ δὲ ταύτην Νάξος καὶ Ἀνδρος ἀξιόλογοι καὶ Πάρος· ἐντεῦθεν ἦν Ἀρχίλοχος ὁ ποιητής. ὑπὸ δὲ Πα-30 φίων ἐκτίσθη Θάσος καὶ Πάριον ἐν τῇ Προκοπούτιδι πόλις. ἐν ταύτῃ μὲν οὖν ὁ βωμὸς λέγεται θέας ἄξιος, στα-

διαιίας ἔχων τὰς πλευράς· ἐν δὲ τῇ Πάρῳ ἡ Παρία λιθος λεγομένη ἀρίστη πρὸς τὴν μαρμαρογλυφίαν.

Σῦρος δ' ἔστι μηκύνουσι τὴν πρώτην συλλαβήν, 8
ἔξι ἡς Φερεκύδης ὁ Βάβυος ἦν· νεώτερος δ' ἔστιν ὁ
5' Αθηναῖος ἐκείνου. ταύτης δοκεῖ μνημονεύειν ὃ ποιητὴς Συρίην καλῶν „νῆσός τις Συρίη κικλήσκεται Ὁρ-
„τυγίης καθύπερθε.“

Μύκονος δ' ἔστιν ὑφ' ἥ μυθεύουσι κεῖσθαι τῶν 9
γιγάντων τοὺς ὑστάτους ὑφ' Ἡρακλέους καταλυθέν-
10 τας, ἀφ' ᾧν ἡ παροιμία „πάνθ' ὑπὸ μίαν Μύκονον“
ἐπὶ τῶν ὑπὸ μίαν ἐπιγραφὴν ἀγόντων καὶ τὰ διηρ-
τημένα τῇ φύσει. καὶ τοὺς φαλακροὺς δέ τινες Μυκο-
νίους καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τὸ πάθος τοῦτο ἐπιχωριάζειν
τῇ νήσῳ.

15 Σέριφος δ' ἔστιν ἐν ᾧ τὰ περὶ τὸν Δίκτυν μεμύ- 10
θευται τὸν ἀνελκύσαντα τὴν λάρνακα τοῖς δικτύοις
τὴν περιέχουσαν τὸν Περσέα καὶ τὴν μητέρα Δανάην,
καταπεποντωμένους ὑπὲρ Ἀκρισίου τοῦ πατρὸς τῆς Δα-
νάης· τραφῆναι τε γὰρ ἐνταῦθα τὸν Περσέα φασί, καὶ
20 κομίσαντα τὴν τῆς Γοργόνος κεφαλήν, δεῖξαντα τοῖς
Σεριφίοις ἀπολιθῶσαι πάντας· τοῦτο δὲ πρᾶξαι τιμω-
ροῦντα τῇ μητρὶ, ὅτι αὐτὴν Πολυδέκτης ὁ βασιλεὺς
ἀκούσαν ἄγεσθαι προείλετο πρὸς γάμον συμπραττόν-
των ἐκείνων. οὕτω δ' ἔστι πετρώδης ἡ νῆσος ὡστε ὑπὸ
25 τῆς Γοργόνος τοῦτο παθεῖν αὐτὴν φασιν οἱ κωμῳ-
δοῦντες.

Τήνος δὲ πόλιν μὲν οὐ μεγάλην ἔχει, τὸ δὲ 11
τοῦ Ποσειδῶνος μέγα ἐν ἄλσει τῆς πόλεως ἔξω θέας
ἄξιον, ἐν φύῃ καὶ ἐστιατόρια πεποίηται μεγάλα, σημείον
30 τοῦ συνέρχεσθαι πλῆθος ἵκανὸν τῶν συνθυόντων αὐ-
τοῖς ἀστυγειτόνων τὰ Ποσειδώνια.

Ἐστι δὲ καὶ Ἀμοργὸς τῶν Σποράδων, ὅθεν ἦν 12

Σιμωνίδης ὁ τῶν λάμβαν ποιητής, καὶ Λέβινθος καὶ
Λέρος , καὶ τόδε Φωκυλίδου· Λέριοι κακοί, οὐχ
„ὅ μὲν ὅς δ’ οὕ, πάντες, πλὴν Προκλέους, καὶ Προ-
C.488, κλένης Λέριος.“ διεβέβλητο γὰρ ὡς κακογένεις οἱ ἐν-
θένδε ἄνθρωποι.

5

13 Πλησίου δ' ἔστι καὶ ἡ Πάτμος καὶ Κορασσίαι πρὸς
δύσιν κείμεναι τῇ Ἰκαρίᾳ, αὗτη δὲ Σάμῳ. ἡ μὲν οὖν
Ἰκαρία ἔρημός ἔστι, νομάς δ' ἔχει καὶ χρῶνται αὐταῖς
Σάμιοι· τοιαύτη δ' οὖσα ἐνδοξος δμως ἔστι, καὶ ἀπ'
αὐτῆς Ἰκαρίου καλεῖται τὸ προκείμενον πέλαγος, ἐν φ^ῃ 10
καὶ αὐτὴ καὶ Σάμος καὶ Κῶς ἔστι καὶ αἱ ἄρτι λεχθεῖσαι
Κορασσίαι καὶ Πάτμος καὶ Λέρος. συνάπτει δὲ τῷ Ἰκα-
ρίῳ τὸ Καρπάθιον πέλαγος πρὸς νότον, τούτῳ δὲ τὸ
Αἴγαυπτιον, πρὸς δὲ δύσιν τὸ τε Κρητικὸν καὶ τὸ Αι-
βυνόν.

15

14 Καὶ ἐν τῷ Καρπαθίῳ δ' εἰσὶ πολλαὶ τῶν Σποράδων
μεταξὺ τῆς Κῶς μάλιστα καὶ Ρόδου καὶ Κορήτης· ὥν εἰσιν
Ἀστυπάλαιά τε καὶ Τήλος καὶ Χαλκία καὶ ἡ Ὁμηρος
δινομάζει ἐν τῷ καταλόγῳ „οἱ δ' ἄρα Νίσυρον τ' εἰχον
„Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὔρυπύλοιο πό- 20
„λιν, νήσους τε Καλύδνας.“ ἐξω γὰρ τῆς Κῶς καὶ τῆς
Ρόδου, περὶ ὥν ἐροῦμεν ὕστερον, τάς τε ἄλλας ἐν ταῖς
Σποράσι τίθεμεν καὶ δὴ καὶ ἐνταῦθα μεμνήμεθα αὐ-
τῶν, καίπερ τῆς Ἀσίας οὐ τῆς Εὐρώπης ἐγγὺς οὐσῶν,
ἐπειδὴ τῇ Κορήτῃ καὶ ταῖς Κυκλάσι καὶ τὰς Σποράδας 25
συμπεριλαβεῖν ἡπείρετό πως ὁ λόγος· ἐν δὲ τῇ τῆς
Ἀσίας περιοδείᾳ τὰς προσεχεῖς αὐτῇ τῶν ἀξιολόγων
νήσων προσπεριοδεύσομεν, Κύπρον καὶ Ρόδον καὶ
Κῶν καὶ τὰς ἐν τῇ ἐφεξῆς παραλίᾳ κειμένας, Σάμον

12. post Λέρος: ἐνδοξον δὲ καὶ τὸ ἐν αὐτῇ ὅρος ὁ Κερκε-
τεύς, μᾶλλον τῆς Ἀμπέλου· αὗτη δ' ὑπέροκνειται τῆς Σαμίων
πόλεως.

Χίον Λέσβου Τένεδου· νῦν δὲ τὰς Σποράδας ἡν̄ ἄξιον μυησθῆναι λοιπὸν ἔπιμεν.

Ἡ μὲν οὖν Ἀστυπάλαια ἵκανως ἐστι πελαγία, πό- 15 λιν ἔχουσα. ἡ δὲ Τήλος ἑκτέταται παρὰ τὴν Κινδλαν 5 μακρὰ ὑψηλὴ στενή, τὴν περίμετρον ὅσον ἑκατὸν καὶ τετταράκοντα σταδίων, ἔχουσα ὑφορμον. ἡ δὲ Χαλκία τῆς Τήλου διέχει σταδίους ὀγδοήκοντα, Καρπάθου δὲ τετρακοσίους, Ἀστυπαλαίας δὲ περὶ διπλασίους· ἔχει δὲ καὶ πατοικίαν ὁμώνυμον καὶ Ιερὸν Ἀπόλλωνος καὶ 10 λιμένα.

Νίσυρος δὲ πρὸς ἄρχοντον μέν ἐστι Τήλου διέχουσα 16 αὐτῆς ὅσον ἔξήκοντα σταδίους ὅσους καὶ Κῷ διέχει, στρογγύλῃ δὲ καὶ ὑψηλῇ καὶ πετρώδῃ τοῦ μυλλού λέ- 15 θου· τοῖς γοῦν ἀστυγείτοσιν ἐκεῖθεν ἐστιν ἡ τῶν μύλων εὐπορία. ἔχει δὲ καὶ πόλιν ὁμώνυμον καὶ λιμένα καὶ θεομά καὶ Ποσειδῶνος Ιερόν· περίμετρον δὲ αὐτῆς ὀγδοήκοντα στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ υησία πρὸς αὐτῇ Νίσυρον C.489 φίων λεγόμενα. φασὶ δὲ τὴν Νίσυρον ἀπόθραυσμα εἰ- 20 ναι τῆς Κῷ, προσθέντες καὶ μῆδον, ὅτι Ποσειδῶν διώ- κων ἔνα τῶν γιγάντων Πολυβάτην ἀποθραύσας τῇ τρι- αίνῃ τρύφος τῆς Κῷ ἐπ’ αὐτὸν βάλοι, καὶ γένοιτο υησος τὸ βληθὲν ἡ Νίσυρος ὑποκείμενον ἔχουσα ἐν αὐτῇ τὸν γίγαντα· τινὲς δὲ αὐτὸν ὑποκείσθαι τῇ Κῷ φασιν.

Ἡ δὲ Κάρπαθος, ἦν Κράπαθον εἶπεν ὁ ποιητής, 17 25 ὑψηλὴ ἐστι, κύκλου ἔχουσα σταδίων διακοσίων. τε- τράπολις δ’ ὑπῆρξε καὶ ὄνομα εἶχεν ἀξιόλογον, ἀφ’ οὗ καὶ τῷ πελάγει τοῦνομα ἐγένετο. μία δὲ τῶν πό- λεων ἐκαλεῖτο Νίσυρος ὁμώνυμος τῇ τῶν Νίσυρίων νήσῳ. κεῖται δὲ τῆς Λιβύης κατὰ Λευκὴν ἀκτὴν, ἡ τῆς 30 μὲν Ἀλεξανδρείας περὶ χιλίους διέχει σταδίους, τῆς δὲ Καρπαθου περὶ τετρακισχιλίους.

Κάδος δὲ ταύτης μὲν ἀπὸ ἑβδομήκοντά ἐστι στα- 18

διων, τοῦ δὲ Σαμωνίου τοῦ ἄκρου τῆς Κρήτης διακοσίων πεντήκοντα κύκλου δὲ ἔχει σταδίων ὅγδοήκοντα. ἐστι δ' ἐν αὐτῇ καὶ πόλις ὅμωνυμος, καὶ Κασίων υῆσοι καλούμεναι πλείους περὶ αὐτήν.

- 19 Νήσους δὲ Καλύδνας τὰς Σποράδας λέγειν φασὶ 5 τὸν ποιητήν, ἀν μίαν εἶναι Κάλυμναν· εἰκὸς δ' ὡς ἐκ τῶν Νισυρίων λέγονται καὶ Κασίων αἱ ἐγγὺς καὶ ὑπήκοοι, οὕτως καὶ τὰς τῇ Καλύμνῃ περικειμένας ἵσως τότε λεγομένη Καλύδνη· τινὲς δὲ δύο εἶναι Καλύδνας φασὶ Λέρον καὶ Κάλυμναν, ἀσπερ καὶ λέγειν τὸν ποιητήν. ὁ δὲ Σκήψιος πληθυντικῶς ὀνομάσθαι τὴν υῆσον Καλύμνας φησίν, ὡς Ἀθήνας καὶ Θήβας, δεῖν δὲ ὑπερβατῶς δέξασθαι τὸ τοῦ ποιητοῦ· οὐ γὰρ υῆσους Καλύδνας λέγειν, ἀλλ' „οἱ δ' ἄρα υῆσους Νισυρόν τ' „, εἰχον Κράπαδόν τε Κάσον τε καὶ Κᾶν, Εὔρυπύλοιο 15 „, πόλιν, Καλύδνας τε.“ ἀπαν μὲν οὖν τὸ νησιωτικὸν μέλι ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἀστεῖόν ἐστι καὶ ἐνάμιλλον τῷ Ἀττικῷ, τὸ δ' ἐν ταῖς δε ταῖς υῆσοις διαφερόντως, μάλιστα δὲ τὸ Καλύμνιον.

- 1 Τῇ δ' Εύρωπῃ συνεχής ἐστιν ἡ Ἀσία κατὰ τὸν Τάναλν συνάπτουσα αὐτῇ· περὶ ταύτης οὖν ἐφεξῆς δητέον διελόντας φυσικοῖς τισιν δροις τοῦ σαφοῦς χάριν. ὅπερ οὖν Ἑρατοσθένης ἐφ' ὅλης τῆς οἰκουμένης 25 ἐποίησε, τοῦθ' ἡμῖν ἐπὶ τῆς Ἀσίας ποιητέον.
- 2 Ὁ γὰρ Ταῦρος μέσην πως διέξωκε ταύτην τὴν ἥπειρον ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω τεταμένος, τὸ μὲν αὐτῆς ἀπολείπων πρὸς βορρᾶν τὸ δὲ μεσημβρινόν. καλοῦσι δὲ αὐτῶν οἱ Ἑλληνες τὸ μὲν ἐντὸς τοῦ Ταύρου 30 τὸ δὲ ἐκτός. εἰρηται δὲ ταῦθ' ἡμῖν καὶ πρότερον, ἀλλ' εἰρήσθω καὶ νῦν ὑπομνήσεως χάριν.

Πλάτος μὲν οὖν ἔχει τὸ ὄφος πολλαχοῦ καὶ τρισχυ- 3
λίων σταδίων, μῆκος δ' ὅσου καὶ τὸ τῆς Ἀσίας, τετ-
τάρῳ που μυριάδων καὶ πεντακισχιλίων, ἀπὸ τῆς
Ροδίων περαίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς καὶ Σκυθίας
5 πρὸς τὰς ἀνατολάς.

Διηγόηται δ' εἰς μέρη πολλὰ καὶ ὄνόματα περιγρα- 4
φαῖς καὶ μείζοσι καὶ ἐλάττοσιν ἀφωρισμένα. ἐπειδὸν δὲ ἐν
τῷ τοσούτῳ πλάτει τοῦ ὄφους ἀπολαμβάνεται τινα
ἔθνη, τὰ μὲν ἀσημότερα τὰ δὲ καὶ παντελῶς γνώριμα.⁴⁹¹
10 (καθάπερ ἡ Παρθυναία καὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ
Καππαδοκῶν τινες καὶ Κίλικες καὶ Πισίδαι), τὰ μὲν
* πλεονάκοντα τοῖς προσβόρροις μέρεσιν ἐνταῦθα τα-
κτέον, τὰ δὲ ἐν τοῖς νοτίοις εἰς τὰ νότια, καὶ τὰ ἐν
μέσῳ δὲ τῶν ὁρῶν κείμενα διὰ τὰς τῶν ἀέρων ὁμοιό-
15 τητας πρὸς βιορᾶν πως θετέον· ψυχροὶ γάρ εἰσιν, οἱ
δὲ νότιοι θερμοί. καὶ τῶν ποταμῶν δὲ αἱ φύσεις ἐν-
θένδε ιοῦσαι πᾶσαι σχεδόν τι εἰς τάναντία αἱ μὲν εἰς τὰ
βόρεια αἱ δὲ εἰς τὰ νότια μέροι (τά γε πρῶτα, καὶν ὕστε-
ρον τινες ἐπιστρέψασι πρὸς ἀνατολὰς ἢ δύσεις), ἔχουσι
20 τι εὐφυὲς πρὸς τὸ τοῖς ὄφεσιν διάφορα χρήσθαι κατὰ τὴν
εἰς δύο μέρη διαιρεσιν τῆς Ἀσίας· καθάπερ καὶ ἡ θά-
λαττα ἡ ἐντὸς στηλῶν, ἐπ' εὐθείας πως οὖσα ἡ πλεύ-
ση τοῖς ὄφεσι τούτοις, ἐπιτηδεία γεγένηται πρὸς τὸ
δύο ποιεῖν ἥπερδους, τὴν τε Εὐρώπην καὶ τὴν Αι-
25 βύην, ὅριον ἀμφοῖν οὖσα ἀξιόλογον.

Τοῖς δὲ μεταβαίνοντιν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης ἐπὶ τὴν 5
Ἀσίαν ἐν τῇ γεωγραφίᾳ τὰ πρὸς βιορᾶν ἔστι πρῶτα
τῆς εἰς δύο διαιρέσεως, ὥστε ἀπὸ τούτων ἀρκτέον.
αὐτῶν δὲ τούτων πρῶτα ἔστι τὰ περὶ τὸν Τάναϊν, ὃν-
30 περ τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας ὅριον ὑπεθέμεθα.
ἔστι δὲ ταῦτα τρόπον τινὰ χερρονησίζοντα· περιέχεται
γὰρ ἐκ μὲν τῆς ἐσπέρας τῷ ποταμῷ τῷ Τανάϊδι καὶ τῇ

Μαιώτιδι μέχρι τοῦ Βοσπόρου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου παραλίας τῆς τελευτώσης εἰς τὴν Κολχίδα· ἐκ δὲ τῶν ἄρχτων τῷ Ὀκεανῷ μέχρι τοῦ στόματος τῆς Κασπίας θαλάττης· ἔωθεν δὲ αὐτῇ ταύτῃ τῇ θαλάττῃ μέχρι τῶν μεθιορίων τῆς τε Ἀλβανίας καὶ τῆς Ἀρμενίας, καθ' 5 ἀὸ Κῦρος καὶ ὁ Ἀράξης ἐκδιδοῦσι ποταμοί, δέοντες δὲ μὲν διὰ τῆς Ἀρμενίας Κῦρος δὲ διὰ τῆς Ἰβηρίας καὶ τῆς Ἀλβανίας· ἐκ νότου δὲ τῇ ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Κύρου μέχρι τῆς Κολχίδος, ὅσον τρισχιλίων οὕση στάδιων ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν, δι' Ἀλβανῶν καὶ 10 Ἰβήρων, ὥστε ἴσθμοῦ λόγον ἔχειν. οἱ δὲ ἐπὶ τοσοῦτον συναγαγόντες τὸν ἴσθμὸν ἐφ' ὅσον Κλείταρχος, ἐπίκλυνστον φήσας εξ ἑκατέρου τοῦ πελάγους, οὐδὲ ἀν λόγου ἀξιοῖντο. Ποσειδώνιος δὲ χιλίων καὶ πεντακοσίων εἰρηκε τὸν ἴσθμόν, ὅσον καὶ τὸν ἀπὸ Πηλουσίου 15 ἴσθμὸν εἰς τὴν Ἐρυθράν. „δοκῶ δέ“ φησί „μὴ πολὺ διαφέρειν μηδὲ τὸν ἀπὸ τῆς Μαιώτιδος εἰς τὸν Ὀκεανόν.“

6 Οὐκ οἶδα δὲ πῶς ἀν τις περὶ τῶν ἀδήλων αὐτῷ πιστεύσεις μηδὲν εἰκὸς ἔχοντι εἰπεῖν περὶ αὐτῶν, ὅταν περὶ τῶν φανερῶν οὕτῳ παραλόγως λέγῃ, καὶ ταῦτα φίλος Πομπήιῷ γεγονὼς τῷ στρατεύσαντι ἐπὶ C.492τοὺς Ἰβηρας καὶ τοὺς Ἀλβανοὺς μέχρι τῆς ἐφ' ἑκάτερα θαλάττης τῆς τε Κασπίας καὶ τῆς Κολχικῆς. φασὶ γοῦν ἐν Ῥύδῳ γενόμενον τὸν Πομπήιον, ἥνινα ἐπὶ τὸν ληστρικὸν πόλεμον ἔξηλθεν (εὐθὺς δὲ ἐμελλει καὶ 25 ἐπὶ Μιθριδάτην δομήσειν καὶ τὰ μέχρι τῆς Κασπίας ἔθνη), παρατυχεῖν διαλεγομένῳ τῷ Ποσειδωνίῳ, ἀπιόντα δὲ ἐρέσθαι εἰ τι προστάττει, τὸν δὲ εἰπεῖν „αἴεν ἀριστεύειν καὶ ὑπείροχον ἐμμεναι ἀλλων.“ προστίθει δὲ τούτοις ὅτι καὶ τὴν ἴστορίαν συνέγραψε τὴν περὶ 30 αὐτόν. διὰ δὴ ταῦτα ἔχοην φροντίσαι τὰληθοῦς πλέον τι.

Δεύτερον δ' ἂν εἴη μέρος τὸ ὑπὲρ τῆς Τρκανίας 7
 θαλάττης, ἥν [καὶ] Κασπίαν καλοῦμεν, μέχρι τῶν κατ' Ἰνδοὺς Σκυθῶν. τρίτον δὲ μέρος τὸ συνεχὲς τῷ λεχθέντι ἴσθμῳ καὶ τὰ ἔξης τούτῳ καὶ ταῖς Κασπίαις πύσλαις, τῶν ἐντὸς τοῦ Ταύρου καὶ τῆς Εὐφράτης ἐγγυτάτω ταῦτα δ' ἔστι Μηδία καὶ Αρμενία καὶ Καππαδοκία καὶ τὰ μεταξύ. τέταρτον δ' ἡ ἐντὸς Ἀλυος γῆ καὶ τὰ ἐν αὐτῷ τῷ Ταύρῳ καὶ ἐκτὸς ὅσα εἰς τὴν χερρόνησον ἐμπίπτει, ἥν ποιεῖ ὁ διείργων ἴσθμὸς τήν τε 10 Ποντικὴν καὶ τὴν Κιλικίαν θάλατταν. τῶν δὲ ἄλλων τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου τήν τε Ἰνδικὴν τίθεμεν καὶ τὴν Αριανὴν μέχρι τῶν ἐθνῶν τῶν καθηκόντων πρὸς τε τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν καὶ τὸν Αράβιον κόλπον καὶ τὸν Νεῖλον καὶ πρὸς τὸ Αἰγύπτιον πέλαγος καὶ τὸ 15 Ισσικόν.

Οὕτω δὲ διακειμένων τὸ πρῶτον μέρος οἰκοῦσιν 2
 ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν καὶ τὸν Ὡκεανὸν Σκυθῶν τινὲς νομάδες καὶ ἀμάξιοι, ἐνδοτέρῳ δὲ τούτων Σαρμάται, καὶ οὗτοι Σκύθαι, "Αօρσοι καὶ Σιρακοὶ 20 μέχρι τῶν Καυκασίων ὀρῶν ἐπὶ μεσημβρίαν τείνοντες, οἱ μὲν νομάδες οἱ δὲ καὶ σκηνῦται καὶ γεωργοί, περὶ δὲ τὴν λίμνην Μαιῶται πρὸς δὲ τῇ θαλάττῃ τοῦ Βοσπόρου τὰ κατὰ τὴν Ασίαν ἐστὶ καὶ ἡ Σινδική· μετὰ δὲ ταύτην Ἀχαιοὶ καὶ Ζυγοὶ καὶ Ἡνιόχοι Κερκέται 25 τε καὶ Μακροπώγωνες. ὑπέροχειται δὲ τούτων καὶ τὰ τῶν Φθειροφάγων στενά· μετὰ δὲ τοὺς Ἡνιόχους ἡ Κολχὶς ὑπὸ τοὺς Καυκασίους ὅρεσι κειμένη καὶ τοὺς Μοσχικοὺς. ἐπεὶ δ' ὅριον ὑπόκειται τῇς Εὐφράτης καὶ τῇς Ἀσίας ὁ Τάναϊς ποταμός, ἐντεῦθεν ἀρξάμενοι τὰ 30 καθ' ἔκαστα ὑπογράψομεν.

4 posι καὶ: ἀεὶ

- 2 Φέρεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν μερῶν, οὐ μὴν ὡς ἂν κατὰ διάμετρον ἀντίρρους τῷ Νείλῳ, καθάπερ νομίζουσιν οἱ πολλοί, ἀλλὰ ἐωθινώτερος ἐκείνος, παραπλησίως ἐκείνῳ τὰς ἀρχὰς ἀδήλους ἔχων· ἀλλὰ τοῦ μὲν πολὺ τὸ φανερὸν χώραν διεξιόντος πᾶσαν εὐεπίμικτον καὶ μακροὺς ἀνάπλους ἔχοντος, τοῦ δὲ Τανάϊδος τὰς μὲν ἐκβολὰς ἵσμεν (δύο δ' εἰσὶν εἰς τὰ ἀρκτικάτατα μέρη τῆς Μαιάτιδος ἔξηκοντα σταδίους ἀλλήλων διέχουσαι), τοῦ δ' ὑπὲρ τῶν ἐκβολῶν ὀλίγον τὸ γυάριμόν ἐστι διὰ τὰ ψύχη καὶ τὰς ἀπορίας τῆς χώρας, ἃς οἱ μὲν αὐτόχθονες δύνανται φέρειν σαρξὶν καὶ γάλακτι τρεφόμενοι νομαδικῶς, οἱ δ' ἀλλοεθνεῖς οὐχ ὑπομένουσιν. ἄλλως τε οἱ νομάδες δυσεπίμικτοι τοῖς ἄλλοις ὅντες καὶ πλήθει καὶ βίᾳ διαφέροντες ἀποκεκλεκασιν εἰ καὶ τι πορεύσιμον τῆς χώρας ἐστὶν ἢ εἰ τινας τετύχηκεν ἀνάπλους ἔχων ὁ ποταμός. ἀπὸ δὲ τῆς αἰτίας ταύτης οἱ μὲν ὑπέλαβον τὰς πηγὰς ἔχειν αὐτὸν ἐν τοῖς Καυκασίοις ὄφεσί, πολὺν δ' ἐνεχθέντα ἐπὶ τὰς ἄρκτους εἰτ' ἀναστρέψαντα ἐκβάλλειν εἰς τὴν Μαιάτιν (τούτοις δὲ ὁμοδοξεῖ καὶ Θεοφάνης ὁ Μιτυληναῖος), οἱ δ' ἀπὸ τῶν ἄνω μερῶν τοῦ Ἰστρου φέρεσθαι· σημεῖον δὲ φέρουσιν οὐδὲν τῆς πόρρωθεν οὔτω δύσεως καὶ ἀπ' ἄλλων κλιμάτων, ὥσπερ οὐ δυνατὸν ὄν καὶ ἐγγύθεν καὶ ἀπὸ τῶν ἀρκτῶν.
- 3 Ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ καὶ τῇ λίμνῃ πόλις ὁμώνυμος οἰκεῖται Τάναϊς, κτίσμα τῶν τὸν Βόσπορον ἔχοντων Ἑλλήνων. νεωστὶ μὲν οὖν ἔξεπόρθησεν αὐτὴν Πολέμων ὁ βασιλεὺς ἀπειθοῦσαν, ἣν δ' ἐμπόριον κοινὸν τῶν τε Ἀσιανῶν καὶ τῶν Εὐρωπαίων νομάδων καὶ τῶν ἐκ τοῦ Βοσπόρου τὴν λίμνην πλεόντων, τῶν μὲν ἀνδράποδα ἀγόντων καὶ δέοματα καὶ εἰ τι ἄλλο τῶν νομαδικῶν, τῶν δ' ἐσθῆτα καὶ οἰνον καὶ τάλλα δσα

τῆς ἡμέρου διατήης οἰκεῖα ἀντιφορτιξομένων. πρόκειται δ' ἐν ἑκατὸν σταδίοις τοῦ ἔμπορούν υῆσος Ἀλωπενία, κατοικία μηγάδων ἀνθρώπων· ἔστι δὲ καὶ ἄλλα υησίδια πλησίον ἐν τῇ λίμνῃ. διέχει δὲ τοῦ στόματος 5 τῆς Μαιάτιδος εὐθυπλοοῦσιν ἐπὶ τὰ βόρεια δισκιλίους καὶ διακοσίους σταδίους δὲ Τάναϊς, οὐ πολὺ δὲ πλείους εἰσὶ παραλεγομένῳ τὴν γῆν.

'Ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τῷ παρὰ γῆν πρῶτον μέν 4
ἔστιν ἀπὸ τοῦ Τανάϊδος προΐοῦσιν ἐν ὀκτακοσίοις στα-
10 δίοις δὲ μέγας καλούμενος Ῥομβίτης, ἐν φέτῃ τὰ πλεῖστα ἀλιεύματα τῶν εἰς ταριχείας ἰχθύων· ἔπειτα ἐν ἄλλοις ὀκτακοσίοις δὲ ἐλάττων Ῥομβίτης [καὶ] ἄκρα ἔχουσα καὶ αὐτὴ ἀλιείας ἐλάττους· ἔχουσι δὲ οἱ μὲν πρό-
τερον υησία δομητήρια, οἱ δὲ ἐν τῷ μικρῷ Ῥομβίτη
15 αὐτοὶ εἰσιν οἱ Μαιᾶται ἐργαζόμενοι· οἰκοῦσι γὰρ ἐν
τῷ παράπλῳ τούτῳ παντὶ οἱ Μαιᾶται, γεωργοὶ μὲν C.494
οὐχ ἥττον δὲ τῶν νομάδων πολεμισταί. διήρηται δὲ
εἰς ἔθνη πλείω τὰ μὲν πλησίον τοῦ Τανάϊδος ἀγριώ-
τερα, τὰ δὲ συνάπτοντα τῷ Βοσπόρῳ χειροήθη μᾶλλον.
20 ἀπὸ δὲ τοῦ μικροῦ Ῥομβίτου στάδιοι εἰσιν ἔξακόσιοι
ἐπὶ Τυραμβην καὶ τὸν Ἀντικείτην ποταμόν· εἰδὲ ἑκα-
τὸν καὶ εἴκοσιν ἐπὶ τὴν κάμην τὴν Κιμμερικήν, ἣτις
ἔστιν ἀφετήριον τοῖς τὴν λίμνην πλέουσιν· ἐν δὲ τῷ
παράπλῳ τούτῳ καὶ σκοπαί τινες λέγονται Κλαζο-
25 μενίων.

Tὸ δὲ Κιμμερικὸν πόλις ἦν πρότερον ἐπὶ χερρο- 5
νήσου ἰδρυμένη, τὸν ἴσθμὸν τάφρῳ καὶ χώματι οἰλέου-
σα· ἐκέκτηντο δὲ οἱ Κιμμέριοι μεγάλην ποτὲ ἐν τῷ
Βοσπόρῳ δύναμιν, διόπερ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος
30 ὠνομάσθη. οὗτοι δὲ εἰσὶν οἱ τοὺς τὴν μεσόγαιαν οἰ-
κοῦντας ἐν τοῖς δεξιοῖς μέρεσι τοῦ Πόντου μέχρι Ιω-
νίας ἐπιδραυόντες. τούτους μὲν οὖν ἔξηλασαν ἐκ τῶν

τόπων Σκύθαι, τοὺς δὲ Σκύθας Ἐλληνες οἱ Παντικάπαιοι καὶ τὰς ἄλλας οἰκίσαντες πόλεις τὰς ἐν Βοσπόρῳ.

6 Ἐτί τὸν Ἀχίλλειον κάμην εἶκοσιν, ἐν ᾧ τὸ
Ἀχιλλέως λερόν· ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ στενάτατος πορθμὸς τοῦ στόματος τῆς Μαιάτιδος ὃσου εἴκοσι σταδίων ἡ πλειόνων, ἔχων ἐν τῇ περαίᾳ κάμην τὸ Μυρμήκιον (πλησίον δ' ἐστὶ τοῦ Ἡρακλείου) καὶ τὸ Παρθένιον.

7 Ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Σατύρου μνῆμα ἐνευήκοντα 10 στάδιοι· τοῦτο δ' ἐστὶν ἐπ' ἄκρας τινὸς χωστὸν ἀνδρὸς τῶν ἐπιφανῶς δυναστευσάντων τοῦ Βοσπόρου.

8 Πλησίον δὲ κάμη Πατραένς, ἀφ' ἧς ἐπὶ κάμην
Κοροκονδάμην ἐκατὸν τριάκοντα· αὗτη δ' ἐστὶ τοῦ Κιμμερικοῦ καλουμένου Βοσπόρου πέρας. καλεῖται 15 δὲ οὕτως ὁ στενωπὸς ἐπὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιάτιδος ἀπὸ τῶν κατὰ τὸ Ἀχίλλειον καὶ τὸ Μυρμήκιον στενῶν διατείνων μέχρι πρὸς τὴν Κοροκονδάμην καὶ τὸ ἀντικείμενον αὐτῇ καμίον τῆς Παντικαπαίων γῆς ὄνομα Ἀκραν ἐβδομήκοντα σταδίων διειργόμενον 20 πορθμῷ· μέχρι γὰρ δεῦρο καὶ ὁ κρύσταλλος διατείνει, πητομένης τῆς Μαιάτιδος κατὰ τοὺς κρυμοὺς ὡστε πεξεύεσθαι. ἄπας δ' ἐστὶν εὐλίμενος ὁ στενωπὸς οὗτος.

9 Τπέροκειται δὲ τῆς Κοροκονδάμης εὔμερεύθης λί- 25 μη, ἣν καλοῦσιν ἀπ' αὐτῆς Κοροκονδαμῆτιν· ἐκδίδωσι δ' ἀπὸ δέκα σταδίων τῆς κάμης εἰς τὴν θάλατταν· ἐμβάλλει δὲ εἰς τὴν λίμνην ἀπορρώξ τις τοῦ Ἀντικείτου ποταμοῦ, καὶ ποιεῖ νῆσον περίκλυστόν τινα ταύτῃ τε τῇ λίμνῃ καὶ τῇ Μαιάτιδι καὶ τῷ ποταμῷ. 30 τινὲς δὲ καὶ τοῦτον τὸν ποταμὸν Ἄπαντιν προσαγορεύουσι, καθάπερ καὶ τὸν πρὸς τῷ Βορυσθένει.

Είσπλεύσαντι δ' εἰς τὴν Κοροκονδαμῖτιν ἡ τε Φα- 10
 ναγόρειά ἐστι πόλις ἀξιόλογος καὶ Κῆποι καὶ Ἐρμώ^{ο.495}
 νασσα καὶ τὸ Ἀπάτουρον τὸ τῆς Ἀφροδίτης λεόντης· ὡν
 ἡ Φαναγόρεια καὶ οἱ Κῆποι κατὰ τὴν λεχθεῖσαν νῆσον
 5 ἴδονται εἰσπλέοντι ἐν ἀριστερᾷ, αἱ δὲ λοιπαὶ πόλεις
 ἐν δεξιᾷ πέραν Τπάνιος ἐν τῇ Σινδικῇ. ἔστι δὲ καὶ
 Γοργιπία ἐν τῇ Σινδικῇ, τὸ βασίλειον τῶν Σινδῶν
 πλησίον θαλάττης, καὶ Ἀβροάκη. τοῖς δὲ τοῦ Βοσπό-
 ρου δυνάσταις ὑπήκοοι ὅντες ἀπαντες Βοσπορανοὶ
 10 καλοῦνται· καὶ ἔστι τῶν μὲν Εὐρωπαίων Βοσπορα-
 νῶν μητρόπολις τὸ Παντικάπαιον, τῶν δὲ Ἀσιανῶν
 τὸ Φαναγόρειον (καλεῖται γὰρ καὶ οὕτως ἡ πόλις), καὶ
 δοκεῖ τῶν μὲν ἐκ τῆς Μαιώτιδος καὶ τῆς ὑπεροχειμένης
 βαρβάρου κατακομβούμενων ἐμπόριον εἶναι τὰ Φανα-
 15 γόρεια, τῶν δ' ἐκ τῆς θαλάττης ἀναφερομένων ἐκεῖσε
 τὸ Παντικάπαιον. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Φαναγορείᾳ τῆς
 Αφροδίτης λεόντην ἐπίσημον τῆς Ἀπατούρου· ἐτυμολο-
 γοῦσι δὲ τὸ ἐπίθετον τῆς θεοῦ μῆδόν τινα προστη-
 σάμενοι, ὡς ἐπιθεμένων ἐνταῦθα τῇ θεῷ τῶν γιγάν-
 20 τῶν ἐπικαλεσαμένη τὸν Ἡρακλέα κρύψειν ἐν κευθ-
 μῶνί τινι, εἴτα τῶν γιγάντων ἐκαστον δεχομένη καθ'
 ἐνα τῷ Ἡρακλεῖ παραδιδούῃ δολοφονεῖν εἰς ἀπάτης.

Τῶν Μαιωτῶν δ' εἰσὶν αὐτοὶ τε οἱ Σινδοὶ καὶ 11
 Δανδάριοι καὶ Τορέται καὶ Ἀγροὶ καὶ Ἀρρηχοί, ἔτι δὲ
 25 Τάροπητες Ὄβιδιακηνοὶ Σιττακηνοὶ Δόσκοι, ἄλλοι
 πλείους· τούτων δ' εἰσὶ καὶ οἱ Ἀσπουργιανοὶ μεταξὺ
 Φαναγορείας οἰκοῦντες καὶ Γοργιπίας ἐν πεντακοσίοις
 σταδίοις, οἵς ἐπιθέμενος Πολέμων ὁ βασιλεὺς ἐπὶ προσ-
 ποιήσει φιλίας οὐ λαθὼν ἀντεστρατηγήθη καὶ ζωγρία
 30 ληφθεὶς ἀπέθανε. τῶν τε συμπάντων Μαιωτῶν τῶν
 Ἀσιανῶν οἱ μὲν ὑπήκουον τῶν τὸ ἐμπόριον ἔχόντων
 τὸ ἐν τῷ Τανάϊδι οἱ δὲ τῶν Βοσπορανῶν· τοτὲ δ' ἀφ-

σταυτοὶ ἄλλοι ἄλλοι. πολλάκις δὲ οἱ τῶν Βοσπορανῶν ἡγεμόνες καὶ τὰ μέχοι τοῦ Τανάϊδος κατεῖχον καὶ μά-
λιστα οἱ ὕστατοι, Φαρνάκης καὶ Ἀσανδρος καὶ Πολέ-
μων. Φαρνάκης δέ ποτε καὶ τὸν Ἄπανταν τοῖς Δανδα-
ρίοις ἐπαγαγεῖν λέγεται διά τινος παλαιᾶς διώρυγος 5
ἀνακαθάρσας αὐτὴν [καὶ] κατακλύσαι τὴν χώραν.

12 Μετὰ δὲ τὴν Σινδικὴν καὶ τὴν Γοργιπίαν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ τῶν Ἀχαιῶν καὶ Ζυγῶν καὶ Ἡνιόχων πα-
ραλίᾳ τὸ πλέον ἀλμενος καὶ ὁρεινή, τοῦ Καυκάσου μέρος οὖσα. ξῶσι δὲ ἀπὸ τῶν κατὰ θάλατταν ληστη- 10
φίων, ἀκάτια ἔχοντες λεπτὰ στενὰ καὶ κοῦφα, ὅσον ἀνθρώπους πέντε καὶ εἴκοσι δεχόμενα, σπάνιον δὲ τριάκοντα δέξιασθαι τοὺς πάντας δυνάμενα· καλοῦσι δὲ αὐτὰ οἱ Ἑλληνες καμάρας. φασὶ δὲ ἀπὸ τῆς Ἰάσο-
νος στρατιᾶς τοὺς μὲν Φθιώτας Ἀχαιοὺς τὴν ἐνθάδε 15
C.496' Ἀχαῖαν οἰκίσαι, Λάκωνας δὲ τὴν Ἡνιόχιαν, ὃν ἦρ-
χον Κρέκας καὶ Ἀμφίστρατος οἱ τῶν Διοσκούρων ἡνίοχοι, καὶ τοὺς Ἡνιόχους ἀπὸ τούτων εἰκὸς ὄνο-
μάσθαι. τῶν δὲ οὖν καμαρῶν στόλους κατασκευαζό-
μενοι καὶ ἐπιπλέοντες τοτὲ μὲν ταῖς δικασίαι τοτὲ δὲ 20
χώρᾳ τινὶ ἡ καὶ πόλει θαλαττοκρατοῦσι. προσλαμβά-
νουσι δὲ ἔσθ' ὅτε καὶ οἱ τὸν Βόσπορον ἔχοντες ὑφόρ-
μους χρηγηγοῦντες καὶ ἀγορὰν καὶ διάθεσιν τῶν ἀρκα-
ζομένων· ἐπανιόντες δὲ εἰς τὰ οἰκεῖα χωρία, ναυλο-
χεῖν οὐκ ἔχοντες, ἀναθέμενοι τοῖς ὄμοις τὰς καμάρας 25
ἀναφέρουσιν ἐπὶ τοὺς δρυμοὺς ἐν οἰστερῷ καὶ οἰκοῦσι,
λυπρὰν ἀροῦντες γῆν· καταφέρουσι δὲ πάλιν ὅταν ἡ
καιρὸς τοῦ πλεῖν. τὸ δὲ αὐτὸ ποιοῦσι καὶ ἐν τῇ ἀλλο-
τρίᾳ γυνώριμα ἔχοντες ὑλώδη χωρία, ἐν οἷς ἀποκρύ-
ψαντες τὰς καμάρας αὐτοὶ πλανῶνται πεζῇ υὔκτῳ 30
καὶ μεθ' ἡμέραν ἀνδραποδισμοῦ χάριν. ἂ δὲ ἀν λά-
βωσιν ἐπίλυτρα ποιοῦσι δαδίως μετὰ τοὺς ἀνάπλους

μηνύοντες τοῖς ἀπολέσασιν. ἐν μὲν οὖν τοῖς δυνα-
στευομένοις τόποις ἔστι τις βοήθεια ἐκ τῶν ἡγεμόνων
τοῖς ἀδικουμένοις· ἀντεπιτίθενται γὰρ πολλάκις καὶ
κατάγοντες αὐτάνδρους τὰς ιαμάρας· ἡ δ' ὑπὸ Ρω-
μαίοις ἀβοηθητοτέρα ἔστι διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν πεμ-
πομένων.

Τοιοῦτος μὲν ὁ τούτων βίος· δυναστεύονται δὲ 13
καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν καλουμένων Σηηπτούχων· καὶ
αὐτοὶ δὲ οὗτοι ὑπὸ τυράννοις ἢ βασιλεῦσιν εἰσιν. οἱ
10 γοῦν Ἡνιόχοι τέτταρας είχον βασιλέας, ἥνικα Μιθρι-
δάτης ὁ Εὐπάτωρ φεύγων ἐκ τῆς προγονικῆς εἰς Βόσ-
πορον διῆγει τὴν χώραν αὐτῶν· καὶ αὕτη μὲν ἦν πο-
ρεύσιμος αὐτῷ, τῆς δὲ τῶν Ζυγῶν ἀπογονοὺς διά τε
δυσχερείας καὶ ἀγριότητας τῇ παραλίᾳ χαλεπῶς ἦσι, τὰ
15 πολλὰ ἐμβαίνων ἐπὶ τὴν θάλατταν, ἔως ἐπὶ τὴν τῶν
Ἀχαιῶν ἥκει· καὶ προσλαβόντων τούτων ἐξετέλεσε
τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ Φάσιδος οὐ πολὺ τῶν τετρακισχιλίων
λείπονταν σταδίων.

Εὐθὺς δ' οὖν ἀπὸ τῆς Κοροκονδάμης πρὸς ἕω 14
20 μὲν ὁ πλοῦς ἔστιν. ἐν δὲ σταδίοις ἑκατὸν ὄγδοικοντα
δὲ Σινδικός ἔστι λιμὴν καὶ πόλις, εἴτα ἐν τετρακοσίοις
τὰ καλούμενα Βατὰ κώμη καὶ λιμήν, καθ' ὃ μάλιστα
ἀντικεῖσθαι δοκεῖ πρὸς νότον ἡ Σινάπη ταύτη τῇ πα-
ραλίᾳ, καθάπερ ἡ Κάραμβις εἰρηται τοῦ Κριοῦ με-
25 τώπῳ· ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ὁ μὲν Ἀρτεμίδωρος τὴν
Κερκητῶν λέγει παραλίαν ὑφόρμους ἔχουσαν καὶ κώ-
μας ὅσον ἐπὶ σταδίους δικτακοσίους καὶ πεντήκοντα,
εἴτα τὴν τῶν Ἀχαιῶν σταδίων πεντακοσίων, εἴτα τὴν
τῶν Ἡνιόχων χιλίων, εἴτα τὸν Πιτυοῦντα τὸν μέγαν
30 τριακοσίων ἔξηκοντα μέχρι Διοσκουριάδος· οἱ δὲ τὰ C.497
Μιθριδατικὰ συγγράψαντες, οἵς μᾶλλον προσεκτέον,
Ἀχαιοὺς λέγουσι πρώτους, εἴτα Ζυγούς, εἴτα Ἡνιό-

χους, εἴτα Κερκέτας καὶ Μόσχους καὶ Κόλχους καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων Φθειροφάγους καὶ Σοάνας καὶ ἄλλα μικρὰ ἔθνη τὰ περὶ τὸν Καύκασον. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἡ παραλία, καθάπερ εἶπον, ἐπὶ τὴν ἓω τείνει καὶ βλέπει πρὸς νότον, ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ἐπιστροφὴν 5 λαμβάνει κατὰ μικρόν, εἴτ' ἀντιπρόσωπος γίνεται τῇ δύσει καὶ τελευτὴ πρὸς τὸν Πιτυοῦντα καὶ τὴν Διοσκουριάδα· ταῦτα γὰρ τὰ χωρία τῆς Κολχίδος συνάπτει τῇ λεχθείσῃ παραλίᾳ. μετὰ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ἡ λοιπὴ τῆς Κολχίδος ἐστὶν παραλία καὶ ἡ συνεχὴς Τρα- 10 πεζοῦς καμπὴν ἀξιόλογον ποιήσασα, εἴτα εἰς εὐθεῖαν ταθεῖσά πως πλευρὰν τὴν τὰ δεξιὰ τοῦ Πόντου ποιοῦσαν τὰ βλέποντα πρὸς ἄρκτον. ἀπασα δ' ἡ τῶν Ἀχαιῶν καὶ τῶν ἄλλων παραλία μέχρι Διοσκουριάδος καὶ τῶν ἐπ' εὐθείας πρὸς νότον ἐν τῇ μεσογαίᾳ τόπων 15 ὑποπέπτωκε τῷ Καυκάσῳ.

15 Ἐστι δ' ὁρος τοῦτο ὑπερκείμενον τοῦ πελάγους ἐκατέρου τοῦ τε Ποντικοῦ καὶ τοῦ Κασπίου, διατειχίζον τὸν ἴσθμὸν τὸν διείργοντα αὐτά. ἀφορίζει δὲ πρὸς νότον μὲν τὴν τε Ἀλβανίαν καὶ τὴν Ἰβηρίαν, πρὸς 20 ἄρκτον δὲ τὰ τῶν Σαρματῶν πεδία· εῦδενδρον δ' ἐστὶν ὑλη παντοδαπῇ τῇ τε ἄλλῃ καὶ τῇ ναυπηγησίμῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων καλεῖσθαι Κάσπιον τὸν Καύκασον, ἵσως ἀπὸ τῶν Κασπίων παρονομασθέντα. ἀγκῶνες δέ τινες αὐτοῦ προπίπτουν- 25 σιν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν, οἱ τὴν τε Ἰβηρίαν περιλαμβάνοντες μέσην καὶ τοῖς Ἀρμενίων ὄρεσι συνάπτουσι καὶ τοῖς Μοσχικοῖς καλούμενοις, ἔτι δὲ τῷ Σκυδίσῃ καὶ τῷ Παρνάδῃ· ταῦτα δ' ἐστὶ μέρη τοῦ Ταύρου πάντα τοῦ ποιοῦντος τὸ νότιον τῆς Ἀρμενίας πλευ- 30 ρόν, ἀπερρωγότα πως ἐκεῖθεν πρὸς ἄρκτον καὶ προσπίπτοντα μέχρι τοῦ Καυκάσου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου

παραλίας τῆς ἐπὶ Θεμίσκυραν διατεινούσης ἀπὸ τῆς Κολχίδος.

‘Η δ’ οὖν Διοσκουριάς ἐν κόλπῳ τοιούτῳ κειμένη 16
καὶ τὸ ἑωθινώτατον σημεῖον ἐπέχουσα τοῦ σύμπαντος
5 πελάγους, μυχός τε τοῦ Εὐξείνου λέγεται καὶ ἔσχατος
πλοῦς· τό τε παροιμιακῶς λεχθὲν οὗτος δεῖ δεξασθαι
„εἰς Φᾶσιν ἔνθα ναυσὶν ἔσχατος δρόμος,“ οὐχ ὡς τὸν
ποταμὸν λέγοντος τοῦ ποιήσαντος τὸ Ιαμβεῖον, οὐδὲ
δὴ ὡς τὴν ὁμώνυμον αὐτῷ πόλιν κειμένην ἐπὶ τῷ πο-
10 ταμῷ, ἀλλ’ ὡς τὴν Κολχίδα ἀπὸ μέρους, ἐπεὶ ἀπό γε
τοῦ ποταμοῦ καὶ τῆς πόλεως οὐκ ἐλάττων ἔξακοσίων
σταδίων λείπεται πλοῦς ἐπ’ εὐθείας εἰς τὸν μυχόν. ἡ
δ’ αὐτὴ Διοσκουριάς ἐστι καὶ ἀρχὴ τοῦ Ισθμοῦ τοῦ 0.498
μεταξὺ τῆς Κασπίας καὶ τοῦ Πόντου καὶ ἐμπόριον τῶν
15 ὑπεροικείμενων καὶ σύνεγγυς ἐθνῶν κοινόν· συνέρ-
χεσθαι γοῦν εἰς αὐτὴν ἑβδομήκοντα, οἱ δὲ καὶ τρια-
κόσια ἔθνη φασίν, οἵσις οὐδὲν τῶν ὄντων μέλει, πάντα
δὲ ἐτερόγλωττα διὰ τὸ σποράδην καὶ ἀμίκτως οἰκεῖν
ὑπὸ αὐθαδείας καὶ ἀγριότητος· Σαραπάται δ’ εἰσὶν οἱ
20 πλείους, πάντες δὲ Καυκάσιοι. ταῦτα μὲν δὴ τὰ περὶ
τὴν Διοσκουριάδα.

Καὶ ἡ λοιπὴ δὲ Κολχὶς ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ πλείων 17
ἐστι· διαρρεῖ δ’ αὐτὴν ὁ Φᾶσις, μέγας ποταμὸς ἐξ Ἀρ-
μενίας τὰς ἀρχὰς ἔχων, δεχόμενος τόν τε Γλαῦκον καὶ
25 τὸν Ἰππον ἐκ τῶν πλησίον ὁρῶν ἐκπίπτοντας· ἀνα-
πλεῖται δὲ μέχρι Σαραπανῶν ἐρύματος δυναμένου δε-
ξασθαι καὶ πόλεως συνοικισμόν, ὅθεν πεζεύοντις ἐπὶ
τὸν Κῦρον ἡμέραις τέτταρσι δι’ ἀμαξιτοῦ. ἐπίκειται
δὲ τῇ Φάσιδι ὁμώνυμος πόλις, ἐμπόριον τῶν Κόλχων,
30 τῇ μὲν προβεβλημένη τὸν ποταμὸν τῇ δὲ λίμνην τῇ δὲ
τὴν θάλατταν. ἐντεῦθεν δὲ πλοῦς ἐπ’ Ἀμισοῦ καὶ
Σινώπης * τριῶν ἡμερῶν ἥ δύο διὰ τὸ τοὺς αἰγιαλοὺς

μαλακοὺς εἶναι καὶ τὰς τῶν ποταμῶν ἐκβολάς. ἀγαθὴ δ' ἔστιν ἡ χώρα καὶ οἰκοῦσ πλὴν τοῦ μέλιτος (πικρίζει γὰρ τὸ πλέον) καὶ τοῖς πρὸς ναυπηγίαν πᾶσιν. ὅλην τε γὰρ καὶ φύει καὶ ποταμοῖς κατακομίζει, λίνου τε ποιεῖ πολὺ καὶ κάνναβιν καὶ κηρόν καὶ πίτταν. ἡ δὲ λινούρ- 5 γία καὶ τεθρύληται· καὶ γὰρ εἰς τοὺς ἔξω τόπους ἔξε- κόμιξον, καὶ τινες βουλόμενοι συγγένειαν τινα τοῖς Κόλ- χοις πρὸς τοὺς Αἴγυπτίους ἐμφανίζειν ἀπὸ τούτων πι- στοῦνται. ὑπέρκειται δὲ τῶν λεχθέντων ποταμῶν ἐν τῇ Μοσχικῇ τὸ τῆς Λευκοθέας λερὸν Φρέξου ἴδρυμα, 10 καὶ μαντεῖον ἐκείνου, ὃπου ιριὸς οὐ δύεται, πλούσιόν ποτε ὑπάρχειν, συλληθὲν δὲ ὑπὸ Φαρνάκου καθ' ἡμᾶς καὶ μικρὸν ὕστερον ὑπὸ Μιθριδάτου τοῦ Περγαμηνοῦ. κακωθείσης γὰρ χώρας „νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν οὐδὲ τι- „μᾶσθαι θέλει,“ φησὶν Εὐριπίδης. 15

18 Τὸ μὲν γὰρ παλαιὸν ὅσην ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἡ χώ-
ρα αὗτη δηλοῦσιν οἱ μῦθοι, τὴν Ἰάσονος στρατείαν αἴ-
νιττόμενοι προελθόντος μέχρι καὶ Μηδίας, ἔτι δὲ πρό-
τερον τὴν Φρέξου, μετὰ δὲ ταῦτα διαδεξάμενοι βασι-
λεῖς εἰς σκηπτουχίας διηρημένην ἔχοντες τὴν χώραν 20
μέσως ἐπραττον· αὐξηθέντος δὲ ἐπὶ πολὺ Μιθριδάτου
τοῦ Εὐπάτορος, εἰς ἐκείνου ἡ χώρα περιέστη· ἐπέμ-
0.499πετο δ' ἀεὶ τις τῶν φίλων ὑπαρχος καὶ διοικητὴς τῆς
χώρας. τούτων δὲ ἦν καὶ Μοαφέρνης, ὁ τῆς μητρὸς 25
ἡμῶν θεῖος πρὸς πατρός· ἦν δ' ἐνθευ ἡ πλείστη τῷ 25
βασιλεῖ πρὸς τὰς ναυτικὰς δυνάμεις ὑπουργία. κατα-
λυθέντος δὲ Μιθριδάτου συγκατελύθη καὶ ἡ ὑπ' αὐ-
τῷ πᾶσα καὶ διενεμήθη πολλοῖς· ὕστατα δὲ Πολέμων
ἔσχε τὴν Κολχίδα, κάκείνου τελευτήσαντος ἡ γυνὴ Πυ-
θοδωρὶς ιρατεῖ, βασιλεύοντα καὶ Κόλχων καὶ Τραπε- 30
ξοῦντος καὶ Φαρνακίας καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβά-
ρων, περὶ ὃν ἐροῦμεν ἐν τοῖς ὕστεροιν. ἡ δ' οὖν Μο-

σχική, ἐν ᾧ τὸ Ιερόν, τοιμερής ἔστι· τὸ μὲν γὰρ ἔχου-
σιν αὐτῆς Κόλχοι τὸ δὲ Ἰβηρεῖς τὸ δὲ Ἀρμένιοι. ἔστι δὲ
καὶ πολίχνιον ἐν τῇ Ἰβηρίᾳ Φρέξου πόλις ἡ νῦν Ἰδή-
εσσα, εὐερκὴς χωρίον ἐν μεθορίοις τῆς Κολχίδος.

5 Τῶν δὲ συνερχομένων ἐθνῶν εἰς τὴν Διοσκουρι- 19
άδα καὶ οἱ Φθειροφάγοι εἰσίν, ἀπὸ τοῦ αὐχμοῦ καὶ τοῦ
πίνου λαβόντες τοῦνομα. πλησίον δὲ καὶ οἱ Σοάνες,
οὐδὲν βελτίους τούτων τῷ πίνῳ δυνάμει δὲ βελτίους,
σχεδὸν δέ τι καὶ ιράτιστοι κατὰ ἀλκὴν καὶ δύναμιν.
10 δυναστεύουσι γοῦν τῶν κύκλῳ τὰ ἄκρα τοῦ Καυκάσου
κατέχοντες τὰ ὑπὲρ τῆς Διοσκουριάδος· βασιλέα δ'
ἔχουσι καὶ συνεδριον ἀνδρῶν τριακοσίων, συνάγοντες
δ' ὡς φασι στρατιὰν καὶ εἴκοσι μυριάδων· ἀπαν γάρ
ἔστι τὸ πλῆθος μάχιμον, οὐ συντεταγμένον [δε]. παρὰ
15 τούτοις δὲ λέγεται καὶ χρυσὸν καταφέρειν τοὺς χει-
μάρρους, ὑποδέχεσθαι δ' αὐτὸν τοὺς βαρβάρους φάτ-
ναις κατατερημέναις καὶ μαλλωταῖς δοραῖς· ἀφ' οὗ
δὴ μεμυθεῦσθαι καὶ τὸ χρυσόμαλλον δέρος· * εἰ μὴ
καὶ Ἰβηρας διμωνύμως τοῖς ἐσπερίοις καλοῦσιν ἀπὸ
20 τῶν ἐκατέρωθι χρυσείων. χρῶνται δ' οἱ Σοάνες φαρ-
μάκοις πρὸς τὰς ἀκίδας * θαυμαστῶς καὶ τοὺς ἀφαρ-
μάκτοις τετρωμένους βέλεσι λυπεῖ κατὰ τὴν ὁσμήν. τὰ
μὲν οὖν ἄλλα ἐθνη τὰ πλησίον τὰ περὶ τὸν Καύκασον
λυπρὰ καὶ μικρόχωρα, τὸ δὲ τῶν Ἀλβανῶν ἐθνος καὶ
25 τὸ τῶν Ἰβήρων, ἃ δὴ πληροῦ μάλιστα τὸν λεγθέντα
ἰσθμόν, Καυκάσια [μὲν] καὶ αὐτὰ λέγοιτ' ἄν, εὐδα-
μονα δὲ χώραν ἔχει καὶ σφόδρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυ-
ναμένην.

Καὶ δὴ κ' ἡ γε Ἰβηρία κατοικεῖται καλῶς τὸ πλέον 3
30 πόλεσί τε καὶ ἐποικίοις, ὥστε καὶ κεραμωτὰς εἰναι στέ-

4. posὶ Κολχίδος: περὶ τὴν Διοσκουριάδα ὁ Χάρης πο-
ταμός.

γας καὶ ἀρχιτεκτονικὴν τὴν τῶν οἰκήσεων κατασκευὴν
καὶ ἀγορὰς καὶ τάλλα κοινά.

2 Τῆς δὲ χώρας τὰ μὲν κύκλῳ τοῖς Καυκασίοις ὅρεσι
C.500περιέχεται· προπεπτώκασι γάρ, ὡς εἶπον, ἀγκῶνες ἐπὶ⁵
τὴν μεσημβρίαν εῦκαρποι, προιλαμβάνοντες τὴν σύμ-
πασαν Ἰβηρίαν καὶ συνάπτουτες πρός τε τὴν Ἀρμε-
νίαν καὶ τὴν Κολχίδα· ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ πεδίον ποταμοῖς
διάρρουτον, μεγίστῳ δὲ τῷ Κύρῳ, ὃς τὴν ἀρχὴν ἔχων
ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας, εἰσβαλὼν εὐθὺς εἰς τὸ πεδίον τὸ
λεχθέν, παραλαβὼν καὶ τὸν Ἀραγονὸν ἐκ τοῦ Καυκάσου 10
φέοντα καὶ ἄλλα ὕδατα διὰ στενῆς ποταμίας εἰς τὴν
Ἀλβανίαν ἐκπίπτει· μεταξὺ δὲ ταύτης τε καὶ τῆς Ἀρ-
μενίας ἐνεχθεὶς πολὺς διὰ πεδίων εὐθοτονμένων σφό-
δος, δεξάμενος καὶ [ἄλλους] πλείους ποταμούς, ὃν
ἐστιν ὁ τε Ἀλαζόνιος καὶ ὁ Σανδοβάνης καὶ ὁ Ροιτάνης 15
καὶ Χάνης πλωτοὶ πάντες εἰς τὴν Κασπίαν ἐμβάλλει
θάλατταν. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον Κόρος.

3 Τὸ μὲν οὖν πεδίον τῶν Ἰβηρῶν οἱ γεωργικώτεροι
καὶ πρὸς εἰρήνην νενευκότες οἰκοῦσιν ἀρμενιστές τε καὶ
μηδιστές ἐσκενασμένοι, τὴν δ' ὅρεινὴν οἱ πλείους καὶ 20
μάχιμοι κατέχουσι Σκυθῶν δίκην ζῶντες καὶ Σαρμα-
τῶν, ὡνπερ καὶ ὅμοροι καὶ συγγενεῖς εἰσιν· ἀπτονται
δ' ὅμως καὶ γεωργίας, πολλάς τε μυριάδας συνάγου-
σιν καὶ ἔξι ἑαυτῶν καὶ ἔξι ἐκείνων, ἐπειδάν τι συμπέσῃ
θορυβῶδες. 25

4 Τέτταρες δ' εἰσὶν εἰς τὴν χώραν εἰσβολαί· μία μὲν
διὰ Σαραπανῶν φρουρίου Κολχικοῦ καὶ τῶν κατ' αὐτὸ³⁰
στενῶν, δι' ὃν ὁ Φᾶσις γεφύρας ἐκατὸν καὶ εἴκοσι
περατὸς γινόμενος διὰ τὴν σκολιότητα καταρρεῖ τρα-
χὺς καὶ βίαιος εἰς τὴν Κολχίδα, πολλοῖς χειμάρροις
κατὰ τὰς ἐπομβρίας ἐκχαραδρούμενων τῶν τόπων.
γεννᾶται δ' ἐκ τῶν ὑπερκειμένων ὁρῶν πολλαῖς συμ-

πληρούμενος πηγαῖς, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις καὶ ἄλλους προσλαμβάνει ποταμούς, ὃν ἐστιν ὁ τε Γλαῦκος καὶ ὁ Ἰππος· πληρωθεὶς δὲ καὶ γενόμενος πλωτὸς ἔξιῆσιν εἰς τὸν Πόντον καὶ ἔχει πόλιν ὅμωνυμον ἐφ' αὐτῷ καὶ 5 λίμνην πλησίον. ἡ μὲν οὖν ἐκ τῆς Κολχίδος εἰς τὴν Ἰβηρίαν ἐμβολή τοιαύτη, πέτραις καὶ ἐρύμασι καὶ ποταμοῖς χαραδρώδεσι διακεκλεισμένη.

'Ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον νομάδων ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας 5 ἀνάβασις χαλεπή, καὶ μετὰ ταύτην ποταμία στενὴ ἐπὶ 10 τοῦ Ἀράγου ποταμοῦ τεττάρων ἡμερῶν ὁδὸν ἔχουσα ἐφ' ἓνα, φρουρεῖ δὲ τὸ πέρας τῆς ὁδοῦ τεῖχος δύσμαχον· ἀπὸ δὲ τῆς Ἀλβανίας διὰ πέτρας πρῶτον λατομητὴ εἰσοδος, εἶτα διὰ τέλματος ὃ ποιεῖ ὁ ποταμὸς [Ἀλαζόνιος] ἐκ τοῦ Καυκάσου καταπίπτων. ἀπὸ δὲ τῆς 15 Ἀρμενίας τὰ ἐπὶ τῷ Κύρῳ στενὰ καὶ τὰ ἐπὶ τῷ *Ἀράγῳ· πολὺν γάρ εἰς ἀλλήλους συμπεσεῖν, ἔχουσιν ἀπικειμένας πόλεις ἐφυμνὰς ἐπὶ πέτραις διεγούσαις ἀλλήλων. 501
ὅσον ἐκκαθίδεναι σταδίους, ἐπὶ μὲν τῷ Κύρῳ τὴν Ἀρμενίαν ἐπὶ δὲ θατέρῳ Σευσάμορα. ταῦταις δὲ ἔχορήσατο 20 ταῖς εἰσβολαῖς πρότερον Πομπήιος ἐκ τῶν Ἀρμενίων ὁρμηθεὶς, καὶ μετὰ ταῦτα Κανίδιος.

Τέτταρα δὲ καὶ γένη τῶν ἀνθρώπων οἰκεῖ τὴν 5 χώραν· ἐν μὲν καὶ πρῶτον ἐξ οὖν τοὺς βασιλέας καθιστᾶσι κατ' ἀγχιστείαν τε καὶ ἡλικίαν τὸν πρεσβύτα- 25 τον, δὲ δεύτερος δικαιοδοτεῖ καὶ στρατηλατεῖ. δεύτερον δὲ τὸ τῶν Ιερέων οἱ ἐπιμελοῦνται καὶ τῶν πρὸς τοὺς δικόους δικαίων. τρίτον δὲ τὸ τῶν στρατευομένων καὶ γεωργούντων. τέταρτον δὲ τὸ τῶν λαῶν, οἱ βασιλικοὶ δοῦλοι εἰσι καὶ πάντα διακονοῦνται τὰ πρὸς τὸν 30 βίον. κοιναὶ δ' εἰσὶν αὐτοῖς αἱ κτήσεις κατὰ συγγένειαν, ἄρχει δὲ καὶ ταμιεύει ἐκάστην ὁ πρεσβύτατος. τοιοῦτοι μὲν οἱ Ἰβηρες καὶ ἡ χώρα αὐτῶν.

1 Ἀλβανοὶ δὲ ποιμενικότεροι καὶ τοῦ νομαδικοῦ γένους ἐγγυτέρω, πλὴν ἀλλ’ οὐκ ἄγριοι· ταύτη δὲ καὶ πολεμικὸν μετρίως. οἶκοῦσι δὲ μεταξὺ τῶν Ἰβήρων καὶ τῆς Κασπίας θαλάττης, πρὸς ᾧ μὲν ἀπτόμενοι τῆς θαλάττης, πρὸς δύσιν δὲ ὁμοροῦντες τοῖς Ἰβηροῖς· τῶν δὲ λοιπῶν πλευρῶν τὸ μὲν βόρειον φρουρεῖται τοῖς Καυκασίοις ὅρεσι (ταῦτα γὰρ ὑπέροχειται τῶν πεδίων, καλεῖται δὲ τὰ πρὸς τὴν θαλάττην μάλιστα Κεραύνια), τὸ δὲ νότιον ποιεῖ ἡ Ἀρμενία παρήκουσα, πολλὴ μὲν πεδιὰς πολλὴ δὲ καὶ ὁρεινή, καθάπερ ἡ Καμβυσηνή, 10 καθ’ ἣν ἄμα καὶ τοῖς Ἰβηροῖς καὶ τοῖς Ἀλβανοῖς οἱ Ἀρμένιοι συνάπτουσιν.

2 Οἱ δὲ Κῦρος ὁ διαρρέων τὴν Ἀλβανίαν καὶ οἱ ἄλλοι ποταμοὶ οἱ πληροῦντες ἐκεῖνον τὰς μὲν τῆς γῆς ἀρεταῖς προσλαμβάνουσι, τὴν δὲ θάλατταν ἀλλοτροὶ 15 οὖσιν. ἡ γὰρ χοῦς προσπίπτουσα πολλὴ πληροῖ τὸν πόρον, ὥστε καὶ τὰς ἐπικειμένας υησίδας ἔξηπειροῦσθαι καὶ τενάγη ποιεῖν ἀνώμαλα καὶ δυσφύλακτα· τὴν δὲ ἀνωμαλίαν ἐπιτείνουσιν αἱ ἐκ τῶν πλημμυρίδων ἀνακοπαί. καὶ δὴ καὶ εἰς στόματα δώδεκα φασὶ μεμε- 20 ρισθαι τὰς ἐκβολάς, τὰ μὲν τυφλὰ τὰ δὲ παντελῶς *ἐπιγελῶντα καὶ μηδὲ ὑφορμον ἀπολείποντα· ἐπὶ πλείους γοῦν ἡ ἔξηκοντα σταδίους ἀμφικλύστου τῆς ἥρονος οὖσης τῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς ποταμοῖς, ἕπαν εἶναι μέρος αὐτῆς ἀποσπέλαστον, τὴν δὲ χοῦν καὶ μέχρι πεντα- 25 κοσίων παρήκειν σταδίων διηνώδη ποιοῦσαν τὸν αἰγιαλόν. πλησίουν δὲ καὶ ὁ Ἀράξης ἐμβάλλει τραχὺς ἐκ τῆς Ἀρμενίας ἐκπίπτων· ἦν δὲ ἐκεῖνος προωθεῖ χοῦν πορευτὸν ποιῶν τὸ φεῖδον, ταύτην δὲ Κῦρος ἀναπληροῖ.

3 Τάχα μὲν οὖν τῷ τοιούτῳ γένει τῶν ἀνθρώπων 30 C.5020 οὔδεν δεῖ θαλάττης· οὐδὲ γὰρ τῇ γῇ χρῶνται κατ’ ἄξιαν, πάντα μὲν ἐκφερούσῃ παρπὸν καὶ τὸν ἡμερώτατον,

πᾶν δὲ φυτόν· καὶ γὰρ τὰ ἀειθαλῆ φέρει· τυγχάνει δ'
ἐπιμελεῖας οὐδὲ μικρᾶς „ἀλλὰ τάγ' ἄσπαρτα καὶ ἀνή-
,,ροτα πάντα φύονται,“ καθάπερ οἱ στρατεύσαντες
φασι, Κυκλώπειόν τινα διηγούμενοι βίου· πολλαχοῦ
5 γὰρ σπαρεῖσαν ἄπαξ δἰς ἐκφέρειν καρπὸν η̄ καὶ τρίς,
τὸν δὲ πρῶτον καὶ πεντηκοντάχονν, ἀνέαστον καὶ
ταῦτα οὐδὲ σιδήρῳ τμηθεῖσαν ἀλλ' αὐτοξύλῳ ἀρότῳ.
ποτίζεται δὲ πᾶν τὸ πεδίον τοῦ Βαβυλωνίου καὶ τοῦ
Ἀλγυπτίου μᾶλλον τοῖς ποταμοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις ὑδα-
10 σιν ὥστ' ἀεὶ ποώδῃ φυλάττειν τὴν ὅψιν· διὰ δὲ τοῦτο
καὶ εὕβοτόν ἔστι· πρόσεστι δὲ καὶ τὸ εὐάερον ἐκείνων
μᾶλλον. ἄσκαφοι δ' αἱ ἄμπελοι μένουσαι διὰ τέλους,
τεμνόμεναι δὲ διὰ πενταετηρίδος, νέαι μὲν διετεῖς ἐκ-
φέρουσιν η̄δη καρπόν, τέλειαι δ' ἀποδιδόσι τοσοῦτον
15 ὥστ' ἀφιᾶσιν ἐν τοῖς κλήμασι πολὺ μέρος. εὔερνη δ'
ἔστι καὶ τὰ βοσκήματα παρ' αὐτοῖς τά τε ἡμερα καὶ τὰ
ἄγρια.

Καὶ οἱ ἄνθρωποι κάλλει καὶ μερέθει διαφέροντες, 4
ἀπλοὶ δὲ καὶ οὐ καπηλιοί· οὐδὲ γὰρ νομίσματι τὰ
20 πολλὰ χρῶνται, οὐδὲ ἀριθμὸν ἵσασι μεῖζω τῶν ἐκατόν,
ἀλλὰ φορτίοις τὰς ἀμοιβὰς ποιοῦνται· καὶ πρὸς τάλλα
δὲ τὰ τοῦ βίου φαθύμως ἔχουσιν. ἀπειροι δ' εἰσὶ καὶ
μέτρων τῶν ἐπ' ἀκριβὲς καὶ σταθμῶν, καὶ πολέμου δὲ
καὶ πολιτείας καὶ γεωργίας ἀπρονοήτως ἔχουσιν· δῆμος
25 δὲ καὶ πεζοὶ καὶ ἀφ' ἵππων ἀγωνίζονται, ψιλοὶ τε καὶ
κατάφρακτοι, καθάπερ Ἀρμένιοι. στέλλονται δὲ μεῖζω 5
τῆς Ἰβήρων στρατιάν. δύπλιζονται γὰρ καὶ δεκα μυριάδας
πεζῶν, ἵππέας δὲ μυρίους καὶ δισχιλίους, δύσοις πρὸς
Πομπήιον διεκινδύνευσαν. καὶ τούτοις δὲ συμπολε-
30 μοῦσιν οἱ νομάδες πρὸς τοὺς ἔξωθεν, ὥσπερ τοῖς Ἰβηρ-
σι, κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἄλλως δὲ ἐπιχειροῦσι τοῖς ἀν-
θρώποις πολλάκις ὥστε καὶ γεωργεῖν κωλύουσιν. ἀνον-

τισταὶ δέ εἰσι καὶ τοξόται, θώρακας ἔχοντες καὶ μυρε-
ούς, περίκρανα δὲ θήρεια παραπληγίως τοῖς "Ιβηρσιν.

"Εστι δὲ τῆς Ἀλβανῶν χώρας καὶ ἡ Κασπιανή, τοῦ
Κασπίου ἔθνους ἐπώνυμος, οὐπερ καὶ ἡ θάλαττα,
ἀφανοῦς ὄντος υἱοῦ. ἡ δ' ἐκ τῆς Ιβηρίας εἰς τὴν Ἀλ-
βανίαν εἰσβολὴ διὰ τῆς Καμβυσηνῆς ἀνύδρου τε καὶ
τραχείας ἐπὶ τὸν Ἀλαζόνιον ποταμόν.

* Θηρευτικοὶ δὲ καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ κύνες αὐτῶν εἰς
ὑπερβολήν, οὐ τέχνῃ μᾶλλον ἢ σπουδῇ τῇ περὶ τοῦτο.

C.503 6 Διαφέρουσι δὲ καὶ οἱ βασιλεῖς· υἱοὶ μὲν οὖν εἰς 10
ἀπάντων ἄρχει, πρότερον δὲ καὶ καθ' ἐκάστην γλῶτ-
ταν ίδιᾳ ἐβασιλεύοντο ἕκαστοι. γλῶτται δ' εἰσὶν ἔξι καὶ
εἴκοσιν αὐτοῖς διὰ τὸ μὴ εὐεπίμικτον πρὸς ἀλλήλους.

Φέρει δ' ἡ γῆ καὶ τῶν ἑρπετῶν ἔνια τῶν θαναστ-
μῶν καὶ σκορπίους καὶ φαλάγγια· τῶν δὲ φαλαγγίων 15
τὰ μὲν ποιεῖ γελῶντας ἀποθνήσκειν, τὰ δὲ ολαΐοντας
πόθῳ τῶν οἰκείων.

7 Θεοὺς δὲ τιμῶσιν ἥλιον καὶ δία καὶ σελήνην, δια-
φερόντως δὲ τὴν σελήνην. ἔστι δ' αὐτῆς τὸ ιερὸν
τῆς Ιβηρίας πλησίον· ιερᾶται δ' ἀνὴρ ἐντιμότατος 20
μετά γε τὸν βασιλέα, προεστὼς τῆς ιερᾶς χώρας, πολ-
λῆς καὶ εὐάνδρου, καὶ αὐτῆς καὶ τῶν ιεροδούλων, ὃν
ἐνθουσιῶσι πολλοὶ καὶ προφητεύουσιν· ὃς δ' ἂν αὐ-
τῶν ἐπὶ πλέον κατάσχετος γενόμενος πλανᾶται κατὰ
τὰς ὕλας μόνος, τοῦτον συλλαβὼν ὁ ιερεὺς ἀλύσει δή-
25 σας ιερῷ τρέφει πολυτελῶς τὸν ἔνιαντὸν ἐκείνουν, ἐπει-
τα προαχθεὶς εἰς τὴν θυσίαν τῆς θεοῦ, σὺν ἄλλοις ιε-
ρείοις θύεται μυρισθείς. τῆς δὲ θυσίας ὁ τρόπος οὐ-
τος· ἔχων τις ιερὰν λόγχην ἥπερ ἔστι νόμος ἀνθρω-
ποθυτεῖν, παρελθὼν ἐκ τοῦ πλήθους παίει διὰ τῆς 30
πλευρᾶς εἰς τὴν καρδίαν, οὐκ ἄπειρος τοιούτου· πε-
σόντος δὲ σημειοῦνται μαντεῖά τινα ἐκ τοῦ πτώματος

καὶ εἰς τὸ κοινὸν ἀποφαίνουσι, κομισθέντος δὲ τοῦ σώματος εἰς τὶ χωρίον ἐπιβαίνουσιν ἅπαντες καθαροῖς χρώμενοι.

Τπερβαλλόντως δὲ τὸ γῆρας τιμῶσιν Ἀλβανοὶ καὶ 8
5 τὸ τῶν ἄλλων, οὐ τῶν γονέων μόνον· τεθνηκότων δὲ οὐχ ὅσιον φροντίζειν οὐδὲ μεμνῆσθαι. συγκατορύτ-
τουσι μέντοι τὰ χρήματα αὐτοῖς, καὶ διὰ τοῦτο πένη-
τες ζῶσιν οὐδὲν πατρῷον ἔχοντες. ταῦτα μὲν περὶ
Ἀλβανῶν.

10 Λέγεται δὲ Ἰάσονα μετὰ Ἀρμένου τοῦ Θετταλοῦ
κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἐπὶ τοὺς Κόλχους δρμῆσαι μέχοι
τῆς Κασπίας θαλάττης, καὶ τὴν τε Ἰβηρίαν καὶ τὴν Ἀλ-
βανίαν ἐπελθεῖν καὶ πολλὰ τῆς Ἀρμενίας καὶ τῆς Μη-
δίας, ὡς μαρτυρεῖ τά τε Ἱασόνια καὶ ἄλλα ὑπομνήματα
15 πλείω. τὸν δὲ Ἀρμενὸν εἶναι ἐξ Ἀρμενίου πόλεως τῶν
περὶ τὴν Βοιβηίδα λίμνην μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης,
τοὺς σὺν αὐτῷ τε οἰκίσαι τὴν τε Ἀκιλισηνὴν καὶ τὴν
Συσπιρίτιν ἔως Καλαχανῆς καὶ Ἀδιαβηνῆς, καὶ δὴ καὶ
τὴν Ἀρμενίαν ἐπάνυμον καταλιπεῖν.

20 Ἐν δὲ τοῖς ὑπὲρ τῆς Ἀλβανίας ὅρεσι καὶ τὰς Ἀμα- 5
ξόνας οἰκεῖν φασι. Θεοφάνης μὲν οὖν ὁ συστρατεύσας
τῷ Πομπηίῳ καὶ γενόμενος ἐν τοῖς Ἀλβανοῖς, μεταξὺ
τῶν Ἀμαξόνων καὶ τῶν Ἀλβανῶν φησι Γήλας οἰκεῖν
καὶ Λήγας Σκύθας, καὶ δεῖν ἐνταῦθα τὸν Μερμάδαλιν
25 ποταμὸν τούτων τε καὶ τῶν Ἀμαξόνων ἀνὰ μέσον. ἀλ-0.504
λοι δέ, ὡν καὶ ὁ Σκήψιος Μητρόδωρος καὶ Τψικράτης,
οὐδὲ αὐτοὶ ἀπειροι τῶν τόπων γεγονόνες, Γαργαρεῦ-
σιν ὁμόρους αὐτὰς οἰκεῖν φασιν ἐν ταῖς ὑπωρείαις ταῖς
πρὸς ἄρκτον τῶν Καυκασίων ὁρῶν ἢ καλεῖται Κεραύ-
30 νια, τὸν μὲν ἄλλον χρόνον καθ' αὐτάς, αὐτοὺς γούσας
ἔκαστα τά τε πρὸς ἄροτον καὶ φυτουργύλαν καὶ τὰ πρὸς

τὰς νομὰς καὶ μάλιστα τῶν ἵππων, τὰς δὲ ἀλκιμωτάτας
 κυνηγεσίαις πλεονάζειν καὶ τὰ πολέμια ἀσκεῖν· ἀπά-
 σας δὲ ἐπικεκαῦθαι τὸν δεξιὸν μαστὸν ἐκ υηπίων,
 ὥστε εὐπετῶς χρῆσθαι τῷ βραχίονι πρὸς ἐκάστην χρεί-
 αν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις πρὸς ἀκοντισμόν· χρῆσθαι δὲ δ
 καὶ τόξῳ καὶ σαγάρῃ καὶ πέλτῃ, δοφὰς δὲ θηρίων ποι-
 εῖσθαι περίκρανά τε καὶ σκεπάσματα καὶ διακόματα·
 δύο δὲ μῆνας ἔξαιρέτους ἔχειν τοῦ ἕαρος, καθ' οὓς ἀνα-
 βαίνουσιν εἰς τὸ πλησίον ὄρος τὸ διορίζον αὐτὰς τε καὶ
 τοὺς Γαργαρέας. ἀναβαίνουσι δὲ κάκεῖνοι κατὰ ἔδος 10
 τι παλαιόν, συνθύσοντές τε καὶ συνεσόμενοι ταῖς γυ-
 ναιξὶ τεκνοποιίας χάροιν ἀφανῶς τε καὶ ἐν σκότει, ὁ τυ-
 χὼν τῇ τυχούσῃ, ἐγκύμονας δὲ ποιήσαντες ἀποπέμ-
 πουσιν· αἱ δὲ ὅ τι μὲν ἀν θῆλυ τάκισι κατέχουσιν αὐ-
 ται, τὰ δὲ ἄρρενα κομίζουσιν ἐκείνοις ἐκτρέψειν· φένει- 15
 ωται δὲ ἔκαστος πρὸς ἔκαστον νομίζων υἱὸν διὰ τὴν
 ἄγνοιαν.

2 ‘Ο δὲ Μερμόδας καταράττων ἀπὸ τῶν ὄρῶν διὰ
 τῆς τῶν Ἀμαξόνων καὶ τῆς Σιρακηνῆς καὶ ὅση μεταξὺ
 ἔρημος, εἰς τὴν Μαιῶτιν ἐκδίδωσι. τοὺς δὲ Γαργαρέας 20
 συναναβῆναι μὲν ἐκ Θεμισκύρας φασὶ ταῖς Ἀμαξόσιν
 εἰς τούσδε τοὺς τόπους, εἰτ' ἀποστάντας αὐτῶν πολε-
 μεῖν μετὰ Θρακῶν καὶ Εὐβοέων τινῶν πλανηθέντων
 μέχρι δεῦρο πρὸς αὐτάς, ὑστερούν δὲ καταλυσαμένους
 τὸν πρὸς αὐτὰς πόλεμον ἐπὶ τοῖς λεχθεῖσι ποιήσασθαι 25
 συμβάσεις, ὥστε τέκνων συγκοινωνεῖν μόνον, ξῆν δὲ
 καθ' αὐτοὺς ἐκατέροις.

3 “Ιδιον δέ τι συμβέβηκε τῷ λόγῳ [τῷ] περὶ τῶν Ἀμα-
 ξόνων· οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι τὸ μυθῶδες καὶ τὸ ἴστορικὸν
 διαρισμένου ἔχουσι· τὰ γὰρ παλαιὰ καὶ ψευδῆ καὶ τε- 30

ρατώδη μῆθοι καλοῦνται, ἡ δ' ἵστορία βούλεται τάλη-
θές, ἀν τε παλαιὸν ἄν τε νέον, καὶ τὸ τερατῶδες η̄ οὐκ
ἔχει η̄ σπάνιον· περὶ δὲ τῶν Ἀμαξόνων τὰ αὐτὰ λέγε-
ται καὶ νῦν καὶ πάλαι, τερατώδη τε ὅντα καὶ πίστεως
5 πόρρω. τίς γὰρ ἄν πιστεύσειεν, ὡς γυναικῶν στρατὸς
η̄ πόλις η̄ ἔθνος συσταήτη ἄν ποτε χωρὶς ἀνδρῶν; καὶ οὐ
μόνου γε συσταήτη, ἀλλὰ καὶ ἐφόδους ποιήσαιτο ἐπὶ τὴν
ἀλλοτρίαν καὶ ιρατήσειεν οὐ τῶν ἔγγυς μόνου ὥστε
καὶ μέχρι τῆς νῦν Ἰωνίας προελθεῖν, ἀλλὰ καὶ διαπόν-^{0.500}
10 τιον στείλαιτο στρατείαν μέχρι τῆς Ἀττικῆς· τοῦτο γὰρ
ὅμοιον ὡς ἄν εἰ τις λέγοι, τοὺς μὲν ἄνδρας γυναικας
γεγονέναι τοὺς τότε τὰς δὲ γυναικας ἄνδρας. ἀλλὰ μὴν
ταῦτα γε αὐτὰ καὶ νῦν λέγεται περὶ αὐτῶν. ἐπιτείνει
δὲ τὴν ἴδιότητα καὶ τὸ πιστεύεσθαι τὰ παλαιὰ μᾶλλον
15 η̄ τὰ νῦν· κτίσεις γοῦν πόλεων καὶ ἐπωνυμίαι λέγον-⁴
ται, καθάπερ Ἐφέσου καὶ Σινάρης καὶ Κύμης καὶ
Μιρίνης, καὶ τάφοι καὶ ἄλλα ὑπομνήματα· τὴν δὲ Θε-
μίσκυραν καὶ τὰ περὶ τὸν Θερμώδοντα πεδία καὶ τὰ
ὑπερκείμενα δῷη ἅπαντες Ἀμαξόνων καλοῦσι, καὶ φα-
20 σιν ἐξελαθῆναι αὐτὰς ἐνθένδε. ὅπου δὲ νῦν εἰσίν, δλ-
γοι τε καὶ ἀναποδείκτως καὶ ἀπίστως ἀποφαίνονται·
καθάπερ καὶ περὶ Θαληστρίας, η̄ν Ἀλεξάνδρῳ συμμ-
χαί φασιν ἐν τῇ Τροκανίᾳ καὶ συγγενέσθαι τεκνοποιίας
χάριν, δυναστεύουσαν τῶν Ἀμαξόνων· οὐ γὰρ ὅμο-
25 λογεῖται τοῦτο· ἀλλὰ τῶν συγγραφέων τοσούτων δι-
των οἱ μάλιστα τῆς ἀληθείας φροντίσαντες οὐκ εἰρή-
κασιν, οὐδὲ οἱ πιστευόμενοι μάλιστα οὐδενὸς μέμνηνται
τοιούτου, οὐδὲ οἱ εἰπόντες τὰ αὐτὰ εἰρήκασι· Κλεί-
ταρχος δέ φησι τὴν Θαληστρίαν ἀπὸ Κασπίων πυλῶν
30 καὶ Θερμώδοντος δομηθεῖσαν· ἐλθεῖν πρὸς Ἀλέξαν-
δρον· εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίας εἰς Θερμώδοντα στάδιοι
πλείους ἔξακισχιλίων.

5 Καὶ τὰ πρὸς τὸ ἔνδοξον θρυληθέντα οὐκ ἀνωμολόγηται παρὰ πάντων, οἱ δὲ πλάσαντες ἥσαν οἱ κολακεῖας μᾶλλον ἢ ἀληθείας φροντίζοντες· οἶον τὸ τὸν Καύκασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ Ἰνδικὰ ὅρη καὶ τὴν πλησιάζονσαν ἐκείνους ἐών θάλατταν ἀπὸ τῶν ὑπεροχει-5 μένων τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Εὐξείνου ὁρῶν· ταῦτα γὰρ οἱ Ἑλληνες καὶ Καύκασον ὀνόμαζον, διέχοντα τῆς Ἰνδικῆς πλείους ἢ τρισμυρίους σταδίους, καὶ ἐνταῦθα ἐμύθευσαν τὰ περὶ Προμηθέα καὶ τὸν δεσμὸν αὐτοῦ· ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἐω ἐγνώριξον οἱ τότε. ἡ δὲ 10 ἐπὶ Ἰνδοὺς στρατεία Διονύσου καὶ Ἡρακλέους ὕστερογενῆ τὴν μυθοποιίαν ἐμφαίνει, ἀτε τοῦ Ἡρακλέους καὶ τὸν Προμηθέα λῦσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν ὕστερον. καὶ ἦν μὲν ἔνδοξότερον τὸ τὸν Ἀλέξανδρον μέχρι τῶν Ἰνδικῶν ὁρῶν καταστρέψασθαι τὴν Ἀσίαν 15 ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου καὶ τοῦ Καυκάσου· ἀλλ’ ἡ δόξα τοῦ ὅρους καὶ τοῦνομα καὶ τὸ τοὺς περὶ Ιάσονα δοκεῖν μακροτάτην στρατείαν τελέσαι τὴν μέ-
C.506χροι τῶν πλησίον Καυκάσου καὶ τὸ τὸν Προμηθέα παραδεδόσθαι δεδεμένον ἐπὶ τοὺς ἐσχάτους τῆς γῆς ἐν τῷ 20 Καυκάσῳ χαριεῖσθαι τι τῷ βασιλεῖ ὑπέλαβον τοῦνομα τοῦ ὅρους μετενέγκαντες εἰς τὴν Ἰνδικήν.

6 Τὰ μὲν οὖν ὑψηλότατα τοῦ ὄντως Καυκάσου τὰ νοτιώτατά ἔστι τὰ πρὸς Ἀλβανίᾳ καὶ Ἰβηρίᾳ καὶ Κόλχους καὶ Ἡνιόχοις· οἴκοῦσι δὲ οὓς εἶπον τοὺς συνερχο-25 μένους εἰς τὴν Διοσκουριάδα· συνερχονται δὲ τὸ πλεῖστον ἀλλιν χάριν. τούτων δ’ οἱ μὲν τὰς ἀκρωτείας κατέχουσιν, οἱ δὲ ἐν νάπαις αὐλίζονται καὶ ξῶσιν ἀπὸ θηρείων σαρκῶν τὸ πλέον καὶ καρκῶν ἀγρίων καὶ γάλακτος. αἱ δὲ κορυφαὶ χειμῶνος μὲν ἄβατοι, θέρους 30 δὲ προσβαίνουσιν ὑποδούμενοι πεντρωτὰ ὀμοβόινα δίκην τυμπάνων πλατεῖα διὰ τὰς χιόνας καὶ τοὺς κρυ-

στάλλους. καταβαίνοντες δ' ἐπὶ δορᾶς κείμενοι σὺν τοῖς φορτίοις καὶ κατοισθαίνοντες, ὅπερ καὶ κατὰ τὴν Ἀτροκατίαν Μηδίαν καὶ κατὰ τὸ Μάσιον ὅρος τὸ ἐν Ἀρμενίᾳ συμβαίνει· ἐνταῦθα δὲ καὶ τροχίσκοι ξύλινοι 5 κεντρωτοὶ τοῖς πέλμασιν ὑποτίθενται. τοῦ γοῦν Καυκάσου τὰ μὲν ἄκρα τοιαῦτα. καταβαίνοντι δ' εἰς τὰς 7 ὑπωρείας ἀρκτιώτερα μέν ἔστι τὰ οὔλια, ἡμερώτερα δέ· ἥδη γὰρ συνάπτει τοῖς πεδίοις τῶν Σιράκων. εἰσὶ δὲ καὶ τρωγλοδύται τινὲς ἐν φωλεοῖς οἰκοῦντες 10 διὰ τὰ ψύχη, παρ' οἷς ἥδη καὶ ἀλφίτων ἔστιν εὐπορία· μετὰ δὲ τοὺς τρωγλοδύτας καὶ χαμαικοῦται καὶ πολυφάγοι τινὲς καλούμενοι καὶ αἱ τῶν Εἰσαδίκων κῶμαι, δυναμένων γεωργεῖν διὰ τὸ μὴ παντελῶς ὑποπεπτωκέναι ταῖς ἀρκτοῖς.

15 Οἱ δ' ἐφεξῆς ἥδη νομάδες οἱ μεταξὺ τῆς Μαιώτι- 8 δος καὶ τῆς Κασπίας Ναβιανοὶ καὶ *Πανξανοὶ καὶ ἥδη τὰ τῶν Σιράκων καὶ Ἀόρσων φύλα. δοκοῦσι δ' οἱ Ἀορσοὶ καὶ οἱ Σίρακες φυγάδες εἶναι τῶν ἀνωτέρω καὶ προσάρκτοι μᾶλλον Ἀόρσων. Ἀβέακος μὲν οὖν ὁ τῶν 20 Σιράκων βασιλεύς, ἦνίκα Φαρνάκης τὸν Βόσπορον εἶχε, δύο μυριάδας ἵππεων ἔστελλε, Σπαδίνης δ' ὁ τῶν Ἀόρσων καὶ *εἰκοσιν, οἱ δὲ ἄνω Ἀορσοὶ καὶ πλείονας· καὶ γὰρ ἐπεκράτουν πλείονος γῆς καὶ σχεδόν τι τῆς Κασπίων παραλίας τῆς πλείστης ἥρχον, ὥστε καὶ ἐνε-

25 πορεύοντο καμήλοις τὸν Ἰνδικὸν φόρτον καὶ τὸν Βαβυλώνιον παρά τε Ἀρμενίων καὶ Μήδων διαδεχόμενοι· ἔχρυσοφόροιν δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν. οἱ μὲν οὖν Ἀορσοὶ τὸν Τάναιν παροικοῦσιν, οἱ Σίρακες δὲ τὸν Ἀχαρδέον, ὃς ἐκ τοῦ Καυκάσου δέων ἐκδίδωσιν εἰς τὴν 30 Μαιῶτιν.

‘Η δὲ δευτέρα μερὶς ἀρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Κασπίας 6 θαλάττης, εἰς ἣν κατέπαυεν ἡ προτέρα· καλεῖται δ' ἡ C.507

αὐτὴν θάλαττα καὶ Τρκανία. δεῖ δὲ περὶ τῆς θαλάττης εἰπεῖν πρότερον ταύτης καὶ τῶν προσοίκων ἐδυῶν. ἔστι δ' ὁ κόλπος ἀνέχων ἐκ τοῦ ὥκεανοῦ πρὸς μεσημβρίαν κατ' ἀρχὰς μὲν ἵκανως στενός, ἐνδοτέρῳ δὲ πλατύνεται προών, καὶ μάλιστα κατὰ τὸν μυχὸν ἐπὶ σταδίους 5 που καὶ πεντακισχιλίους· ὁ δ' εἴσπλους μέχρι τοῦ μυχοῦ μικρῷ πλειόνων ἀν εἶη συνάπτων πιὼς ἥδη τῇ ἀοικήτῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τὸν ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων γνωμίζομενον περίπλουν τῆς θαλάττης ταύτης τὸν μὲν παρὰ τοὺς Ἀλβανοὺς καὶ τὸν Καδουσίους εἶναι πεν- 10 τακισχιλίων καὶ τετρακοσίων, τὸν δὲ παρὰ τὴν Ἀναργιανῶν καὶ Μάρδων καὶ Τρκανῶν μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Ὅξεον ποταμοῦ τετρακισχιλίων καὶ δισκιλίων· ἔνθεν δ' ἐπὶ τοῦ Ιαξάρτου δισκιλίων τετρακοσίων. δεῖ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ μερίδι ταύτῃ καὶ τοῖς ἐπὶ τοσοῦτον ..5 ἐπτετοπισμένοις ἀπλούστερον ἀκούειν, καὶ μάλιστα περὶ τῶν διαστημάτων.

2. Εἰσπλέοντι δ' ἐν δεξιᾷ μὲν τοῖς Εὐρωπαίοις οἱ συνεχεῖς Σκύθαι νέμονται καὶ Σαρμάται οἱ μεταξὺ τοῦ Τανάδος καὶ τῆς θαλάττης ταύτης, νομάδες οἱ πλεί- 20 ους, περὶ ὧν εἰρήκαμεν· ἐν ἀριστερᾷ δ' οἱ πρὸς ἔω Σκύθαι, νομάδες καὶ οὗτοι, μέχρι τῆς ἐφάσης θαλάττης καὶ τῆς Ἰνδικῆς παρατείνοντες. ἄπαντας μὲν δὴ τοὺς προσβόρρους κοινῶς οἱ παλαιοὶ τῶν Ἑλλήνων συγ- γραφεῖς Σκύθας καὶ Κελτοσκύθας ἐκάλουν· οἱ δ' ἔτι 25 πρότερον διελόντες τοὺς μὲν ὑπὲρ τοῦ Εὐξείνου καὶ Ἰστρουν καὶ τοῦ Ἀδρούν κατοικοῦντας Τπερβιρέους ἔλεγον καὶ Σαυρομάτας καὶ Ἀριμασπούς, τοὺς δὲ πέ- ραν τῆς Κασπίας θαλάττης τοὺς μὲν Σάκας τοὺς δὲ Μασσαγέτας ἐκάλουν, οὐκ ἔχοντες ἀριβὲς λέγειν περὶ 30 αὐτῶν οὐδέν, καίπερ πρὸς Μασσαγέτας τοῦ Κύρου πόλεμον ἰστοροῦντες. ἀλλ' οὕτε περὶ τούτων οὐδὲν

ἥκριβωτο πρὸς ἀλήθειαν, οὕτε τὰ παλαιὰ τῶν Περσίων οὔτε τῶν Μηδικῶν ἢ Συριακῶν ἐς πίστιν ἀφίκετο μεγάλην διὰ τὴν τῶν συγγραφέων ἀπλότητα καὶ τὴν φιλομυθίαν.

5 Ορῶντες γὰρ τοὺς φανερῶς μυθογράφους εὐδο- 3
 κιμοῦντας φήμησαν καὶ αὐτοὶ παρέξεσθαι τὴν γραφὴν
 ἥδεῖαν, ἐὰν ἐν ἴστορίας σχῆματι λέγωσιν ἢ μηδέποτε
 [μήτε] εἰδούν μήτε ἥκουσαν ἢ οὐ παρά γε ἰδόντων, σκο-
 ποῦντες δὲ αὐτὸ μόνον τοῦτο ὅ τι ἀκρόασιν ἥδεῖαν ἔχει
10 καὶ θαυμαστήν. δῆτον δ' ἂν τις Ἡσιόδῳ καὶ Ὁμήρῳ πι- 0.508
 στεύσειεν ἡρωολογοῦσι καὶ τοῖς τραγικοῖς ποιηταῖς ἢ
 Κτησίᾳ τε καὶ Ἡροδότῳ καὶ Ἐλλανίῳ καὶ ἄλλοις τοι-
 ούτοις. οὐδὲ τοῖς περὶ Ἀλεξάνδρου δὲ συγγράφασιν 4
 δάδιον πιστεύειν τοῖς πολλοῖς· καὶ γὰρ οὗτοι δάδιον ρ-
15 γοῦσι διά τε τὴν δόξαν τὴν Ἀλεξάνδρου καὶ διὰ τὸ τὴν
 στρατείαν πρὸς τὰς ἐσχατιὰς γεγονέναι τῆς Ἀσίας πόδ-
 ρω ἀφ' ἡμᾶς· τὸ δὲ πόδρω μυστέλεγκτον. ἡ δὲ τῶν
 Ῥωμαίων ἐπικράτεια καὶ ἡ τῶν Παρθιναίων πλεῖόν τι
 προσεκκαλύπτει τῶν παραδεδομένων πρότερον· οἱ γὰρ
20 περὶ ἐκείνων συγγράφοντες καὶ τὰ χωρία καὶ τὰ ἔθνη,
 ἐν οἷς αἱ πράξεις, πιστότερον λέγουσιν ἢ οἱ πρὸ αὐτῶν·
 μᾶλλον γὰρ καταπτεύκασι.

Τοὺς δ' οὖν ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι τὸ Κάσπιον 7
 πέλαγος παροικοῦντας νομάδαις Δάας οἱ νῦν προσαγο-
25 φεύονται τοὺς ἐπονομαζομένους Πάρονους· εἰτ' ἔρημος
 πρόκειται μεταξύ, καὶ ἐφεξῆς ἡ Τρκανία, καθ' ᾧ ἡδη
 πελαγῖζει μέχρι τοῦ συνάψαι τοῖς Μηδικοῖς ὄρεσι καὶ
 τοῖς Ἀρμενίων. τούτων δ' ἐστὶ μηνοειδὲς τὸ σχῆμα
 κατὰ τὰς ὑπωρείας, αἱ τελευτῶσαι πρὸς θάλατταν ποι-
30 οῦσι τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου. οἰκεῖ δὲ τὴν παράρρειαν

ταύτην μέχρι τῶν ἄκρων ἀπὸ θαλάττης ἀρξαμένοις ἐπὶ μικρὸν μὲν τῶν Ἀλβανῶν τι μέρος καὶ τῶν Ἀρμενίων, τὸ δὲ πλέον Γῆλαι καὶ Καδούσιοι καὶ Ἀμαρδοι καὶ Οὐτιοι καὶ Ἀναριάναι. φασὶ δὲ Παρρασίων τινὰς συνοικῆσαι τοῖς Ἀναριάκαις, οὓς καλεῖσθαι νῦν Παρσίους.⁵ Αἰνιάνας δ' ἐν τῇ Οὐτιᾳ τειχίσαι πόλιν ἦν * Αἰνιάνα καλεῖσθαι, καὶ δείκνυσθαι ὅπλα τε Ἑλληνικὰ ἐνταῦθα καὶ σκεύη χαλκᾶ καὶ ταφάς· ἐνταῦθα δὲ καὶ πόλιν Ἀναριάκην, ἐν ᾧ, φασί, δείκνυται μαντείον ἔγκοιμωμένων καὶ ἄλλα τινὰ ἔθνη λῃστρικὰ καὶ μάχιμα¹⁰ μᾶλλον ἡ γεωργικά· ποιεῖ δὲ τοῦτο ἡ τραχύτης τῶν τόπων. τὸ μέντοι πλέον τῆς περὶ τὴν ὁρεινὴν παραλίας Καδούσιοι νέμονται, σχεδὸν δέ τι ἐπὶ πεντακισχιλίους σταδίους, ὡς φησὶ Πατροκλῆς, δις καὶ πάρισον ἥγεῖται τὸ πέλαγος τοῦτο τῷ Ποντικῷ. ταῦτα μὲν οὖν τὰ χω-15
ρία λυπρά.

2 'Η δ' Ἄρκανία σφόδρα εὐδαιμων καὶ πολλὴ καὶ τὸ πλέον πεδιὰς πόλεσι τε ἀξιολόγοις διειλημμένη, ὡς ἔστι Ταλαβρόκη καὶ Σαμαριανὴ καὶ Κάρτα καὶ τὸ βασίλειον Τάπη, ὃ φασὶ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ίδρου-20 μένον διέχειν τῶν Κασπίων πυλῶν σταδίους χιλίους τετρακοσίους. σημεῖα δὲ τῆς εὐδαιμονίας· ἡ μὲν γὰρ ἄμπελος μετρητὴν οἶνου φέρει, ἡ δὲ συκῆ μεδίμνους ἔξηκοντα, ὃ δὲ σίτος ἐκ τοῦ ἐκπεσόντος καρ-
ποῦ τῆς καλάμης φύεται, ἐν δὲ τοῖς δένδρεσι σμηνουν-25 γεῖται καὶ τῶν φύλλων ἀπορρεῖ μέλι· τοῦτο δὲ γίνεται καὶ τῆς Μηδίας ἐν τῇ Ματιανῇ καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐν τῇ Σακασηνῇ καὶ τῇ Ἀραξηνῇ. τῆς μέντοι προσηκούσης ἐπιμελείας οὐκ ἔτυχεν οὕτε αὐτὴ οὕτε ἡ ἐπώνυμος αὐτῇ θάλαττα ἄπλους τε οὖσα καὶ ἀργός· νῆσοί τέ εἰσιν 30 οἰκεῖσθαι δυνάμεναι, ὡς δ' εἰρήνασί τινες καὶ χρυσῆτιν ἔχουσαι γῆν. αἴτιον δ' ὅτι καὶ οἱ ἥγεμόνες οἵ τ' ἔξ-

ἀρχῆς ἐτύγχανον βάρβαροι ὅντες οἱ τῶν Τρκανῶν,
Μῆδοι τε καὶ Πέρσαι καὶ οἱ ὑπατοὶ Παρθυαῖοι, χει-
ρους ἐκείνων ὅντες, καὶ ἡ γείτων ἄπασα χώρα ληστῶν
καὶ νομάδων μεστὴ καὶ ἐρημίας. Μακεδόνες δ' ὀλίγον
5 μὲν χρόνον ἐπῆρξαν, ἀλλ' ἐν πολέμοις ὅντες καὶ τὰ
πόρρω σκοπεῖν οὐ δυνάμενοι. φησὶ δ' Ἀριστόβουλος
ὑλώδη οὖσαν τὴν Τρκανίαν δρῦν ἔχειν, πεύκην δὲ
καὶ ἐλάτην καὶ πίτυν μὴ φύειν, τὴν δ' Ἰνδικὴν πλη-
θύειν τούτοις. τῆς δὲ Τρκανίας ἐστὶ καὶ ἡ Νησαία· τι-
10 νὲς δὲ καὶ καθ' αὐτὴν τιθέασι τὴν Νησαίαν.

Διαρρεῖται δὲ καὶ ποταμοῖς ἡ Τρκανία τῷ τε Ὡχῷ 3
καὶ Ὡξῷ μέχρι τῆς εἰς θάλατταν ἐκβολῆς, ὃν δὲ Ὡχος
καὶ διὰ τῆς Νησαίας ὁ εἰς ἔνιοι δὲ τὸν Ὡχον εἰς τὸν
15 Ὁξον ἐμβάλλειν φασίν. Ἀριστόβουλος δὲ καὶ μέγιστον
ἀποφανεῖ τὸν Ὁξον τῶν ἑωραμένων ὑφ' ἑαυτοῦ κατὰ
τὴν Ἀσίαν πλὴν τῶν Ἰνδικῶν· φησὶ δὲ καὶ εὔπλουν
εἶναι καὶ οὗτος καὶ Ἐρατοσθένης παρὰ Πατροκλέους
λαβὼν, καὶ πολλὰ τῶν Ἰνδικῶν φορτίων κατάγειν εἰς
τὴν Τρκανίαν θάλατταν, ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν Ἀλβα-
20 νίαν περιούσθαι καὶ διὰ τοῦ Κύρου καὶ τῶν ἕξῆς τό-
πων εἰς τὸν Εὔξεινον καταφέρεσθαι. οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ^{το}
τῶν παλαιῶν δὲ Ὡχος ὀνομάζεται· Ἀπολλόδωρος μέν-
τοι δὲ τὰ Παρθικὰ γράψας συνεχῶς αὐτὸν ὀνομάζει ὡς
ἐγγυτάτω τοῖς Παρθυαῖοις δέοντα.

. 25 Προσεδοξάσθη δὲ καὶ περὶ τῆς θαλάττης ταύτης 4
πολλὰ φευδῆ διὰ τὴν Ἀλεξάνδρου φιλοτιμίαν· ἐπειδὴ
γὰρ ὡμοιολόγητο ἐκ πάντων ὅτι διείργει τὴν Ἀσίαν ἀπὸ
τῆς Εὐρώπης δὲ Τάνας ποταμός, τὸ δὲ μεταξὺ τῆς θα-
λάττης καὶ τοῦ Τανάϊδος πολὺ μέρος τῆς Ἀσίας ὃν
30 οὐχ ὑπέπιπτε τοῖς Μακεδόσι, στρατηγεῖν δ' ἔγνωστο
ῶστε τῇ φήμῃ γε κάκείνων δόξαι τῶν μερῶν ορατεῖν

τὸν Ἀλεξανδρον, εἰς δὲ συνῆγον τὴν τε Μαιῶτιν λίμνην τὴν δεχομένην τὸν Τάναιν καὶ τὴν Κασπίαν θάλατταν, λίμνην καὶ ταύτην παλοῦντες καὶ συντετροήσθαι φάσκοντες πρὸς ἀλλήλας ἀμφοτέρας, ἐκατέραν δὲ εἶναι μέρος τῆς ἑτέρας. Πολύκλειτος δὲ καὶ πίστεις 5 προφέρεται περὶ τοῦ λίμνην εἶναι τὴν θάλατταν ταύτην, ὅφεις τε γὰρ ἐκτρέψειν καὶ ὑπόγλυκυ εἶναι τὸ ὕδωρ· ὅτι δὲ καὶ οὐχ ἑτέρα τῆς Μαιῶτιδός ἐστι, τεκμαρόμενος ἐκ τοῦ τὸν Τάναιν εἰς αὐτὴν ἐμβάλλειν· ἐκ γὰρ τῶν αὐτῶν δρῶν τῶν Ἰνδικῶν ἐξ ἄν δὲ τε Ὥχος 10 καὶ ὁ Ὦξος καὶ ἄλλοι πλείους φέρεται καὶ ὁ Ἱαξάρτης ἐκδίδωσί τε δύοις ἐκείνοις εἰς τὸ Κάσπιον πέλαγος πάντων ἀρκτικώτατος. τοῦτον οὖν ἀνόμασαν Τάναιν, καὶ προσέθεσάν γε τούτῳ πίστιν, ὡς εἴη Τάναις ὃν εἴρηκεν ὁ Πολύκλειτος· τὴν γὰρ περαίαν τοῦ 15 ποταμοῦ τούτου φέρειν ἐλάτην καὶ οἰστοῖς ἐλατίνοις χρῆσθαι τοὺς ταύτη Σκύθας· τοῦτο δὲ καὶ τεκμήριον τοῦ τὴν χώραν τὴν πέραν τῆς Εὐρώπης εἶναι, μὴ τῆς Ἀσίας· τὴν γὰρ Ἀσίαν τὴν ἄνω καὶ τὴν πρὸς ἔω μὴ φύειν ἐλάτην. Ἐρατοσθένης δέ φησι καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ 20 φύεσθαι ἐλάτην καὶ ἐντεῦθεν ναυπηγήσασθαι τὸν στόλον Ἀλεξανδρον· πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τοιαῦτα συγκρούειν Ἐρατοσθένης πειρᾶται, ἡμῖν δ' ἀποχρώντως εἰρήσθω περὶ αὐτῶν.

5 *Kai toūto d' én tōn katà tēn Tōnakalān istoqou-* 25 *ménōn παραδόξων éstiln úpò Eúdóξou καὶ állōn, ótι*
πρόκεινται tineis áktai tēs thaláttēs úpantrdoi, toútōn
δὲ metakēn καὶ tēs thaláttēs úpókeiatai tateuinōs
aligialós, én dē tōn úpeorðeu nōqmūnōn potamoi d'éou-
tes tosaútē προφéronτai bíā w̄ste taēs áktai sūná- 30

ψαντες ἔξακοντάζουσι τὸ ὕδωρ εἰς τὴν θάλατταν, ἀρ-
χαντον φυλάττοντες τὸν αἴγιαλὸν ὥστε καὶ στρατοπέ-
δοις διδεύσιμον εἶναι σκεπαζομένοις τῷ φεύματι, οἱ δ'
ἐπιχώριοι κατάγονται πολλάκις εὐωχλας καὶ θυσίας
5 χάριν εἰς τὸν τόπον, καὶ ποτὲ μὲν ὑπὸ τοῖς ἄντροις
κατακλίνονται, ποτὲ δ' ὑπὸ αὐτῶν τῷ φεύματι ἡλια-
ζόμενοι ἄλλως ἄλλοι τέρονται, παραφαινομένης ἁμα-
καὶ τῆς θαλάττης ἐκατέρωθεν καὶ τῆς γόνος ποώδους
καὶ ἀνθηρᾶς οὕσης διὰ τὴν ἰκμάδα.

10 Ἀπὸ δὲ τῆς Ἱρκανίας θαλάττης προιόντι ἐπὶ τὴν 8
ἔω δεξιὰ μέν ἔστι τὰ δόῃ μέχρι τῆς Ἰνδικῆς θαλάττης
παρατείνοντα, ἀπερ οἱ Ἑλληνες ὀνομάζουσι Ταῦρον,
ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς Παμφυλίας καὶ τῆς Κιλικίας καὶ
μέχρι δεῦρο προιόντα ἀπὸ τῆς ἐσπέρας συνεχῆ καὶ
15 τυγχάνοντα ἄλλων καὶ ἄλλων ὀνομάτων. προσοικοῦσι
δ' αὐτοῦ τὰ προσάρκτια μέρη πρῶτοι μὲν οἱ Γῆλαι
καὶ Καδούσιοι καὶ Ἀμαρδοι, καθάπερ εἰρηται, καὶ
τῶν Ἱρκανίων τινές, ἐπειτα τὸ τῶν Παρθυαίων ἔθνος
καὶ τὸ τῶν Μαργιανῶν καὶ τῶν Ἀρίων καὶ ἡ ἔρημος,
20 ἦν ἀπὸ τῆς Ἱρκανίας δοξεῖ δ Σάρνιος ποταμὸς πρός. 5.11
ἔω βαδίζουσι καὶ ἐπὶ τὸν Ὥχον. καλεῖται δὲ τὸ μέχρι
δεῦρο ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας διατεῖνον ἡ μικρὸν ἀπολεῖ-
τον Παραχοάθρας. ἔστι δὲ ἀπὸ τῆς Ἱρκανίας θαλάτ-
της εἰς τοὺς Ἀρίωνς περὶ ἔξακισχιλίους σταδίους· εἰδί²
25 ἡ Βακτριανή ἔστι καὶ ἡ Σογδιανή, τελευταῖοι δὲ Σκύ-
θαι νομάδες. τὰ δ' δόῃ Μακεδόνες μὲν ἀπαντα τὰ
ἔφεξῆς ἀπὸ Ἀρίων Καύκασον ἐκάλεσαν, παρὰ δὲ τοῖς
βαρβάροις* τά τε ἄκρα καὶ τοῦ Παροπαμίσου τὰ προσ-
βόρεια καὶ τὰ Ἡμαδὰ καὶ τὸ Ἰμαον καὶ ἄλλα τοιαῦτα
30 ὀνόματα ἐκάστοις μέρεσιν ἐπέκειτο.

Ἐν ἀριστερῷ δὲ τούτοις ἀντιπαράκειται [τὰ] Σκυ- 2
θικὰ ἔθνη καὶ τὰ νομαδικὰ ἀπαβαν ἐκπληροῦντα τὴν

βόρειον πλευράν. οἱ μὲν δὴ πλείους τῶν Σκυθῶν ἀπὸ τῆς Κασπίας θαλάττης ἀρξάμενοι Λᾶαι προσαγορεύονται, τοὺς δὲ προσεψόους τούτων μᾶλλον Μασσαγέτας καὶ Σάκαις ὄνομάζουσι, τοὺς δ' ἄλλους κοινῶς μὲν Σκύθας ὄνομάζουσιν ἰδίᾳ δ' ὡς ἑκάστους. 5 ἅπαντες δ' ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ νομάδες. μάλιστα δὲ γυνώριμοι γεγόνασι τῶν νομάδων οἱ τοὺς Ἑλληνας ἀφελόμενοι τὴν Βακτριανήν, "Ἄσιοι καὶ *Πασιανοί καὶ Τόχαροι καὶ Σακάραντοι, δρυηθέντες ἀπὸ τῆς περαίας τοῦ Ἰαξάρτου τῆς κατὰ Σάκαις καὶ Σογδιανούς, ἥν 10 κατεῖχον Σάκαι. καὶ τῶν Λαῶν οἱ μὲν προσαγορεύονται "Ἀπαρνοί οἱ δὲ Ξάνθιοι οἱ δὲ Πισσουροί. οἱ μὲν οὖν "Ἀπαρνοί πλησιαίτατα τῇ Ἱρανίᾳ παράκεινται καὶ τῇ κατ' αὐτὴν θαλάττῃ, οἱ δὲ λοιποὶ διατείνουσι καὶ μέχρι τῆς ἀντιπαρογκούσης τῇ Ἀρά. 15

3 Μεταξὺ δ' αὐτῶν καὶ τῆς Ἱρανίας καὶ τῆς Παρθναίας μέχρι Ἀράων ἔρημος πρόκειται πολλὴ καὶ ἀνυδρος, ἥν διεξιόντες μακραῖς ὁδοῖς κατέτρεχον τὴν τε Ἱρανίαν καὶ τὴν Νησαίαν καὶ τὰ τῶν Παρθναίων πεδία· οἱ δὲ συνέθεντο φόρους· φόρος δ' ἦν τὸ ἐπι- 20 τροέπειν τακτοῖς τισι χρόνοις τὴν χώραν κατατρέχειν καὶ φέρεσθαι λείαν. ἐπιπολαζόντων δ' αὐτῶν παρὰ τὰ συγκείμενα ἐπολεμεῖτο, καὶ πάλιν διαλύσεις καὶ ἀναπολεμήσεις ὑπῆρχον. τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ τῶν ἄλλων νομάδων βίος, ἀεὶ τοῖς πλησίον ἐπιτιθεμένων 25 τοτὲ δ' αὖ διαλλαττομένων.

4 Σάκαι μέντοι παραπλησίας ἐφόδους ἐποιήσαντο τοῖς Κιμμερίοις καὶ Τρήρεσι, τὰς μὲν μακροτέρας τὰς δὲ καὶ ἐγγύθεν· καὶ γὰρ τὴν Βακτριανὴν κατέσχον καὶ τῆς Ἀρμενίας κατεκτήσαντο τὴν ἀριστην γῆν, ἥν καὶ 30 ἐπώνυμον ἔαντων κατέλιπον τὴν Σακασηνήν, καὶ μέχρι Καππαδόκων καὶ μάλιστα τῶν πρὸς Εὐξείνῳ οὖς

Ποντικοὺς νῦν καλοῦσι, προηλθον. ἐπιθέμενοι δ' αὐτοῖς πανηγυρίζουσιν ἀπὸ τῶν λαφύρων οἱ ταύτη τότε τῶν Περσῶν στρατηγοὶ υὔκτωρ ἄρδην αὐτοὺς ἥφαντισαν. ἐν δὲ τῷ πεδίῳ πέτραν τινὰ προσχώματι 5 συμπληρώσαντες εἰς βουνοειδὲς σχῆμα ἐπέδηκαν τεῖχος καὶ τὸ τῆς Ἀναττιδος καὶ τῶν συμβόλων θεῶν ιερὸν ίδρυσαντο, Ὁμανοῦ καὶ Ἀναδάτου Περσικῶν δαιμόνων, ἀπέδειξάν τε πανήγυριν κατ' ἔτος ιεράν, τὰ Σάκαια, ἣν μέχρι νῦν ἐπιτελοῦσιν οἱ τὰ Ζῆλα ἔχον· 10 τες· οὕτω γὰρ καλοῦσι τὸν τόπον· ἔστι δὲ ιεροδούλων πόλισμα τὸ πλέον· Πομπήιος δὲ προσθεὶς χώραν ἀξιόλογον καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ συνοικίσας εἰς τὸ τεῖχος μίαν τῶν πόλεων ἀπέφηνεν ὃν διέταξε μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατάλυσιν.

15 Οἱ μὲν [οὖν] οὕτω λέγοντες περὶ τῶν Σακῶν, οἱ δ' ὅτι Κῦρος ἐπιστρατεύσας τοὺς Σάκαις ἡττηθεὶς τῇ μάχῃ φεύγει, στρατοπεδευσάμενος δ' ἐν φυλαρίῳ τὰς παρασκευὰς ἀπολελοίπει πλήρεις ἀφθονίας ἀπάσης καὶ μάλιστα οἶνον, διαναπαύσας μικρὰ τὴν στρατιάν, 20 ἥλαννην ἀφ' ἐσπέρας ὡς φεύγων, πλήρεις ἀφεὶς τας σκηνάς· προελθὼν δ' ὅσον ἐδόκει συμφέρειν ίδρυθη· ἐπιδυντες δ' ἐκεῖνοι καὶ καταλαβόντες ἔρημον ἀνδρῶν τὸ στρατόπεδον τῶν δὲ πρὸς ἀπόλαυσιν μεστόν, ανέδην ἐνεπίμπλαντο· ὁ δ' ὑποστρέψας ἔξοντος κατέλαβε 25 καὶ παραπλῆγας, ὅσθ' οἱ μὲν ἐν κάρῳ κείμενοι καὶ ὅπνῳ κατεκόπτοντο, οἱ δ' ὁρχούμενοι καὶ βακχεύοντες γυμνοὶ περιέπιπτον τοὺς τῶν πολεμίων ὅπλοις, ὀλίγον δ' ἀπώλοντο ἀπαντες. ὁ δὲ θεῖον νομίσας τὸ εὐτύχημα, τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀνιερόθσας τῇ πατρὶ φειδεῖ προσηγόρευσε Σάκαια· ὅπου δ' ἂν ἦτος θεοῦ ταύτης ιερόν, ἐνταῦθα νομίζεται καὶ ἡ τῶν Σακαίων ἕορτὴ βακχεία τις μεθ' ἡμέραν καὶ υὔκτωρ, διεσκευ-

ασμένων σκυθιστές, πινόντων ἄμα καὶ πληκτιζομένων πρὸς ἀλλήλους ἄμα τε καὶ τὰς συμπινούσας γυναικας.

6 *Μασσαγέται δ' ἐδήλωσαν τὴν σφετέραν ἀρετὴν ἐν τῷ πρὸς Κῦρον πολέμῳ, περὶ οὓς θρυλοῦσι πολλοῖ, καὶ δεῖ πυνθάνεσθαι παρ' ἑκείνων. λέγεται δὲ καὶ 5 τοιαῦτα περὶ τῶν Μασσαγετῶν, ὅτι κατοικοῦσιν οἱ μὲν ὄρη τινὲς δ' αὐτῶν πεδία οἱ δὲ ἔλη ἢ ποιοῦσιν οἱ ποταμοί, οἱ δὲ τὰς ἐν τοῖς ἔλεσι νήσους. μάλιστα δέ φασι τὸν Ἀράξην ποταμὸν κατακλύζειν τὴν χώραν πολλαχῆ σχιζόμενον, ἐκπίπτοντα δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις 10*

C.513 στόμασιν εἰς τὴν ἄλλην τὴν πρὸς ἀρκτοῖς θάλατταν, ἐνὶ δὲ μόνῳ πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ὑραάνιον. θεὸν δὲ ἥλιον μόνον ἡγοῦνται, τούτῳ δὲ ἐπιποθυτοῦσι· γαμεῖ δ' ἔκαστος μίαν, χρῶνται δὲ καὶ ταῖς ἀλλήλων οὐκ ἀφανῶς, ὃ δὲ μηγνύμενος τῇ ἄλλοτρᾳ τὴν φαρέ- 15 τραν ἔξαρτήσας ἐκ τῆς ἀμάξης φανερῶς μίγνυνται· θάνατος δὲ νομίζεται παρ' αὐτοῖς ἀριστος, ὅταν γηράσαντες κατακοπῶσι μετὰ προβατείων κρεῶν καὶ ἀναμιξ βρωθῶσι· τοὺς δὲ νόσφι θαυμάντας δίπτουσιν ὡς ἀσεβεῖς καὶ ἀξέιοντες ὑπὸ θηρίων βεβρῶσθαι. ἀγα- 20 θοὶ δὲ ἐπόται καὶ πεξοί, τόξοις δὲ χρῶνται καὶ μαχαίραις καὶ θώραξι καὶ σαγάρεσι χαλκαῖς, ξῶνται δὲ αὐτοῖς εἰσι χρυσαῖ καὶ διαδήματα ἐν ταῖς μάχαις· οἵ τε ἵπποι χρυσοχάλινοι, καὶ μασχαλιστῆρες δὲ χρυσοῖ· ἄργυρος δ' οὐ γίνεται παρ' αὐτοῖς, σίδηρος δ' ὀλύγος, 25 χαλκὸς δὲ καὶ χρυσὸς ἄφθονος.

7 *Oἱ μὲν οὖν ἐν ταῖς νήσοις οὐκ ἔχοντες σπόριμα διζοφαγοῦσι καὶ ἀγρίοις χρῶνται καρποῖς, ἀμπέχονται δὲ τοὺς τῶν δένδρων φλοιούς (οὐδὲ γὰρ βοσκήματα ἔχοντες), πίνονται δὲ τὸν ἐκ τῶν δένδρων καρπὸν ἐκ- 30 θλίβοντες· οἱ δὲ ἐν τοῖς ἔλεσι ἰχθυοφαγοῦσιν, ἀμπέχονται δὲ τὰ τῶν φωκῶν δέοματα τῶν ἐκ θαλάττης*

ἀνατρεχοντάν· οἱ δὲ ὅρειοι τοῖς ἀγρίοις τρέφονται καὶ αὐτὸὶ καρποῖς· ἔχουσι δὲ καὶ πρόβατα ὀλύγα ὥστ' οὐδὲ κατακόπτουσι φειδόμενοι τῶν ἐφέων χάριν καὶ τοῦ γάλακτος· τὴν δὲ ἐσθῆτα ποικίλλουσιν ἐπιχοί-
5 στοις φαρμάκοις δυσεξίηλον ἔχουσι τὸ ἄνθος. οἱ δὲ πεδινοὶ καίπερ ἔχοντες χώραν οὐ γεωργοῦσιν, ἀλλὰ ἀπὸ προβάτων καὶ ἰχθύων ἔωσι νομαδικῶς καὶ Σκυ-
θικῶς. ἔστι γάρ τις καὶ κοινὴ δίαιτα πάντων τῶν τοι-
ούτων ἦν πολλάκις λέγω, καὶ ταφαὶ δὲ εἰσὶ παραπλή-
10 σιαι καὶ ἥθη καὶ ὁ σύμπατος βίος, αὐθέναστος μὲν σκαι-
ός τε καὶ ἄγριος καὶ πολεμικός, πρὸς δὲ τὰ συμβό-
λαια ἀπλοῦς καὶ ἀνάπηλος.

Τοῦ δὲ τῶν Μασσαγετῶν καὶ τῶν Σακῶν ἔθνους ⁸
καὶ οἱ Ἀττάσιοι καὶ οἱ Χωράσμιοι, εἰς οὓς ἀπὸ τῶν
15 Βακτριανῶν καὶ τῶν Σογδιανῶν ἔφυγε Σπιταμένης,
εἰς ἐκ τῶν ἀποδράτων Περσῶν τὸν Ἀλέξανδρον, κα-
θάπερ καὶ Βῆσσος· καὶ ὑστερον δὲ Ἀρσάκης τὸν Καλ-
λινικον φεύγων Σέλευκον εἰς τοὺς Ἀπασιάκας ἔχώ-
ρησε. φησὶ δὲ Ἐρατοσθένης τοὺς Ἀραχωτοὺς καὶ Μασ-
20 σαγέτας τοῖς Βακτρίοις παρακεῖσθαι* πρὸς δύσιν παρὰ
τὸν Ωξον, καὶ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανοὺς τοῖς ὅλοις
ἔδάφεσιν ἀντικεῖσθαι τῇ Ἰνδικῇ, Βακτρίους δὲ ἐπ' ὀλ-
γον· τῷ γὰρ πλέον τῷ Παροπαμισῷ παρακεῖσθαι· δι-0.514
εἰργειν δὲ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανοὺς τὸν Ωξον, μεταξὺ
25 δὲ Τρκανῶν καὶ Ἀρέων Ταπύρους οἰκεῖν· πύκλῳ δὲ
περὶ τὴν θάλατταν μετὰ τοὺς Τρκανοὺς Ἀμάρδους τε
καὶ Ἀναριάκας καὶ Καδουσίους καὶ Ἀλβανοὺς καὶ
Κασπίους καὶ Ούπιους, τάχα δὲ καὶ ἐτέρους μέχρι
30 Σκυθῶν, ἐπὶ θάτερα δὲ μέρῃ τῶν Τρκανῶν Δέρβικας,
τοὺς δὲ Καδουσίους συμψαύειν Μήδων καὶ Ματιανῶν
ὑπὸ τὸν Παραχοάθρων.

9 Τὰ δὲ διαστήματα οὗτω λέγει· ἀπὸ μὲν τοῦ Κασπίου ἐπὶ τὸν Κῦρον ως χιλίους ὄκτακοσίους σταδίους, ἔνθεν δ' ἐπὶ Κασπίας πύλας πεντακισχιλίους ἔξακοσίους, εἰτ' εἰς Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις ἔξακισχιλίους τετρακοσίους, εἰτ' εἰς Βάκτραν τὴν πόλιν, ἣ καὶ 5 Ζαριάσπια καλεῖται, τρισχιλίους ὄκτακοσίους ἑβδομήκοντα, εἰτ' ἐπὶ τὸν Ἰαξάρτην ποταμόν, ἐφ' ὃν Ἀλέξανδρος ἦκεν, ως πεντακισχιλίους· δμοῦ δισμύριοι δισχίλιοι ἔξακόσιοι ἑβδομήκοντα. λέγει δὲ καὶ οὗτω τὰ διαστήματα ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς Ἰνδούς· εἰς 10 μὲν Ἐκατόμπυλον χιλίους ἐνακοσίους ἔξήκοντά φασιν, εἰς δ' Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις τετρακισχιλίους πεντακοσίους τριάκοντα, εἰτ' εἰς Προφθασίαν τὴν ἐν Δραγγῇ χιλίους ἔξακοσίους, οἱ δὲ πεντακοσίους, εἰτ' εἰς Ἀραχωτὸν τὴν πόλιν τετρακισχιλίους ἐκατὸν εἴκο- 15 σιν, εἰτ' εἰς Ὁρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ Βάκτρων τριόδον δισχιλίους, εἰτ' εἰς τὰ δρια τῆς Ἰνδικῆς χιλίους· δμοῦ μύριοι πεντακισχίλιοι τριακόσιοι. ἐπ' εὐθείας δὲ τῷ διαστήματι τούτῳ τὸ συνεχὲς δεῖ νοεῖν, τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ μέχρι τῆς ἐφάσ θαλάττης μῆκος τῆς Ἰνδικῆς. 20 ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς Σάκας.

9 Ἡ δὲ Παρθυαία πολλὴ μὲν οὐκ ἔστι· συνετέλει γοῦν μετὰ τῶν Τρκανῶν [κατὰ] τὰ Περσικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τῶν Μακεδόνων ιρατούντων ἐπὶ χρόνον πολύν. πρὸς δὲ τῇ σμικρότητι δασεῖα καὶ ὁρεινή ἔστι καὶ ἅπο- 25 ρος, ὥστε διὰ τοῦτο δρόμῳ διεξιᾶσι τὸν ἑαυτῶν οἱ βασιλεῖς ὅχλον, οὐ δυναμένης τρέφειν τῆς χώρας οὐδὲ ἐπὶ μικρόν· ἀλλὰ υῦνην ηὔξηται. μέρη δ' ἔστι τῆς Παρθυηνῆς ἡ τε Κωμισηνὴ καὶ ἡ Χωρήνη, σχεδὸν δέ τι καὶ τὰ μέχρι πυλῶν Κασπίων καὶ Ράγων καὶ Ταπύρων 30 ὄντα τῆς Μηδίας πρότερον. ἔστι δ' Ἀπάμεια καὶ Ἡράκλεια, πόλεις περὶ τὰς Ράγας. εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίων

πυλῶν εἰς μὲν Ῥάγαις στάδιοι πεντακόσιοι, ὡς φησιν
 Ἀπολλόδωρος, εἰς δὲ Ἐκατόμπυλον τὸ τᾶν Παρθυαίων
 βασίλειοι χίλιοι διακόσιοι ἔξήκοντα· τοῦνομα δὲ ταῖς
 Ῥάγαις ἀπὸ τῶν γενομένων σεισμῶν γενέσθαι φασίν,
 5 ὃν πόλεις τε συχναὶ καὶ κοῦμαι δισχίλιαι, ὡς Ποσει-
 δώνιος φησι, ἀνετραπήσαν. τοὺς δὲ Ταπύρους οἰκεῖν
 φασι μεταξὺ Δερβίκων τε καὶ Τρικανῶν. ίστοροῦσι δὲ
 περὶ τῶν Ταπύρων ὅτι αὐτοῖς εἴη νόμιμον τὰς γυναικας.⁵¹⁵
 ἐκδιδόναι τὰς γαμετὰς ἐτέροις ἀνδράσιν, ἐπειδὴν ἔξ
 10 αὐτῶν ἀνέλωνται δύο ἡ τρίτα τέκνα, καθάπερ καὶ Κά-
 των Ὁρτησίῳ δεηθέντι ἔξεδωκε τὴν Μαρκίαν ἐφ' ἡμῶν
 κατὰ παλαιὸν Ῥωμαίων ἔθος.

Νεωτερισθέντων δὲ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου διὰ τὸ 2
 πρὸς ἄλλοις εἶναι τοὺς τῆς Συρίας καὶ τῆς Μηδίας βα-
 15 σιλέας τοὺς ἔχοντας καὶ ταῦτα, πρῶτον μὲν τὴν Βακ-
 τριανὴν ἀπέστησαν οἱ πεπιστευμένοι καὶ τὴν ἐγγὺς
 αὐτῆς πᾶσαν οἱ περὶ Εύθυδημον. ἐπειτέρας Ἀρσάκης
 ἀνὴρ Σκύθης τῶν Δαᾶν τινας ἔχων τοὺς Πάρονος
 καλούμένους νομάδας παροικοῦντας τὸν Όρχον, ἐπῆλ-
 20 θεν ἐπὶ τὴν Παρθυαίαν καὶ ἐκράτησεν αὐτῆς. κατ' ἀρ-
 χὰς μὲν οὖν ἀσθενῆς ἦν διαπολεμῶν πρὸς τοὺς ἀφαι-
 ρεθέντας τὴν χώραν καὶ αὐτὸς καὶ οἱ διαδεξάμενοι
 ἐκεῖνουν, ἐπειδὴν οὔτε τις συνέσθησαν ἀφαιρούμενοι τὴν πλη-
 σίον ἀεὶ διὰ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις κατορθώσεις ὥστε
 25 τελευτῶντες ἀπάσης τῆς ἐντὸς Εὐφράτου κύριοι κα-
 τέστησαν. ἀφείλοντο δὲ καὶ τῆς Βακτριανῆς μέρος
 βιασάμενοι τοὺς Σκύθας καὶ ἔτι πρότερον τοὺς περὶ
 Εὐκρατίδαν, καὶ υῦν ἐπάρχουσι τοσαύτης γῆς καὶ το-
 σούτων ἔθνων ὥστε ἀντίπαλοι τοῖς Ῥωμαίοις τρόπον
 30 τινὰ γεγόνασι κατὰ μέγεθος τῆς ἀρχῆς. αἰτιος δ' ὁ
 βίος αὐτῶν καὶ τὰ ἔθη τὰ ἔχοντα πολὺ μὲν τὸ βάρβα-

ρον καὶ τὸ Σκυθικόν, πλέον μέντοι τὸ χρήσιμον πρὸς ἡγεμονίαν καὶ τὴν ἐν τοῖς πολέμοις κατόρθωσιν.

3 Φασὶ δὲ τοὺς Πάρονους Δάας μετανάστας εἶναι ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιάτιδος Δαᾶν, οὓς Ξανδίους ἢ Παρίους καλοῦσιν· οὐ πάνυ δ' ὀμοιολόγηται Δάας εἰ⁵—5 ναὶ τινας τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιάτιδος Σκυθῶν· ἀπὸ τούτων δ' οὖν ἔλκειν φασὶ τὸ γένος τὸν Ἀρσάκην, οἱ δὲ Βακτριανὸν λέγοντες αὐτόν, φεύγοντα δὲ τὴν αὔξησιν τῶν περὶ Διόδοτον ἀποστῆσαι τὴν Παρθναίαν. εἰρηκότες δὲ πολλὰ περὶ τῶν Παρθικῶν νομίμων ἐν 10 τῇ ἕκτῃ τῶν ἴστορικῶν ὑπομνημάτων βίβλῳ, δευτέρᾳ δὲ τῶν μετὰ Πολύβιου, παραλείψομεν ἐνταῦθα μὴ ταυτολογεῖν δόξωμεν, τοσοῦτον εἰπόντες μόνον δῆτι τῶν Παρθναίων συνέδριόν φησιν εἶναι Ποσειδώνιος διττόν, τὸ μὲν συγγενῶν τὸ δὲ σοφῶν καὶ μάγων, ἐξ 15 ὃν ἀμφοῖν τοὺς βασιλεῖς καθίστασθαι.

10 Ἡ δὲ Ἀρία καὶ ἡ Μαργιανὴ κράτιστα χωρία ἐστὶ ταύτη, τῇ μὲν ὑπὸ τῶν ὁρῶν ἐγκλειόμενα τῇ δὲ ἐν πεδίοις τὰς οἰκήσεις ἔχοντα. τὰ μὲν οὖν ὅρη νέμονται σκηνῶτα τινες, τὰ δὲ πεδία ποταμοῖς διαρρεῖται· πο-20 τίζονται δὲ αὐτὰ τὰ μὲν τῷ Ἀρίῳ τὰ δὲ Μάργῳ. δύο δὲ 0.516 ἡ Ἀρία τῇ Βακτριανῇ* καὶ τὴν ὑποστᾶσαν ὅραι τῷ ἔχοντι τὴν Βακτριανήν· διέχει δὲ τῆς Τρκανίας περὶ ἔξανισχιλίους σταδίους. συντελήσ δὲ ἦν αὐτῇ καὶ ἡ Δραγγιανὴ μέχρι Καρμανίας, τὸ μὲν πλέον τοῖς νο-25 τίοις μέρεσι τῶν ὁρῶν ὑποκεπτωκυῖα, ἔχουσα μέντοι τινὰ τῶν μερῶν καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς πλησιάζοντα τοῖς κατὰ τὴν Ἀρίαν· καὶ ἡ Ἀραχωσία δὲ οὐ πολὺ ἄπωθέν ἐστι, καὶ αὕτη τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὁρῶν ὑποκεπτωκυῖα καὶ μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τεταμένη, μέ-30 ρος οὖσα τῆς Ἀριανῆς. μῆκος δὲ τῆς Ἀρίας ὅσον δισχίλιοι στάδιοι, πλάτος δὲ τριακόσιοι τοῦ πεδίου· πό-

λεις δὲ Ἀρτακάηνα καὶ Ἀλεξάνδρεια καὶ Ἀχαια, ἐπώ-
νυμοι τῶν κτισάντων. εύοινεῖ δὲ σφόδρα ἡ γῆ· καὶ
γὰρ εἰς τριγονίαν παραμένει ἐν ἀπιττώτοις ἄγγεσι.

Παραπλησία δ' ἔστι καὶ ἡ Μαργιανή, ἐρημαῖς δὲ 2
5 περιέχεται τὸ πεδίον. Θαυμάσας δὲ τὴν εὐφυΐαν ὁ
Σωτὴρ Ἀντίοχος τείχει περιέβαλε κύκλου ἔχοντι χιλίων
καὶ πεντακοσίων σταδίων, πόλιν δὲ ἐκτίσεν Ἀντιό-
χειαν. εὐάμπελος δὲ καὶ αὕτη ἡ γῆ· φασὶ γοῦν τὸν
πυθμένα εὑρίσκεσθαι πολλάκις θυσὶν ἀνδράσι περι-
10 ληπτόν, τὸν δὲ βότρουν δίπηχν.

Τῆς δὲ Βακτρίας μέρη μέν τινα τῇ Ἀρά παραβέ- 11
βληται πρὸς ἄρκτον, τὰ πολλὰ δ' ὑπέρκειται πρὸς ἔω·
πολλὴ δ' ἔστι καὶ πάμφιορος πλὴν ἐλαίου. τοσοῦτον
δὲ ἵσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες Ἑλληνες αὐτὴν διὰ τὴν
15 ἀρετὴν τῆς χώρας ὥστε τῆς τε Ἀριανῆς ἐπειράτουν
καὶ τῶν Ἰνδῶν, ὡς φησιν Ἀπολλόδωρος ὁ Ἀρταμιτη-
νός, καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο ἢ Ἀλεξανδρος,
καὶ μάλιστα Μένανδρος (εἰ γε καὶ τὸν Ὑπανιν διέβη
πρὸς ἔω καὶ μέχρι τοῦ Ἰμάου προηῆλθε) τὰ μὲν αὐτὸς
20 τὰ δὲ Αημήτριος ὁ Εὐθυδήμος υἱὸς τοῦ Βακτρίων βα-
σιλέως· οὐ μόνον δὲ τὴν Παταληνὴν κατέσχον ἀλλὰ
καὶ τῆς ἄλλης παραλίας τὴν τε Σαραόστου καλούμε-
νην καὶ τὴν Σιγέρδιδος βασιλείαν. καθ' ὅλου δέ φησιν
ἐκεῖνος τῆς συμπάσης Ἀριανῆς πρόσχημα εἶναι τὴν
25 Βακτριανήν· καὶ δὴ καὶ μέχρι Σηρᾶν καὶ Φρυνῶν
ἔξετεινον τὴν ἀρχήν.

Πόλεις δ' είχον τά τε Βάκτρα ἥνπερ καὶ Ζαριά- 2
σπαν καλοῦσιν, ἣν διαρρεῖ ὁμώνυμος ποταμὸς ἐκ-
βάλλων εἰς τὸν Ὡξον, καὶ Ἀδραψα καὶ ἄλλας πλείους·
30 τοιταν δ' ἦν καὶ ἡ Εὐκρατίδεια τοῦ ἀρξαντος ἐπώνυ-

μος. οἱ δὲ κατασχόντες αὐτὴν "Ελληνες καὶ εἰς σατρα-
πείας διηρήκασιν, ὃν τὴν τε Ἀσπιώνου καὶ τὴν Τα-
πυρίαν ἀφῆρηντο Εὐκρατίδην οἱ Παρθιαῖοι. ἐσχον
δὲ καὶ τὴν Σογδιανὴν ὑπερκειμένην πρὸς ἦω τῆς Βακ-
τριανῆς μεταξὺ τοῦ τε Ὡξον ποταμοῦ, ὃς ὁρίζει τὴν 5
τε τῶν Βακτρίων καὶ τὴν τῶν Σογδίων, καὶ τοῦ Ἰα-
ξάρτου· οὗτος δὲ καὶ τὸν Σογδίους ὁρίζει καὶ τὸν
νομάδας.

3 Τὸ μὲν οὖν παλαιὸν οὐ πολὺ διέφερον τοῖς βίοις
καὶ τοῖς ἔθεσι τῶν νομάδων οἵ τε Σογδιανοὶ καὶ οἱ 10
Βακτριανοί, μικρὸν δ' ὅμως ἡμερώτερα ἢν τὰ τῶν Βακ-
τριανῶν, ἀλλὰ καὶ περὶ τούτων οὐ τὰ βέλτιστα λέ-
γοντες οἱ περὶ Ὄνησίκριτον· τοὺς γὰρ ἀπειρηκότας
διὰ γῆρας ἢ νόσον ξῶντας παραβάλλεσθαι τρεφομέ-
νοις κυσὶν ἐπίτηδες πρὸς τοῦτο, οὓς ἐνταφιαστὰς κα- 15
λεῖσθαι τῇ πατρῷᾳ γλώττῃ, καὶ ὁρᾶσθαι τὰ μὲν ἔξω
τείχους τῆς μητροπόλεως τῶν Βάκτρων καθαρά, τῶν
δ' ἐντὸς τὸ πλέον ὀστέων πλῆρες ἀνθρωπίνων· κατα-
λῦσαι δὲ τὸν νόμον Ἀλέξανδρον. τοιαῦτα δέ πως καὶ
τὰ περὶ τὸν Κασπίους ἴστοροῦσι· τοὺς γὰρ γονέας, 20
ἐπειδὰν ὑπὲρ ἐβδομῆκοντα ἔτη γεγονότες τυγχάνωσιν,
ἔγκλεισθέντας λιμοκτονεῖσθαι. τοῦτο μὲν οὖν ἀνε-
κτότερον καὶ τῷ Κείων νόμῳ παραπλήσιον καίπερ
δὲ σκυθικόν, πολὺ μέντοι σκυθικότερον τὸ τῶν
Βακτριανῶν. καὶ δὴ διαπορεῖν ἄξιον ἢν, ἡνίκα Ἀλέ- 25
ξανδρος τοιαῦτα κατελάμβανε τάνταῦθα, τί χρὴ * ποι-
εῖν τὰ ἐπὶ τῶν πρώτων Περσῶν καὶ τῶν ἔτι πρότε-
ρον ἡγεμόνων διποῖα εἰκὸς ἢν παρ' αὐτοῖς νεινομίσθαι.

4 Φασὶ δ' οὖν ὀκτὼ πόλεις τὸν Ἀλέξανδρον ἐν τε
τῇ Βακτριανῇ καὶ τῇ Σογδιανῇ κτίσαι, τινὰς δὲ κατα- 30
σκάψαι, ὃν Καριάτας μὲν τῆς Βακτριανῆς, ἐν ἣ Καλλι-
σθένης συνελήφθη καὶ παρεδόθη φυλακῇ, Μαράκανδα

δὲ τῆς Σογδιανῆς καὶ τὰ Κῦρα, ἔσχατον δὲν Κύρου
κτίσμα ἐπὶ τῷ Ἱαξάρτῃ ποταμῷ κείμενον, ὅπερ ἦν
ὅριον τῆς Περσῶν ἀρχῆς· κατασκάψαι δὲ τὸ κτίσμα
τοῦτο καίπερ ὄντα φιλόκυρον διὰ τὰς πυκνὰς ἀπο-
στάσεις· ἐλεῖν δὲ καὶ πέτρας ἔρυμνὰς σφόδρα ἐκ προ-
δοσίας τὴν τε ἐν τῇ Βακτριανῇ τὴν Σισιμίθρου ἐν
ἥτις εἶχεν Ὁξυάρτης τὴν θυγατέραν Ρωξάνην, καὶ τὴν ἐν
τῇ Σογδιανῇ τὴν τοῦ Ὡξου, οἱ δὲ Ἀριαμάζου φασί.
τὴν μὲν οὖν Σισιμίθρου πεντεκαίδεκα σταδίων ἴστο-
10 φοῦσι τὸ ὑψος, ὁγδοήκοντα δὲ τὸν κύκλον, ἀνω δὲ
ἐπίπεδον καὶ εὔγεων ὅσον πεντακοσίους ἄνδρας τρέ-
φειν δυναμένην, ἐν ᾧ καὶ ἔντας τυχεῖν πολυτελοῦς
καὶ γάμους ἀγαγεῖν Ρωξάνης τῆς Ὁξυάρτου θυγατρὸς
τὸν Ἀλεξανδρον· τὴν δὲ τῆς Σογδιανῆς διπλασίαν τὸ
15 ὑψος φασί. περὶ τούτους δὲ τοὺς τόπους καὶ τὸ τῶν
Βραγχιδῶν ἄστυ ἀνελεῖν, οὓς Εὐρέην μὲν Ιδρύσαις.^{C.518}
αὐτόθι συναπάραντας αὐτῷ ἐκόντας ἐκ τῆς οἰκείας διὰ
τὸ παραδοῦναι τὰ χρήματα τοῦ θεοῦ τὰ ἐν Διδύμοις
καὶ τοὺς θησαυρούς, ἐκεῖνον δὲ ἀνελεῖν μυσαττόμε-
20 νον τὴν ἱεροσυλίαν καὶ τὴν προδοσίαν.

Τὸν δὲ διὰ τῆς Σογδιανῆς φέοντα ποταμὸν * καὶ 5
..... Πολυτίμητον Ἀριστόβουλος, τῶν Μακεδόνων
[τοῦνομα] θεμένων, καθάπερ καὶ ἄλλα πολλὰ τὰ μὲν
καὶνὰ ἔθεσαν τὰ δὲ παρωνόμασαν· ἄρδοντα δὲ τὴν χώ-
25 ραν ἐπίπτειν εἰς ἔρημον καὶ ἀμμώδη γῆν καταπίνε-
σθαι τε εἰς τὴν ἄμμον, ὡς καὶ τὸν Ἀρίων τὸν δι'
Ἀρίων φέοντα. τοῦ δὲ Ὡχου ποταμοῦ πλησίον ὁρύ-
τοντας εὑρεῖν ἐλαῖου πηγὴν λέγουσιν· εἰκὸς δέ, ὥσπερ
νιτρώδη τινὰ καὶ στύφοντα ὑγρὰ καὶ ἀσφαλτώδη καὶ
30 θειώδη διαρρεῖ τὴν γῆν, οὗτοι καὶ λιπαρὰ εὐρίσκε-
σθαι, τὸ δὲ σπάνιον ποιεῖ τὴν παραδοξίαν. φεῖν δὲ
τὸν Ὡχον οἱ μὲν διὰ τῆς Βακτριανῆς φασιν οἱ δὲ παρ'

αὐτήν, καὶ οἱ μὲν ἔτερον τοῦ "Ωξου μέχρι τῶν ἐκβολῶν νοτιώτερον ἑκείνου, ἀμφοτέρων δ' ἐν τῇ Τρηνανίᾳ τὰς εἰς τὴν θάλατταν ὑπάρχειν ἐκρύσσεις, οἱ δὲ κατ' ἀρχὰς μὲν ἔτερον συμβάλλειν δ' εἰς ἐν τὸ τοῦ "Ωξου φεῖδρον, πολλαχοῦ καὶ ἔξ καὶ ἐπτά σταδίων 5 ἔχοντα τὸ πλάτος. ὁ μέντοι Ἰαξάρτης ἀπ' ἀρχῆς μέχρι τέλους ἔστι τοῦ "Ωξου, καὶ εἰς μὲν τὴν αὐτὴν τελευτῶν θάλατταν, αἱ δ' ἐμβολαὶ διέχουσιν ἀλλήλων, ὡς φησι *Πατροκλῆς*, παρασάγγας ὡς ὅγδοήκοντα· τὸν δὲ παρασάγγην τὸν περσικὸν οἱ μὲν ἔξηκοντα στα-10 δίων φασίν, οἱ δὲ τριάκοντα ἢ τετταράκοντα. ἀναπλεόντων δ' ἡμῶν τὸν Νεῖλον ἄλλοτ' ἄλλοις μέτροις χρώμενοι τὰς σχοίνους ὠνόμαζον ἀπὸ πόλεως ἐπὶ πόλιν, ὡστε τὸν αὐτὸν τῶν σχοίνων ἀριθμὸν ἀλλαχοῦ μὲν μείζω παρέχειν πλοῦν ἀλλαχοῦ δὲ βραχύτερον· 15 οὕτως ἔξ ἀρχῆς παραδεδομένον καὶ φυλαττόμενον μέχρι νῦν.

6 Μέχρι μὲν δὴ τῆς Σογδιανῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιου ἰόντι ἀπὸ τῆς Τρηνανίας γνώριμα ὑπῆρξε τὰ ἔθνη καὶ τοῖς Πέρσαις πρότερον τὰ εἶσα τοῦ Ταύρου καὶ 20 τοῖς Μακεδόσι μετὰ ταῦτα καὶ τοῖς Παρθιναίοις. τὰ δ' ἐπέκεινα ἐπ' εὐθείας ὅτι μὲν Σκυθικά ἔστιν, ἐκ τῆς ὁμοιειδείας εἰκάζεται, στρατεῖαι δ' οὐ γεγόνασιν ἐπ' αὐτοὺς ἡμῖν γνώριμοι, καθάπερ οὐδὲ ἐπὶ τοὺς βορειοτάτους τῶν νομάδων, ἐφ' οὓς ἐπεκειρόησε μὲν ὁ Ἀλέ-25 ξανδρος ἄγειν στρατείαν, ὅτε τὸν Βῆσσον μετήσει καὶ τὸν Σπιταμένην, ζωγρίᾳ δ' ἀναγθέντος τοῦ Βήσσου, τοῦ δὲ Σπιταμένους ὑπὸ τῶν βαρβάρων διαφθαρέντος, ἐπαύσατο τῆς ἐπιχειρήσεως. οὐχ ὁμολογοῦσι δ' ὅτι περιέπλευσάν τινες ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Τρηνανίαν· ὅτι δὲ δυνατόν, *Πατροκλῆς* εἴρηκε.

καλοῦσιν" Ἰμαιον, τῇ Ἰνδικῇ θαλάττῃ ξυνάπτον, οὐδὲν
οὕτε προῦχει πρὸς ἔω τῆς Ἰνδικῆς μᾶλλον οὔτ' εἰσέχει·
παριόντι δ' εἰς τὸ βόρειον πλευρὸν ἀεί τι τοῦ μή-
κους ὑφαιρεῖ καὶ τοῦ πλάτους ἡ θάλαττα, ὥστ' ἀπο-
5 φαίνειν μύουρον πρὸς ἔω τὴν υῦν ὑπογραφομένην
μερίδα τῆς Ἀσίας, ἣν δὲ Ταῦρος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸν
ἀκεανὸν τὸν πληροῦντα τὸ Κάσπιον πέλαγος. μῆκος
δ' ἐστὶ ταύτης τῆς μερίδος τὸ μέγιστον ἀπὸ τῆς Ἱρα-
νίας θαλάττης ἐπὶ τὸν ἀκεανὸν τὸν κατὰ τὸ "Ιμαιον
10 τρισμυρίων πον σταδίων, παρὰ τὴν ὁρεινὴν τοῦ Ταύ-
ρου τῆς πορείας οὕσης, πλάτος δ' ἔλαττον τῶν μυρίων.
εἰρηται γὰρ ὅτι περὶ τετρακισμυρίους σταδίους ἐστὶ
· τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς ἑφάσης θαλάττης
τῆς κατὰ Ἰνδούς, ἐπὶ δὲ Ἰσδὸν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων ἄκρων
15 τῶν κατὰ στήλας ἄλλοι τρισμύριοι· ἐστι δὲ ὁ μυχὸς τοῦ
Ἰσσικοῦ κόλπου μικρὸν ἢ οὐδὲν Ἀμισοῦ ἑωθινώτερος,
τὸ δὲ ἀπὸ Ἀμισοῦ ἐπὶ τὴν Ἱρανίαν γῆν περὶ μυρίους
ἐστὶ σταδίους, παράλληλον ὃν τῷ ἀπὸ τοῦ Ἰσσοῦ λε-
χθέντι ἐπὶ τοὺς Ἰνδούς. λείπεται δὴ τὸ λεχθὲν μῆκος
20 ἐπὶ τὴν ἔω τῆς περιωδευμένης υῦν μερίδος οἱ τρισμύ-
ριοι στάδιοι. πάλιν δὲ τοῦ πλάτους τοῦ μεγίστου τῆς
οἰκουμένης ὅντος περὶ τρισμυρίους σταδίους, χλαμυ-
δοειδοῦς οὕσης, τὸ διάστημα τοῦτο ἐγγὺς ἂν εἴη τοῦ
μεσημβρινοῦ τοῦ διὰ τῆς Ἱρανίας θαλάττης γραφο-
25 μένου καὶ τῆς Περσικῆς, εἰπερ ἐστὶ τὸ μῆκος τῆς οἰ-
κουμένης ἐπτὰ μυριάδες· εἰ οὖν ἀπὸ τῆς Ἱρανίας ἐπὶ
Ἀρτεμίταν τὴν ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ στάδιοι εἰσιν ὄκτα-
κισχίλιοι, καθάπερ εἰρηκεν Ἀπολλόδωρος ὃ ἐκ τῆς Ἀρ-
τεμίτας, ἐκεῖθεν δὲ ἐπὶ τὸ στόμα τῆς κατὰ Πέρσας θα-
30 λάττης ἄλλο τοσοῦτόν ἐστι, καὶ πάλιν τοσοῦτον ἢ
μικρὸν ἀπολεῖπον εἰς τὰ ἀνταίροντα τοῖς ἄκροις τῆς
Αλδιοπίας, λοιπὸν ἂν εἴη τοῦ πλάτους τῆς οἰκουμένης

τοῦ λεχθέντος ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τῆς Τρικανίας θαλάττης ἐπὶ τοῦ στόματος αὐτῆς ὅσου εἰρήκαμεν. μυούρον δ' ὄντος τοῦ τμήματος τούτου τῆς γῆς ἐπὶ τὰ πρὸς ἔω μέρη, γίνοιτο ἀν τὸ σχῆμα προσόμοιον μαγειρικῆ κοπίδι, τοῦ μὲν ὄφους ἐπ' εὐθείας ὄντος καὶ νοούμενον 5 κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς κοπίδος, τῆς δ' ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ Τρικανίου παραλίας ἐπὶ Τάμαρου κατὰ θάτερον πλευρὸν εἰς περιφερῆ καὶ μύουρον γραμμὴν ἀπολῆγον.

8 Ἐπιμνηστέον δὲ καὶ τῶν παραδόξων ἐνίσιν ἂν θρυ- 10 λοῦσι περὶ τῶν τελέως βαρβάρων, οἷον τῶν περὶ τὸν Καύκασον καὶ τὴν ἄλλην ὁρεινήν. τοῖς μὲν γὰρ νόμιμον εἶναι φασὶ τὸ τοῦ Εὐφρίτου,, τὸν φύντα θρηνεῖν .
 „εἰς ὅσ' ἔρχεται κακά, τὸν δ' αὐτὸν δανόντα καὶ πόνων „πεπαυμένον χαίροντας εὐφημοῦντας ἐκπέμπειν δό- 15 „μων.“ ἑτέροις δὲ μηδένα ἀποκτείνειν τῶν ἔξαμαρτόντων τὰ μέγιστα, ἀλλ' ἔξορίζειν μόνον μετὰ τῶν τεκνῶν, ὑπεναντίως τοῖς Δέρβιξι· καὶ γὰρ ἐπὶ μικροῖς οὗτοι σφάττουνσι. σέβονται δὲ γῆν οἱ Δέρβικες· θύουσι δ' οὐδὲν θῆλυ οὐδὲ ἐσθίουσι· τοὺς δὲ ὑπὲρ ἐβδο- 20 μήκουντα ἔτη γεγονότας σφάττουσιν, ἀναλίσκουσι δὲ τὰς σάρκας οἱ ἄγχιστα γένους· τὰς δὲ γραίας ἀπάγχουσιν, εἰτα θάπτουσι· τοὺς δὲ ἐντὸς ἐβδομήκοντα ἐτῶν ἀποθανόντας οὐκ ἐσθίουσιν ἀλλὰ θάπτουσι. Σήμινοι δὲ τάλλα μὲν περσίξουσιν, ἵππαρίοις δὲ χρῶνται με- 25 κροῖς δασέσιν, ἀπερὶ ἱππότην ὄχεῖν μὲν οὐ δύναται, τέθριππα δὲ ξευγνύουσιν· ἡνιοχοῦσι δὲ γυναικες ἐκ παιδῶν ἡσκημέναι, ἡ δ' ἄριστα ἡνιοχοῦσα συνοικεῖ φίβούλεται· τινὰς δ' ἐπιτηδεύειν φασὶν ὅπως ὡς μακροκεφαλώτατοι φανοῦνται καὶ προπεπτωκότες τοῖς με- 30 τώποις ὥσθ' ὑπερκύπτειν τῶν γενείων. Ταπύρων δ' ἔστι καὶ τὸ τους μὲν ἄνδρας μελανειμονεῖν καὶ μακρο-

κομεῖν, τὰς δὲ γυναικας λευχειμονεῖν καὶ βραχυκομεῖν. καὶ ὁ ἀνδρειότατος κριθεὶς γαμεῖ ἦν βούλεται. Κάσπιοι δὲ τὸν ὑπὲρ ἐβδομήκοντα ἔτη λιμοκτονήσαντες εἰς τὴν ἐρημίαν ἐκτιθέασιν, ἀπωθεν δὲ σκοπεύοντες ἐὰν μὲν ὑπ' ὄρνιθων κατασπωμένους ἀπὸ τῆς κλίνης ἕδωσιν, εὐδαιμονίζουσιν, ἐὰν δὲ ὑπὸ θηρίων ἡ κυνῶν, ἥττον, ἐὰν δ' ὑπὸ μηδενός, κακοδαιμονίζουσι.

Ἐπεὶ δὲ τὰ βόρεια μέρη τῆς Ασίας ποιεῖ ὁ Ταῦρος, **12**
 ἀ δὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου καλούσιν, εἰπεῖν προειλό-
 10 μεδα πρῶτον [περὶ τούτων]. τούτων δ' ἔστι καὶ τὰ ἐν
 τοῖς ὅρεσιν αὐτοῖς ἥ δλα ἥ τὰ πλεῦστα. ὅσα μὲν [οὖν]
 τῶν Κασπίων πυλῶν ἐωθινώτερά ἔστιν, ἀπλουστέραν
 ἔχει τὴν περιήγησιν διὰ τὴν ἀγριότητα, οὐ πολὺ τε ἀν-
 διαφέροι τοῦδε ἥ τοῦδε τοῦ κλίματος συγκαταλεχθέν-
 15 τα· τὰ δ' ἐσπέρια πάντα δίδωσιν εὐπόριαν τοῦ λέγειν
 περὶ αὐτῶν, ὥστε δεῖ προάγειν ἐπὶ τὰ παρακείμενα
 ταῖς Κασπίαις πύλαις. παράκειται δὲ ἡ Μηδία πρὸς
 δύσιν, χώρα καὶ πολλὴ καὶ δυναστεύσασά ποτε καὶ ἐν
 μέσῳ τῷ Ταύρῳ κειμένη, πολυσχιδεῖ κατὰ ταῦτα ὑπάρ-
 20 χοντι τὰ μέρη καὶ αὐλῶνας ἐμπεριλαμβάνοντι μεγά-
 λους, καθάπερ καὶ τῇ Ἀρμενίᾳ τοῦτο συμβέβηκε.

Τὸ γὰρ ὄρος τοῦτο ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Καρίας **2**
 καὶ Λυκίας, ἀλλ' ἐνταῦθα μὲν οὕτε πλάτος οὕτε ὑψος
 ἀξιόλογον δείκνυσιν· ἔξαρχεται δὲ πολὺ πρῶτον κατὰ
 25 τὰς Χελιδονίας (αὗται δ' εἰσὶ νῆσοι κατὰ τὴν ἀρχὴν
 τῆς Παμφύλων παραλίας), ἐπὶ δὲ τὰς ἀνατολὰς ἐκτεινόμενον
 αὐλῶνας μακροὺς ἀπολαμβάνει τοὺς τῶν Κι-
 ληκων· εἰτα τῇ μὲν τῷ Ἀμανὸν ἀπ' αὐτοῦ σχίζεται τῇ
 δὲ ὁ Ἀντίταυρος, ἐν φέτα Κόμανα ἴδουται τὰ ἐν τοῖς
 30 ἄνω λεγομένοις Καππάδοξιν. οὗτος μὲν οὖν ἐν τῇ Κα-

2. post βραχυκομεῖν: οἴκοῦσι δὲ μεταξὺ Λερβίκων καὶ Τρακανῶν

ταονίᾳ τελευτῇ, τὸ δὲ Ἀμανὸν ὅρος μέχοι τοῦ Εὐφράτου καὶ τῆς Μελιτηνῆς πρόσεισι, καθ' ἣν ἡ Κομμαγηνὴ τῇ Καππαδοκίᾳ παράκειται· ἐκδέχεται δὲ τὰ πέραν τοῦ Εὐφράτου ὅρη, συνεχῇ μὲν τοῖς προειρημένοις πλὴν δύσον διακόπτει δέων διὰ μέσων ὁ ποταμός, πολλὴν δ' ἐπίδοσιν λαμβάνει εἰς τὸ ὑψος καὶ τὸ πλάτος καὶ τὸ πολυσχιδές. τὸ δ' οὖν νοτιώτατον μάλιστά ἔστιν ὁ Ταῦρος ὁρίζων τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας.

3. Ἐντεῦθεν δὲ ἀμφότεροι δέουσιν οἱ τὴν Μεσοποταμίαν ἐγκυκλούμενοι ποταμοὶ καὶ συνάπτοντες ἀλλή-10 λοις ἐγγὺς κατὰ τὴν Βαβυλωνίαν, εἰτα ἐκδιδόντες εἰς τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν, ὁ τε Εὐφράτης καὶ Τίγρης. ἔστι δὲ καὶ μείζων ὁ Εὐφράτης καὶ πλείω διεξεισι χώραν σκολιῶ τῷ δεῖθρῳ, τὰς πηγὰς ἔχων ἐν τῷ προσβροείῳ μέρει τοῦ Τάύρου, δέων δ' ἐπὶ δύσιν διὰ τῆς 15 Ἀρμενίας τῆς μεγάλης καλουμένης μέχοι τῆς μικρᾶς, ἐν δεξιᾷ ἔχων ταύτην ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκιλισηνήν· εἰτ' ἐπιστρέψει πρὸς νότον, συνάπτει δὲ κατὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῖς Καππαδόκων δρίοις· δεξιᾷ δὲ ταῦτα ἀφεὶς καὶ τὰ τῶν Κομμαγηνῶν, ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκιλισηνήν καὶ Σωφηνὴν τῆς μεγάλης Ἀρμενίας πρόσεισιν 20 ἐπὶ τὴν Συρίαν καὶ λαμβάνει πάλιν ἄλλην ἐπιστροφὴν εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καὶ τὸν Περσικὸν κόλπον. ὁ δὲ Τίγρης ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τοῦ αὐτοῦ ὅρους ἐνεγχθεὶς 25 ἐπὶ τὴν Σελεύκειαν συνάπτει τῷ Εὐφράτῃ πλησίον καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς αὐτόν, εἰτ' ἐκδίδωσι καὶ αὐτὸς εἰς τὸν αὐτὸν κόλπον. διέχουσι δὲ ἀλλήλων αἱ πηγαὶ τοῦ τε Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγριος περὶ δισχιλίους καὶ πεντακοσίους σταδίους.

4. Ἀπὸ δ' οὗν τοῦ Τάύρου πρὸς ἄρκτον ἀποσχίδεις 30 πολλαὶ γεγόνασι, μία μὲν ἡ τοῦ καλουμένου Ἀντιταύρου· καὶ γὰρ ἐνταῦθα οὕτως ἀνομάζετο ὁ τὴν Σωφη-

νὴν ἀπολαμβάνων ἐν αὐλῶνι μεταξὺ κειμένῳ αὐτοῦ τε καὶ τοῦ Ταύρου. πέραν δὲ τοῦ Εὐφράτου κατὰ τὴν μικρὰν Ἀρμενίαν ἐφεξῆς τῷ Ἀντιταύρῳ πρὸς ἄρχοντον ἐπεκτείνεται μέγα ὅρος καὶ πολυσχιδές καλοῦσι δὲ τὸ 5 μὲν αὐτοῦ Παραάδρην τὸ δὲ Μοσχικὰ ὅρη τὸ δ' ἄλλοις ὀνόμασι· ταῦτα δ' ἀπολαμβάνει τὴν Ἀρμενίαν δλην μέχρι Ἰβήρων καὶ Ἀλβανῶν. εἰτ' ἄλλ' ἐπανίσταται πρὸς ἔω, τὰ ὑπεροχέμενα τῆς Κασπίας θαλάττης μέχρι Μηδίας τῆς τε Ἀτροπατίου καὶ τῆς μεγάλης· κα-C.522
 10 λοῦσι δὲ καὶ ταῦτα τὰ μέρη πάντα τῶν ὁρῶν Παραχο-
 ἀθραν καὶ τὰ μέχρι τῶν Κασπίων πυλῶν καὶ ἐπέκεινα
 ἔτι πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς τὰ συνάπτοντα τῇ Ἀρίᾳ. τὰ
 μὲν δὴ πρόσβορρα ὅρη οὗτω καλοῦσι, τὰ δὲ νότια τὰ
 πέραν τοῦ Εὐφράτου τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομ-
 15 μαγηνῆς πρὸς ἔω τείνοντα κατ' ἀρχὰς μὲν αὐτὸ τοῦτο
 καλεῖται Ταῦρος, διορίζων τὴν Σωφηνῆν καὶ τὴν ἄλ-
 λην Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας· τινὲς δὲ Γορ-
 δυαῖα ὅρη καλοῦσιν. ἐν δὲ τούτοις ἔστι καὶ τὸ Μάσιον,
 τὸ ὑπεροχείμενον τῆς Νισίβιος ὅρος καὶ τῶν Τυρανο-
 20 κέρτων. ἐπειτα ἔξαιρεται πλέον καὶ καλεῖται Νιφάτης·
 ἐνταῦθα δέ που καὶ τοῦ Τύρφιος πηγαὶ κατὰ τὸ νότιον
 τῆς ὁρεινῆς πλευρόν· εἰτ' ἀπὸ τοῦ Νιφάτου μᾶλλον
 ἔτι καὶ μᾶλλον ἡ δάχις ἐκτεινομένη τὸ Ζάγριον ὅρος
 ποιεῖ τὸ διορίζον τὴν Μηδίαν καὶ τὴν Βαβυλωνίαν.
 25 μετὰ δὲ τὸ Ζάγριον ἐκδέχεται ὑπὲρ μὲν τῆς Βαβυλω-
 νίας ἡ τε τῶν Ἐλυμαίων ὁρεινὴ καὶ ἡ τῶν Παραιτακη-
 νῶν, ὑπὲρ δὲ τῆς Μηδίας ἡ τῶν Κοσσαίων· ἐν μέσῳ
 δ' ἔστιν ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, πολλὰ μὲν ὅρη περι-
 λαμβάνοντα πολλὰ δὲ ὁροπέδια, ὥσαύτως δὲ πεδία καὶ
 30 αὐλῶνας μεγάλους, συχνὰ δὲ καὶ ἔθνη τὰ περιοικοῦν-
 τα, μικρὰ ὁρεινὰ καὶ ληστρικὰ τὰ πλείω. οὗτω μὲν το-
 STRABO II.

νυν τίθεμεν ἐντὸς τοῦ Ταύρου τὴν τε Μηδίαν, ἵστι εἰσι
καὶ αἱ Κάσπιοι πύλαι, καὶ τὴν Ἀρμενίαν.

5 Καθ' ἡμᾶς μὲν τοῖνυν προσάρκτια ἀν εἴη τὰ ἔθνη
ταῦτα, ἐπειδὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου, Ἐρατοσθένης δὲ
πεποιημένος τὴν διαιρεσιν εἰς τὰ νότια μέρη καὶ τὰ 5
προσάρκτια καὶ τὰς ὑπ' αὐτοῦ λεγομένας σφραγίδας,
τὰς μὲν βιορείους καλῶν τὰς δὲ νοτίους, δῆμια ἀποφα-
νει τῶν κλιμάτων ἀμφοῖν τὰς Κασπίους πύλας· εἰκό-
τως οὖν τὰ νοτιώτερα τῶν Κασπίων πυλῶν νότια ἀν
ἀποφανοί, ὡς ἐστι καὶ ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, τὰ δὲ 10
βιορειότερα πρόσβορρα, κατ' ἄλλην καὶ ἄλλην διάτα-
ξιν τούτου συμβαίνοντος. τάχα δὲ οὐκ ἐπέβαλε τούτῳ,
διότι ἔξω τοῦ Ταύρου πρὸς νότον οὐδέν εἶστιν οὕτε τῆς
Ἀρμενίας μέρος οὔτε τῆς Μηδίας.

13 Ἡ δὲ Μηδία δίχα διήρηται· καλοῦσι δὲ τὴν μὲν 15
μεγάλην, ἷσ μητρόπολις τὰ Ἐκβάτανα, μεγάλη πόλις
καὶ τὸ βασίλειον ἔχουσα τῆς Μήδων ἀρχῆς· διατελοῦσι
δὲ καὶ νῦν οἱ Παρθυναῖοι τούτῳ χρώμενοι βασιλεῖσθ,
καὶ θεοῖς οἷς ἔνταῦθα οἱ βασιλεῖς· ψυχρὰ γὰρ ἡ
Μηδία· τὸ δὲ χειμάδιόν ἐστιν αὐτοῖς ἐν Σελευκείᾳ τῇ 20
ἐπὶ τῷ Τίγριδι πλησίον Βαβυλῶνος. ἡ δ' ἐτέρα μερὶς
C.523 ἐστιν ἡ Ἀτροπάτιος Μηδία· τοῦνομα δ' ἔσχεν ἀπὸ τοῦ
ἡγεμόνος Ἀτροπάτου, ὃς ἐκώλυσεν ὑπὸ τοῖς Μακεδόσι
γίνεσθαι καὶ ταύτην μέρος οὖσαν μεγάλης Μηδίας·
καὶ δὴ καὶ βασιλεὺς ἀναγορευθεὶς ἴδιᾳ συνέταξε καθ' 25
αὐτὴν τὴν χώραν ταύτην, καὶ ἡ διαδοχὴ σώζεται μέχρι
νῦν ἐκείνου, πρὸς τε τοὺς Ἀρμενίων βασιλέας ποιη-
σαμένων ἐπιγαμίας τῶν ὕστερον καὶ Σύρων καὶ μετὰ
2 ταῦτα Παρθυναίων. κεῖται δὲ ἡ χώρα τῇ μὲν Ἀρμενίᾳ

9. post νοτιωτερα: πρὸς ἦν τελεοντα 29. post Ἀρμενίᾳ:
καὶ τῇ Ματιανῇ

πρὸς ἔω τῇ δὲ μεγάλῃ Μηδίᾳ πρὸς δύσιν, πρὸς ἄρκτον δ' ἀμφότεραις· τοῖς δὲ περὶ τὸν μυχὸν τῆς Τροκανίας θαλάττης καὶ τῇ Ματιανῇ ἀπὸ νότου παράκειται. ἔστι δ' οὐ μικρὰ κατὰ τὴν δύναμιν, ὡς φησιν Ἀπολλωνί-
5 δῆς, ἥ γε καὶ * κατὰ μυρίους ἵππεας δύναται παρέχε-
σθαι, πεζῶν δὲ τέτταρας μυριάδας. λίμνην δ' ἔχει τὴν
* Σπαῦταν, ἐν ᾧ ἄλες ἐπανθοῦντες πήγονται· εἰσὶ δὲ
κυνηγμώδεις καὶ ἐπαλγεῖς· ἔλαιον δὲ τοῦ πάθους ἄκος,
ὑδρῷ δὲ γλυκὺ τοῖς καπνῳδεῖσιν ἴματίοις, εἴ τις κατ'
10 ἄγνοιαν βάψειεν εἰς αὐτὴν πλύσεως χάριν. ἔχουσι δ'
ισχυροὺς γείτονας τοὺς Ἀρμενίους καὶ τοὺς Παρθυαί-
ους, ὑφ' ᾧν περικόπτονται πολλάκις· ἀντέχουσι δ'
δύως καὶ ἀπολαμβάνουσι τὰ ἀφαιρεθέντα, καθάπερ
τὴν Συμβάκην ἀπέλαβον παρὰ τῶν Ἀρμενίων ὑπὸ Ρω-
15 μαίοις γεγονότων, καὶ αὐτοὶ προσεληλύθασι τῇ φιλιᾳ
τῇ πρὸς Καίσαρα· θεραπεύουσι δ' ἄμα καὶ τοὺς Παρ-
θυαίους.

Βασίλειον δ' αὐτῶν θερινὸν μὲν ἐν πεδίῳ ἰδρυμέ- 3
νον Γάζακα, [χειμερινὸν δὲ] ἐν φρουρῷ ἐρυμνῷ Βέρα,
20 διπερ Ἀντώνιος ἐποιίρκησε κατὰ τὴν ἐπὶ Παρθυαίους
στρατείαν. διέχει δὲ τοῦτο τοῦ Ἀράξου ποταμοῦ τοῦ
δρέποντος τὴν τε Ἀρμενίαν καὶ τὴν Ἀτροπατηνὴν στα-
δίους δισκιλίους καὶ τετρακοσίους, ὡς φησιν ὁ Δέλλιος
ὁ τοῦ Ἀντωνίου φίλος, συγγράψας τὴν ἐπὶ Παρθυαί-
25 ους αὐτοῦ στρατείαν ἐν ᾧ παρῆν καὶ αὐτὸς ἡγεμονίαν
ἔχων. ἔστι δὲ τῆς χώρας ταύτης τὰ μὲν ἄλλα εὐδαίμονα
χωρία, ἥ δὲ προσάρκτιος ὁρεινὴ καὶ τραχεῖα καὶ ψυχρά,
Καδουσίων κατοικία τῶν ὁρεινῶν καὶ Ἀμάρδων καὶ
Ταπύρων καὶ Κυρτίων καὶ ἄλλων τοιούτων, οἱ μετα-
30 νάσται εἰσὶ καὶ ληστρικοί. καὶ γὰρ ὁ Ζάγρος καὶ ὁ Νι-
φάτης κατεσπαρμένα ἔχουσι τὰ ἔθνη ταῦτα, καὶ οἱ ἐν
τῇ Περσίδι Κύρτιοι καὶ Μάρδοι (καὶ γὰρ οὕτω λέγον-

ται οι Ἀμαρδοι) καὶ οἱ ἐν τῇ Ἀρμενίᾳ μέχρι νῦν ὁμωνύμως προσαγορευόμενοι τῆς αὐτῆς εἰσὶν ιδέας.

4 Οἱ δὲ οὖν Καδούσιοι πλήθει τῷ πεζῷ μικρὸν ἀπολείπονται τῶν Ἀριανῶν, ἀκοντισταὶ δὲ εἰσὶν ἄριστοι, ἐν δὲ τοῖς τραχέσιν ἀνθ' ἵππεων πεζοὶ διαμάχονται, 5

C.524 Ἀντωνίῳ δὲ χαλεπὴν τὴν στρατείαν ἐποίησεν οὐχ ἡ τῆς χώρας φύσις, ἀλλ' ὁ τῶν ὀδῶν ἡγεμὼν, ὁ τῶν Ἀρμενίων βασιλεὺς Ἀρταβάσδης, ὃν εἰκῇ ἐκεῖνος ἐπιβουλεύοντα αὐτῷ σύμβοουλον ἐποιεῖτο καὶ κύριον τῆς περὶ τοῦ πολέμου γνώμης ἐτιμωρήσατο μὲν οὖν αὐτόν, 10 ἀλλ' ὅψε, ἥνικα πολλῶν αἴτιος κατέστη κακῶν Ῥωμαίοις καὶ αὐτὸς καὶ ἐκεῖνος, ὅστις τὴν ἀπὸ τοῦ Ζεύγματος ὄδὸν τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην μέχρι τοῦ ἄψασθαι τῆς Ἀτροπατηνῆς ὀκτακισχιλίων σταδίων ἐποίησε, πλεὸν ἡ διπλασίαν τῆς εὐθείας, διὰ δρῶν καὶ ἀνοδιῶν 15 καὶ κυκλοπορίας.

5 Ἡ δὲ μεγάλη Μηδία τὸ μὲν παλαιὸν τῆς Ἀσίας ἡγήσατο πάσης καταλύσασα τὴν τῶν Σύρων ἀρχήν· ὑστερον δὲ ὑπὸ Κύρου καὶ Περσῶν ἀφαιρεθεῖσα τὴν τοσαύτην ἔξουσίαν ἐπὶ Ἀστυάγον θιεφύλαττεν 20 ὅμως πολὺ τοῦ πατρόνου ἀξιώματος, καὶ ἦν τὰ Ἐκβάτανα* χειμάδιον τοῖς Πέρσαις· ὅμοιως δὲ καὶ τοῖς ἐκείνοις καταλύσασι Μακεδόσι τοῖς τὴν Συρίαν ἔχουσι, καὶ νῦν ἔτι τοῖς Παρθιναίων βασιλεῦσι τὴν αὐτὴν παρέχεται χρείαν τε καὶ ἀσφάλειαν. 25

6 Ορίζεται δὲ ἀπὸ μὲν τῆς ἕω τῇ τε Παρθιναίᾳ καὶ τοῖς Κοσσαίων ὄρεσι ληστρικῶν ἀνθρώπων, οἵτοξτας μυφίους καὶ τρισχιλίους παρέσχοντό ποτε Ἐλυμαίοις συμμαχοῦντες ἐπὶ Σουσίους καὶ Βαβυλωνίους. Νέαρχος δέ φησι τεττάρων ὄντων ληστρικῶν ἐθνῶν, ὃν Μάρο-30 δοι μὲν Πέρσαις προσεχεῖς ἦσαν, Οὔξιοι δὲ καὶ Ἐλυμαίοι τούτοις τε καὶ Σουσίοις, Κοσσαῖοι δὲ Μήδοις, πάν-

τας μὲν φόρους πράττεσθαι τοὺς βασιλέας, Κοσσαίους δὲ καὶ δῶρα λαμβάνειν, ἡνίκα ὁ βασιλεὺς θερίσας ἐν Ἐκβατάνοις εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καταβαίνοι· καταλῦσαι δ' αὐτῶν τὴν πολλὴν τόλμαν Ἀλέξανδρον ἐπιθέμενον χειμῶνος. τούτοις τε δὴ ἀφορίζεται πρὸς ἔω καὶ ἔτι τοῖς Παραιτακηνοῖς, οἱ συνάπτουσι Πέρσαις ὅρεινοὶ καὶ αὐτοὶ καὶ ληστρικοὶ· ἀπὸ δὲ τῶν ἀρκτῶν τοῖς ὑπεροικοῦσι τῆς Τρκανίας θαλάττης Καδουσίοις καὶ τοῖς ἄλλοις, οὓς ἄρτι διήλθομεν· πρὸς νότον δὲ τῇ Ἀπολλωνιάτιδι, ἦν Σιτακηνὴν ἐκάλουν οἱ παλαιοί, καὶ τῷ Ζάγρῳ, καθ' ὃ ἡ Μασσαβατικὴ κεῖται τῆς Μηδίας οὖσα, οἱ δὲ τῆς Ἐλυμαίας φασὶ· πρὸς δύσιν δὲ τοῖς Ατροπατίοις καὶ τῶν Αρμενίων τιστέν. εἰσὶ δὲ καὶ Ἐλληνίδες πόλεις πτίσματα τῶν Μακεδόνων ἐν τῇ Μηδίᾳ, ὡς Λαοδίκειά τε καὶ Ἀπάμεια καὶ ἡ πρὸς Ράγας [Ἡράκλεια] καὶ αὐτὴ Ράγα, τὸ τοῦ Νικάτορος πτίσμα, δὲ ἐμεῖνος μὲν Εύρωπὸν ἀνόμασε, Πάρθοι δὲ Αρσανίαν, νοτιωτέραν οὖσαν τῶν Κασπίων πυλῶν πεντακοσίοις που σταδίοις, ὡς φησιν Ἀπολλόδωρος Ἀρτε-0.525 μιτηνός.

‘Η πολλὴ μὲν οὖν ὑψηλὴ ἔστι καὶ ψυχρά· τοιαῦτα 7 δὲ καὶ τὰ ὑπεροικείμενα τῶν Ἐκβατάνων ὅρη καὶ τὰ περὶ τὰς Ράγας καὶ τὰς Κασπίους πύλας καὶ καθόλου τὰ προσάρκτια μέρη τὰ ἐντεῦθεν μέχρι πρὸς τὴν Ματιανὴν καὶ τὴν Αρμενίαν. ἡ δὲ ὑπὸ ταῖς Κασπίοις πύλαις ἐν ταπεινοῖς ἐδάφεσι καὶ κοίλοις οὖσα εὐδαίμων σφόδρα ἔστι καὶ πάμφορος πλὴν ἐλαίας· εἰ δὲ καὶ φύεται που, ἀλιπής τέ ἔστι καὶ ξηρά· ἵπποβοτος δὲ καὶ αὗτη ἔστι διαφερόντως καὶ ἡ Αρμενία· καλεῖται δέ τις καὶ 30 λειμῶν ἵπποβοτος, ὃν καὶ διεξίασιν οἱ ἐκ τῆς Περσίδος καὶ Βαβυλῶνος εἰς Κασπίους πύλας ὁδεύοντες, ἐν ᾧ πέντε μυριάδας ἵππων θηλεῖων νέμεσθαι φασιν ἐπὶ

τῶν Περσῶν, εἶναι δὲ τὰς ἀγέλας ταύτας βασιλικάς. τοὺς δὲ Νησαίους ἵππους, οἵς ἔχοῦντο οἱ βασιλεῖς ἀρίστοις οὖσι καὶ μεγίστοις, οἱ μὲν ἐνθένδε λέγουσι τὸ γένος, οἱ δὲ ἔξι Αρμενίας· ἰδιόμορφοι δέ εἰσιν, ὥσπερ καὶ οἱ Παρθικοὶ λεγόμενοι νῦν, παρὰ τοὺς Ἑλλαδικοὺς δὲ τοὺς ἄλλους τοὺς παρ' ἡμῖν. καὶ τὴν βοτάνην δὲ τὴν μάλιστα τρέφουσαν τοὺς ἵππους ἀπὸ τοῦ πλεονάξειν ἐνταῦθα ἴδιας μηδίκην καλοῦμεν. φέρει δὲ καὶ σίλφιον ἡ χώρα, ἀφ' οὗ δὲ Μηδικὸς καλούμενος ὅπος, πολὺ λειπόμενος τοῦ Κυρηναϊκοῦ· ἔστι δὲ ὅτε καὶ δια- 10 φέρων ἐκείνου, εἴτε παρὰ τὰς τῶν τόπων διαφορὰς εἴτε τοῦ φυτοῦ κατ' εἶδος ἔξαλλάτοντος, εἴτε καὶ παρὰ τοὺς ὄπιζοντας καὶ σκευάζοντας ὥστε συμμένειν πρὸς τὴν ἀπόθεσιν καὶ τὴν χρείαν.

8 Τοιαύτη μὲν τις ἡ χώρα· τὸ δὲ μέγεθος πάρισός 15 πώς ἔστιν εἰς πλάτος καὶ μῆκος· δοκεῖ δὲ μέριστον εἶναι μῆκος τῆς Μηδίας τὸ ἀπὸ τῆς τοῦ Ζάγρου ὑπερθέσεως, ἥπερ καλεῖται Μηδικὴ πύλη, εἰς Κασπίους πύλας διὰ τῆς Σιγριανῆς σταδίων τετρακισχιλίων ἐκατόν. τῷ δὲ μεγέθει καὶ τῇ δυνάμει τῆς χώρας ὁμοιογεῖ καὶ 20 ἡ περὶ τῶν φόρων ἴστορία· τῆς γὰρ Καππαδοκίας παρεχούσης τοῖς Πέρσαις κατ' ἐνιαυτὸν πρὸς τῷ ἀργυριῷ τέλει ἵππους χιλίους καὶ πεντακοσίους, ἡμιόνους δὲ δισχιλίους, προβάτων δὲ πέντε μυριάδας, διπλάσια σχεδόν τι τούτων ἐτέλουν οἱ Μῆδοι. 25

9 "Ἐθη δὲ τὰ πολλὰ μὲν τὰ αὐτὰ τούτοις τε καὶ τοῖς Αρμενίοις διὰ τὸ καὶ τὴν χώραν παραπλησίαν εἶναι. τοὺς μέντοι Μήδους ἀρχηγέτας εἶναι φασι καὶ τούτοις καὶ ἔτι πρότερον Πέρσαις τοῖς ἔχουσιν αὐτοὺς καὶ διαδεξαμένοις τὴν τῆς Ἀσίας ἔξουσίαν. ἡ γὰρ νῦν λεγο- 30 μένη Περσικὴ στολὴ καὶ ὁ τῆς τοικῆς καὶ ἵππικῆς ἔηλος καὶ ἡ περὶ τοὺς βασιλέας θεραπεία καὶ κόσμος καὶ

σεβασμὸς θεοπρεπῆς παρὰ τῶν ἀρχομένων εἰς τὸν Σ.526
 Πέρσας παρὰ Μήδων ἀφίκεται. καὶ ὅτι τοῦτ' ἀληθὲς ἐκ
 τῆς ἑσθῆτος μάλιστα δῆλον· τιάρα γάρ τις καὶ κίταρις
 καὶ πῖλος καὶ χειριδωτοὶ χιτῶνες καὶ ἀναξυρίδες ἐν μὲν
 5 τοῖς ψυχροῖς τόποις καὶ προσβόρροις ἐπιτήδειά ἐστι
 φορήματα, οἵοι εἰσιν οἱ Μηδικοί, ἐν δὲ τοῖς νοτίοις
 ἥπαιστα· οἱ δὲ Πέρσαι τὴν πλειστηνὸν οἰκησιν ἐπὶ τῇ Ἐρυ-
 θρᾷ θαλάττῃ κέκτηνται, μεσημβρινώτεροι καὶ Βαβυ-
 λωνίων ὄντες καὶ Σουσίων· μετὰ δὲ τὴν κατάλυσιν
 10 τὴν τῶν Μήδων προσεκτήσαντό τινα καὶ τῶν προσ-
 απτομένων Μήδια. ἀλλ' οὕτως ἐφάνη σεμνὰ καὶ τοῦ
 βασιλικοῦ προσκήματος οἰκεῖα τὰ ἔθη τοῖς νικήσασι τὰ
 τῶν νικηθέντων, ἃστ' ἀντὶ γυμνητῶν καὶ φιλῶν θη-
 λυστολεῖν ὑπέμειναν, καὶ κατηρεφεῖς εἶναι τοῖς σκε-
 15 πάσμασι.

Τινὲς δὲ Μήδειαν καταδεῖξαι τὴν ἑσθῆτα ταύτην 10
 φασὶ δυναστεύσασαν ἐν τοῖς τόποις, καθάπερ καὶ Ἱάσο-
 να, καὶ ἐπικρυπτομένην τὴν ὄψιν ὅτε ἀντὶ τοῦ βασιλέως
 ἔξιοι· τοῦ μὲν [οὖν] Ἱάσονος ὑπομνήματα εἶναι τὰ Ἱα-
 20 σόνια ἡρῷα τιμώμενα σφόδρα ὑπὸ τῶν βαρβάρων (ἔστι
 δὲ καὶ ὁρος μέγα ὑπὲρ τῶν Κασπίων πυλῶν ἐν ἀριστε-
 ρᾷ καλούμενον Ἱασόνιον), τῆς δὲ Μήδειας τὴν ἑσθῆτα
 καὶ τοῦνομα τῆς χώρας. λέγεται δὲ καὶ Μῆδος υἱὸς αὐ-
 τῆς διαδέξασθαι τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν χώραν ἐπώνυμον
 25 αὐτοῦ καταλιπεῖν. ὅμολογεῖ δὲ τούτοις καὶ τὰ κατὰ
 τὴν Ἀρμενίαν Ἱασόνια καὶ τὸ τῆς χώρας ὄνομα καὶ
 ἄλλα πλείω περὶ ᾧν ἔροῦμεν.

Καὶ τοῦτο δὲ Μηδικὸν τὸ βασιλέα αἰρεῖσθαι τὸν 11
 ἀνδρειότατον, ἀλλ' οὐ πᾶσιν ἄλλὰ τοῖς ὄφελοις· μᾶλ-
 20 λον δὲ τὸ τοῖς βασιλεῦσιν πολλὰς εἶναι γυναικας· τοῖς

δ' ὁρείοις τῶν Μήδων καὶ πᾶσιν ἔθος τοῦτο, ἐλάτην δὲ τῶν πέντε οὐκ ἔξεστιν· ὡς δ' αὕτως τὰς γυναικάς φασιν ἐν καλῷ τιθεσθαι ὅτι πλείστας* νέμειν ἄνδρας, τῶν πέντε δὲ ἐλάτην συμφορὰν ἥγεισθαι. τῆς δ' ἄλλης Μηδίας εὐδαιμονούσης τελέως λυπρά⁵ ἔστιν ἡ προσάρκτιος ὁρεινή· σιτοῦνται γοῦν ἀπὸ ἀκροδρόμου, ἐκ τε μῆλων ἔηρῶν κοπέντων ποιοῦνται μάζας, ἀπὸ δ' ἀμυγδάλων φωχθέντων ἄρτους, ἐκ δὲ διζῶν τινων οἶνον ἐκθλίβουσι, ορέασι δὲ χρῶνται θηρείοις, ἥμερα δὲ οὐ τρέφουσι θρέμματα. τοσαῦτα καὶ 10 περὶ Μήδων φαμέν· περὶ δὲ τῶν νομίμων κοινῆς τῆς συμπάσης Μηδίας, ἐπειδὴ ταῦτα τοῖς Περσικοῖς γεγένηται διὰ τὴν τῶν Περσῶν ἐπικράτειαν, ἐν τῷ περὶ ἑκείνων λόγῳ φήσομεν.

14 *Τῆς δ' Ἀρμενίας τὰ μὲν νότια προβέβληται τὸν 15
Ταῦρον, διείργοντα αὐτὴν ἀφ' ὅλης τῆς μεταξὺ Εὐ-
φράτου καὶ τοῦ Τίγριος, ἣν Μεσοποταμίαν καλοῦσι,
τὰ δὲ ἑωθινὰ τῇ Μηδίᾳ συνάπτει τῇ μεγάλῃ καὶ τῇ
Ἀτροπατηνῇ· προσάρκτια δέ ἔστι τὰ ὑπερκείμενα τῆς
Κασπίας θαλάσσης ὅφη τὰ τοῦ Παραχοάθρα καὶ Ἀλβα- 20
νοὶ καὶ Ἰβηρες καὶ ὁ Καύκασος ἐγκυκλούμενος τὰ ἔθνη
ταῦτα καὶ συνάπτων τοῖς Ἀρμενίοις, συνάπτων δὲ καὶ
τοῖς Μοσχικοῖς ὅρεσι καὶ Κολχικοῖς μέχρι τῶν καλού-
μένων Τιβαρανῶν· ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ταῦτά ἔστι τὰ
ἔθνη καὶ ὁ Παρνάδος καὶ ὁ Σκυδίσης μέχρι τῆς μικρᾶς 25
Ἀρμενίας καὶ τῆς τοῦ Εὐφράτου ποταμίας, ἣ διείργει
τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομμα-
γηνῆς.*

2 *Ο γὰρ Εὐφράτης ἀπὸ τῆς βορείου πλευρᾶς τοῦ
Ταῦρου τὰς ἀρχὰς ἔχων τὸ μὲν πρῶτον φεῦ πρὸς δύσιν 30
διὰ τῆς Ἀρμενίας, εἰτ' ἐπιστρέψει πρὸς νότον καὶ δια-
κόπτει τὸν Ταῦρον μεταξὺ τῶν Ἀρμενίων τε καὶ Καπ-*

παδόκων καὶ Κομμαγηνῶν, ἐκπεσὼν δ' ἔξω καὶ γε-
νόμενος κατὰ τὴν Συρίαν ἐπιστρέψει πρὸς χειμερι-
νὰς ἀνατολὰς μέχρι Βαβυλῶνος καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοπο-
ταμίαν πρὸς τὸν Τύρον· ἀμφότεροι δὲ τελευτῶσιν εἰς
5 τὸν Περσικὸν κόλπον. τὰ μὲν δὴ κύκλῳ τοιαῦτα, ὁρει-
νὰ σχεδόν τι πάντα καὶ τραχέα πλὴν τῶν πρὸς τὴν
Μηδίαν κεκλιμένων ὀλίγων. πάλιν δὲ τοῦ λεχθέντος
Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαμβάνοντος ἀπὸ τῆς περούσιας τῶν
Κομμαγηνῶν καὶ τῶν Μελιτηνῶν ἦν δὲ Εὐφράτης ποιεῖ,
10 Μάσιον μὲν ἐστι τὸ ὑπερφεύμενον ὄρος τῶν ἐν τῇ Με-
σοποταμίᾳ Μυρδόνων ἐκ νότου, ἐν οἷς ἡ Νίσιβίς ἐστιν·
ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν ἡ Σωφηνὴ κεῖται μεταξὺ
τοῦ τε Μασίου καὶ τοῦ Ἀντιταύρου. οὗτος δ' ἀπὸ τοῦ
Εὐφράτου καὶ τοῦ Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαβών τελευτᾷ
15 πρὸς τὰ ἔφα τῆς Ἀρμενίας ἀπολαμβάνων μέσην τὴν
Σωφηνήν, ἐκ θατέρου δὲ μέρους ἔχων τὴν Ἀκιλισηνήν
μεταξὺ Ιδρυμένην τοῦ Ταύρου τε καὶ τῆς τοῦ Εὐφρά-
του ποταμίας πολὺν ἥ κάμπτειν αὐτὴν ἐπὶ νότου. βα-
σιλειον δὲ τῆς Σωφηνῆς Καρκαθιόνερτα. τοῦ δὲ Μα-
20 σίου ὑπέρκειται πρὸς ἔω πολὺ κατὰ τὴν Γορδυηνήν ὁ
Νιφάτης, εἰδ' δὲ Ἀβος, ἀφ' οὗ καὶ δὲ Εὐφράτης φεῖ καὶ
ὅ Ἀράξης, δὲ μὲν πρὸς δύσιν δὲ πρὸς ἀνατολάς· εἰδ' δὲ
δὲ Νίραρος μέχρι τῆς Μηδίας παρατείνει.

‘Ο μὲν οὖν Εὐφράτης εἶρηται δὲν τρόπον φεῖ· δὲ 3
25 Ἀράξης πρὸς τὰς ἀνατολὰς ἐνεγθεὶς μέχρι τῆς Ἀτρο-
πατηνῆς κάμπτει πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτους καὶ πα-
ραρρεῖ τὰ Ἀζαρα πρῶτον, εἰτέ Ἀρτάξατα, πόλεις Ἀρ-
μενίων· ἐπειτα διὰ τοῦ Ἀραξηνοῦ πεδίου πρὸς τὸ Κά-
σπιον ἐκδίδωσι πέλαγος.

30 ‘Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ πολλὰ μὲν ὅρη πολλὰ δὲ ^{C.528} 4
δροπέδια, ἐν οἷς οὐδὲ ἅμπελος φύεται φαδίως, πολλοὶ
δ' αὐλῶνες οἱ μὲν μέσως οἱ δὲ καὶ σφόδρα εὐδαίμονες

καθάπερ τὸ Ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ ὁ Ἀράξης ποταμὸς φέων εἰς τὰ ἄκρα τῆς Ἀλβανίας καὶ τὴν Κασπίαν ἐκπίπτει θάλατταν, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Σακασηνὴ καὶ αὐτὴ τῇ Ἀλβανίᾳ πρόσχωρος καὶ τῷ Κύρῳ ποταμῷ, εἰδὴ ἡ Γωγαρηνή· πᾶσα γὰρ ἡ χώρα αὕτη καρποῖς τε ⁵ καὶ τοῖς ἡμέραις δένδρεσι καὶ τοῖς ἀειθαλέσι πληθύει, φέρει δὲ καὶ ἔλατταν. ἔστι δὲ καὶ ἡ *Φαυηνὴ τῇς Ἀρμενίας ἐπαρχία καὶ ἡ Κωμισηνὴ καὶ Ὁρχιστηνὴ πλείστην ἵππειαν παρέχουσα· ἡ δὲ Χορξηνὴ καὶ Καμβυσηνὴ προσβορρόταται εἰσὶ καὶ νιφόβολοι μάλιστα, συνά- ¹⁰ πτουσαὶ τοῖς Καυκασίοις ὅρεσι καὶ τῇ Ἰβηρίᾳ καὶ τῇ Κολχίδῃ· ὅπου φασὶ κατὰ τὰς ὑπερβολὰς τῶν ὁρῶν πολλάκις καὶ συνοδίας ὥλας * τῶν ὁρῶν ἐν τῇ χιόνι καταπίνεσθαι νιφετῶν γινομένων ἐπὶ πλέον· ἔχειν δὲ καὶ βακτηρίας πρὸς τοὺς τοιούτους κινδύνους, [άς] πα- ¹⁵ 20 ορέξαιροντας εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἀναπινοῆς τε χάριν καὶ τοῦ διαμηνύειν τοῖς ἐπιοῦσιν ὥστε βοηθείας τυγχάνειν, ἀνορύττεσθαι καὶ σώζεσθαι. ἐν δὲ τῇ χιόνι βώλους πήγνυσθαι φασι κούλας περιεχούσας χρηστὸν ὕδωρ ὃς ἐν χιτῶνι, καὶ ξῶα δὲ ἐν αὐτῇ γεννᾶσθαι· ²⁵ 25 καλεῖ δὲ σκάληκας Ἀπολλωνίδης, Θεοφάνης δὲ θρηπας· καὶ τούτοις ἀπολαμβάνεσθαι χρηστὸν ὕδωρ, περιχισθέντων δὲ τῶν χιτώνων πίνεσθαι· τὴν δὲ γένεσιν τῶν ξώων τοιαύτην εἰκάζουσιν οἴαν τὴν τῶν καυνώπων ἐκ τῆς ἐν τοῖς μετάλλοις φλογὸς καὶ τοῦ φεψάλου.

⁵ ‘Ιστοροῦσι δὲ τὴν Ἀρμενίαν μικρὰν πρότερον οὖσαν αὐξηθῆναι διὰ τῶν περὶ Ἀρταξίαν καὶ Ζαρίαδρον, οἱ πρότερον μὲν ἥσαν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατηγοί, βασιλεύσαντες δ’ ὕστερον μετὰ τὴν ἐκείνου ἤτταν ὁ μὲν τῆς Σωφηνῆς καὶ τῆς *Ἀκισηνῆς καὶ Ὁδο- ³⁰ μαντίδος καὶ ἄλλων τινῶν ὁ δὲ τῆς περὶ Ἀρτάξατα, συνηγένησαν ἐκ τῶν περικειμένων ἐθνῶν ἀποτεμόμενοι

μέρη, ἐκ Μήδων μὲν τὴν τε Κασπιανὴν καὶ Φαννίτιν καὶ Βασιροπέδαν, Ἰβήρων δὲ τὴν τε πάρωρειαν τοῦ Παρυάδρου καὶ τὴν Χορέην· καὶ Γωγαρηνήν, πέραν οὖσαν τοῦ Κύρου, Χαλύβων δὲ καὶ Μοσυνοίκων Κα-
5 οηνῖτιν καὶ Ξερξήνην, ἀ τῇ μικρῷ Αρμενίᾳ ἐστὶν ὅμορφα
ἡ καὶ μέρη αὐτῆς ἔστι, Καταόνων δὲ Ακιλισηνὴν καὶ
τὴν περὶ τὸν Ἀντίταυρον, Σύρων δὲ Ταρωνῖτιν, ὡστε
πάντας ὅμογλώττους εἰναι.

Πόλεις δ' εἰσὶν τῆς Ἀρμενίας Ἀρτάξατά τε (ἥν 6
10 καὶ Ἀρτάξιάσατα καλοῦσιν, Ἀνιβά κτίσαντος Ἀρτάξα
τῷ βασιλεῖ) καὶ Ἀρξατα, ἀμφότεραι ἐπὶ τῷ Ἀράξῃ, ἥ C.529
μὲν Ἀρξατα πρὸς τοὺς ὄροις τῆς Ἀτροπατίας, ἡ δὲ Ἀρ-
τάξατα πρὸς τῷ Ἀραξηνῷ πεδίῳ συνφωκισμένη καλῶς
καὶ βασιλειον οὖσα τῆς χώρας. καίται δὲ ἐπὶ γερρονησι-
15 ἀξοντος ἀγκῶνος τὸ τεῖχος [ἔχουσα] κύκλῳ προβεβλη-
μένου τὸν ποταμὸν πλὴν τοῦ ἴσθμοῦ, τὸν ἴσθμοὸν δὲ ἔχει
τάφρῳ καὶ χάρακι κεκλεισμένου. οὐ πολὺ δὲ ἀπωθεν
τῆς πόλεως ἔστι τὰ Τιγράνου καὶ Ἀρταζάσδου γαζοφυ-
λάκια, φρούρια ἐρυμνά, Βάθυρσά τε καὶ Ὄλανή· ἥν δὲ
20 καὶ ἄλλα ἐπὶ τῷ Εὐφράτῃ. Ἀρτάγειρα δὲ ἀπέστησε μὲν
“Ἄδων ὁ φρούραρχος, ἔξειλον δὲ οἱ Καισαρος στρατηγοὶ
πολιορκήσαντες πολὺν χρόνον, καὶ τὰ τείχη περιείλον.

Ποταμοὶ δὲ πλείους μὲν εἰσὶν ἐν τῇ χώρᾳ, γνωρι- 7
μάτατοι δὲ Φᾶσις μὲν καὶ Λύκος εἰς τὴν Ποντικὴν ἐν-
25 πίπτοντες θάλατταν (Ἐρατοσθένης δὲ ἀντὶ τοῦ Λύκου
τιθησι Θερμάδοντα οὐκ εὖ), εἰς δὲ τὴν Κασπίαν Κῦ-
ρος καὶ Ἀράξης, εἰς δὲ τὴν Ἐρυθρὰν ὅ τε Εὐφράτης
καὶ ὁ Τίγρης.

Εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι κατὰ τὴν Ἀρμενίαν μεγάλαι, 8
30 μία μὲν ἡ Μαντιανή, Κυανή ἐρμηνευθεῖσα, μεγίστη,
ὡς φασι, μετὰ τὴν Μαιῶτιν, ἀλμυροῦ ὕδατος, διήκονσα
μέχρι τῆς Ἀτροπατίας, ἔχουσα καὶ ἀλοπήγια· ἡ δὲ Ἀρ-

σηνή, ἦν καὶ Θωπύτιν καλοῦσιν· ἔστι δὲ νιτροῦτις, τὰς δ' ἐσθῆτας φῆττει καὶ διαξάνει· διὰ δὲ τοῦτο καὶ ἀποτόν ἔστι τὸ ὑδωρ. φέρεται δὲ δι' αὐτῆς ὁ Τίγρις ἀπό τῆς κατὰ τὸν Νιφάτην ὁρεινῆς ὁρμῆς, ἄμικτον φυλάττων τὸ δεῦμα διὰ τὴν δέξυτητα, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα, ὁ Μήδων τίγριν καλούντων τὸ τόξευμα· καὶ οὗτος μὲν ἔχει πολυειδεῖς ἰχθῦς, οἱ δὲ λιμναῖοι ἐνὸς εἰδους εἰσὶ· κατὰ δὲ τὸν μυχὸν τῆς λίμνης εἰς βάραθρον ἐμπεσὼν ὁ ποταμὸς καὶ πολὺν τόπον ἐνεχθεὶς ὑπὸ γῆς ἀνατέλλει κατὰ τὴν Χαλωνῆτιν· ἐκεῖθεν δ' ἥδη πρὸς τὴν 10 Ωπιν καὶ τὸ τῆς Σεμιράμιδος καλούμενον διατείχισμα ἐκεῖνός τε καταφέρεται τοὺς Γορδυαίους ἐν δεξιᾷ ἀφεῖς καὶ τὴν Μεσοποταμίαν ὅλην, καὶ ὁ Εὐφράτης τούναντίον ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν αὐτὴν χώραν· πλησιάσαντες δὲ ἀλλήλοις καὶ ποιήσαντες τὴν Μεσοποτα· 15 μίαν ὁ μὲν διὰ Σελευκείας φέρεται πρὸς τὸν Περσικὸν κόλπον, ὁ δὲ διὰ Βαβυλῶνος, καθάπερ εἰρηταί που ἐν τοῖς πρὸς Ἑρατοσθένην καὶ Ἰππαρχον λόγοις.

9 Μέταλλα δ' ἐν μὲν τῇ Συσπιρίτιδί ἔστι χρυσοῦ κατὰ τὰ Κάρβαλλα, ἐφ' ἂν Μένωνα ἐπεμψεν Ἀλέξανδρος 20 μετὰ στρατιωτῶν, ἀπήγχθη δ' ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων· καὶ ἄλλα δ' ἔστι μέταλλα, καὶ δὴ τῆς σάνδικος καλουμένης, ἦν δὴ καὶ Ἀρμένιον καλοῦσι χρῶμα, δρυοῖον κάλχη. οὕτω δ' ἔστιν ἵπποβότος σφόδρᾳ ἡ χώρα καὶ οὐχ ἥταντον τῆς Μηδίας, ὥστε οἱ Νησαῖοι ἵπποι καὶ ἐνταῦθα 25 γίνονται, οἰσπεροὶ οἱ Περσῶν βασιλεῖς ἔχοῶντο, καὶ δὲ σατράπης τῆς Ἀρμενίας τῷ Πέρσῃ κατ' ἔτος δισμυρόους πώλους τοῖς *Μιδρανίνοις ἐπεμπεν. Ἀρταβάσσοδης δὲ Ἀντωνίῳ χωρίς τῆς ἄλλης ἵππειας αὐτὴν τὴν κατάφρακτον ἔξακισχιλίαν ἵππον ἐκτάξας ἐπέδειξεν, 30 ἥνικα εἰς τὴν Μηδίαν ἐνέβαλε σὺν αὐτῷ. ταύτης δὲ τῆς ἵππειας οὐ Μῆδοι μόνοι καὶ Ἀρμένιοι ξηλωταὶ

γεγόνασιν, αλλὰ καὶ Ἀλβανοί· καὶ γὰρ ἐκεῖνοι καταφράκτοις χρῶνται.

Τοῦ δὲ πλούτου καὶ τῆς δυνάμεως τῆς χώρας ση- 10
μεῖον οὐ μικρὸν ὅτι Πομπηίου Τιγράνη τῷ πατρὶ τῷ
5 Ἀρταχάσδον τάλαντα ἐπιγράψαντος ἔξακισχίλια ἀρ-
γυρίου, διένειμεν αὐτίκα ταῖς δυνάμεσι τῶν Ρωμαίων,
στρατιώτη μὲν καὶ ἄνδρα πεντήκοντα δραχμὰς ἑκα-
τοντάρχῃ δὲ χιλίας ἵππαρχῳ δὲ καὶ χιλιάρχῳ τάλαντον.

Μέγεθος δὲ τῆς χώρας Θεοφάνης ἀποδίδωσιν εῦ- 11
10 φος μὲν σχοῖνων ἑκατὸν μῆκος δὲ διπλάσιον, τιθεὶς τὴν
σχοῖνον τετταράκοντα σταδίων· πρὸς ὑπερβολὴν δ'
εἰρηκεν· ἐγγυτέρῳ δ' ἐστὶ τῆς ἀληθείας μῆκος μὲν θέ-
σμαι τὸ ὑπ' ἐκείνου λεχθὲν [εὔρος], εὔρος δὲ τὸ ἥμισυ
ἡ μικρῷ πλεῖον. ἡ μὲν δὴ φύσις τῆς Ἀρμενίας καὶ δύ-
15 ναμις τοιαύτη.

· Ἀρχαιολογία δέ τις ἐστι περὶ τοῦ ἔθνους τοῦδε 12
τοιαύτη· Ἀρμενος ἐξ Ἀρμενίου πόλεως Θετταλικῆς,
ἡ κεῖται μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρισῆς ἐπὶ τῇ Βοιβῇ, κα-
θάπτερ εἰρηται, συνεστράτευσεν Ἰάσονι εἰς τὴν Ἀρμε-
20 νίαν· τούτου φασὶν ἐπώνυμον τὴν Ἀρμενίαν οἱ περὶ¹
Κυρσέλλον τὸν Φαρσάλιον καὶ Μήδιον τὸν Λαρισαῖον,
ἄνδρες συνεστράτευκότες Ἀλεξάνδρῳ· τῶν δὲ μετὰ
τοῦ Ἀρμένου τοὺς μὲν τὴν Ἀκιλισηνὴν οἰκήσαι τὴν
ὑπὸ τοῖς Σωφηνοῖς πρότερον οὖσαν, τοὺς δὲ ἐν τῇ Συ-
25 σπιρίτιδι ἔως τῆς Καλαχηνῆς καὶ τῆς Ἀδιαβηνῆς ἔξω
τῶν Ἀρμενιακῶν δρῶν. καὶ τὴν ἐσθῆτα δὲ τὴν Ἀρμε-
νιακὴν Θετταλικὴν φασιν, οἷον τοὺς βαθεῖς χιτῶνας
οὓς καλοῦσιν Θετταλικοὺς ἐν ταῖς τραγῳδίαις, καὶ ζων-
30 γιφῶνι περὶ τὰ στήθη καὶ ἐφαπτίδας, ὡς καὶ τῶν τρα-

7. post δραχμὰς: καὶ ἐκατὸν

αύτοῖς ἐπιθέτου κόσμου τοιούτου τινός, οἱ δὲ Θετταλοὶ μάλιστα βαθυστολοῦντες, ὡς εἰνός, διὰ τὸ πάντων εἰναι Ἑλλήνων βορειοτάτους καὶ ψυχοτάτους νέμεσθαι τόπους ἐπιτηδειοτάτην παρέσχοντο μίμησιν τῇ τῶν ὑποκριτῶν διασκευῇ ἐν τοῖς ἀναπλάσμασιν· καὶ τὸν 5

0.531 τῆς ἵππικῆς ξῆλόν φασιν εἶναι Θετταλικὸν καὶ τούτοις ὁμοιώς καὶ Μήδοις. τὴν δὲ Ἰάσονος στρατείαν καὶ τὰ Ἰασόνια μαρτυρεῖ, ὃν τινα οἱ δυνάσται κατεσκεύασαν παραπλησίως ὥσπερ τὸν ἐν Ἀβδήροις νεών τοῦ Ἰάσονος Παραμενίων.

10

13 Τὸν δὲ Ἀράξην αἱηθῆναι νομίζουσι κατὰ τὴν ὁμοιότητα τὴν πρὸς τὸν Πηνειὸν ὑπὸ τῶν περὶ χὸν Ἀρμενὸν ὄμιωνύμως ἐκείνῳ· καλεῖσθαι γὰρ Ἀράξην κάκεινον διὰ τὸ ἀπαράξαι τὴν Ὀσσαν ἀπὸ τοῦ Ὁλύμπου δῆξαντα τὰ Τέμπη· καὶ τὸν ἐν Ἀρμενίᾳ δὲ ἀπὸ 15 τῶν ὁρῶν καταβάντα πλατύνεσθαι φασι τὸ παλαιόν, καὶ πελαγίζειν ἐν τοῖς ὑποκειμένοις πεδίοις οὐκ ἔχοντα διεξόδον, Ἰάσονα δὲ μιμησάμενον τὰ Τέμπη ποιῆσαι τὴν διασφάγα, δι' ἣς καταράττει υψὺ τὸ ὕδωρ εἰς τὴν Κασπίαν θάλασσαν· ἐκ δὲ τούτου γυμνωθῆναι τὸ 20 Ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ τυγχάνει δέων ἐπὶ τὸν καταράκτην ὁ ποταμός. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος περὶ τοῦ Ἀράξου ποταμοῦ λεγόμενος ἔχει τι πιθανόν, ὁ δὲ Ἡροδότειος οὐ πάνυ· φησὶ γὰρ ἐν Ματιηνῶν αὐτὸν δέοντα εἰς τετταράκοντα ποταμοὺς σχίζεσθαι, μερίζειν δὲ 25 Σκύθας καὶ Βακτριανούς· καὶ Καλλισθένης δὲ ἡκολούθησεν αὐτῷ.

14 Λέγονται δὲ καὶ τῶν Αἰγαίων τινὲς οἱ μὲν τὴν Οὔπιαν οἰκηται οἱ δ' ὑπερθε τῶν Ἀρμενίων ὑπὲρ τὸν Ἀβον καὶ τὸν Νίβαρον (μέρη δ' ἔστι τον Ταύρουν 30 ταῦτα), ὃν δ' Ἀβος ἐγγύς ἔστι τῆς ὁδοῦ τῆς εἰς Ἐκβάτανα φερούσης παρὰ τὸν τῆς Βάριδος νεών. φασὶ δὲ καὶ

Θρακῶν τινας, τοὺς προσαγορευομένους Σαραπάρας οἶον κεφαλοτόμους, οἰκῆσαι ὑπὲρ τῆς Ἀρμενίας πλησίον Γουρανίων καὶ Μήδων, θηριώδεις ἀνθρώπους καὶ ἀπειθεῖς ὁρεινοὺς περισκυθιστάς τε καὶ ἀποκεφαλιστάς· τοῦτο γὰρ δηλοῦσιν οἱ Σαραπάραι. εἴρηται δὲ καὶ τὰ περὶ τῆς Μηδείας ἐν τοῖς Μηδικοῖς· ὥστ' ἐκ πάντων τούτων εἰκάζουσι καὶ τοὺς Μήδους καὶ Ἀρμενίους συγγενεῖς πως τοῖς Θετταλοῖς εἶναι καὶ τοῖς ἀπὸ Ιάσονος καὶ Μηδείας.

- 10 Ο μὲν δὴ παλαιὸς λόγος οὗτος, ὁ δὲ τούτου νεώτερος καὶ κατὰ Πέρσας εἰς τὸ ἔφεξης μέχρι εἰς ἡμᾶς ὡς ἐν κεφαλαίῳ πρόποι ἄν μέχρι τοσούτου λεχθεῖς, ὅτι κατέτηχον τὴν Ἀρμενίαν Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, μετὰ ταῦτα οἱ τὴν Συρίαν ἔχοντες καὶ τὴν Μηδίαν· τελευταῖς δὲ ὑπῆρξεν Ὁρόντης ἀπόγονος Ὄδαρον τῶν μεγάλου στρατηγῶν τοῦ πρὸς Ρωμαίους πολεμήσαντος διηρρέθη δίχα, Ἀρταξίου τε καὶ Ζαριάδριος· καὶ ἦρχον οὗτοι τοῦ βασιλέως ἐπιτρέψαντος· ἡττηθέντος δὲ ἐκείνου προσθέμενοι Ρωμαίοις καθ' αὐτοὺς ἐτάττοντο βασιλεῖς προσαγορευθέντες. τοῦ μὲν οὖν Ἀρταξίου^{0.532} Τιγράνης ἦν ἀπόγονος καὶ εἶχε τὴν Ἰδίως λεγομένην Ἀρμενίαν (αὕτη δὲ ἦν προσεχῆς τῇ τε Μηδίᾳ καὶ Ἀλβανοῖς καὶ Ἰβηρῷ μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς ἐπὶ τῷ Εὔξείνῳ Καππαδοκίας), τοῦ δὲ Ζαριάδριος ὁ Σωφρηνὸς Ἀρτάνης ἔχων τὰ νότια μέρη καὶ τούτων τὰ πρὸς δύσιν μᾶλλον. κατελύθη δὲ οὗτος ὑπὸ τοῦ Τιγράνου, καὶ πάντων κατέστη κύριος ἐκεῖνος. τύχαις δὲ ἔχοντο ποικίλαις· κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ ὡμήρευσε παρὰ Πάρθοις, ἐπειτα δι' ἐκείνων ἐτυχεὶς καθόδου, λαβόντων μισθὸν ἐβδομήκοντα αὐλῶνας τῆς Ἀρμενίας· αὐξηθεὶς δὲ καὶ ταῦτα ἀπέλαβε τὰ χωρία καὶ τὴν ἐκεί-

νων ἐπόρθησε τὴν τε περὶ Νίνον καὶ τὴν περὶ Ἀρβηλα-
ὑπηκόους δ' ἔσχε καὶ τὸν Ἀτροπατηνὸν καὶ τὸν Γορ-
δυαῖον, μεθ' ὧν καὶ τὴν λοιπὴν Μεσοποταμίαν, ἔτι
δὲ τὴν Συρίαν αὐτὴν καὶ Φοινίκην διαβὰς τὸν Εὐ-
φράτην ἀνὰ υράτος εἶλεν. ἐπὶ τούτον δ' ἔξαρθσις 5
καὶ πόλιν ἔκτισε πλησίον τῆς *Ιβηρίας μεταξὺ ταύτης
τε καὶ τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην Ζεύγματος, ἣν ὀνό-
μασε Τιγρανόνερτα, ἐκ δώδεκα ἑρημοθεισῶν ὑπ' αὐ-
τοῦ πόλεων Ἑλληνίδων ἀνθρώπους συναγαγών. ἔφθη
δ' ἐπελθὼν Λευκόλλος ὁ τῷ Μιθριδάτῃ πολεμήσας 10
καὶ τοὺς μὲν οἰκήτορας εἰς τὴν οἰκείαν ἐκάστου ἀπέ-
λυσε, τὸ δὲ κτίσμα ἡμιτελὲς ἔτι ὃν κατέσπασε προσ-
βαλὼν καὶ μικρὰν κώμην κατέλιπεν, ἔξηλασε δὲ καὶ
τῆς Συρίας αὐτὸν καὶ τῆς Φοινίκης. διαδεξάμενος δ'
Ἀρταχάστης ἐκεῖνον τέως μὲν ηὔτυχει φίλος ὥν Ῥω- 15
μαίοις, Ἀντώνιον δὲ προδιδοὺς Παρθιαίοις ἐν τῷ πρὸς
αὐτοὺς πολέμῳ δίκαιος ἔτισεν· ἀναχθεὶς γὰρ εἰς Ἀλε-
ξάνδρειαν ὑπ' αὐτοῦ, δέσμιος πομπευθεὶς διὰ τῆς πό-
λεως τέως μὲν ἐφρουρεῖτο, ἐπειτ' ἀνηρέθη συνάπτον-
τος τοῦ Ἀκτιακοῦ πολέμου. μετ' ἐκεῖνον δὲ πλείους 20
ἔβασιενσαν ὑπὸ Καίσαρι καὶ Ῥωμαίοις ὅντες· καὶ
νῦν ἔτι συνέχεται τὸν αὐτὸν τρόπον.

16 Ἄπαντα μὲν οὖν τὰ τῶν Περσῶν ἱερὰ καὶ Μῆδοι
καὶ Ἀρμένιοι τετιμήκασι, τὰ δὲ τῆς Ἀναιτίδος δια-
φερόντως Ἀρμένιοι, ἐν τε ἄλλοις ἰδρυσάμενοι τόποις 25
καὶ δὴ καὶ ἐν τῇ Ἀκιλισηνῇ. ἀνατιθέασι δ' ἐνταῦθα
δούλους καὶ δούλας· καὶ τοῦτο μὲν οὐ θαυμαστόν,
ἄλλα καὶ θυγατέρας οἱ ἐπιφανέστατοι τοῦ ἔθνους ἀνιε-
ροῦσι παρθένους, αἷς νόμος ἐστὶ καταπορνευθείσαις
πολὺν χρόνον παρὰ τῇ θεῷ μετὰ ταῦτα δίδοσθαι πρὸς 30
γάμουν, οὐκ ἀπαξιοῦντος τῇ τοιαύτῃ συνοικεῖν οὐδε-
0.533νός. τοιοῦτον δέ τι καὶ Ἡρόδοτος λέγει τὸ περὶ τὰς

Λυδάς· πορνεύειν γὰρ ἀπάσας. οὗτοι δὲ φιλοφρόνως
χρῶνται τοῖς ἐρασταῖς ὥστε καὶ ξενίαν παρέχουσι καὶ
δῶρα ἀντιδιδόσι πλείω πολλάκις ἢ λαμβάνουσιν, ἀτ'
ἔξι εὐπόρων οἰκισμῶν ἐπιχορηγούμεναι· δέχονται δὲ οὐ
τοὺς τυχόντας τῶν ξένων, ἀλλὰ μάλιστα τοὺς ἀπὸ
Ισού ἀξιώματος.

- 10 καὶ ἡ Καππαδοκία δ' ἔστι πολυμερής τε 1
καὶ συχνὰς δεδεγμένη μεταβολάς. οἱ δ' οὖν διμόγλωτ-
τοι μάλιστά εἰσιν οἱ ἀφοριζόμενοι πρὸς νότον μὲν τῷ
Κιλικίῳ λεγομένῳ Ταύρῳ, πρὸς δὲ τῇ Αρμενίᾳ καὶ
τῇ Κολχίδῃ καὶ τοῖς μεταξὺ ἐτερογλώττοις ἔθνεσι, πρὸς
15 ἄριτον δὲ τῷ Εὐξείνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἀλυος,
πρὸς δύσιν δὲ τῷ τε τῶν Παφλαγόνων ἔθνει καὶ Γα-
λατῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐποικησάντων μέχρι Λυκαό-
νων καὶ Κιλκίων τῶν τὴν τραχεῖαν Κιλικίαν νεμο-
μένων.
- 20 Καὶ αὐτῶν δὲ τῶν διμογλώττων οἱ παλαιοὶ τοὺς 2
Κατάονας καθ' αὐτοὺς ἔταττον, ἀντιδιαιροῦντες τοῖς
Καππάδοξιν ως ἐτεροεθνέσι, καὶ ἐν τῇ διαριθμήσει
τῶν ἔθνων μετὰ τὴν Καππαδοκίαν ἐτίθεσαν τὴν Κα-
ταονίαν, εἶτα τὸν Εὐφράτην καὶ τὰ πέραν ἔθνη, ὥστε
25 καὶ τὴν Μελιτηνὴν ὑπὸ τῇ Καταονίᾳ τάττειν, ἣ με-
ταξὺ κεῖται ταύτης τε καὶ τοῦ Εὐφράτου συνάπτουσα
τῇ Κομμαγηνῇ, μέρος τε τῆς Καππαδοκίας ἔστι δέ-
κατον κατὰ τὴν εἰς δέκα στρατηγίας διαίρεσιν τῆς χώ-
ρας. οὗτοι γὰρ δὴ οἱ καθ' ἡμᾶς βασιλεῖς οἱ πρὸ Αρ-0.534
30 χελάον διατεταγμένην εἶχον τὴν ἡγεμονίαν τῆς Καπ-
παδοκίας· δέκατον δ' ἔστι μέρος καὶ ἡ Καταονία. καθ'
ἡμᾶς δὲ εἶχε στρατηγὸν ἐκατέρα ίδιον· οὗτε δ' ἐκ τῆς

διαλέκτου διαφορᾶς τυνος ἐν τούτοις πρὸς τοὺς ἄλλους Καππαδόκας ἐμφανισθεῖσης οὕτε ἐκ τῶν ἄλλων ἐθῶν, θαυμαστὸν πᾶς ἡφάνισται τελέως τὰ σημεῖα τῆς ἀλλοεθνίας. ἥσαν δ' οὖν διωρισμένοι, προσεκτήσατο δ' αὐτοὺς Ἀριαράθης ὁ πρῶτος προσαγορευθεὶς 5 Καππαδόκων βασιλεύς.

3 "Εστι δ' ἔσπερ χερονήσου μεγάλης ἴσθμος οὗτος, σφιγγόμενος θαλάτταις δυσὶ τῇ τε τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπον μέχρι τῆς τραχείας Κυλικίας καὶ τῇ τοῦ Εὔξενου μεταξὺ Σινώπης τε καὶ τῆς τῶν Τιβαρηνῶν παραλίας· ἐντὸς δὲ τοῦ ίσθμου λέγομεν χερούνησον τὴν προσεπέριον τοὺς Καππαδόκειν ἅπασαν, ἦν Ἡρόδοτος μὲν ἐντὸς Ἀλινος καλεῖ· αὐτῇ γὰρ ἔστιν ἡς ἡρξεν ἀπάσης Κροῖσος· λέγει δ' αὐτὸν ἐκεῖνος τύραννον ἐθνέων τῶν ἐντὸς Ἀλινος ποταμοῦ. οἱ δὲ νῦν τὴν ἐντὸς 15 τοῦ Ταύρου καλοῦσιν Ἀσίαν, δύωνύμως τῇ ὅλῃ ἡπειρῷ ταύτην Ἀσίαν προσαγορεύοντες. περιέχεται δ' ἐν αὐτῇ πρῶτα μὲν ἐθνη τὰ ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς Παφλαγόνες τε καὶ Φρύγες καὶ Αιγαίους, ἐπειτα Βιθυνοὶ καὶ Μυσοὶ καὶ ἡ Ἐπίκητης, ἔτι δὲ Τρωᾶς καὶ Ἑλλήσ- 20 ποντία, μετὰ δὲ τούτους ἐπὶ θαλάττῃ μὲν Ἑλλήνων οἵ τε Αἰολεῖς καὶ Ἰωνεῖς τῶν δ' ἄλλων Κᾶρες τε καὶ Λύκιοι, ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυδοί.

4 Περὶ μὲν οὖν τῶν ἄλλων ἐροῦμεν ὑστερον. τὴν δὲ Καππαδοκίαν εἰς δύο σατραπείας μερισθεῖσαν ὑπὸ 25 τῶν Περσῶν παραλαβόντες Μακεδόνες περιεῖδον τὰ μὲν ἐκόντες τὰ δ' ἀκοντες εἰς βασιλείας ἀντὶ σατραπεῖῶν περιστάσαν· ὡν τὴν μὲν ἰδίως Καππαδοκίαν ὀνόμασαν καὶ πρὸς τῷ Ταύρῳ καὶ νὴ Δία μεγάλην Καππαδοκίαν, τὴν δὲ Πόντον, οἱ δὲ τὴν πρὸς τῷ 30

Πόντῳ Καππαδοκίᾳν. τῆς δὲ μεγάλης Καππαδοκίας νῦν μὲν οὐκ ἴσμεν πω τὴν διάταξιν· τελευτήσαντος γὰρ τὸν βίον Ἀρχελάου τοῦ βασιλεύσαντος, ἔγνω Καὶ σάρ τε καὶ ἡ σύγκλητος ἐπαρχίαν εἶναι Ῥωμαίων αὐτὴν. ἐπ' ἐκείνου δὲ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ βασιλέων εἰς δέκα στρατηγίας διηρημένης τῆς χώρας, πέντε μὲν ἔξητάξοντο αἱ πρὸς τῷ Ταύρῳ, Μελιτηνὴ Καταονία Κιλικία Τυανῖτις Γαρσανρῖτις, πέντε δὲ λοιπαὶ Λασι-ανσηνὴ Σαργαραυσηνὴ Σαρασηνὴ Χαμανηνὴ Μορι-10 μηνή. προσεγένετο δὲ ὑστερον παρὰ Ῥωμαίων ἐκ τῆς Κιλικίας τοῖς πρὸ Ἀρχελάου καὶ ἐνδεκάτῃ στρατηγίᾳ, ἡ περὶ Καστάβαλά τε καὶ Κύβιστρα μέχρι τῆς Ἀντιπά-0.535 τρού τοῦ ληστοῦ Δέρβης, τῷ δὲ Ἀρχελάῳ καὶ ἡ τρα-χεῖα περὶ Ἐλαιούσσαν Κιλικία καὶ πᾶσα ἡ τὰ πειρατή-15 φια συστησαμένη.

"Ἔστι δὲ ἡ μὲν Μελιτηνὴ παραπλησία τῇ Κομμα-2 γηνῇ· πᾶσα γάρ ἔστι τοῖς ἡμέροις δένδροις κατάφυ-τος, μόνη τῆς ἄλλης Καππαδοκίας, ὥστε καὶ ἔλαιον φέρειν καὶ τὸν Μοναρέτην οἶνον τοῖς Ἑλληνικοῖς ἐνά-20 μιλλον· ἀντίκειται δὲ τῇ Σωφηνῇ, μέσον ἔχουσα τὸν Εὐφράτην ποταμὸν καὶ αὐτὴν [καὶ] ἡ Κομμαγηνὴ δμο-ρος οὖσα. Ἔστι δὲ φρούριον ἀξιόλογον τῶν Καππαδό-κιων ἐν τῇ περαίᾳ Τόμισα· τοῦτο δὲ ἐπράθη μὲν τῷ Σωφηνῷ ταλάντων ἕκατόν, ὑστερον δὲ ἐδωρήσατο 25 Λεύκολλος τῷ Καππαδοκι τυστρατεύσαντι ἀριστεῖον κατὰ τὸν πρὸς Μιδριδάτην πόλεμον.

"Ἡ δὲ Καταονία πλατὺ καὶ κοῖλόν ἔστι πεδίον πάμ-2 φορον πλὴν τῶν ἀειθαλῶν. περίκειται δὲ ὅρη ἄλλα τε καὶ Ἀμανὸς ἐκ τοῦ πρὸς νότον μέρους ἀπόσπασμα ὃν 30 τοῦ Κιλικίου Ταύρου, καὶ ὁ Ἀντίταυρος εἰς τὰναντία ἀπερροφωγώς. ὁ μὲν γὰρ Ἀμανὸς ἐπὶ τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Συριακὴν ἐκτείνεται θάλατταν πρὸς τὴν ἐσπέραν

ἀπὸ τῆς Καταονίας καὶ τὸν υότον· τῇ δὲ τοιαύτῃ διαστάσει περικλεῖει τὸν Ἰσσικὸν κόλπον ἄπαντα καὶ τὰ μεταξὺ τῶν Κιλίκων πεδία πρὸς τὸν Ταῦρον· ὁ δ' Ἀντίταυρος ἐπὶ τὰς ἄρχτους ἐγκέλιται καὶ μικρὸν ἐπιλαμβάνει τῶν ἀνατολῶν, εἰτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν τε-5 λευτῷ.

3 Ἐν δὲ τῷ Ἀντιταύρῳ τούτῳ βαθεῖς καὶ στενοῖς εἰσιν αὐλῶνες, ἐν οἷς ἔργανται τὰ Κόμάνα καὶ τὸ τῆς Ἐνυοῦς Ιερὸν ἦν ἐκεῖνοι Μᾶ ὄνομάζουσι· πόλις δ' ἐστὶν ἀξιόλογος, πλεῖστον μέντοι τὸ τῶν θεοφορήτων 10 πλῆθος καὶ τὸ τῶν Ιεροδούλων ἐν αὐτῇ. Κατάονες δέ εἰσιν οἱ ἐνοικοῦντες, ἄλλως μὲν ὑπὸ τῷ βασιλεῖ τεταγμένοι, τοῦ δὲ Ιερέως ὑπακούοντες τὸ πλέον· ὁ δὲ τοῦ θ' Ιεροῦ κύριος ἐστι καὶ τῶν Ιεροδούλων, οἱ κατὰ τὴν ἡμετέραν ἐπιδημίαν πλείους ἥσαν τῶν δξακισχιλίων, 15 ἄνδρες ὅμοι γυναιξὶ. πρόσκειται δὲ τῷ Ιερῷ καὶ χώρᾳ πολλή, καρποῦται δ' ὁ Ιερεὺς τὴν πρόσσοδον, καὶ ἐστιν οὗτος δεύτερος κατὰ τιμὴν [ἐν] τῇ Καππαδοκίᾳ μετὰ τὸν βασιλέα· ὡς δ' ἐπὶ τὸ πολὺ τοῦ αὐτοῦ γένους ἥσαν οἱ Ιερεῖς τοῖς βασιλεῦσι. τὰ δὲ Ιερὰ ταῦτα 20 δοκεῖ Ὁρέστης μετὰ τῆς ἀδελφῆς Ἰφιγενείας κομίσαι δεῦρο ἀπὸ τῆς Ταυρικῆς Σκυθίας, τὰ τῆς Ταυροπόλου Αρτέμιδος, ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν πένθιμον κόμην ἀποθέσθαι, ἀφ' ἧς καὶ τοῦνομα τῇ πόλει. διὰ μὲν οὖν

0.536 τῆς πόλεως ταύτης ὁ Σάρος φελποταύρος, καὶ διὰ τῶν 25 συναγκειῶν τοῦ Ταύρου διεκπεραιοῦται πρὸς τὰ τῶν

4 Κιλίκων πεδία καὶ τὸ ὑποκείμενον πέλαγος. διὰ δὲ τῆς Καταονίας ὁ Πύραμος, πλωτός, ἐκ μέσου τοῦ πεδίου τὰς πηγὰς ἔχων· ἔστι δὲ βόθρος ἀξιόλογος, δι' οὗ καθορᾶν ἔστι τὸ ὑδατορύπανθρακόμενον κρυπτῶς μέ-30 χρι πολλοῦ διαστήματος ὑπὸ γῆς, εἰτ' ἀνατέλλον εἰς τὴν ἐπιφάνειαν· τῷ δὲ καθιέντι ἀκόντιον ἄνωθεν εἰς

τὸν βόθρον ἡ βία τοῦ ὄδατος ἀντιπράττει τοσοῦτον
 ὥστε μόλις βαπτίζεσθαι· ἀπλέτῳ δὲ βάθει καὶ πλάτει
 πολὺς ἐνεχθεὶς ἐπειδὴν συνάψη τῷ Ταύρῳ, παράδο-
 ξον λαμβάνει τὴν συναγωγὴν· παράδοξος δὲ καὶ ἡ δια-
 5 κοπὴ τοῦ ὄρους ἐστὶ δὶς ἡς ἄγεται τὸ φεῦθρον· καθάπερ
 γὰρ ἐν ταῖς φῆγμα λαβούσαις πέτραις καὶ σχισθείσαις
 δίχα τὰς κατὰ τὴν ἑτέραν ἔξοχὰς διμολόγους εἰναι
 συμβαίνει ταῖς κατὰ τὴν ἑτέραν εἰσοχαῖς ὥστε καν συ-
 αρμοσθῆναι δύνασθαι, οὕτως εἶδομεν καὶ τὰς ὑπερ-
 10 κειμένας τοῦ ποταμοῦ πέτρας ἐκατέρωθεν σχεδόν τι
 μέχοι τῶν ἀνδρειῶν ἀνατεινούσας ἐν διαστάσει δυ-
 εῖν ἡ τριῶν πλέθρων ἀντικείμενα ἔχούσας τὰ κοῖλα
 ταῖς ἔξοχαῖς· τὸ δὲ ἔδαφος τὸ μεταξὺ πᾶν πέτρινον,
 βαθύ τι καὶ στενὸν τελέως, ἔχον διὰ μέσου φῆγμα ὥστε
 15 καὶ κύνα καὶ λαγὼ διάλλεσθαι. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ φεῦ-
 θρον τοῦ ποταμοῦ ἃχοι χελούς πλῆρες, ὅχετῷ πλατεῖ
 προσεοικός, διὰ δὲ τὴν σκολιότητα καὶ τὴν ἐκ τοσοῦ-
 τον συναγωγὴν καὶ τὸ τῆς φάραγγος βάθος εὐθὺς
 τοῖς πόρρωθεν προσιοῦσιν διάφορος βροντῇ προσπί-
 20 πτει παραπλήσιος· διεκβαίνων δὲ τὰ ὄρη τοσαύτην κα-
 τάγει χοῦν ἐπὶ θάλατταν, τὴν μὲν ἐκ τῆς Καταονίας
 τὴν δὲ ἐκ τῶν Κιλίνων πεδίων, ὥστε ἐπ' αὐτῷ καὶ
 χρησμὸς ἐκπεπτωκὼς φέρεται τοιοῦτος „ἔσσεται ἐσ-
 „σομένοις, ὅτε Πύραμος ἀργυροδίνης ἡιόνα προχέων
 25 „ἰερὴν ἐς Κύπρον ἵκηται.“ παραπλήσιον γάρ τι κάκει
 συμβαίνει καὶ ἐν Αἴγυπτῳ, τοῦ Νείλου προσεξηπει-
 ροῦντος ἀεὶ τὴν θάλατταν τῇ προσχώσει· καθὸ καὶ
 Ἡρόδοτος μὲν δῶρον τοῦ ποταμοῦ τὴν Αἴγυπτον εἰ-
 πεν, διὰ ποιητὴς δὲ τὴν Φάρον πελαγίαν ὑπάρξαι πρό-
 30 τερον οὐχ ὡς νυνὶ πρόσγειον οὖσαν τῇ Αἴγυπτῳ.

C.537

5 Πόλιν δ' οὗτε τὸ τῶν Καταόνων ἔχει πεδίον οὕθ'
 ἡ Μελιτηνή, φρούρια δ' ἐρυμνὰ ἐπὶ τῶν ὁφῶν τά τε
 Ἀξάμορα καὶ τὸ Δάσταρον, ὃ περιφρεῖται τῷ Καρ-
 μάλικ ποταμῷ. ἔχει δὲ καὶ λερὸν τὸ τοῦ Κατάονος
 Ἀπόλλωνος καθ' ὅλην τιμώμενον τὴν Καππαδοκίαν, 5
 ποιησαμένων ἀφιδρύματα ἀπ' αὐτοῦ. οὐδὲ αἱ ἄλλαι
 στρατηγίαι πόλεις ἔχουσι πλὴν δυεῖν· τῶν δὲ λοιπῶν
 στρατηγιῶν ἐν μὲν τῇ Σαργαρασηνῇ πολίχνιον ἔστιν
 Ἡοπα καὶ ποταμὸς Καρμάλας, ὃς καὶ αὐτὸς εἰς τὴν
 Κιλικίαν ἐκδίδωσιν· ἐν δὲ ταῖς ἄλλαις ὅ τε Ἀργος ἔρυ- 10
 μα ὑψηλὸν πρὸς τῷ Ταύρῳ, καὶ τὰ Νῶρα ὃ νῦν κα-
 λεῖται Νηροασσός, ἐν φέρεται Εὔμενης πολιορκούμενος ἀν-
 τέσχε πολὺν χρόνον· καθ' ἡμᾶς δὲ Σισίνουν ὑπῆρξε
 χρηματοφυλάκιον τοῦ ἐπιθεμένου τῇ Καππαδόκων
 ἀρχῆ. τούτου δ' ἦν καὶ τὰ Κάδηνα, βασίλειον καὶ πό- 15
 λεως κατασκευὴν ἔχον· ἔστι δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ὁφῶν τῶν
 Λυκαονικῶν τὰ Γαρσαύρα καμόπολις· λέγεται δ'
 ὑπάρξαι ποτὲ καὶ αὕτη μητρόπολις τῆς χώρας. ἐν δὲ
 τῇ Μοριμηνῇ τὸ λερὸν τοῦ ἐν θηνάσοις Διός, λεροδού-
 λων κατοικίαν ἔχον τρισχιλίων σχεδόν τι καὶ χώραν 20
 λερὰν εἴκαρον, παρέχουσαν πρόσοδον ἐνιαύσιον τα-
 λάντων πεντεκαίδεκα τῷ λερεῖ· καὶ οὗτος δ' ἔστι διὰ
 βίου, καθάπερ καὶ ὁ ἐν Κομάνοις, καὶ δευτερεύει κα-
 6 τὰ τιμὴν μετ' ἐκεῖνον. τρίτη δ' ἔστιν λερωσύνη Διός
 Ἀσβαμαίου λειπομένη ταύτης, ἀξιόλογος δ' ὅμως. ἐν- 25
 ταῦθα δ' ἔστι λάκκος ἀλμυροῦ ὕδατος, ἀξιολόγου λι-
 μνῆς ἔχων περίμετρον, ὁφρύσι κλειδμενος ὑψηλαῖς τε
 καὶ ὁρθίαις ὥστ' ἔχειν κατάβασιν κλιμακώδη· τὸ δ'
 ὕδωρ οὗτος αὐξεσθαί φασιν οὗτος ἀπόρροψιν ἔχειν οὐ-
 δαμοῦ φανεράν.

30

7 Δύο δὲ μόναι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσιν, ἡ μὲν
 Τυανῖτις τὰ Τύανα ύποπεπτωκυῖαν τῷ Ταύρῳ τῷ κα-

τὰ τὰς Κιλικίας πύλας, καθ' ἃς εὐπετέσταται καὶ κοινόταται πᾶσιν εἰσιν αἱ εἰς τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Συρίαν ὑπερβολαῖ· καλεῖται δὲ Εὔσέβεια ἡ πρὸς τῷ Ταύρῳ..... ἀγαθὴ δὲ καὶ πεδιὰς ἡ πλειστη. τὰ δὲ 5 Τύανα ἐπίκειται χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένῳ καλῶς. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν ταύτης ἔστι τά τε Καστάβαλα καὶ τὰ Κύβιστρα, ἔτι μᾶλλον τῷ ὅρει πλησιάζοντα πολίσματα· ὃν ἐν τοῖς Κασταβάλοις ἔστι τὸ τῆς Περασίας Ἀρτέμιδος ἱερόν, ὃπου φασὶ τὰς Ἱερείας γυναικοῖς τοῖς ποσὶ δι' ἀνθρακιᾶς βαθίζειν ἀπαθεῖς· κάνταῦθα δέ τινες τὴν αὐτὴν θρυλοῦσιν λιτοράιαν τὴν περὶ τοῦ Ὁρέστου καὶ τῆς Ταυροπόλου, Περασίαν κεκλησθαι φάσκοντες διὰ τὸ πέραθεν κομισθῆναι. ἐν μὲν δὴ τῇ Τυανίτιδι στρατηγίᾳ τῶν λεχθεισῶν δέκα 10 ἔστι πόλισμα τὰ Τύανα (τὰς δ' ἐπικτήτους οὐ συναριθμῶ ταύταις, τὰ Καστάβαλα καὶ τὰ Κύβιστρα καὶ τὰ ἐν τῇ τραχείᾳ Κιλικίᾳ, ἐν ἥ τὴν Ἐλαιοῦσσαν νησίον εὑναρπον συνέκτισεν Ἀρχέλαος ἀξιολόγως, καὶ τὸ πλέον ἐνταῦθα διέτριβεν), ἐν δὲ τῇ Κιλικίᾳ καλούμενη τὰ Μάξακα ἡ μητρόπολις τοῦ ἔθνους· καλεῖται⁵³⁸ δ' Εὔσέβεια καὶ αὕτη ἐπικλησιν ἡ πρὸς τῷ Ἀργαίῳ· κεῖται γὰρ ὑπὸ τῷ Ἀργαίῳ ὅρει πάντων ὑψηλοτάτῳ καὶ ἀνέκλειπτον χίονι τὴν ἀκρώρειαν ἔχοντι, ἀφ' ἧς φασιν οἱ ἀναβαίνοντες (οὗτοι δ' εἰσὶν ὀλίγοι) κατοπτεύεσθαι ταῖς αἰθρίαις ἄμφω τὰ πελάγη τό τε Ποντικὸν καὶ τὸ Ἰσσικόν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἀφυῆ πρὸς συνοικισμὸν ἔχει πόλεως· ἀνυδρός τε γάρ ἔστι καὶ ἀνώχυρος διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν ἡγεμόνων καὶ ἀτείχιστος, τάχα δὲ καὶ ἐπίτηδες, ἵνα μὴ ὡς ἐρύματι πεποιθότες 20 τῷ τείχει σφόδρα ληστεύοιεν πεδίον οἰκοῦντες λόφους ὑπερδεξίους ἔχον* καὶ ἐμβελεῖς. καὶ τὰ κύκλῳ δὲ χωρία ἔχει τελέως ἄφορα καὶ ἀγεώργητα καὶ πε-

δινά, ἀλλ' ἔστιν ἀμμώδη καὶ ὑπόπετρα. μικρὸν δ' ἔτι προτοῦσι καὶ πυρίληπτα πεδία καὶ μεστὰ βόθρων πυρὸς ἐπὶ σταδίους πολλοὺς ὥστε πόρρωθεν ἡ ιομιδὴ τῶν ἐπιτηδείων, καὶ τὸ δοκοῦν δὲ πλεονέκτημα παρακείμενον ἔχει κίνδυνον· ἀξύλου γὰρ ὑπαρχούσης σχε- 5 δόν τι τῆς συμπάσης Καππαδοκίας ὁ Ἀργαῖος ἔχει περικείμενον δρυμὸν ὥστε ἐγγύθεν ὁ ξυλισμὸς πάρεστιν, ἀλλ' οἱ ὑποκείμενοι τῷ δρυμῷ τόποι καὶ αὐτὸι πολλαχοῦ πυρὰ ἔχουσιν, ἂμα δὲ καὶ ὕφυδροι εἰσὶ ψυχῷθι ὄντες, οὕτε τοῦ πυρὸς οὕτε τοῦ ὄντος εἰς τὴν 10 ἐπιφάνειαν ἐκκύπτοντος, ὥστε καὶ ποάζειν τὴν πλεύστην· ἔστι δ' ὅπου καὶ ἐλῶδες ἔστι τὸ ἔδαφος καὶ νύκτωρ ἐξάπτονται φλόγες ἀπ' αὐτοῦ. οἱ μὲν οὖν ἐμπειροὶ φυλαττόμενοι τὸν ξυλισμὸν ποιοῦνται, τοῖς δὲ πολλοῖς κίνδυνος ἔστι, καὶ μάλιστα τοῖς κτήνεσιν ἐμ- 15 πλητουσιν εἰς ἀδήλους βόθρους πυρός.

8 "Εστι δὲ καὶ ποταμὸς ἐν τῷ πεδίῳ τῷ πρὸ τῆς πόλεως Μέλας καλούμενος, ὃσον τετταράκοντα σταδίους διέχων τῆς πόλεως, ἐν ταπεινοτέρῳ τῆς πόλεως χωρίῳ τὰς πηγὰς ἔχων. ταύτῃ μὲν οὖν ἄχρηστος αὐτοῖς 20 ἔστιν οὐχ ὑπερδεξιον ἔχων τὸ δεῦμα, εἰς ἓλη δὲ καὶ λίμνας διαχεόμενος κακοῖ τὸν ἀέρα τοῦ θέρους τὸν περὶ τὴν πόλιν, καὶ τὸ λατομεῖον δὲ ποιεῖ δύσχοηστον κατέπερ εὔχρηστον ὄν· πλαταμῶνες γὰρ εἰσίν, ἀφ' ὧν τὴν λιθείαν ἔχειν ἄφθονον συμβαίνει τοῖς Μαξακηνοῖς 25 πρὸς τὰς οἰκοδομίας, καλυπτόμεναι δ' ὑπὸ τῶν ὄντων αἱ πλάκες ἀντιπράττουσι. καὶ ταῦτα δ' ἔστι τὰ ἔλη πανταχοῦ πυρίληπτα. Ἀριαράθης δ' ὁ βασιλεὺς τοῦ Μέλανος κατά τινα στενὰ ἔχοντος τὴν εἰς τὸν "Άλυν διέξοδον ἐμφράξας ταῦτα λίμνην πελαγίαν ἀπέ- 30 δειξε τὸ πλησίον πεδίον, ἐνταῦθα δὲ νησῖδάς τινας ὡς τὰς Κυκλάδας ἀπολαβόμενος διατριβὰς ἐν αὐταῖς

ἐποιεῖτο μειριακιώδεις· ἐκραγὲν δ' ἀθρόως τὸ ἔμφραγ-0.539
μα ἐξέκλυσε πάλιν τὸ ὕδωρ, πληρωθεὶς δ' ὁ Ἀλυς
τῆς τε τῶν Καππαδόκων πολλὴν παρέσυρε καὶ κατοι-
κίας καὶ φυτείας ἡφάνισε πολλὰς τῆς τε τῶν Γαλα-
τῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἔχόντων οὐκ ὀλίγην ἐλυμήνατο.
ἀντὶ δὲ τῆς βλάβης ἐπράξαντο ξημίαν αὐτὸν τάλαντα
τριακόσια Ῥωμαίοις ἐπιτρέψαντες τὴν κρίσιν. τὸ δ'
αὐτὸν συνέβη καὶ περὶ Ἡρπα· καὶ γὰρ ἐκεῖ τὸ τοῦ Καρ-
μάλα φεῦμα ἐνέφραξεν, εἰτ' ἐκραγέντος τοῦ στομίου
10 καὶ τῶν Κιλικῶν τινὰ χωρία τὰ περὶ Μαλλὸν διαφθεί-
ραντος τοῦ ὕδατος, δίκας ἔτισεν τοῖς ἀδικηθεῖσιν.

Ἄφυδες δ' οὖν κατὰ πολλὰ τὸ τῶν Μαξακηνῶν χω- 9
ρῶν δὲν πρὸς κατοικίαν μάλιστα οἱ βασιλεῖς ἑλέσθαι
δοκοῦσιν, ὅτι τῆς χώρας ἀπάσης τόπος ἦν μεσαίτατος
15 οὗτος τῶν ξύλα ἔχόντων ἄμα καὶ λίθον πρὸς τὰς οἰκο-
δομίας καὶ χόρτου, οὗ πλεῖστον ἔδεοντο κτηνοτρο-
φοῦντες· τρόπον γάρ τινα στρατόπεδον ἦν αὐτοῖς ἡ
πόλις. τὴν δὲ ἄλλην ἀσφάλειαν τὴν αὐτᾶν τε καὶ σω-
μάτων καὶ τῶν χρημάτων εἶχον ἐν τοῖς φρουρίοις, ἥ
20 πολλὰ ὑπάρχει τὰ μὲν βασιλικὰ τὰ δὲ τῶν φίλων. ἀφέ-
στηνε δὲ τὰ Μάξακα τοῦ μὲν Πόντου περὶ ὄκτακοσίους
σταδίους πρὸς νότον, τοῦ δὲ Εὐφράτου μικρὸν ἐλάτ-
τους ἢ διπλασίους, τῶν Κιλικίων δὲ πυλῶν ὅδὸν ἡμε-
ρῶν ἔξι καὶ τοῦ Κύρου στρατοπέδου διὰ Τυάνων· κατὰ
25 μέσην δὲ τὴν ὅδὸν κεῖται τὰ Τύανα, διέχει δὲ Κυβίσ-
τρων τριακοσίους σταδίους. χρῶνται δὲ οἱ Μαξακη-
νοὶ τοῖς Χαράνδα νόμοις, αἰρούμενοι καὶ νομφεόν,
ὅς ἐστιν αὐτοῖς ἔξηγητής τῶν νόμων, καθάπερ οἱ πα-
ρὰ Ῥωμαίοις νομικοί. διέθηκε δὲ φαύλως αὐτοὺς Τι-
30 γράνης ὁ Ἀρμένιος, ἣνίκα τὴν Καππαδοκίαν κατέδρα-
μεν· ἀπαντας γὰρ ἀναστάτους ἐποίησεν εἰς τὴν Μεσο-
ποταμίαν, καὶ τὰ Τιγρανόνερτα ἐκ τούτων συνφύκε

τὸ πλέον· ὕστερον δ' ἐπαυγάλθον οἱ δυνάμενοι μετὰ τὴν τῶν Τιγρανοκέρτων ἄλωσιν.

- 10 Μέγεθος δὲ τῆς χώρας κατὰ πλάτος μὲν τὸ ἀπὸ τοῦ Πόντου πρὸς τὸν Ταύρον ὅσον χίλιοι καὶ ὀκτακόσιοι στάδιοι, μῆκος δὲ ἀπὸ τῆς Αυκαονίας καὶ Φρυγίας μέχρι Εὐφράτου πρὸς τὴν ἔω καὶ τὴν Ἀρμενίαν περὶ τρισχιλίους. ἀγαθὴ δὲ καρποῖς, μάλιστα δὲ σύτῳ καὶ βοσκήμασι παντοδαποῖς· νοτιωτέρα δ' οὖσα τοῦ Πόντου ψυχροτέρα ἐστίν· ἡ δὲ Βαγαδανία καίπερ πεδιὰς οὖσα καὶ νοτιωτάτη πασῶν (ὑποπέπτωνε γὰρ 10 τῷ Ταύρῳ) μόλις τῶν καρπίμων τι φέρει δένδρων, ὁναγροβότος δ' ἐστὶ καὶ αὗτη καὶ ἡ πολλὴ τῆς ἄλλης, C.540 καὶ μάλιστα ἡ περὶ Γαρδαύρα καὶ Αυκαονίαν καὶ Μοριμηνήν. ἐν δὲ τῇ Καππαδοκίᾳ γίνεται καὶ ἡ λεγομένη Σινωπικὴ μίλτος ἀρίστη τῶν πασῶν· ἐνάμιλλος δ' 15 ἐστὶν αὐτῇ καὶ ἡ Ἰβηρικὴ· ὀνομάσθη δὲ Σινωπικὴ διύτι κατάγειν ἐκεῖσε εἰώθεσαν οἱ ἐμποροὶ πρὸν ἡ τὸ τῶν Ἐφεσίων ἐμπόριον μέχρι τῶν ἐνθάδε ἀνθρώπων διῆχθαι. λέγεται δὲ καὶ κρυστάλλου πλάκας καὶ ὀνυχίτου λίθου πλησίου τῆς τῶν Γαλατῶν ὑπὸ τῶν Ἀρ- 20 χελάου μεταλλευτῶν εὑρῆσθαι. ἦν δέ τις τόπος καὶ λίθου λευκοῦ τῷ ἐλέφαντι κατὰ τὴν χρόαν ἐμφεροῦς ὥσπερ ἀκόνιας τινὰς οὐ μεγάλας ἐκφέρων, ἐξ ᾧ τὰ λαβία τοῖς μαχαιρίοις κατεσκεύαζον· ἄλλος δὲ εἰς διόπτρας βώλους μεγάλας ἐκδιδούς, ὥστε καὶ ἔξω κομί- 25 ξεσθαι. ὄριον δ' ἐστὶ τοῦ Πόντου καὶ τῆς Καππαδοκίας ὁρεινή τις παράλληλος τῷ Ταύρῳ, τὴν ἀρχὴν ἔχουσα ἀπὸ τῶν ἐσπερίων ἄκρων τῆς Χαμμανηνῆς, ἐφ' ἣς ἔδρυνται φρούριον ἀπότομον Δασμένδα, μέχρι τῶν ἐωθινῶν τῆς Λασιανηνῆς. στρατηγίαι δὲ εἰσὶ τῆς Καπ- 30 παδοκίας ἡ τε Χαμμανηνὴ καὶ ἡ Λασιανηνῆ.

- 11 Συνέβη δέ, ἡνίκα πρῶτον Ῥωμαῖοι τὰ κατὰ τὴν

Ασίαν διφόκουν νικήσαντες Ἀντίοχον, καὶ φιλίας καὶ συμμαχίας ἐποιοῦντο πρός τε τὰ ἔθνη καὶ τοὺς βασιλέας, τοῖς μὲν ἄλλοις βασιλεῦσιν αὐτοῖς καθ' ἑαυτοὺς δοθῆναι τὴν τιμὴν ταύτην, τῷ δὲ Καππάδοκι καὶ 5 αὐτῷ δὲ τῷ ἔθνει κοινῇ. ἐκλιπόντος δὲ τοῦ βασιλικοῦ γένους οἱ μὲν Ῥωμαῖοι συνεχώρουν αὐτοῖς αὐτονομεῖσθαι κατὰ τὴν συγκειμένην φιλίαν τε καὶ συμμαχίαν πρὸς τὸ ἔθνος, οἱ δὲ πρεσβευσάμενοι τὴν μὲν ἐλευθερίαν παρηγοῦντο (οὐ γάρ δύνασθαι φέρειν αὐτὸν τὴν ἔφασαν), βασιλέα δ' ἡξίουν αὐτοῖς ἀποδειχθῆναι. οἱ δὲ θαυμάσαντες εἰ τινες οὕτως εἶν ἀπειρηκότες πρὸς τὴν ἐλευθερίαν ἐπέτρεψαν δ' οὖν αὐτοῖς ἐξ ἑαυτῶν ἐλέσθαι κατὰ χειροτονίαν ὃν ἀν βούλωνται καὶ εἶλοντο Ἀριοβαρζάνην· εἰς τριγονίαν δὲ προελθόντος 15 τοῦ γένους ἐξέλιπε, κατεστάθη δ' ὁ Ἀρχέλαος οὐδὲν προσήκων αὐτοῖς Ἀντωνίου καταστήσαντος. ταῦτα καὶ περὶ τῆς μεγάλης Καππαδοκίας· περὶ δὲ τῆς τραχείας Κιλικίας τῆς προστεθείσης αὐτῇ βέλτιόν ἐστιν ἐν τῷ περὶ τῆς ὅλης Κιλικίας λόγῳ διελθεῖν.

20 Τοῦ δὲ Πόντου καθίστατο μὲν Μιδριδάτης ὁ Εὐ- 3 πάτωρ βασιλεύς. εἶχε δὲ τὴν ἀφοριζομένην τῷ "Ἀλυν μέχρι Τιβαρανῶν καὶ Ἀρμενίων καὶ τῆς ἐντὸς" Ἀλιος τὰ μέχρι Ἀμάστρεως καὶ τινῶν τῆς Παφλαγονίας με-^{C.541} ων. προσεκτήσατο δ' οὗτος καὶ τὴν μέχρι Ἡρακλείας 25 παραλίαν ἐπὶ τὰ δυσμικὰ μέρη, τῆς Ἡρακλείδου τοῦ Πλατωνικοῦ πατρίδος, ἐπὶ δὲ τάναντίᾳ μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας, ἢ δὴ καὶ προσέθηκε τῷ Πόντῳ. καὶ δὴ καὶ Πομπήιος καταλύσας ἐκεῖνον ἐν τούτοις τοῖς ὄροις οὖσαν τὴν χώραν ταύτην παρέλα- 30 βε· τὰ μὲν πρὸς Ἀρμενίαν καὶ τὰ περὶ τὴν Κολχίδα τοῖς συναγωνισαμένοις δυνάσταις κατένειμε, τὰ δὲ λοιπὰ εἰς ἔνδεκα πολιτείας διείλε καὶ τῇ Βιθυνίᾳ προσ-

εἰθηκεν ὥστ' ἐξ ἀμφοῖν ἐπαρχίαν γενέσθαι μίαν· μεταξὺ δὲ τῶν Παφλαγόνων τῶν μεσογαίων τινὰς βασιλεύεσθαι παρέδωκε τοῖς ἀπὸ Πυλαιμένους, καθάπερ καὶ τοὺς Γαλάτας τοῖς ἀπὸ γένους τετράρχαις. ὑστερον δ' οἱ τῶν Ρωμαίων ἡγεμόνες ἄλλους καὶ ἄλλους 5 ἐποιήσαντο μερισμούς, βασιλέας τε καὶ δυνάστας καθιστάντες καὶ πόλεις τὰς μὲν ἐλευθεροῦντες τὰς δὲ ἐγχειρίζοντες τοῖς δυνάσταις τὰς δ' ὑπὸ τῷ δῆμῳ τῷ Ρωμαίων ἐῶντες. ἡμῖν δ' ἐπιοῦσι τὰ καθ' ἔκαστα ὡς νῦν ἔχει λεγέσθω, μικρὰ καὶ τῶν προτέρων ἐφαπτο- 10 μένοις ὅπου τοῦτο χρήσιμον. ἀρχόμεθα δὲ ἀπὸ Ἡρακλείας, ἥπερ δυσμικωτάτη ἐστὶ τούτων τῶν τόπων.

2 Εἰς δὴ τὸν Εὐξείνον πόντον εἰσπλέουσιν ἐκ τῆς Προποντίδος ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὰ προσεχῆ τῷ Βυζαντίῳ κατεῖται· Θρακῶν δ' ἐστί, καλεῖται δὲ τὰ ἀριστερὰ 15 τοῦ Πόντου· ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ προσεχῆ Χαλκηδόνι· Βιθυνῶν δ' ἐστὶ τὰ πρώτα, εἰτα Μαριανδυνῶν (τινὲς δὲ καὶ Καυκάσουν φασίν), εἰτα Παφλαγόνων μέχρι Ἀλυνος, εἰτα Καππαδόκων τῶν πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ τῶν ἔξης μέχρι Κολχίδος· ταῦτα δὲ πάντα καλεῖται τὰ δεξιὰ τοῦ 20 Εὐξείνον πόντου. ταύτης δὲ τῆς παραλίᾳς ἀπάσης ἐπῆρξεν Εὐπάτωρ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Κολχίδος μέχρι Ἡρακλείας, τὰ δ' ἐπέκεινα τὰ μέχρι τοῦ στόματος καὶ τῆς Χαλκηδόνος τῷ Βιθυνῶν βασιλεῖ συνέμενε. καταλυθέντων δὲ τῶν βασιλέων ἐφύλαξαν οἱ Ρωμαῖοι 25 τοὺς αὐτοὺς ὄρους, ὥστε τὴν Ἡράκλειαν προσκείσθαι τῷ Πόντῳ, τὰ δ' ἐπέκεινα Βιθυνοῖς προσκωρεῖν.

3 Οἱ μὲν οὖν Βιθυνοὶ διότι πρότερον Μυσοὶ ὄντες μετανομάσθησαν οὕτως ἀπὸ τῶν Θρακῶν τῶν ἐποιησάντων, Βιθυνῶν τε καὶ Θυνῶν, ὁμολογεῖται παρὰ 30 τῶν πλείστων, καὶ σημεῖα τίθενται τοῦ μὲν τῶν Βιθυνῶν ἔθνους τὸ μέχρι νῦν ἐν τῇ Θρακῇ λέγεσθαι τι-

νας Βιθυνούς, τοῦ δὲ τῶν Θυνῶν τὴν Θυνιάδα ἀκτὴν τὴν πρὸς Ἀπολλωνίαν καὶ Σαλμυδησσῆ. καὶ οἱ Βέβρυ-
κες δὲ οἱ τούτων προεποιήσαντες τὴν Μυσίαν Θρά-
κες, ὡς εἰκάζω ἐγώ. εἰρηται δ' ὅτι καὶ αὐτοὶ οἱ Μυσοὶ.⁵⁴

5 Θράκων ἄποικοι εἰσι τῶν νῦν λεγομένων Μοισῶν.

Ταῦτα μὲν οὕτω λέγεται. τοὺς δὲ Μαριανδυνοὺς 4
καὶ τοὺς Καύκωνας οὐχ δύοις ἄπαντες λέγουσι· τὴν
γὰρ δὴ Ἡράκλειαν ἐν τοῖς Μαριανδυνοῖς ἔδρυσθαι φασι
Μιλησίων κτίσμα· τίνες δὲ καὶ πόθεν οὐδενὶ εἰρηται·
10 οὐδὲ διάλεκτος οὐδὲ ἄλλη διαφορὰ ἐθνικὴ περὶ τοὺς ἀν-
θρώπους φαίνεται, παραπλήσιοι δὲ εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς·
ἴσικεν οὖν καὶ τοῦτο Θράκιον ὑπάρξει τὸ φῦλον. Θεό-
πομπος δὲ Μαριανδυνόν φησι μέρους τῆς Παφλαγονίας
ἀρξαντα ὑπὸ πολλῶν δυναστευομένης, ἐπελθόντα τὴν
15 τῶν Βεβρύκων κατασχεῖν, ἦν δὲ εἶξελιπεν ἐπώνυμον
ἔαυτοῦ καταλιπεῖν. εἰρηται δὲ καὶ τοῦτο ὅτι πρῶτοι
τὴν Ἡράκλειαν κτίσαντες Μιλήσιοι τοὺς Μαριανδυ-
νοὺς είλωτεύειν ἥναγκασαν τοὺς προκατέχοντας τὸν
τόπον, ὡστε καὶ πιπράσκεσθαι ὑπ' αὐτῶν, μὴ εἰς τὴν
20 ὑπερορίαν δέ (συμβῆναι γὰρ ἐπὶ τούτοις), καθάπερ
Κρητὶ μὲν ἐθήτευεν ἡ Μυφά καλουμένη σύνοδος, Θετ-
ταλοῖς δὲ οἱ Πενέσται.

Τοὺς δὲ Καύκωνας, οὓς ίστοροῦσι τὴν ἐφεξῆς οἱ- 5
κῆσαι παραλίαν τοῖς Μαριανδυνοῖς μέχρι τοῦ Παρθε-
25 νίου ποταμοῦ πόλιν ἔχοντας τὸ Τίειον, οἱ μὲν Σκύθας
φασὶν οἱ δὲ τῶν Μακεδόνων τινὰς οἱ δὲ τῶν Πελασγῶν·
εἰρηται δέ που καὶ περὶ τούτων πρότερον. Καλλισθέ-
νης δὲ καὶ ἔγραφε τὰ ἔπη ταῦτα εἰς τὸν διάκοσμον,
μετὰ τὸ „Κρωμνάν τ' Ἀλγιαλόν τε καὶ ὑψηλοὺς Ἐρυ-
30 „θίνους“ τιθεὶς „Καύκωνας δ' αὐτὸν ἦγε Πολυκλέος
„υἱὸς ἀμύμων, οἱ περὶ Παρθένιον ποταμὸν κλυτὰ δώ-
„ματ' ἐναιον.“ παρήκειν γὰρ ἀφ' Ἡράκλειας καὶ Μα-

φιανδυνῶν μέχρι Λευκοσύρων, οὓς ἡμεῖς Καππάδοκας προσαγορεύομεν, τό τε τῶν Καυκάσου γένος τὸ περὶ τὸ Τίειον μέχρι Παρθενίου καὶ τὸ τῶν Ἐνετῶν τὸ συνεχὲς μετὰ τὸν Παρθένιον τῶν ἔχόντων τὸ Κύτωρον· καὶ νῦν δ' ἔτι Καυκανίτας εἰναὶ τινας περὶ τὸν 5 Παρθένιον.

6 Ἡ μὲν οὖν Ἡράκλεια πόλις ἐστὶν εὐλίμενος καὶ ἄλλως ἀξιόλογος, ἣ γε καὶ ἀποικίας ἐστελλεῖν· ἐκείνης γὰρ ἡ τε Χερρόνησος ἀποικος καὶ ἡ Κάλλατις· ἣν τε αὐτόνομος, εἰτ' ἐτυραννήθη χρόνους τινάς, εἰτ' ἡλευθέρης 10 φασεν ἑαυτὴν πάλιν· ὕστερον δ' ἐβασιλεύθη γενομένη ὑπὸ τοὺς Ρωμαίους· ἐδέξατο δ' ἀποικίαν Ρωμαίων ἐπὶ μέρει τῆς πόλεως καὶ τῆς χώρας. λαβὼν δὲ παρ' Αὐτοῖς τῶν μέρος τοῦτο τῆς πόλεως Ἀδιατόριξ δὲ Λομνεᾶς 15 κατεῖχεν τετράρχου Γαλατῶν οὗτος, ὃ κατεῖχεν οἱ Ἡράκλειῶται, μικρὸν πρὸ τῶν Ἀντιακῶν ἐπέθετο οὐκτωρὸς τοῖς Ρωμαίοις καὶ ἀπέσφαξεν αὐτούς, ἐπιτρέψαντος, ὡς ἔφασκεν ἐκεῖνος, Ἀντωνίου· θριαμβευθεὶς δὲ μετὰ τὴν ἐν Ἀκτίῳ οὐκητινήν ἐσφάγη μεθ' οὗτοῦ· ἡ δὲ πόλις ἐστὶ τῆς Ποντικῆς ἐπαρχίας τῆς συντεταγμένης τῇ 20 Βιθυνίᾳ.

7 Μεταξὺ δὲ Χαλκηδόνος καὶ Ἡράκλείας δέουσι ποταμοὶ πλείους, ὅν εἰσιν δὲ τε Ψίλλις καὶ δὲ Κάλπας καὶ δὲ Σαγγάριος οὗ μέμνηται καὶ δὲ ποιητής. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς κατὰ Σαγγάνα καθάπην ἀφ' ἐκατὸν καὶ πεντήκοντα 25 τά που σταδίων οὗτος Πεσσινοῦντος· διέξεισι δὲ τῆς ἐπικτήτου Φρυγίας τὴν πλειόν, μέρος δέ τι καὶ τῆς Βιθυνίας ὥστε καὶ τῆς Νικομηδείας ἀπέχειν μικρὸν πλείους ἡ τριακοσίους σταδίους, καθ' δὲ συμβάλλει ποταμὸς αὐτῷ Γάλλος ἐκ Μόδρων τὰς ἀρχὰς ἔχων τῆς ἐφ' 30 Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ ἐπικτήτῳ, καὶ εἶχον αὐτὴν οἱ Βιθυνοὶ πρότερον. αὐξηθεῖς

δὲ καὶ γενόμενος πλωτός, καίπερ πάλαι ἀπλωτος ὡν,
τὴν Βιθυνίαν ὁρίζει πρὸς ταῖς ἐκβολαῖς. πρόκειται δὲ
τῆς παραλίας ταύτης καὶ ἡ Θυνία νῆσος. ἐν δὲ τῇ
Ἡρακλειώτιδι γίνεται τὸ ἀκόνιτον· διέχει δὲ ἡ πό-
λις αὗτη τοῦ Ιεροῦ τοῦ Χαλκηδονίου σταδίους χι-
λίους που καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Σαγγαρίου πεντα-
κοσίους.

Τὸ δὲ Τίειόν ἔστι πολίχνιον οὐδὲν ἔχον μυήμης 8
ἄξιον πλὴν ὅτι Φιλέταιρος ἐντεῦθεν ἦν, ὁ ἀρχηγέτης
10 τοῦ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων γένους· εἰδ' ὁ Παρθέ-
νιος ποταμὸς διὰ χωρίων ἀνθηρῶν φερόμενος καὶ διὰ
τοῦτο τοῦ δυόματος τούτου τετυχηκώς, ἐν αὐτῇ τῇ Πα-
φλαγονίᾳ τὰς πηγὰς ἔχων· ἐπειτα ἡ Παφλαγονία καὶ
οἱ Ἔνετοι. ξητούσι δὲ τίνας λέγει τοὺς Ἔνετοὺς ὁ ποι-
15 ητῆς ὅταν φῇ „Παφλαγόνων δ’ ἥγεῖτο Πυλαιμένεος
„λάσιον κῆρο ἔξ Ἔνετῶν, ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτε-
„ράων.“ οὐ γὰρ δείκνυσθαι φασι υῦν Ἔνετοὺς ἐν τῇ
Παφλαγονίᾳ· οἱ δὲ κώμην ἐν τῷ Αλγιαλῷ φασι δέκα
σχοίνους ἀπὸ Ἀμάστρεως διέχουσαν. Ζηνόδοτος δὲ „ἔξ
20 „Ἐνετῆς“ γράφει, καὶ φησὶ δηλοῦσθαι τὴν υῦν Ἀμι-
σόν· ἄλλοι δὲ φῦλόν τι τοῖς Καππάδοξιν διμορφον στρα-
τεῦσαι μετὰ Κιμμερίων, εἰτ' ἐκπεσεῖν εἰς τὸν Ἀδρίαν.
τὸ δὲ μάλισθ' διμολογούμενόν ἔστιν ὅτι ἀξιολογώτατον
ἡν τῶν Παφλαγόνων φῦλον οἱ Ἔνετοι, ἔξ οὐδὲ οἱ Πυλαι-
25 μένης ἦν· καὶ δὴ καὶ συνεστράτευσαν οὗτοι αὐτῷ πλεῖ-
στοι, ἀποβαλόντες δὲ τὸν ἥγεμόνα διέβησαν εἰς τὴν
Θράκην μετὰ τὴν Τροίας ἄλωσιν, πλανώμενοι δ' εἰς
τὴν υῦν Ἐνετικὴν ἀφίκοντο. τινὲς δὲ καὶ Ἀντήνορα
καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ κοινωνῆσαι τοῦ στόλου τούτου. 544
30 φασὶ καὶ ιδρυθῆναι κατὰ τὸν μυχὸν τοῦ Ἀδρίαν, κα-
θάπερ ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Ἰταλικοῖς. τοὺς μὲν οὖν

Ἐνετοὺς διὰ τοῦτ' ἐκλιπεῖν εἰκὸς καὶ μὴ δείκνυσθαι ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ.

9 Τοὺς δὲ Παφλαγόνας πρὸς ἔω μὲν ὁρίζει ὁ Ἀλυς ποταμός „[δος] φέων ἀπὸ μεσημβρίης μεταξὺ Σύρων „τε καὶ Παφλαγόνων ἔξει“ κατὰ τὸν Ἡρόδοτον „ές 5 „τὸν Εὔξεινον καλεόμενον πόντον,“ Σύρους λέγοντα τοὺς Καππάδοκας· καὶ γὰρ ἔτι καὶ νῦν Λευκόσσυροι καλοῦνται, Σύρων καὶ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου λεγομένων· κατὰ δὲ τὴν πρὸς τοὺς ἐντὸς τοῦ Ταύρου σύγκρισιν, ἐκείνων ἐπικεκαυμένων τὴν χρόαν τούτων δὲ 10 μῆ, τοιαύτην τὴν ἐπωνυμίαν γενέσθαι συνέβη· καὶ Πίνδαρός φησιν ὅτι αἱ Ἀμαζόνες „Σύριον εὐρυαίχμαν „δίεπον στρατόν,“ τὴν ἐν τῇ Θεμισκύρᾳ κατοικίαν οὕτω δηλῶν. ἡ δὲ Θεμισκύρᾳ ἔστιν τῶν Ἀμισηνῶν, αὗτη δὲ Λευκοσύρων τῶν μετὰ τὸν Ἀλυν. πρὸς ἔω 15 μὲν τοίνυν ὁ Ἀλυς ὄροιν τῶν Παφλαγόνων, πρὸς νότον δὲ Φρύγες καὶ οἱ ἐποικήσαντες Γαλάται, πρὸς δύσιν δὲ Βιθυνοὶ καὶ Μαριανδυνοὶ (τὸ γὰρ τῶν Καυκάνων γένος ἔξεφθαρται τελέως πάντοθεν), πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ Εὔξεινος ἔστι. τῆς δὲ χώρας ταύτης διηρημένης 20 εἰς τε τὴν μεσόγαιαν καὶ τὴν ἐπὶ θαλάττῃ διατείνουσαν ἀπὸ τοῦ Ἀλυνος μέχρι Βιθυνίας, ἐκατέραν τὴν μὲν παραλίαν ἔως τῆς Ἡρακλείας εἶχεν ὁ Εύπατωρ, τῆς δὲ μεσογαίας τὴν μὲν ἐγγυτάτῳ ἔσχεν, τῆς τινα καὶ πέραν τοῦ Ἀλυνος διέτεινε (καὶ μέχρι δεῦρο τοῖς Ρωμαίοις ἡ 25 Ποντικὴ ἐπαρχία ἀφώρισται), τὰ λοιπὰ δ' ἦν ὑπὸ δυνάσταις καὶ μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατάλυσιν. περὶ μὲν δὴ τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ Παφλαγόνων ἔροῦμεν ὕστερον τῶν μὴ ὑπὸ τῷ Μιθριδάτῃ, νῦν δὲ πρόκειται τὴν ὑπὸ ἐκείνῳ χώραν, κληθεῖσαν δὲ Πόντον, διελθεῖν. 30

5. ante ἔξει: καὶ

Μετὰ δὴ τὸν Παρθένιον ποταμὸν ἔστιν Ἄμα- 10
στροις ὁμώνυμος τῆς συνφυκινίας πόλις· ἵδρυται δ'
ἐπὶ χερρονήσου λιμένας ἔχουσα τοῦ ἴσθμοῦ ἐκατέρω-
θεν· ἦν δ' ἡ Ἄμαστροις γυνὴ μὲν Διονυσίου τοῦ Ἡρα-
5 κιλείας τυράννου, θυγάτηρ δὲ Ὁξεύαδρου τοῦ Δαρείου
ἀδελφοῦ τοῦ πατὸς Ἀλέξανδρον. ἐκείνη μὲν οὖν ἐκ τετ-
τάρων πατοικιῶν συνφύκισε τὴν πόλιν, ἥκ τε Σησάμου
καὶ Κυτώρου καὶ Κρώμυνης (ῶν καὶ Ὁμηρος μέμνηται
ἐν τῷ Παφλαγονικῷ διακόσμῳ), τετάρτης δὲ τῆς Τίου·
10 ἀλλ' αὐτῇ μὲν ταχὺ ἀπέστη τῆς ποινωνίας, αἱ δὲ ἄλλαι
συνέμειναν, ὃν ἡ Σησάμος ἀκρόπολις τῆς Ἄμαστροεως
λέγεται. τὸ δὲ Κύτωρον ἐμπόριον ἦν ποτε Σινωπέων,
ἀνόμασται δ' ἀπὸ Κυτώρου τοῦ Φοῖξου παιδός, ως
Ἐφορός φησι. πλείστη δὲ καὶ ἀρίστη πύξις φύεται πατὰ C.545
15 τὴν Ἄμαστριανήν, καὶ μάλιστα περὶ τὸ Κύτωρον. ὁ δὲ
Ἀλγιαλὸς ἔστι μὲν ἥψιν μακρὰ πλειόνων ἡ ἐκατὸν στα-
δίων, ἔχει δὲ καὶ κάμην ὁμώνυμον, ἥσ μέμνηται ὁ ποι-
ητὴς ὅταν φῇ,, Κρώμυνάν τ' Ἀλγιαλόν τε καὶ ὑψηλοὺς
,,Ἐρυθίνους.“ γράφουσι δέ τινες,, Κρώμυναν Κωβίαλόν
20,, τε.“ Ἐρυθίνους δὲ λέγεσθαι φασι τοὺς νῦν Ἐρυθρί-
νους ἀπὸ τῆς χρόας· δύο δ' εἰσὶ σκόπελοι. μετὰ δὲ Αλ-
γιαλὸν Κάραμβις, ἄκρα μεγάλη πρὸς τὰς ἄρκτους ἀνα-
τεταμένη καὶ τὴν Σκυνθικὴν χερρόνησον. ἐμνήσθημεν
δ' αὐτῆς πολλάκις καὶ τοῦ ἀντικειμένου αὐτῇ Κριού με-
25 τώπου, διθάλαττον ποιοῦντος τὸν Εὔξεινον πόντον.
μετὰ δὲ Κάραμβιν Κίναλις καὶ Ἀντικίνωλις καὶ Ἀβώ-
νου τεῖχος πολίχνιον, καὶ Ἀρμένη ἐφ' ἣ παροιμιάζον-
ται,, δστις ἔργον οὐδὲν εἶχεν Ἀρμένην ἐτείχισεν.“ ἔστι
δὲ κάμη τῶν Σινωπέων ἔχουσα λιμένα.

30 *Εἰτ' αὐτὴ Σινάπη, σταδίους πεντήκοντα τῆς Ἄρ-* 11

μένης διέχουσα, ἀξιολογωτάτη τῶν ταύτη πόλεων.
 ἔκτισαν μὲν οὖν αὐτὴν Μιλήσιοι, κατασκευασμένη δὲ
 ναυτικὸν ἐπῆρχε τῆς ἐντὸς Κυανέων θαλάττης, καὶ
 ἔξω δὲ πολλῶν ἀγώνων μετεῖχε τοῖς Ἑλλησιν· αὐτο-
 νομηθεῖσα δὲ πολὺν χρόνον οὐδὲ διὰ τέλους ἐφύλαξε 5
 τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ἐκ πολιορκίας ἑάλω καὶ ἐδού-
 λευσε Φαρνάκη πρῶτον, ἐπειτα τοῖς διαδεξαμένοις
 ἐκεῖνου μέχρι τοῦ Εὐπάτορος καὶ τῶν καταλυσάντων
 Ρωμαίων ἐκεῖνον. ὁ δὲ Εὐπάτωρ καὶ ἐγεννήθη ἐκεῖ καὶ
 ἐτράφη· διαφερόντως δὲ ἐτίμησεν αὐτὴν μητρόπολιν 10
 τε τῆς βασιλείας ὑπέλαβεν. ἔστι δὲ καὶ φύσει καὶ προ-
 νοίᾳ κατεσκευασμένη καλῶς· ἔδρυται γὰρ ἐπὶ αὐχένι
 χερρονήσου τινός, ἐκατέρωθεν δὲ τοῦ ἴσθμου λιμένες
 καὶ ναύσταθμα καὶ πηλαμυδεῖα θαυμαστά, περὶ ᾧν
 εἰρήναμεν ὅτι δευτέραν θήραν οἱ Σιναπεῖς ἔχουσι, τοί- 15
 την δὲ Βυζάντιοι· καὶ κύκλῳ δ' ἡ χερρονήσος προβέ-
 βληται φαγιώδεις ἀκτὰς ἔχούσας καὶ κοιλάδας τινὰς
 ὥσανει βόθρους πετρίνους, οὓς καλοῦσι χοινικίδας·
 πληροῦνται δὲ οὗτοι μετεωρισθείσης τῆς θαλάττης,
 ὡς καὶ διὰ τοῦτο οὐκ εὑπρόσιτον τὸ χωρίον καὶ διὰ 20
 τὸ πᾶσαν τὴν πέτρας ἐπιφάνειαν ἔχινώδη καὶ ἀνε-
 πίβατον εἶναι γυμνῷ ποδὶ· ἀνωθεν μέντοι καὶ ὑπὲρ
 τῆς πόλεως εὔγεών ἔστι τὸ ἔδαφος καὶ ἀγροηπίοις κε-
 C.54βκόσμηται πυκνοῖς, πολὺ δὲ μᾶλλον τὰ προάστεια. αὐτὴ
 δ' ἡ πόλις τετελχισται καλῶς, καὶ γυμνασίῳ δὲ καὶ ἄγο- 25
 ρῷ καὶ στοαῖς κεκόσμηται λαμπρῶς. τοιαύτη δὲ οὖσα
 διს ὅμως ἑάλω, πρότερον μὲν τοῦ Φαρνάκου παρὰ δό-
 ξαν αἰφνιδίως ἐπιπεσόντος, ὕστερον δὲ ὑπὸ Λευκόλ-
 λου καὶ τοῦ ἐγκαθημένου τυράννου καὶ ἐντὸς ἄμα καὶ
 ἔκτὸς πολιορκουμένη· ὁ γὰρ ἐγκατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ 30
 βασιλέως φρούραρχος Βακχίδης ὑπονοοῶν ἀεὶ τινα προ-
 δοσίαν ἐκ τῶν ἐνδοῦσεν καὶ πολλὰς αἰκίας καὶ σφα-

γὰς ποιῶν, ἀπαγορεῦσαι τοὺς ἀνθρώπους ἐποίησε
πρὸς ἄμφω μήτ' ἀμύνασθαι δυναμένους γενναῖας
μήτε προσθέσθαι κατὰ συμβάσεις. ἐάλωσαν δ' οὗν·
καὶ τὸν μὲν ἄλλον κόσμον τῆς πόλεως διεφύλαξεν δὲ
5 Λεύκολλος, τὴν δὲ τοῦ Βιλλάρου σφαλόαν ἦρε καὶ τὸν
Αὐτόλυκον, Σθένιδος ἔργον, ὃν ἐκεῖνοι οἰκιστὴν ἐνό-
μιζον καὶ ἐτίμων ὡς θεόν· ἦν δὲ καὶ μαντεῖον αὐτοῦ·
δοκεῖ δὲ τῶν Ιάσονι συμπλευσάντων εἶναι καὶ κατα-
σχεῖν τοῦτον τὸν τόπον. εἰδ' ὑστερον Μιλήσιοι τὴν
10 εὑφυῖαν ἰδόντες καὶ τὴν ἀσθένειαν τῶν ἐνοικούντων
ἔξιδιάσαντο καὶ ἐποίκους ἔστειλαν· νυνὶ δὲ καὶ Ρω-
μαίων ἀποικίαν δέδεκται, καὶ μέρος τῆς πόλεως καὶ τῆς
χώρας ἐκείνων ἐστί. διέχει δὲ τοῦ μὲν Ἱεροῦ τρισκιλ-
15 ους καὶ πεντακοσίους, ἀφ' Ἡρακλείας δὲ δισκιλίους,
Καράμβεως δὲ ἑπτακοσίους σταδίους. ἄνδρας δὲ ἔξη-
νεγκεν ἀγαθούς, τῶν μὲν φιλοσόφων Διογένη τὸν κυ-
νικὸν καὶ Τιμόθεον τὸν Πατρίωνα, τῶν δὲ ποιητῶν
Διφιλού τὸν κωμικόν, τῶν δὲ συγγραφέων Βάτωνα
τὸν πραγματευθέντα τὰ Περσικά.

20 'Εντεῦθεν δ' ἐφεξῆς ἡ τοῦ Ἀλυος ἐκβολὴ ποτα- 12
μοῦ· ὥνόμασται δ' ἀπὸ τῶν ἀλῶν ἂς παραρρεῖ· ἔχει
δὲ τὰς πηγὰς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ τῆς Ποντικῆς
πλησίον κατὰ τὴν Καμισηνήν, ἐνεχθεὶς δ' ἐπὶ δύσιν
πολὺς, εἰτ' ἐπιστρέψας πρὸς τὴν ἄφοτον διά τε Γαλα-
25 τῶν καὶ Παφλαγόνων δρᾷει τούτους τε καὶ τοὺς Λευ-
κοσύρους. ἔχει δὲ καὶ ἡ Σινωπῖτις καὶ πᾶσα ἡ μέχρι
Βιδυνίας δρεινὴ ἡ ὑπεροκειμένη τῆς λεχθείσης παρα-
λίας ναυπηγήσιμον ὕλην ἀγαθὴν καὶ σύνατακόμιστον.
ἡ δὲ Σινωπῖτις καὶ σφένδαμνον φύει καὶ ὄρονάρνον,
30 ἔξ ὧν τὰς τραπέζας τέμνουσιν· ἀπασα δὲ καὶ ἐλαιόφυ-
τός ἐστιν ἡ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης γεωργυνεύνη.

Μετὰ δὲ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἀλυος ἡ Γαζηλωνῖτις 13
24 *

έστι μέχρι τῆς Σαραμηνῆς, εὐδαιμων χώρα καὶ πεδιὰς πᾶσα καὶ πάμφορος· ἔχει δὲ καὶ προβατείαν ὑποδιφθερόν καὶ μαλακῆς ἐρέας, ἡς καθ' ὅλην τὴν Καππαδοκίαν καὶ τὸν Πόντον σφόδρα πολλὴ σπάνις ἔστι· γί-
C.547νονται δὲ καὶ ζόρκες, ὡν ἀλλαχοῦ σπάνις ἔστι. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὴν μὲν ἔχουσιν Ἀμισηνοί, τὴν δὲ ἔδωκε Δηιοτάρῳ Πομπήιος, καθάπερ καὶ τὰ περὶ Φαρνακίαν καὶ τὴν Τραπεζούσιαν μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς μικρᾶς Λόμενίας· καὶ τούτων ἀπέδειξεν αὐτὸν βασιλέα, ἔχοντα καὶ τὴν πατρῷαν τετραρχίαν τῶν Γαλατῶν, τοὺς Το- 10 λιστοβαγίους. ἀποδανόντος δὲ ἐκείνου πολλαὶ διαδοχαὶ τῶν ἐκείνου γεγόνασι.

14 Μετὰ δὲ τὴν Γαζηλῶνα ἡ Σαραμηνὴ καὶ Ἀμισὸς πόλις ἀξιόλογος, διέχουσα τῆς Σινάπης περὶ ἐνακοσίους σταδίους. φησὶ δὲ αὐτὴν Θεόπομπος πρώτους 15 Μιλησίους κτίσαι Καππαδόκιων ἄρχοντα, τοῖτον δὲ ὑπὸ Ἀθηνοκλέους καὶ Ἀθηναίων ἐποιησθεῖσαν Πειραιᾶ μετονομασθῆναι. καὶ ταύτην δὲ κατέσχον οἱ βασιλεῖς, ὃ δὲ Εὐπάτωρ ἐκόσμησεν ἱεροῖς καὶ προσέκτισε μέρος. Λεύκολλος δὲ καὶ ταύτην ἐποιιόρκησεν, 20 εἰδὲ ὕστερον Φαρνάκης ἐκ Βοσπόρου διαβάσ- ἐλευθερωθεῖσαν δὲ ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ παρέδωκεν Ἀντώνιος βασιλεὺσιν· εἰδὲ δὲ τύραννος Στράτων κακῶς αὐτὴν διέθηκεν· εἰτέ ἡλευθερώθη πάλιν μετὰ τὰ Ἀκτιακὰ ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Σεβαστοῦ, καὶ νῦν εὖ συνέ- 25 στηκεν. ἔχει δὲ τὴν τε ἄλλην χώραν καλὴν καὶ τὴν Θεμίσκυραν τὸ τῶν Ἀμαζόνων οἰκητήριον, καὶ τὴν Σιδήνην.

15 Ἐστι δὲ ἡ Θεμίσκυρα πεδίον τῇ μὲν ὑπὸ τοῦ πελάγους κλυζόμενον, ὅσον ἔξήκοντα σταδίους τῆς πό- 30 λεως διέχον, τῇ δὲ ὑπὸ τῆς ὁρεινῆς εὐδένδρου καὶ διαρρύτου ποταμοῖς αὐτόθεν τὰς πηγὰς ἔχουσιν. ἐκ μὲν

οῦν τούτων πληρουμενος ἀπάντων εἰς ποταμὸς δι-
έξεισι τὸ πεδίον Θερμώδων καλούμενος· ἄλλος δὲ τού-
τῳ πάρισος φέων ἐκ τῆς καλουμένης Φαναροίας τὸ αὐτὸν
διέξεισι πεδίον· καλεῖται δὲ Ἰοις. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν
5 αὐτῷ τῷ Πόντῳ, φυεὶς δὲ διὰ πόλεως μέσης Κομάνων
τῶν Ποντικῶν καὶ διὰ τῆς Δαξιμωνίτιδος εὐδαιμονος
πεδίου πρὸς δύσιν, εἰτ' ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἀρκτους
παρ' αὐτὰ τὰ Γαζίουρα, παλαιὸν βασίλειον, νῦν δ'
ἔρημον· εἰτα ἀνακάμπτει πάλιν πρὸς ἔω παραλαβὴν
10 τόν τε Σκύλακα καὶ ἄλλους ποταμούς, καὶ παρ' αὐτὸν
τὸ τῆς Ἀμασείας ἐνεχθεὶς τεῖχος, τῆς ἡμετέρας πατρό-
δος, πόλεως ἐρυμνοτάτης, εἰς τὴν Φανάροιαν πρόει-
σιν· ἐνταῦθα δὲ συμβαλὼν ὁ Λύκος αὐτῷ τὰς ἀρκὰς
ἐξ Ἀρμενίας ἔχων γίνεται καὶ αὐτὸς Ἰοις· εἰθ' ἡ Θε-
15 μίσκυρα ὑποδέχεται τὸ δεῦμα καὶ τὸ Ποντικὸν πέλα-
γος. διὰ δὲ τοῦτο ἐνδροσόν ἔστι καὶ ποάζον ἀεὶ τὸ πε-
δίον τοῦτο τρέφειν ἀγέλας βιῶν τε ὁμοίως καὶ ἕππων
δυνάμενον, σπόρον δὲ πλεῖστον δέχεται τὸν ἐκ τῆς ἐλύ-
μου καὶ κέρχοου, μᾶλλον δὲ ἀνέκλειπτον· αὐχμοῦ γάρ
20 ἔστι κρείττων ἡ εὔνυδρία παντός, ὥστ' οὐδὲ λιμὸς κα-^{ο.548}
θικνεῖται τῶν ἀνθρώπων τούτων οὐδὲ ἀπαξ· τοσαύ-
την δ' ὀπάροιν ἐκδίδωσιν ἡ παρόρειος τὴν αὐτοφυῆ
καὶ ἀγροῖαν σταφυλῆς τε καὶ ὅχνης καὶ μήλου καὶ τῶν
καρυωδῶν ὥστε κατὰ πᾶσαν τοῦ ἔτους ὥραν ἀφθόνως
25 εὐπορεῖν τοὺς ἔξιόντας ἐπὶ τὴν ὗλην, τοτὲ μὲν ἔτι κρε-
μαμένων τῶν καρπῶν ἐν τοῖς δένδροσι, τοτὲ δ' ἐν τῇ
πεπτωκίᾳ φυλλάδι καὶ ὑπ' αὐτῇ κειμένων βαθείᾳ καὶ
πολλῇ κεχυμένῃ. συγχναὶ δὲ καὶ θῆραι παντοίων ἀγρευ-
μάτων διὰ τὴν εὐπορίαν τῆς τροφῆς.

30 *Μετὰ δὲ τὴν Θεμίσκυράν ἔστιν ἡ Σιδήνη, πεδίον 16*
εὐδαιμον, οὐχ ὁμοίως δὲ κατάρρευτον, ἔχον χωρία
ἐρυμνὰ ἐπὶ τῇ παραλίᾳ, τὴν τε Σίδην ἀφ' ἧς ὀνομά-

σθη Σιδήνη, καὶ Χάβανα καὶ Φάρβδα· μέχρι μὲν δὴ δεῦρο Ἀμισηνῆ. ἄνδρες δὲ γεγόνασιν ἄξιοι μηνῆς κατὰ παιδεῖαν ἐνταῦθα μαθηματικοὶ μὲν Δημήτριος ὁ τοῦ Ῥαδηνοῦ καὶ Διονυσόδωρος ὁμώνυμος τῷ Μηλίῳ γεωμέτρῃ, γραμματικὸς δὲ Τυραννίων οὗ ἡμεῖς 5 ἥκροιασάμεθα.

17 Μετὰ δὲ τὴν Σιδήνην ἡ Φαρνακία ἐστὶν ἔρυμνὸν πόλισμα, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Τραπεζοῦς πόλις Ἑλληνίς, εἰς ἣν ἀπὸ τῆς Ἀμισοῦ περὶ δισχιλίους καὶ διακοσίους σταδίους ἐστὶν ὁ πλοῦς· εἰτ' ἐνθεν εἰς Φᾶσιν χίλιοι 10 που καὶ τετρακόσιοι, ὥστε οἱ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ Ιεροῦ μέχρι Φάσιδος περὶ ὀκτακισχιλίους σταδίους εἰσὶν ἡ μικρῷ πλείους ἢ ἐλάττους. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἀπὸ Ἀμισοῦ πλέουσιν ἡ Ἡράκλειος ἄκρα πρῶτον ἐστιν, εἰτ' ἄλλη ἄκρα Ιασόνιον καὶ ὁ Γενήτης, εἰτα Κοτύωρα 15 πολίχνη ἔξ οὐδὲ τῆς συνφυίσθη ἡ Φαρνακία, εἰτ' Ἰσχόπολις κατερηφιμμένη, εἰτα ιόλπος ἐν φέρεται Κερασοῦς τε καὶ Ἐρυμώνασσα κατοικιαι μέτραιαι, εἰτα τῇς Ἐρυμωνάσσης πλησίου ἡ Τραπεζοῦς, εἰτ' ἡ Κολχίς· ἐνταῦθα δέ που ἐστὶ καὶ Ζυγόπολις τις λεγομένη κατοικία. περὶ μὲν 20 οὖν τῆς Κολχίδος εἰρηται καὶ τῆς ὑπεροχειμένης παραλίας.

18 Τῆς δὲ Τραπεζοῦντος ὑπέροχεινται καὶ τῆς Φαρνακίας Τιβαρανοί τε καὶ Χαλδαῖοι καὶ Σάννοι, οὓς πρότερον ἐκάλουν Μάκρωνας, καὶ ἡ μικρὰ Ἀρμενία· 25 καὶ οἱ Ἀππάῖται δέ πως πλησιάζουσι τοῖς χωρίοις τούτοις οἱ πρότερον Κερκίται. διήκει δὲ διὰ τούτων ὁ τε Σκυδίσσης ὅρος τραχύτατον συνάπτον τοῖς Μοσχικοῖς ὅρεσι τοῖς ὑπὲρ τῆς Κολχίδος, οὗ τὰ ἄκρα κατέχουσιν οἱ Ἐπτακαμῆται, καὶ ὁ Παρνάδρης ὁ μέχρι τῆς μικρᾶς 30 Ἀρμενίας ἀπὸ τῶν κατὰ Σιδήνην καὶ Θεμίσκυραν τόπων διατείνων καὶ ποιῶν τὸ ἐωθινὸν τοῦ Πόντου πλευ-

ρόν. εἰσὶ δὲ ἄπαντες μὲν οἱ ὅρειοι τούτων ἄγριοι τε-^{C.549}
λέως, ὑπερβέβληται δὲ τοὺς ἄλλους οἱ Ἐπτακαμῆται·
τινὲς δὲ καὶ ἐπὶ δένδρεσιν ἡ πυργίοις οἰκοῦσι, διὸ καὶ
Μοσυνοίκους ἐκάλουν οἱ παλαιοί, τῶν πύργων μοσύ-
5 νων λεγομένων. ξῶσι δὲ ἀπὸ θηρείων σαρκῶν καὶ τῶν
ἀκροδρύων, ἐπιτίθενται δὲ καὶ τοῖς ὁδοιποροῦσι κα-
ταπηδήσαντες ἀπὸ τῶν ἵκριων. οἱ δὲ Ἐπτακαμῆται
τρεῖς Πομπηίου σπείρας κατέκοψαν διεξιούσας τὴν
ὅρεινήν, περάσαντες κρατῆρας ἐν ταῖς ὁδοῖς τοῦ μαι-
10 νομένου μέλιτος, ὃ φέρουσιν οἱ ἀκρεμόνες τῶν δέν-
δρων· πιοῦσι γὰρ καὶ παρακόψασιν ἐπιθέμενοι φα-
δίως διεχειρίσαντο τοὺς ἀνθρώπους. ἐκαλοῦντο δὲ
τούτων τινὲς τῶν βαρβάρων καὶ Βύζηρες.

Οἱ δὲ νῦν Χαλδαῖοι Χάλυβες τὸ παλαιὸν ὀνομά-¹⁹
15 ξοντο, καθ' οὓς μάλιστα ἡ Φαραναία ἔδρυται, κατὰ
θάλατταν μὲν ἔχουσα εὐφυῖαν τὴν ἐκ τῆς πηλαμυδείας
(πρώτιστα γὰρ ἀλίσκεται ἐνταῦθα τὸ ὄψον τοῦτο), ἐκ
δὲ τῆς γῆς τὰ μέταλλα νῦν μὲν σιδήρου πρότερον δὲ
καὶ ἀργύρου. δλως δὲ κατὰ τοὺς τόπους τούτους ἡ πα-
20 ραλλα στενὴ τελέως ἐστίν· ὑπέρκειται γὰρ εὐθὺς τὰ
δρη μετάλλων πλήρη καὶ δρυμῶν, γεωργεῖται δὲ οὐ
πολλά· λείπεται δὴ τοῖς μὲν μεταλλευταῖς ἐκ τῶν με-
τάλλων ὁ βίος, τοῖς δὲ θαλαττουργοῖς ἐκ τῆς ἀλιείας
καὶ μάλιστα τῶν πηλαμύδων καὶ τῶν δελφίνων· ἐπανο-
25 λουθοῦντες γὰρ ταῖς ἀγέλαις τῶν ἰχθύών, κορδύλης τε
καὶ θύννης καὶ αὐτῆς τῆς πηλαμύδος, πιαίνονταί τε καὶ
εὐάλωτοι γίνονται διὰ τὸ πλησιάζειν τῇ γῇ προαλέστε-
ρον δελεαζόμενοι * οὓς μόνοι οὗτοι κατακόπτουσι τοὺς
δελφίνας καὶ τῷ στέατι πολλῷ χρῶνται πρὸς ἄπαντα.

30 Τούτους οὖν οἴμαι λέγειν τὸν ποιητὴν Ἀλιξώνονς ²⁰
ἐν τῷ μετὰ τοὺς Παφλαγόνας καταλόγῳ „αὐτὰρ Ἀλι-
„ξώνων Ὁδίος καὶ Ἐπιστροφος ἥρχον τηλόθεν ἐξ Ἀλύ-

„βῆς, ὅθεν ἀργύρους ἐστὶ γενέθλη.“ ἦτοι τῆς γραφῆς μετατεθείσης ἀπὸ τοῦ „τηλόθεν ἐκ Χαλύβης“, ἡ τῶν ἀνθρώπων πρότερον Ἀλύβων λεγομένων ἀντὶ Χαλύβων· οὐ γὰρ νῦν μὲν δυνατὸν γέγονεν ἐκ Χαλύβων Χαλδαιὸς λεχθῆναι, πρότερον δ' οὐκ ἐνην ἀντὶ Ἀλύ-⁵ βων Χάλυβας, καὶ ταῦτα τῶν ὄνομάτων μεταπτώσεις πολλὰς δεχομένων καὶ μάλιστα ἐν τοῖς βαρθάροις. Σίντιες γὰρ ἔκαλοῦντό τινες τῶν Θρακῶν, εἴτα Σιντοί, εἴτα Σάιοι, παρ' οἷς φησιν Ἀρχίλοχος τὴν ἀσπίδα δῆψαι „ἀσπίδα μὲν Σαῖων τις ἀνείλετο, τὴν παρὰ θά-¹⁰ „μνῷ ἔντος ἀμάρμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“ οἱ δ' 0.550 αὐτοὶ οὗτοι Σαπαῖοι νῦν δινομάζονται· πάντες γὰρ οὗτοι περὶ Ἀρδηρα τὴν οἰκησιν εἶχον καὶ τὰς περὶ Λῆ-¹⁵ μνουν νήσους· ὁμοίως δὲ καὶ Βρῦγοι καὶ Βρύγες καὶ Φρύγες οἱ αὐτοί, καὶ Μυσοὶ καὶ Μαίονες καὶ Μήονες· 20 οὐ χρεία δὲ πλεονάξειν. ὑπονοεῖ δὲ καὶ ὁ Σκῆψιος τὴν τοῦ δινόματος μετάπτωσιν ἐξ Ἀλύβων εἰς Χάλυβας, τὰ δ' ἔξης καὶ τὰ συνῳδὰ οὐ νοῶν, καὶ μάλιστα ἐκ τίνος Ἀλιξώνους εἰρηκε τοὺς Χάλυβας, ἀποδοκιμάξει τὴν δόξαν· ἡμεῖς δ' ἀντιπαραθέντες τῇ ἡμετέρᾳ τὴν ἐκεί-²⁵ 21 νου καὶ τὰς τῶν ἄλλων ὑπολήψεις σκοπῶμεν. οἱ μὲν [οὖν] μεταγράφουσιν „Ἀλαζώνων“ οἱ δ', „Ἀμαζώνων“ ποιοῦντες, τὸ δ', „ἔξ Ἀλύβης“, „ἔξ Ἀλόπης“ ἢ „ἔξ Ἀλό-³⁰ „βῆς“, τοὺς μὲν Σκύθας Ἀλαζῶνας φάσκοντες ὑπὲρ τὸν Βορυσθένη καὶ Καλλιπίδας καὶ ἄλλα δινόματα, ἀπερ Εὐλλάνικός τε καὶ Ἡρόδοτος καὶ Εῦδοξος κατε- φυλαρησαν ἡμῖν, τοὺς δ' Ἀμαζῶνας μεταξὺ Μυσίας καὶ Καρίας καὶ Λυδίας, καθάπερ Ἐφορος νομίζει, πλη- σίον Κύμης τῆς πατρίδος αὐτοῦ· καὶ τοῦτο μὲν ἔχε- ται τινος λόγου τυχὸν ἵσως· εἴη γὰρ ἀν λέγων τὴν ὑπὸ

τῶν Αἰολέων καὶ Ἰώνων οἰκισθεῖσαν ὕστερον, πρότερον δὲ ὑπὸ Ἀμαζόνων, [ῶν] καὶ ἐπωνύμους πόλεις τινὰς εἶναι φασι· καὶ γὰρ Ἐφεσον καὶ Σμύρναν καὶ Κύμην καὶ Μύριναν. ἡ δὲ Ἀλύβη ἡ ᾧ τινες Ἀλόπη ἡ Ἀλόβη πῶς ἀν ἐν τοῖς τόποις τούτοις ἔκητάξετο; πῶς δὲ τηλόθεν; πῶς δὲ ἡ τοῦ ἀργύρου γενέθλη;

Ταῦτα μὲν ἀπολύτεται τῇ μεταγραφῇ· γράφει γὰρ 22 οὕτως „αὐτὰρ Ἀμαζόνων Ὁδίος καὶ Ἐπίστροφος ἥρ- „χον, ἐλθόντ’ ἐξ Ἀλόπης, ὅθ’ Ἀμαζονίδων γένος ἐστί.“
 10 ταῦτα δὲ ἀπολυτάμενος εἰς ἄλλο ἐμπέπτωκε πλάσμα· οὐδαμοῦ γὰρ ἐνθάδε εὑρίσκεται Ἀλόπη· καὶ ἡ μετα- γραφὴ δὲ παρὰ τὴν τῶν ἀντιγράφων τῶν ἀρχαίων πί- στιν καινοτομουμένη ἐπὶ τοσοῦτον σχεδιασμῷ ἔοικεν.
 ὁ δὲ Σκῆψιος οὕτε τὴν τούτου δόξαν ἔοικεν ἀποδεξά-
 15 μενος οὕτε τῶν περὶ τὴν Παλλήνην τοὺς Ἀλιξώνους ὑπολαβόντων, ὃν ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Μακεδονικοῖς. δμοίως διαπορεῖ καὶ πῶς ἐκ τῶν ὑπὲρ τὸν Βορυσθένην νομάδων ἀφῆθαι συμμαχίαν τοῖς Τρωσί τις νομίσειεν,
 ἐπαινεῖ δὲ μάλιστα τὴν Ἐκαταίου τοῦ Μιλησίου καὶ
 20 Μενεκράτους τοῦ Ἐλαίτου τῶν Ξενοκράτους γνωρί- μων ἀνδρὸς δόξαν καὶ τὴν Παλαιφάτου, ὃν δὲ μὲν ἐν γῆς περιόδῳ φησίν „ἐπὶ δὲ Ἀλαξίᾳ πόλι ποταμὸς Ὁδρύ- „σης δέων διὰ Μυγδονίης πεδίου ἀπὸ δύσιος ἐκ τῆς „λίμνης τῆς Δασκυλίτιδος ἐς Ρύνδακον ἐσβάλλει.“ ἔρη-C.551
 25 μον δὲ εἶναι νῦν τὴν Ἀλαξίαν λέγει, καώμας δὲ πολλὰς τῶν Ἀλαξώνων οἰκεῖσθαι, δι’ ὃν Ὁδρύσης δεῖ, ἐν δὲ ταύταις τὸν Ἀπόλλωνα τιμᾶσθαι διαφερόντως, καὶ μάλιστα κατὰ τὴν ἐφορίαν τῶν Κυζικηνῶν. ὁ δὲ Με-
 νεκράτης ἐν τῇ Ἐλλησποντιακῇ περιόδῳ ὑπερκεῖσθαι
 30 λέγει τῶν περὶ τὴν Μύρολειαν τόπων ὀρεινὴν συνεχῆ- ἥν κατέκει τὸ τῶν Ἀλιξώνων ἔθνος· δεῖ δέ, φησί,
 γραφειν ἐν τοῖς δύο λάβδα, τὸν δὲ ποιητὴν ἐν τῷ ἐνὶ

γράφειν διὰ τὸ μέτρον. ὁ δὲ Παλαιόφατός φησιν ἐξ Ἀλαζώνων τῶν ἐν τῇ Ἀλόπη οἰκουμέντων, νῦν δὲ Ζελείᾳ, τὸν Ὄδιον καὶ τὸν Ἐπίστροφον στρατεῦσαι. τί οὖν ἄξιον ἀπαινεῖν τὰς τούτων δόξας; χωρὶς γὰρ τοῦ τὴν ἀρχαίαν γραφὴν καὶ τούτους κινεῖν οὔτε τὰ ἀργυρεῖα δεικνύ-⁵ ουσιν, οὔτε ποὺ τῆς Μυρλεάτιδος Ἀλόπη ἐστίν, οὔτε πᾶς οἱ ἐνθένδε ἀφιγμένοι εἰς Ἰλιον τηλόθεν ἥσαν, εἰ καὶ δοθείη Ἀλόπην τινὰ γεγονέναι ἡ Ἀλαζίαν· πολὺ γὰρ δὴ ταῦτα ἐγγυτέρω ἐστὶ τῇ Τρωάδι ἡ τὰ περὶ Ἐφεσον. ἀλλ᾽ ὅμως τοὺς περὶ Πύγελα λέγοντας τοὺς Ἀμα-¹⁰ ζῶνας μεταξὺ Ἐφέσου καὶ Μαγνησίας καὶ Πριήνης φλυαρεῖν φησὶν ὁ Δημήτριος· τὸ γὰρ „τηλόθεν“ οὐκ ἐφαρμόττειν τῷ τόπῳ· πόσῳ οὖν μᾶλλον οὐκ ἐφαρμόττει τῷ περὶ Μυσίαν καὶ Τευθρανίαν;

23 *Nὴ Δία,* ἀλλά φησι δεῖν ἔνια καὶ ἀκύρως προστι-¹⁵
θέμενα δέχεσθαι, ὡς καὶ „τῇλ’ ἐξ Ἀσκανίης“ καὶ „Ἀρ-
„νατος δ’ ὄνομ’ ἔσκε, τὸ γὰρ θέτο πότνια μήτηρ,“ καὶ
„εἴλετο δὲ κλητὸν εὐκαμπέα χειρὶ παχείῃ Πηνελόπη.“
θεδόσθω δὴ καὶ τοῦτο· ἀλλ’ ἔκεινα οὐ δοτέα, οἷς προσ-²⁰
έχων ὁ Δημήτριος οὐδὲ τοῖς ὑπολαβυῦσι δεῖν ἀκούειν
„τηλόθεν ἐκ Χαλύβης“ πιθανῶς ἀντείρηκε. συγχωρή-
σας γὰρ ὅτι, εἰ καὶ μὴ ἔστι νῦν ἐν τοῖς Χάλυψι τὰ ἀρ-
γυρεῖα, ὑπάρξαι γε ἐνδέχετο, ἔκεινό γε οὐ συγχωρεῖ
ὅτι καὶ ἔνδοξα ἦν καὶ ἄξια μνήμης, καθάπερ τὰ σιδη-
ρεῖα. τί δὲ κωλύει, φαίη τις ἄν, καὶ ἔνδοξα εἶναι, καθά-²⁵
περ καὶ τὰ σιδηρεῖα; ἡ σιδήρου μὲν εὐπορία τόπου ἐπι-
φανῆ δύναται ποιεῖν, ἀργύρου δ’ οὐ; τί δ’ εἰ μὴ κατὰ τοὺς ἥρωας, ἀλλὰ καθ’ Ὁμηρον εἰς δόξαν ἀφῆκτο τὰ
ἀργυρεῖα, ἀρά μέμψαιτο τις ἄν τὴν ἀπόφασιν τοῦ ποι-
ητοῦ; πῶς οὖν εἰς τὸν ποιητὴν ἡ δόξα ἀφίκετο; πῶς ³⁰

δ' ἡ τοῦ ἐν τῇ Τεμέσῃ χαλκοῦ τῇ Ἰταλιώτιδι; πῶς δ'
 ἡ τοῦ Θηβαϊκοῦ πλούτου τοῦ καὶ Ἀλγυπτον; καίτοι
 διπλάσιον σχεδόν τι διέχοντα τῶν Αλγυπτίων Θηβῶν
 ἢ τῶν Χαλδαίων. ἀλλ' οὐδ' οἶς συνηγορεῖ, τούτοις
 5 ὄμοιογεῖ· τὰ γὰρ περὶ τὴν Σκῆψιν τοποθετῶν τὴν^{C.552}
 ἑαυτοῦ πατρίδα, πλησίον τῆς Σκῆψεως καὶ τοῦ Αἰσή-
 πον Νέαν οώμην καὶ Ἀργυρίαν λέγει καὶ Ἀλαζονίαν.
 ταῦτα μὲν οὖν εἰ καὶ ἔστι, πρὸς ταῖς πηγαῖς ἀν εἴη τοῦ
 Αἰσήπου. ὁ δὲ Ἔκαταλος λέγει ἐπέκεινα τῶν ἐκβολῶν
 10 αὐτοῦ, ὃ τε Παλαιφατος πρότερον μὲν Ἀλόπην οἰκεῖν
 φῆσας νῦν δὲ Ζέλειαν, οὐδὲν ὄμοιον λέγει τούτοις.
 εἰ δ' ἄρα ὁ Μενεμράτης, καὶ οὐδ' οὗτος τὴν Ἀλόπην ἢ
 Ἀλόβην ἢ ὅπως ποτὲ βούλονται γράφειν φράζει ἥτις
 15 ἔστιν, οὐδ' αὐτὸς ὁ Δημήτριος.

Πρὸς Ἀπολλόδωρον δὲ περὶ τῶν αὐτῶν ἐν τῷ 24
 Τρωικῷ διακόσμῳ διαλεγόμενον πολλὰ μὲν εἴρηται
 πρότερον, καὶ νῦν δὲ λεκτέον. οὐ γὰρ οἰεται δεῖν δέχε-
 σθαι τοὺς Ἀλιξώνους ἐκτὸς τοῦ Ἀλυος· μηδεμίαν γὰρ
 συμμαχίαν ἀφῆθαι τοῖς Τρωσὶν ἐκ τῆς περαίας τοῦ
 20 Ἀλυος. πρῶτον τοίνυν ἀπαιτήσομεν αὐτὸν τίνες εἰσὶν
 οἱ ἐντὸς τοῦ Ἀλυος Ἀλιξώνοι, οἱ καὶ „τηλόθεν ἐξ Ἀλύ-
 „, βης, ὅθεν ἀργύρους ἔστι γενέθλη.“ οὐ γὰρ ἐξει λέγειν·
 ἔπειτα τὴν αἰτίαν δὶ ἦν οὐ συγχωρεῖ καὶ ἐκ τῆς περαίας
 ἀφῆθαι τινα συμμαχίαν· καὶ γὰρ εἰ τὰς ἄλλας ἐντὸς εἰ-
 25 ναι τοῦ ποταμοῦ πάσας συμβαίνει πλὴν τῶν Θρακῶν,
 μίαν γε ταύτην οὐδὲν ἐκάλυε πέραθεν ἀφῆθαι ἐκ τῆς
 ἐπέκεινα τῶν Λευκοσύρων. ἢ πολεμήσοντας μὲν ἦν
 δυνατὸν διαβαίνειν ἐκ τῶν τόπων τούτων καὶ τῶν ἐπέ-
 κεινα, καθάπερ τὰς Ἀμαξόνας καὶ Τρῆρας καὶ Κιμμε-
 30 ρίους φασί, συμμαχήσοντας δ' ἀδύνατον; αἱ μὲν οὖν
 Ἀμαξόνες οὐ συνεμάχουν διὰ τὸ τὸν Πρόαμον πολεμῆ-
 σαι πρὸς αὐτὰς συμμαχοῦντα τοῖς Φρυξεῖν, „ἥματι τῷ

, δέ τε τὸν ἥλθον Ἀμαζόνες ἀντιάνειραι “φησὶν δὲ Πρίαμος καὶ γὰρ ἐγὼν ἐπίκουρος ἐών μετὰ τοῖσιν ἐλέγμην.” οἱ δὲ ὅμοροῦντες αὐταῖς, οὕτως ἀποθεν ὅντες ὥστε χαλεπὴν εἶναι τὴν ἐκεῖθεν μετάπεμψιν οὕτ’ ἔχθρας ὑποκειμένης, οὐδὲν ἐκωλύοντο οἷμαι συμμαχεῖν. 5

25 Αλλ’ οὐδὲ δόξαν ἔχει τοιαύτην τῶν παλαιῶν εἰπεῖν ὃς συμφωνούντων ἀπάντων μηδένας ἐκ τῆς περιφράσεως τοῦ Ἀλνος ποιεινήσαι τοῦ Τρωικοῦ πολέμου. πρὸς τούναντίον δὲ μᾶλλον εὔροι τις ἀν μαρτυρίας· Μαιάνδριος γοῦν ἐκ τῶν Λευκοσύρων φησὶ τοὺς Ἐνεδ-10 τοὺς ὁρμηθέντας συμμαχῆσαι τοῖς Τρωσίν, ἐκεῖθεν δὲ μετὰ τῶν Θρακῶν ἀπᾶραι καὶ οἰκηῆσαι περὶ τὸν τοῦ Ἀδρίου μυχόν, τοὺς δὲ μὴ μετασχόντας τῆς στρατείας Ἐνετοὺς Καππάδοκας γενέσθαι. συνηγορεῖν δ’ ἀν δόξει τῷ λόγῳ τούτῳ, διότι πᾶσα ἡ πλησίον τοῦ Ἀλν-15 0.553ος Καππαδοκία ὅση παρατείνει τῇ Παφλαγονίᾳ ταῖς δυσὶ χρῆται διαλέκτοις καὶ τοῖς ὄνόμασι πλεονάξει τοῖς Παφλαγονικοῖς, Βάγας καὶ Βιάσας καὶ Αἰνιάτης καὶ Ρατώτης καὶ Ζαρδώκης καὶ Τίβιος καὶ Γάσυς καὶ Ὁλιγασυς καὶ Μάνης· ταῦτα γὰρ ἔν τε τῇ Φαξημωνίτιδι 20 καὶ τῇ Πιμωλισίτιδι καὶ τῇ Γαξηλωνίτιδι καὶ Γαξακηνῆ καὶ ἄλλαις πλείσταις χώραις ἐπικολάξει τὰ ὄνόματα. αὐτὸς δὲ ὁ Ἀπολλόδωρος παρατίθησι τὸ τοῦ Ζηνοδότου διτὶ γράφει „εἴς Ἐνετῆς, ὅθεν ἡμιόνων γένος, ἀγροτεραπάνω.“ ταύτην δέ φησιν Ἐκαταῖον τὸν Μι-25 λήσιον δέχεσθαι τὴν Ἀμισόν· ἡ δὲ Ἀμισὸς εἰρηται διότι τῶν Λευκοσύρων ἔστι καὶ ἐκτὸς τοῦ Ἀλνος.

26 Εἰρηται δὲ αὐτῷ που καὶ διότι ὁ ποιητὴς Ιστορίαν εἶχε τῶν Παφλαγόνων τῶν ἐν τῇ μεσογαλά παρὰ τῶν πεζῆς διελθόντων τὴν χώραν, τὴν παραλίαν δὲ ἡγνόει, 30 καθάπερ καὶ τὴν ἄλλην τὴν Ποντικήν· ὡνόμαξε γὰρ [ἄν] αὐτήν. τούναντίον δὲ ἔστιν ἀναστρέψαντα εἰπεῖν

ἐκ τῆς περιοδείας δρμηθέντα τῆς ἀποδοθείσης νυνέ,
ώς τὴν μὲν παραλλαν πᾶσαν ἐπελήλυθε καὶ οὐδὲν τῶν
δυτων τότε ἀξίων μνήμης παραλέλουπεν· εἰ δ' Ἡρά-
κλειαν καὶ Ἀμαστριν καὶ Σινάπην οὐ λέγει τὰς μήπω
5 συνφρισμένας οὐδὲν θαυμαστόν· τὴν δὲ μεσόγαιαν
οὐδὲν ἄτοπον εἰ μὴ εἰρηκε. καὶ τὸ μὴ ὄνομάζειν δὲ
πολλὰ τῶν γυναικίμων οὐκ ἀγνοίας ἐστὶ σημεῖον, ὅπερ
καὶ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἐπεσημηνάμεθα· ἀγνοεῖν γὰρ
αὐτὸν πολλὰ τῶν ἐνδόξων ἔφη περὶ τὸν Πόντον, οἷον
10 ποταμοὺς καὶ ἑθνη· ὄνομάσαι γὰρ ἄν. τοῦτο δ' ἐπὶ
μέν τινων σφρόδρα σημειωθῶν δοίη τις ἄν, οἷον Σκύ-
θας καὶ Μαιῶτιν καὶ Ἰστρον. οὐ γὰρ διὰ σημείων μὲν
τοὺς νομάδας εἰρηκε γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δι-
καιοτάτους ἀνθρώπους, καὶ ἔτι ἀγανοὺς ἵππημολγούς,
15 Σκύθας δὲ οὐκ ἄν εἶπεν ἡ Σαυρομάτας ἡ Σαρμάτας, εἰ
δὴ οὔτως ὀνομάζοντο [τότε] ὑπὸ τῶν Ἐλλήνων· οὐδὲ
ἄν Θρακῶν τε καὶ Μυσῶν μνησθεὶς τῶν πρὸς τῷ Ἰστρῷ
αὐτὸν παρεσίγησε μέγιστον τῶν ποταμῶν ὅντα, καὶ ἄλ-
λως ἐπιφόρως ἔχων πρὸς τὸ τοῖς ποταμοῖς ἀφορίζεσθαι
20 τοὺς τόπους, οὐδὲ ἄν Κιμμερίους λέγων παρῆκε τὸν
Βόσπορον ἡ τὴν Μαιῶτιν.

'Ἐπι δὲ τῶν μὴ οὕτω σημειωθῶν ἡ μὴ τότε ἡ μὴ 27
πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τί ἄν τις μέμφοιτο; οἷον τὸν Τά-
ναλν δι' οὐδὲν ἄλλο γυναικέμενον ἡ διότι τῆς Ἀσίας
25 καὶ τῆς Εὐρώπης ὄριόν ἐστιν· ἀλλ' οὔτε τὴν Ἀσίαν^{0.554}
οὔτε τὴν Εὐρώπην ὀνόμαξόν πω οἱ τότε, οὐδὲ διή-
ρητο οὔτως εἰς τρεῖς ἡπείρους ἡ οἰκουμένη· ὀνόμασε
γὰρ ἄν που διὰ τὸ λίαν σημειῶθες, ως καὶ τὴν Λιβύην
καὶ τὸν λίβα τὸν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων τῆς Λιβύης πνέ-
30 οντα· τῶν δ' ἡπείρων μήπω διωρισμένων οὐδὲ τοῦ
Τανάϊδος ἔδει καὶ τῆς μνήμης αὐτοῦ. πολλὰ δὲ καὶ
ἀξιομνημόνευτα μέν, οὐχ ὑπέδραμε δέ· πολὺ γὰρ δὴ

καὶ τὸ ἐπελευστικὸν εἶδος ἐν τε τοῖς λόγοις καὶ ἐν ταῖς πράξεσίν ἔστιν. ἐκ πάντων δὲ [τούτων καὶ] τῶν του-
ούτων δῆλον ἔστιν ὅτι μοχθηρῷ σημείῳ χρῆται πᾶς ὁ
ἐκ τοῦ μὴ λέγεσθαι τι ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ τὸ ἀγνοεῖσθαι
ἔκεινο ὑπ’ αὐτοῦ τεκμαιρόμενος. καὶ δεῖ διὰ πλειό- 5
νων παραδειγμάτων δεξελέγχειν αὐτὸ μοχθηρὸν ὅν·
πολλῷ γὰρ αὐτῷ κέχρηνται πολλοί. ἀνακρουστέον
οὖν αὐτοὺς προφέροντας τὰ τοιαῦτα, εἰ καὶ ταυτολο-
γήσομεν· οἶον ἐπὶ τῶν ποταμῶν εἰς τις λέγοι τῷ μὴ
ἀνομάσθαι ἀγνοεῖσθαι εὐήθη φήσομεν τὸν λόγον· 10
ὅπου γε οὐδὲ Μέλητα τὸν παρὰ τὴν Σμύρναν φέοντα
ἀνόμικε ποταμόν, τὴν ὑπὸ τῶν πλείστων λεγομένην
αὐτοῦ πατρίδα, "Ἐρμον ποταμὸν καὶ" Τίλλον ὄνομάζων,
οὐδὲ Πακτωλὸν τὸν εἰς ταῦτὸ τούτοις φειδρον ἐμβάλ-
λοντα, τὴν δ’ ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ Τιμώλου ἔχοντα οὐ μέ- 15
μηται· οὐδὲ αὐτὴν Σμύρναν λέγει, οὐδὲ τὰς ἄλλας
τῶν Ἰώνων πόλεις καὶ τῶν Αἰολέων τὰς πλείστας, Με-
λητον λέγων καὶ Λέσβον καὶ Τένεδον, οὐδὲ Αηθαῖον
τὸν παρὰ Μαγνησίαν φέοντα οὐδὲ δὴ Μαρσύαν τοὺς
εἰς τὸν Μαλανδρον ἐκδιδόντας, ἐκεῖνον ὄνομάζων καὶ 20
πρὸς τούτοις „Ρῆσόν θ’ Ἐπτάπορόν τε Κάρησόν τε
„Ροδίον τε,“ καὶ τοὺς ἄλλους, ὃν οἱ πλείους ὀχετῶν
οῦν εἰσὶ μείζους. πολλάς τε χώρας ὄνομάζων καὶ πό-
λεις τοτὲ μὲν καὶ τοὺς ποταμοὺς καὶ ὅρη συγκατα-
λέγει τοτὲ δ’ οὐ· τοὺς γοῦν κατὰ τὴν Αἰτωλίαν καὶ τὴν 25
Αττικὴν οὐ λέγει οὐδὲ ἄλλους πλείους· ἔτι δὲ καὶ τῶν
πόρων μεμνημένος τῶν ἐγγὺς σφόδρα οὐ μέμνηται,
οὐ δήπου ἀγνοῶν αὐτοὺς γνωρίμους τοῖς ἄλλοις ὅν-
τας· οὐδὲ δὴ τοὺς ἐγγὺς ἐπίσης, ὃν τοὺς μὲν ὄνομά-
ζει τοὺς δὲ οὕτω, οἶον Λυκίους μὲν καὶ Σολύμους, Με- 30

9. post ταυτολογήσομεν: τὸν λόγον. 18. post λέγων: καὶ
Σάμον

λύας δ' οὕτως, οὐδὲ Παμφύλους οὐδὲ Πισίδας· καὶ Πα-
φλαγόνας μὲν καὶ Φρύγας καὶ Μυσούς, Μαριανδυ-
νοὺς δ' οὕτως, οὐδὲ Θυνοὺς οὐδὲ Βιθυνοὺς οὐδὲ Βέ-
βρυκας· Ἀμαζόνων τε μέμνηται, Λευκοσύρων δ' οὕτως,
5 οὐδὲ Σύρων οὐδὲ Καππαδόκων οὐδὲ Λυκαόνων, Φοί-
νικας καὶ Αἴγυπτίους καὶ Αἰθίοπας θρυλῶν· καὶ Ἀλή-^{C.555}
ιον μὲν πεδίον λέγει καὶ Ἀρίμους, τὸ δὲ ἔθνος ἐν φᾶ
ταῦτα σιγῇ. ὃ μὲν δὴ τοιοῦτος ἔλεγχος ψευδῆς ἐστιν,
ὅ δ' ἀληθῆς, ὅταν δείκνυται ψεῦδος λεγόμενόν τι. ἀλλ'
10 οὐδ' ἐν τῷ τοιούτῳ κατορθῶν ἐδείχθη, ὅτε γε ἐθάρ-
ρησε πλάσματα λέγειν τοὺς ἄγανοὺς ἵππημολγούς
[καὶ] γαλακτοφάγους. τοσαῦτα καὶ πρὸς Ἀπολλόδω-
ρου· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἔξης περιήγησιν.

'Τπέρο μὲν δὴ τῶν περὶ Φαρνακίαν καὶ Τραπε- 28
15 ζοῦντα τόπων οἱ Τιβαρηνοὶ καὶ Χαλδαῖοι μέχρι τῆς μι-
κρᾶς Ἀρμενίας εἰσὶν. αὗτη δὲ ἐστὶν εὐδαιμών ἴνανῶς
χώρα· δυνάσται δὲ αὐτὴν κατεῖχον ἀεί, καθάπερ τὴν
Σιωφηνήν, τοτὲ μὲν φίλοι τοῖς ἄλλοις Ἀρμενίοις ὅντες
τοτὲ δὲ ἴδιοπραγοῦντες· ὑπηρόους δὲ εἶχον καὶ τοὺς
20 Χαλδαίους καὶ Τιβαρηνούς, ὡστε μέχρι Τραπεζοῦν-
τος καὶ Φαρνακίας διατείνειν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν. αὐξη-
θεὶς δὲ Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ καὶ τῆς Κολχίδος κα-
τέστη κύριος καὶ τούτων ἀπάντων, Ἀντιπάτρου τοῦ
Σίσιδος παραχωρήσαντος αὐτῷ. ἐπεμελήθη δὲ οὕτω
25 τῶν τόπων τούτων ὥστε πέντε καὶ ἑβδομήκοντα φρού-
ρια ἐν αὐτοῖς κατεσκευάσατο, οἵσπερ τὴν πλειστην
γάξαν * ἐνεχείρισε. τούτων δὲ ἦν ἀξιολογώτατα ταῦ-
τα, "Τδαρα καὶ Βαργοιδάριξα καὶ Σινορία, ἐπικεφυ-
κὸς τοῖς δρίοις τῆς μεγάλης Ἀρμενίας χωρίον, διόπερ
10 Θεοφάνης Συνορίαν παρωνόμασεν. ἡ γὰρ τοῦ Παρυ-
άδρου πᾶσα δρεινὴ τοιαύτας ἐπιτηδειότητας ἔχει πολ-
λὰς εὔνδρος τε οὖσα καὶ ὑλώδης καὶ ἀποτόμοις φά-

ραγξὶ καὶ κρημνοῖς διειλημμένη πολλαχόθεν· ἐτετείχιστο γοῦν ἐνταῦθα τὰ πλεῖστα τῶν γαζοφυλακίων, καὶ δὴ καὶ τὸ τελευταῖον εἰς ταύτας κατέφυγε τὰς ἐσχατιὰς τῆς Ποντικῆς βασιλείας ὁ Μιθριδάτης ἐπιόντος Πομπήιον, καὶ τῆς Ἀκιλισηνῆς κατὰ Δάστειρα εὗν-⁵ δρον ὅρος καταλαβόμενος (πλησίου δ' ἦν καὶ ὁ Εὐφράτης ὁ διορίζων τὴν Ἀκιλισηνὴν ἀπὸ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας) διέτριψε τέως ἔως πολιορκούμενος ἥναγκάσθη φυγεῖν διὰ τῶν ὁρῶν εἰς Κολχίδα κάκειθεν εἰς Βόσπορον. Πομπήιος δὲ περὶ τὸν τόπον τοῦτον πόλιν ¹⁰ ἔκτισεν ἐν τῇ μικρῷ Ἀρμενίᾳ Νικόπολιν, ἣ καὶ νῦν συμμένει καὶ οἰκεῖται καλῶς.

²⁹ Τὴν μὲν οὖν μικρὰν Ἀρμενίαν ἄλλοτ' ἄλλων ἔχοντων, ὡς ἐβούλοντο Ρωμαῖοι, τὸ τελευταῖον εἶχεν ὁ Ἀρχέλαος. τοὺς δὲ Τιβαρηνοὺς καὶ Χαλδαίους μέ-¹⁵ 555 δρι Κολχίδος καὶ Φαρνακίας καὶ Τραπεζοῦντος ἔχει Πυθοδωρίς, γυνὴ σώφρων καὶ δυνατὴ προστασθαι πραγμάτων. ἔστι δὲ θυγάτηρ Πυθοδώρου τοῦ Τραλλείωνοῦ, γυνὴ δ' ἐγένετο Πολέμωνος καὶ συνεβασίλευ-²⁰ σεν ἐκείνῳ χρόνον τινά, εἴτα διεδέξατο τὴς ἀρχῆν, τελευτήσαντος ἐν τοῖς Ἀσπουργιανοῖς καλούμενοις τῶν περὶ τὴν Σινδικὴν βαρβάρων· δυεῖν δ' ἐκ τοῦ Πολέμωνος ὄντων υἱῶν καὶ θυγατρὸς ἡ μὲν ἐδόθη Κότυν τῷ Σαπαΐῳ, δολοφονηθέντος δὲ ἐχήρευσε παῖδας ἔχου-²⁵ σα ἐξ αὐτοῦ· δυναστεύει δ' ὁ πρεσβύτατος αὐτῶν· τῶν δὲ τῆς Πυθοδωρίδος υἱῶν ὁ μὲν ἰδιώτης συνδιώ-³⁰ κει τῇ μητρὶ τὴν ἀρχήν, ὁ δὲ νεωστὶ καθέσταται τῆς μεγάλης Ἀρμενίας βασιλεύς. αὐτὴ δὲ συνφίησεν Ἀρχελάφ καὶ συνέμεινεν ἐκείνῳ μέχρι τέλους, νῦν δὲ κηρεύει, τά τε λεχθέντα ἔχουσα χωρία καὶ ἄλλα ἐκεί-

νων χαριέστερα, περὶ ᾧ ἐφεξῆς ἐροῦμεν.

³⁰ Τῇ γὰρ Φαρνακίᾳ συνεχής ἔστιν ἡ Σιδήνη καὶ ἡ

Θεμίσκυρα. τούτων δ' ή Φανάριοια ὑπέροχειται μέρος
 ἔχουσα τοῦ Πόντου τὸ ιράτιστον· καὶ γὰρ ἐλαιόφυτος
 ἔστι καὶ εὔοινος καὶ τὰς ἄλλας ἔχει πάσας ἀρετάς, εἰ
 μὲν τῶν ἑφάσι μερῶν προβεβλημένη τὸν Παρνάδον
 5 παράλληλον αὐτῇ κατὰ μῆκος, ἐκ δὲ τῶν πρὸς δύσιν
 τὸν Λιθρον καὶ τὸν Ὀφλιμον. ἔστι δ' αὐλῶν καὶ μῆ-
 κος ἔχων ἀξιόλογον καὶ πλάτος· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ἐκ
 μὲν τῆς Αρμενίας δὲ Λύκος, ἐκ δὲ τῶν περὶ Ἀμάσειαν
 στενῶν δὲ Ἰοις· συμβάλλουσι δ' ἀμφότεροι κατὰ μέ-
 10 σον που τὸν αὐλῶνα, ἐπὶ τῇ συμβολῇ δὲ ἔδρυται πόλις,
 ἣν οἱ μὲν πρῶτοι ὑποβεβλημένοι Εὐπατορίαν ἀφ' αὐ-
 τοῦ προσηγόρευσε, Πομπήιος δ' ἡμιτελῆ καταλαβάνη,
 προσθεὶς χώραν καὶ οἰκήτορας Μαγνοπολιν προσεί-
 πεν. αὕτη μὲν οὖν ἐν μέσῳ κεῖται τῷ πεδίῳ, πρὸς
 15 αὐτῇ δὲ τῇ παρωρείᾳ τοῦ Παρνάδου Κάβειρα ἔδρυ-
 ται, σταδίοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντά που νοτιωτέρα
 τῆς Μαγνοπόλεως, ὅσον καὶ Ἀμάσεια δυσμικωτέρα
 αὐτῇς ἔστιν· ἐν δὲ τοῖς Καβείροις τὰ βασίλεια Μιθρι-
 δάτου κατεσκεύαστο καὶ δὲ οὐδραλέτης καὶ τὰ ξωγρεῖα
 20 καὶ αἱ πλησίον θῆραι καὶ τὰ μέταλλα.

Ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ Καινὸν χωρίον προσαγορευ- 31
 θέν, ἐρυμνὴ καὶ ἀπότομος πέτρα, διέχουσα τῶν Κα-
 βείρων ἔλαττον ἥ διακοσίους σταδίους· ἔχει δὲ ἐπὶ τῇ
 κορυφῇ πηγὴν ἀναβάλλουσαν πολὺ ὕδωρ, πρὸς τε
 25 τῇ δίξῃ ποταμὸν καὶ φάραγγα βαθεῖαν· τὸ δὲ ὕψος
 ἔξαλσιον τῆς πέτρας ἔστι * τοῦ αὐχένος, ὥστ' ἀπολιόρ-
 κητός ἔστι· τετελχισται δὲ θαυμαστῶς πλὴν ὅσον οἱ
 Ρωμαῖοι κατέσπασαν· οὗτοι δὲ ἔστιν ἀπασα ἡ κύκλῳ
 κατάδρυμος καὶ ὀρεινὴ καὶ ἄνυδρος, ὥστ' ἐντὸς ἑκα-
 30 τὸν καὶ εἴκοσι σταδίων μὴ εἶναι δυνατὸν στρατοπεδεύ-
 σασθαι. ἐνταῦθα μὲν ἦν τῷ Μιθριδάτῃ τὰ τιμιώτατα C.557
 τῶν κειμηλίων, ἀ νῦν ἐν τῷ Καπιτωλῷ κεῖται Πομ-
 STRABO II.

πηίου ἀναθέντος. ταύτην δὴ τὴν χώραν ἔχει πᾶσαν ἡ Πυθοδωρὶς προσεγγῆ οὐσαν τῇ βαρβάρῳ τῇ ὑπ' αὐτῆς κατεχομένῃ, καὶ τὴν Ζηλεῖν καὶ Μεγαλοπολῖτιν. τὰ δὲ Κάβειρα Πομπηίου σκευάσαντος εἰς πόλιν καὶ καλέσαντος Διόσπολιν, ἐκείνη προσκατεσκεύασε καὶ Σε-5 βαστὴν μετωνόμασε, βασιλεύφ τε τῇ πόλει χρῆται. ἔχει δὲ καὶ τὸ ιερὸν Μηνὸς Φαρνάκου καλούμενον, τὴν Ἀμερίαν ιωμόπολιν πολλοὺς ιεροδούλους ἔχουσαν καὶ χώραν ιεράν, ἥν ὁ ιερώμενος ἀεὶ καρποῦται. ἐτίμησαν δ' οἱ βασιλεῖς τὸ ιερὸν τοῦτο οὕτως εἰς ὑπερβολὴν 10 ὥστε τὸν βασιλικὸν καλούμενον ὄρον τοῦτον ἀπέφην,, τύχην βασιλέως“ καὶ „Μῆνα Φαρνάκου.“ ἔστι δὲ καὶ τοῦτο τῆς σελήνης τὸ ιερόν, καθάπερ τὸ ἐν Ἀλβανοῖς καὶ τὰ ἐν Φρυγίᾳ, τό τε τοῦ Μηνὸς ἐν τῷ ὁμωνύμῳ τόπῳ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκαλον τὸ πρὸς Ἀντιοχείᾳ τῇ 15 πρὸς Πισιδίᾳ καὶ τὸ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀντιοχέων.

32 Τπέρ δὲ τῆς Φαναροίας ἔστι τὰ Κόμανα τὰ ἐν τῷ Πόντῳ, ὁμώνυμα τοῖς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ καὶ τῇ αὐτῇ θεῷ καθιερωμένα, ἀφιδρυθέντα ἐκεῖθεν, σχεδὸν δέ τι καὶ τῇ ἀγωγῇ παραπλησίᾳ κεχρημένα τῶν τε 20 ιερουργιῶν καὶ τῶν θεοφοριῶν καὶ τῆς περὶ τοὺς ιερέας τιμῆς, καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν πρὸ τοῦ βασιλέων, ἥνικα δις τοῦ ἔτους κατὰ τὰς ἔξοδους λεγομένας τῆς θεοῦ διάδημα φορῶν ἐτύγχανεν ὁ ιερεύς, καὶ ἦν δευτερος κατὰ τιμὴν μετὰ τὸν βασιλέα. 25

33 Ἐμνήσθημεν δὲ πρότερον Δορυλάου τε τοῦ ταπικοῦ, ὃς ἦν πρόπαππος τῆς μητρὸς ἡμῶν, καὶ ἀλλού Δορυλάου, ὃς ἦν ἐνείνους ἀδελφιδοῦς υἱὸς δὲ Φιλεταίρου, καὶ διότι ἐκείνος τῶν ἄλλων τιμῶν παρὰ τοῦ Εύπατρος τῶν μεγίστων τυχὼν καὶ δὴ καὶ τῆς ἐν 30 Κομάνοις ιερωσύνης ἐφωράθη τὴν βασιλείαν ἀφιστάς Ρωμαίοις· καταλυθέντος δ' ἐκείνου συνδιεβλήθη καὶ

τὸ γένος. ὁψὲ δὲ Μοαφέρης ὁ θεῖος τῆς μητρὸς ἡμῶν εἰς ἐπιφάνειαν ἥλθεν ἥδη πρὸς παταλύσει τῆς βασιλείας, καὶ πάλιν τῷ βασιλεῖ συνητύχησαν καὶ αὐτὸς καὶ οἱ ἑκείνου φίλοι, πλὴν εἴ τινες ἔφθησαν προαιπό-
5 στάντες αὐτοῦ, παθάπειρ ὁ πάπκος ἡμῶν ὁ πρὸς αὐ-
τῆς, ὃς ἴδων τὰ τοῦ βασιλέως κακῶς φερόμενα ἐν τῷ πρὸς Λεύκολλον πολέμῳ, καὶ ἀμα ἥλλοτρια μένος αὐ-
τοῦ δι' ὀργὴν, ὅτι ἀνεψιὸν αὐτοῦ Τίβιον καὶ υἱὸν ἑκε-
10 νου Θεόφιλον ἐτύγχανεν ἀπεκτονώς νεωστί, ὥρμησε
Λευκόλλον πίστεις ἀφίστησιν αὐτῷ πεντεκαΐδεκα φρούρια·
15 καὶ ἐπαγγελίαι μὲν ἐγένοντο ἀντὶ τούτων μεγά-
λαι, ἐπελθὼν δὲ Πομπήιος ὁ διαδεξάμενος τὸν πόλε-
μον πάντας τοὺς ἑκείνῳ τι χαρισμάτους ἔχθρον ὑπέ-
20 λαβεῖ διὰ τὴν γενομένην αὐτῷ πρὸς ἑκείνους ἀπέχθειαν,
διαπολεμήσας δὲ καὶ ἐπανελθὼν οἰκαδε ἔξενήησεν
25 ὥστε τὰς τιμάς, ἃς ὑπέσχετο ὁ Λεύκολλος τῶν Ποντι-
κῶν τισι, μὴ κυρῶσαι τὴν σύγκλητον· ἄδικον γὰρ
εἶναι πατορθώσαντος ἐτέρου τὸν πόλεμον τὰ βρα-
30 βεῖα ἐπ' ἄλλῳ γενέσθαι καὶ τὴν τῶν ἀριστείων δια-
νομήν.

Ἐπὶ μὲν οὖν τῶν βασιλέων οὗτοι τὰ Κόμανα διφ- 34
νείτο ὡς εἴρηται, παραλαβὼν δὲ Πομπήιος τὴν ἔξου-
σίαν Ἀρχέλαον ἐπέστησεν Ιερέα καὶ προσώρισεν αὐτῷ
25 κχώραν δισχιουνον κύκλῳ (τοῦτο δ' ἔστιν ἔξηκοντα στά-
διοι) πρὸς τῇ Ιερῷ, προστάξας τοῖς ἐνοικοῦσι πειθαρ-
χεῖν αὐτῷ· τούτων μὲν οὖν ἡγεμὸν ἦν καὶ τῶν τὴν
πόλιν οἰκούντων Ιεροδούλων κύριος πλὴν τοῦ πιπρά-
σκειν· ἥσαν δὲ οὐκ ἐλάττους οὐδὲ ἐνταῦθα τῶν ἔξα-
30 κισχιλίων. ἦν δ' οὗτος Ἀρχέλαος υἱὸς μὲν τοῦ ὑπὸ

Σύλλα καὶ τῆς συγκλήτου τιμηθέντος, φίλος δὲ Γα-
βινίου τῶν ὑπατικῶν τινος. ἐκείνου δὲ πεμφθέντος
εἰς Συρίαν ἦκε καὶ αὐτὸς ἐπ' ἐλπίδι τοῦ κοινωνήσειν
αὐτῷ παρασκευαξομένῳ πρὸς τὸν Παρθικὸν πόλεμον,
οὐκ ἐπιτρεπούσης δὲ τῆς συγκλήτου ταύτην ἀφεὶς τὴν 5
ἐλπίδα ἄλλην εὗρατο μεῖζω. ἐτύγχανε γὰρ Πτολεμαῖος
ὅτι τῆς Κλεοπάτρας πατὴρ ὑπὸ τῶν Αλγυπτίων ἐκβε-
βλημένος, θυγάτηρ δ' αὐτοῦ κατεῖχε τὴν βασιλείαν,
ἀδελφὴ πρεσβυτέρα τῆς Κλεοπάτρας· ταύτην ἔτον-
μένου ἀνδρὸς βασιλικοῦ γένους ἐνεχείρισεν ἐαυτὸν 10
τοῖς συμπράττουσι, προσποιησάμενος Μιθριδάτου τοῦ
Εὐπάτορος υἱὸς [εἰναι], καὶ παραδεχθεὶς ἐβασίλευσεν
ἢ μῆνας. τοῦτον μὲν οὖν ὁ Γαβίνιος ἀνείλεν ἐν πα-
35 ρατάξει κατάγων τὸν Πτολεμαῖον. υἱὸς δ' αὐτοῦ
τὴν Ἱερωσύνην παρέλαβεν· εἰδὼς ὕστερον Λυκομήδης, 15
φίλος καὶ τετράσχοινος ἄλλη προσετέθη· καταλυθέντος δὲ
καὶ τούτου νῦν ἔχει Δύτευτος υἱὸς Ἀδιατόφιγος, ὃς
δοκεῖ ταύτης τυγχάνειν τῆς τιμῆς παρὰ Καΐσαρος τοῦ
Σεβαστοῦ δι' ἀρετὴν. ὁ μὲν γὰρ Καΐσαρ φριαμβεύ-
σας τὸν Ἀδιατόφιγα μετὰ παιδῶν καὶ γυναικὸς ἔγνω 20
ἀναιρεῖν μετὰ τοῦ πρεσβυτάτου τῶν παιδῶν (ἥν δὲ
πρεσβύτατος οὔτος), τοῦ δὲ δευτέρου τῶν ἀδελφῶν
αὐτοῦ φήσαντος εἶναι πρεσβυτάτου πρὸς τοὺς ἀπά-
γοντας στρατιώτας, ἔρις ἦν ἀμφοτέροις πολὺν χρό-
C.559νον ἔως οἱ γονεῖς ἐπεισαν τὸν Δύτευτον παραχωρῆ-
σαι τῷ νεωτέρῳ τῆς νίκης· αὐτὸν γὰρ ἐν ἡλικίᾳ μᾶλ-
λον ὅντα ἐπιτηδειότερον κηδεμόνα τῇ μητρὶ ἔσεσθαι
καὶ τῷ λειπομένῳ ἀδελφῷ· οὕτω δὲ τὸν μὲν συναπο-
θανεῖν τῷ πατρὶ, τοῦτον δὲ σωθῆναι καὶ τυχεῖν τῆς
τιμῆς ταύτης. αἰσθόμενος γάρ, ὃς ἔοικε, Καΐσαρος 30
ἡδη τῶν ἀνθρώπων ἀνηρημένων ἡχθέσθη, καὶ τούς

γε σωζομένους εὐεργεσίας καὶ ἐπιμελείας ἀξίους ὑπέλαβε δοὺς αὐτοῖς ταύτην τὴν τιμήν.

Tὰ μὲν οὖν Κόμανα εὐανδρεῖ καὶ ἔστιν ἐμπόριον 36 τοῖς ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας ἀξιόλογον· συνέρχονται δὲ καὶ τὰ τὰς ἔξοδους τῆς θεοῦ πανταχόθεν ἐκ τε τῶν πόλεων καὶ τῆς χώρας ἀνδρες ὁμοῦ γυναικὶν ἐπὶ τὴν ἑορτὴν· καὶ ἄλλοι δὲ κατ' εὐχὴν ἀει τινες ἐπιδημοῦσι θυσίας ἐπιτελοῦντες τῇ θεῷ. καὶ εἰσιν ἀβροδίαιτοι οἱ ἐνοικοῦντες, καὶ οἰνόφυτα τὰ κτήματα αὐτῶν ἔστι πάντα, 10 καὶ πλῆθος γυναικῶν τῶν ἐργαζομένων ἀπὸ τοῦ σώματος, ὃν αἱ πλείους εἰσὶν λεγατοί. τρόπον γὰρ δὴ τινα μικρὰ Κόρινθός ἔστιν ἡ πόλις· καὶ γὰρ ἐκεῖ διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἑταίρων, αἱ τῆς Ἀφροδίτης ἥσαν λεγατοί, πολὺς ἦν ὁ ἐπιδημῶν καὶ διεορτάζων τῷ τόπῳ· οἱ δὲ 15 ἐμπορικοὶ καὶ στρατιωτικοὶ τελέως ἔξανηλίσκοντο, ὥστ' ἐπ' αὐτῶν καὶ παροιμίαν ἐκπεσεῖν τοιαύτην „οὐ παν-, „τὸς ἀνδρὸς εἰς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ τὰ μὲν δὴ Κόμανα τοιαῦτα.

Tὴν δὲ κύκλῳ πᾶσαν ἔχει Πυθοδωρίς, ἡς ἡ τε 37 20 Φανάροια ἔστι καὶ ἡ Ζηλίτις καὶ ἡ Μεγαλοπολίτις. περὶ μὲν Φαναροίας εἰρηται· ἡ δὲ Ζηλίτις ἔχει πόλιν Ζῆλα ἐπὶ χώματι Σεμιράμιδος τετευχισμένην, ἔχουσαν τὸ λεόδον τῆς Ἀναττίδος, ἥνπερ καὶ οἱ Ἀρμένιοι σέβονται. αἱ μὲν οὖν λεροποιίαι μετὰ μείζονος ἀγιστείας 25 ἐνταῦθα συντελοῦνται, καὶ τοὺς ὅρκους περὶ τῶν μεγίστων ἐνταῦθα Ποντικοὶ πάντες ποιοῦνται· τὸ δὲ πλῆθος τῶν λεροδούλων καὶ αἱ τῶν λερέων τιμαὶ παρὰ μὲν τοῖς βασιλεῦσι τὸν αὐτὸν εἶχον τύπον ὄνπερ προεπομεν, νυνὶ δὲ ἐπὶ τῇ Πυθοδωρίδι πάντ' ἔστιν. ἐνά- 30 κωσαν δὲ πολλοὶ καὶ ἐμειώσαν τό τε πλῆθος τῶν λεροδούλων καὶ τὴν ἄλλην εὐπορίαν. ἐμειώθη δὲ καὶ ἡ παρακειμένη χώρα μερισθεῖσα εἰς πλείους δυναστείας.

ἡ λεγομένη Ζηλεῖς. τὸ παλαιὸν μὲν γὰρ οἱ βασιλεῖς οὐχ ὡς πόλιν ἄλλ' ὡς ιερὸν διφύκουν τῶν Περσικῶν θεῶν τὰ Ζῆλα, καὶ ἦν ὁ ιερεὺς κύριος τῶν πάντων· ὥκειτο δ' ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ιεροδούλων καὶ τοῦ ιερέως ὅντος ἐν περιουσίᾳ μεγάλη, καὶ * τοῖς περὶ αὐτὸν οὐκ ὀλόγοις χώρα τε ὑπέκειτο ιερὰ καὶ ἦν τοῦ ιεροῦ οἰκίας. Πομπήιος δὲ πολλὰς ἐπαρχίας προσώρισε τῷ τόπῳ καὶ πόλιν ὀνόμασε καὶ ταύτην καὶ τὴν Μεγαλόπολιν, συνθεὶς ταύτην τε εἰς ἐν τὴν τε Κουλουπηνὴν καὶ τὴν Καμισηνὴν, ὁμόρους οὖσας τῇ τε μικρῷ Αρμενίᾳ καὶ τῇ Λασιανηνῇ, ἔχούσας δρυκτοὺς ἄλας καὶ ἔρυμα ἀρχαῖον τὰ Κάμισα νῦν κατεσπασμένον· οἱ δὲ μετὰ ταῦτα ἡγεμόνες τῶν Ρωμαίων τῶν δυεῖν πολιτευμάτων τούτων τὰ μὲν τοῖς Κομάνων ιερεῦσι προσένειμαν, τὰ δὲ τῷ Ζήλων ιερεῖ, τὰ δ' Ἀτεπόριγι, δυνάστη τινὶ τοῦ τετραρχικοῦ γένους τῶν Γαλατῶν ἀνδρὶ τελευτήσαντος δ' ἐκείνου ταύτην μὲν τὴν μερίδα οὐ πολλὴν οὖσαν ὑπὸ Ρωμαίων εἶναι συμβαίνει καλούμενην ἐπαρχίαν (καὶ ἔστι σύστημα καθ' αὐτὸ τὸ πολέμηνον συνοικισάντων τὰ Κάρανα, ἀφ' οὗ καὶ ἡ χώρα Καρα-20 νῖτις λέγεται), τὰ δὲ λοιπὰ ἔχει Πυθοδωρὶς καὶ ὁ Δύτευτος.

38 Λείπεται δὲ τοῦ Πόντου [τὰ] μεταξὺ ταύτης τε τῆς χώρας καὶ τῆς Ἀμισηνῶν καὶ Σινωπέων, πρός τε τὴν Καππαδοκίαν συντείνοντα καὶ Γαλάτας καὶ Πα-25 φλαγόνας. μετὰ μὲν οὖν τὴν Ἀμισηνῶν μέχρι τοῦ "Ἀλνος" ἡ Φαξημωνῖτις ἔστιν, ἦν Πομπήιος Νεαπολῖτιν· ὀνόμασε κατὰ Φαξημῶνα οώμην, [πόλιν] ἀποδείξας τὴν κατοικίαν καὶ προσαγορεύσας Νεάπολιν. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν προσάρκτιον πλευρὸν ἡ 30

1. post Ζηλεῖς: ἡ ἔχει πόλιν Ζῆλα ἐπὶ χώματι

Γαξηλωνῖτις συγκλείει καὶ ἡ τῶν Ἀμισηνῶν, τὸ δὲ
 ἐσπέριον δὲ Ἄλις, τὸ δὲ ἔφον ἡ Φανάρια, τὸ δὲ λοι-
 πὸν ἡ ἡμετέρα χώρα ἡ τῶν Ἀμασέων, πολὺ πασᾶν
 πλείστη καὶ ἀρίστη. τὸ μὲν οὖν πρὸς τὴν Φαναροίχ μέ-
 δρος τῆς Φαξημωνίτιδος λίμνη κατέχει πελαγία τὸ μέ-
 γεθος ἡ Στιφάνη καλουμένη, πολύοφος καὶ κύκλῳ
 νομὰς ἀφθόνους ἔχουσα καὶ παντοδαπάς· ἐπίκειται δὲ
 αὐτῇ φρούριον ἔρυμαν δέρημον νῦν Ἰκίζαρι, καὶ
 πλησίον βασιλειον κατεσκαμμένον· ἡ δὲ λοιπὴ ψιλὴ τὸ
 10 πλέον καὶ σιτοφόρος χώρα. ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Ἀμα-
 σέων τά τε θερμὰ ὕδατα τῶν Φαξημωνίτων ὑγιεινὰ
 σφόδρα, καὶ τὸ Σαγύλιον ἐπὶ δροῦς ὁρθίου καὶ ὑψη-
 λοῦ πρὸς ὅξειαν ἀνατείνοντος ἄκραν ἔρυμα ἰδρυμένον
 ἔχον καὶ ὑδρεῖον διαψιλές, δὲ νῦν ἀλιγώδηται, τοῖς δὲ
 15 βασιλεῦσιν ἦν χρήσιμον εἰς πολλά. ἐνταῦθα δὲ ἄλλω
 καὶ διεφθάρη ὑπὸ τῶν Φαρνάκου τοῦ βασιλέως πατέ-
 ρων Ἀρσάκης, δυναστεύων καὶ νεωτερίζων, ἐπιτρέ-
 φαντος οὐδενὸς τῶν ἡγεμόνων· ἄλλω δὲ οὐ βίᾳ τοῦ
 ἔρυματος ληφθέντος ὑπὸ Πολέμωνος καὶ Λυκομήδους,
 20 βασιλέων ἄμφοιν, ἀλλὰ λιμῷ· ἀνέφυγε γὰρ εἰς τὸ
 δρος παρασκευῆς χωρὶς εἰδργόμενος τῶν πεδίων, εὗρε
 δὲ καὶ τὰ ὑδρεῖα ἐμπεφραγμένα πέτραις ἥλιβάτοις.
 οὕτω γὰρ διετέτακτο Πομπήιος, κατασπᾶν κελεύσας·
 τὰ φρούρια καὶ μὴ ἔαν χρήσιμα τοῖς ἀναφεύγειν εἰς
 25 αὐτὰ βουλομένοις ληστηρίων χάριν. ἐκεῖνος μὲν οὖν
 οὕτω διέταξε τὴν Φαξημωνίτιν, οἱ δὲ ὕστερον βασι-
 λεῦσι καὶ ταύτην ἔνειμαν.

‘Η δὲ ἡμετέρα πόλις κεῖται μὲν ἐν φάραγγι βαθείᾳ 39
 καὶ μεγάλῃ, δι’ ἣς δὲ Ἰρις φέρεται ποταμός, κατεσκεύ-
 30 ασται δὲ θαυμαστῶς προνοιά τε καὶ φύσει, πόλεως τε
 ἄμα καὶ φρουρίου παρέχεσθαι χρείαν δυναμένη· πε-
 τρα γὰρ ὑψηλὴ καὶ περίκρημνος κατερροφγυῖα ἐπὶ τὸν

ποταμόν, τῇ μὲν ἔχουσα τὸ τεῖχος ἐπὶ τῷ χείλει τοῦ ποταμοῦ καθ' ὃ ἡ πόλις συνφύκεται, τῇ δὲ ἀνατρέχον ἑκατέρῳθεν ἐπὶ τὰς κορυφάς· δύο δὲ εἰσὶ συμφυεῖς ἀλλήλαις πεπυργωμέναι παγκάλως· ἐν δὲ τῷ περιβόλῳ τούτῳ βασίλειά τ' ἐστι καὶ μνῆματα βασιλέων.⁵ αἱ κορυφαὶ δὲ ἔχουσιν αὐχένα παντάπασι στενόν, πέντε ἥξεν σταδίων ἑκατέρῳθεν τὸ ὄψος ἀπὸ τῆς ποταμίας ἀναβαίνοντι καὶ τῶν προαστείων· ἀπὸ δὲ τοῦ αὐχένος ἐπὶ τὰς κορυφὰς ἄλλῃ σταδιαίᾳ λείπεται πρόσβασις ὁξεῖα καὶ πάσης βίας ορείττων· ἔχει δὲ καὶ ὑδρεῖα ἐν-¹⁰ τὸς ἀναφαλοετα, συρίγγων τετμημένων δυεῖν, τῆς μὲν ἐπὶ τὸν ποταμὸν τῆς δὲ ἐπὶ τὸν αὐχένα· ἐπέξευκται δὲ γέφυρα τῷ ποταμῷ μία μὲν ἀπὸ τῆς πόλεως ἐπὶ τὸ προαστεῖον, ἄλλη δὲ ἀπὸ τοῦ προαστείου πρὸς τὴν ἔξω χώραν· κατὰ γὰρ τὴν γέφυραν ταύτην ἀπο-¹⁵ λήγει τὸ ὅρος τὸ τῆς πέτρας ὑπεροκείμενον. αὐλῶν δὲ ἐστὶν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ διήκανον οὐ πλατύς τὸ πρῶτον τελέως, ἐπειτα πλατύνεται καὶ ποιεῖ τὸ Χιλιόκωμον καλούμενον πεδίον· εἰδὲν δὲ τὴν Λιακοπηνὴν καὶ τὴν Πιμωλισηνὴν χώραν πᾶσα εὐδαίμων μέχρι τοῦ "Ἀλυος. ταῦτα 20 μὲν τὰ ἀρκτικὰ μέρη τῆς τῶν Ἀμασέων χώρας, μῆκος ὅσον πεντακοσίων σταδίων· ἐπειδὲ ἔξης δὲ λοιπὴ πολὺ ταύτης ἐπικηκεστέρα μέχρι τοῦ Βαβανόμου καὶ τῆς Ειμήνης, ἣ περ καὶ αὐτὴ καθήκει μέχρι πρὸς τὸν "Ἀλυν· τοῦτο μὲν δὴ τὸ μῆκος, πλάτος δὲ τὸ ἀπὸ τῶν 25 ἀρκτων πρὸς νότον ἐπὶ τε τὴν Ζηλαῖτιν καὶ τὴν μεγάλην Καππαδοκίαν μέχρι τῶν Τροκμῶν. εἰσὶ δὲ ἐν τῇ Ειμήνῃ ἄλλαι ὁρυκτῶν ἀλῶν, ἀφ' ᾧν εἰκάζουσιν εἰ-οησθαι "Ἀλυν τὸν ποταμόν. ἔστι δὲ καὶ ἐρύματα πλειω κατεσκαμμένα ἐν τῇ ἡμετέρᾳ χώρᾳ καὶ ἐρημος γῆ πολ-³⁰ λὴ διὰ τὸν Μιθριδατικὸν πόλεμον. ἔστι μέντοι πᾶσα μὲν εὔδεινδρος, ἡ δὲ ἐπικόβοτος καὶ τοῖς ἄλλοις θρεμ-

μασι προσφορος· ἅπασα δ' οἰκήσιμος καλῶς. ἐδόθη
δὲ καὶ ἡ Ἀμάσεια βασιλεῦσι, νῦν δ' ἐπαρχία ἐστι.

Λοιπὴ δ' ἐστὶν ἡ ἐκτὸς Ἀλυος χώρα τῆς Ποντικῆς 40
ἐπαρχίας ἡ περὶ τὸν Ὁλγασσον, συναφὴς τῇ Σινωπίδι. 0.562
5 ἔστι δ' ὁ Ὁλγασσος ὄρος σφόδρα ὑψηλὸν καὶ δύσβα-
τον· καὶ λερὰ τοῦ ὄρους τούτου πανταχοῦ καθιδρυ-
μένα ἔχουσιν οἱ Παφλαγόνες. περίκειται δ' ἵκανως
χώρα ἀγαθὴ ἡ τε Βλατηνὴ καὶ ἡ Δομανῖτις, δι' ἣς
Ἀμνίας φει ποταμός. ἐνταῦθα Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ
10 τὰς Νικομήδους τοῦ Βιθυνοῦ δυνάμεις ἀρδην ἡφάνι-
σεν, οὐκ αὐτὸς παρατυχὼν ἀλλὰ διὰ τῶν στρατηγῶν·
καὶ ὁ μὲν φεύγων μετ' ὀλίγων εἰς τὴν οἰκείαν ἐσώθη
κάκειθεν εἰς Ἰταλίαν ἐπλευσεν, ὁ δ' ἡκολούθησε καὶ
τὴν τε Βιθυνίαν εἶλεν ἐξ ἐφόδου καὶ τὴν Ἀσίαν κατέ-
15 σκε μέχρι Καρίας καὶ Λυκίας. κάνταῦθα δ' ἀπεδείχθη
πόλις ἡ Πομπηιούπολις· ἐν δὲ τῇ πόλει ταύτῃ τὸ σαν-
δαρακονοργεῖον οὐ πολὺ ἀπωθεν Πιμωλίσων, φρου-
ρίου βασιλικοῦ κατεσκαμμένου, ἀφ' οὗ ἡ χώρα ἡ ἐκα-
τέρῳθεν τοῦ ποταμοῦ καλεῖται Πιμωλισηνή. τὸ δὲ
20 σανδαρακονοργεῖον ὄρος κοιλόν ἐστιν ἐκ τῆς μεταλλείας,
ὑπεληλυθότων αὐτὸ τῶν ἐργαζομένων διώρυξι μεγά-
λαις· εἰργάζοντο δὲ δημοσιῶναι μεταλλευταῖς χρώ-
μενοι τοῖς ἀπὸ κακουργίας ἀγοραζομένοις ἀνδραπό-
δοις· πρὸς γὰρ τῷ ἐπιπόνῳ τοῦ ἐργού καὶ θανάσιμον
25 καὶ δύσοιστον εἶναι τὸν ἀέρα φασὶ τὸν ἐν τοῖς μεταλ-
λοῖς διὰ τὴν βαρύτητα τῆς τῶν βώλων ὁδμῆς, ὥστε
ἀκύμορα εἶναι τὰ σώματα. καὶ δὴ καὶ ἐκλείπεσθαι
συμβαίνει πολλάκις τὴν μεταλλείαν διὰ τὸ ἀλυσιτελές,
πλειόνων μὲν ἡ διακοσίων ὄντων τῶν ἐργαζομένων,
30 συνεχῶς δὲ νόσοις καὶ φθοραῖς δαπανωμένων. τοσαῦ-
τα καὶ περὶ τοῦ Πόντου εἰργήσθω.

Μετὰ δὲ τὴν Πομπηιούπολιν ἡ λοιπὴ τῆς Παφλα- 41

γονίας ἐστὶ τῆς μεδογαίας μέχρι Βιθυνίας ιοῦσι πρὸς δύσιν. ταύτης δὲ καίπερ ὀλύρης οὔσης μικρὸν μὲν πρὸ δῆμῶν ἥρχον πλείους, υῦν δ' ἔχουσι Ρωμαῖοι τοῦ γένους τῶν βασιλέων ἑκλιπόντος. ὄνομάζουσι δ' οὖν τὴν ὄμορον τῇ Βιθυνίᾳ Τιμωνῖτιν καὶ τὴν Γέζατόριγος 5 καὶ Μαρμαλίτιν τε καὶ Σανισηνὴν καὶ Ποταμίαν· ἦν δέ τις καὶ Κιμιατηνή, ἐν ᾧ τὰ Κιμίατα, φρούριον ἔρυμνόν, ὑποκείμενον τῇ τοῦ Ολγάσσου οὔρεινῃ, ὃς χρησάμενος ὄρμητηρίῳ Μιθριδάτης ὁ κτίστης προσαγορευθεὶς κατέστη τοῦ Πόντου κύριος, καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ 10 τὴν διαδοχὴν ἐφύλαξαν μέχρι τοῦ Εὐπάτορος. ὑστατος δὲ τῆς Παφλαγογίας ἥρξε Αηιόταρος, Κάστορος υἱὸς ὁ προσαγορευθεὶς φιλάδελφος, τὸ Μορξέου βαστείων ἔχων τὰ Γάγγρα πολισμάτιον ἄμα καὶ φρούριον.

42 Εὔδοξος δ' ὁρικτοὺς ἰχθῦς ἐν Παφλαγονίᾳ λέ- 15
C.563γων ἐν ξηροῖς τόποις οὐδιορίζει τὸν τόπον, ἐν ὑγροῖς δὲ περὶ τὴν Ἀσκανίαν λίμνην φησὶ τὴν ὑπὸ Κίρω, λέγων οὐδὲν σαφές.

'Ἐπεὶ δὲ καὶ τὴν ὄμορον τῷ Πόντῳ Παφλαγονίαν ἐκτιθέμεθα, τοῖς δὲ Παφλαγόσιν ὄμοροῦσιν οἱ Βιθυ- 20 νοὶ πρὸς δύσιν, πειρασόμεθα καὶ τὰ τούτων ἐπελθεῖν· ἔπειτα λαβόντες ἀρχὴν ἄλλην ἐκ τε τούτων καὶ τῶν Παφλαγόνων τὰ ἔξης τούτων τὰ πρὸς νότον μέχρι τοῦ Ταύρου συνυφανοῦμεν τὰ παραλληλα τῷ Πόντῳ καὶ τῇ Καππαδοκίᾳ· τοιαύτην γάρ τινα ὑπογράφει τάξιν 25 καὶ μερισμὸν ἡ τῶν τόπων φύσις.

4 Τὴν δὲ Βιθυνίαν ἀπὸ μὲν τῆς ἀνατολῆς ὁρίζουσι Παφλαγόνες τε καὶ Μαρμανδυνοὶ καὶ τῶν Ἐπικτήτων τινές, ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ἡ Ποντικὴ θάλαττα ἡ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σαγγαρίου μέχρι τοῦ στόματος τοῦ 30 κατὰ Βιζάντιον καὶ Χαλκηδόνα, ἀπὸ δὲ δύσεως ἡ Προποντίς, πρὸς νότον δ' ἡ τε Μυσία καὶ ἡ ἐπίκτητος κα-

λοιμένη Φρυγία, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Ἑλλησποντιακὴ Φρυγία καλούμενη.

Ταῦτης δ' ἐπὶ μὲν τῷ στόματι τοῦ Πόντου Χαλ- 2
κηδὼν ἔδρυται, Μεγαρέων κτίσμα, καὶ κάμη Χρυσό-
5 πολις καὶ τὸ οἰκοδόμιον, ἔχει δ' ἡ χώρα μι-
κρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης κρήνην *Ἀξαριτίαν, τρέφου-
σαν υδροκοδείλους μικρούς· ἐπειτ' ἐνδέχεται τὴν τῶν
Χαλκηδονίων ἥδινα ὁ Ἀστακηνὸς καλούμενος κόλπος,
μέρος ὧν τῆς Προποντίδος, ἐν φῖ ἡ Νικομήδεια ἔκτι-
10 σται ἐπάνυμος ἐνὸς τῶν Βιθυνικῶν βασιλέων τοῦ
κτίσαντος αὐτὴν· πολλοὶ δ' ὀνομάσθησαν,
καθάπερ Πτολεμαῖοι διὰ τὴν τοῦ πρώτου δόξαν. ἦν δ'
ἐν αὐτῷ τῷ κόλπῳ καὶ Ἀστακὸς πόλις, Μεγαρέων κτί-
σμα καὶ Ἀθηναίων καὶ μετὰ ταῦτα Δοιδαλσοῦ, ἀφ'
15 ἦς καὶ ὁ κόλπος ὀνομάσθη· κατέσκαψῃ δ' ὑπὸ Λυσι-
μάχου· τοὺς δ' οἰκήτορας μετήγαγεν εἰς Νικομήδειαν
· δικτύας αὐτὴν.

Τῷ δ' Ἀστακηνῷ κόλπῳ ἄλλος συνεχής ἐστιν, 3
εἰσέχων μᾶλλον πρὸς ἀνίσχοιτα ἥλιον, ἐν φῖ Προυσιὰς
20 ἐστιν ἡ Κίος πρότερον ὀνομασθεῖσα· κατέσκαψε δὲ
τὴν Κίον Φίλιππος, ὁ Δημητρίου μὲν υἱὸς Περσέως
δὲ πατήρ, ἔδωκε δὲ Προυσίᾳ τῷ Ζήλᾳ, συγκατασκά-
ψαντι καὶ ταύτην καὶ Μύροις ἀστυγείτονα πόλιν,
πλησίον δὲ καὶ Προύσης οὖσαν· ἀναλαβὼν δ' ἐκεῖνος
25 ἐκ τῶν ἔρειπίων αὐτὰς ἐπωνόμασεν ἀφ' ἐαυτοῦ μὲν
Προυσιάδα πόλιν τὴν Κίον, τὴν δὲ Μύροις Απά-
μειαν ἀπὸ τῆς γυναικός. οὗτος δ' ἐστιν ὁ Προυσίας
ὅ καὶ Ἀννιβαν δεξάμενος ἀναχωρήσαντα δεῦρο μετὰ
τὴν Ἀντιόχου ἥτταν, καὶ τῆς ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας
30 ἀναστὰς κατὰ συμβάσεις τοῖς Ἀτταλικοῖς, ἦν οἱ μὲν
πρότερον ἐκάλουν μικρὰν Φρυγίαν, ἐκεῖνοι δ' ἐπ-
ιτητον ὀνόμασαν· ὑπέροχειται δὲ τῆς Προυσιάδος ὄρος. 564

δικαίους τούς οὓς πεποιημένους τὴν Ἑρακλέους ἐταῖχον συμπλεύσαντα ἐπὶ τῆς Ἀργοῦς αὐτῷ ἔξιόντα δὲ ἐπὶ ὑπὸ νυμφῶν ἀρπαγῆναι· Κίον δὲ καὶ τοῦτον Ἑρακλέους ἐταῖχον καὶ σύμπλουν ἐπανελθόντα ἐπὶ Κόλχων αὐτόθι κατα- 5 μεῖναι καὶ πτίσαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον αὐτοῦ. καὶ νῦν δ' ἔτι ἐօρτή τις ἄγεται παρὰ τοῖς Προυσιεῦσιν καὶ ὁρεί- βασίᾳ θιασεύσοντων καὶ καλούντων Ἄλαν, ὡς ἂν κατὰ 10 ξήτησιν τὴν ἐκείνου πεποιημένων τὴν ἐπὶ τὰς Ὂλας ἔξοδον. πολιτευσάμενοι δὲ πρὸς Ρωμαίους οἱ Πρού- 15 σιεῖς εὐνοιῶς ἐλευθερίας ἔτυχον. οἱ δ' Ἀπαμεῖς ἀπο- ικαν ἐδέξαντο Ρωμαίων. Προῦσα δὲ ἐπὶ τῷ Ὁλύμπῳ ἰδρυται τῷ Μυσῶφῃ, πόλις εὐνομουμένη, τοῖς τε Φρυξεῖν δημορος καὶ τοῖς Μυσοῖς, πτίσμα Προυσίου τοῦ πρὸς * Κροῖσον πολεμήσαντος.

- 4 Διορίσαι δὲ τοὺς ὅρους χαλεπὸν τούς τε Βιθυνῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Μυσῶν καὶ ἔτι Δολιόνων τῶν περὶ Κύζικον καὶ Μνυδόνων καὶ Τρώων· καὶ διότι μὲν εἶναι δεῖ ἔκαστον φῦλον χωρὶς δμοιλογεῖται (καὶ ἐπὶ γε τῶν Φρυγῶν καὶ τῶν Μυσῶν καὶ παροιμιάζονται 20 „χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυγῶν ὅρίσματα“), διορίσαι δὲ χαλεπόν. αἴτιον δὲ τὸ τοὺς ἐπήλυδας βαρβάρους καὶ στρατιώτας ὄντας μὴ βεβαίως κατέχειν τὴν κρατηθεῖ- σαν, ἀλλὰ πλανήτας εἶναι τὸ πλέον ἐκβάλλοντας καὶ ἐκβαλλομένους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔδυτη ταῦτα Θράκια 25 τις εἰκάζοι ἄν διὰ τὸ τὴν περούλαν νέμεσθαι τούτους καὶ διὰ τὸ μὴ πολὺ ἔξαλλάττειν ἀλλήλων ἐκατέρους. Ἡ δύως δ' ἐφ' ὅσον εἰκάζειν οἶόν τε, τῆς μὲν Βιθυ- νίας μέσην ἄν τις θελῇ καὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Αἰσηπού τὴν Μυσίαν, ἀπτομένην τῆς θαλάττης καὶ διήκονσαν 30 μέχοι τοῦ Ὁλύμπου σχεδόν [τι] παντός· κύνλωφ δὲ τὴν Ἐπίκτητον κειμένην ἐν τῇ μεσογαίᾳ, θαλάττης οὐδα-

μοῦ ἀπτομένην διατεινουσαν δὲ μέχρι τῶν ἔφων μερῶν τῆς Ἀσκανίας λίμνης τε καὶ χώρας· ὅμωνύμως γὰρ τῇ λίμνῃ καὶ ἡ χώρα ἐλέγετο, καὶ ἦν αὐτῆς τὸ μὲν Φρύγιον τὸ δὲ Μύσιον ἀπωτέρω δὲ τῆς Τροίας τὸ Φρύγιον· καὶ δὴ καὶ οὕτω δεκτέον τὸ παρὰ τῷ ποιητῇ ὅταν φῇ „Φόρκυς δ’ αὖ Φρύγας ἦγε καὶ Ἀσκάνιος θεοειδής,
 „τῇλ’ ἐξ Ἀσκανίης,“ τῆς Φρυγιακῆς, ὡς οὕσης ἐγγυτέρῳ ἄλλης Ἀσκανίας Μυσιακῆς τῆς πρὸς τῇ νῦν Νικαιά, ἥς μέμνηται ὅταν φῇ „Πάλμυν τ’ Ἀσκάνιόν τε
 10 „Μόρουν δ’, υἱὸν Ἰπποτίωνος, Μυσῶν ἀγχεμάχων ἥγη-
 „τορα, οὐδὲ δ’ ἐξ Ἀσκανίης ἐφιβώλαιος ἥλθον ἀμοι-
 „βοι.“ οὐδὲ θαυμαστὸν δ’ εἰ τῶν Φρυγῶν εἰπών τινα
 ἥγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας ἥκουντα, καὶ Μυ-
 σῶν τινα λέγει ἥγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας
 15 ἥκουντα· πολλὴ γὰρ ἡ ὁμωνυμία παρ’ αὐτῷ καὶ ἡ ἀπὸ τῶν ποταμῶν καὶ λιμνῶν καὶ χωρίων ἐπίκλησις.

Καὶ τὸν Αἴσηπον δὲ τῶν Μυσῶν ὄριον παραδί- 8
 δωσιν αὐτὸς ὁ ποιητής· τὴν γὰρ ὑπὲρ τοῦ Ἰλίου πα-
 ρώρειαν τῆς Τροίας καταλέξεις τὴν ὑπὲρ Αἰγαίας ἧν Δαρ-
 20 δανίαν ἐκάλεσε, τίθησιν ἐφεξῆς πρὸς ἄρκτον καὶ τὴν Λυκίαν τὴν ὑπὲρ Πανδάρῳ ἐν ἣν ἡ Ζέλεια· καὶ φησὶν
 „οὐδὲ Ζέλειαν ἔναιον ὑπαὶ πόδα νείατον“ Ιδης, ἀφρει-
 „οί, πίνοντες ὕδωρ μέλαν Αἰσήποιο Τρῶες.“ τῇ δὲ Ζε-
 λείᾳ ὑποπέπτωκε πρὸς θαλάττη ἐπίτεαδε τοῦ Αἰσήπου
 25 τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίον καὶ Τήρεια καὶ ἡ Πιτύα καὶ
 καθόλου ἡ νῦν Κυζικηνὴ ἡ πρὸς Πριάπῳ ἡν ἐφεξῆς
 καταλέγει, εἴτα ἀνάκαμπτει πάλιν ἐπὶ τὰ πρὸς ἔω μέρη
 καὶ τὰ ἐπέκεινα, ὥστε ἐμφαίνει τὴν μέχρι Αἰσήπου πέ-
 ρας ἥγονύμενος τῆς Τρωάδος τὸ ἀρκτικὸν καὶ ἐψον.
 30 ἄλλὰ μὴν μετά γε τὴν Τρωάδα ἡ Μυσία ἐστὶ καὶ ὁ
 Ὄλυμπος.

Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ μνήμη τοιαύτην τινὰ ὑπαγο-

φεύει τὴν τῶν ἔθνων θέσιν. αἱ δὲ νῦν μεταβολαὶ ταὶ πολλὰ ἐξήλαξαν, ἄλλοτ’ ἄλλων ἐπικρατούντων καὶ τὰ μὲν συγχεόντων τὰ δὲ διασπάντων. καὶ γὰρ Φρύγες ἐπεκράτησαν καὶ Μυσοὶ μετὰ τὴν Τροίας ἀλωσιν, εἰδ’ ὑστερον Λυδοὶ καὶ μετ’ ἐκείνων Λιὸλεῖς καὶ⁵ Ιω-
νεῖς, ἐπειτα Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, τελευταῖοι δὲ Ρωμαῖοι, ἐφ’ ᾧ δὴ τὰς διαλέκτους καὶ τὰ δυνόματα ἀποβεβλήκασιν οἱ πλεῖστοι, γεγονότος ἐτέρου τινὸς μερισμοῦ τῆς χώρας, οὐ μᾶλλον φροντίσαι δεῖ τὰ νῦν οἵτι λέγοντας, τῇ δὲ ἀρχαιολογίᾳ μετρίως προσ-¹⁰ ἔχοντας.

- 7 Ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς Βιθυνίας τό τε Βιθύνιον ἔστιν ὑπεροχέμενον τοῦ Τισίου καὶ ἔχον τὴν περὶ Σάλωνα χώραν ἀρίστην βούβοσσοις, ὅθεν ἔστιν ὁ Σαλωνίτης τυρός, καὶ Νίκαια ἡ μητρόπολις τῆς Βιθυνίας¹⁵ ἐπὶ τῇ Ἀσκανίᾳ λίμνῃ (περίειται δὲ κύκλῳ πεδίον μέγα καὶ σφρόδρᾳ εῦδαιμον, οὐ πάνυ δὲ ὑγιεινὸν τοῦ θέροντος), κτίσμα Ἀντιγόνου μὲν πρῶτον τοῦ Φιλίππου, ὃς αὐτὴν Ἀντιγόνειαν προσεῖπεν, εἰτα Λυσιμάχου, ὃς ἀπὸ τῆς γυναικὸς μετωνόμασε Νίκαιαν· ἥν δ'²⁰ αὔτη θυγάτηρ Ἀντιπάτρου. ἔστι δὲ τῆς πόλεως ἕκκαιδεκαστάδιος ὁ περίβολος ἐν τετραγωνῷ σχήματι· ἔστι δὲ καὶ τετράπυλος ἐν πεδίῳ κείμενος ἐρρυμοτομημένος²⁵ 0.566πρὸς ὁρθὰς γωνίας, ὥστ’ ἀφ’ ἐνὸς λίθου κατὰ μέσον ἰδρυμένον τὸ γυμνάσιον τὰς τέτταρας ὁρᾶσθαι πύλας. μικρὸν δ’ ὑπὲρ τῆς Ἀσκανίας λίμνης Ὁτροία πολίχνη,³⁰ πρὸς τοὺς ὅροις ἥδη τῆς Βιθυνίας τοῖς πρὸς ἔω· εἰκάζουσι δ’ ἀπὸ Ὁτρέως Ὁτροίαν καλεῖσθαι * πρότερον.
- 8 “Οτι δ’ ἥν κατοικία Μυσῶν ἡ Βιθυνία πρῶτον μαρτυρήσει Σκύλαξ ὁ Καρυανθεὺς φῆσας περιοικεῖν τὴν Ἀσκανίαν λίμνην Φρύγας καὶ Μυσούς, ἐπειτα Σιονύσιος ὁ τὰς κτίσεις συγχράψας, ὃς τὰ κατὰ Χαλ-

ηηδόνα καὶ Βυξάντιου στενά, ἀ νῦν Θράκιος Βόσπορος
καλεῖται, πρότερον φησι Μύσιον Βόσπορον προσαγο-
ρεύεσθαι· τοῦτο δ' ἀν τις καὶ τοῦ Θράκας εἶναι τοὺς
Μυσοὺς μαρτύριον θείη· δὲ τε Εὐφορίων „Μυσοῖο
5 „παρ' ὑδασιν Ἀσκανίοιο“ λέγων, καὶ ὁ Αἰτωλὸς Ἀλέ-
ξανδρος „οἱ καὶ ἐπ' Ἀσκανίων δώματ' ἔχουσι φῶν
„λίμνης Ἀσκανίης ἐπὶ χείλεσιν, ἐνθα Δολίων νήσος Σι-
„ληνοῦ υάσσατο καὶ Μελίης,“ τὸ αὐτὸ δικαστυροῦ-
σιν, οὐδαμοῦ τῆς Ἀσκανίας λίμνης εὑρισκομένης ἀλλ'
10 ἐνταῦθα μόνον.

“Ανδρες δ' ἀξιόλογοι κατὰ παιδείαν γεγόνασιν ἐν 9
τῇ Βιθυνίᾳ Ξενοκράτης τε ὁ φιλόσοφος καὶ Διονύσιος
διαλεκτικὸς καὶ Ἰππαρχος καὶ Θεοδόσιος καὶ οἱ παι-
δεῖς αὐτοῦ μαθηματικὸς Κλεοχάρης τε φήτῳ δ [τε]
15 Μυρλεανὸς Ἀσκληπιάδης [γραμματικὸς] Ιατρός [τε] δ
Προνοσιεύς.

Πρὸς νότον δ' εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς οἱ περὶ τὸν 10
“Ολυμπὸν Μυσοὶ (οὓς Ολυμπιηνοὺς καλοῦσι τινες, οἱ
δ' Ἐλλησποντίους) καὶ ἡ ἐφ' Ἐλλησπόντῳ Φρυγία,
20 τοῖς δὲ Παφλαγόσι Γαλάται· ἀμφοτέρων τε τούτων
ἔτι πρὸς νότον ἡ μεγάλη Φρυγία καὶ Λυκαονία μέχρι
τοῦ Ταύρου τοῦ Κιλικίου καὶ τοῦ Πισιδικοῦ. ἐπεὶ δὲ
τὰ τῇ Παφλαγονίᾳ συνεχῇ παράπειται τῷ Πόντῳ καὶ
τῇ Καππαδοκίᾳ καὶ τοῖς ἥδη περιωδευμένοις ἔθνεσιν,
25 οἰκεῖον ἀν εἴη τὰ τούτοις γειτονοῦντα μέρη προσαπο-
δοῦναι πρῶτον, ἐπειτα τοὺς ἔξης τόπους παραδεῖξαι.

Πρὸς νότον τούννυν εἰσὶ τοῖς Παφλαγόσι Γαλάται· 3
τούτων δ' ἔστιν ἔθνη τρία, δύο μὲν τῶν ἡγεμόνων
ἐπώνυμα, Τροκμὸς καὶ Τολιστοβάγιοι, τὸ τρίτον δ'
30 ἀπὸ τοῦ ἐν Κελτικῇ ἔθνους Τεκτόβαγες. κατέσχον δὲ
τὴν χώραν ταύτην οἱ Γαλάται πλανηθέντες πολὺν χρό-
νον καὶ καταδραμόντες τὴν ὑπὸ τοῖς Ἀτταλικοῖς βασι-

λεῦσι χώραν καὶ τοῖς Βιθυνοῖς, ἔως παρ' ἐκόντων Ἐλα-
βον τὴν νῦν Γαλατίαν καὶ Γαλλογραικίαν λεγομένην.

ἀρχηγὸς δὲ δοκεῖ μάλιστα τῆς περαιώσεως τῆς εἰς τὴν
C.567' Ασίαν γενέσθαι Λεοννόριος. τριῶν δὲ ὄντων ἐθνῶν
ὅμογλώττων καὶ κατ' ἄλλο οὐδὲν ἔξηλλα γμένων, ἕπα-
στον διελόντες εἰς τέτταρας μερίδας τετραρχίαν ἐπά-
στην ἐκάλεσαν, τετράρχην ἔχουσαν ἰδιουν καὶ δικαστὴν
ἔνα καὶ στρατοφύλακα ἔνα ὑπὸ τῷ τετράρχῃ τεταγμέ-
νους, ὑποστρατοφύλακας δὲ δύο. ἡ δὲ τῶν δώδεκα
τετραρχῶν βουλὴ ἀνδρες ἦσαν τριακόσιοι, συνήγοντο 10
δὲ εἰς τὸν καλούμενον Δουνέμετον. τὰ μὲν οὖν φονιὰ
ἡ βουλὴ ἐκρινε, τὰ δὲ ἄλλα οἱ τετράρχαι καὶ οἱ δικα-
σται. πάλιι μὲν οὖν ἦν τοιαύτη τις ἡ διάταξις, καθ'
ἡμᾶς δὲ εἰς τρεῖς, εἰτ' εἰς δύο ἡγεμόνας, εἰτα εἰς ἔνα
ἡκαν ἡ δυναστεία, εἰς Δηιόταρον, εἰτα ἐκεῖνον διεδέ- 15
ξατο Ἀμύντας· νῦν δ' ἔχουσι Ρωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ
τὴν ὑπὸ τῷ Ἀμύντᾳ γενομένην πᾶσαν εἰς μίαν συνα-
γαγόντες ἐπαρχίαν.

2 "Ἐχουσι δὲ οἱ μὲν Τροκμοὶ τὰ πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ
τῇ Καππαδοκίᾳ· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ κράτιστα ὡν νέμουν- 20
ται Γαλάται· φρούρια δ' αὐτοῖς τετελέχισται τοία, Τά-
σιον, ἐμπόριον τῶν ταύτη, ὃπου δὲ τοῦ Διὸς κολοσσὸς
χαλκοῦς καὶ τέμενος αὐτοῦ ἄσυλον, καὶ Μιθριδάτιον,
δὲ ἔδωκε Πομπήιος * Βογοδιατάρῳ τῆς Ποντικῆς βασι-
λείας ἀφορίσας, τρίτον δέ πω Δανάλα, ὃπου τὸν σύλ- 25
λογον ἐποιήσαντο Πομπήιος τε καὶ Λεύκολλος, ὁ μὲν
ἥκων ἐπὶ τὴν τοῦ πολέμου διαδοχὴν δὲ παραδιδοὺς
τὴν ἔξουσίαν καὶ ἀπαίρων ἐπὶ τὸν θρόνον. Τροκμοὶ
μὲν δὴ ταῦτ' ἔχουσι τὰ μέρη, Τεκτόσαγες δὲ τὰ πρὸς
τῇ μεγάλῃ Φρυγίᾳ τῇ κατὰ Πεσσινοῦντα καὶ Ὁρκαόρ- 30
κους· τούτων δ' ἦν φρούριον "Ἄγκυρα ὁμώνυμος τῇ
πρὸς Λυδίᾳ περὶ Βλαῦδον πολίχνη Φρυγιακῇ. Τολι-

στοβάγιοι δὲ διοροι Βιθυνοὶ εἰσὶ καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ
καλουμένῃ Φόργίᾳ· φρούρια δὲ αὐτῶν ἔστι τό τε
* Βλούκιον καὶ τὸ Πήιον, ὃν τὸ μὲν ἦν βασίλειον Δη-
ιοτάρου, τὸ δὲ γαζοφυλάκιον.

5 Πεσσινοῦς δὲ ἔστιν ἐμπόριον τῶν ταύτης μέγιστον, 3
Ιερὸν ἔχον τῆς μητρὸς τῶν θεῶν σεβασμοῦ μεγάλου
τυγχάνον· καλοῦσι δὲ αὐτὴν Ἀγδιστιν. οἱ δὲ Ιερεῖς τὸ
παλαιὸν μὲν δυνάσται τινὲς ἥσαν, Ιερωσύνην καρπού-
μενοι μεγάλην, υπὸ δὲ τούτων μὲν αἱ τιμαὶ πολὺ με-
10 μείωνται, τὸ δὲ ἐμπόριον συμμένει· κατεσκεύασται
δὲ ὑπὸ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων Ιεροπορεπᾶς τὸ τέμε-
νος ναῷ τε καὶ στοαῖς λευκολίθοις· ἐπιφανὲς δὲ ἐποίη-
σαν Ῥωμαῖοι τὸ Ιερόν, ἀφίδρουμα ἐνθένδε τῆς θεοῦ με-
ταπεμψάμενοι κατὰ τοὺς τῆς Σιβύλλης χοησμούς, κα-
15 θάπερ καὶ τοῦ Ἀσκληπιοῦ τοῦ ἐν Ἐπιδαύρῳ. ἔστι δὲ
καὶ δῆρος ὑπερκείμενον τῆς πόλεως τὸ Αἰνδυμον, ἀφ'
οὗ ἡ Αἰνδυμηνή, καθάπερ ἀπὸ τῶν Κυβέλων ἡ Κυ-
βέλη. πλησίον δὲ καὶ ὁ Σαγγάριος ποταμὸς ποιεῖται
τὴν δύσιν· ἐπὶ δὲ τούτῳ τὰ παλαιὰ τῶν Φοργῶν οἱ-0.568
20 κητήρια Μίδου καὶ ἔτι πρότερον Γορδίου καὶ ἄλλων
τινῶν, οὐδὲ ἔχνη σώζοντα πόλεων, ἀλλὰ ιωῶμαι μικρῷ
μείζους τῶν ἄλλων, οἴόν ἔστι τὸ Γόρδιον καὶ Γορβε-
οῦς, τὸ τοῦ Κάστορος βασίλειον τοῦ Σασιονδάρου,
ἐν φᾶ γαμβρὸν ὄντα τούτον ἀπέσφαξε Δηιόταρος καὶ
25 τὴν δυγατέρα τὴν ἑαυτοῦ· τὸ δὲ φρούριον κατέσπασε
καὶ διελυμήνατο τὸ πλείστον τῆς κατοικίας.

Μετὰ δὲ τὴν Γαλατίαν πρὸς νότον ἡ τε λίμνη 4
ἔστιν ἡ Τάττα, παρακειμένη τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ
τῇ κατὰ τοὺς Μοριμηνούς, μέρος δὲ οὗσα τῆς μεγάλης
30 Φοργίας, καὶ ἡ συνεχὴς ταύτη μέχρι τοῦ Ταύρου, ἡς
τὴν πλείστην Ἀμύντας εἶχεν. ἡ μὲν οὖν Τάττα ἀλοπή-
γιόν ἔστιν αὐτοφυές, οὕτω δὲ περικήττεται φαδίως

τὸ ὕδωρ παντὶ τῷ βαπτισθέντι εἰς αὐτὸν ἔστε στεφάνους ἀλῶν ἀνέλκουσσιν, ἐπειδὰν καθὼσι κύκλου σχοινινον, τά τε ὅρνα ἀλίσκεται τὰ προσαψάμενα τῷ πτερόφωμα τοῦ ὕδατος παραχοῆμα πίπτοντα διὰ τὴν περίπηξιν τῶν ἀλῶν.

5

6 Ή τε δὴ Τάττα [τοιαύτη] ἔστι, καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Πιτνισσὸν καὶ τὰ τῶν Λυκαόνων ὁροπέδια ψυχρὰ καὶ ψιλὰ καὶ ὀναγρούστα, ὑδάτων δὲ σπάνις πολλή· ὅπου δὲ καὶ εὑρεῖν δυνατόν, βαθύτατα φρέσατα τῶν πάντων, καθάπερ ἐν Σοάτροις, ὅπου καὶ περίπατος ἔσται τὸ ὕδωρ (ἔστι δὲ καμόπολις Γαρσαούρων πλησίον). ὅμως δὲ καίπερ ἄνυδρος οὖσα ἡ χώρα πρόβατα ἐκτρέψει θαυμαστῶς, τραχεῖας δὲ ἐρέας, καὶ τινες ἐξ αὐτῶν τούτων μεγίστους πλούτους ἐκτήσαντο. Ἀμύντας δ' ὑπὲρ τριακοσίας ἔσχε ποίμνιας ἐν τοῖς τόποις τούτοις. εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι, Κάραλις μὲν ἡ μεῖζων ἡ δὲ ἐλάττων Τρωγῆτις. ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἰκόνιον ἔστι, πολίχνιον εὖ συνφικισμένον καὶ χώραν εὔτυχε-
τέραν ἔχον τῆς λεχθείσης ὀναγρούστου· τοῦτο δὲ εἶχε Πολέμων. πλησιάζει δὲ ἡδη τούτοις τοῖς τόποις δὲ Ταῦρος δὲ τὴν Κακπαδοκίαν ὁρίζων καὶ τὴν Λυκαονίαν πρὸς τοὺς ὑπεροκειμένους Κίλικας τοὺς Τραχειάτας. Λυκαόνων τε καὶ Κακπαδόκων ὄφιόν ἔστι τὸ μεταξὺ Κοροπασσοῦ κώμης Λυκαόνων, καὶ Γαρσαούρων πολιχνίου Κακπαδόκων· ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ διάστημα τῶν φρουρίων τούτων ἐκατὸν εἴκοσί που στάδιοι.

2 Τῆς δὲ Λυκαονίας ἔστι καὶ ἡ Ἰσαυρικὴ πρὸς αὐτῷ τῷ Ταύρῳ ἡ τὰ "Ισανρα" ἔχουσα κώμας δύο ὁμωνύμους, τὴν μὲν παλαιὰν καλουμένην, [τὴν δὲ νέαν,] εὐερηκῆ· ὑπήκοοι δὲ ἡσαν ταύταις καὶ ἄλλαι κώμαι συγκαλεῖ, λῃστῶν δὲ ἄπασαι κατοικίαι. παρέσχον δὲ καὶ Ρωμαίοις πράγματα καὶ τῷ Ἰσαυρικῷ προσαγορευθέντι Πουβλίῳ

Σερβιλίφ, ὃν ἡμεῖς εἶδομεν, ὃς καὶ ταῦτα ὑπέταξε Ρωμαίοις καὶ τὰ πολλὰ τῶν πειρατῶν ἐρύματα ἔξειλε τὰ 0.569 ἐπὶ τῇ θαλάττῃ.

Τῆς δὲ Ἰσαυρικῆς ἐστιν ἐν πλευραῖς ἡ Δέρβη, μάζη 3
5 λιστα τῇ Καππαδοκίᾳ ἐπικεφυκός τοῦ Ἀντιπάτρου τυραννεῖον τοῦ Δερβήτου· τοῦ δὲ ἦν καὶ τὰ Δάρανδα· ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ τὰ Ἰσαυρα καὶ τὴν Δέρβην Ἀμύντας εἰχεν, ἐπιθέμενος τῷ Δερβήτῃ καὶ ἀνελὼν αὐτὸν, τὰ δὲ
10 Ἰσαυρα παρὰ τῶν Ρωμαίων λαβών· καὶ δὴ βασίλειον ἁντρῷ κατεστεύαζεν ἐνταῦθα, τὴν παλαιὰν Ἰσαυραν ἀνατρέψας. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ χωρίῳ καὶ τὸν τεῖχος οἰκοδομῶν οὐκ ἔφθη συντελέσας, ἀλλὰ διέφθειραν αὐτὸν οἱ Κλίκες ἐμβαλόντα εἰς τοὺς Ὁμοναδεῖς καὶ ἔξινέδρας ληφθέντα.

15 Τὴν γὰρ Ἀντιόχειαν ἔχων τὴν πρὸς τῇ Πισιδίᾳ 4
μέχρι Ἀπολλωνιάδος τῆς πρὸς Ἀπαμεία τῇ Κιβωτῷ καὶ τῆς παραργείου τινὰ καὶ τὴν Λυκαονίαν ἐπειράτο τοὺς
ἐκ τοῦ Ταύρου καταρρέχοντας Κλίκας καὶ Πισιδας τὴν
χώραν ταύτην Φρυγῶν οὖσαν ἔξαιρεν, καὶ πολλὰ χω-
20 φρά εἴξειλεν ἀπόφθητα πρότερον ὅντα, ὃν καὶ Κρῆμνα· τὸ δὲ Σανδάλιον οὐδὲ ἐνεχείρησε βίᾳ προσάγεσθαι,
μεταξὺ καίμενον τῆς τε Κρῆμνης καὶ Σαγαλασσοῦ.

Τὴν μὲν οὖν Κρῆμναν ἀποικοὶ Ρωμαίων ἔχουσιν, 5
ἡ Σαγαλασσὸς δὲ ἐστὶν ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι τῶν Ρωμαίων ὑφ' ὃς καὶ ἡ Ἀμύντου βασιλεία πᾶσα· διέχει δὲ
Ἀπαμείας ἡμέρας ὄδόν, κατάβασιν ἔχουσα σχεδόν τι
καὶ τριάκοντα σταδίων ἀπὸ τοῦ ἐρύματος· καλοῦσι δὲ
αὐτὴν καὶ Σεληγησσόν· ταύτην δὲ τὴν πόλιν καὶ Ἀλέξανδρος είλεν. ὁ δὲ οὖν Ἀμύντας τὴν μὲν Κρῆμναν
30 είλεν, εἰς δὲ τοὺς Ὁμοναδέας παρελθών, οἱ ἐνομίζοντο

5. ante τοῦ: τὸ 19. post οὖσαν: καὶ Κιλίκων

ἀληπιότατοι, καὶ καταστὰς ἥδη κύριος τῶν πλείστων χωρίων ἀνελὼν καὶ τὸν τύραννον αὐτῶν ἐξ ἀπάτης ἐλήφθη διὰ τῆς τοῦ τυράννου γυναικός. καὶ τοῦτον μὲν ἑκεῖνοι διέφθειραν, ἑκείνους δὲ Κυρίνιος ἐξεπόρθησε λιμῷ καὶ τετρακισχιλίους ἄνδρας ἔξωγρησε καὶ συνφίειν εἰς τὰς ἐγγὺς πόλεις, τὴν δὲ χώραν ἀπέλιπεν ἕρημον τῶν ἐν ἀκμῇ. ἔστι δὲ ἐν ὑψηλοῖς τοῦ Ταύρου μέρεσι, κρημνοῖς ἀποτόμοις σφόδρα καὶ τὸ πλέον ἀβάτοις, ἐν μέσῳ οἰλον καὶ εὔγεων πεδίον εἰς αὐλωνας πλείους διηρημένον· τοῦτο δὲ γεωργοῦντες φύουν 10 ἐν ταῖς ὑπερκειμέναις ὁρφύσιν ἢ σπηλαίοις, τὰ πολλὰ δ' ἐνοπλοὶ ἥσαν καὶ κατέτρεχον τὴν ἀλλοτρίαν ἔχοντες ὅρη τειχίζοντα τὴν χώραν αὐτῶν.

7 Συναφεῖς δ' εἰσὶ τούτοις οἵ τε ἄλλοι Πισιδαὶ καὶ οἱ Σελγεῖς, οἵπερ εἰσὶν ἀξιολογώτατοι τῶν Πισιδῶν. 15 τὸ μὲν οὖν πλέον αὐτῶν μέρος τὰς ἀκρωτρίας τοῦ Ταύρου κατέχει, τινὲς δὲ καὶ ὑπὲρ Σίδης καὶ Ἀσπένδους 2570 Παμφυλικῶν πόλεων κατέχουσι γεώλοφα χωρία ἐλαύσφυτα πάντα, τὰ δ' ὑπὲρ τούτων ἥδη ὁρεινά, Κατεννεῖς ὄμοροι Σελγεῦσι καὶ Ὄμοναδεῦσι, Σαγαλασσεῖς 20 δ' ἐπὶ τὰ ἐντὸς τὰ πρὸς τὴν Μιλυάδι.

2 Φησὶ δ' Ἀρτεμίδωρος τῶν Πισιδῶν πόλεις εἶναι Σέλγην Σαγαλασσὸν Πετυηλισσὸν Ἀδαδα Τυμβριάδα Κρῆμαν Πιτυασσὸν Ἀμβλαδα Ἀνάβουρα Σίνδα Ἀαρασσὸν Ταρβασσὸν Τερμησσόν· τούτων δ' οἱ μέν εἰσι 25 τελέως ὁρεινοί, οἱ δὲ καὶ μέχρι τῶν ὑπωρειῶν καθήκοντες ἐφ' ἑπάτερα, ἐπὶ τε τὴν Παμφυλίαν καὶ τὴν Μιλυάδα, Φρυξὶ καὶ Δυδοῖς καὶ Καρσὶν ὄμοροι, πᾶσιν εἰρηνικοῖς ἔθνεσι καίπερ προσβόρροις οὖσιν. οἱ δὲ Πάμφυλοι πολὺ τοῦ Κιλικίου φύλου μετέχοντες οὐ τελέως 30 ἀφείνονται τῶν ληστρικῶν ἔργων, οὐδὲ τοὺς ὄμόροους ἔωσι καθ' ἡσυχίαν ξῆν καίπερ τὰ νότια μέρη τῆς ὑπω-

ρείας τοῦ Ταύρου κατέχοντες. εἰσὶ δὲ τοῖς Φρυξὶν ὅμοιοι καὶ τῇ Καρίᾳ Τάβαι καὶ Σίνδα καὶ Ἀμβλαδα, ὅθεν καὶ ὁ Ἀμβλαδεὺς οἶνος ἐκφέρεται πρὸς διαίτας ἰατρικὰς ἐπιτήδειος.

- 5 Τῶν δ' οὖν ὁρευῶν οὓς εἶπον Πισιδῶν οἱ μὲν ἄλλοι κατὰ τυραννίδας μεμερισμένοι, καθάπερ οἱ Κίλικες, λητοτρικῶς ἥσκηνται· φασὶ δ' αὐτοῖς τῶν Λελέγων συγκαταμιχθῆναι τινὰς τὸ παλαιόν, πλάνητας ἀνθρώπους, καὶ συμμετεῖναι διὰ τὴν ὅμοιοτροπίαν αὐτούς τόθι. Σέληνη δὲ ἐξ ἀρχῆς μὲν ὑπὸ Λακεδαιμονίων ἐκτεσθή πόλις, καὶ ἔτι πρότερον ὑπὸ Κάλχαντος· ὕστερον δὲ καθ' αὐτὴν ἐμεινεν αὐξηθεῖσα ἐκ τοῦ πολιτεύεσθαι νομίμως, ὡστε καὶ δισμυρίαινδρός ποτε εἶναι. Θαυμαστὴ δ' ἐστὶν ἡ φύσις τῶν τόπων· ἐν γὰρ ταῖς 10 ἀκρωτηίαις τοῦ Ταύρου χώρα μυριάδας τρέφειν δυναμένη σφόδρα εὔκαιροπός ἐστιν, ὡστε καὶ ἐλαιόφυτα εἰναι πολλὰ χωρία καὶ εὐάμπελα, νομάς τε ἀφεύονος ἀνεῖσθαι παντοδαποῖς βιοσκήμασι· κύκλῳ δ' ὑπέροχεινται δρυμοὶ ποικίλης ὑλῆς. πλεῖστος δ' ὁ στύραξ φύεται 15 παρ' αὐτοῖς, δένδρον οὐ μέγα* δρυθηλόν, ἀφ' οὗ καὶ τὰ στυράκινα ἀκοντίσματα, ἐοικότα τοῖς κρανείνοις· ἐγγίνεται δ' ἐν τοῖς στελέχεσι ἔυλοφάγου τι σκάληκος είδος, ὃ μέχρι τῆς ἐπιφανείας διαφαγὸν τὸ ἔύλον τὸ μὲν πρῶτον πιτύροις ἡ πρίσμασιν ἐοικός τι ψῆμα 20 προχεῖ, καὶ σωρὸς συνίσταται πρὸς τῇ φίξῃ, μετὰ δὲ ταῦτα ἀπολείβεται τις ὑγρασία δεχομένη πῆξιν ὁρδίαν παραπλησίαν τῇ κόρμῳ· ταύτης δὲ τὸ μὲν ἐπὶ τὸ ψῆμα πρὸς τῇ φίξῃ κατενεχθὲν ἀναμίγνυται τούτῳ τε καὶ τῇ γῇ, πλὴν ὅσου ἐπιπολῆς συστὰν διαμένει καὶ 25 θαρόν, τὸ δ' ἐν τῇ ἐπιφανείᾳ τοῦ στελέχους καθ' ἥνC.571

10. post δὲ: καὶ 29. post ὅσον: τὸ μὲν

φεῖ πήγτεται, καὶ τοῦτο καθαρόν· ποιοῦσι δὲ καὶ ἐκ τοῦ μὴ καθαροῦ μῆγμα ἔυλομηγές τι καὶ γεωμηγές, εὐ-
αδέστερον τοῦ καθαροῦ, τῇ δ' ἄλλῃ δυνάμει λειπόμε-
νον (λανθάνει δὲ τὸν πολλούν), φ' πλείστῳ χρῶνται
θυμιάματι οἱ δεισιδαίμονες. ἐπαινεῖται δὲ καὶ ἡ Σελ- 5
γικὴ ἴσις καὶ τὸ ἀπ' αὐτῆς ἄλειμμα. ἔχει δ' ὀλίγας προσ-
βάσεις [τὰ] περὶ τὴν πόλιν καὶ τὴν χώραν τὴν Σελ-
γέων, ὁρεινὴν κρημνῶν καὶ χαραδρῶν οὖσαν πλήρη,
ἄς ποιοῦσιν ἄλλοι τε ποταμοὶ καὶ ὁ Εὔρυμέδων καὶ ὁ
Κέστρος ἀπὸ τῶν Σελγικῶν ὁρῶν εἰς τὴν Παμφυλίαν 10
ἐκπίπτοντες θάλατταν· γέφυραι δ' ἐπίκεινται ταῖς
ὅδοῖς. διὰ δὲ τὴν ἐρυμνότητα οὗτε πρότερον οῦθ' ὑστε-
ρον οὐδ' ἄπαξ οἱ Σελγεῖς ἐπ' ἄλλοις ἐγένοντο, ἀλλὰ
τὴν μὲν ἄλλην χώραν ἀδεως ἐκαρποῦντο, ὑπὲρ δὲ τῆς
κάτω τῆς τε ἐν τῇ Παμφυλίᾳ καὶ τῆς ἐντὸς τοῦ Ταύρου 15
διεμάχοντο πρὸς τὸν βασιλέας ἀεί· πρὸς δὲ τὸν "Ρω-
μαίοντος ἐπὶ τακτοῖς τισὶ κατεῖχον τὴν χώραν· πρὸς Ἀλέ-
ξανδρον δὲ πρεσβευσάμενοι δέχεσθαι τὰ προστάγματα
εἰπον κατὰ φιλίαν· νῦν δὲ ὑπήκοοι τελέως γεγόνασι,
καὶ εἰσιν ἐν τῇ ὑπὸ Ἀμύντα τεταγμένῃ πρότερον. 20

8 Τοῖς δὲ Βιθυνοῖς δόμοφοῦσι πρὸς υότον, ὡς ἔφην,
οἱ περὶ τὸν "Ολυμπὸν τὸν Μύσιον προσαγορευόμενον
Μυσοὶ τε καὶ Φρύγες· ἐκάτερον δὲ τὸ ἔθνος διπτόν
ἔστι. Φρυγία τε γὰρ ἡ μὲν καλεῖται μεγάλη, ἡς ὁ Μί-
δας ἔβασιλευσε καὶ ἡς μέρος οἱ Γαλάται κατέσχουν, ἡ δὲ 25
μικρὰ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ καὶ ἡ περὶ τὸν "Ολυμπὸν ἡ
καὶ Ἐπικήτης λεγομένη. Μυσία τε ὁμοίως ἡ τε Ὁλυμ-
πηνὴ συνεχῆς οὖσα τῇ Βιθυνίᾳ καὶ τῇ Ἐπικήτῳ, ἥν
ἔφη Ἀρτεμίδωρος ἀπὸ τῶν πέραν "Ιστρον Μυσῶν ἀπω-
κισθαι, καὶ ἡ περὶ τὸν Κάικον καὶ τὴν Περγαμηνὴν 30
μέχρι Τευθρανίας καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ.

2 Οὗτος δ' ἐνήλακται ταῦτα ἐν ἀλλήλοις, ὡς πολ-

λάκις λέγομεν, ὥστε καὶ τὴν περὶ Σίπυλον Φρυγίαν
οἱ παλαιοὶ καλοῦσιν, ἄδηλον εἴτε τῆς μεγάλης εἴτε τῆς
μικρᾶς μέρος οὐσαν, ἢ καὶ τὸν Τάνταλον Φρύγαν καὶ
τὸν Πέλοπα καὶ τὴν Νιόβην· ὅποτέρως δ' ἀν δχη, ἢ
δ γε ἐπάλλαξις φανερά. ἡ γὰρ Περγαμηνὴ καὶ ἡ Ἐλαῖ-
τις, καθ' ᾧν ὁ Κάιμος ἐκπίπτει, καὶ ἡ μεταξὺ τούτων
Τευθρανία, ἐν ᾧ Τεύθρας καὶ ἡ τοῦ Τηλέφου ἐκτρο-
φή, ἀνὰ μέσον ἔστι τοῦ τε Ἐλλησπόντου καὶ τῆς περὶ
Σίπυλον καὶ Μαγνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ χώρας· ὥσθ'

10 ὅπερ ἔφην ἔργον διορίσαι „χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυγίαν
,,γῶν δορίσματα.“

Καὶ οἱ Λυδοὶ καὶ οἱ Μαιόνες, οὓς Ὀμηρος καλεῖ 3
Μήονας, ἐν συγχύσει πώς εἰσι καὶ πρὸς τούτους καὶ
πρὸς ἄλλήλους, ὅτι οἱ μὲν τοὺς αὐτοὺς οἱ δ' ἐτέροις
15 φασί· πρὸς δὲ τούτους, ὅτι τοὺς Μυσοὺς οἱ μὲν Θράκ-
ης οἱ δὲ Λυδοὺς εἰδόκασι, κατ' αἰτίαν παλαιὰν ἴστο-
ριοῦντες, ἢν Ξάνθος ὁ Λυδὸς γράφει καὶ Μενεκράτης
ὁ Ἐλαῖτης, ἐτυμολογοῦντες καὶ τὸ ὄνομα τὸ τῶν Μυ-
σῶν ὅτι τὴν ὁξύην οὔτως ὀνομάζουσιν οἱ Λυδοί· πολλὴ
20 δ' ἡ ὁξύη κατὰ τὸν Ὁλυμπον, ὅπου ἐκτεθῆναι φασι
τοὺς δεκατευθέντας, ἐκείνων δὲ ἀπογόνους είναι τοὺς
ὑστεροὺς Μυσούς, ἀπὸ τῆς ὁξύης οὕτω προσαγορευ-
θέντας· μαρτυρεῖν δὲ καὶ τὴν διάλεκτον· μιξολύδιον
γάρ πως είναι καὶ μιξοφρύγιον· τέως μὲν γὰρ οἰκεῖν
25 αὐτοὺς περὶ τὸν Ὁλυμπον, τῶν δὲ Φρυγῶν ἐκ τῆς
Θράκης περαιωθέντων [ἀν]ελόντων τε τῆς Τροίας ἄρ-
χοντα καὶ τῆς πλησίον γῆς, ἐκείνους μὲν ἐνταῦθα οἰ-
κῆσαι τοὺς δὲ Μυσοὺς ὑπὲρ τὰς τοῦ Καΐκου πηγὰς
πλησίον Λυδῶν.

30 Συνεργεῖ δὲ πρὸς τὰς τοιαύτας μυθοποιίας ἡ τε 4

σύγχυσις τῶν ἐνταῦθα ἔθνων καὶ ἡ εὐδαιμονία τῆς χώρας τῆς ἐντὸς Ἀλυος, μάλιστα δὲ τῆς παραλίας, δι' ἣν ἐπιθέσεις ἐγένοντο αὐτῇ πολλαχόθεν καὶ διὰ παντὸς ἐκ τῆς περαίας, ἡ καὶ ἐπ' ἀλλήλους λόντων τῶν ἐγγύς. μάλιστα μὲν οὖν κατὰ τὰ Τρωικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τὰς 5 ἐφόδους γενέσθαι καὶ τὰς μεταναστάσεις συνέβη, τῶν τε βαρράφων ἄμα καὶ τῶν Ἑλλήνων δομῇ τινι χρησαμένων πρὸς τὴν τῆς ἀλλοτρίας κατάκτησιν· ἀλλὰ καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν ἦν ταῦτα. τό τε γὰρ τῶν Πελασγῶν ἦν φῦλον καὶ τὸ τῶν Κανκάνων καὶ Λελέγων· εἰρη- 10 ται δ' ὅτι πολλαχοῦ τῆς Εὐφράτης τὸ παλαιὸν ἐτύγχανε πλανώμενα, ἀπερ ποιεῖ τοῖς Τρωσὶ συμμαχοῦντα δι ποιητής, οὐκ ἐκ τῆς περαίας. τά τε περὶ τῶν Φρυγῶν καὶ τῶν Μυσῶν λεγόμενα πρεσβύτερα τῶν Τρωικῶν ἔστιν· οἱ δὲ διπτοὶ Λύκιοι τοῦ αὐτοῦ γένους ὑπόνοιαιν 15 παρέχουσιν, ἡ τῶν Τρωικῶν ἡ τῶν πρὸς Καρδία τοὺς ἐτέρους ἀποκισάντων. τάχα δὲ καὶ ἐπὶ τῶν Κιλκίων τὸ αὐτὸ διπτοὶ συνέβη· διπτοὶ γὰρ καὶ οὗτοι· οὐ μὴν ἔχομέν γε τοιαύτην λαβεῖν μαρτυρίαν ὅτι καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν ἥσαν ἥδη οἱ νῦν Κιλκίες· ὁ τε Τήλεφος ἐκ τῆς 20 Ἀρκαδίας ἀφῆκθαι νομίζοιτ' ἀν μετὰ τῆς μητρός, γάμῳ δὲ τῷ ταύτης ἔξοικειωσάμενος τὸν ὑποδεξάμενον αὐτὸν Τεύθραντα ἐνομίσθη τε ἐκείνου καὶ παρέλαβε τὴν Μυσῶν ἀρχήν.

5 Καὶ οἱ Κᾶρες δὲ νησιῶται πρότερον ὅντες καὶ Λε- 25
C.573λεγες, ὡς φασιν, ἡπειρῶται γεγόνασι, προσλαβόντων Κρητῶν, οἱ καὶ τὴν Μίλητον ἔκτισαν ἐκ τῆς Κρητικῆς Μιλήτου Σαρπηδόνα λαβόντες κτίστην· καὶ τοὺς Τερμίλας κατφύισαν ἐν τῇ νῦν Λυκίᾳ· τούτους δ' ἀγαγεῖν ἐκ Κρήτης ἀποίκους Σαρπηδόνα, Μίνω καὶ Ραδαμάν- 30 θυος ἀδελφὸν ὄντα, καὶ διομάσαι Τερμίλας τοὺς πρότερον Μιλύας, ὡς φησιν Ἡρόδοτος, ἔτι δὲ πρότερον

Σολύμους, ἐπειδόντα δὲ τὸν Πανδίονος Λύκον ἀφ' ἑαυτοῦ προσαγορεῦσαι τοὺς αὐτοὺς Λυκίους. οὗτος μὲν οὖν δὲ λόγος ἀποφαίνει τοὺς αὐτοὺς Σολύμους τε καὶ Λυκίους, ὁ δὲ ποιητὴς χωρίζει· Βελλεροφόνης 5 γοῦν ὀρμημένος ἐκ τῆς Λυκίας „Σολύμοισι μαχέσσατο „κυδαλίμοισι.“ Πείσανδρόν τε ὥσαύτως νίδιν αὐτοῦ Ἀρης ὡς φησι „μαρνάμενον Σολύμοισι κατέκτανε.“ καὶ τὸν Σαρπηδόνα δὲ ἐπιχώριόν τινα λέγει.

'Αλλὰ τό γε ἄθλον προκεῖσθαι κοινὸν τὴν ἀρετὴν 6 10 τῆς χώρας ἡς λέγει τοῖς ἴσχυοντιν ἐκ πολλῶν βεβαιοῦται [καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν] καὶ μετὰ τὰ Τρωικά· ὅπου καὶ Ἀμαξόνες κατεθάρρησαν αὐτῆς, ἐφ' ἃς ὁ τε Πρίαμος στρατεῦσαι λέγεται καὶ δὲ Βελλεροφόνης· πόλεις τε παλαιαὶ ὄμοιογοῦνται ἐπώνυμοι αὐτῶν· ἐν 15 δὲ τῷ Ἰλιακῷ πεδίῳ κοινώνη τις ἔστιν „ἥν ἦτοι ἄνδρες „Βατίειαν κικλήσκουσιν, ἀθάνατοι δέ τε σῆμα πολυ- „σκάρδημοιο Μυρίνης“, ἥν ιστοροῦσι μίαν εἶναι τῶν Ἀμαξόνων ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τεκμαιρόμενοι· εὐσκάρδη- μους γὰρ ἵππους λέγεσθαι διὰ τὸ τάχος· κάκεινην οὖν 20 πολύσκαρδην διὰ τὸ ἀπὸ τῆς ἥνιοχειας τάχος· καὶ ἡ Μύρινα οὖν ἐπώνυμος ταύτης λέγεται. καὶ αἱ ἔγγὺς δὲ νῆσοι ταῦτ' ἐπαθον διὰ τὴν ἀρετὴν, ὁν Ρόδος καὶ Κῶς ὅτι πρὸ τῶν Τρωικῶν ἥδη ὑφ' Ἑλλήνων φύκοῦν- το καὶ ὑφ' Ομήρου σαφῶς ἐκμαρτυρεῖται.

25 Μετὰ δὲ τὰ Τρωικὰ αἱ τε τῶν Ἑλλήνων ἀποικίαι 7 καὶ αἱ Τρηρῶν καὶ αἱ Κιμμερίων ἕφοδοι καὶ Λυδῶν καὶ μετὰ ταῦτα Περσῶν καὶ Μακεδόνων τό [τε] τελευταῖον Γαλατῶν ἐτάραξαν πάντα καὶ συνέχεαν. γέγονε δὲ ἡ ἀσάφεια οὐ διὰ τὰς μεταβολὰς μόνον ἀλλὰ καὶ διὰ τὰς 30 τῶν συγγραφέων ἀνομολογίας περὶ τῶν αὐτῶν οὐ τὰ αὐτὰ λεγόντων, τοὺς μὲν Τρῶας καλούντων Φρύγας καθάπερ οἱ τραγικοί, τοὺς δὲ Λυκίους Κᾶρας καὶ

αλλους * οὗτως. οἱ δὲ Τρῶες οὕτως ἐκ μικρῶν αὐξη-
θέντες ὥστε καὶ βασιλεῖς βασιλέων είναι, παρέσχον
καὶ τῷ ποιητῇ λόγον τίνα χρὴ καλεῖν Τροίαν, καὶ τοῖς
ἔξηγουμένοις ἐκεῖνον. λέγει μὲν γὰρ καὶ κοινῶς ἄπαν-
τας Τρῶας τοὺς συμπολεμήσαντας αὐτοῖς, ὥσπερ καὶ 5
Δαναοὺς καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐναντίους ἀλλ' οὐ δήπου
Τροίαν καὶ τὴν Παφλαγονίαν ἔρουμεν· νῆ Δία, οὐδὲ
τὴν Καρίαν ἢ τὴν ὅμιοδον αὐτῇ Δυνίαν. λέγω δ' ὅταν
οὕτω φῇ,,Τρῶες μὲν ολαγγῆ τ' ἐνοπῆ τ' ἵσαν,,“ ἐκ δὲ
τῶν ἐναντίων,,οἱ δ' ἄρδεν σιγῇ μένεται πνείοντες Ἀχαι- 10
οι.“ καὶ ἄλλως δὲ λέγει πολλαχῶς. ὅμως δὲ καίπερ τοιού-
των ὄντων πειρατέον διαιτᾶν ἕκαστα εἰς δύναμιν· ὅ-
τι δ' ἀν διαφύγῃ τῆς παλαιᾶς ἴστορίας, τοῦτο μὲν ἐα-
τέον (οὐ γὰρ ἐνταῦθα τὸ τῆς γεωγραφίας ἔργον), τὰ
δὲ νῦν ὄντα λεκτέον.

15

8 Ἐστι τοίνυν δρη δύο ὑπερκείμενα τῆς Προοποντί-
δος δὲ τε "Ολυμπος ὁ Μύσιος καὶ ἡ"Ιδη. τῷ μὲν οὖν
'Ολύμπῳ τὰ τῶν Βιθυνῶν ὑποπέπτωκε, τῆς δὲ"Ιδης με-
ταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ἡ Τροία οὐδεῖται συνάπτουσα τῷ
δρει· περὶ μὲν οὖν ταύτης ἔρουμεν ὕστερον καὶ τῶν 20
συνεχῶν αὐτῇ πρὸς νότον, νῦν δὲ περὶ τῶν 'Ολυμπη-
νῶν καὶ τῶν ἐφεξῆς μέχρι τοῦ Ταύρου παραλλήλων
τοῖς προεφωδευμένοις λέγωμεν. ἔστι τοίνυν δῶν μύ-
πος οὐκλῷ μὲν εὖ συνοικούμενος, ἐν δὲ τοῖς ὑψεσι
δρυμοὺς ἔξαισίους ἔχων καὶ ληστήρια δυναμένους ἐκ- 25
τρέφειν τόπους εὐερκεῖς, ἐν οἷς καὶ τύραννοι συνέ-
στανται πολλάκις δυνάμενοι συμμεῖναι πολὺν χρόνον,
καθάπερ Κλέων ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν ληστηρίων ἡγεμών.

9 Οὗτος δ' ἦν μὲν ἐκ Γορδίου κώμης, ἦν ὕστερον
αὐξήσας ἐποίησε πόλιν καὶ προσηγόρευσεν Ιουλιόπο- 30
λιν· ληστηρίῳ δ' ἐχρῆτο καὶ δρμητηρίῳ κατ' ἀρχὰς τῷ
καρτερωτάτῳ τῶν χωρίων ὄνομα Καλλυδίῳ. ὑπῆρξε

δ' Ἀντωνίῳ μὲν χρήσιμος ἐπελθὼν ἐπὶ τοὺς ἀργυρο-
λογοῦντας Λαβηνῷ καθ' ὃν χρόνον ἐκεῖνος τὴν Ἀσί-
αν κατέσχε, καὶ πιλάσας τὰς παρασκευάς· ἐν δὲ τοῖς
Ἀκτιανοῖς ἀποστὰς Ἀντωνίου τοῖς Καίσαρος προσέ-
δετο στρατηγοῖς, καὶ ἐπιμήθη πλέον ἡ κατ' ἄξιαν
προσλαβὼν τοῖς παρ' Ἀντωνίου δοθεῖσι καὶ τὰ παρα
τοῦ Καίσαρος, ὥστ' ἀντὶ ληστοῦ δυνάστου περιέκειτο
σχῆμα, ἵερεὺς μὲν ὃν τοῦ Ἀβραεττηνοῦ Διός, Μυσίου
θεοῦ, μέρος δ' ἔχων ὑπήκοον τῆς Μωρηνῆς (Μυσία
10 δέ ἔστι καὶ αὕτη, καθάπερ ἡ Ἀβραεττηνή), λαβὼν δὲ
ὑστατα καὶ τὴν ἐν τῷ Πόντῳ τῶν Κομάνων ἵερωσύνην,
εἰς ἣν κατελθὼν ἐντὸς μηνιαίου χρόνου κατέστρεψε
τὸν βίον· νόσος δ' ἔξηγαγεν αὐτὸν ὁξεῖα, εἰτ' ἄλλως C.575
ἐπιπεσούσα ἐκ τῆς ἀδην πλησμονῆς εἴδ', ὡς ἔφασαν
15 οἱ περὶ τὸ Ιερόν, κατὰ μῆνιν τῆς θεοῦ· ἐν γὰρ τῷ πε-
ριβόλῳ τοῦ τεμένους ἡ οἰκησίς ἔστιν ἡ τε τοῦ Ιερέως
καὶ τῆς Ιερείας, τὸ δὲ τέμενος χωρὶς τῆς ἄλλης ἀγιστεί-
ας διαφανέστατα τῆς τῶν ὑέων ιρεῶν βρώσεως κα-
θαρεύει, ὅπου γε καὶ ἡ ὅλη πόλις, οὐδὲ εἰσάγεται εἰς
20 αὐτὴν ὕσ. ὁ δ' ἐν τοῖς πρώτοις τὸ ληστρικὸν ἥδος
ἐπεδείξατο εὐθὺς κατὰ τὴν πρώτην εἰσοδον τῇ παρα-
βάσει τούτου τοῦ ἔθους ὥσπερ οὐχ ιερεὺς εἰσεληλυ-
θὼς ἄλλὰ διαφθορεὺς τῶν Ιερῶν.

'Ο μὲν δὴ "Ολυμπικὸς τοιόσδε, περιοικεῖται δὲ πρὸς 10
25 ἄρκτον μὲν ὑπὸ τῶν Βιθυνῶν καὶ Μυγδόνων καὶ Λο-
λίόνων, τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι Μυσοὶ καὶ Ἐπίκητοι.
Δολίονας μὲν οὖν μάλιστα καλοῦσι τοὺς περὶ Κύζικον
ἀπὸ Αἰσηπού ἔως Ρυνδάκου καὶ τῆς Δασκυλίτιδος λί-
μνης, Μυγδόνας δὲ τοὺς ἐφεξῆς τούτοις μέχρι τῆς
30 Μυρλειανῶν χώρας· ὑπέροχεινται δὲ τῆς Δασκυλίτι-
δος ἄλλαι δύο λίμναι μεγάλαι ἢ τε Ἀπολλωνιάτις ἢ
τε Μιλητοπολῖτις· πρὸς μὲν οὖν τῇ Δασκυλίτιδι Δα-

σκύλιον πόλις, πρὸς δὲ τῇ Μιλητοπολέτιδι Μιλητού-
πολις, πρὸς δὲ τῇ τοίτη Ἀπολλωνίᾳ ἡ ἐπὶ Ρυνδάκῳ
λεγομένη· τὰ πλεῖστα δὲ τούτων ἔστι Κυζικηνῶν υπερ.

- 11 Ἐστι δὲ υῆσος ἐν τῇ Προκοντίδι ἡ Κύζικος συνα-
πτομένη γεφύραις δυσὶ πρὸς τὴν ἥπειρον, ἀρετῇ μὲν 5
κρατήσῃ μεγέθει δὲ ὅσον πεντακοσίων σταδίων τὴν
περίμετρον· ἔχει δὲ ὁμώνυμον πόλιν πρὸς αὐταῖς ταῖς
γεφύραις καὶ λιμένας δύο οἰλειστοὺς καὶ νεωσοίκους
πλείους τῶν διακοσίων· τῆς δὲ πόλεως τὸ μὲν ἔστιν
ἐν ἐπιπέδῳ τὸ δὲ πρὸς ὅροις· καλεῖται δὲ "Ἀρκτῶν ὅρος" 10
ὑπέροχειται δ' ἄλλο Δινδυμονού μονοφυές, ἵερὸν ἔχον
τῆς Δινδυμήνης μητρὸς θεῶν, Ἰδρυμα τῶν Ἀργόναυ-
τῶν. ἔστι δὲ ἐνάμιλλος ταῖς πρώταις τῶν κατὰ τὴν
Ἀσίαν ἡ πόλις μεγέθει τε καὶ κάλλει καὶ εὔνομίᾳ πρὸς
τε εἰρήνην καὶ πόλεμον· ἔοικε τε τῷ παραπλησίῳ τύ- 15
πῳ κοσμεῖσθαι ὥσπερ ἡ τῶν Ροδίων καὶ Μασσαλιω-
τῶν καὶ Καρχηδονίων τῶν πάλαι. τὰ μὲν οὖν πολλὰ
ἔστι, τρεῖς δὲ ἀρχιτέκτονας τοὺς ἐπιμελουμένους οἰκο-
δομημάτων τε δημοσίων καὶ ὁργάνων, τρεῖς δὲ καὶ
θησαυροὺς κέντηται, τὸν μὲν ὅπλων τὸν δὲ ὁργάνων 20
τὸν δὲ σίτου· ποιεῖ δὲ τὸν σῖτον ἄσηπτον ἡ Χαλκιδικὴ
γῆ μιγνυμένη. ἐπεδείξαντο δὲ τὴν ἐκ τῆς παρασκευῆς
ταύτης ὠφέλειαν ἐν τῷ Μιθριδατικῷ πολέμῳ. ἐπελ-
θόντος γὰρ αὐτοῖς ἀδοκήτως τοῦ βασιλέως πεντεκαί-
δεκα μυριάσι καὶ ἡπτῷ πολλῇ καὶ κατασχόντος τὸ ἀν- 25
τικείμενον ὅρος ὁ καλοῦσιν Ἀδραστείας καὶ τὸ προά-
στειον, ἐπειτα καὶ διάφαντος εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς πόλεως
0.576αὐχένα καὶ προσμαχομένου πεξῇ τε καὶ κατὰ θάλατ-
ταν τετρακοσίαις ναυσίν, ἀντέσχον πρὸς ἀπαντα οἱ
Κυζικηνοί, ὥστε καὶ ἐγγὺς ἦλθον τοῦ ξωγόια λαβεῖν 30
τὸν βασιλέα ἐν τῇ διώρυῃ ἀντιδιορύττοντες, ἀλλ'
ἐφθη φυλαξάμενος καὶ ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ἔξω τοῦ

δρύγματος· δψε δὲ ἵσχυσεν εἰσπέμψαι τινὰς νύκτωρ
ἐπικούρους ὁ τῶν Ρωμαίων στρατηγὸς Λεύκολλος·
ἄνησε δὲ καὶ λιμὸς τῷ τοσούτῳ πλήθει τῆς στρατιᾶς
ἐπιπεσών, ὃν οὐ προείδετο ὁ βασιλεὺς, ὡς ἀπῆλθε
5 πολλοὺς ἀποβαλάν. Ρωμαῖοι δ' ἐτίμησαν τὴν πόλιν,
καὶ ἔστιν ἐλευθέρα μέχρι νῦν καὶ χώραν ἔχει πολλὴν
τὴν μὲν ἐκ παλαιοῦ τὴν δὲ τῶν Ρωμαίων προσθέντων.
καὶ γὰρ τῆς Τοφάδος ἔχουσι τὰ πέραν τοῦ Αἰσήπου τὰ
περὶ τὴν Ζέλειαν καὶ τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίον· καὶ
10 τῆς Δασκυλίτιδος λίμνης τὰ μὲν ἔχουσιν ἐκεῖνοι τὰ δὲ
Βυζάντιοι· πρὸς δὲ τῇ Δολιονίδι καὶ τῇ Μυγδονίδι
νέμονται πολλὴν μέχρι τῆς Μιλητοπολίτιδος λίμνης
καὶ τῆς Ἀπολλωνιάτιδος αὐτῆς, δι' ᾧν χωρίων καὶ ὁ
Ρύνδακος δεῖ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἔχων ἐκ τῆς Ἀξανί-
15 τίδος, προσλαβὼν δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἀβρεττηνῆς Μυσίας
ἄλλους τε καὶ Μένεστον ἀπ' Ἀγκύρας τῆς Ἀβαετίδος
ἐκδίδωσιν εἰς τὴν Προκοπτίδα κατὰ Βέσβικον νῆσον.
ἐν ταύτῃ δὲ τῇ νήσῳ τῶν Κυξικηνῶν ὅρος ἔστιν εὐ-
δενδρον Ἀρτάκη· καὶ νησίον ὄμώνυμον πρόκειται
20 τούτου, καὶ πλησίον ἀκρωτήριον Μέλανος καλούμε-
νον ἐν παράπλει τοῖς εἰς Πρίαπον κομιζομένοις ἐκ τῆς
Κυξίκου.

Τῆς δ' ἐπικτήτου Φρυγίας Ἀξανοὶ τέ εἰσι καὶ Να- 12
κολία καὶ Κοτιάειον καὶ Μιδάειον καὶ Δορυλάειον πό-
25 λεις καὶ Κάδοι· τοὺς δὲ Κάδους ἔνιοι τῆς Μυσίας φα-
σίν. ἡ δὲ Μυσία κατὰ τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς Ὄλυμ-
πηνῆς ἐπὶ τὴν Περγαμηνὴν καθήκει καὶ τὸ Καΐκου
λεγόμενον πεδίον, ὥστε μεταξὺ κεῖσθαι τῆς τε Ἰδης
καὶ τῆς Κατακεκαυμένης, ἣν οἱ μὲν Μυσίαιν οἱ δὲ
30 Μαιονίαν φασίν.

Τπὲρ δὲ τῆς ἐπικτήτου πρὸς νότον ἔστιν ἡ με- 13
γάλη Φρυγία, λείπουσα ἐν ἀριστερᾷ τὴν Πεσσινοῦντα

καὶ τὰ περὶ Ὄρκαόρχους καὶ Λυκαονίαν, ἐν δεξιᾷ δὲ Μαίονας καὶ Λυδοὺς καὶ Κᾶρας· ἐν δὲ ἔστιν ἡ τε παράφρειος λεγομένη Φρυγία καὶ ἡ πρὸς Πισιδία καὶ τὰ περὶ Ἀμόριον καὶ Εὐμένειαν καὶ Σύνναδα, εἰτα Ἀπάμεια ἡ Κιβωτὸς λεγομένη καὶ Λαοδίκεια, ἀπέρο εἰσὶν μέγισται τῶν κατὰ τὴν Φρυγίαν πόλεων· περίκειται δὲ ταύταις πολίσματα καὶ¹⁰ Ἀφροδισιὰς Κολοσσαὶ Θεμισθώνιον Σαναὸς Μητρόπολις Ἀπολλωνίας, ἔτι δὲ ἀπωτέρῳ τούτων Πέλται Τάβαι Εύκαρπία Λυσιάς.

^{C.577} 14 Ἡ μὲν οὖν παράφρεια ὁρεινήν τινα ἔχει φάγιν ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς ἐκτεινομένην ἐπὶ δύσιν· ταύτη δὲ ἐνατέρωθεν ὑποκεπτωκέ τι πεδίον μέγα, καὶ πόλεις πλησίον αὐτῆς πρὸς ἄρκτον μὲν Φιλομήλιον, ἐκ θατέρου δὲ μέρους Ἀντιόχεια ἡ πρὸς Πισιδίαν καλούμενη, ἵ 15 μὲν ἐν πεδίῳ κειμένη πᾶσα ἡ δὲ ἐπὶ λόφου ἔχουσα ἀποικίαν Ρωμαίων· ταύτην δὲ φησιν Μάγνητες οἱ πρὸς Μαιάνδρῳ. Ρωμαῖοι δὲ ἡλευθέρωσαν τῶν βασιλέων, ἥνικα τὴν ἄλλην Ἀσίαν Εὐμένει παρέδοσαν τὴν ἐντὸς τοῦ Ταύρου· ἥν δὲ ἐνταῦθα καὶ ιερωσύνη τις 20 Μηνὸς Ἀρναίου, πλῆθος ἔχουσα ιεροδούλων καὶ χωρίων ιερῶν· κατελύθη δὲ μετὰ τὴν Ἀμύντου τελευτὴν ὑπὸ τῶν πεμφθέντων ἐπὶ τὴν ἐκείνου κληρονομίαν. Σύνναδα δὲ ἔστιν οὐ μεγάλη πόλις· πρόκειται δὲ αὐτῆς ἐλαιόφυτον πεδίον ὃσον ἔξήκοντα σταδίων· ἐπέ- 25 πεινα δὲ ἔστι Δοκιμία κάμη, καὶ τὸ λατόμιον Συνναδικοῦ λόθον (οὗτο μὲν Ρωμαῖοι καλοῦσιν, οἱ δὲ ἐπιχώριοι Δοκιμίτην καὶ Δοκιμάον), κατ' ἀρχὰς μὲν μικροὺς βώλους ἐκδιδόντος τοῦ μετάλλου, διὰ δὲ τὴν νυνὶ πολυτέλειαν τῶν Ρωμαίων κίονες ἔξαιρούνται 30 μονόλιθοι μεγάλοι, πλησιάζοντες τῷ ἀλαβαστρῷ τῇ λέθῳ κατὰ τὴν ποικιλίαν, ὥστε καίπερ πολλῆς οὕσης

τῆς ἐπὶ θάλατταν ἀγωγῆς τῶν τηλικούτων φορτίων
ὅμως καὶ πλόνες καὶ πλάκες εἰς Ρώμην κομίζονται θαυ-
μασταὶ κατὰ τὸ μέγεθος καὶ κάλλος.

Απάμεια δ' ἐστὶν ἐμπόριον μέγα τῆς Ιδίως λεγο- 15
5 μένης Ἀσίας, δευτερεῦον μετὰ τὴν Ἐφεσον· αὕτη γὰρ
καὶ τῶν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ἑλλάδος ὑποδοχεῖον
κοινόν ἐστιν. Ἰδρυται δὲ ἡ Ἀπάμεια ἐπὶ ταῖς ἐκβολαῖς
τοῦ Μαρσύου ποταμοῦ, καὶ δεῖ διὰ μέσης τῆς πόλεως
δ' ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἀπὸ τῆς πόλεως ἔχων· κατενε-
10 χθεὶς δ' ἐπὶ τὸ προάστειον σφραγῷ καὶ καταφερεῖ τῷ
φεύματι συμβάλλει πρὸς τὸν Μαιανδρον, προσειλη-
φότα καὶ ἄλλον ποταμὸν Ὁργᾶν δί' ὅμαλοῦ φερόμενον
πρᾶσιν καὶ μαλακόν· ἐντεῦθεν δ' ἥδη γενόμενος Μαι-
ανδρος τέως μὲν διὰ τῆς Φοργίας φέρεται, ἐπειτα διο-
ιχ φίζει τὴν Καρίαν καὶ τὴν Λυδίαν κατὰ τὸ Μαιανδρον
καλούμενον πεδίον, σκολιὸς ὃν εἰς ὑπερβολὴν ὥστε
ἔξι ἑκαίνου τὰς σκολιότητας ἀπάσας μαιάνδρους κα-
λεῖσθαι· τελευτῶν δὲ καὶ τὴν Καρίαν αὐτὴν διαρρεῖ
τὴν ὑπὸ τῶν Ιώνων νῦν κατεχομένην, καὶ μεταξὺ^{C.578}
20 Μιλήτου καὶ Πριήνης ποιεῖται τὰς ἐκβολάς. ἄρχεται
δὲ ἀπὸ Κελαινῶν, λόφου τινός, ἐν φύσει πόλις ἥν ὅμω-
νυμος τῷ λόφῳ· ἐντεῦθεν δ' ἀναστήσας τοὺς ἀνθρώ-
πους δ' Σωτήρος Αντίοχος εἰς τὴν νῦν Ἀπάμειαν τῆς
μητρὸς ἐπώνυμον τὴν πόλιν ἐπέδειξεν Ἀπάμας, ἥ
25 θυγάτηρ μὲν ἥν Ἀρταβάζου δεδομένη δ' ἐτύγχανε
πρὸς γάμον Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι. ἐνταῦθα δὲ μυ-
θεύεται τὰ περὶ τὸν Ὄλυμπον καὶ τὸν Μαρσύαν καὶ
τὴν ἔριν ἥν ἦρισεν ὁ Μαρσύας πρὸς Ἀπόλλωνα. ὑπέρ-
κειται δὲ καὶ λίμνη φύουσα κάλαμον τὸν εἰς τὰς γλώτ-
30 τὰς τῶν αὐλῶν ἐπιτήδειον, ἐξ ἣς ἀπολείβεσθαι φασι
τὰς πηγὰς ἀμφοτέρας τὴν τε τοῦ Μαρσύου καὶ τὴν
τοῦ Μαιανδρού.

16 'Η δὲ Λαοδίκεια μικρὰ πρότερον οὖσα αὔξησιν ἔλαβεν ἐφ' ἡμῶν καὶ τῶν ἡμετέρων πατέρων, καίτοι κακωθεῖσα ἐκ πολιορκίας ἐπὶ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος· ἀλλ' ἡ τῆς χώρας ἀρετὴ καὶ τῶν πολιτῶν τινες εὐτυχήσαντες μεγάλην ἐποίησαν αὐτήν, 'Ιέρων μὲν 5 πρότερον, ὃς πλειόνων ἢ δισχιλίων ταλάντων κληρονομίαν κατέλιπε τῷ δῆμῳ πολλοῖς τὸ ἀναθήμασιν ἐκόσμησε τὴν πόλιν, Ζήνων δὲ ὁ φήτωρ ὑστερον καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Πολέμων, ὃς καὶ βασιλείας ἡξιώθη διὰ τὰς ἀνδραγαθίας ὑπὲρ Ἀυτωνίου μὲν πρότερον ὑπὸ Καλ- 10 σαρος δὲ τοῦ Σεβαστοῦ μετὰ ταῦτα. φέρει δ' ὁ περὶ τὴν Λαοδίκειαν τόπος προβάτων ἀρετὰς οὐκ εἰς μαλακότητα μόνον τῶν ἔριων, ἥτις καὶ τῶν Μιλησίων διαφέρει, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν κοραξὴν χρόαν, ὥστε καὶ προσοδεύονται λαμπρῶς ἀπὸ αὐτῶν, ὥσπερ καὶ οἱ Κολοσ- 15 σηνοὶ ἀπὸ τοῦ ὁμοιούμοντος χρώματος πλησίον οἰκοῦντες. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κάπρος καὶ ὁ Λύκος συμβάλλει τῷ Μαιάνδρῳ ποταμῷ, ποταμὸς εὐμεγέθης, ἀφ' οὗ καὶ ἡ πρὸς τῷ Λύκῳ Λαοδίκεια λέγεται. ὑπέροκειται δὲ τῆς πόλεως ὄρος Κάδμος, ἐξ οὗ καὶ ὁ Λύκος δεῖ καὶ 20 ἄλλος ὁμώνυμος τῷ ὄρει. τὸ πλέον δ' οὗτος ὑπὸ γῆς φυσίς εἴτ' ἀνακύψας συνέπεσεν εἰς ταῦτὸ τοῖς ἄλλοις ποταμοῖς, ἐμφαίνων ἄμα καὶ τὸ πολύτρητον τῆς χώρας καὶ τὸ εὔσειστον· εἰ γάρ τις ἄλλῃ, καὶ ἡ Λαοδίκεια εὔσειστος, καὶ τῆς πλησιοχώρου δὲ Κάρουρα. 25

17 "Οριον δέ ἐστι τῆς Φρυγίας καὶ τῆς Καρίας τὰ Κάρουρα· καύμη δ' ἐστὶν αὕτη πανδοχεῖα ἔχουσα καὶ ξεστῶν ὑδάτων ἐκβολάς, τὰς μὲν ἐν τῷ ποταμῷ Μαιάνδρῳ τὰς δ' ὑπὲρ τοῦ χείλους. καὶ δὴ ποτέ φασι πορνοβοσκὸν αὐλισθέντα ἐν τοῖς πανδοχείοις σὺν πολλῷ 30 πλήθει γυναικῶν υγιτωρ γενομένου σεισμοῦ συναφανισθῆναι πάσαις. σχεδὸν δέ τι καὶ πᾶσα εὔσειστύς

ἐστιν ἡ περὶ τὸν Μαίανδρον χώρα καὶ ὑπόνομος πυρὶ τε καὶ ὕδατι μέχρι τῆς μεσογαίας. διατέτακε γάρ ἀπὸ^{C. 579} τῶν πεδίων ἀρξαμένη πᾶσα ἡ τοιαύτη κατασκευὴ τῆς χώρας εἰς τὰ Χαρώνια, τό τε ἐν Ἰεραπόλει καὶ τὸ ἐν 5 Ἀχαράνοις τῆς Νυσαΐδος καὶ τὸ περὶ Μαγνησίαν καὶ Μυοῦντα· εὐθρυπτός τε γάρ ἐστιν ἡ γῆ καὶ φαδνυὸς πλήρης τε ἀλμυρόδων καὶ εὐεκπύρωτός ἐστι· τάχα δὲ καὶ ὁ Μαίανδρος διὰ τοῦτο σκολιὸς ὅτι πολλὰς μεταπτώσεις λαμβάνει τὸ φεῖδον, καὶ πολλὴν χοῦν κατά- 10 γων ἄλλοτ’ ἄλλῳ μέρει τῶν αλγιαλῶν προστίθησι· τὸ δὲ πρός τὸ πέλαγος βιασάμενος ἔξωθεν. καὶ δὴ καὶ τὴν Ποιήνην ἐπὶ θαλάττῃ πρότερον οὖσαν μεσόγεων πεποίηκε τετταράκοντα σταδίων προσχώματι.

Καὶ ἡ Κατακεκαυμένη δέ, ἥπερ ὑπὸ Λυδῶν καὶ 18 15 Μυσῶν κατέχεται, διὰ τοιαῦτά τινα τῆς προσηγορίας τετύχηκε ταύτης· ἡ τε Φιλαδέλφεια, ἡ πρὸς αὐτῇ πόλις, οὐδὲ τοὺς τοίχους ἔχει πιστούς, ἀλλὰ καθ’ ἡμέραν τρόπον τινὰ σαλεύονται καὶ διστανται· διατελοῦσι δὲ προσέχοντες τοὺς πάθεις τῆς γῆς καὶ ἀρχιτε- 20 κτονοῦντες πρὸς αὐτά· καὶ τῶν ἄλλων δὲ πόλεων Ἀπάμεια μὲν καὶ πρὸ τῆς Μιδοιδάτου στρατείας ἐσεσθη πολλάκις, καὶ ἐδοκεν ἐπελθῶν ὁ βασιλεὺς ἐκατὸν τάλαντα εἰς ἐπανόρθωσιν, δρῶν ἀνατερραμμένην τὴν πόλιν. λέγεται δὲ καὶ ἐπ’ Ἀλεξάνδρου παραπλή- 25 σια συμβῆναι· διόπερ εἰκός ἐστι καὶ τὸν Ποσειδῶνα μᾶσθαι παρ’ αὐτοῖς καίπερ μεσογαίοις οὖσι, καὶ ἀπὸ Κελαινοῦ τοῦ Ποσειδῶνος ἐκ Κελαινοῦς, μᾶς τῶν Λααναΐδων, γενομένου νεκλῆσθαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον, ἡ διὰ τῶν λίθων τὴν ἀπὸ τῶν ἐκπυρώσεων με- 30 λανίαν. καὶ τὰ περὶ Σίπιλον δὲ καὶ τὴν ἀνατροπὴν αὐτοῦ μῆδον οὐδὲ τίθεσθαι· καὶ γὰρ νῦν τὴν Μαγνησίαν τὴν ὑπ’ αὐτῷ κατέβαλον σεισμοί, ἡνίκα καὶ Σάρδεις καὶ τῶν ἄλλων τὰς ἐπιφανεστάτας κατὰ πολλὰ μέρη διελυμήναντο· ἐπηνθόρθωσε δ’ ὁ ἡγεμών χρή- 35 ματα ἐπιδούς, καθάπερ καὶ πρότερον ἐπὶ τῆς γενομένης συμφορᾶς Τραλλαιανοῖς (ἡνίκα τὸ γυμνασίον καὶ ἄλλα μέρη συνέπεσεν) ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ τούτοις καὶ Λαοδικεῦσιν.

- 19 'Ακούειν δ' ἔστι καὶ τῶν παλαιῶν συγγραφέων οἵα φησιν ὁ τὰ Λύδια συγγράψας Ξάνθος, διηγούμενος οἷα μεταβολαὶ κατέβησαν πολλάκις τὴν χώραν ταύτην, ὡν ἐμνήσθημέν που καὶ ἐν τοῖς πρόσθεν. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ τὸν Τυφῶνα πάθη ἐνταῦθα μυθεύουσι 5 καὶ τοὺς Ἀρίμους, καὶ τὴν Κατακεκαυμένην ταύτην εἰναὶ φασιν· οὐκ ὀκνοῦσι δὲ καὶ τὰ μεταξὺ Μαιάνδρου καὶ Λυδῶν ἄπανδ' ὑπονοεῖν τοιαῦτα καὶ διὰ τὸ C.580 πλῆθος τῶν λιμνῶν καὶ ποταμῶν καὶ τοὺς πολλαχοῦ κενθμῶντας τῆς γῆς. ή δὲ μεταξὺ Λαοδικείας καὶ Ἀπα- 10 μείας λίμνη καὶ βορειοράδη καὶ ὑπονόμου τὴν ἀποφοράν ἔχει πελαγία οὖσα· φασὶ δὲ καὶ δίκαιας εἰναι τῷ Μαιάνδρῳ μεταφέροντι τὰς χώρας ὅταν περικρουσθῶσιν οἱ ἀγκῶνες, ἀλόντος δὲ τὰς ξημιάς ἐκ τῶν πορθμιῶν διαλύεσθαι τελῶν. 15
- 20 Μεταξὺ δὲ τῆς Λαοδικείας καὶ τῶν Καρούρων ιερὸν ἔστι Μηνὸς Κάρον καλούμενον τιμώμενον ἀξιολόγως. συνεστη δὲ καθ' ἡμᾶς διδασκαλεῖον Ἡροφιλείων Ιατρῶν μέγα ὑπὸ Ζεύξιδος, καὶ μετὰ ταῦτα Ἀλεξάνδρου τοῦ Φιλαλήθους, καθάπερ ἐπὶ τῶν πα- 20 τέρων τῶν ἡμετέρων ἐν Σμύρνῃ τὸ τῶν Ἐρασιστρατείων ὑπὸ Ἰκεσίου· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔτι συμμεένει.
- 21 Λέγεται δέ τινα φῦλα Φρύγια οὐδαμοῦ δεικνύμενα, ὥσπερ οἱ Βερέκυντες. καὶ Ἀλκμάν λέγει „Φρύγιον ηὔλησε μέλος τὸ Κεοβήσιον.“ καὶ βοδυνός τις 25 λέγεται Κεοβήσιος ἔχων ὀλεθρίους ἀποφοράς· ἀλλ’ οὗτός γε δείκνυται, οἱ δ’ ἄνθρωποι οὐκέτι οὔτω λέγονται. Αἰσχύλος δὲ συγχεῖ ἐν τῇ Νιόβῃ· φησὶ γὰρ ἐκείνη μνησθήσεσθαι τῶν περὶ Τάνταλον „οἵς ἐν Ἰδαίω ,πάγῳ Αἰός πατρόφου βωμός ἔστι.“ καὶ πάλιν „Σε- 30 ,πυλον Ἰδαίαν ἀνὰ χθόνα.“ καὶ ὁ Τάνταλος λέγει „σπείρω δ’ ἄρουραν δώδεκα ἡμερῶν ὄδόν, Βερέκυντα ,χῶρον, ἐνθ' Ἀδραστείας ἔδος Ἰδη τε μυκηθμοῖσι καὶ ,βρυχήμασι πρέπουσι μήλων, πᾶν δ’ *ἔρεχθεῖ πέδον.“

Wissenschaftliche Ausgaben
griechischer und lateinischer Schriftsteller
im Verlage von
B. G. Teubner  in Leipzig.

Sammlung wissenschaftlicher Commentare
zu griechischen und römischen Schriftstellern.
Sophokles Elektra. Von G. Kaibel. geh. n. M. 6.—, in Leinw.
geb. n. M. 7.—
Lucretius Buch III. Von R. Heinze. geh. n. M. 4.—, in Leinw.
geb. n. M. 5.—
Aetna. Von S. Sudhaus. geh. n. M. 6.—, in Leinw. geb.
n. M. 7.—

Kritische und kommentierte Ausgaben.
Neue Erscheinungen 1895—1898.

Commentar zu der Hippo-
erausgegeben von Her-
lichdruck. 4. n. M. 10.—
Ed. II cur. K. Zacher.

- "II." I: Iphigenia Taurica. n. M. 2.40.
[Lucas.] Acta Apostolorum s. L. ad Theophilum lib. alter. Sec.
formam quae vid. Romanam rec. Fr. Blass. n. M. 2.—
[—] Evangelium sec. Lucam s. L. ad Theoph. lib. prior. Sec.
formam quae vid. Romanam rec. Fr. Blass. n. M. 4.—
Miscellanea Tironiana. A. d. Cod. Vat. Lat. Reg. Christ. 846
(fol. 99—114) hrsg. v. W. Schmitz. Mit 92 Tafeln in Licht-
druck. 4. In Mappe. n. M. 20.—
- W. Christ. n. M. 14.—
10.
11mer. n. M. 16.—
v. d. Philol. Gesellsch.
- I. n. M. 10.—

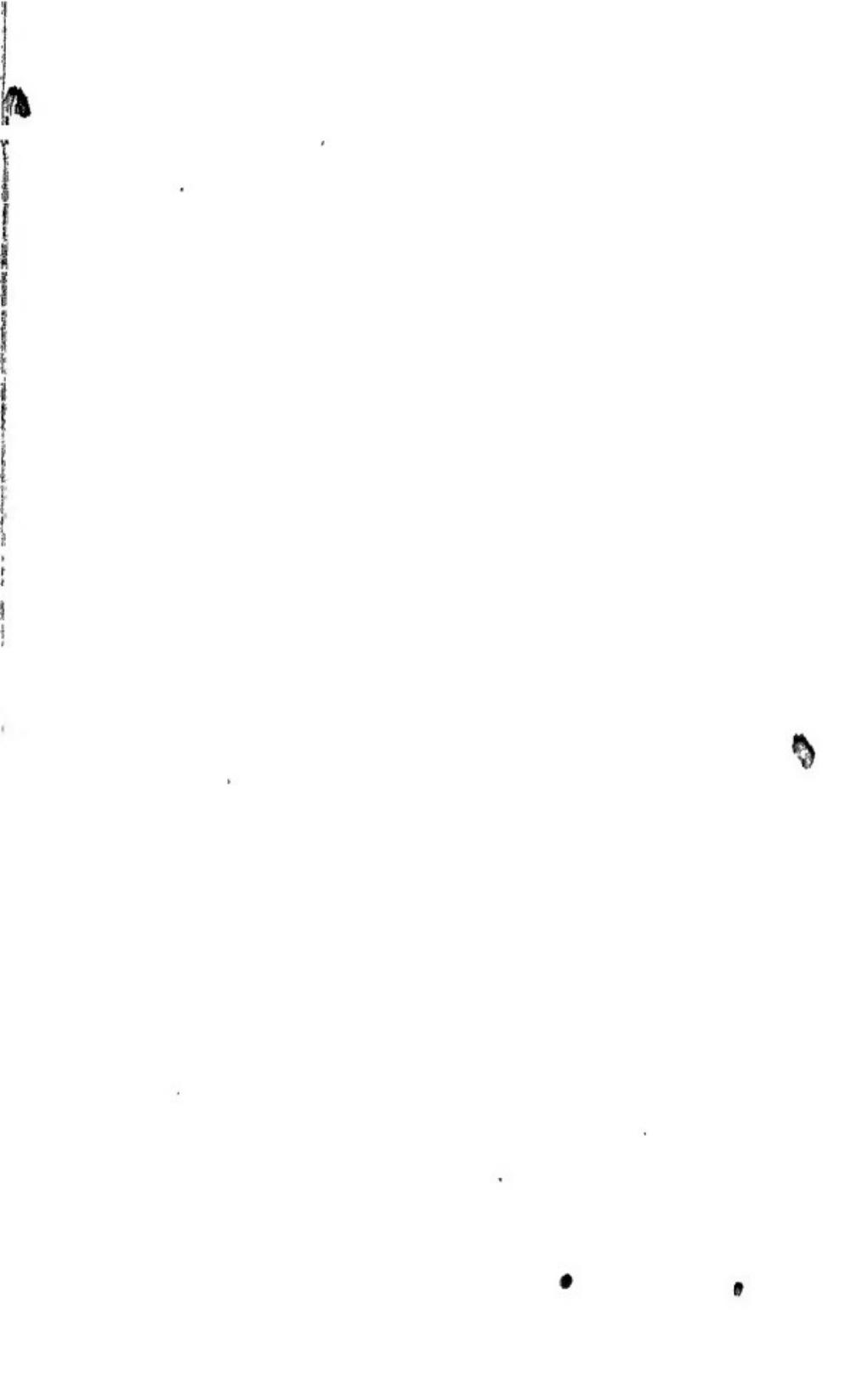
Unter der Presse und in Vorbereitung befinden sich:
Didascaliae apostolorum Latine redditiae fragmenta Veronensia
ed. E. Hauler.
Fabulae Aesopicae edd. Knöll et Hausrath.
Itineraria Romana edd. O. Guntz et W. Kubitschek.

Bibliotheca Scriptorum Graecorum et Romanorum Teubneriana.

Neue Erscheinungen.

- et Riese. P. II: Carm. epigr.
n. M. 5.20.
our. E. Hiller(-O. Crusius).
- M. 5.*
Apuleii Metamorphos. Vol. XV ed. v. d. Vliet. n. M. 8.—
Aristoteles novissim. ed. W. Biehl. M. 1.80.
Avicennae. Aureil. num. XIII rec. P. Knöll. M. 2.70.
Babrii tabulae rec. O. Crusius. Acc. fab. dact. et iamb.rell.
Ignatii al. tetrast. rec. O. F. Müller. Ed. mai. n. M. 8.40.
Ed. min. n. M. 4.—
—. M. 2.40.
Vol. III. 1. B. Alex. B. Afr.
—.60. Vol. III. 2. B. Hisp.
- Ciceronis opera ed. O. F. w. Mueller. Pars III. Epistulae.
Vol. I. M. 8.60. (= Nr. 19—22 à M. —.90, Nr. 23 M. —.80.)
— Vol. II. M. 4.20. (= No. 24—27 à M. 1.—, No. 28
M. —.80.)
VI.VIII. jen. M. 5.—
ed. A. Ludwich.
M. 5.
Firmicus Maternus edd. W. Kroll et F. Skutsch. Fasc. I. n. M. 4.—
Gemini elementa astronomiae rec. Manitius. n. M. 8.—
Heronis Alexandrini opera. Vol. I. Pneumatica. Automata ed.
W. Schmidt. [U. d. Fr.]
—
—
—
—
—
Vol. VI. (Schlufs.) n. M. 4.—
ipersunt ed. Bremer. P. I.
M. 5.
Lactantius Placidus: s. Statius. Vol. III.
Lydi, Laurentii, I. de ostentis et Calendaria Graeca omnia ed. O.
Wachsmuth. Ed. II. n. M. 6.—
Musici scriptores Graeci rec. C. Ianus. n. M. 9.—
Mythographi Graeci. Vol. III. Fasc. I. Pseudo-Eratosthenis
iuri. n. M. 1.20.
iani, opus agriculturae rec. J. C.
graece, latine, syriace, coptice,
H. Gelzer, H. Hilgenfeld,
O. Guntz. n. M. 6.—
Plauti, Terenti, Ciceronis. VIII rec. W. R. et al. n. M. 1.10.
Pindari, Ovidii, Virgilii. VIII rec. W. R. et al. n. M. 1.10.
Plauti, Terenti, Ciceronis. IX rec. W. R. et al. n. M. 1.10.
Plauti, Terenti, Ciceronis. X rec. W. R. et al. n. M. 1.10.
Statuta. P. Papinius. —. —. —. —. —.

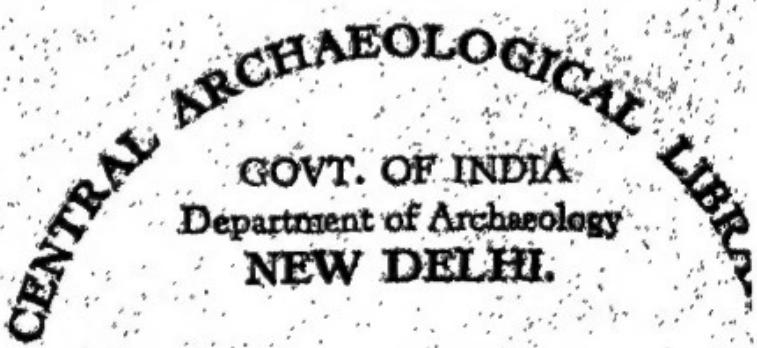




SEARCHED

CAT
MAY 26 1978

"A book that is shut is but a block"



Please help us to keep the book
clean and moving.